अष्टाध्यायी सहजबोध

प्रथम भाग : सार्वधातुक खण्ड

डॉ पुष्पा दीक्षित

तिङन्त प्रकरण वस्तुतः व्याकरणशास्त्र की महाटवी है। प्रक्रिया ग्रन्थों में 'पाणिनीय धातुपाठ' के एक-एक धातु को उसी क्रम से लेकर उनके दस-दस लकारों लट् , लिट् , लुट् , लृट् , आदि के रूप, अकारादि क्रम से बनाये गये हैं। इन ग्रन्थों में धातु, पाणिनीय धातुपाठ के क्रम से हैं तथा लकार अकारादि क्रम से हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ में लेखिका ने लकारों का यह प्रचलित अकारादि क्रम तोड़ा है तथा तोड़कर उसके दो हिस्से कर दिये हैं। लट् , लोट् , लङ् , विधिलिङ् तथा सार्वधातुक लेट् इन पाँच सार्वधातुक लकारों का एक वर्ग बनाया गया है तथा शेष अवशिष्ट लिट् , लुट् , लृट् , आर्धधातक लेट् , आशीर्लिङ् , लुङ् , लृङ्, इन सात आर्धधातुक लकारों का दूसरा वर्ग बनाया है। अनके प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि भगवान् पाणिनि को भी यही अभीष्ट है।

इसके अतिरिक्त इस ग्रन्थ में धातुपाठ के क्रम को भी तोड़ा गया है तथा धातुओं का वर्गीकरण अङ्गकार्यों के आधार पर किया गया है। प्रक्रिया ग्रन्थ के अध्येता 'अधिकार सूत्रों' के मर्म को नहीं समझ पाते हैं। यही कारण है व्याकरण में अत्यधिक परिश्रम करने के बाद भी विद्यार्थी प्रयोग तो बना लेते हैं किन्तु प्रयोग बनाने का विज्ञान नहीं समझ पाते।

अतः 'पाणिनीय अष्टाध्यायी' के विज्ञान को स्पष्ट करने वाली एक ऐसी पद्धति अभीष्ट थी, जिससे सारे लकार और सारी प्रक्रियाएं दो मास में हृद्गत हो सकें, यही यह अष्टाध्यायी सहजबोध है।
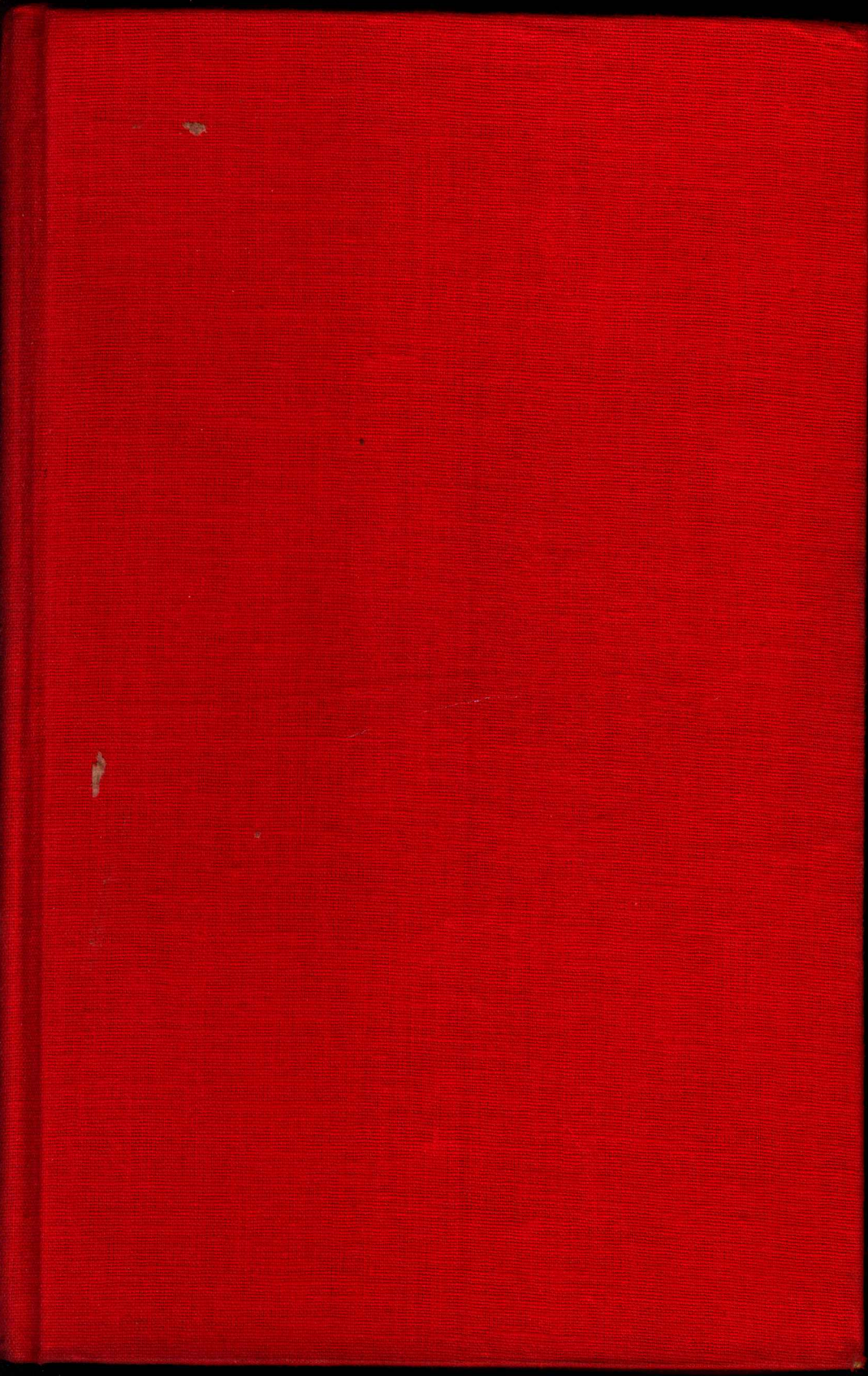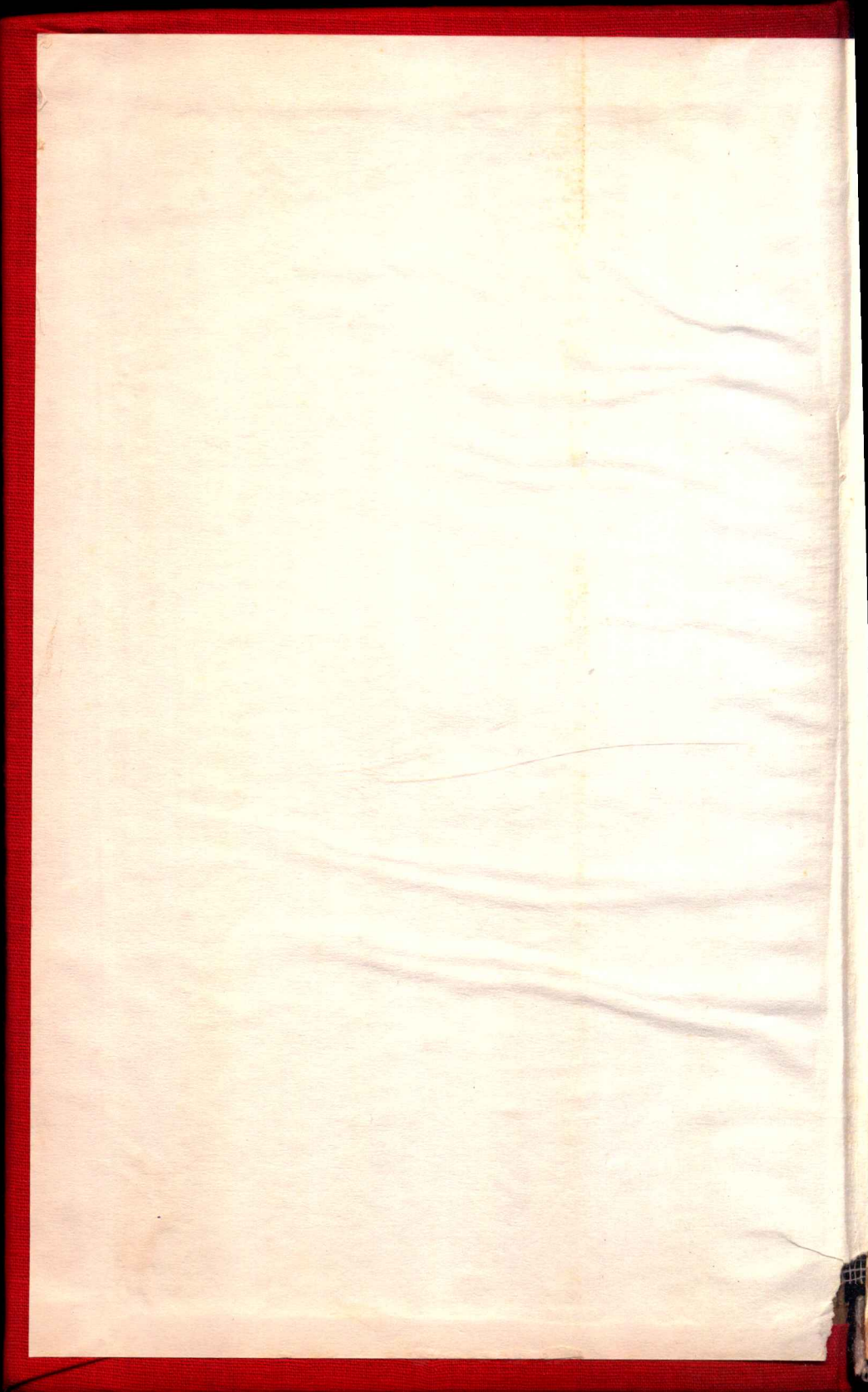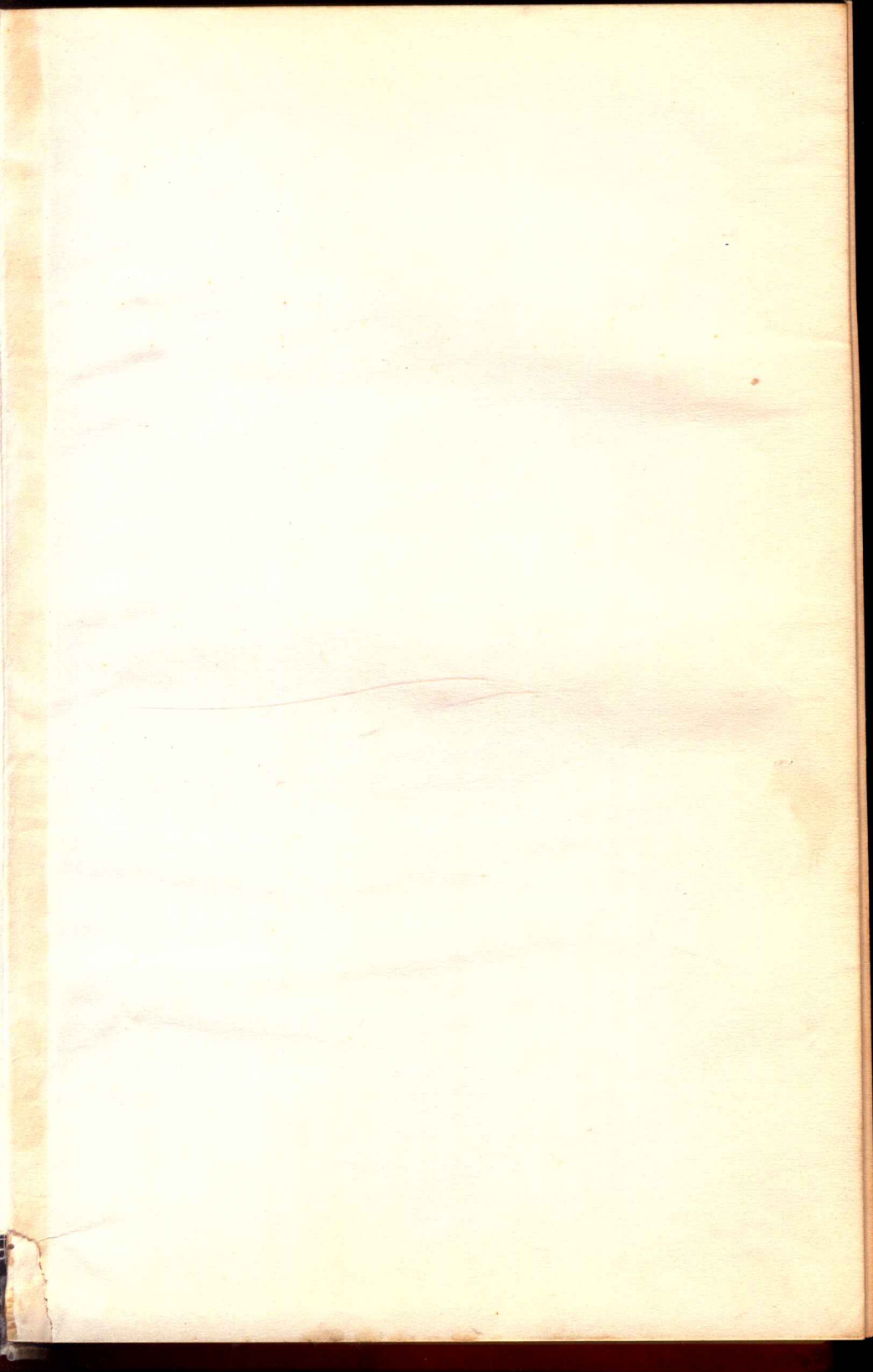
पाणिनीय शोध संस्थान ग्रन्थमाला प्रथम पुष्प

अष्टाध्यायी सहजबोध

पाणिनीय अष्टाध्यायी की सर्वथा नवीन वैज्ञानिक व्याख्य

प्रथम भाग

सार्वधातुक खण्ड (तिङन्त)

(समस्त धातुओं के लट् , लोट् , लङ् , विधिलिङ् , तथा
सार्वधातुक लेट् लकारों के रूप बनाने के अपूर्व विधि)

रचयित्री
डॉ. श्रीमती पुष्पा दीक्षित
संस्कृतविभागाध्यक्षा
शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बिलासपुर, म.प्र.

प्रतिभा प्रकाशन
दिल्ली

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली से प्राप्त आर्थिक सहायता से प्रकाशित

प्रथम संस्करण : **रामनवमी** 2056 विक्रमाब्द (1999)

ISBN 81-7702-007-2 सेट
81-7702-005-6

मूल्य : रू. 238/- सेट (2 भाग)

प्रकाशक :
डॉ. राधेश्याम शुक्ल
एम.ए.,एम.फिल्.., पी-एच.डी.
प्रतिभा प्रकाशन
(प्राच्य-विद्या-प्रकाशक एवं पुस्तक-विक्रेता)
29/5 शक्तिनगर, दिल्ली 110007
दूरभाष : 7451485

अन्य प्राप्ति स्थल
पाणिनीय शोध संस्थान
तेलीपारा, बिलासपुर, म.प्र.

मुद्रक : तरुण ऑफसेट, दिल्ली

Pāṇinīya Śhodha Sansthāna Granthamālā Pratham Puṣpa

AṢṬĀDHYĀYĪ SAHAJABODHA

A Scientific Commentary of *Pāṇinīya Aṣṭādhyāyī*

VOL. I

सार्वधातुक खण्ड (तिङन्त)

(A new method of making the forms of all Dhātus in
लट् , लोट् , लङ् , विधिलिङ् and सार्वधातुक लेट् लकार)

By
Dr. Pushpa Dixit
H.O.D. of Sanskrit Deptt.
Govt. Girls P.G. Collge
Bilaspur

PRATIBHA PRAKASHAN
DELHI

Published with the Financial assistance from
Rashtriya Sanskrit Sansthan, New Delhi.

Ist Ed. *Rāmanavamī* 2056 V.S. (1999)

ISBN : 81-7702-007-2 (Set)

Price : Rs. 238/- set (2 Vols.)

Published by :
Dr. Radhey Shyam Shukla
M.A.,M.Phil.,Ph.D.
for **Pratibha Prakashan**
(Oriental Publishers & Booksellers)
29/5 Shakti Nagar, Delhi-110007
Phone : 7451485

Also Available at :
Pāṇinīya Śhodha Sansthāna
Telipara, Bilaspur (M.P.)

Printed at : Tarun Offset, Delhi.

समर्पणम्

दर्पोन्मत्तपण्डितकुलमदखण्डनो यो जनिप्रदानेनैव गौरवं मदीयववीवृधत्, अथ चाजन्मन एव लालाक्लिन्ने मुखे मदीये संस्कृतसुधामपीप्यत्, बाल्य एव व्याकरणग्रन्थ-ग्रन्थीन् विभिद्यादीदृशत्, तस्मै -

जनकाय पण्डितप्रवराय प्राणाचार्यसुन्दरलालशुक्लाय

दुर्दैवविपिनोत्पाटनपटीयो यदीयो-त्सङ्गसंस्पर्शसुखस्मरणमेवानिशं मां विपत्-सागरपारमुदतीतरत्, करुणाकलितं हृदयं यदीयं स्नेहवर्षेणासिस्नपत्, अनन्तेष्वपि जन्मसु निष्कृतिर्यस्य विधातुमशक्या तदमृतातिशायिस्तन्यं यस्या अगाधपयःपारावारान् व्यजीगणत्, तस्यै -

जनन्यै जानकीशुक्लायै
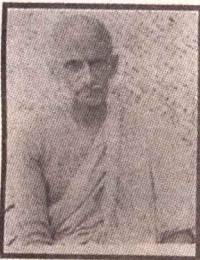
अनवरतपाणिनीयशास्त्रावगाहेन धौतकल्मषो यश्चिरं भृतेन तपसा भगवतीं पीताम्बरामतूतुषत्, यश्चाज्ञानावृतमबोधा-कुलमकिञ्चित्करं मानसं मदीयं व्याकरणज्ञान-प्रकाशेनाचकाशत्, माञ्च सुतनिर्विशेष ममीमनत् तस्मै -

वैयाकरणतल्लजाय गुरवे श्रीमते विश्वनाथत्रिपाठिने

ये पदवाक्यप्रमाणशास्त्रपारीणा, धर्मधुरीणा, वेदरहस्याधिगमेन साक्षात्कृत-परतत्त्वा, अध्यात्मविद्यया निखिलब्रह्माण्डमपि करतलगतामलकवत् पश्यन्तोऽपि कालवेग-मविगणय्य भारतराष्ट्रस्यैक्याय बद्धपरिकरा, न जाने मदीयेन केन महत्पुण्येन मां शिष्यत्वेनाङ्गीकृत्य तमसो ज्योतिष्पथे हठान्न्यवीविशन्, जीवनञ्च धर्मेणायूयुजन्, तेभ्यो दीक्षागुरुभ्यो भगवत्पादेभ्यो -

अनन्तश्रीविभूषितपूर्वाम्नायशङ्कराचार्यनिश्चलानन्दसरस्वतीपादेभ्यः

यथा कच्छपी स्वकीयान्नण्डानेकाग्र - चिन्तनसमाधियोगेन पोषयति, तथैव यो मदीयं कार्यमिदं चित्तस्य महत्समाधि-योगेनापूपुषत्, तस्मै -

जीवनस्यानन्यसहचराय पण्डितशिवप्रसाददीक्षिताय च

अष्टाध्यायीसहजबोधमिमं भावेन समर्पयतीयमकिञ्चित्करी दीक्षितपुष्पा -

पुष्पा दीक्षित

एतेऽमी समर्पणेनानेन तृप्तिं लभन्तां, न मम।

विक्रमाब्द २०५५, चैत्र कृष्ण तृतीया **दिनाङ्क - ५. ३. १९९९**

भूमिका

आचार्य डॉ. रामप्रसाद त्रिपाठी, भूतपूर्व व्याकरणविभागाध्यक्ष, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, अध्यक्ष, काशी विद्वत्परिषद्
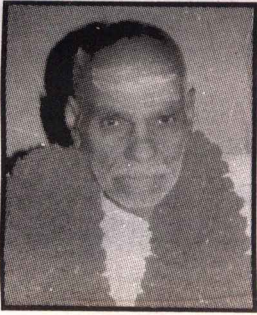
डॉ. श्रीमती पुष्पा दीक्षिता द्वारा रचित, **अष्टाध्यायी सहजबोध के प्रथम तथा द्वितीय खण्ड** को देखा तो हृदय आनन्द से विभोर हो उठा। ऐसा लगा कि पाणिनीय अष्टाध्यायी को समझने की यह सर्वथा वैज्ञानिक नवीन सरणी है।

प्रक्रिया की दृष्टि से, तिङन्तप्रकरण, अष्टाध्यायी का सबसे गहन तथा कठिन प्रकरण है। इसका मूलाधार अष्टाध्यायी का धात्वधिकार तथा पाणिनीय धातुपाठ हैं। सिद्धान्तकौमुदी की प्रक्रिया में, धातुओं को पाणिनीय धातुपाठ के क्रम से पढ़ा जाता है तथा लकारों को लट्, लिट्, लुट्, लृट्, लेट्, लोट्, लङ्, लिङ्, लुङ्, लृङ्, इस अकारादि क्रम से पढ़ा पढ़ाया जाता है। इससे होता यह है कि लट् लकार को सिद्ध करके छात्र जब लिट् लकार में प्रविष्ट होता है तो उसे सार्वधातुक मार्ग से हटकर आर्धधातुक मार्ग में प्रविष्ट होकर एक सर्वथा नई प्रक्रिया से परिचय करना होता है। इससे अति काठिन्य होता है।

'अष्टाध्यायी सहजबोध' में प्रो. दीक्षिता ने बड़े चातुर्य से, प्रक्रिया की दृष्टि से, लकारों को दो भागों में विभाजित करके, लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् तथा सार्वधातुक लेट् इन पाँच सार्वधातुक लकारों को पृथक् कर दिया है और लिट्, लुट्, लृट्, आर्धधातुक लेट्, आशीर्लिङ्, लुङ्, लृङ्, इन सात आर्धधातुक लकारों को पृथक् कर दिया है। ऐसा इसलिये कि जब लेट् लकार के प्रत्यय, लेटोऽडाटौ सूत्र से अट्, आट् का आगम करके बनते हैं, तब वहाँ धातुरूप बनाने के लिये सार्वधातुक प्रक्रिया का आश्रय लेना पड़ता है और जब इन्हीं में सिब्बहुलं लेटि सूत्र से 'सिप्' लग जाता है, तब वहाँ धातुरूप बनाने के लिये आर्धधातुक प्रक्रिया का आश्रय लेना पड़ता है। अतः इन्होंने लेट् लकार के भी सार्वधातुक तथा आर्धधातुक, ऐसे दो वर्ग बनाकर अद्भुत स्पष्टता प्रदान की है।

दस लकारों के इस वर्गीकरण को देखने से मुझे यह प्रतीत हुआ है कि लकारों के रूपावली अध्ययन में छात्रों को जो क्लेश होता था, वह बहुत अंशों में सुदूर पलायित हो गया है क्योंकि लट् लकार के जो रूप जिस प्रक्रिया से बनते हैं, उसी प्रक्रिया के कतिपय अंश को परिवर्तित कर देने से लोट्, लङ्, तथा विधिलिङ्, इन लकारों के रूप स्वतः सिद्ध हो जाते हैं। इसे अपनी सूक्ष्मेक्षिका से विभक्त करके उन्होंने एक विलक्षण मार्ग प्रस्तुत किया है, जिसमें अत्यन्त लाघव है। भगवान् पाणिनि भी दो बार 'आर्धधातुके' का अधिकार करके आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर किये जाने वाले कार्य एक साथ कहते हैं तथा 'अत उत सार्वधातुके' 'नाभ्यस्तस्याचि पिति सार्वधातुके' 'रुदादिभ्यः सार्वधातुके' आदि सूत्रों से 'सार्वधातुके' की अनुवृत्ति लेकर सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, किये जाने वाले कार्य एक साथ कहते हैं। यह प्रमाण है कि भगवान् पाणिनि को सार्वधातुक तथा आर्धधातुक कार्य पृथक् पृथक् करना अभीष्ट है। जहाँ 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' क्ङिति च आदि सूत्रों में वे दोनों को एक साथ लेकर चलते हैं, वहाँ 'लाघव' ही हेतु होता है।

आर्धधातुकीय प्रक्रिया में प्रो. दीक्षिता ने एक एक लकार के सामने, समग्र धातुओं को उपस्थित करके उनकी एक ही स्थान पर सिद्धि की है। इसके लिये उन्होंने पाणिनीय धातुपाठ को, अष्टाध्यायी के अङ्गकार्यों से समन्वित कर दिया है। ऐसा करने के लिये इन्होंने पाणिनीय धातुपाठ के समस्त धातुओं को लेते हुए उनके क्रम में एक ऐसा परिवर्तन कर दिया है, जिसका सम्बन्ध सीधा धातुरूप बनाने की प्रक्रिया से है। उन्होंने धातुओं को आकारान्तादि क्रम से पुनर्व्यवस्थापित करके, एक इतना सरल मार्ग उपस्थित किया है कि एक वर्ग के एक धातु की सिद्धि करते ही, उस वर्ग के सारे धातु स्वतः ही सिद्ध हो जाते हैं। जहाँ धातुरूपावलियाँ सहस्रों पृष्ठों में, धातुओं के रूप देकर भी प्रक्रिया नहीं दे पातीं, वहाँ यह ग्रन्थ एक वर्ग के एक धातु का रूप, सारी प्रक्रिया के सहित देकर, उस समग्र वर्ग के धातुरूपों की स्वतः सिद्धि कर देता है, यह इसका वैलक्षण्य है।

आर्धधातुक खण्ड में प्रविष्ट होने के पूर्व ही उन्होंने अनिट् धातु तथा अनिट् प्रत्यय और सेट् धातु तथा सेट् प्रत्यय का वर्गीकरण इतनी वैज्ञानिकता के साथ किया है कि देखते ही बनता है। जिस अंश पर दृष्टि जाती है, वहीं पर मन आकृष्ट होकर आह्लाद का अनुभव करता है। ज्यों ज्यों जिन जिन अंशों

पर दृष्टिपात होता है, वहीं सरल, सहज, सरस, पद्धति को देखकर आत्मा की विभोर अवस्था हो जाती है।

पाणिनीय अष्टाध्यायी ही व्याकरण का मूलाधार है। लौकिक तथा वैदिक, उभय शब्दों की सिद्धि करने के कारण, पाणिनीय व्याकरण की सर्वोच्च प्रतिष्ठा है। इसे आधार बनाकर अनेक ग्रन्थ रचे गये हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ में भगवान् पाणिनि के इस लक्ष्य को लेशमात्र भी नहीं छोड़ा गया है। इसका यह वैशिष्ट्य है कि इसमें न तो पाणिनीय धातुपाठ से एक भी धातु को कम किया गया है, न ही दस लकारों में से एक भी लकार को कम किया गया है। अपने वैज्ञानिक क्रम के अन्तर्गत इन्होंने लेट् लकार को सार्वधातुक तथा आर्धधातुक इन दो हिस्सों में विभाजित करके उसे भी ऐसी सरल पद्धति में पिरो दिया है कि लौकिक शब्दों के साथ साथ वैदिक शब्द भी उतनी ही सहजता से बुद्धिगम्य हो जाते हैं। अत: अपनी सरलीकरण की प्रक्रिया में लौकिकवैदिकोभय शब्दों की सिद्धि करने वाला यह ग्रन्थ सर्वथा स्तुत्य है। अष्टाध्यायी के धात्वधिकार तथा पाणिनीय धातुपाठ के माध्यम से लकारों के सम्बन्ध में महामुनि पाणिनि जो जो कुछ भी कहना चाहते हैं, वह समग्र रूप में इस ग्रन्थ में उपलब्ध है।

धातुरूपों को रटना, या बड़े बड़े महासागर जैसी रूपावलियों में उन्हें ढूँढना, ये दोनों ही अविधि हैं। कौमुदी विधि है, किन्तु उसमें अति काठिन्य है। अत: यदि इस ग्रन्थ के माध्यम से प्रक्रिया को जानकर छात्र कौमुदी में प्रवेश करे तो कौमुदी में आप्लावन करना जल में मीन के समान सुकर हो सकेगा।

मै संस्कृत व्याकरण की इस सर्वथा नवीन वैज्ञानिक सरणी का दिग्दर्शन कराने वाली 'अष्टाध्यायी सहज बोध' पद्धति का हृदय से सर्वतोभावेन अनुमोदन करता हूँ। यह ग्रन्थ महामुनि पाणिनि की अन्तरात्मा को निश्चित ही आनन्दित करेगा। इससे संस्कृत साहित्य का अत्यन्त कल्याण सम्भावित है, ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है।

मैं भगवान् विश्वनाथ से प्रार्थना करता हूँ कि यह ग्रन्थ अपने उद्देश्य को प्राप्त करे और व्याकरण के अध्येताओं में इसकी प्रतिष्ठा हो।

५. १. १९९८

रामप्रसाद त्रिपाठी

पर दृष्टिपात होता है, वहीं सरल, सहज, सरस, पद्धति को देखकर आत्मा की विभोर अवस्था हो जाती है।

पाणिनीय अष्टाध्यायी ही व्याकरण का मूलाधार है। लौकिक तथा वैदिक, उभय शब्दों की सिद्धि करने के कारण, पाणिनीय व्याकरण की सर्वोच्च प्रतिष्ठा है। इसे आधार बनाकर अनेक ग्रन्थ रचे गये हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ में भगवान् पाणिनि के इस लक्ष्य को लेशमात्र भी नहीं छोड़ा गया है। इसका यह वैशिष्ट्य है कि इसमें न तो पाणिनीय धातुपाठ से एक भी धातु को कम किया गया है, न ही दस लकारों में से एक भी लकार को कम किया गया है। अपने वैज्ञानिक क्रम के अन्तर्गत इन्होंने लेट् लकार को सार्वधातुक तथा आर्धधातुक इन दो हिस्सों में विभाजित करके उसे भी ऐसी सरल पद्धति में पिरो दिया है कि लौकिक शब्दों के साथ साथ वैदिक शब्द भी उतनी ही सहजता से बुद्धिगम्य हो जाते हैं। अतः अपनी सरलीकरण की प्रक्रिया में लौकिकवैदिकोभय शब्दों की सिद्धि करने वाला यह ग्रन्थ सर्वथा स्तुत्य है। अष्टाध्यायी के धात्वधिकार तथा पाणिनीय धातुपाठ के माध्यम से लकारों के सम्बन्ध में महामुनि पाणिनि जो जो कुछ भी कहना चाहते हैं, वह समग्र रूप में इस ग्रन्थ में उपलब्ध है।

धातुरूपों को रटना, या बड़े बड़े महासागर जैसी रूपावलियों में उन्हें ढूँढना, ये दोनों ही अविधि हैं। कौमुदी विधि है, किन्तु उसमें अति काठिन्य है। अतः यदि इस ग्रन्थ के माध्यम से प्रक्रिया को जानकर छात्र कौमुदी में प्रवेश करे तो कौमुदी में आप्लावन करना जल में मीन के समान सुकर हो सकेगा।

मै संस्कृत व्याकरण की इस सर्वथा नवीन वैज्ञानिक सरणी का दिग्दर्शन कराने वाली 'अष्टाध्यायी सहज बोध' पद्धति का हृदय से सर्वतोभावेन अनुमोदन करता हूँ। यह ग्रन्थ महामुनि पाणिनि की अन्तरात्मा को निश्चित ही आनन्दित करेगा। इससे संस्कृत साहित्य का अत्यन्त कल्याण सम्भावित है, ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है।

मैं भगवान् विश्वनाथ से प्रार्थना करता हूँ कि यह ग्रन्थ अपने उद्देश्य को प्राप्त करे और व्याकरण के अध्येताओं में इसकी प्रतिष्ठा हो।

५. १. १९९८

रामप्रसाद त्रिपाठी

नैवेद्यम्

आचार्य डॉ. रामकरण शर्मा, भूतपूर्व कुलपति कामेश्वरसिंह दरभङ्गा संस्कृत विश्वविद्यालय तथा सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वर्तमान अध्यक्ष, अन्ताराष्ट्रिय संस्कृत अध्ययन संघ
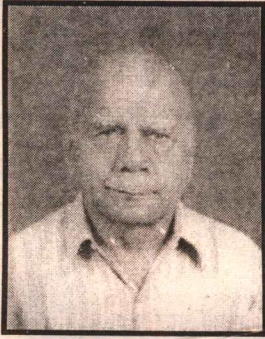
श्रीमती पुष्पा दीक्षित का 'अष्टाध्यायी सहजबोध' महर्षि पाणिनि की 'सूक्ष्मेक्षिका' को बड़े सहज भाव से, सर्वसुलभ सरल शैली में आलोकित करता है। एक ओर तो विश्व के मनीषियों ने महर्षि पाणिनि को सर्वप्रथम एवं सर्वश्रेष्ठ भाषावैज्ञानिक के रूप में समादृत किया है, वहीं दूसरी ओर हमारी पारम्परिक एवं आधुनिक शैक्षिक संस्थाओं में अध्यापक एवं विद्यार्थी दोनों पाणिनि के व्युत्पत्ति प्रधान सर्वाङ्गीण प्रशस्तपथ का परित्याग करके कुछ टेढ़ी मेढ़ी पगडण्डियों में भटकते जा रहे हैं। उनकी दृष्टि में पाणिनीय शास्त्र सेतुबन्ध जैसा दुर्गम है।

विदुषी लेखिका ने इस "सहजबोध" के माध्यम से पाणिनीय भाषाशास्त्र के गूढ़ से गूढ़ तत्त्वों को ऐसा सुगम बना दिया है कि शङ्का या भ्रम का अवसर ही नहीं रह जाता। 'सुदुर्गमः सुगमतां लेभे'।

उदाहरणार्थ अष्टाध्यायी के तीन अध्याय (३ - ५) प्रत्ययाध्याय कहे जा सकते हैं। इनमें कुछ सामान्य प्रत्यय, कुछ विशेष प्रत्यय के साम्राज्य में कभी प्रवेश नहीं पाते, कुछ पाते भी हैं (वाऽसरूपोऽस्त्रियाम्)। कुछ धातु 'सेट्' होते हैं, कुछ 'अनिट्'। कुछ प्रत्यय 'सेट्' होते हैं, कुछ 'अनिट्'। 'सेट्' और 'अनिट्' के जंगल में किसी का भी भटक जाना स्वभाविक है। किन्तु विदुषी लेखिका ने अपनी सहज और सरल परिगणनशैली से धातुओं, प्रातिपदिकों एवं प्रत्ययों के सम्बन्ध में ऐसी स्पष्ट जानकारी दे दी है कि पाठक को वे गूढ़तत्त्व भी हस्तामलकवत् सुलभ लगने लगते हैं। कौन से धातु 'सेट्' होते हैं, और कौन

से 'अनिट् ? कौन से आर्धधातुक प्रत्यय 'सेट्' होते हैं, और कौन से आर्धधातुक प्रत्यय 'अनिट्, होते हैं, ये सारी बातें इनकी 'इडागम व्यवस्था' की व्याख्या से स्पष्ट हो जाती हैं क्योंकि इस **'अष्टाध्यायी सहज बोध'** ग्रन्थ में बड़ी वैज्ञानिक शैली में धातुओं और प्रातिपदिकों में लगने वाले प्रत्ययों की व्याख्या की गई है।

श्रीमती पुष्पा दीक्षित की व्याकरणसाधना अनुपम है। इन्होंने अपने पौत्र को भी इसी "अष्टाध्यायी सहजबोध" में दीक्षित कर रखा है। उस बालक ने एक बार सागर में आयोजित एक गोष्ठी में कुछ मिनटों में ही तद्धित की सारी गुत्थियों का 'सहजबोध' कराकर श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया था।

हमें पूर्ण विश्वास है कि श्रीमती डॉ. पुष्पा दीक्षित की यह 'सहजबोध' नामक कृति परम्परागत विद्वानों एवं विद्यार्थियों में 'पाणिनीय महाशास्त्र' के प्रति अभिनव रुचि जगायेगी एवं शोध की नई नई दिशाओं का निर्माण करने में सहायक होगी।

मैं इस अनुपम 'सहजबोध' प्रस्तुति के लिये उन्हें शत शत हार्दिक बधाई देता हुआ उनके समुज्ज्जल भविष्य का शुभाशीर्वाद देता हूँ ।

१८.३.१९९८

श्रीहरिः शरणम्

स्वस्त्ययन

पूर्वाम्नायगोवर्धनपीठाधीश्वरपण्डितप्रवरश्रीमज्जगद्‌गुरुशङ्कराचार्य - स्वामिनिश्चलानन्दसरस्वती

वेदों का परम तात्पर्य जिस परम तत्त्व परमेश्वर में सन्निहित है, वह भूत, भविष्यत्, एवं वर्तमानकालिक समस्त जगत् का अधिष्ठाता अर्थात् नियन्ता है तथा केवल विशुद्ध अनन्त आनन्द स्वः भी उसी का स्वरूप है। वह अतिप्रशस्त सर्वोत्कृष्ट ज्येष्ठ ब्रह्म नमस्कार्य है। यही कारण है कि भगवान् मनु ने भूत, भविष्यत्, एवं वर्तमान सबकी सिद्धि वेदों से ही मानी जाती है। 'भूतं भव्यं भविष्यं च सर्वं वेदात् प्रसिद्ध्यति'। जिस प्रकार कालगर्भित और कालातीत सर्व वस्तुओं की सिद्धि परब्रह्म से सम्भव है, उसी प्रकार कालगर्भित और कालातीत सर्व वस्तुओं की सिद्धि परब्रह्म के प्रतिपादक शब्दब्रह्म के उद्‌गमस्थान ओंकार से सम्भव है। शब्द की गति, गन्ध, रस, रूप तथा स्पर्श, शब्द और शब्दातीत में भी मान्य है। अभिधावृत्ति से शब्दों की प्रवृत्ति जाति, गुण, क्रिया, सम्बन्ध और रूढ़ि को लेकर मान्य है। अत एव एक निर्गुण, निष्क्रिय, असङ्ग और सर्वार्थविनिर्मुक्त वेदान्तवेद्य परमेश्वर में नहीं है, तथापि निषेधगर्भित विधिमुखप्रवृत्त लक्षणों के द्वारा उसका अधिगम भी संभव है।

परम अर्थस्वरूप परबह्म, शब्दब्रह्म के योग से प्रपञ्चरूप से विलसित अर्थात् विवर्तित होता है। अभिप्राय यह है कि विशुद्ध बोधात्मक परब्रह्म ही शब्दब्रह्म के योग से स्थावर जङ्गमात्मक प्रपञ्च रूप से विलसित हो रहा है। शब्दानुगमयुक्तबोध ही व्यवहार है। इसी अभिप्राय से वैयाकरणों ने व्यवहार साधक समस्त बोध में शब्दानुगम की कारणता को स्वीकार किया है।

न सोऽस्ति प्रत्ययो लोके यः शब्दानुगमादृते (वाक्यपदीय)

उदाहरणार्थ संकल्प विकल्पात्मक बोधरूप मन की सिद्धि, किसी भी भाषा के शब्द या शब्दजन्य संस्कार के बिना संभव नहीं है अर्थात् शब्दानुवेधविनिर्मुक्त मन विशुद्ध ज्ञानस्वरूप आत्मा ही है। इसी प्रकार अध्यवसायात्मिकता बुद्धि की, स्मरणात्मक चित्त की, गर्वात्मक अहं की, विशुद्ध ज्ञानरूपता मान्य है। उक्त रीति से यह कथन भी सिद्ध है कि अनादि परमेश्वर की सृष्ट्यादिविष्यक अनन्त विज्ञान में अनुविद्ध अभङ्ग आनुपूर्वी घटित शब्दराशि वेद है।

इतना ही नहीं 'वाचारम्भणं विकारो नामधग्र, मृत्तिकेत्येव सत्यम्' - छान्दोग्योपनिषद्, आदि श्रुतियों के अनुशीलन से यह तथ्य सिद्ध है कि प्रणवरूप प्रकृतिसंज्ञक आदि शब्द ओंकार, और लक्ष्यभूत ब्रह्मात्मतत्त्व ही जगत् का मूल है। घटपटादिक प्रपञ्च की उपयोगिता ही नहीं अपितु इनका अस्तित्व भी बोधसापेक्ष ही है। अत एव विशुद्ध बोध ही इनका तात्त्विक रूप है। शब्द और अर्थभेद भी वस्तुविज्ञान के अङ्गभूत ही हैं। बोधोत्तर शब्दार्थ भी विगलित हो जाता है। उक्त रीति से शब्दब्रह्म के योग परब्रह्म का विवर्त ही विश्व है।

यही कारण है कि आर्षों ने परब्रह्म को प्रथम वैयाकरण सिद्ध किया है। महाभारत में परमात्मा को वैयाकरण कहा गया है। यह तथ्य 'अनेन जीवेन आत्मनानुप्रविश्य नामरूपे व्याकरवाणि') आदि श्रुतियों से सिद्ध है।

वेदानां वेदं भगवोऽध्येमि (छान्दोग्योपनिषद् ७.१.२), यह श्रुति है। इस श्रुति के अनुसार व्याकरण वेदों का वेद है। अतः महाभारत सहित पाँचों वेदों का वेद व्याकरण है क्योंकि व्याकरण के द्वारा ही पदादि विभागपूर्वक ऋगादि का ज्ञान संभव है। अभिप्राय यह है कि वेदार्थ विज्ञान में व्याकरण का महत्त्वपूर्ण योग है। यही कारण है कि वेद वेदान्तों के भाष्यों को भाष्य कहा जाता है, जबकि व्याकरण के भाष्य को महाभाष्य।

वेद के छह अङ्गों में व्याकरण तीसरा अङ्ग है। अङ्ग शब्द का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ होता है - अङ्ग्यते ज्ञायते अभीभिरिति अङ्गानि। अर्थात् जिन उपकरणों से किसी तत्त्व के परिज्ञान में सहायता प्राप्त होती है, वे अङ्ग कहलाते हैं। व्याकरणशास्त्र का वेदाङ्गत्व प्रयोजन इसलिये सिद्ध है कि वह पदों के प्रकृति और प्रत्यय का विवरण प्रस्तुत कर, पद के यथार्थ का परिचय देता है। साथ ही

अर्थ का विश्लेषण भी करता है। व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दा अनेनेति व्याकरणम्। आचार्य कुमारिलभट्टपाद ने यह तथ्य प्रकाशित किया है कि 'सर्वस्यैव हि शास्त्रस्य कर्मणो वापि कस्यचित्। यावत् प्रयोजनं नोक्तं तावत् तत् केन गृह्यते।' अर्थात् सब शास्त्रों का या किसी भी कर्म का जब तक प्रयोजन न कहा जाये, तब तक उसमें किसी की प्रवृत्ति संभव नहीं है।

मुनिवर कात्यायन महाभाग ने रक्षोहागमलध्वसन्देह को व्याकरण का प्रयोजन माना है। लोप, आगम और वर्णविकार को जानने वाला ही वेदों की रक्षा कर सकता है। ऊह का अर्थ तर्कवितर्क अर्थात् नूतन पदों की कल्पना है। यह दुष्कर कार्य वैयाकरण के द्वारा ही संभव है। विस्तृतशास्त्र को सारगर्भित समास शैली में प्रस्तुत करके शास्त्र का लघुतासम्पादन भी व्याकरण का प्रयोजन है। समासादि में प्राप्त सन्देहनिवारण के लिये भी व्याकरण का अध्ययन अपेक्षित है।

अनेक व्याकरणों के होने के बाद भी, पाणिनीयव्याकरण ही ऐसा है, जो कि समस्त लौकिक तथा वैदिक शब्दों की सिद्धि करता है, अतः अपूर्व है। उसकी अवरोहक शैली भी अपूर्व है। उसकी दुर्गमता का अधिगम करना वैयाकरण के द्वारा ही संभव है। इस रहस्य को सम्मुख रखकर परम विदुषी श्रीमती पुष्पा दीक्षित जी ने "अष्टाध्यायी सहजबोध'' नामक ग्रन्थ का प्रणयन करके इस दुरूह शास्त्र में सहज प्रविष्ट हो जाने का मार्ग प्रस्तुत करके हमें अत्यन्त प्रमुदित किया है।

उत्सर्गापवादन्याय से रचित पाणिनीयशास्त्र का यही तो वैशिष्ट्य है, कि एक सिद्धान्त के जानते ही अनन्त शब्दराशि सिद्ध हो जाये। पूर्वग्रन्थ उन सिद्धान्तों का तो सम्यक् प्रकाशन करते हैं, किन्तु उस अनन्त शब्दराशि का दर्शन नहीं करा पाते, जिसका अधिगम उस सिद्धान्त से अध्येता को होना चाहिये। "अष्टाध्यायी सहजबोध'' ग्रन्थ यह कार्य करता है, अतः अपूर्व है।

इनकी यह रचना श्री गङ्गा यमुना के तुल्य प्रशस्त हो, ऐसी भावना है।

विश्वनाथ शास्त्री

❀❀❀

।। श्रीहरिः शरणम् ।।

पाणिनये नमः

आचार्य डॉ. बच्चूलाल अवस्थी, 'ज्ञान' अधिष्ठाता, आचार्यकुल, कालिदास अकादमी, उज्जैन, म. प्र.
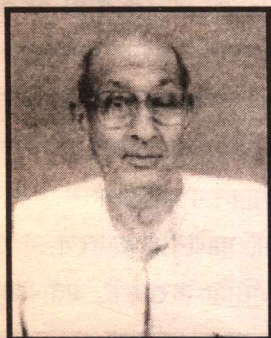
वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदीयं विरच्यते' इस पद्यार्ध में आये हुए 'इयं' पद की व्याख्या में गुरुपरम्परा बुद्धिस्थ सिद्धान्तकौमुदी को मान्य करती आई है। सम्पूर्ण वैयाकरण-सिद्धान्तकौमुदी पहले बुद्धिस्थ हुई और तत्पश्चात् यथापेक्ष वैखरी में उसे रूपान्तरित किया गया। इसी प्रकार सम्पूर्ण पाणिनीयाष्टाध्यायी 'इयं' के रूप में ही पाणिनि ने बुद्धिस्थ करके लोकोपकारार्थ सूत्र रचना की होगी। सूत्ररचना से पूर्व होने वाला यह बौद्ध प्रयास श्रमसाध्य नहीं होता, परन्तु समयसाध्य अवश्य होता है। समय से काल के अतिरिक्त अन्य सभी आचारादि अर्थ भी लेने होते हैं तब कहीं कोई शास्त्र या कोई भी कथ्य बुद्धिस्थ होता है और वैखरी में अनुवाद लेकर एक परम्परा स्थापित करता है। इसी को बुद्धिसत्ख्यातिवाद कहकर व्याकरण दर्शन में प्रतिष्ठित किया गया है। महाभाष्यकार ने कहा है कि किसी तन्तुवाय से 'पटं कुरु' कहा जाये तो वह बेचारा संकट में पड़ जायेगा। 'यदि कर्तव्यो न पटः यदि पटो न कर्तव्यः'। और तब वह बुद्धिस्थ करके ऐसा कुछ करना ही स्वीकार करता है, जिससे वह कुछ बन जाये जिसे प्रस्तुत वक्ता पट कर रहा है। बुद्धिसत्ख्याति का यह लौकिक मूल है जिसे महाभाष्यकार ने प्रस्तुत किया है।

"अष्टाध्यायी सहजबोध" को जब विचार दृष्टि से समझना चाहते हैं तो विविक्त दृष्टि से यही पता चलता है कि जिसे अष्टाध्यायी की बुद्धिसत्ख्याति हुई है, बुद्धि में विद्यमान अष्टाध्यायी का जो समग्र बोध कर चुका है, वही उसकी सविकल्पक ख्याति या प्रतीति कर सकता है और तब सहज रूप से सम्प्रदाय वैविध्य

से प्रक्रिया के विविध आयाम सामने उपस्थित होते हैं और उन आयामों में बाँधकर कोई व्याख्याता अपनी व्याख्या प्रस्तुत करता है। अष्टाध्यायी को लेकर न जाने कितने विचार सामने आये हैं और न जाने कितनी शंकाएँ उपस्थित की जाती रही हैं परन्तु सभी शंकाओं का व्याकरणदर्शन में एक ही समाधान माना गया है - "व्याख्यानतो विशेषप्रतिपत्तिर्निहि संदेहादलक्षणम्''।

अर्थात् किसी शास्त्र को शङ्कामात्र से अशास्त्र नहीं किया जा सकता। शङ्का में अनेकार्थ की प्रतीति होती है परन्तु अर्थविशेष की प्रतिपत्ति के लिये व्याख्याता वही होता है जो लक्ष्यैकचक्षुष्क हो। हमारे जैसे लक्ष्णैकचक्षुष्क लोगों के लिये, जो लक्ष्यों ने अनुसार लक्षणों की व्यवस्था कर सकता हो, वही व्याख्याता किसी विशेष सम्प्रदाय की स्थापना भी कर सकता है। भट्टोजि दीक्षित जैसे मनीषियों ने 'कार्यकालं संज्ञापरिभाषम्' की पद्धति पर जो सिद्धान्तकौमुदी निर्मित की, उस कौमुदी में बहुतों को तत्त्वावलोकन नहीं हो पाता। वहाँ भी प्रकाशान्तर की अपेक्षा होती है। एतदर्थ अनेक उपक्रम होते आये हैं। अनेक व्याकरण लिखे गये, जो पाणिनि को उद्गम के रूप में लेकर भी उनसे पृथक् मार्ग बनाने का प्रयास करते रहे।

कातन्त्र व्याकरण आदि ऐसे ही व्याकरण बने जिन्होंने लोकव्यवहार की संस्कृत भाषा को सामने लाने का प्रयास किया। वे यह भूल गये कि वेद और पुराण कैसे पढ़े जायेंगे ? उनका अर्थ कैसे जाना जायेगा। आश्वस्त और विश्वस्त जैसे शब्दों को कैसे समझा जायेगा। यह सब बुद्धिस्थ करके ही कोई वैयाकरण उच्छवसित और निःश्वसित से प्रेरणा लेकर आश्वसित और विश्वसित को भी सामने रख सकता है कोई वैयाकरण समस्त अष्टाध्यायी को बुद्धिसत्ख्याति में लाकर ही 'अयं प्रयोगः साधुः' कह सकता है। क्योंकि इदन्ता प्रत्यक्ष में होती है और यह प्रत्यक्ष जब तक बुद्धि में नहीं होगा तब तक यह सम्प्रदाय को चलाया नहीं जा सकता। हम सब उस परम्परा के सम्प्रदान कारक हैं, जिससे हमको सम्यक् प्रकृष्ट दान मिला है।

अत एव हमारे आचार्यों का एक सम्प्रदाय है, जिसका अनुगमन करके ही हम वाग्योग की साधना कर सकते हैं। महाभाष्यकार ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि " अवाग्योगविद् दुष्यति चापशब्दैः''। हम अपशब्दों से बचकर, साधु

शब्दों के प्रयोग का वाग्योग या शब्दयोग अपनाकर ही भगवान् भर्तृहरि के शब्दों में पाणिनीय शास्त्र के लिये कह सकते हैं - ''इयं सा मोक्षमाणानामजिह्मा राजपद्धतिः'' ।

इस परम्परा में हमने पाणिनि की बुद्धि को जैसा पाया है, वैसा चित्र आचार्यों की धारा में बनता आया है। हर एक ने अपना कूर्च उठाया है और विविध चित्र प्रस्तुत किये हैं। पाणिनि बहुरूप होता गया। वह अनन्तरूप बनता गया है। अतः **'पाणिनये नमः'** कहकर हम परमात्मा को नमन करते हैं।

इसी परम्परा में एक अध्याय और जुड़ता है, जब हम डा. पुष्पा दीक्षित कृत 'अष्टाध्यायी सहज बोध' को दृष्टिगोचर करते हैं। पाणिनि का एक नया चित्र, एक नयी आभा एवं चमक के साथ अवतीर्ण होता है। हम पहिले चमत्कृत होकर विभोर हो जाते हैं और फिर देखते हैं कि उस पाणिनि ने आज हमको जिस रूप में दर्शन दिया वह वाग्योग की सहज समाधि का ध्यानगम्य तत्त्व है, जो बहिर्दृष्टि से प्रत्यक्ष हो उठा है। हम आज इस परम्परा में इस कृति को इदन्ता के वृत्त में लेकर कृतार्थ हो सकते हैं।

८. १. १९९९

सदाशीः

आचार्य डॉ. रामयत्न शुक्ल, भूतपूर्व व्याकरणविभागाध्यक्ष, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, उ. प्र.
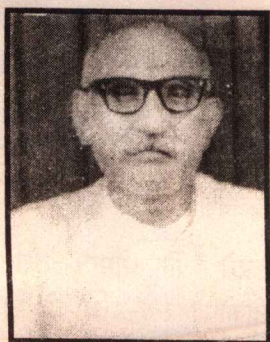
प्रो. पुष्पा दीक्षित के द्वारा विरचित "अष्टाध्यायी सहजबोध'' के 'आर्धधातुक प्रत्ययों की इडागम व्यवस्था' आदि कुछ अंशों को देखा।

पूर्वाचार्यों ने अष्टाध्यायी की व्याख्यायें तात्कालिक अध्येताओं की प्रवृत्ति के अनुसार की हैं, जिससे अष्टाध्यायी के दुरूह एवं विवादित विषयों का विस्फोरण हुआ है, तथा व्याकरण शास्त्र उज्जीवित होकर पुनः विकसित हुआ है। अतः व्याकरण जगत् उन आचार्यगणों का अधमर्ण है। उसी के आधार पर ही पारम्परिक अध्येताओं की अध्ययनाध्यापन की प्रवृत्ति को देखते हुए अष्टाध्यायी की एक ऐसी व्याख्या की आवश्यकता थी, जो अष्टाध्यायी के क्रमों के अनुसार वैज्ञानिक और सुबोध हो।

आचार्यों ने यथासमय अध्ययन की विधाओं को तदानीन्तन अध्येताओं की प्रवृत्ति के अनुरूप परिवर्तित किया है। जैसे अष्टाध्यायीक्रमानुसार पठन पाठन की परम्परा को सर्वग्राह्य न समझकर श्री दीक्षित प्रभृति आचार्यों ने लक्ष्यानुसार सिद्धान्तकौमुदी आदि ग्रन्थों का विरचन किया है, उसी प्रकार प्रो. दीक्षिता की अष्टाध्यायी की यह सहजबोधात्मक व्याख्या सहज शैली से छात्रों एवं विद्वानों के लिये अत्यन्त लाभप्रद होगी, क्योंकि इडागम आदि के सन्दर्भ में अद्यावधि उपलब्ध पद्धतियों से भी अनिर्णयात्मक स्थिति प्रायः बनी रहती है।

मेरी भी प्रबल इच्छा थी कि धातु सम्बन्धी समस्त प्रत्ययों की एक प्रामाणिक परिमार्जित रूप पद्धति का निर्माण करूँ, किन्तु उसके लघु प्रकार की चिन्ता में था। जब प्रो. दीक्षिता के इस सदर्ह प्रयास को सुना और देखा तो महान्

सन्तोष हुआ। विशेषकर इस तथ्य पर आनन्दानुभूति हुई, कि प्रो. दीक्षिता ने आधुनिक अध्येताओं की रुचि को ध्यान में रखा तथा अष्टाध्यायी क्रमानुसार सेट् अनिट् धातुओं तथा प्रत्ययों का विश्लेषण करके सुस्पष्ट व्याख्या की। इससे पाठकों को स्पष्ट एवं निःसंशय विवेक हो सकता है, तथा इसके आधार पर कोई भी निर्भ्रम प्रयोग कर सकता है।

श्रीमती दीक्षिता के इस अन्वेषणात्मक प्रयास से व्याकरण जगत् का स्तुत्य उपकार हुआ है। विदुषी दीक्षिता मान्य व्याख्याकारों में चिरकीर्तिमती के रूप में सम्मानित होती रहेंगी, क्योंकि व्याख्या के अवलोकन से व्याख्याकार की प्रतिभा एवं उसका व्याकरणविषय परिनिष्ठित चिन्तन प्रमाणित होता है।

हम भगवान् श्री विश्वनाथ से प्रार्थना करते हैं कि श्रीमती दीक्षिता को वे चिरायुष्य प्रदान करें, जिससे वे इसी तरह लोकोपकारक ग्रन्थों के निर्माण के द्वारा व्याकरण शास्त्र को जीवन प्रदान करती रहें।

६. १. १९९८ रामयत्न शुक्ल

पुरस्क्रिया

आचार्या डॉ. पुष्पा दीक्षित, संस्कृतविभागाध्यक्षा, शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिलासपुर, म. प्र.

पाणिनीय व्याकरण को पढ़ने की दो पद्धतियाँ प्रचलित हैं। एक तो पाणिनीय अष्टाध्यायी के सूत्रों के अर्थों को पाणिनीय अष्टाध्यायी के क्रम से ही पढ़ना। यह मार्ग महाभाष्य से प्रारम्भ होकर काशिकावृत्ति से होता हुआ बींसवी सदी तक चला है। दूसरी पद्धति है प्रक्रियापद्धति, जिसका सर्वप्रामाणिक ग्रन्थ सिद्धान्तकौमुदी है। इन दो पद्धतियों के रहते हुए 'अष्टाध्यायी सहजबोध' के रूप में इस तीसरी पद्धति की आवश्यकता क्यों पड़ी ? पहिले इसका प्रयोजन हम जान लें।

'अष्टाध्यायी' में सूत्र अनुवृत्ति क्रम के अनुरोध से रखे गये हैं। अधिकार, अनुवृत्ति और सूत्रों का पूर्वापर विज्ञान 'अष्टाध्यायी' के प्राण हैं। इन्हें एक बार 'अष्टाध्यायी' से ही समझ लेने से 'अष्टाध्यायी' का विज्ञान तो स्पष्ट हो जाता है, किन्तु प्रक्रिया में प्रवेश नहीं हो पाता है।

प्रक्रिया ग्रन्थ पहिले 'प्रयोग' को सामने रख लेते हैं। उस प्रयोग के लिये सारे सूत्र लाकर वहाँ खड़े कर देते हैं। इससे 'अष्टाध्यायी' की व्यवस्था भङ्ग होती है। इसलिये प्रक्रिया ग्रन्थ के अध्येता 'अधिकार सूत्रों' के मर्म को नहीं समझ पाते हैं। यही कारण है कि व्याकरण में अत्यधिक परिश्रम करने के बाद वे प्रयोग तो बना लेते हैं, प्रयोग बनाने का विज्ञान नहीं समझ पाते।

अत. 'पाणिनीय अष्टाध्यायी' के विज्ञान को स्पष्ट करते हुए एक प्रयोग को बनाने की प्रक्रिया बतलाकर उसके समानाकृति सारे प्रयोगों को उसी स्थल पर दर्शाकर इदमित्थम् बतला देने वाली एक पद्धति अभीष्ट थी, जिससे समग्र 'अष्टाध्यायी' एक वर्ष में हृद्गत हो सके। यही अष्टाध्यायी सहजबोध है।

यह कार्य मैंने तिङन्त प्रकरण से आरम्भ किया है। तिङन्त प्रकरण वस्तुतः व्याकरणशास्त्र की महाटवी है। एक एक धातु के दसों लकारों के रूप

बनाना, सीख सीखकर भी छात्र सिद्धान्तकौमुदी में दिये हुए प्रयोगों से भिन्न किसी भी धातुरूप को बनाने में लड़खड़ा जाते हैं, यह सर्वानुभूत है।

अतः यह स्पष्ट है कि प्रक्रिया ग्रन्थ प्रयोगों की सिद्धि तो कर देते हैं। परन्तु उनकी सिद्धि के विज्ञान को स्पष्ट नहीं करते हैं।

दूसरी बात यह कि प्रक्रिया ग्रन्थ एक प्रयोग को लक्ष्य बनाकर उसी के लिये सारे सूत्रों को उपस्थित करते हैं, अतः हम उन सूत्रों के उतने ही अर्थ को जान पाते हैं, जितना अर्थ उस प्रयोग के लिये आवश्यक है। शेष अर्थ बुद्धिगम्य ही रह जाता है। जैसे - ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च' यह सूत्र सिद्धान्तकौमुदी में 'ऊयतुः' प्रयोग बनाने में आता है। वहाँ 'एषां किति ङिति च सम्प्रसारणं स्यात्' इतना कहकर तथा उदाहरण के रूप में एक 'ऊयतुः' प्रयोग को देकर यह सूत्र विरत हो जाता है। सूत्र का अवशिष्ट अर्थ उदाहरण सहित समझने के लिये बचा ही रहता है, जो आगे सारे ग्रन्थ में कहीं नहीं कहा जाता, अनुमानगम्य ही रहता है।

प्रक्रिया ग्रन्थों में 'पाणिनीय धातुपाठ' के एक एक धातु को उसी क्रम से लेकर उनके दस दस लकारों के रूप, लट्, लिट्, लुट्, लृट्, आदि अकारादि क्रम से बनाये गये हैं। इन ग्रन्थों में धातु, पाणिनीय धातुपाठ के क्रम से हैं तथा लकार अकारादि क्रम से हैं।

इस 'अष्टाध्यायी सहजबोध' में हमने लकारों का यह प्रचलित अकारादि क्रम तोड़ा है तथा तोड़कर उसके दो हिस्से कर दिये हैं। लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् तथा सार्वधातुक लेट् इन पाँच सार्वधातुक लकारों का एक वर्ग बनाया है तथा शेष अवशिष्ट लिट्, लुट्, लृट्, आर्धधातुक लेट्, आशीर्लिङ्, लुङ्, लृङ्, इन सात आर्धधातुक लकारों का दूसरा वर्ग बनाया है। अनेक प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि भगवान् पाणिनि को भी यही अभीष्ट है।

वस्तुतः सार्वधातुक तथा आर्धधातुक, ये दो अलग अलग मार्ग हैं। इनमें अलग अलग चलने में ही सरलता है। प्रक्रिया ग्रन्थों ने दोनों को ऐसा मिलाकर रख दिया है कि छात्र की बुद्धि में दोनों की कोई पृथक् अवधारणा ही स्थापित नहीं हो पाती है।

हमने सारे धातुओं के चार सार्वधातुक लकारों को बनाने की विधि सार्वधातुक खण्ड में देकर सार्वधातुक की चर्चा समाप्त करके तब आर्धधातुक में

प्रवेश किया है। उसमें प्रवेश के पूर्व इडागम को स्पष्ट किया है क्योंकि इडागम ही आर्धधातुक खण्ड की रीढ़ है।

जैसे – 'पठितम्' को देखिये। जब हम छात्र से पूछते हैं कि इसमें इडागम क्यों हुआ है, तो उत्तर मिलता है कि 'क्त' प्रत्यय वलादि आर्धधातुक प्रत्यय है, अतः 'आर्धधातुकस्येड् वलादेः' सूत्र से इडागम हुआ है।

जब हम पूछते हैं कि 'कृतम्' में भी तो वही वलादि आर्धधातुक प्रत्यय है, किन्तु इसे इडागम क्यों नहीं हुआ ? तब उत्तर मिलता है कि इसे इडागम इसलिये नहीं हुआ है, कि कृ धातु अनिट् है।

अतः स्पष्ट है कि इडागम केवल प्रत्यय पर आश्रित नहीं होता, अपितु प्रत्यय तथा प्रकृति दोनों के ही सेट् होने पर इडागम होता है। कुछ धातु 'सेट्' होते हैं, कुछ 'अनिट्'। कुछ प्रत्यय 'सेट्' होते हैं, कुछ 'अनिट्'। जब सेट् धातु सेट् प्रत्यय से मिलते हैं तभी इडागम होता है। दोनों में से एक के भी अनिट् होने पर इडागम नहीं होता है।

अतः यह अत्यावश्यक है कि आर्धधातुक मार्ग में प्रविष्ट होने के पहिले छात्र, सेट् अनिट् धातुओं को तथा सेट् अनिट् प्रत्ययों को अलग अलग पहिचान ले। इसके बिना आर्धधातुक प्रत्यय सामने आते ही इडागमनिर्णय में स्खलन होगा।

यही बात प्रत्ययों के विषय में भी है। सामान्यतः छात्र जानता है कि तिङ् शित् से भिन्न प्रत्यय आर्धधातुक होते हैं। किन्तु ऐसी बात नहीं है। 'गुप्तिज्किद्भ्यः सन्' सूत्र से विहित 'सन्' प्रत्यय तिङ् शित् से भिन्न है, परन्तु आर्धधातुक नहीं है।

अतः हमने आर्धधातुक खण्ड में प्रविष्ट होने के पहिले हमने आर्धधातुक प्रत्ययों का स्वरूप पाणिनीय अष्टाध्यायी के अधिकारों के आधार पर स्पष्ट करके सेट् अनिट् प्रत्यय तथा सेट् अनिट् धातु अलग अलग बतला दिये हैं। भगवान् पाणिनि भी चाहते हैं, कि छात्र इस इडागम विज्ञान को एक साथ समझ ले, इसीलिये वे इडागमविज्ञान के सारे सूत्रों को अष्टाध्यायी में ७.२.८. से ७.२.७८ में एक साथ 'इडागम प्रकरण' के रूप में रखते हैं।

इडागम विज्ञान को स्पष्ट करने के बाद हमने एक एक आर्धधातुक लकार का अलग अलग विचार किया है, क्योंकि हर लकार का अलग अलग विज्ञान है।

लृट् लकार बनाने का विज्ञान समझकर क्यों न हम समस्त धातुओं

का लृट् लकार बना डालें। इसमें स्पष्टता है। एक मार्ग छात्र के सामने स्पष्ट है, उसे केवल उसी में निरवरोध चलना है।

इसमें अति लाघव है क्योंकि हमने धातुपाठ के १९४३ धातुओं के अलग अलग रूप बनाने की पद्धति नहीं दी है, अपितु उन धातुओं को १३ वर्गों में बाँट दिया है, और एक वर्ग के एक ही धातु को बनाने की प्रक्रिया दी है।

फलतः सामान्य से सामान्य छात्र भी ६ घण्टे के यत्न से समग्र धातुओं का लृट् लकार बनाना सीख जाता है। इसके बाद वह दूसरे लकार में प्रवेश करता है। ऐसा इसलिये कि प्रत्येक लकार का अपना अलग अलग विज्ञान है। उन्हें अलग अलग पढ़ने में ही स्पष्टता है। एक साथ खिचड़ी बनाकर पढ़ने से भ्रम ही भ्रम है।

दसों लकार और सारी प्रक्रियाएँ वस्तुतः अष्टाध्यायी के तीसरे अध्याय के प्रथम पाद के प्रारम्भिक ९० सूत्रों की व्याख्या ही है। उन्हें खण्ड खण्ड में व्याख्यात कर देने वाली इस 'अष्टाध्यायी सहज बोध' पद्धति का चिन्तन सर्वथा अपूर्व है। इससे पूर्व इस प्रकार से अष्टाध्यायी का अथवा प्रयोगों का, कभी भी, कोई विचार किया ही नहीं गया है।

व्याकरण शास्त्र के महोदधि में साधारण से साधारण बालक भी मछली के समान तैरने लगे, यही इसका लक्ष्य है। हमने नन्हें बालकों पर इसका प्रयोग किया है। वे खेलते खेलते 'व्याकरण शास्त्र' जान जाते हैं।

एक रूप सीख लेने पर भी अन्य रूप कैसे बनेंगे ? यह विचिकित्सा इस ग्रन्थ में नहीं है। प्रत्यय का स्वरूप यदि हमारे सामने स्पष्ट है, तभी अङ्गकार्य सही हो सकता है अन्यथा नहीं। यथा - कथ + णिच् में हम 'अतो लोपः' करते हैं क्योंकि यह णिच् प्रत्यय आर्धधातुक है। चीवर + णिच् में हम 'टेः' सूत्र से टिलोप करते हैं क्योंकि यह णिच् प्रत्यय आर्धधातुक नहीं है।

इस प्रकार प्रत्यय के स्वरूप को पहिचानने में ही अङ्गकार्य का विज्ञान टिका हुआ है। इस ग्रन्थ में हमने एक एक प्रत्यय को अलग अलग लेकर उसके स्वरूप को स्पष्ट करते हुए अङ्गकार्य करने की स्पष्ट दिशा निर्धारित करके दे दी है।

कहते हैं कि जब किसी ग्रन्थ को महत्त्वबुद्धि से पढ़ा जाता है, तब वह ग्रन्थ स्वयं ही अपने स्वरूप को प्रकाशित कर देता है और जब किसी कार्य को

भगवत्कार्य मानकर किया जाता है, तब उनकी पूरी प्रकृति उस कार्य की सहायक बनती है, यह इस कार्य के साथ मेरा प्रत्यक्ष अनुभव है कि अनेकशः अधूरे छूटे हुए कार्य का उन्होंने स्वयं स्मरण दिलाया है और आकर उसे पूर्ण किया है। गीता में वे कहते हैं -

अधिष्ठानं तथा कर्ता करणं च पृथग्विधम्।

विविधाश्च पृथक् चेष्टा दैवं चैवात्र पञ्चमम्।।

यही सत्य है। इस कार्य में मैंने १२ वर्षों तक अनवरत श्रम किया है, किन्तु इसमें मेरा कुछ भी नहीं है। यह तो भगवान् पाणिनि की महत्ता है। उनकी ही महती सूक्ष्मेक्षिका है। उनका ही विज्ञान है और उनकी व्याख्या में लिखे गये वे सारे ग्रन्थ, जिन्होंने मेरे लिये मार्ग बनाकर रख दिया है, मेरे साधन हैं।

बाल्यावस्था में ही पूज्यपाद पिता, **प्राणाचार्य पण्डित सुन्दरलाल जी शुक्ल** ने मुझे सार्वधातुक, आर्धधातुक लकार अलग अलग करके पढ़ाये थे और सार्वधातुक लकारों को भी अदन्त तथा अनदन्त इन दो वर्गों में विभाजित करके पढ़ाया था।

उसके बाद जब पूज्यपाद गुरुवर्य आचार्य **पण्डित विश्वनाथ जी त्रिपाठी** से सिद्धान्तकौमुदी का अध्ययन किया, तब भी वह संस्कार चित्त में स्थिर था, अतः उसके भीतर भी इस विज्ञान की खोज का यत्न चलता ही रहता था।

इन दोनों महनीय आचार्यों के पूज्य श्रीचरण ही इस कार्य के बीज हैं। पाणिनीयं अष्टाध्यायी तथा धातुपाठ इस कार्य की जड़ हैं। अष्टाध्यायी को अष्टाध्यायी के ही क्रम से व्याख्यात करने वाले काशिका, न्यास, पदमञ्जरी आदि ग्रन्थ इसके स्कन्ध हैं। अधिकारों के निर्धारण में श्री ब्रह्मदत्त जिज्ञासुकृत अष्टाध्यायी प्रथमावृत्ति ने भी सहायता की है। सिद्धान्तकौमुदी को छोड़कर तो प्रक्रिया की कल्पना भी नहीं हो सकती, अतः वह इसमें आमूल व्याप्त रस है तथा अन्य ग्रन्थ शाखाएँ, प्रशाखाएँ, हैं। इन सभी ग्रन्थों ने गहन अन्धकार में मुझे मार्ग दिखाया है।

धातुरूपावलियों, शब्दरूपावलियों तथा सहस्रों पृष्ठ के 'धातुरत्नाकर' जैसे ग्रन्थों के श्रम को देखकर लगता था कि इतना बड़ा कार्य लोग कर कैसे लेते हैं ? पर अष्टाध्यायी पढ़ने से लगा ये लोग इतने बड़े बड़े कार्य इसलिये कर लेते हैं कि इन ग्रन्थकारों के सामने इस कार्य को करने का विज्ञान स्पष्ट है,

परन्तु उन्होंने इस विज्ञान को पाठकों के लिये स्पष्ट नहीं किया।

अत: इस प्रकार के बृहत्काय ग्रन्थों का केवल यही उपयोग हो पाता है, कि हमें जिस लकार का, जिस प्रक्रिया का जो भी रूप देखना हो, उसे वहाँ देख लें। अत: ये ग्रन्थ केवल सन्दर्भग्रन्थ बनकर रह जाते हैं। किसका सामर्थ्य है जो इतने रूपों को रट ले ! अत: एक पीड़ा थी ऐसी विधि को ढूँढ निकालने की, जिसमें अष्टाध्यायी जैसा लाघव हो। ग्रन्थ का आकार केवल इसलिये बड़ा हो गया है कि बिना किसी की सहायता के इसे पढ़ा जा सके।

जब कार्य प्रारम्भ किया तब इसकी गुरुता का आभास मुझे स्वयं ही नहीं था। हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के **आचार्य डॉ. राधावल्लभ जी त्रिपाठी** जो मेरे अनुजकल्प हैं, उनका इस कार्य में बहुत बड़ा योगदान है। उन्होंने इस कार्य की गुरुता को समझा और मुझे इस कार्य में नियोजित किया। इस पद्धति के प्रदर्शन के लिये उन्होंने मुझे एक माह का समय दिया। वह इसकी प्रयोग स्थली थी।

सुप्रसिद्ध वैयाकरण पूज्य **आचार्य डॉ. रामकरण जी शर्मा,** जो अष्टाध्यायी में ही रचे पचे हैं, वे इस कार्य के साक्षी तथा प्रेरक हैं। उन्होंने पदे पदे मुझे मार्गदर्शन किया है।

अपनी प्रतिभा से पण्डित समुदाय को निस्तेज कर देने वाले मध्यप्रदेश के एकमात्र वैयाकरण **आचार्य डॉ. बच्चूलाल जी अवस्थी,** जो मेरे पितृकल्प हैं, उन्हें शब्दों में नहीं बाँधा जा सकता है। बस ऐसा लगता है कि भगवान् पाणिनि स्वयं विग्रह धारण करके उज्जयिनी में विराजमान् हैं। कार्य को करते समय सैकड़ों बार गतिरोध हुआ। जैसे सूर्य के सामने अन्धकार नहीं टिक पाता, वैसे ही मेरी शङ्काएँ इस प्रकाशपुञ्ज के सामने आते ही निर्मूल होती गईं और मैं कर्म पथ पर आगे बढ़ती गई।

एक सर्वथा नवीन पद्धति से कार्य करने के संकल्प से ही हृदय में समस्त पूज्यजनों का भय होता था। अत: कार्य प्रारम्भ करने के पूर्व ही मैंने उनके द्वार का आश्रय लिया, जिनका द्वार एक पल के लिये भी पण्डितों से रिक्त नहीं होता, जिनकी शास्त्रसाधना से काशी की विद्वत्परम्परा अखण्ड है, ऐसे अभिनव पाणिनि, व्याकरणपारावारपारङ्गत **परमपूज्य डॉ. रामप्रसाद त्रिपाठी जी** ने मेरे इस कार्य को सुनने का अनुग्रह किया। उनका शुभाशीर्वाद इस पथ का पाथेय

बना।

भगवत्कृपा से जिनके श्रीचरणों में बैठकर कुछ ग्रन्थों को पढ़ने का अवसर मिला है, ऐसे शब्दशास्त्राम्बुधिपारदृश्वा परमपूज्य गुरुदेव **आचार्य डॉ. रामयत्न जी शुक्ल** का निर्देशकौशल भी इस कार्य का महद्हेतु है, जो छात्र के हृदय में पैठकर उसके साथ एकाकार होकर उसमें व्याकरण जैसे विषय का हठात् प्रवेश करा देते हैं। उनकी अध्यापन शैली अद्भुत है।

व्याकरण मर्मज्ञ पदशास्त्रप्रवीण आचार्य **डॉ. लडुकेश्वर शतपथी जी** का पुण्यस्मरण मुझे अश्रुपूरित कर देता है, जिनकी प्रेरणा और निर्देशन मुझे सदा मिलता रहा, परन्तु इस समर्पण को स्वीकार करने के लिये वे अब नहीं हैं।

इन सभी के चरणकमलों में अपनी सादरप्रणामाञ्जलि विनिवेदित करके मैं अन्तरतम हृदय से इनके आधमर्ण्य को वहन करते हुए अपनी उस कृतज्ञता को अभिव्यक्त करना चाहती हूँ, जिसे अभिव्यक्त करने के लिये अनन्त शब्दराशि भी बहुत छोटी है।

जिस विशाल विषयाटवी में निर्भय गमन करना भी दुष्कर है, इसमें रहकर यदि कहीं भी कोई भी कुछ भी कार्य कर पाता है, तो उसमें भगवदनुग्रह ही हेतु होता है और यदि किसी कार्य को भगवत्कार्य मान लिया जाये, वे स्वयं ही अपना कार्य निष्पन्न करने के लिये नानाकृतियों में आविर्भूत हो जाते हैं।

जब इस कार्य को प्रारम्भ किया था, तब **शिष्य अभिजित् दीक्षित** तीन वर्ष का था। उसकी तुतली वाणी में अष्टाध्यायी को स्थापित कराते समय मुझे यह विश्वास नहीं था कि वह कालान्तर में इस ग्रन्थ की रचना का समानान्तर सहायक बन जायेगा। आज वह १५ वर्ष का है। उसने इस ग्रन्थ के प्रत्यक्षर के साथ विचारों को नियोजित करने के साथ साथ इस ग्रन्थ के संगणक यन्त्र (कम्प्यूटर) में उट्टङ्कण के कार्य में समग्र सहयोग दिया है। वह इस विषय को आरपार जानता है। इसलिये उसके हाथ में इस कार्य को सौंपकर मैंने असीम निर्भयता का अनुभव किया है। अष्टाध्यायी की इस नवीन विधि का वह प्रत्यक्ष निदर्शन है। कालान्तर में वह पाणिनीयविज्ञान का प्रखरवेत्ता बनेगा।

शिष्या दुर्गावती पाण्डेय ने इस ग्रन्थ के लेखन सम्बन्धी कार्य में इतने वर्षों तक अपना अविश्रम यथेष्ट सहयोग देकर, पाणिनीय शास्त्र की इस गङ्गा में अवगाहन करके अपने जीवन को धन्य किया है।

पाणिनीय शोध संस्थान में पाणिनीयशास्त्र का अध्ययन कर रहे, मेधावी शिष्यों की शङ्काओं के समाधानों ने, इस कार्य को अनवरत गति प्रदान की है। इनमें **शोधच्छात्र आचार्य श्रीराम गौतम प्रधान हैं तथा कु. किरण शास्त्री तथा कु. संस्कृति शास्त्री आदि सहायक हैं।**

पुत्र चि. अजेय त्रिवेदी तथा स्नुषा सौ. पद्मा त्रिवेदी ने इस कार्य की निर्विघ्न परिसमाप्ति हेतु भगवान् भूतभावन परमशिव को तुष्ट किया है। उनकी भगवद्भक्ति इस कार्य की पूर्णता का महनीय हेतु है। ये दोनों सर्वथा कृपाभाजन हैं। **यह भी भगवत्कृपा ही है कि आज पुत्र चि. अजेय त्रिवेदी के जन्मदिवस पर ही यह कार्य पूर्ण हुआ है।**

पूज्याग्रजा श्रीमती सुशीला वाजपेयी के शुभाशीः और अनुज डॉ. विष्णुदत्त शुक्ल तथा डॉ. शिवदत्त शुक्ल की शुभाशंसाओं ने इस कार्य में हमारे पूज्य पिताजी के प्रखर व्यक्तित्व को देखना चाहा है। मेरा विश्वास है कि ये सब इस कार्य से तृप्त होंगे।

श्रीमती पुष्पा राय, कु. ललिता वर्मा, श्रीमती अनुपमा श्रीवास्तव, डॉ. श्रीमती शची सप्रे, डॉ. भारती भट्टाचार्य प्रभृति अनेक मित्रों का समग्र अन्तर्मन इस कार्य के साथ अनवरत संलग्न था, अतः ये सभी इस कार्य के कारण हैं। मैं उन सभी की कृतज्ञ हूँ।

मैं अपने महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. **श्रीमती कुसुम सक्सेना** तथा पूर्व प्राचार्या डॉ. **शीला तिवारी** की भी कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने इस कार्य की गुरुता को समझकर, मुझे निर्विघ्न कार्य करने का अवसर दिया।

पूज्य गुरुवर्य डॉ. कृष्णकान्त जी चतुर्वेदी (जबलपुर), वैयाकरण डॉ. श्रीमती मनीषा पाठक (रायपुर), वेद, भारतीय दर्शन, भारतीय इतिहास तथा गणित के विद्वान् मनीषी अग्रजकल्प डॉ. विष्णुकान्त वर्मा (बिलासपुर), कविराज डॉ. अभिराज राजेन्द्र मिश्र (शिमला), डॉ. श्रीमती राजेश मिश्र (शिमला), कविवर डॉ. रमाकान्त शुक्ल (दिल्ली), श्रीमद्भागवत के रसज्ञ, कविता कामिनी के हास डॉ. इच्छाराम द्विवेदी (मैनपुरी), कविराज राजशेखर के मर्मज्ञ विद्वान् डॉ. भास्कराचार्य त्रिपाठी (भोपाल), वैयाकरण आचार्य चन्द्रभानु त्रिपाठी (प्रयाग), डॉ. रहसबिहारी द्विवेदी (जबलपुर), वैयाकरण डॉ. किशोरचन्द्र पाढी (पुरी), व्याकरण तथा अन्य शास्त्रों को संगणक यन्त्र से

जोड़कर भगवान् पाणिनि की प्रतिष्ठा को विश्व में प्रख्यापित करने वाले, श्रीभगवान् की मूर्तिमान् अनुपम विभूतिस्वरूप श्री पी. रामानुजन् (बेंगलोर), डॉ. सरोजा भाटे (पुणे), वैयाकरण डॉ. कमलाप्रसाद पाण्डेय (बिलासपुर), प्राचार्य श्रीनिवासाचार्य (बिलासपुर), संस्कृत के प्रकृष्ट विद्वान् आचार्य डॉ. ओम्प्रकाश त्रिवेदी, आई. पी. एस. (कमान्डेन्ट, बिलासपुर), संस्कृत के कवि तथा प्रख्यात चिकित्सक डॉ. पूर्णचन्द्र शास्त्री (बरगढ़), वैयाकरण डॉ. कृष्णदेव सारस्वत (रायपुर), वैयाकरण डॉ. कामताप्रसाद त्रिपाठी, (खैरागढ़) प्रभृति देश के मूर्धन्य संस्कृत विद्वज्जनों का समग्र भावजगत् ही इस कार्य की आकृति में प्रकट हुआ है। मैं उन सभी की कृतज्ञ हूँ।

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के निदेशक माननीय **डॉ. कमलाकान्त मिश्र** की कृतज्ञता का ख्यापन करना मेरा कर्तव्य है, जिन्होंने इस कार्य की महत्ता को समझकर, इसके प्रकाशन हेतु अनुदान स्वीकृत किया। **श्री शैलेन्द्र शर्मा तथा श्री धीरेन्द्र गुप्ता** (निम्बल कम्प्यूटर्स, बिलासपुर) ने इस कार्य में अविस्मरणीय आत्मीय सहयोग दिया है। मैं सर्वात्मना उन्हें श्रीवृद्धि का शुभाशीर्वाद देती हूँ।

हृदय में जो आविर्भूत हुआ, उसे इस आकृति में आप तक पहुँचाने में मुझे १२ वर्ष का समय लगा। इस दीर्घ काल में जाने कितने जनों का तथा जाने कितने ग्रन्थों का प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष सहयोग मिला। यह सब शब्दवाच्य नहीं है। मैं उन सभी की कृतज्ञ हूँ।

पाणिनीय धातुपाठ के सारे धातुओं के सारे लकारों तथा सारी प्रक्रियाओं के रूप इस ग्रन्थ से दो मास के श्रम से सहज सिद्ध किये जा सकते हैं, यह मेरा विश्वास है।

आकृति बड़ी होने के कारण मैंने इसके सार्वधातुक तथा आर्धधातुक खण्डों को अलग अलग कर दिया है। कहीं कहीं द्वित्वादि विधियों में सरलता के लिये कुछ नवीनता को भी स्वीकार किया है।

यह भी सूचनीय है कि सारे प्रत्ययों की इडागमव्यवस्था को मैंने **'आर्धधातुक प्रत्ययों की इडागमव्यवस्था'** के नाम से पृथक् भी प्रकाशित किया है। तृतीय खण्ड में कृदन्त के प्रकाशित हो जाने पर यह 'धात्वधिकार' पूर्ण हो जायेगा। व्याकरणशास्त्र के अध्ययन में कृच्छ्र तप करने वाले छात्र इस सुगम मार्ग से चलकर सिद्ध हों, तथा पूज्य विद्वज्जनों का शुभाशीर्वाद इसे मिले, यही

कामना है।

कमियाँ तो बहुत सी रह गई होंगी। विद्वज्जन इसे मेरी अल्पज्ञता समझकर क्षमा करें तथा उनका समाधान करके उपकृत करें, यही निवेदन है।

शब्दशास्त्र अनन्त है और जीव की शक्ति अत्यल्प है, तथापि इस अनन्त मार्ग के बीच, कहीं न कहीं अपना गन्तव्य तय करना ही पड़ता है। अतः इस अनन्त व्योम में अपने नन्हे नन्हे पङ्खों से उड़कर जितना मार्ग पार कर सकती थी, उतना किया।

पाणिनिशास्त्र का एक भी जिज्ञासु, यदि इससे कुछ पा सका, तो यही इसकी कृतार्थता होगी।

परमानन्दकन्द, वृन्दावनचन्द्र, योगीन्द्रमुनीन्द्रब्रह्मरुद्रेन्द्रादिवन्द्य, भक्तवृन्दमानससरोरुहमकरन्द, भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र के ध्वजवज्राङ्कुशादियुक्त परमपावन पादारविन्दों में जीवन की प्रत्येक क्रिया समर्पित है। यह कृति भी उन्हीं की है। मेरा कहने को कुछ भी नहीं।

विक्रमाब्द २०५५,
चैत्र कृष्ण तृतीया
५. ३. १९९९

विषयानुक्रमणिका

सार्वधातुक खण्ड

❀❀❀

अष्टाध्यायी सहजबोध
प्रथम - खण्ड

।। श्रीहरिः शरणम् ।।

प्रथम पाठ

धातु, लकार, प्रत्यय, अङ्ग, विकरण तथा इत्संज्ञा

धातुओं से लगने वाले प्रत्ययों का प्रपञ्च व्याकरण शास्त्र का सबसे गहन तथा सबसे कठिन प्रपञ्च है। एक एक धातु को लेकर उसके दस दस लकारों के रूप बनाना, उसके बाद ण्यन्त, सन्नन्त, यङन्त, भावकर्म आदि प्रक्रियाएँ बनाना तथा कृदन्त बनाना, यह सब मिलकर एक महाटवी बन जाती है। कौमुदीक्रम अथवा अष्टाध्यायीक्रम में से किसी भी क्रम से चलने में घोर काठिन्य है।

अतः पाणिनीय अष्टाध्यायी का आश्रय लेकर एक सर्वथा नवीन विधि से धातु सम्बन्धी सारे कार्य करने की प्रक्रिया इस ग्रन्थ में निबद्ध है। इसमें दसों लकारों के प्रत्यय बने बनाये स्वीकार कर लिये गये हैं। प्रत्यय बने बनाये स्वीकार कर लेने से प्रत्ययों को बनाने में जो श्रम होता है, उससे मुक्ति मिल गई है।

अष्टाध्यायी में धातु सम्बन्धी सारे कार्य करने वाले जो सूत्र हैं, उनमें से यदि प्रत्यय बनाने वाले सूत्रों को छोड़ दिया जाये, तो कुल ६७२ सूत्र बचते हैं, जिनके द्वारा सारे धातुओं के सारे लकारों में रूप बनाने का कार्य निष्पन्न हो जाता है। इस ग्रन्थ 'अष्टाध्यायी सहजबोध' में ये ६७२ सूत्र ही अर्थसहित दिये गये हैं, किन्तु इन सूत्रों तथा उनके अर्थों को याद करने का विज्ञान यही है कि इन्हें अष्टाध्यायी के क्रम से ही याद किया जाये। ऐसा करने से अनुवृत्ति के द्वारा सूत्रों के अर्थ स्वयं बनते जाते हैं। अतः हमने इस ग्रन्थ के द्वितीय खण्ड के अन्त के परिशिष्ट में इन सारे सूत्रों को अष्टाध्यायी के क्रम से लिख दिया है। इन्हें इसी क्रम से याद करें। वहाँ हमने अनुवृत्ति के द्वारा सूत्रों के अर्थ बनाने की विधि भी दी है।

धातुओं के रूपों का अनेकविधि से आलोचन करने पर, यही निष्कर्ष मिलता है कि जब भी धातु से कोई प्रत्यय लगता है, तब वह प्रायः अजन्त धातुओं के अन्तिम स्वर को तथा हलन्त धातुओं की उपधा (अन्त के ठीक पहले) के स्वर को प्रभावित करता है। अतः प्रत्ययों के प्रभाव की दृष्टि से, तथा धातुओं

के अन्य कार्यों की दृष्टि से हमने पाणिनीय धातुपाठ तो ज्यों का त्यों, पूरा का पूरा लिया है किन्तु उसके क्रम को पूर्णतः परिवर्तित करके उसे इस प्रकार बना दिया है -

अजन्त धातुओं का विभाजन - आकारान्त धातु, इकारान्त धातु, ईकारान्त धातु, उकारान्त धातु, ऊकारान्त धातु, ऋकारान्त धातु, ॠकारान्त धातु, तथा एजन्त धातु अर्थात् ए, ओ, ऐ, औ से अन्त होने वाले धातु।

हलन्त धातुओं का विभाजन - हलन्त धातुओं को हमने इस प्रकार व्यवस्थित किया है - अदुपध धातु, इदुपध धातु, उदुपध धातु, ऋदुपध धातु तथा शेष धातु। यह करते समय हमने पाणिनीय धातुपाठ के पूरे के पूरे धातु लिये है, एक भी धातु कम नहीं किया है, ताकि हम मूल से लेशमात्र भी न हटें। ऐसा करने से धातु सम्बन्धी सारा कार्य इतना सरल हो गया है कि इस ग्रन्थ से, बिना किसी गुरु की सहायता के, दसों लकारों के रूप तथा सारी प्रक्रियाएँ स्वयं सिद्ध की जा सकती हैं।

धातु - होना, जाना, करना, पढना, देखना आदि जितनी भी क्रियाएँ होती हैं, उन क्रियाओं के वाचक जो भू, गम्, कृ, पठ्, दृश् आदि शब्द हैं, उनको संस्कृत में धातु कहा जाता है। इसके लिये सूत्र है -

भूवादयो धातवः - क्रिया के वाची भू आदि की धातु संज्ञा होती है। ये सारे धातु भगवान् पाणिनि ने धातुपाठ में इकट्ठे करके दे दिये हैं। उसी धातुपाठ के आधार पर इस ग्रन्थ की रचना हुई है। धातुपाठ में १९४३ धातु हैं। इन धातुओं को उन्होंने १० वर्गों में विभाजित किया है। इन वर्गों को गण कहते हैं। इन समस्त धातुओं के, दसों लकारों में रूप बनाना हमें सीखना है।

इस धातुपाठ में कहे गये धातुओं के अलावा तृतीय अध्याय में 'गुप्तिज्किद्भ्यः सन्' (३.१.५) सूत्र से लेकर 'आयादय आर्धधातुके वा' (३.१.३१) तक के सूत्रों में १२ प्रत्यय कहे गये हैं। ये प्रत्यय जिस भी शब्द के अन्त में लग जाते हैं, उसका नाम भी धातु हो जाता है। ये सूत्र इस प्रकार हैं -

१. गुप्तिज्किद्भ्यः **सन्**
२. मान्बधदान्शान्भ्यो - दीर्घश्चाभ्यासस्य
३. धातोः कर्मणः - समानकर्तृकादिच्छायां वा
४. सुप आत्मनः **क्यच्**
५. **काम्यच्च**
६. उपमानादाचारे
७. कर्तुः **क्यङ्** सलोपश्च

सर्वप्रातिपदिकेभ्यः **क्विब्वा** - वक्तव्यः (वार्तिक)
८. भृशादिभ्यो भुव्यच्वेर्लोपश्च हलः
९. लोहितादिडाज्भ्यः **क्यष्**
१०. कष्टाय क्रमणे
११. कर्मणो रोमन्थतपोभ्यां वर्तिचरोः
१२. वाष्पोष्मभ्यामुद्वमने
१३. शब्दवैरकलहाभ्रकण्वमेघेभ्यः करणे
१४. सुखादिभ्यः कर्तृवेदनायाम्
१५. नमोवरिवसश्चित्रङः क्यच्
१६. पुच्छभाण्डचीवरा**ण्णिङ्**
१७. मुण्डमिश्रश्लक्ष्णलवणव्रत - वस्त्रहलकलकृततूस्तेभ्यो **णिच्**
१८. धातोरेकाचो हलादेः क्रियासम - भिहारे **यङ्**
१९. नित्यं कौटिल्ये गतौ
२०. लुपसदचरजपजभदहदशगॄभ्यो - भावगर्हायाम्
२१. सत्यापपाशरूपवीणातूलश्लोक - सेनालोमत्वचवर्मवर्णचूर्ण - चुरादिभ्यो णिच्
२२. हेतुमति च
२३. कण्ड्वादिभ्यो **यक्**
२४. गुपूधूपविच्छिपणिपनिभ्यः **आयः**
२५. **ऋतेरीयङ्**
२६. कमेर्णिङ्
२७. आयादय आर्धधातुके वा

सनाद्यन्ता धातवः - ऊपर कहे गये सन्, क्यच् ,काम्यच्, क्यष्, क्यङ्, क्विप्, णिङ्, ईयङ्, णिच्, यक्, आय, यङ्, ये १२ प्रत्यय जिसके भी अन्त में लगते हैं, उसका नाम भी 'धातु' हो जाता है। इस प्रकार धातुओं की संख्या अनन्त हो जाती है। इन समस्त प्रत्ययान्त धातुओं के दसों लकारों में रूप बनाना भी हमें सीखना है।

धातुरूप - 'जाना' यह तो धातु है परन्तु जब इसे हम कहते हैं - जाता है, जाते हो, जाता हूँ, गया, जायेगा, जाना चाहिये आदि, तब ये सारे रूप, जो 'जाना' क्रिया से बने हैं, धातुरूप कहलाने लगते हैं। सभी भाषाओं में ऐसा ही होता है।

इसी प्रकार संस्कृत में जब 'होना' अर्थ वाले 'भू' धातु से, भवति, भवसि, भवामि, भविष्यति, अभवत् आदि अनेक रूप बनते हैं तो उन्हें हम धातुरूप कहते हैं। ये रूप, धातु में प्रत्यय जोड़कर तैयार किये जाते हैं। इन धातुरूपों का ही वाक्यों में प्रयोग किया जाता है, केवल धातु का नहीं।

जब हम कहते हैं - 'वह होता है', तब 'भू धातु' में 'ति' प्रत्यय लगकर बनता है - सः भवति। जब हम कहते हैं - 'तुम होते हो' तब 'भू धातु' से

'सि' प्रत्यय लगाकर बनता है - त्वं भवसि।

जब हम कहते हैं - 'तुम होगे' तब 'भू धातु' से 'स्यति' प्रत्यय लगाकर बनता है - त्वं भविष्यसि।

जब हम कहते हैं - 'तुम हुए' तब 'भू धातु' से 'स्' प्रत्यय लगाकर बनता है - त्वं अभूः।

इस प्रकार एक ही 'भू धातु' कभी 'भवति' बनता है, कभी 'भवसि', कभी 'भवामि', कभी 'भविष्यति' कभी 'अभूः' आदि। ये ही धातुरूप हैं।

लकार

'लकार' वस्तुतः पाणिनीय अष्टाध्यायी के तृतीय पाद में, धातुओं से विहित प्रत्यय हैं। पाणिनीय अष्टाध्यायी में ये लकार प्रत्यय दस हैं। लट्, लिट्, लुट्, लृट्, लेट्, लोट्, लङ्, लिङ्, लुङ् तथा लृङ्। इनमें से लिङ् लकार दो प्रकार का होता है। सार्वधातुक लिङ् तथा आर्धधातुक लिङ्। इनमें से सार्वधातुक लिङ् को विधिलिङ् कहते हैं तथा आर्धधातुक लिङ् को आशीर्लिङ् कहते हैं। लेट् लकार भी दो प्रकार का होता है। सार्वधातुक लेट् तथा आर्धधातुक लेट्। इस प्रकार ये लकार १२ प्रकार के हो गये।

व्याकरण शास्त्र की परम्परा के अनुसार इन्हें इस क्रम में पढ़ाया जाता है - लट्, लिट्, लुट्, लृट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्, आशीर्लिङ्, लुङ्, लृङ्, तथा सबसे अन्त में लेट्।

वस्तुतः इस क्रम ने ही, व्याकरण के तिङन्त प्रकरण को जटिल बना दिया है। पाणिनीय अष्टाध्यायी में भी लकारों का यह क्रम नहीं है। यह तो वस्तुतः अकारादि क्रम है। जैसे - अ से बनाया लट्, इ से बनाया लिट्, उ से बनाया लुट्, ऋ से बनाया लृट्, ए से बनाया लेट्, ओ से बनाया लोट् आदि।

परन्तु लट् और लिट् लकारों के रूप बनाने की प्रक्रिया में जमीन आसमान का अन्तर है। अतः लट् लकार के बाद लिट् लकार नहीं पढ़ना चाहिये।

अपितु उन्हीं लकारों को एक साथ पढ़ना चाहिये, जिनके रूप बनाने की प्रक्रिया एक समान है। जैसे - लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् तथा सार्वधातुक लेट् लकारों के रूप बनाने की प्रक्रिया एक समान है, अतः इन्हें एक साथ पढ़ना चाहिये। इसी में सरलता है। अतः प्रक्रिया की दृष्टि से हमने इन लकारों के दो वर्ग बना दिये हैं। सार्वधातुक लकार तथा आर्धधातुक लकार। ये इस प्रकार

हैं -

१. **सार्वधातुक लकार** - लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् तथा सार्वधातुक लेट्, ये पाँच लकार सार्वधातुक लकार कहलाते हैं। इन पाँच लकारों के कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्यय जब भी धातुओं से लगेंगे, तब धातु + प्रत्यय के बीच में उस गण का विकरण आकर अवश्य बैठेगा, जिस गण का वह धातु है। जैसे - भू + ति - भू + शप् + ति = भवति। इन पाँचों लकारों के रूप बनाने की प्रक्रिया एक समान है।

२. **आर्धधातुक लकार** - लिट्, लुट्, लृट् आशीर्लिङ्, लुङ्, लृङ् तथा आर्धधातुक लेट्, ये सात लकार आर्धधातुक लकार कहलाते हैं। इन सात आर्धधातुक लकारों के जो प्रत्यय होंगे, उन्हें लगाते समय धातु + प्रत्यय के बीच में विकरण बिल्कुल नहीं बैठगा। जैसे - भू + यात् = भूयात्। यही इन दोनों प्रकार के लकारों की प्रक्रिया का प्रमुख अन्तर है।

सार्वधातुक लकार

१. **वर्तमाने लट्** - जब कोई क्रिया प्रारम्भ की जाये, तो जब तक वह समाप्त न हो जाये, तब तक का काल वर्तमान काल कहलाता है। जैसे **देवदत्तः पठति**, इसका अर्थ है देवदत्त पढ़ता है, या देवदत्त पढ़ रहा है। अर्थात्, पढ़ता है, पढ़ रहा है, इन दोनों ही के लिये, हम लट् लकार के प्रत्यय ही लगायेंगे। संस्कृत में इन दोनों को अलग अलग प्रकार से नहीं बोला जाता।

२. **विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसम्प्रश्नप्रार्थनेषु लिङ्** - विधि, निमन्त्रण, आमन्त्रण, अधीष्ट, संप्रश्न तथा प्रार्थना, इतने अर्थों में लिङ् लकार का प्रयोग होता है। ये अर्थ इस प्रकार हैं -

विधि - विधि का अर्थ है - अपने से छोटे किसी व्यक्ति को काम से लगाना। जैसे - स्वामी सेवक से कहता है - वस्त्रं क्षालयेः - कपड़े धो दो।

निमन्त्रण - श्राद्ध आदि में दौहित्र (नाती) आदि को भोजन के लिए बुलाना। इह श्राद्धे भवान् भुञ्जीत।

आमन्त्रण - जहाँ कार्य को करना या न करना, करने वाले की इच्छा पर छोड़ दिया जाये, उस कामाचारानुज्ञा को आमन्त्रण कहते है। यथा - इह भवान् भुञ्जीत - आप यहाँ भोजन करें। करें या न करें, यह आपकी इच्छा।

अधीष्ट - सत्कार पूर्वक व्यापार को अधीष्ट कहते हैं। जैसे - मेरे बच्चे

को आप पढ़ा दीजियेगा। भवान् माणवकम् अध्यापयेद्।

संप्रश्न - इस प्रकार का काम करें या न करें, ऐसे विचार को संप्रश्न कहते हैं। क्यों भाई, क्या मैं व्याकरण पढ़ूँ ? किं नु खलु भो: व्याकरणमधीयीय?

प्रार्थन - प्रार्थन, याच्ञा (माँगना) को कहते हैं। भवान् मे अन्नं दद्यात्।

वस्तुत: जब भी किसी को, किसी काम में लगाया जाये तो उसे प्रवर्तना कहते हैं। ये विधि आदि सब प्रवर्तना के ही भेद हैं। उस प्रवर्तना अर्थ में लिङ् लकार होता है, यह समझना चाहिये।

३. लोट् च - विधिलिङ् के उक्त अर्थों में ही लोट् लकार का भी प्रयोग किया जा सकता है। भवतो मङ्गलं भवतु।

४. लिङर्थे लेट् - वेद विषय में लिङ् के इन अर्थों में ही धातु से विकल्प से लेट् लकार होता है।

उपसंवादाशङ्कयोश्च - उपसंवाद तथा आशंका अर्थ गम्यमान होने पर, धातु से विकल्प से लेट् लकार होता है। तू ऐसा करे तो मैं भी ऐसा करूँ (निहारञ्च हरासि मे निहारं निहराणि ते स्वाहा), ऐसे परस्पर व्यवहार को उपसंवाद कहा जाता है। आशंका का उदाहरण इस प्रकार है- कुटिल आचरण करते हुए कहीं हम नरक में न जा गिरें (नेज्जिह्मायन्तो नरकं पताम)।

५. अनद्यतने लङ् - न विद्यते अद्यतनं यस्मिन्। जिस काल में अद्यतन काल शामिल न हो, उसे अनद्यतन काल कहते हैं। बीती हुई रात्रि के अन्तिम प्रहर से लेकर आने वाली रात्रि के प्रथम प्रहर तक का काल अद्यतन काल कहलाता है। यह काल जिसमें सम्मिलित न हो उसे अनद्यतन काल कहते हैं। ह्य: देवदत्त: अकरोत्। देवदत्त ने कल किया। यह अनद्यतन भूतकाल है।

आर्धधातुक लकार

६. परोक्षे लिट् - परोक्ष का अर्थ होता है - अक्ष्ण: पर:। जो काल हमारी इन्द्रियों से न देखा गया हो, ऐसे काल के लिये हमें लोक में लिट् लकार के प्रत्ययों का प्रयोग करना चाहिये। जैसे - रामो बभूव = राम हुए थे।

छन्दसि लिट् - वेद में सामान्य भूतकाल अर्थ में भी, लिट् लकार के प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है। अहं सूर्यमुभयतो ददर्श। अहं द्यावापृथिवी आततान।

७. अनद्यतने लुट् - ऊपर जो अनद्यतन काल बतलाया गया है, ऐसे

अनद्यतन भविष्यत् काल में लुट् लकार के प्रत्यय लगाये जाते हैं। जैसे देवदत्तः श्वः कर्ता। श्वो भोक्ता। देवदत्त कल करेगा, कल खायेगा आदि।

८. **लृट् शेषे च** - परन्तु यदि इस काल में अद्यतन काल मिल जाये, तो ऐसे व्यामिश्र काल में लुट् लकार के प्रत्ययों का प्रयोग नहीं होगा, उसमें लृट् का प्रयोग किया जायेगा। जैसे - अद्य श्वो वा भविष्यति = आज या कल होगा। अतः जानिये कि सामान्य भविष्यत्काल में लृट् लकार का प्रयोग किया जाता है।

९. **आशिषि लिङ्लोटौ** - आशीः का अर्थ होता है - अप्राप्त को पाने की इच्छा, न कि आशीर्वाद देना। यथा - आयुष्यं भूयात्। शत्रुः म्रियात्।

ये दोनों ही इच्छाएँ अप्राप्त को पाने की हैं। अतः दोनों में ही आशीर्लिङ् लकार का प्रयोग होता है, केवल सदिच्छा में ही नहीं।

१०. **लुङ्** - इस सूत्र के अनुसार सामान्य भूत के लिये लुङ् लकार का प्रयोग किया जाता है। देवदत्तः अभूत् = देवदत्त हुआ।

११. **लिङ्निमित्ते लृङ् क्रियातिपत्तौ** - भविष्यत्काल में लिङ् का निमित्त होने पर, यदि क्रिया की अतिपत्ति अर्थात् क्रिया का सिद्ध न होना गम्यमान हो, तो धातु से लृङ् लकार के प्रत्यय होते हैं। जैसे - सुवृष्टिश्चेदभविष्यत् सुभिक्षमभविष्यत् = यदि अच्छी वर्षा होगी तो अच्छा अन्न होगा। भवान् घृतेन अभोक्ष्यत् यदि मत्समीपमासिष्यत् = मेरे पास रहोगे तो घी से खाओगे।

१२. **आर्धधातुक लेट्** - सार्वधातुक लेट् के अर्थों में ही आर्धधातुक लेट् लकार होता है। इन दोनों के अर्थों में, वस्तुतः कोई भेद नहीं है। केवल प्रत्ययों में भेद है। सार्वधातुक लेट् लकार के प्रत्यय आगे दिये जा रहे हैं। उन्हीं प्रत्ययों के आदि में, यदि सिप् = स्, जोड़ दिया जाये, तो ये प्रत्यय ही आर्धधातुक लेट् लकार के प्रत्यय बन जाते हैं। यह दसों लकारों का संक्षिप्त परिचय हुआ। लकारों का विस्तृत विवेचन अगले खण्ड में **'लकारार्थ'** में है।

लकारों के अर्थ

लः कर्मणि च भावे चाकर्मकेभ्यः - लकार, सकर्मक धातुओं से कर्ता और कर्म अर्थों में होते हैं। अकर्मक धातुओं में चूँकि कर्म नहीं होता, अतः अकर्मक धातुओं से लकार, कर्ता और भाव अर्थों में होते हैं। इस प्रकार वाक्य संरचना के आधार पर लकारों के ये तीन अर्थ होते हैं - कर्ता, कर्म तथा भाव। इन्हीं को हम कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य, कहते हैं। इनके उदाहरण -

कर्ता अर्थ में लकार -

सः पुस्तकं पठति = वह पुस्तक पढ़ता है। इस वाक्य में कर्ता प्रधान होकर क्रिया कर रहा है। अतः यह वाक्य कर्तृवाच्य का वाक्य है।

कर्तृवाच्य के वाक्य में कर्ता, प्रथमा विभक्ति में होता है। कर्म द्वितीया विभक्ति में होता है तथा क्रिया, कर्ता के अधीन होती है।

अतः जब वाक्य में आपको कर्ता, प्रथमा विभक्ति में दिखे, तब आप जानिये, कि वाक्य कर्तृवाच्य का है, तथा उस वाक्य में जो भी 'लकार' आया है, उस लकार का अर्थ कर्ता है। जैसे - देवदत्तः ग्रामं गच्छति, देवदत्तः ग्रन्थं पठति, आदि। यहाँ 'पठति' 'गच्छति' में जो लट् लकार का 'ति' प्रत्यय है, उसका अर्थ कर्ता है। ऐसे 'ति' प्रत्यय को हम कर्त्रर्थक प्रत्यय कहते हैं।

कर्म अर्थ में लकार -

तेन पुस्तकं पठ्यते = उसके द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है। इस वाक्य में कर्ता तो क्रिया कर रहा है, किन्तु यहाँ प्रधानता कर्म की है, कर्ता की नहीं। अतः कर्ता के अप्रधान होने के कारण और कर्म के प्रधान होने के कारण, यह कर्मवाच्य का वाक्य है।

कर्मवाच्य के वाक्य में कर्ता, तृतीया विभक्ति में होता है। कर्म प्रथमा विभक्ति में होता है तथा क्रिया कर्म के अधीन होती है। अतः जब वाक्य में आपको, कर्ता, तृतीया विभक्ति में दिखे, कर्म प्रथमा विभक्ति में दिखे, तब आप जानिये, कि वाक्य कर्मवाच्य का है, तथा उस वाक्य में जो भी 'लकार' आया है, उस लकार का अर्थ कर्म है। जैसे - देवदत्तेन ग्रामः गम्यते, देवदत्तेन ग्रन्थः पठ्यते, आदि। यहाँ 'पठ्यते' 'गम्यते' में जो लट् लकार का 'ते' प्रत्यय है, उसका अर्थ कर्म है। ऐसे 'ते' प्रत्यय को हम कर्मार्थक प्रत्यय कहते हैं।

भाव अर्थ में लकार -

तेन अत्र स्थीयते = उसके द्वारा यहाँ ठहरा जाता है, इस वाक्य में कर्ता तो क्रिया कर रहा है, किन्तु यहाँ कर्म न होने के कारण प्रधानता भाव अर्थात् क्रिया की ही है, कर्ता की नहीं। अतः कर्ता के अप्रधान होने के कारण और भाव के प्रधान होने के कारण यह भाववाच्य का वाक्य है।

अतः जब वाक्य में आपको, कर्ता, तृतीया विभक्ति में दिखे, और क्रिया अकर्मक हो, तब आप यह जानिये, कि वाक्य भाववाच्य का है, तथा उस वाक्य

में जो भी लकार आया है, उस 'लकार' का अर्थ भाव है। जैसे - देवदत्तेन स्थीयते, देवदत्तेन शय्यते, आदि। यहाँ देवदत्त कर्ता है और वह तृतीया विभक्ति में है, और क्रिया अकर्मक है। अत: ऐसे वाक्यों को आप, भाववाच्य का वाक्य समझिये, और जानिये कि यहाँ 'स्थीयते' 'शय्यते' के 'ते' का अर्थ भाव है। ऐसे 'ते' प्रत्यय को हम भावार्थक प्रत्यय कहते हैं।

इस खण्ड में हम, केवल कर्त्रर्थक लकारों की अर्थात् कर्तृवाच्य वाले लकारों की ही चर्चा करेंगे। कर्मार्थक तथा भावार्थक लकारों की चर्चा अगले खण्ड में भावकर्म प्रक्रिया में करेंगे।

धातुओं से लगने वाले प्रत्यय

अभी लकार बतलाये गये। अब लकारों के स्थान पर लगने वाले सारे प्रत्यय, तथा धातुओं से लगने वाले अन्य सारे प्रत्यय, एक साथ बतला रहे हैं। एक साथ इसलिये, कि इन सारे प्रत्ययों से हमारा परिचय एक साथ हो जाये।

ये प्रत्यय बहुत सारे हैं। अत: आप इन प्रत्ययों को अभी याद करने की चेष्टा बिल्कुल न करें। अभी इन्हें केवल इस दृष्टि से देखें कि भविष्य में कहीं भी, इनमें से किसी प्रत्यय के मिलने पर, आप उसे पहिचान सकें, कि वह प्रत्यय सार्वधातुक है अथवा आर्धधातुक है।

ध्यान रहे कि इन प्रत्ययों को अभी केवल पढ़कर पहिचानना है, याद नहीं करना है, अन्यथा भीषण कठिनाई होगी। आगे जिस भी लकार के रूप बनाना हम सीखेंगे, केवल उसी लकार के प्रत्यय, उसी समय याद करते चलेंगे।

विशिष्ट जिज्ञासु पाठक अष्टाध्यायी का तृतीय अध्याय देखें। उसमें दो धात्वधिकार हैं।

१. अष्टाध्यायी का प्रथम धात्वधिकार 'धातोरेकाचो हलादे: क्रियासमभिहारे यङ्' सूत्र ३. १. २२ से लेकर सूत्र ३. १. ९० तक चलता है।

२. अष्टाध्यायी का द्वितीय धात्वधिकार 'धातो:' सूत्र ३. १. ९१ से लेकर 'छन्दस्युभथा' सूत्र ३. ४. ११७ तक चलता है।

इन दोनों धात्वधिकारों में धातुओं से लगने वाले प्रत्यय कहे गये हैं।

धातुओं से लगने वाले प्रत्ययों में से तिङ् प्रत्यय इस प्रकार हैं -

तिप् तस् झि सिप् थस् थ मिप् वस् मस् त आताम् झ थास् आथाम् ध्वम् इट् वहि महिङ् - ये १८ प्रत्यय, तिङ् प्रत्यय कहलाते हैं।

ध्यान दें कि इन तिङ् प्रत्ययों में से तिप्, तस्, झि, सिप्, थस्, थ, मिप्, वस्, मस्, ये ९ प्रत्यय परस्मैपद के प्रत्यय हैं तथा त, आताम्, झ, थास्, आथाम् ध्वम्, इट्, वहि, महिङ्, ये ९ प्रत्यय आत्मनेपद के प्रत्यय हैं।

तिप्, तस्, झि, प्रथमपुरुष के प्रत्यय हैं। सिप्, थस्, थ, मध्यमपुरुष के प्रत्यय हैं। मिप्, वस्, मस्, उत्तमपुरुष के प्रत्यय हैं। त, आताम्, झ, प्रथमपुरुष के प्रत्यय हैं। थास्, आथाम् ध्वम् मध्यमपुरुष के प्रत्यय हैं। इट्, वहि, महिङ्, उत्तमपुरुष के प्रत्यय हैं।

शित् प्रत्यय इस प्रकार हैं - शप्, श्यन्, श्नु, श, श्नम्, श्ना, शायच्, शानच्, शतृ, शानच्, शानन्, चानश्, खश्, श, एश्, शध्यै, शध्यैन् = १७।

तिङ् शित् सार्वधातुकम् - इन १८ तिङ् तथा १७ शित् = ३५ प्रत्ययों की सार्वधातुक संज्ञा होती है।

ध्यान रहे कि इन १८ तिङ् प्रत्ययों की ही आकृति बदल बदलकर सारे लकारों के प्रत्यय बनाये जाते हैं। अतः सभी लकारों के प्रत्ययों को तिङ् प्रत्यय ही कहा जाता है।

जिज्ञासु पाठक देखें कि इन १८ तिङ् प्रत्ययों की आकृति बदल बदलकर लकारों के प्रत्यय बनाने वाले सूत्र अष्टाध्यायी में मुख्यतः 'लस्य' - ३.४.७७ से लेकर छन्दस्युभयथा ३.४.११७ तक हैं। इसे ही 'लाधिकार' कहा जाता है।

यहाँ हमें बहुत सावधान होकर यह भी समझ लेना चाहिये कि लट्, लोट्, लङ् तथा विधिलिङ् लकारों के प्रत्यय तो तिङ् सार्वधातुक प्रत्यय कहलाते हैं तथा शेष लकारों के प्रत्यय तिङ् आर्धधातुक प्रत्यय कहलाते हैं।

सार्वधातुक प्रत्यय

सार्वधातुक प्रत्यय वस्तुतः तीन प्रकार के होते हैं - तिङ् सार्वधातुक प्रत्यय, कृत् सार्वधातुक प्रत्यय तथा विकरण सार्वधातुक प्रत्यय।

संस्कृत में समस्त धातु १० गणों (हिस्सों) में बँटे हुए हैं। ये गण आगे बतलाये जायेंगे। इन गणों के हमें पुनः दो समूह बना लेना चाहिये।

१. प्रथम गण समूह अर्थात् भ्वादिगण, दिवादिगण, तुदादिगण तथा चुरादिगण के धातु।

२. द्वितीय गण समूह अर्थात् अदादि, जुहोत्यादि, स्वादि, रुधादि, तनादि, तथा क्र्यादि गण के धातु। इन दोनों गणों के धातुओं से लगने वाले तिङ् सार्वधातुक

प्रत्यय अलग अलग हैं। ये इस प्रकार हैं -

१. तिङ् सार्वधातुक प्रत्यय

अब तिङ् सार्वधातुक प्रत्यय बतलाये जा रहे हैं। ध्यान रहे कि ये सारे तिङ् सार्वधातुक प्रत्यय इन १८ तिङ् प्रत्ययों से ही बने हैं।

प्रथम गणसमूह के तिङ् सार्वधातुक प्रत्यय

ध्यान रहे कि ये प्रत्यय केवल 'अदन्त' अङ्गों के लिये हैं।

जब भी किसी धातु में विकरण को जोड़ने के बाद, उस जोड़ के अन्त में आपको ह्रस्व 'अ' दिखे, तब आप उसके लट्, लोट्, लङ् तथा विधिलिङ् लकारों के रूप बनाने के लिये इन्हीं प्रत्ययों का प्रयोग कीजिये।

भ्वादि, दिवादि, तुदादि तथा चुरादिगण के धातुओं में विकरण को जोड़ने के बाद उस जोड़ के अन्त में सदा ह्रस्व 'अ' ही होता है, अतः आप इन गणों के धातुओं के लट्, लोट्, लङ् तथा विधिलिङ् लकारों के रूप बनाने के लिये इन्हीं प्रत्ययों का प्रयोग कीजिये।

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	लट् लकार					
प्र. पु.	ति	तः	अन्ति	ते	इते	अन्ते
म. पु.	सि	थः	थ	से	इथे	ध्वे
उ. पु.	मि	वः	मः	ए	वहे	महे
	लोट् लकार					
प्र. पु.	तु, तात्	ताम्	अन्तु	ताम्	इताम्	अन्ताम्
म. पु.	0, तात्	तम्	त	स्व	इथाम्	ध्वम्
उ. पु.	आनि	आव	आम	ऐ	आवहै	आमहै
	लङ् लकार					
प्र. पु.	त्	ताम्	अन्	त	इताम्	अन्त
म. पु.	स् (:)	तम्	त	थाः	इथाम्	ध्वम्
उ. पु.	अम्	व	म	इ	वहि	महि
	विधिलिङ् लकार					
प्र.पु.	इत्	इताम्	इयुः	ईत	ईयाताम्	ईरन्

म.पु.	इः	इतम्	इत	ईथाः	ईयाथाम्	ईध्वम्
उ.पु.	इयम्	इव	इम	ईय	ईवहि	ईमहि

द्वितीय गण समूह के तिङ् सार्वधातुक प्रत्यय

ध्यान रहे कि ये प्रत्यय केवल 'अनदन्त' अङ्गों के लिये हैं।

जब भी किसी धातु में विकरण को जोड़ने के बाद, उस जोड़ के अन्त में आपको ह्रस्व 'अ' न दिखे, तब आप उसके लट्, लोट्, लङ् तथा विधिलिङ् लकारों के रूप बनाने के लिये इन्हीं प्रत्ययों का प्रयोग कीजिये।

अदादि, जुहोत्यादि, स्वादि, रुधादि, तनादि, क्र्यादि गण के धातुओं में विकरण को जोड़ने के बाद कभी भी उस जोड़ के अन्त में ह्रस्व 'अ' नहीं होता है। अतः आप इन गणों के धातुओं के लट्, लोट्, लङ् तथा विधिलिङ् लकारों के रूप बनाने के लिये इन्हीं प्रत्ययों का प्रयोग कीजिये।

यङ्लुगन्त धातुओं में विकरण नहीं लगाया जाता तथा यङ्लुगन्त धातुओं के अन्त में कभी भी ह्रस्व 'अ' नहीं होता है, अतः इनके लट्, लोट्, लङ् तथा विधिलिङ् लकारों के रूप बनाने के लिये भी आप इन्हीं प्रत्ययों का प्रयोग कीजिये।

लट् लकार

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	***ति***	तः	अन्ति	ते	आते	अते
म. पु.	***सि***	थः	थ	से	आथे	ध्वे
उ. पु.	***मि***	वः	मः	ए	वहे	महे

देखिये, कि इन सार्वधातुक प्रत्ययों में, कुछ प्रत्यय तिरछे, मोटे तथा बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं। ऐसे प्रत्ययों का नाम 'पित् सार्वधातुक प्रत्यय' है। इनमें से भी जो प्रत्यय हल् से प्रारम्भ हो रहे हैं वे 'हलादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय' हैं तथा जो अच् से प्रारम्भ हो रहे हैं वे 'अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय' हैं, यह जानिये।

जो प्रत्यय सीधे, पतले तथा छोटे अक्षरों में लिखे गये हैं, उनका नाम 'अपित् सार्वधातुक प्रत्यय' है। इनमें से भी जो प्रत्यय हल् से प्रारम्भ हो रहे हैं वे 'हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय' हैं, तथा जो अच् से प्रारम्भ हो रहे हैं वे 'अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय' हैं।

प्रत्ययों को पित् तथा अपित् वर्गों में क्यों बाँटा गया है, यह अङ्गकार्य करते समय बतलाया जायेगा। इन्हें पहिचानना धातुरूप बनाने की प्रक्रिया का सबसे आवश्यक कार्य है।

लट् लकार के इन प्रत्ययों को इस प्रकार पहिचानिये -

हलादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय - ***ति, सि, मि।***
अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय - कोई नहीं।
हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय - तः, थः, थ, वः, मः, ते, से, ध्वे, वहे, महे।
अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय - अन्ति, आते, अते, आथे, ए।

लोट् लकार

प्र. पु.	***तु,*** तात्	ताम्	अन्तु	ताम्	आताम्	अताम्
म. पु.	हि, तात्	तम्	त	स्व	आथाम्	ध्वम्
उ. पु	***आनि***	***आव***	***आम***	***ऐ***	***आवहै***	***आमहै***

इन प्रत्ययों को इस प्रकार पहिचानिये -

हलादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय - ***तु,।***
अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय - आनि, आव, आम, ऐ, आवहै, आमहै।
हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय - हि, तात्, ताम्, तात्, तम्, त, ताम्, स्व, ध्वम्।
अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय - अन्तु, आताम्, अताम्, आथाम्।

लोट् लकार के हि प्रत्यय का विचार

यहाँ हम केवल यह बतलाना चाह रहे हैं कि लोट् लकार का 'हि' प्रत्यय कब पित् होता है और कब अपित् होता है। अतः इसे पढ़कर केवल इसे पित् अथवा अपित् पहिचानना सीखिये। उदाहरणों पर मत जाइये। इसके पित् या अपित् होने से रूप बनने में क्या हुआ है, यह भी अभी जानने की चेष्टा मत कीजिये। यह आगे अङ्ग कार्य करते समय बतलाया जायेगा।

सेर्ह्यपिच्च- लट् लकार का जो सि प्रत्यय है, वही लोट् लकार में हि बन जाता है तथा वह 'अपित्' भी होता है। जैसे - अपित् होने पर - लुनीहि, पुनीहि, राध्नुहि।

वा छन्दसि - लट् लकार का जो सि प्रत्यय है, वही लोट् लकार में

'हि' बन जाता है किन्तु वेद में वह विकल्प से अपित् होता है। जैसे - पित् होने पर - जुहोधि, प्रीणाहि। अपित् होने पर - जुहुधि, प्रीणीहि।

हुझल्भ्यो हेर्धिः - हु धातु तथा झलन्त धातुओं से परे आने वाले 'हि' प्रत्यय के स्थान पर 'धि' आदेश होता है। यथा - जुहु + हि - जुहुधि / भिन्द् + हि - भिन्द्धि।

श्रुशृणुपृकृवृभ्यश्छन्दसि - श्रु, शृणु, पृ, कृ, वृ धातुओं से परे आने वाले हि प्रत्यय के स्थान पर वेद में धि आदेश होता है। श्रु + हि - श्रुधी हवम् / शृणु + हि - श्रृणुधी गिरः / रायस्पूर्धि / उरुणस्कृधि / अपावृ + हि - अपावृधि।

अङितश्च - ऊपर कहे गये **'वा छन्दसि'** सूत्र के अनुसार 'हि' प्रत्यय वेद में विकल्प से पित् होता है। जब वह पित् होता है, तब उस पित् 'हि' प्रत्यय के स्थान पर वेद में विकल्प से 'धि' आदेश होता है -

सोमं रारन्धि / युयोध्यस्माज्जुहुराणमेनः।

अतो हेः - अकारान्त अङ्ग से उत्तर आने वाले 'हि' प्रत्यय का लुक् (लोप) होता है। जैसे - पच, पठ। इसीलिये 'हि' प्रत्यय का लुक् करके हमने प्रथम गणसमूह में **0** प्रत्यय बनाया है।

उतश्च प्रत्ययादसंयोगपूर्वात् - संयोग पूर्व में नहीं है जिसके, ऐसा जो उकार, उसके बाद जो हि प्रत्यय, उसका लुक् होता है। जैसे - चिनु, सुनु, कुरु।

लङ् लकार

प्र. पु.	***त्***	ताम्	अन्	त	आताम्	अत
म. पु.	***स् (:)***	तम्	त	थाः	आथाम्	ध्वम्
उ. पु.	***अम्***	व	म	इ	वहि	महि

इन प्रत्ययों को इस प्रकार पहिचानिये -

हलादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय - ***त्, स्।***
अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय - अम्।
हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय - ताम्, तम्, त, व, म, त, थाः, ध्वम् , वहि, महि।
अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय - अन्, आताम्, अत, आथाम्, इ।

विधिलिङ् लकार

प्र. पु. यात् याताम् युः ईत ईयाताम् ईरन्

म. पु.	याः	यातम्	यात	ईथाः	ईयाथाम्	ईध्वम्
उ. पु.	याम्	याव	याम	ईय	ईवहि	ईमहि

इन प्रत्ययों को इस प्रकार पहिचानिये -

हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय - 'य' से प्रारम्भ होने वाले परस्मैपद के ये सारे प्रत्यय हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय हैं।

अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय - 'ई' से प्रारम्भ होने वाले आत्मनेपद के ये सारे प्रत्यय अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय हैं।

ये ७४ प्रत्यय अदादि, जुहोत्यादि, स्वादि रुधादि, तनादि, तथा क्र्यादि गणों के धातुओं के लिये हैं।

अदभ्यस्तात् - जब भी किसी धातु को द्वित्व होता है, तब **उभे अभ्यस्तम्** सूत्र से, उन दोनों का नाम अभ्यस्त हो जाता है। ऐसे अभ्यस्त धातु से परे आने वाले अन्ति की जगह अति, अन्तु की जगह अतु तथा अन् की जगह जुस् = उः, प्रत्यय लगते हैं। अतः द्वितीय गण समूह के ७७ प्रत्यय हैं, और प्रथम गण समूह के ७४ प्रत्यय हैं।

अब लेट् लकार के प्रत्यय बतलाते हैं -

लट् लकार के प्रत्ययों में ही **लेटोऽडाटौ** सूत्र से अट् या आट् का आगम कीजिये, तो लेट् लकार के प्रत्यय बन जाते हैं। इन्हें बनाने की विधि हमने लेट् लकार के प्रकरण में विस्तार से बतलाई है। लेट् लकार के जिन प्रत्ययों के आदि में केवल अट् या आट् होते हैं, वे सारे प्रत्यय सार्वधातुक होते हैं।

लेट् लकार के प्रत्यय

अट् लगाकर बने हुए लेट् लकार के सार्वधातुक प्रत्यय

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	***अति***	***अतः***	***अन्ति***	***अते***	***ऐते***	***अन्ते***
	अत्	–	***अन्***	***अतै***	–	***अन्तै***
	अद्					
म. पु.	***असि***	***अथः***	***अथ***	***असे***	***ऐथे***	***अध्वे***
	अः	–	–	***असै***	–	***अध्वै***
उ. पु.	***अमि***	***अवः***	***अमः***	***ए***	***अवहे***	***अमहे***

अम्	*अव*	*अम*	*ऐ*	*अवहै*	*अमहै*

इन प्रत्ययों को इस प्रकार पहिचानिये -

लेट् लकार के ये सारे ३२ प्रत्यय अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय हैं।

आट् लगाकर बने हुए लेट् लकार के सार्वधातुक प्रत्यय

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	*आति*	*आतः*	*आन्ति*	*आते*	*ऐते*	*आन्ते*
	आत्	–	*आन्*	*आतै*	–	*आन्तै*
	आद्	–				
म. पु.	*आसि*	*आथः*	*आथ*	*आसे*	*ऐथे*	*आध्वे*
	आः	–	–	*आसै*	–	*आध्वै*
उ. पु.	*आमि*	*आवः*	*आमः*	*ए*	*आवहे*	*आमहे*
	आम्	*आव*	*आम*	*ऐ*	*आवहै*	*आमहै*

इन प्रत्ययों को इस प्रकार पहिचानिये -

लेट् लकार के ये सारे ३२ प्रत्यय अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय हैं।

धातुओं से लगने वाले प्रत्ययों में, प्रथमगण समूह के लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् लकारों के ७४ प्रत्यय, द्वितीयगण समूह के लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् लकारों के ७७ प्रत्यय, तथा सार्वधातुक लेट् लकारों के ये ६४ प्रत्यय अर्थात् ७४ + ७७ + ६४ = २१५ प्रत्यय, तिङ् सार्वधातुक प्रत्यय हैं।

२. कृत् सार्वधातुक प्रत्यय

अष्टाध्यायी में ३.१.९० में 'धातोः' सूत्र है। यहाँ से लेकर 'छन्दस्युभथा' ३.४.११७ सूत्र तक, धातुओं से जो भी प्रत्यय कहे गये हैं, उनमें से तिङ् प्रत्ययों को छोड़ दिया जाये, तो जो प्रत्यय शेष बचे, उनका नाम कृत् प्रत्यय होता है।

उन कृत् प्रत्ययों में से वे कृत् प्रत्यय, जिनमें श् की इत् संज्ञा हुई हो, वे प्रत्यय कृत् सार्वधातुक प्रत्यय कहलाते हैं। ये कृत् सार्वधातुक प्रत्यय इस प्रकार हैं - शतृ, शानच्, शानन्, चानश्, खश्, श, एश्, शध्यै, शध्यैन् = ९

३. विकरण सार्वधातुक प्रत्यय

जो सार्वधातुक प्रत्यय न तो तिङ् हैं, न ही कृत् हैं, वे प्रत्यय विकरण

सार्वधातुक प्रत्यय कहलाते हैं। ***शप्,*** श्यन्, श्नु, श, श्नम्, श्ना, शायच्, शानच्, = ये ८ शित् प्रत्यय ऐसे प्रत्यय हैं, जो न तो तिङ् हैं, न ही कृत् हैं। ये प्रत्यय वस्तुतः विकरण सार्वधातुक प्रत्यय हैं।

अब देखिये कि कुल सार्वधातुक प्रत्यय इस प्रकार हुए -

१. पाँच लकारों के तिङ् सार्वधातुक प्रत्यय - २१५
२. कृत् सार्वधातुक प्रत्यय - ०९
३. विकरण सार्वधातुक प्रत्यय - ०८
= २३२ कुल।

ध्यान से देखिये, कि अभी तक जितने भी सार्वधातुक प्रत्यय बतलाये गये हैं, इन सार्वधातुक प्रत्ययों में कुछ प्रत्यय तिरछे, बड़े तथा मोटे अक्षरों में लिखे गये हैं, इनका नाम पित् सार्वधातुक प्रत्यय है।

जो प्रत्यय सीधे, छोटे तथा पतले अक्षरों में लिखे गये हैं, इनका नाम अपित् सार्वधातुक प्रत्यय हैं।

इस प्रकार लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् तथा सार्वधातुक लेट् लकारों के तिङ् प्रत्यय, शतृ, शानच्, शानन्, चानश्, खश्, श, एश्, शध्यै, शध्यैन् ये ९ कृत् प्रत्यय, तथा शप्, श्यन्, श्नु, श, श्नम्, श्ना, शायच्, शानच्, ये ८ विकरण प्रत्यय, सार्वधातुक प्रत्यय कहलाते हैं।

आर्धधातुक प्रत्यय

आर्धधातुकं शेषः - अष्टाध्यायी का तृतीय अध्याय देखिये। इसमें ऊपर कहे गये २३२ सार्वधातुक प्रत्ययों को छोड़ दीजिये। अब जो भी प्रत्यय बचे, वे प्रत्यय यदि धातु से विहित हैं, अर्थात् धातु से लग रहे हैं, तो ही उन प्रत्ययों की आर्धधातुक संज्ञा होती है, अन्यथा नहीं।

अत्यावश्यक - यहाँ पर **'धातु से लगना'** यह शब्द बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसे इस प्रकार समझिये, कि अष्टाध्यायी के तृतीय अध्याय में सूत्र ३.१.१ से लेकर **'कण्ड्वादिभ्यो यक्'** ३.१.२७ तक के सूत्रों में, जो भी प्रत्यय कहे गये हैं, वे प्रत्यय धातु तथा प्रातिपदिक, इन दोनों से ही लग रहे हैं, किन्तु उसके आगे, तृतीय अध्याय में **'गुपुधूपविच्छिपणिपनिभ्य आयः'** सूत्र ३.१.२८ से लेकर **'छन्दस्युभथा'** सूत्र ३.४.११७ तक, जो भी प्रत्यय कहे गये हैं, वे सभी प्रत्यय केवल धातुओं से ही लग रहे हैं, प्रातिपदिकों से नहीं।

जो प्रत्यय सूत्र में 'धातोः' कहकर केवल धातु से ही लगाये जाते हैं, उन्हीं प्रत्ययों की सार्वधातुक अथवा आर्धधातुक संज्ञा हो सकती है। इसलिये 'धातोः' कहकर केवल धातु से ही लगाये जाने के कारण, **'गुपुधूपविच्छपणिपनिभ्य आयः'** सूत्र ३.१.२८ से लेकर **'छन्दस्युभथा'** सूत्र ३.४.११७ तक, जो भी प्रत्यय कहे गये हैं, वे यदि तिङ्, शित् हैं, तब तो सार्वधातुक होते हैं, यदि वे तिङ्, शित् नहीं हैं, तब वे आर्धधातुक हो जाते हैं।

किन्तु जो प्रत्यय प्रातिपदिकों से लगाये जाते हैं, उन प्रत्ययों की न तो सार्वधातुक संज्ञा होती है न ही आर्धधातुक।

इसलिये ३.१.१ से लेकर ३.१.२७ तक के सूत्रों में आये हुए प्रत्ययों को पहिचानने में बहुत सावधानी रखना चाहिये। वह सावधानी इस प्रकार है -

तृतीय अध्याय के प्रथम पाद में **'गुप्तिज्किद्भ्यः सन्'** सूत्र ३.१.४ तथा **'मान्बधदान्शान्भ्यो दीर्घश्चाभ्यासस्य'** सूत्र ३.१.५ से, जो सन् प्रत्यय कहा गया है, वह सन् प्रत्यय **'धातोः'** कहकर, धातुओं से नहीं लगता है, इसलिये यह सन् प्रत्यय न तो सार्वधातुक प्रत्यय है, न ही आर्धधातुक।

किन्तु 'धातोः कर्मणः समानकर्तृकादिच्छायां वा' ३.१.७ सूत्र से विहित सन् प्रत्यय आर्धधातुक प्रत्यय है, क्योंकि यह सन् प्रत्यय 'धातोः' कहकर, धातुओं से लग रहा है।

इसी प्रकार तृतीय अध्याय के प्रथम पाद में **'पुच्छभाण्डचीवराण्णिङ्'** सूत्र ३.१.२० से, जो णिङ् प्रत्यय कहा गया है, वह णिङ् प्रत्यय धातुओं से नहीं लगता है, इसलिंये यह णिङ् प्रत्यय न तो सार्वधातुक प्रत्यय है न ही आर्धधातुक।

किन्तु 'कमेर्णिङ्' ३.१.७ सूत्र से विहित णिङ् प्रत्यय आर्धधातुक प्रत्यय है, क्योंकि यह णिङ् प्रत्यय, धातु से लग रहा है।

इसी प्रकार तृतीय अध्याय के प्रथम पाद में **'आचारेऽवगल्भक्लीबहोडेभ्यः क्विब्वा वक्तव्यः'** तथा **'सर्वप्रातिपदिकेभ्य इत्येके'** इन ३.१.११ सूत्र के वार्तिकों से, जो क्विप् प्रत्यय कहा गया है, वह क्विप् प्रत्यय धातुओं से नहीं लगता है, इसलिये यह क्विप् प्रत्यय न तो सार्वधातुक प्रत्यय है न ही आर्धधातुक।

किन्तु 'सत्सूद्विषद्रुहदुहयजविदभिदच्छिदजिनीराजामुपसर्गेऽपि क्विप्' सूत्र ३.२.६१ तथा **'क्विप् च'** सूत्र ३.२.७६ से विहित क्विप् प्रत्यय आर्धधातुक प्रत्यय है, क्योंकि यह क्विप् प्रत्यय, धातुओं से लग रहा है।

इसी प्रकार तृतीय अध्याय के प्रथम पाद में **'मुण्डमिश्रश्लक्ष्णलवण - व्रतवस्त्रहलकलकृततूस्तेभ्यो णिच्'** सूत्र ३.१.२१ से जो णिच् प्रत्यय लग रहा है, वह प्रत्यय, प्रातिपदिकों से लग रहा है, धातुओं से नहीं लग रहा है। इसलिये यह न तो सार्वधातुक प्रत्यय है न ही आर्धधातुक।

'सत्यापपाशरूपवीणातूलश्लोकसेनालोमत्वचवर्मवर्णचूर्णचुरादिभ्यो णिच्' सूत्र ३.१.२५ से विहित णिच् प्रत्यय जब **सत्यापपाशरूपवीणातूलश्लोक - सेनालोमत्वचवर्मवर्णचूर्ण,** इन प्रातिपदिकों से लगता है, तब भी यह न तो सार्वधातुक होता है न ही आर्धधातुक, क्योंकि तब यह णिच् प्रत्यय धातुओं से नहीं लगता है।

किन्तु जब यह णिच् प्रत्यय, चुरादिगण के 'धातुओं' से लगता है, अथवा **'हेतुमति च'** सूत्र ३.१.२६ से, अन्य धातुओं से लगता है, तब इसकी आर्धधातुक संज्ञा हो जाती है, क्योंकि तब यह णिच् प्रत्यय 'धातोः' कहकर 'धातुओं' से ही लगता है।

इसी प्रकार **'प्रातिपदिकाद् धात्वर्थे बहुलमिष्ठवच्च'** तथा **'तत्करोति तदाचष्टे'** इन गणसूत्रों से विहित णिच् प्रत्यय सदा प्रातिपदिकों से ही लगता है, अतः यह 'णिच् प्रत्यय' भी न तो सार्वधातुक होता है न ही आर्धधातुक, क्योंकि यह णिच् प्रत्यय धातुओं से नहीं लगता है।

तृतीय अध्याय के प्रथम पाद में **'कण्ड्वादिभ्यो यक्'** सूत्र ३.१.२७ से कण्ड्वादियों से यक् प्रत्यय कहा गया है। कण्ड्वादि दो प्रकार के होते हैं। कण्ड्वादि प्रातिपदिक तथा कण्ड्वादि धातु। यह यक् प्रत्यय कण्ड्वादि प्रातिपदिकों से न लगकर, कण्ड्वादि धातुओं से लगता है, अतः धातुओं से लगने के कारण यह आर्धधातुक कहलाता है।

इस प्रकार सन्, णिङ्, णिच्, क्विप् तथा यक्, ये पाँच प्रत्यय ऐसे हैं, जो धातुओं से लगने पर, आर्धधातुक होते हैं और धातुओं से न लगने पर, न तो सार्वधातुक होते हैं न ही आर्धधातुक। इन्हें सावधानी से पहिचानना चाहिये।

इन सन्, णिङ्, णिच्, क्विप्, यक्, प्रत्ययों के अलावा ३.१.१ से लेकर ३.१.२७ के बीच जो क्यच् ,काम्यच्, क्यष्, क्यङ्, क्विप्, प्रत्यय कहे गये हैं, उनका नाम भी, न तो सार्वधातुक होता है न ही आर्धधातुक, क्योंकि ये क्यच् ,काम्यच्, क्यष्, क्यङ्, क्विप् प्रत्यय, धातुओं से न लगकर प्रातिपदिकों से ही लगते हैं।

अष्टाध्यायी में ३.१.१ सूत्र से लेकर ३.१.२७ सूत्र तक, जितने भी प्रत्यय हैं, उनकी आर्धधातुक संज्ञा करते समय यह विवेक बनाये रखना चाहिये।

इन सूत्रों के बाद सीधे **'गुपुधूपविच्छपणिपनिभ्य आयः'** सूत्र ३.१.२८ पर आइये। इस सूत्र से लेकर तृतीय अध्याय के अन्त तक अर्थात् **'छन्दस्युभयथा'** ३.४.११७ सूत्र तक, जितने भी प्रत्यय कहे गये हैं, उन सभी प्रत्ययों में ऊपर कहे गये, २३२ सार्वधातुक प्रत्ययों के अलावा जो भी प्रत्यय बचे, उन सभी प्रत्ययों की आर्धधातुक संज्ञा होती है।

(ध्यान रहे कि आर्धधातुक प्रत्ययों में पित् अपित् का विभाजन नहीं किया जाता।)

आर्धधातुक प्रत्यय चार प्रकार के होते हैं -

१. तिङ् आर्धधातुक प्रत्यय

२. कृत् आर्धधातुक प्रत्यय

३. विकरण आर्धधातुक प्रत्यय

४. शेष आर्धधातुक प्रत्यय अर्थात् तिङ्, कृत् विकरण से भिन्न आर्धधातुक प्रत्यय। इनका प्रस्तार इस प्रकार है -

१. तिङ् आर्धधातुक प्रत्यय

लृट् लकार के प्रत्यय

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	स्यति	स्यतः	स्यन्ति	स्यते	स्येते	स्यन्ते
म. पु.	स्यसि	स्यथः	स्यथ	स्यसे	स्येथे	स्यध्वे
उ. पु.	स्यामि	स्यावः	स्यामः	स्ये	स्यावहे	स्यामहे

स्य से प्रारम्भ होने के कारण लृट् लकार के ये प्रत्यय आर्धधातुक हैं।

लृङ् लकार के प्रत्यय

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	स्यत्	स्यताम्	स्यन्	स्यत	स्येताम्	स्यन्त
म. पु.	स्यः	स्यतम्:	स्यत	स्यथाः	स्येथाम्	स्यध्वम्
उ. पु.	स्यम्	स्याव	स्याम	स्ये	स्यावहि	स्यामहि

स्य से प्रारम्भ होने के कारण लृङ् लकार के ये प्रत्यय आर्धधातुक हैं।

लुट् लकार के प्रत्यय

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र.पु.	ता	तारौ	तार:	ता	तारौ	तार:
म.पु.	तासि	तास्थ:	तास्थ	तासे	तासाथे	ताध्वे
उ.पु.	तास्मि	तास्व:	तास्म:	ताहे	तास्वहे	तास्महे

तास् से प्रारम्भ होने के कारण ये प्रत्यय आर्धधातुक हैं।

आशीर्लिङ् लकार के प्रत्यय

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	यात्	यास्ताम्	यासु:	सीष्ट	सीयास्ताम्	सीरन्
म. पु.	या:	यास्तम्	यास्त	सीष्ठा:	सीयास्थाम्	सीध्वम्
उ. पु.	यासम्	यास्व	यास्म	सीय	सीवहि	सीमहि

आशीर्लिङ् लकार के यासुट् से बने हुए सारे परस्मैपदी तथा 'सीयुट्' से बने हुए सारे आत्मनेपदी प्रत्यय 'लिङाशिषि' सूत्र से आर्धधातुक होते हैं।

लुङ् लकार के बारह प्रकार के प्रत्यय

लुङ् लकार ही एक ऐसा लकार है, जिसके रूप बनाने के लिये, अलग अलग प्रकार के धातुओं से, अलग अलग प्रकार के प्रत्यय लगाये जाते हैं।

लुङ् लकार के प्रथम प्रकार के सिच् का लुक् करके बने हुए प्रत्यय

परस्मैपद			आत्मनेपद
त्	ताम्	अन् (उ:)	सिच् का लुक् करके बने हुए ये
स् (:)	तम्	त	प्रत्यय आत्मनेपद में नहीं होते।
अम्	व	म	

वस्तुत: लुङ् लकार के ये प्रत्यय सार्वधातुक हैं, किन्तु 'सिच्' प्रत्यय लगकर, उसका लुक् हो जाने के कारण हमने इनकी गणना सार्वधातुक प्रत्ययों में नहीं की है।

लुङ् लकार के द्वितीय प्रकार के, धातु को सक् का आगम करके इट् + सिच् से बने हुए प्रत्यय

सीत्	सिष्टाम्	सिषु:	धातु को सक् का आगम करके
सी:	सिष्टम्	सिष्ट	इट् + सिच् से बने हुए ये प्रत्यय
सिषम्	सिष्व	सिष्म	भी आत्मनेपद में नहीं होते।

सिच् से प्रारम्भ होने के कारण लुङ् लकार के ये प्रत्यय आर्धधातुक हैं।

लुङ् लकार के तृतीय, चतुर्थ प्रकार के अङ् से बने हुए प्रत्यय

अत्	अताम्	अन्	अत	एताम्	अन्त
अः	अतम्	अत	अथाः	एथाम्	अध्वम्
अम्	आव	आम	ए	आवहि	आमहि

अङ् से प्रारम्भ होने के कारण लुङ् लकार के ये प्रत्यय आर्धधातुक हैं।

लुङ् लकार के पञ्चम, षष्ठ प्रकार के चङ् से बने हुए प्रत्यय

अत्	अताम्	अन्	अत	एताम्	अन्त
अः	अतम्	अत	अथाः	एथाम्	अध्वम्
अम्	आव	आम	ए	आवहि	आमहि

चङ् से प्रारम्भ होने के कारण लुङ् लकार के ये प्रत्यय आर्धधातुक हैं।

लुङ् लकार के सप्तम, अष्टम प्रकार के क्स से बने हुए प्रत्यय

सत्	सताम्	सन्	सत	साताम्	सन्त
सः	सतम्	सत	सथाः	साथाम्	सध्वम्
सम्	साव	साम	सि	सावहि	सामहि

क्स से प्रारम्भ होने के कारण लुङ् लकार के ये प्रत्यय आर्धधातुक हैं।

लुङ् लकार के नवम, दशम प्रकार के केवल सिच् से बने हुए प्रत्यय

सीत्	स्ताम्	सुः	स्त	साताम्	सत
सीः	स्तम्	स्त	स्थाः	साथाम्	ध्वम्
सम्	स्व	स्म	सि	स्वहि	स्महि

सिच् से प्रारम्भ होने के कारण लुङ् लकार के ये प्रत्यय आर्धधातुक हैं।

लुङ् लकार के एकादश, द्वादश प्रकार के इट् + सिच् से बने हुए प्रत्यय

ईत्	इष्टाम्	इषुः	इष्ट	इषाताम्	इषत
ईः	इष्टम्	इष्ट	इष्ठाः	इषाथाम्	इढ्वम्
इषम्	इष्व	इष्म	इषि	इष्वहि	इष्महि

इट् + सिच् से बने हुए लुङ् लकार के ये प्रत्यय आर्धधातुक हैं।

लिट् लकार के प्रत्यय

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
प्र. पु.	णल् (अ)	अतुः	उः	ए	आते	इरे

म. पु.	थल् (थ)	अथुः	अ	से	आथे	ध्वे
उ. प्र.	णल् (अ)	व	म	ए	वहे	महे

लिट् च - लिट् लकार के सारे प्रत्यय आर्धधातुक होते हैं।

आर्धधातुक लेट् लकार के प्रत्यय

सार्वधातुक लेट् लकार के प्रत्ययों के आदि में यदि सिप् - स्, जोड़ दिया जाये, तो सार्वधातुक लेट् लकार के प्रत्यय ही आर्धधातुक लेट् लकार के प्रत्यय बन जाते हैं। जो इस प्रकार हैं -

सिप् + अट् लगाकर बने हुए लेट् लकार के प्रत्यय

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
प्र. पु.	सति	सतः	सन्ति	सते	सैते	सन्ते
	सत्	-	सन्	सतै	-	सन्तै
	सद्					
म. पु.	ससि	सथः	सथ	ससे	सैथे	सध्वे
	सः	-	-	ससै	-	सध्वै
उ. पु.	समि	सवः	समः	से	सवहे	समहे
	सम्	सव	सम	सै	सवहै	समहै

सिप् + आट् लगाकर बने हुए लेट् लकार के प्रत्यय

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	साति	सातः	सान्ति	साते	सैते	सान्ते
	सात्	-	सान्	सातै	-	सान्तै
	साद्	-	-			
म. पु.	सासि	साथः	साथ	सासे	सैथे	साध्वे
	साः	-	-	सासै	-	साध्वै
उ. पु.	सामि	सावः	सामः	से	सावहे	सामहे
	साम्	साव	साम	सै	सावहै	सामहै

सिप् से प्रारम्भ होने के कारण लेट् लकार के ये प्रत्यय आर्धधातुक हैं।

ये, सात आर्धधातुक लकारों के कुल २६२ तिङ् आर्धधातुक प्रत्यय हुए।

२. कृत् आर्धधातुक प्रत्यय

ण्वुल् वुञ् ण्यत् घञ् णिनि ण ण्युट् अण्
खुकञ् ण्वि ञ्युट् ण्विन् घिनुण् उकञ् उण् णच्
इनुण् इञ् ण्वुच् णमुल् खमुञ्।
तव्य तव्यत् अनीयर् यत् तृच् ल्यु अच् ष्वुन्
थकन् वुन् ट इन् खच् ड खिष्णुच् विट्
विच् मनिन् वनिप् इनि ख्युन् तृन् इष्णुच् युच्
षाकन् आलुच् रु घुरच् उ ऊक् र आरु
लुकन् वरच् डु ष्ट्रन् इत्र तुमुन् अप् अथुच्
नन् अ अनि ल्युट् घ खल् से सेन्
असे असेन् अध्यै अध्यैन् तवै तवेन् तोसुन् त्वन्
अतृन्।
क्यप् क टक् क्विन् कञ् क्विप् कप् क्वनिप्
क्त क्तवतु ङ्वनिप् कानच् क्वसु ग्स्नु क्नु क्मरच्
कुरच् क्वरप् किन् कि नजिङ् कुक् क्रि नङ्
क्तिन् अङ् क्तिच् क्से कसेन् कध्यै कध्यैन् तवेङ्
कमुल् कसुन् केन् केन्य क्त्वा।

इस प्रकार कुल ११५ कृत् आर्धधातुक प्रत्यय हैं।

३. विकरण आर्धधातुक प्रत्यय

क्स चङ् अङ् सिप् स्य तास् च्लि सिच्
चिण् उ यक् = ११।

वस्तुत: ये ग्यारह विकरण हैं किन्तु इनमें क्स से लेकर चिण् तक जो विकरण हैं, उन्हें मिलाकर हमने तिङ् आर्धधातुक प्रत्यय बना लिये हैं। अत: यहाँ हम यही मानेंगे कि विकरण आर्धधातुक प्रत्यय केवल दो हैं, 'उ' तथा 'यक्'।

४. तिङ्, कृत्, विकरण से भिन्न, शेष आर्धधातुक प्रत्यय

आम् णिच् ईयङ् यङ् सन् = ५

इस प्रकार - १. तिङ् आर्धधातुक प्रत्यय - २६२
२. कृत् आर्धधातुक प्रत्यय - ११५

३. विकरण आर्धधातुक प्रत्यय - ११
४. शेष आर्धधातुक प्रत्यय - ५
= ३९३ कुल।

इनमें से ११ तो विकरण ही हैं, उन्हें छोड़ दीजिये। शेष ३८२ आर्धधातुक प्रत्ययों के लगने पर धातु + प्रत्यय के बीच में किसी भी प्रकार के विकरण प्रत्यय नहीं लगते हैं।

हमने धातुओं से लगने वाले सारे प्रत्यय पढ़े। इनमें जो लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्, तथा सार्वधातुक लेट् इन पाँच लकारों के सार्वधातुक तिङ् प्रत्यय हैं तथा लिट्, लुट्, लृट्, आशीर्लिङ्, लुङ्, लृङ्, तथा आर्धधातुक लेट् इन सात लकारों के आर्धधातुक तिङ् प्रत्यय हैं, ये सब के सब प्रत्यय वस्तुतः पृष्ठ ९ पर कहे गये १८ तिङ् प्रत्ययों से ही बने हैं।

इनमें देखिये कि तिप् (ति), यह परस्मैपद में प्रथम पुरुष एकवचन का प्रत्यय है। १२ लकारों में परस्मैपद प्रथमपुरुष एकवचन के जितने भी प्रत्यय हैं, उन सारे प्रत्ययों का नाम मूलतः 'तिप्' प्रत्यय ही है। जैसे - लट् लकार, परस्मैपद, प्रथमपुरुष एकवचन का 'ति' प्रत्यय देखिये। यह वस्तुतः 'तिप्' ही है।

लङ् लकार, परस्मैपद, प्रथमपुरुष एकवचन का 'त्' प्रत्यय देखिये। यह भी वस्तुतः तिप् ही है। लोट् लकार, परस्मैपद, प्रथमपुरुष एकवचन का 'तु' प्रत्यय देखिये। यह भी वस्तुतः तिप् ही है। लृट् लकार, परस्मैपद, प्रथमपुरुष एकवचन का 'स्यति' प्रत्यय देखिये। इसमें जो 'ति' है, यह भी वस्तुतः तिप् ही है। इस प्रकार सारे लकारों में प्रथम पुरुष एकवचन, परस्मैपद के, जो जो भी प्रत्यय हैं उन्हें आप 'तिप्' ही समझिये।

सारे लकारों में प्रथम पुरुष, द्विवचन, परस्मैपद में जो भी प्रत्यय हैं उन्हें आप 'तस्' ही समझिये। सारे लकारों में प्रथम पुरुष, बहुवचन, परस्मैपद, में जो भी प्रत्यय हैं उन्हें आप 'झि' ही समझिये। सारे लकारों में प्रथम पुरुष, एकवचन, आत्मनेपद में जो भी प्रत्यय हैं उन्हें आप 'त' ही समझिये। इस प्रकार वस्तुतः तिङ् प्रत्यय १८ ही हैं।

विशेष - तिङ् प्रत्ययों में ही स्य तास् चङ् अङ् सिप् आदि विकरण लगा लगाकर आर्धधातुक प्रत्यय बनाये जाते हैं किन्तु इनको बनाने में, प्रक्रिया का गौरव है, अतः हमने यहाँ तिङ् प्रत्ययों में स्य तास् चङ् अङ् सिप् आदि

विकरणों को जोड़कर आर्धधातुक प्रत्यय आपके सामने रख दिये हैं। इसका अर्थ यह न समझें कि स्य तास् चङ् अङ् सिप् आदि विकरण नहीं हैं।

धातुओं के गण तथा उनके विकरण (गणचिह्न)

संस्कृत में जितने भी धातु है, उन्हें भगवान पाणिनि ने अपने धातुपाठ में इकट्ठा करके रख दिया है। इस धातुपाठ में १९४३ धातु हैं। ये धातु १० भागों में बँटे हुए हैं। प्रत्येक भाग को हम गण कहते हैं। प्रत्येक गण का अलग अलग चिह्न होता है। उसे ही हम गणचिह्न या विकरण कहते हैं।

'भवति' को देखिये। इसके तीन खण्ड हैं - भू + शप् + ति। इनमें 'भू' धातु है, बीच में बैठा हुआ 'अ' विकरण है तथा 'ति' यह लट् लकार का प्रत्यय है।

'दीव्यतु' को देखिये। इसके तीन खण्ड हैं - दिव् + श्यन् + तु। इनमें 'दिव्' धातु है, बीच में बैठा हुआ 'य' विकरण है तथा 'तु' यह लोट् लकार का प्रत्यय है।

जब हम कहते हैं 'दासीष्ट'- तब इसके दो ही खण्ड होते हैं - दा धातु है, 'सीष्ट' यह आशीर्लिङ् लकार का प्रत्यय है तथा बीच में विकरण नहीं है।

इसका अर्थ यह हुआ कि कभी तो धातु + प्रत्यय के बीच में आकर विकरण बैठता है और कभी नहीं बैठता।

अत: हमें यह मालूम होना चाहिये कि कब धातु + प्रत्यय के बीच में आकर विकरण बैठता है और क़ब नहीं बैठता।

ध्यान रहे कि कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर ही धातु + प्रत्यय के बीच में आकर विकरण बैठता है। अत: कमार्थक अथवा भावार्थक सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, अथवा कोई भी आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर धातु + प्रत्यय के बीच में कभी कोई विकरण नहीं बैठता।

विकरण लगाने वाले सूत्र

कर्मवाच्य अथवा भाववाच्य के सार्वधातुक लकारों में धातुओं से लगने वाले विकरण

सार्वधातुके यक् - जब कर्मवाच्य या भाववाच्य में, धातुओं से लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्, में से किसी सार्वधातुक लकार के प्रत्यय लगाना हो, अथवा कर्मवाच्य या भाववाच्य में, धातुओं से शतृ, शानच्, शानन्, चानश्, खश्, श,

एश्, शध्यै, शध्यैन् में से कोई सार्वधातुक कृत् प्रत्यय लगाना हो, तब ऐसे भाववाची तथा कर्मवाची सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, किसी भी गण के किसी भी धातु से 'यक्' विकरण ही लगाया जाता है। जैसे -

'गम्यते' को देखिये यहाँ गम् + ते के बीच में 'यक्' विकरण बैठा है, क्योंकि यहाँ 'ते' कर्मार्थक प्रत्यय है, इसका अर्थ कर्म है।

'स्थीयते' को देखिये। यहाँ स्था + ते के बीच में 'यक्' विकरण बैठा है, क्योंकि यहाँ 'ते' भावार्थक प्रत्यय है, इसका अर्थ भाव है।

कर्तृवाच्य के सार्वधातुक लकारों में धातुओं से लगने वाले विकरण

अदिप्रभृतिभ्यः शपः (लुक्) - पाणिनीय धातुपाठ में अदादिगण में ७२ धातु हैं, उन सारे धातुओं से कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, शप् विकरण लगता है और उसका लुक् (लोप) हो जाता है। जैसे - अद् + शप् + ति = अद् + ति = अत्ति। इस प्रकार अदादिगण अर्थात् द्वितीयगण का विकरण 'शप्लुक्' है। शप् प्रत्यय सार्वधातुक है, परन्तु यहाँ उसका लुक् हो जाता है।

जुहोत्यादिभ्यः श्लुः - जुहोत्यादिगण में २४ धातु हैं। इन धातुओं से कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, शप् विकरण लगता है और उसका श्लु (लोप) हो जाता है। जैसे - जुहु + शप् + ति = जुहु + ति = जुहोति। इस प्रकार जुहोत्यादिगण अर्थात् तृतीयगण का विकरण 'शप्श्लु' है। शप् प्रत्यय सार्वधातुक है, परन्तु यहाँ उसका श्लु = लोप हो जाता है।

दिवादिभ्यः श्यन् - धातुपाठ में दिवादिगण में १४० धातु हैं। इन धातुओं से कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्यय होने पर श्यन् विकरण लगता है। जैसे - दीव् + श्यन् + ति = दीव् + य + ति = दीव्यति। इस प्रकार दिवादिगण अर्थात् चतुर्थगण का विकरण 'श्यन्' है। श्यन् प्रत्यय सार्वधातुक है।

स्वादिभ्यः श्नुः - धातुपाठ में स्वादि गण में ३४ धातु हैं। इन धातुओं से कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर इन धातुओं से शप् के स्थान पर श्नु विकरण लगता है। जैसे - सु + श्नु + ति = सु + नु + ति = सुनोति। इस प्रकार स्वादिगण अर्थात् पञ्चमगण का विकरण 'श्नु' है। यह सार्वधातुक है।

तुदादिभ्यः शः - तुदादिगण में १५७ धातु हैं। कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर इन धातुओं से 'श' विकरण लगता है। जैसे - तुद् + श + ति

= तुद + अ + ति = तुदति। इस प्रकार तुदादिगण अर्थात् षष्ठगण का विकरण 'श' है। श प्रत्यय सार्वधातुक है।

रुधादिभ्यः श्नम् - धातुपाठ के रुधादिगण में २५ धातु हैं। इन धातुओं से कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, श्नम् विकरण लगता है। जैसे - रुध् + श्नम् + ति = रुणद्धि। इस प्रकार रुधादिगण अर्थात् सप्तमगण का विकरण 'श्नम्' है। श्नम् प्रत्यय सार्वधातुक है।

तनादिकृञ्भ्यः उः - तनादिगण में १० धातु हैं। इन धातुओं से कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, 'उ' विकरण लगता है। जैसे - तन् + उ + ति = तनोति। इस प्रकार तनादिगण अर्थात् अष्टमगण का विकरण 'उ' है। 'उ' प्रत्यय आर्धधातुक है।

क्र्यादिभ्यः श्ना - क्र्यादिगण में ६१ धातु हैं। इन धातुओं से कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, श्ना विकरण लगता है। जैसे - क्री + श्ना + ति = क्रीणाति। इस प्रकार क्र्यादिगण अर्थात् नवमगण का विकरण श्ना है। 'श्ना' प्रत्यय सार्वधातुक है।

ये आठ गणों के विकरण बतलाये गये, किन्तु भ्वादिगण तथा चुरादिगण का तो कोई भी विकरण नहीं कहा गया। साथ ही 'सनाद्यन्ता धातवः' सूत्र से जिन प्रत्ययान्त धातुओं की धातु संज्ञा हुई है, उनसे भी कोई भी विकरण नहीं कहा गया। इनसे कौन सा विकरण लगायें ?

कर्तरि शप् - कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, उन सारे धातुओं से शप् विकरण लगता है, जिनसे कोई अन्य विकरण न कहा जाये। एतदनुसार भ्वादिगण के सारे धातुओं से सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर शप् विकरण लगाइये क्योंकि इनसे कोई अन्य विकरण नहीं कहा गया है। जैसे - भू + ति / भू + शप् + ति / भू + अ + ति / भव + ति = भवति। शप् सार्वधातुक है।

सत्यापपाशरूपवीणातूलश्लोकसेनालोमत्वच्वर्मवर्णचूर्णचुरादिभ्यो णिच् - चुरादिगण में ४१० धातु हैं। पर इन धातुओं से पहले 'णिच्' प्रत्यय लगाकर धातु बनाया जाता है। अनन्तर शप् विकरण लगता है। चूँकि इनसे भी कोई अन्य विकरण नहीं कहा गया है, अतः इनसे शप् विकरण ही लगता है।

णिच् प्रत्यय चुरादिगण के धातुओं से लगने वाला स्वार्थिक प्रत्यय है, यह विकरण नहीं है, विकरण तो शप् ही है। जैसे - चुर् + णिच् = चोरि।

यह 'चोरि' बन जाने के बाद ही अब इससे शप् विकरण लगाकर चोरि + शप् + ति = चोरयति बनाया जाता है।

ध्यान रहे कि वस्तुत: सारे धातुओं के लिये विकरण तो शप् ही है किन्तु यह शप् केवल उन धातुओं से ही लगता है, जिनसे कोई अन्य विकरण न कहा जाये। जैसे - दिवादिगण के धातुओं से श्यन् विकरण कहा गया है, अत: इनसे श्यन् ही लगेगा, शप् नहीं। चुरादिगण के धातुओं से कोई विकरण नहीं कहा गया है, अत: इनसे भी शप् ही लगेगा।

इसी प्रकार सन्, क्यच् ,काम्यच्, क्यष्, क्यङ्, क्विप्, णिङ्, ईयङ्, णिच्, यक्, आय, यङ् ये १२ प्रत्यय लगाकर सनाद्यन्ता धातव: सूत्र से जो भी धातु बनेंगे, उनसे भी शप् ही लगेगा, क्योंकि इन धातुओं से भी अन्य कोई विकरण नहीं कहा गया है।

विकरणों को लगाने की विधि आगे विस्तार से बतलाई जायेगी।

आपको यह ध्यान रखना है कि जिस भी गण के धातु के कर्त्रर्थक सार्वधातुक लकार का रूप आप बनाने जा रहे हैं, उस धातु में उसी गण का 'विकरण' अर्थात् 'गणचिह्न' आप अवश्य लगायें।

जैसे - आपको 'बाध्' धातु के लट् लकार का, कर्तृवाच्य का रूप बनाना है, तो आप देखिये कि यह धातु किस गण का है ? जब आप जान लें कि यह धातु भ्वादिगण का है, तब आप देखें कि भ्वादिगण का विकरण क्या है ?

जब आप जान लें कि भ्वादिगण का विकरण शप् (अ) है, तब इस विकरण को आप बाध् धातु में जोड़कर बाध् + शप् = बाध बना लें, उसके बाद उससे लट्, लङ् लोट् तथा विधिलिङ् लकारों के कर्त्रर्थक तिङ् सार्वधातुक प्रत्यय अथवा कर्त्रर्थक कृत् सार्वधातुक प्रत्यय लगायें।

किन्तु ध्यान रहे कि जब प्रत्यय का अर्थ 'कर्ता' हो, तभी धातु + प्रत्यय के बीच में तत् तत् गणों के विकरण बैठाइये। जैसे - 'गच्छति' में गच्छ् + ति के बीच में 'अ', यह विकरण बैठा है, क्योंकि यहाँ 'ति' कर्त्रर्थक प्रत्यय है, इसका अर्थ कर्ता है।

किन्तु यदि प्रत्यय कर्मार्थक या भावार्थक सार्वधातुक हो, तब किसी भी गण के धातु से 'यक्' विकरण ही लगाइये। अन्य कोई भी विकरण नहीं। जैसे - गम्यते, स्थीयते चीयते, तन्यते आदि में धातु + प्रत्यय के बीच में 'यक्',

यह विकरण ही बैठा है, क्योंकि यहाँ 'ते' प्रत्यय का अर्थ कर्म या भाव है।

हमने जाना कि -

१. जब धातु से लगने वाला प्रत्यय कर्त्रर्थक सार्वधातुक होता है, तब धातु में तत् तत् गणों के विकरण जोड़े जाते हैं।

२. जब धातु से लगने वाला प्रत्यय कर्मार्थक सार्वधातुक या भावार्थक सार्वधातुक होता है, तब धातु में तत् तत् गणों के विकरण न जोड़कर 'यक्' विकरण ही जोड़ा जाता है।

३. जब धातु से लगने वाला प्रत्यय आर्धधातुक होता है, तब धातुओं से कोई विकरण नहीं जोड़ा जाता।

अतः धातु से प्रत्यय लगते ही हमें बहुत सावधानी से प्रत्यय को पहिचानना चाहिये कि वह प्रत्यय सार्वधातुक है या आर्धधातुक ? कर्त्रर्थक है, या कमार्थक, या भावार्थक।

ध्यान रहे कि जो विकरण नाम के प्रत्यय हैं, वे केवल बीच में बैठने के ही काम में आते हैं, इनसे कोई स्वतन्त्र शब्द कभी नहीं बनता। ये धातु से लगकर कर्त्रर्थक तिङ् सार्वधातुक प्रत्यय तथा कर्त्रर्थक कृत् सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग तैयार करते हैं।

इसी अभिप्राय से हमने जो धातुपाठ बनाया है, उसमें धातु + विकरण को जोड़कर प्रत्येक धातु के सामने लिख दिया है। इसे ही आप कर्त्रर्थक तिङ् सार्वधातुक तथा कर्त्रर्थक कृत् सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग समझिये। इसी से आप सारे कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्यय लगाइये।

आर्धधातुक प्रत्यय धातु से सीधे लग जाते हैं, कभी भी बीच में विकरण आकर नहीं बैठता। अतः उन्हें निरनुबन्ध धातुओं से सीधे लगा दीजिये। यही सार्वधातुक तथा आर्धधातुक प्रत्ययों का भेद है तथा यही प्रत्ययों का पूरा प्रपञ्च है। अब प्रकरणवश अङ्ग बतला रहे हैं।

अङ्ग

यस्मात् प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम् - जिससे भी प्रत्यय का विधान किया जाता है, उस प्रत्यय के पूर्व में जो जो कुछ भी होता है, वह पूरा का पूरा उस प्रत्यय का अङ्ग कहलाता है।

जैसे 'भवति' को देखिये। इसके तीन खण्ड हैं - भू + शप् + ति। इनमें

'भू' धातु के बाद दो प्रत्यय हैं। शप् तथा ति। शप् प्रत्यय के पूर्व में 'भू' है, अतः 'शप्' प्रत्यय का अङ्ग केवल 'भू' है, किन्तु 'ति' प्रत्यय के पूर्व में भू + शप् है, अतः 'ति' प्रत्यय का अङ्ग, भू + शप् यह पूरा का पूरा है।

दासीष्ट को देखिये - इसके दो ही खण्ड हैं - दा + सीष्ट। यहाँ सीष्ट प्रत्यय का अङ्ग केवल 'दा' है, क्योंकि सीष्ट प्रत्यय के पूर्व में केवल दा ही है।

इस प्रकार प्रत्येक प्रत्यय के अलग अलग अङ्ग होते हैं। जिस भी प्रत्यय का अङ्ग पहिचानना हो, उस प्रत्यय को देखिये। उसके पूर्व में जो भी दिखे, उसे उस प्रत्यय का अङ्ग समझिये।

पाणिनीय व्याकरण ही लौकिक तथा वैदिक उभय व्याकरण है

वास्तविक बात यह है कि पाणिनीय व्याकरण ही ऐसा व्याकरण है जो कि लौकिक तथा वैदिक उभय शब्दों की सिद्धि करता है। लोक में तो हम, पाणिनीय सूत्रों को लेकर पाणिनीय प्रक्रिया से जो भी शब्द बनाते हैं, वह शुद्ध ही होता है। अतः लोक में व्यवहार को देखकर हम अनन्त शब्दराशि बनाने के लिये स्वतन्त्र हैं। किन्तु वेद में ऐसा नहीं हो सकता है क्योंकि वेद में हम एक भी शब्द घटा या बढ़ा सकने के लिये स्वतन्त्र नहीं है। वहाँ तो जो शब्द हमें जैसे भी मिलते हैं, उन्हें उसी ही रूप में हमें निष्पन्न करना पड़ता है।

'छन्दसि दृष्टानुविधिः' का यही अभिप्राय है कि वेद में जो भी शब्द जैसा भी दिखे, उसे वैसा ही बनाइये।

लोक में हम स्वतन्त्र हैं कि लट् लकार का 'पतति' बनाना सीखकर हम पततः, पतन्ति आदि सारे रूप बना डालें किन्तु वेद में यदि हमें लेट् लकार का 'पताति' प्रयोग मिलता है तो हमें यह अधिकार नहीं है कि लेट् लकार का 'पताति' बनाना सीखकर हम पतातः, पतान्ति आदि सारे रूप बना डालें। वेद में हम उतने ही शब्द बनाने के लिये मर्यादित हैं, जितने शब्द हमें वेद में मिलते हैं। अतः हमने लेट् लकार के सारे प्रत्यय दिये हैं, उनका सार्वधातुक तथा आर्धधातुक विभाग भी बतलाया है, आगे उन्हें धातु में जोड़ने के लिये अङ्गकार्य भी बतलाये हैं, किन्तु हमें यह अधिकार नहीं है, कि लेट् लकार के इन सारे प्रत्ययों से हम लेट् लकार के सारे रूप बना डालें।

पाणिनीय प्रक्रिया हमारे पास है। हम वेद में जैसा भी प्रयोग पायें, इस

पाणिनीय प्रक्रिया से उसे निष्पन्न कर लें।

पाणिनीय प्रक्रिया से ही वेद के सारे शब्द निष्पन्न हो सकें, इसके लिये भगवान् पाणिनि ने तीन प्रमुख सूत्र हमें दिये हैं। वे इस प्रकार हैं -

छन्दस्युभयथा - अभी हमने सार्वधातुक तथा आर्धधातुक प्रत्ययों का विभाजन करके उन्हें अलग अलग पहिचाना है, किन्तु वेद में ऐसा नहीं होता। वेद में प्रयोग की सिद्धि के लिये किसी भी प्रत्यय की सार्वधातुक संज्ञा हो सकती है और किसी भी प्रत्यय की आर्धधातुक संज्ञा हो सकती है।

व्यत्ययो बहुलम् - वेदविषय में बहुल करके सभी विधियों का व्यत्यय होता है। सभी विधियों से तात्पर्य है - सुब्विधि, तिङ्विधि, उपग्रह = परस्मैपद आत्मनेपद विधि, पुरुषविधि, कालविधि, हल्विधि, अज्विधि, उदात्तादि स्वरविधि, कर्तृविधि, यङ्विधि, विकरणविधि आदि।

व्यत्यय का अर्थ होता है व्यतिगमन। अर्थात् किसी विषय में कुछ प्राप्त हो और कुछ हो जाये।

विकरण का व्यत्यय - आगे अलग अलग गणों के अलग अलग विकरण बतलाये जा रहे हैं। जिस गण का धातु होता है, उसमें उसी गण का विकरण लगाया जाता है। लौकिक शब्दों को बनाने की यही विधि है, किन्तु वेद में किसी भी गण के धातु में, कोई सा भी विकरण लग सकता है। यथा - 'कृ धातु' तनादिगण का है। लोक में इससे सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर 'उ' विकरण ही होता है किन्तु वेद में इससे 'शप्' भी मिलता है - सुपेशसस्करति।

'मृ धातु' तुदादिगण का है। लोक में इससे सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर 'श' विकरण ही होता है किन्तु वेद में शप् भी मिलता है - स च न मरति।

'भिद् धातु' रुधादिगण का है। लोक में इससे सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर 'श्नम्' विकरण ही होता है किन्तु वेद में शप् भी मिलता है - आण्डा शुष्मस्य भेदति।

'यु धातु' अदादिगण का है। लोक में इससे सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर 'शप्लुक्' विकरण ही होता है किन्तु वेद में इससे जुहोत्यादिगण का विकरण 'शप्श्लु' भी मिलता है - युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनः।

लोक में धातु, प्रत्यय के बीच में एक ही विकरण लगता है किन्तु वेद में एक विकरण के स्थान पर, कभी कभी दो विकरण भी मिलते हैं। जैसे -

इन्द्रो वस्तेन नेषतु। यहाँ सिप् और शप्, ये दो विकरण हैं।

वेद में एक विकरण के स्थान पर कभी कभी तीन विकरण भी मिलते हैं - इन्द्रेण युजा तरुषेम वृत्रम्। यहाँ उ, सिप् और शप् ये तीन विकरण हैं।

पद का व्यत्यय - वेद में पदों का भी व्यत्यय होता है। यथा - लोक में हम 'इच्छति' को परस्मैपद में कहते हैं। वेद में इसका आत्मनेपद में भी प्रयोग मिलता है - ब्रह्मचारिणमिच्छते।

काल का व्यत्यय - वेद में कालों का भी व्यत्यय होता है। यथा - लोक में हम 'दाधार' का अर्थ केवल 'धारण किया' करते हैं किन्तु वेद में 'स दाधार पृथिवीम्' का अर्थ करते हैं 'उसने पृथ्वी को धारण किया और कर रहा है'।

हल् का व्यत्यय - वेद में हलों का भी व्यत्यय होता है। यथा - लोक में हम 'शुभितं' कहते हैं, किन्तु वेद में 'शुफितं मुखबीजं' प्रयोग मिलता है। यहाँ 'भ' के स्थान पर 'फ' हुआ है।

अच् का व्यत्यय - वेद में अचों का भी व्यत्यय होता है। यथा - लोक में हम पत्नी शब्द को बहुवचन में 'पत्न्यः' कहते हैं किन्तु वेद में 'पत्नयो गर्भिण्यः' प्रयोग मिलता है। यह 'पत्नयः' शब्द 'पत्नि' शब्द का प्रथमा बहुवचन है, न कि 'पत्नी' शब्द का। अर्थात् यहाँ ईकार के स्थान पर इकार का व्यत्यय हुआ है। इसी प्रकार अन्य व्यत्यय जानना चाहिये।

षष्ठीयुक्तश्छन्दसि वा - यहाँ योगविभाग करके अर्थात् एक सूत्र के दो टुकड़े करके **'छन्दसि वा'** यह एक स्वतन्त्र सूत्र बना लिया जाता है, जिसका अर्थ होता है - लोक में जो जो भी विधियाँ हैं, वेद में उन सभी विधियों का विकल्प होता है अर्थात् पाणिनीय अष्टाध्यायी में कही हुई सारी विधियाँ वेद में, हो भी सकती हैं और नहीं भी हो सकतीं।

पाणिनीय अष्टाध्यायी में कही हुई प्रक्रिया से सारे वैदिक शब्द भी निष्पन्न हो सकें, इसके लिये ये तीन सूत्र महास्त्र का कार्य करते हैं।

अतः लोक में हम शास्त्र को देखकर शब्द बनायें और वेद में जो शब्द दिखे, उस शब्द को देखकर ही शास्त्र का उपयोग करें।

पाणिनीय प्रक्रिया से वैदिक शब्दों को सिद्ध कर सकने का यही विज्ञान है। आगे धातुरूप बनाने की प्रक्रिया बतलाई जायेगी। यह मत समझिये कि लौकिक तथा वैदिक शब्द, सर्वथा भिन्न भिन्न हैं। जहाँ कोई विशेष विधि न बतलाई जाये,

वहाँ यह जानिये कि लौकिक शब्द ही वैदिक शब्द है।

अत: आगे जब हम, कोई भी लौकिक धातुरूप बनायेंगे, तब आप उसे ही वैदिक धातुरूप समझिये। यदि वेद में कोई प्रयोग उससे भिन्न दिखेगा, तो ही उसके लिये आवश्यक सूत्र हम वहाँ ही देंगे। उसके बाद भी यदि कोई प्रयोग न बने, तो ऊपर कहे हुए व्यत्यय, विकल्प का आश्रय लेकर उसे बनाइये। **छन्दस्युभयथा** सूत्र से सार्वधातुक प्रत्यय की आर्धधातुक संज्ञा कीजिये और आर्धधातुक प्रत्यय की सार्वधातुक संज्ञा कीजिये। किसी न किसी प्रकार से वह शब्द 'पाणिनीय अष्टाध्यायी में कही हुई प्रक्रिया से' निष्पन्न हो ही जायेगा।

इत्संज्ञा प्रकरण

धातु तथा प्रत्ययों आदि के बारे में यह जान लेना चाहिये कि धातुपाठ में धातु जैसे दिये गये हैं, वैसे के वैसे काम में नहीं लाये जाते। उनका कुछ हिस्सा निकालकर अलग कर दिया जाता है तथा कुछ हिस्सा बचाकर उसे काम में लिया जाता है। ऐसा ही प्रत्ययों के साथ भी होता है। इसलिये हमें यह जानना जरूरी है कि हमारे सामने जब भी धातु या प्रत्यय आदि आयें, तो उनका कितना हिस्सा हम बचायें और कितने हिस्से का लोप कर दें। जिन्हें हम हटा देते हैं उन्हीं का नाम अनुबन्ध है और उनकी इत् संज्ञा करके उन्हें हटाने के इस सभी कार्य का नाम इत् कार्य या अनुबन्धकार्य है।

जैसे आम का फल हम लाते हैं। उसके बाहर छिलका होता है और भीतर गुठली होती है। हम उन दोनों को हटाकर बीच का गूदा ही काम में लेते हैं। ठीक इसी प्रकार आचार्य ने धातुओं को तथा प्रत्ययों को बनाया है। उनमें आगे पीछे उन्होंने कुछ अनुबन्धों को लगाकर ही इन्हें हमारे सामने रखा है। हमें आगे कहे जाने वाले सूत्रों के सहारे से उन अनुबन्धों को हटा देना चाहिये।

डुकृञ् धातु को देखिये। इसमें धातु तो है 'कृ', परन्तु इसके आगे 'डु' है तथा पीछे 'ञ्'। जैसे आम के फल के गुठली छिलके को हटाकर हम गूदे का ही उपयोग करते हैं, उसी प्रकार डुकृञ् के डु तथा ञ् को हटाकर हम बीच के कृ का उपयोग करते हैं और इसी 'कृ' से हम 'करोति', 'करिष्यति' आदि सारे रूप बनाते हैं। इसी प्रकार टुनदि, ञिमिदा, डुपचष् आदि धातुओं को समझिये, इनमें नद्, मिद्, पच् आदि ही शेष बचते हैं।

जैसे केले में से हम केवल छिलका हटाते हैं और भीतर का सारा भाग काम में ले आते हैं, भीतर गुठली नहीं पाते, उसी प्रकार 'श्ना' आदि प्रत्यय के आदि के 'श्' का, लोप करके पूरा 'ना' हम काम में ले लेते हैं, तो ज्ञा से जानाति, लु से लुनाति आदि रूप हम बना लेते हैं।

जैसे बेर में हम बाहर जो गूदा पाते हैं, उसे काम में ले लेते हैं, भीतर की गुठली को फेंक देते हैं, उसी प्रकार बाधृ, अञ्चु, शद्लृ, गम्लृ आदि धातुओं में बाध्, अञ्च्, शद् ,गम् को तो हम बचा लेते हैं और इनके अन्त में लगे हुए ऋ, उ, लृ को हटा देते हैं।

इस प्रकार हमने देखा कि अनुबन्ध कभी तो धातु के आगे पीछे दोनों जगह लगे रहते हैं। कभी केवल आगे और कभी केवल पीछे। इसी प्रकार प्रत्ययों में भी होता है। अतः हमारी सबसे पहिली आवश्यकता यह है कि ज्यों ही कोई धातु या प्रत्यय हमारे सामने आये, हम उसमें से यह पहिचान लें कि उसमें से कितना हिस्सा हटाने का है और कितना बचाने का ?

इसके लिये हमें आठ सूत्रों की सहायता लेना पड़ेगी। अब आप आगे दिये गये धातुपाठ को खोलकर सामने रख लीजिये और इन सूत्रों के अर्थों को पढ़कर उन धातुओं के अनुबन्धों को पहिचानिये तथा उनका लोप कीजिये।

अनुबन्धों को इत् भी कहा जाता है।

इत् संज्ञा करने वाले सूत्र

१. **उपदेशेऽजनुनासिक इत्** - उपदेशावस्था में जो अनुनासिक अच् होता है उसकी इत् संज्ञा होती है।

अनुनासिक का अर्थ तो होता है ऐसा स्वर, जिसे नासिका से बोला जाये अथवा जिसके ऊपर ँ ऐसा चिन्ह लगा हो, परन्तु धातुपाठ में तो ऐसे धातु मिलते नहीं हैं, जिन पर अनुनासिक का चिह्न लगा हो, तो यहाँ हमें परम्परा का ही आश्रय लेना पड़ता है। हमें जिनकी 'इत् संज्ञा' करना है, उनके अनुनासिकत्व की कल्पना करनी पड़ती है, अर्थात् बाधृ को हम बाधृँ ऐसा मान लेते हैं, तब उस अनुनासिक ऋ की, 'इत् संज्ञा' हम करते हैं। इसी प्रकार गम्लृ में लृ की, मदी में 'ई' की, अञ्चु में उ' की, गुपू में ऊ, कटे में ए की, वदि में 'इ' की इत् संज्ञा हम करते हैं।

२. **हलन्त्यम्** - उपदेशावस्था में जो अन्तिम हल् (व्यञ्जन) होता है,

उसकी इत् संज्ञा होती है। जैसे - 'भिदिर्' में 'र्' है। यह धातु का अन्तिम हल् है। इसकी इत् संज्ञा, इस सूत्र से होती है। इसी प्रकार 'शप्' प्रत्यय में 'प्' की, 'श्नम्' प्रत्यय में 'म्' की, 'णिच्' प्रत्यय में 'च्' की, इत् संज्ञा होती है।

३. **न विभक्तौ तुस्माः** - विभक्ति में स्थित तवर्ग, सकार तथा मकार की इत् संज्ञा नहीं होती है। ध्यान दीजिये कि आपने जो 'तिङ् प्रत्यय' पढ़े हैं, उनका नाम 'विभक्ति' है। इनके अलावा 'सुप् प्रत्यय' भी विभक्ति हैं, तथा तद्धित में भी कुछ प्रत्यय आयेंगे, उनका नाम भी 'विभक्ति' प्रत्यय है।

जिनका नाम 'विभक्ति' है, ऐसे प्रत्ययों के अन्त में यदि तवर्ग = त्, थ्, द्, ध्, न् अथवा स्, म् हों, तो **हलन्त्यम्** सूत्र से उनकी इत् संज्ञा नहीं होती है। अतः तस्, थस् आदि के स् की इत् संज्ञा न होकर इसे विसर्ग हो जाता है।

४. **आदिर्ञिटुडवः** - उपदेशों के आदि में स्थित ञि, टु, तथा डु की इत् संज्ञा होती है। कुछ उदाहरण देखिये। ञिमिदा - मिद् / टुनदि - नद् / डुकृञ् - कृ आदि।

उपदेश - उपदेश का अर्थ होता है - आद्योच्चारण। अर्थात् आचार्य ने धातु प्रत्यय आदि को मूलतः जिस भी रूप में पढ़ा है, वही उपदेश है। जैसे कृ धातु की उपदेशावस्था है - डुकृञ्। मिद् धातु की उपदेशावस्था है - ञिमिदा।

आगे दिये हुए धातुपाठ के स्तम्भ 'दो' में जो धातुपाठ दिया गया है, वह भगवान् पाणिनि कृत मूल धातुपाठ है। उसे ही आप धातुओं की उपदेशावस्था समझिये। उन्हें पढ़ते जाइये तथा इन तीन सूत्रों से उनके अनुबन्धों की इत् संज्ञा करते जाइये। हमने अनुबन्धों की इत् संज्ञा करके शुद्ध निरनुबन्ध धातु स्तम्भ 'चार' में दे दिया है, उससे मिलाकर देखिये कि क्या आपका इत् संज्ञा करने का कार्य ठीक हो रहा है या नहीं ?

ये चार सूत्र, धातु, प्रत्यय, आगम, आदेश आदि जितने भी उपदश हैं, उन सभी में लगेंगे किन्तु आगे कहे जाने वाले तीन सूत्र धातुओं में नहीं लगेंगे केवल प्रत्ययों में लगेंगे।

५. **षः प्रत्ययस्य** - 'प्रत्यय' के आदि में स्थित 'ष्' की इत् संज्ञा होती है। 'प्रत्ययस्य' यह शब्द इस सूत्र में है, अतः यह सूत्र तथा इसके आगे के सूत्र केवल प्रत्ययों में लगेंगे, धातुओं में नहीं।

अतः षाकन्, ष्वुन्, ष्वुञ् आदि 'प्रत्ययों' के आदि 'षकार' की इत् संज्ञा

यह सूत्र करेगा किन्तु ध्यान रहे कि ष्वद, ष्ठिवु आदि 'धातुओं' के 'षकार' की इत् संज्ञा इससे कभी नहीं होगी, क्योंकि यह सूत्र केवल प्रत्ययों के आदि षकार की ही इत् संज्ञा करता है। धातुओं में यह नहीं लगता है।

६. **चुटू** - प्रत्ययों के आदि में स्थित चु अर्थात् चवर्ग (च्, छ्, ज्, झ्, ञ्) की तथा टु अर्थात् टवर्ग (ट्, ठ, ड्, ढ्, ण्) की इत् संज्ञा होती है। जैसे - 'जस्' प्रत्यय के आदि में जो 'ज्' है, यह चवर्ग है, 'टा' प्रत्यय के आदि में जो 'ट्' है यह टवर्ग है, इनकी इत् संज्ञा इस सूत्र से हो जायेगी तो जस् में बचेगा अस् और टा में बचेगा आ। यह सूत्र भी केवल प्रत्ययों के लिये है।

७. **लशक्वतद्धिते** - तद्धित से भिन्न प्रत्ययों के आदि में स्थित ल्, श् तथा कवर्ग (क्, ख्, ग्, घ्, ङ्) की इत् संज्ञा होती है। जैसे -

शप्, श्यन्, श्ना, शानच्, शतृ ये प्रत्यय हैं। इनके आदि में श् है। इस सूत्र से इस 'श्' की इत् संज्ञा कीजिये। प्रत्यय के आदि में स्थित कवर्ग की भी इत् संज्ञा कीजिये। जैसे - 'क्त' में 'क्' की, 'ख्युन्' में 'ख्' की, 'ग्स्नु' में 'ग्' की, 'घञ्' में 'घ्' की, 'ङस्' में 'ङ्' की आदि।

और भी कुछ उदाहरण देखिये - ख्युन् = यु / ग्स्नु = स्नु / श्नम् = न / शतृ = अत् / क्त्वा = त्वा / श्ना = ना / चानश् = आन / श = अ / शानन् = आन / घञ् = अ / शतृ = अत् / ल्युट् = यु आदि।

ध्यान रहे कि केवल यही एक ऐसा सूत्र है, जो तद्धित प्रत्ययों में नहीं लगता। इस प्रकार ६ सूत्र तो सभी प्रत्ययों के लिये है किन्तु यह सूत्र तद्धित प्रत्ययों को छोड़कर शेष प्रत्ययों के लिये ही है।

८. **तस्य लोपः** - ऊपर कहे गये सात सूत्रों से जिनकी भी 'इत् संज्ञा' होती है, उन सभी का लोप हो जाता है।

विशेष - देखिये ये ८ सूत्र हैं। इन ८ सूत्रों का ही इत्संज्ञा प्रकरण है। इनमें से ६ सूत्र तो इत्संज्ञा करते है। एक सूत्र (न विभक्तौ तुस्माः) इत् संज्ञा का निषेध करता है तथा यह एक सूत्र (तस्य लोपः) जिनकी इत् संज्ञा होती है उन इत्संज्ञकों का लोप करता है। जो सूत्र नाम (संज्ञा) करते हैं, वे संज्ञा सूत्र कहलाते हैं तथा जो सूत्र कुछ काम (विधान) करते हैं, वे विधिसूत्र कहलाते हैं। जो सूत्र विधिसूत्रों की गति में कहीं कहीं रोक लगा देते हैं, वे निषेध सूत्र कहलाते हैं।

इस प्रकार 'तस्य लोपः' सूत्र तो लोप करने का काम कर रहा है, अतः यह 'विधिसूत्र' हुआ और शेष सारे सूत्र इत् संज्ञा करने के कारण 'संज्ञा सूत्र' कहलाये। 'न विभक्तौ तुस्माः' निषेघ करने के कारण निषेध सूत्र कहलाया।

इन सूत्रों के सहारे से हमें धातुओं तथा प्रत्ययों के अनुबन्धों की इत् संज्ञा करके शुद्ध धातु तथा शुद्ध प्रत्यय बचा लेना चाहिये। पर उन्हें हटाने के बाद भी यह ध्यान रखना चाहिये कि जिनमें 'क्' की इत् संज्ञा हुई है, वे प्रत्यय कित् कहलाते हैं। जिनमें 'ङ्' भी इत् संज्ञा हुई है, वे ङित् कहलाते हैं। जिनमें 'श्' की इत् संज्ञा हुई है, वे शित् कहलाते हैं। इसी प्रकार 'ञ्' की इत् संज्ञा से ञित्, 'ण्' की इत् संज्ञा से णित्, आदि, ऐसे प्रत्ययों के नाम जानना चाहिये।

इसी प्रकार धातुओं को भी जानना चाहिये कि ञिमिदा, ञिष्विदा आदि धातुओं में 'आ' की इत् संज्ञा हुई है, अतः ये धातु आदित् कहलायेंगे। वदि, मदि, भदि आदि में हमने 'इ' की इत् संज्ञा की है, अतः ये धातु इदित् कहलायेंगे। मदी, नृती में हमने 'ई' की इत् संज्ञा की है, अतः ये धातु ईदित् कहलायेंगे। इसी प्रकार गाहू, गुपू आदि ऊदित् कहलायेंगे। कटे, चते आदि एदित् कहलायेंगे।

इस प्रकार से जिस भी अनुबन्ध की आप इत् संज्ञा करें, उसी इत् के नाम से उस धातु को विशेषित करके, उसका नाम स्मरण रखें। इसकी आवश्यकता आगे पड़ेगी।

हमें अब धातुपाठ में प्रवेश करना है। उसके लिये जो कुछ आवश्यक है, वह बतला रहे हैं –

१. सत्व विधि

जब आप धातुओं के अनुबन्धों की इत् संज्ञा कर लें, तब आप यह देखें कि किन किन धातुओं के आदि में 'ष्' है ? जिन धातुओं के आदि में आपको 'ष्' दिखे उस 'ष्' को आप इस सूत्र से 'स्' बना दीजिये –

धात्वादेः षः सः - धातु के आदि में स्थित ष् को स् आदेश होता है। जैसे ष्वद् = स्वद्। ष्णा = स्ना। ष्ठा = स्था आदि। इस कार्य को **'सत्व विधि'** कहते हैं। हमने धातुपाठ के स्तम्भ क्रमाङ्क ४ में, इत् संज्ञा करने के बाद, यह कार्य करके ही धातु को लिखा है। इसे वहीं देखें।

यहाँ ध्यान दें कि जब भी आप ष् को स् बनायें, तो देखें कि उस ष् के बाद यदि टवर्ग (ट, ठ, ड, ढ, ण) हो, तो उन्हें आप उसी क्रम से तवर्ग

अर्थात् (त, थ, द, ध, न) बना दें। जैसे -

ष्ठा - यहाँ 'ष्' के बाद 'ठ' है। यह टवर्ग का द्वितीयाक्षर है। जब भी आप इसके 'ष्' को **धात्वादेः षः सः** सूत्र से 'स्' बनायें तब इस 'ष्' के बाद में स्थित 'ठ' को आप तवर्ग का द्वितीयाक्षर 'थ' बना दें तो बनेगा 'स्था'। इसी प्रकार 'ष्टभ्' को 'स्तभ्'। 'ष्णा' को 'स्ना', 'ष्णिह्' को 'स्निह्', आदि बना लें।

किन्तु 'ष्वद्' में 'ष्' के बाद 'व' है। यह टवर्ग नहीं है, तो यह ज्यों का त्यों 'स्वद्' ही रहेगा।

षकारादि धातुओं में कुछ धातु ऐसे भी हैं, जिनके ष् को 'धात्वादेः षः सः' सूत्र से सत्व नहीं होता है। ये धातु इस प्रकार हैं -

सुब्धातुष्ठिवुष्वष्कादीनां सत्वप्रतिषेधो वक्तव्यः (वार्तिक) - ष्वष्क तथा ष्ठिवु धातुओं के आदि ष् को स् आदेश नहीं होता। अतः ष्वष्क को ष्वष्क ही रहता है - ष्वष्कते / तथा ष्ठिवु को ष्ठिवु ही रहता है - ष्ठीवति।

सुब्धातु का अर्थ है नामधातु। इनकी चर्चा नामधातु वाले प्रकरण में होगी। इन नामधातुओं के आदि में स्थित ष् को भी स् आदेश नहीं होता। जैसे - षण्ढीयते।

आदेश - जिसे हटाया जाता है, उसे स्थानी कहते हैं तथा जो उसकी जगह आकर बैठ जाता है, उसे आदेश कहा जाता है । ष्वद् - स्वद् को देखिये। यहाँ ष् के स्थान पर स् हुआ है। अतः ष् स्थानी है तथा स् आदेश है।

षोपदेश धातु - धातुपाठ में केवल ष् से प्रारम्भ हो जाने से कोई धातु षोपदेश नहीं हो जाता। अतः षोपदेश धातुओं को पहिचानने की यह विधि है-

धातुपाठ में जो धातु ष् से प्रारम्भ हो रहे हैं, उनके 'ष्' को पहिले 'धात्वादेः षः सः' सूत्र से 'स्' बना लीजिये। अब ये सब सकारादि हो गये।

१. अब इन सारे सकारादि धातुओं को तथा षकारादि से सकारादि बने हुए धातुओं को देखिये। इनमें से सेकृ, सृप्, सृ, सृज्, स्तृ, स्तॄ, स्त्यै, ये सात धातु, कभी भी षोपदेश नहीं होते।

२. ष्वस्क्, स्विद्, स्वद्, स्वञ्ज्, स्वप्, स्मिङ्, ये छह धातु 'षोपदेश' ही होते हैं।

३. इन तेरह धातुओं से बचे हुए जो 'एकाच् सकारादि, षकारादि धातु' हैं, उनमें से -

१. जिनके 'स्' के बाद कोई भी अच् हो, जैसे - सूद्, सिध् आदि, अथवा

२. जिनके 'स्' के बाद कोई भी दन्त्य व्यञ्जन हो, जैसे - स्था, स्तु, आदि, वे धातु 'षोपदेश धातु' कहलाते हैं।

२. नत्व विधि

णो नः - धातु के आदि में स्थित 'ण्' को 'न्' आदेश होता है। जैसे - णदि = नद्, णम् = नम् आदि। यहाँ 'ण्' स्थानी है तथा 'न्' आदेश है।

णोपदेश धातु - उन धातुओं को देखिये, जो 'न' अथवा 'ण' से प्रारम्भ हो रहे हैं। इनमें से, नर्द्, नाट्, नाथ्, नाध्, नन्द्, नक्क्, नॄ, नृत्, इन आठ धातुओं को छोड़कर शेष नकारादि, णकारादि धातु 'णोपदेश धातु' कहलाते हैं।

३. नुमागम विधि

इदितो नुम् धातोः - जिन धातुओं में 'इ' की इत् संज्ञा हुई हो, ऐसे वदि, मदि, भदि आदि इदित् धातुओं को नुम् (न्) का आगम होता है।

आगम का अर्थ होता है - किसी भी अक्षर को हटाये बिना, किसी दूसरे अक्षर को लाकर बैठा देना।

प्रश्न उठता है कि इस नुम् = न् को धातु के भीतर कहाँ बैठायें ?

मिदचोऽन्त्यात्परः - 'इ' की इत् संज्ञा करने के बाद देखिये कि अन्तिम अच् कौन सा है ? हम पाते हैं कि वद्, मद्, भद् आदि में 'अ' ही अन्तिम अच् है। अतः इस सूत्र से, उस अन्तिम अच् 'अ' के बाद ही नुम् (न्) को बैठाया जायेगा, तो वद् से वन्द्, मद् से मन्द, भद् से भन्द् आदि रूप तैयार होंगे। ऐसा ही सारे इदित् धातुओं में कीजिये।

किसी भी अक्षर को हटाये बिना, आकर बैठ जाने के कारण, 'आगम' को 'मित्रवत्' कहा जाता है - 'मित्रवदागमः'।

अनुस्वार सन्धि

नश्चापदान्तस्य झलि - जब अपद के अन्त में न्, म् आयें तो उन्हें अनुस्वार होता है, यदि उन न्, म् के बाद आने वाला व्यञ्जन झल् हो तो। यथा-

वद् - नुमागम होकर - वन्द् / न् को 'नश्चापदान्तस्य झलि' सूत्र से अनुस्वार होकर - वंद् / इसी प्रकार - मुच् - मुन्च् - मुंच् / लाछ् - लान्छ् - लांछ् / कप् - कन्प् - कंप् / गुफ् - गुन्फ् - गुंफ् / लब् - लन्ब् - लंब् आदि को देखिये। ये अपद हैं। इन अपदों में स्थित नकार, अपदान्त नकार है।

अत: इसे इस 'नश्चापदान्तस्य झलि' सूत्र से अनुस्वार बनाइये।

जब अनुस्वार बन जाये, तब उस अनुस्वार के आगे जो व्यञ्जन हो, उसे देखिये।

परसवर्ण सन्धि

अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः - अनुस्वार को परसवर्ण होता है, यय् परे होने पर। 'यय्' का अर्थ होता है, किसी भी वर्ग का प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ व्यञ्जन तथा य्, व्, र्, ल् । परसवर्ण का अर्थ होता है, अपने आगे आने वाले वर्ण के समान, उसी स्थान का वर्ण बन जाना।

अनुस्वार के परसवर्ण हो जाने का अर्थ होता है, अपने आगे वाले वर्ण के समान उसी स्थान का पञ्चम वर्ण बन जाना।

तात्पर्य यह हुआ कि श् स् ष् ह् परे होने पर अनुस्वार को परसवर्ण नहीं होता। श् स् ष् ह् के अलावा अन्य कोई भी व्यञ्जन परे होने पर अनुस्वार, अपने आगे आने वाले वर्ण के ही वर्ग का, पञ्चम वर्ण बन जाता है। जैसे -

वद् - नुमागम होकर - वन्द् - न् को अनुस्वार होकर - वंद् - अनुस्वार को परसवर्ण होकर - वन्द् / इसी प्रकार - मुच् - मुन्च् - मुंच् - अनुस्वार को परसवर्ण होकर - मुञ्च् / लाछ् - लान्छ् - लांछ् - अनुस्वार को परसवर्ण होकर - लाञ्छ् / कप् - कन्प् - कंप् - अनुस्वार को परसवर्ण होकर - कम्प् / गुफ् - गुन्फ् - गुंफ् - अनुस्वार को परसवर्ण होकर - गुम्फ् / लब् - लन्ब् - लंब् - अनुस्वार को परसवर्ण होकर - लम्ब् आदि।

इस परसवर्ण को इस प्रकार याद रखिये -

अनुस्वार से -

क्, ख्, ग्, घ्, परे होने पर, अनुस्वार को उस कवर्ग का पञ्चमाक्षर ङ् हो जाता है। यथा - शंक् - शङ्क् / इंख् - इङ्ख् / अंग् - अङ्ग् / लंघ् - लङ्घ् आदि।

च्, छ्, ज्, झ्, परे होने पर, अनुस्वार को उस चवर्ग का पञ्चमाक्षर ञ् हो जाता है। यथा - मुंच् - मुञ्च् / लांछ् - लाञ्छ् / गृंज् - गृञ्ज् / आदि।

ट्, ठ्, ड्, ढ्, परे होने पर अनुस्वार को उस टवर्ग का पञ्चमाक्षर ण् हो जाता है। यथा - लुंठ् - लुण्ठ् / गंड् - गण्ड् आदि।

त्, थ्, द्, ध्, परे होने पर, अनुस्वार को उस तवर्ग का पञ्चमाक्षर न् हो जाता है। यथा - अंत् - अन्त् / मंथ् - मन्थ् / क्लिंद् - क्लिन्द् आदि।

प्, फ्, ब्, भ्, परे होने पर, अनुस्वार को उस पवर्ग का पञ्चमाक्षर म् हो जाता है। यथा - कंप् - कम्प् / गुंफ् - गुम्फ् / लंब् - लम्ब् आदि।

४. उपधादीर्घ विधि

उपधायां च - जिन धातुओं की उपधा में 'र्' हो और उस 'र्' के पूर्व में इ, उ, हों, उन इ, उ को दीर्घ हो जाता है। जैसे - कुर्द् - कूर्द् / खुर्द् - खूर्द् / गुर्द् - गूर्द् आदि।

धातुओं के अनुबन्धों की इत् संज्ञा कर चुकने के बाद, ये चार कार्य यदि प्राप्त हैं, तो आपको अवश्य कर लेना चाहिये।

इनको कर लेने के बाद जो धातु तैयार होता है, उसे हमने धातुपाठ के स्तम्भ ४ में दे दिया है। इसी धातु से सारे आर्धधातुक प्रत्यय लगाये जायेंगे।

हमने जाना कि - धातु सामने आने पर हम सबसे पहले -

१. उपदेशेऽजनुनासिक इत् ३. आदिर्ञिटुडवः
२. हलन्त्यम् ४. तस्य लोपः

इन चारों सूत्रों की सहायता से धातुओं के अनुबन्धों की इत् संज्ञा करके उनका लोप कर लें। जब अनुबन्धों का लोप हो जाये तब -

१. णो नः ३. इदितो नुम् धातोः
२. धात्वादेः षः सः ४. उपधायां च

इन चार सूत्रों की सहायता से यदि नत्व, सत्व, नुमागम, और उपधादीर्घ कार्य प्राप्त हैं तो उन्हें भी कर लें, अन्यथा आगे बढ़ें।

अब आप धातुपाठ को खोलकर सामने रख लीजिये। उसके एक एक धातु को पढ़ते जाइये, उनके अर्थ पढ़ते जाइये तथा उनमें इन आठ सूत्रों की सहायता से इत् कार्य तथा नत्व, सत्व, आदि जो भी कार्य प्राप्त हों, उन्हें करते हुए, धातुपाठ के स्तम्भ क्रमाङ्क ४ में जो रूप दिया है, उस तक पहुँच जाइये।

स्तम्भ क्रमाङ्क ४ में दिये हुए, इस निरनुबन्ध धातु में ही सारे आर्धधातुक प्रत्यय, लगाये जाते हैं।

अतः स्तम्भ क्रमाङ्क ४ में दिये हुए इस धातु को ही आप आर्धधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग समझिये।

धातुपाठ की संरचना

अब आगे दिये जाने वाले धातुपाठ को खोलकर सामने रख लीजिये। भगवान् पाणिनि रचित धातुपाठ में १९४३ धातु हैं। हमने वे पूरे के पूरे धातु अपने इस धातुपाठ में लिये हैं, कण्ड्वादि धातु भी लिये हैं, किन्तु हमने उन धातुओं को अङ्गकार्य के आधार पर इस प्रकार वर्गीकृत कर दिया है, जिससे कि धातुरूप बनाने का कार्य एकदम सरल हो गया है। यह वर्गीकरण इस प्रकार है -

अजन्त (स्वरान्त) धातुओं का वर्गीकरण - अजन्त धातुओं में प्रत्यय का प्रभाव प्रायः धातु के अन्तिम स्वर पर पड़ता है, अतः हमने इस प्रभाव के आधार पर अजन्त धातुओं का वर्गीकरण इतने वर्गों में किया है -

आकारान्त धातु, इकारान्त धातु, ईकारान्त धातु, उकारान्त धातु, ऊकारान्त धातु, ऋकारान्त धातु, ॠकारान्त धातु तथा एजन्त धातु।

यह तो अजन्त धातुओं का वर्गीकरण हुआ।

हलन्त (व्यञ्जनान्त)धातुओं का वर्गीकरण - हलन्त धातुओं में प्रत्यय का प्रभाव प्रायः धातु की उपधा के लघु अ, लघु इ, लघु उ, लघु ऋ पर पड़ता है, अतः हमने इस प्रभाव के आधार पर, हलन्त धातुओं का वर्गीकरण इतने वर्गों में किया है - **अदुपध धातु, इदुपध धातु, उदुपध धातु, ऋदुपध धातु अनिदित् धातु तथा शेष धातु।**

गणों के भीतर अन्तर्गण हैं। इन अन्तर्गणों के धातुओं को भी हमने इन्हीं वर्गों में रखने का यथासम्भव प्रयास किया है। यही इस धातुपाठ की विशेषता है।

इस धातुपाठ में हमने पाणिनीय धातुपाठ के, सारे के सारे धातु लिये हैं तथा उस धातु की मूल क्रम संख्या को भी उसके सामने लिख दिया है।

अभी आपने सार्वधातुक प्रत्यय तथा आर्धधातुक प्रत्यय पढ़े हैं। अब आप धातुपाठ की संरचना पढ़ें और जानें कि धातु से बना हुआ कौन सा अङ्ग सार्वधातुक प्रत्यय के लिये है और कौन सा अङ्ग आर्धधातुक प्रत्यय के लिये है।

इस धातुपाठ को हमने सात स्तम्भों में विभाजित किया है। वे स्तम्भ इस प्रकार हैं -

प्रथम स्तम्भ - इसमें धातु का क्रमाङ्क दिया है। एक, दो, तीन आदि।

द्वितीय स्तम्भ - इसमें हमने मूल धातु, जैसा पाणिनीय धातुपाठ में

है, ठीक वही, ज्यों का त्यों दिया है। साथ ही धातु के पहले तथा धातु के बाद में, दोनों ही ओर अलग अलग क्रमाङ्क दिये हैं।

हमने धातु के पहले जो क्रमाङ्क लिखा है, वह हमारे इस धातुपाठ का है तथा बाद में जो क्रमाङ्क लिखा है, वह पाणिनीय धातुपाठ का मूल क्रमाङ्क है। जैसे क्रमाङ्क २, धातु 'टुओश्वि गतिवृद्ध्योः' को देखिये। इसके पहले जो क्रमाङ्क २ लिखा है, वह तो इस धातुपाठ का है तथा इसके बाद में जो क्रमाङ्क १०१० लिखा है, वह पाणिनीय धातुपाठ का है। यदि इस धातु को आप पाणिनीय धातुपाठ में ढूढ़ेंगे, तो यह धातु आपको क्रमाङ्क १०१० में मिलेगा तथा इस धातुपाठ में यह धातु आपको क्रमाङ्क २ में मिलेगा।

तृतीय स्तम्भ - इसमें धातु का हिन्दी में अर्थ दिया है। इसे अन्तिम मत मानिये। यह अर्थ वस्तुतः धातु का स्थूल अर्थ है। इसके अतिरिक्त भी धातु के अनेक अर्थ हो सकते हैं, जिन्हें कोशों से तथा प्रयोगों से जानना चाहिये। जैसे - जि १७१९ से लेकर तर्क १७६३ तक जो ६५ धातु हैं, उनका अर्थ धातुपाठ में लिखा है 'भाषार्थाः, भासार्थाः वा'। इसका अर्थ है - चमकना, प्रकाशित होना, बोलना आदि। परन्तु इतने सारे धातु एक सामान्य अर्थ को लेकर नहीं हैं।

अतः यहाँ यह जानना चाहिये कि धातुपाठ में दिये हुए अर्थनिर्देश उपलक्षणमात्र हैं। उनके अर्थ लोक में ढूँढ़ना चाहिये।

धातुपाठ में ११८ धातु हिंसार्थक हैं। इन सभी का अर्थ मार डालना नहीं है। इसमें मानस हिंसा से लेकर, ठोकर लगाना और मार डालना आदि सभी अर्थ शामिल हैं। धातुपाठ में २३५ धातु गत्यर्थक हैं। इनमें पलक झपकाने की गति से लेकर प्रलय के नर्तन तक की सभी गतियाँ शामिल हैं।

लोक में प्रयोग देखकर इन अर्थों का अनुसन्धान करना चाहिये।

धातुपाठ में पठित इन धातुओं में यदि उपसर्ग लगा दें तो इनके अर्थ और अधिक हो जाते हैं। जैसे हरति में उपसर्ग लगाकर - प्रहरति, विहरति, आहरति, संहरति, परिहरति आदि। इन्हें भी प्रयोगों से जानना चाहिये।

चतुर्थ स्तम्भ - इसमें धातुओं के अनुबन्धों को हटाकर, धातु का निरनुबन्ध रूप दिया गया है। इसे ही आप आर्धधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग समझिये। इस चतुर्थ स्तम्भ में दिये गये 'धातु' से ही आप, सभी आर्धधातुक प्रत्यय, लगाइये।

पञ्चम स्तम्भ – अब धातुपाठ का स्तम्भ क्रमाङ्क पाँच देखिये। वस्तुतः पाणिनीय व्याकरण में ऐसी व्यवस्था है, कि जब भी धातु से कोई भी कर्त्रर्थक तिङ् या कर्त्रर्थक कृत् सार्वधातुक प्रत्यय लगता है, तब धातु + प्रत्यय के बीच में आकर विकरण बैठता ही है और उसके बैठ जाने पर, पहिले धातु + विकरण को ही जोड़ा जाता है। धातु + विकरण को जोड़ लेने से जो भी तैयार होता है, उसी में कर्त्रर्थक तिङ् या कृत् सार्वधातुक प्रत्यय को जोड़ा जाता है। अतः हमने इस स्तम्भ में, धातु + विकरण को जोड़कर, आपके सामने रख दिया है। यही कर्त्रर्थक तिङ् या कर्त्रर्थक कृत् सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग है।

किन्तु ध्यान रहे कि कर्मार्थक तथा भावार्थक तिङ्, कृत् सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये यह अङ्ग नहीं होता है। इनके लिये तो जो निरनुबन्ध धातु होता है, वही अङ्ग होता है। आर्धधातुक प्रत्ययों के लिये भी जो निरनुबन्ध धातु होता है, वही अङ्ग होता है।

हम बहुत सावधान होकर प्रत्यय को पहिचानें, तदनुसार निश्चय करें कि उस प्रत्यय को हमें क्रमाङ्क चार के शुद्ध निरनुबन्ध धातु में लगाना है अथवा क्रमाङ्क पाँच के धातु + विकरण को जोड़कर बने हुए धातु में लगाना है।

षष्ठ स्तम्भ – षष्ठ स्तम्भ में धातुओं की पहिचान बतलाई गई है कि वे परस्मैपदी हैं, या आत्मनेपदी या उभयपदी।

पद निर्णय की औत्सर्गिक व्यवस्था

धातुओं के पद निर्णय की विशेष विस्तृत व्यवस्था हमने धातुपाठ के अन्त में 'धातुओं के पद का निर्णय' नामक पाठ में दी है। उसे वहीं देखें।

अभी यहाँ संक्षेप में बतला रहे हैं। पाणिनीय धातुपाठ में जो धातु 'अनुदात्तेत्' पढ़े गये हैं तथा जो धातु 'ङित्' पढ़े गये हैं उन अनुदात्तेत् तथा ङित् धातुओं से **अनुदात्तङित आत्मनेपदम्** सूत्र से आत्मनेपद होता है।

धातु का पद पहिचान में आ जाये, इसलिये हमने षष्ठ स्तम्भ में ऐसे अनुदात्तेत् तथा ङित् आत्मनेपदी धातुओं को, लट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन में, 'ते' लगाकर बतलाया है।

पाणिनीय धातुपाठ में जो धातु 'स्वरितेत्' पढ़े गये हैं तथा जो धातु 'ञित्' पढ़े गये हैं उन स्वरितेत् तथा ञित् धातुओं की क्रिया का फल, यदि कर्ता को मिलता हो, तो **स्वरितञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले** सूत्र से, आत्मनेपद होता है।

यदि उस क्रिया का फल कर्ता को न मिलता हो तो परस्मैपद होता है। ऐसे उभयपदी धातुओं को हमने धातुपाठ में 'ति'/ 'ते' लगाकर बतलाया है।

अनुदात्तेत्, ङित्, स्वरितेत्, ञित्, से बचे हुए जो भी 'उदात्तेत्' आदि धातु हैं, उनसे **शेषात् कर्तरि परस्मैपदम्** सूत्र से कर्तृवाच्य में परस्मैपद होता है। ऐसे उदात्तेत् धातुओं को हमने धातुपाठ में 'ति' लगाकर बतलाया है।

जो धातु परस्मैपद के हैं, उनमें आप परस्मैपद के प्रत्यय ही लगाइये। जो धातु आत्मनेपद के हैं, उनमें आप आत्मनेपद के प्रत्यय ही लगाइये। जो धातु उभयपदी हैं, उनमें आप दोनों में से कोई भी प्रत्यय लगा सकते हैं।

यह पद निर्णय की औत्सर्गिक व्यवस्था है किन्तु इसे अन्तिम व्यवस्था न मानें क्योंकि कई धातु ऐसे भी हैं, जो कि किसी उपसर्ग या किसी प्रत्यय के साथ आने पर, अपना पद बदल लेते हैं।

सप्तम स्तम्भ – सप्तम स्तम्भ में बतलाया गया है कि धातु सेट् है या अनिट्। जैसे - 'पठित' में पठ् + त के बीच में इ = इट् बैठा है। अतः यह धातु सेट् है। 'कृत' में, कृ + त के बीच में इ = इट् नहीं बैठा है। अतः यह धातु अनिट् है। नृत् + स्यति - नर्त्स्यति, नर्तिष्यति को देखिये। यहाँ इ = इट् विकल्प से बैठा है। अतः यह धातु वेट् है।

इट् का सम्बन्ध आर्धधातुक प्रत्ययों से है। इसे, आर्धधातुक प्रत्यय लगाते समय **इडागम प्रकरण** में विस्तार से समझाया जायेगा, अतः अभी इस सातवें स्तम्भ को पढ़ने का प्रयास बिल्कुल न करें। धातुपाठ में स्थानाभाव के कारण सेट् धातुओं को 'से.' कहा गया है। वेट् धातुओं को 'वे.' कहा गया है और अनिट् धातुओं 'अ.' कहा गया है।

विशेष – इस धातुपाठ में कुछ धातु आपको ऐसे भी मिल जायेंगे, जिनमें क्रमाङ्क नहीं है। जैसे भ्वादिगण का ध्वंसु धातु (५७१) देखिये। यह धातु अनिदित् वर्ग में भी आता है तथा द्युतादि अन्तर्गण में भी आता है। अतः इसे एक जगह तो हमने क्रमाङ्क दे दिया है तथा दूसरी जगह बिना क्रमाङ्क के छोड़ दिया है ताकि धातुओं की संख्या ज्यों की त्यों बनी रहे।

ग्रन्थ के अन्त में हमने वर्णानुक्रमणिका भी दे दी है। इस धातुपाठ में जब कोई धातु आपको ढूँढ़ना हो, तब आप उसका उपयोग कीजिये।

अब धातुपाठ प्रारम्भ कर रहे हैं –

धातुपाठ

भ्वादिगण

कर्तरि शप् – कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, धातुओं से शप् विकरण लगाया जाता है। अतः भ्वादिगण के धातुओं में शप् विकरण लगाकर कर्त्रर्थक तिङ्, कृत् सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग बनाये गये हैं। धातुओं में शप् विकरण लगाकर, कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग बनाने की विधि, आगे भ्वादिगण में बतलाई गई है।

हमने धातुपाठ के पाँचवें स्तम्भ में, धातु + विकरण को जोड़कर बनाये हुए इन अङ्गों को रखा है। जब आपको किसी भी धातु से कर्त्रर्थक तिङ् या कर्त्रर्थक कृत् सार्वधातुक प्रत्यय लगाना हो, तब आप उस प्रत्यय को, इसी पञ्चम स्तम्भ में दिये हुए, धातु + विकरण को जोड़कर बनाये हुए अङ्ग से लगाइये।

प्रश्न उठता है कि किसी भी धातु से विकरण तो तभी लगाया जाता है, जब उस धातु के बाद में कोई भी कर्त्रर्थक तिङ् या कर्त्रर्थक कृत् सार्वधातुक प्रत्यय बैठा हो। आप कहेंगे कि यहाँ इस धातुपाठ में तो धातु अकेला बैठा है, उसके बाद में कोई भी कर्त्रर्थक तिङ् या कृत् सार्वधातुक प्रत्यय नहीं है, तब भी आप इन धातुओं से विकरण क्यों लगा रहे हैं ? तो इसका उत्तर यह है कि हमें इन धातुओं के बाद कर्त्रर्थक तिङ् या कृत् सार्वधातुक प्रत्यय लगाना ही है, अतः हमने इन सभी धातुओं के बाद कर्त्रर्थक तिङ् या कृत् सार्वधातुक प्रत्ययों की कल्पना कर ली है। हमारी कल्पना में ये कर्त्रर्थक तिङ् या कृत् सार्वधातुक प्रत्यय, इन धातुओं के बाद में बैठे हैं, उन्हीं को देखकर हम ये विकरण इन धातुओं से लगा रहे हैं।

विशेष – इस धातुपाठ में कुछ धातु ऐसे हैं, जो कि दो दो बार पढ़े गये हैं। ऐसे धातुओं के दो बार पढ़ने के प्रयोजन का विचार करना चाहिये। जैसे – षद्लृ धातु भ्वादि तथा तुदादि दोनों गणों में है, तो इसके अलग अलग प्रयोजन हैं। यदि कोई धातु किसी अन्तर्गण में है, तथा वैसा ही धातु अन्तर्गण के बाहर भी है, तब भी उसका प्रयोजन है, किन्तु यदि ऐसा नहीं है, तब यह जानना चाहिये कि इनके दो बार पढ़ने का कोई भी औचित्य नहीं है। जैसे –

'षच सेचने' क्रमाङ्क १९७ तथा क्रमाङ्क २३२ / 'रट परिभाषणे' ९७

तथा ११३ / 'गडि वदनैकदेशे' ३९० तथा ४४१ / 'अञ्चु गतिपूजनयोः' ५५० तथा अञ्चु गतौ ५६६ / श्रन्थ विमोचनप्रतिहर्षयोः १५१० तथा श्रन्थ सन्दर्भे १५१२ आदि धातु निष्प्रयोजन ही दो दो बार पढ़े गये हैं। इनका परिष्कार होना चाहिये।

वर्तमान में जैसा भी पाणिनीय धातुपाठ मिलता है, उसमें, तथा सिद्धान्तकौमुदी आदि ग्रन्थों में भी ये धातु दो दो बार पढ़े गये हैं। उसी के अनुकरण से हमने भी इन्हें दो बार पढ़ दिया है। अब धातुपाठ प्रारम्भ कर रहे हैं -

भ्वादिगण के आकारान्त धातु

भ्वादिगण में, स्था, पा, घ्रा, म्ना, दाण्, ध्मा, गाङ्, ये ७ आकारान्त धातु हैं।

इनमें शप् विकरण लगाकर कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग बनाने का विवेचन, आगे विशिष्ट धातुओं के वर्ग में आयेगा। इन्हें यहाँ इसलिये नहीं बतलाया है कि सार्वधातुक प्रत्यय लगने पर इनकी आकृति पूर्णतः बदल जाती है, अतः हम इकारान्त धातुओं से धातुपाठ प्रारम्भ कर रहे हैं।

भ्वादिगण के इकारान्त धातु

१.	जि जये ५६१	जीतना	जि	जय	जयति	अ.
२.	टुओश्वि गतिवृद्ध्योः १०१०	बढ़ना, फूलना	श्वि	श्वय	श्वयति	से.
३.	जि ९४६	जीतना, पराजित करना	जि	जय	जयति	अ.
४.	ज्रि अभिभवे ९४७	जीतना, पराजित करना	ज्रि	ज्रय	ज्रयति	अ.
५.	क्षि क्षये २३६	क्षीण होना	क्षि	क्षय	क्षयति	अ.
६.	ष्मिङ् ईषद्हसने ९४८	मुस्कुराना	स्मि	स्मय	स्मयते	अ.
७.	श्रिञ् सेवायाम् ८९७	सेवा करना, आश्रय लेना	श्रि	श्रय	श्रयति श्रयते	से.

भ्वादिगण के ईकारान्त धातु

८.	डीङ् विहायसा गतौ ९६८	उड़ना	डी	डय	डयते	अ.
९.	णीञ् प्रापणे ९०१	ले जाना	नी	नय	नयति नयते	अ.

भ्वादिगण के उकारान्त धातु

१०.	ध्रु स्थैर्ये ९४३	स्थिर होना	ध्रु	ध्रव	ध्रवति	अ.
११.	दु गतौ ९४४	जाना, पिघलना	दु	दव	दवति	अ.

१२.	द्रु गतौ ९४५	जाना, पिघलना	द्रु	द्रव	द्रवति	अ.
१३.	स्रु गतौ ९४०	बहना, टपकना	स्रु	स्रव	स्रवति	अ.
१४.	षु प्रसवैश्वर्ययोः ९४१	जन्म देना	सु	सव	सवति	अ.
१५.	गुङ् अव्यक्ते शब्दे ९४९	अव्यक्त शब्द करना, गुँगुआना	गु	गव	गवते	अ.
१६.	कुङ् ९५१	भनभनाना, शब्द करना	कु	कव	कवते	अ.
१७.	घुङ् ९५२	आवाज करना	घु	घव	घवते	अ.
१८.	उङ् ९५३	आवाज करना	उ	अव	अवते	अ.
१९.	ङुङ् शब्दे ९५४ (उङ्, कुङ्, खुङ्, घुङ्, गुङ्, ङुङ्, इत्यन्ये)	आवाज करना	ङु	ङव	ङवते	अ.
२०.	च्युङ् ९५५	च्युत होना	च्यु	च्यव	च्यवते	अ.
२१.	ज्युङ् ९५६	नजदीक आना, जाना	ज्य	ज्यव	ज्यवते	अ.
२२.	प्रुङ् ९५७	जाना, हिलना	प्रु	प्रव	प्रवते	अ.
२३.	प्लुङ् गतौ ९५८	जाना, उड़ना, तैरना, उछलना	प्लु	प्लव	प्लवते	अ.
२४.	रुङ् गतिरेषणयोः ९५९	जाना, क्रोध करना, मार डालना	रु	रव	रवते	अ.

भ्वादिगण के ऊकारान्त धातु

२५.	भू सत्तायाम् १	होना	भू	भव	भवति	से.
२६.	पूङ् पवने ९६६	पवित्र करना, साफ करना	पू	पव	पवते	अ.
२७.	मूङ् बन्धने ९६७	बाँधना	मू	मव	मवते	अ.

भ्वादिगण के ऋकारान्त धातु

२८.	ह्वृ कौटिल्ये ९३१	कुटिलता करना	ह्वृ	ह्वर	ह्वरति	अ.
२९.	ह्वृ संवरणे ९३४	स्वीकार करना	ह्वृ	ह्वर	ह्वरति	अ.
३०.	स्वृ शब्दो - पतापयोः ९३२	शब्द करना, रोगी होना	स्वृ	स्वर	स्वरति	अ.
३१.	स्मृ चिन्तायाम् ९३३	याद करना	स्मृ	स्मर	स्मरति	अ.
	सृ गतौ ९३५	सरकना, बढ़ना	सृ	सर	सरति	अ.

३२.	गृ ९३७	सींचना, गीला करना	गृ	गर	गरति	अ.
३३.	घृ सेचने ९३८	सींचना, गीला करना	घृ	घर	घरति	अ.
३४.	ध्वृ हूर्च्छने ९३९	टेढ़ा करना	ध्वृ	ध्वर	ध्वरति	अ.
३५.	धृङ् अवध्वंसने ९६०	गिरना, नष्ट होना	धृ	धर	धरते	अ.
३६.	भृञ् भरणे ८९८	भरण करना	भृ	भर	भरति भरते	अ.
३७.	हृञ् हरणे ८९९	हरण करना	हृ	हर	हरति हरते	अ.
३८.	धृञ् धारणे ९००	धारण करना	धृ	धर	धरति धरते	अ.

भ्वादिगण के ॠकारान्त धातु

३९.	तॄ प्लवनतरणयो: ९६९	तैरना, पार जाना	तॄ	तर	तरति	से.

भ्वादिगण के एजन्त (ए, ओ, ऐ, औ से अन्त होने वाले) धातु

४०.	धेट् पाने ९०२	स्तनपान करना	धे	धय	धयति	अ.
४१.	ग्लै ९०३	दु:खी होना	ग्लै	ग्लाय	ग्लायति	अ.
४२.	म्लै हर्षक्षये ९०४	म्लान होना	म्लै	म्लाय	म्लायति	अ.
४३.	द्यै न्यक्करणे ९०५	तिरस्कार करना	द्यै	द्याय	द्यायति	अ.
४४.	द्रै स्वप्ने ९०६	सोना	द्रै	द्राय	द्रायति	अ.
४५.	ध्रै तृप्तौ ९०७	तृप्त होना	ध्रै	ध्राय	ध्रायति	अ.
४६.	ध्यै चिन्तायाम् ९०८	ध्यान करना	ध्यै	ध्याय	ध्यायति	अ.
४७.	रै शब्दे ९०९	शब्द करना	रै	राय	रायति	अ.
४८.	स्त्यै ९१०	शब्द करना	स्त्यै	स्त्याय	स्त्यायति	अ.
४९.	ष्ट्यै शब्द - संघातयो:९११	शब्द करना	स्त्यै	स्त्याय	स्त्यायति	अ.
५०.	खै खदने ९१२	खोदना, सताना	खै	खाय	खायति	अ.
५१.	क्षै ९१३	क्षीण होना	क्षै	क्षाय	क्षायति	अ.
५२.	जै ९१४	क्षीण होना	जै	जाय	जायति	अ.
५३.	षै क्षये ९१५	क्षीण होना	सै	साय	सायति	अ.
५४.	कै ९१६	काँव काँव करना, आवाज करना	कै	काय	कायति	अ.
५५.	गै शब्दे ९१७	गाना	गै	गाय	गायति	अ.

५६.	शै ९१८	पकाना	शै	शाय	शायति	अ.
५७	श्रै पाके ९१९ स्रै इति केषुचित्पाठः	पकाना	श्रै	श्राय	श्रायति	अ.
५८.	पै ९२०	सुखाना	पै	पाय	पायति	अ.
५९.	ओवै शोषणे ९२१	सुखाना	वै	वाय	वायति	अ.
६०.	ष्टै ९२२	लपेटना, सजाना	स्तै	स्ताय	स्तायति	अ.
६१.	ष्णै वेष्टने ९२३ (शोभायां चेत्येके)	लपेटना, सजाना	स्नै	स्नाय	स्नायति	अ.
६२.	दैप् शोधने ९२४	साफ करना	दै	दाय	दायति	अ.
६३.	ष्यैङ् वृद्धौ ९६४	बढ़ना	स्यै	स्याय	स्यायते	अ.
६४.	मेङ् प्रणिदाने ९६१	अदल बदल करना	मे	मय	मयते	अ.
६५.	देङ् रक्षणे ९६२	पोषण करना, रक्षा करना	दे	दय	दयते	अ.
६६.	त्रैङ् पालने ९६५	रक्षा करना	त्रै	त्राय	त्रायते	अ.
६७.	श्यैङ् गतौ ९६३	जाना	श्यै	श्याय	श्यायते	अ.
६८.	वेञ् तन्तुसन्ताने १००६	बुनना	वे	वय	वयति वयते	अ.
६९.	व्येञ् संवरणे १००७	स्वीकार करना	व्ये	व्यय	व्ययति व्ययते	अ.
७०.	ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च १००८	दूसरे को पराजित करने की इच्छा करना, बुलाना	ह्वे	ह्वय	ह्वयति ह्वयते	अ.

भ्वादिगण के अदुपध धातु

७१.	बद स्थैर्ये ५१	स्थिर होना, स्वस्थ होना	बद्	बद	बदति	से.
७२.	खद स्थैर्ये हिंसायां च ५०	हिंसा करना, स्थिर होना	खद्	खद	खदति	से.
७३.	अत सातत्यगमने ३८	लगातार चलना	अत्	अत	अतति	से.
७४.	कख हसने १२०	हँसना, मुस्कुराना	कख्	कख	कखति	से.
७५.	गद व्यक्तायां वाचि ५२	स्पष्ट बोलना, बीमार होना	गद्	गद	गदति	से.
७६.	रद विलेखने ५३	चीरना, खोदना	रद्	रद	रदति	से.

७७.	णद अव्यक्ते शब्दे ५४	शब्द करना	नद्	नद	नदति	से.
७८.	नद शब्दे ५६	शब्द करना, गरजना	नद्	नद	नदति	से.
७९.	तक हसने ११७	हँसना, उपहास करना	तक्	तक	तकति	से.
८०.	बख १३०	जाना, चलना	बख्	बख	बखति	से.
८१.	मख १३२	जाना, चलना	मख्	मख	मखति	से.
८२.	णख १३४	जाना, चलना	नख्	नख	नखति	से.
८३.	रख १३६	जाना, चलना	रख्	रख	रखति	से.
८४.	लख गत्यर्था: १३८	जाना, चलना	लख्	लख	लखति	से.
८५.	घघ हसने १५९	हँसना, मुस्कुराना	घघ्	घघ	घघति	से.
८६.	ध्रज गतौ २१७	जाना, स्थानान्तर करना	ध्रज्	ध्रज	ध्रजति	से.
८७.	ध्वज गतौ २२१	जाना, स्थानान्तर करना	ध्वज्	ध्वज	ध्वजति	से.
८८.	अज गतिक्षेपणयो:२३०	जाना, हाँकना, दौड़ना	अज्	अज	अजति	से.
८९.	खज मन्थे २३२	मथना	खज्	खज	खजति	से.
९०.	लज भर्जने २३८	भूँजना, तलना	लज्	लज	लजति	से.
९१.	जज युद्धे २४२	युद्ध करना	जज्	जज	जजति	से.
९२.	गज शब्दे २४६	शब्द करना	गज्	गज	गजति	से.
९३.	वज गतौ २५२	जाना	वज्	वज	वजति	से.
९४.	व्रज गतौ २५३	जाना	व्रज्	व्रज	व्रजति	से.
९५	अट २९५	जाना	अट्	अट	अटति	से.
९६.	पट गतौ २९६	जाना	पट्	पट	पटति	से.
९७.	रट परिभाषणे २७९	रटना	रट्	रट	रटति	से.
९८.	लट बाल्ये २९८	बचपना करना	लट्	लट	लटति	से.
९९.	शट रुजाविशरण - गत्यवसादनेषु २९९	रोगी होना, थकना, छेदना	शट्	शट	शटति	से.
१००.	वट वेष्टने ३००	भेदना, लपेटना, गूँथना	वट्	वट	वटति	से.
१०१.	जट ३०५	जटना, झपटना	जट्	जट	जटति	से.
१०२.	झट संघाते ३०६	जटना, झपटना	झट्	झट	झटति	से.
१०३.	भट भृतौ ३०७	भाड़े पर लेना	भट्	भट	भटति	से.
१०४.	तट उच्छ्राये ३०८	ऊँचा होना	तट्	तट	तटति	से.
१०५	खट काङ्क्षायाम् ३०९	चाहना, ढूँढ़ना	खट्	खट	खटति	से.

१०६.	नट नृतौ ३१०	नाचना	नट्	नट	नटति	से.
१०७.	हट दीप्तौ ३१२	चमकना	हट्	हट	हटति	से.
१०८.	षट अवयवे ३१३	भाग होना, हिस्सा लेना	सट्	सट	सटति	से.
१०९.	पठ व्यक्तायां वाचि ३३०	पढ़ना	पठ्	पठ	पठति	से.
११०.	वठ स्थौल्ये ३३१	शक्तिमान् होना	वठ्	वठ	वठति	से.
१११.	मठ मदनिवासयो: ३३२	गर्वीला होना, हठी होना	मठ्	मठ	मठति	से.
११२.	कठ कृच्छ्रजीवने ३३३	कष्ट से दिन बिताना	कठ्	कठ	कठति	से.
११३.	रट परिभाषणे ३३४	रटना, बोलना	रट्	रट	रटति	से.
११४.	हठ प्लुतिशठत्वयो: बलात्कार इत्यन्ये ३३५	फुदकना, दुष्टता करना बल प्रयोग करना	हठ्	हठ	हठति	से.
११५.	शठ कैतवे च ३४०	ठगना, दु:ख देना	शठ्	शठ	शठति	से.
११६.	अड उद्यमे ३५८	उद्यम करना	अड्	अड	अडति	से.
११७	लड विलासे लल इत्येके ३५९	क्रीडा करना लड़ियाना	लड्	लड	लडति	से.
११८	कड मदे कडि इत्येके ३६०	दर्प करना	कड्	कड	कडति	से.
११९.	जप व्यक्तायां वाचि ३९७	बोलना, जप करना	जप्	जप	जपति	से.
१२०.	चप सान्त्वने ३९९	शान्त करना	चप्	चप	चपति	से.
१२१.	षप समवाये ४००	पूर्ण ज्ञान होना	सप्	सप	सपति	से.
१२२.	रप ४०१	स्पष्ट बोलना	रप्	रप	रपति	से.
१२३.	लप व्यक्तायां वाचि ४०२	स्पष्ट बोलना	लप्	लप	लपति	से.
१२४.	रफ गतौ ४१३	जाना	रफ्	रफ	रफति	से.
१२५	अण ४४४	शब्द करना	अण्	अण	अणति	से.
१२६.	रण ४४५	शब्द करना	रण्	रण	रणति	से.
१२७.	वण ४४६	शब्द करना	वण्	वण	वणति	से.
१२८.	भण ४४७	शब्द करना	भण्	भण	भणति	से.
१२९.	मण ४४८	शब्द करना	मण्	मण	मणति	से.

१३०.	कण ४४९	शब्द करना	कण् कण कणति से.
१३१.	क्वण ४५०	शब्द करना	क्वण् क्वण क्वणति से.
१३२.	व्रण ४५१	शब्द करना	व्रण् व्रण व्रणति से.
१३३.	भ्रण ४५२	शब्द करना	भ्रण् भ्रण भ्रणति से.
१३४.	ध्वण शब्दार्थाः (धण इत्यादि केचित्)४५३	शब्द करना	ध्वण् ध्वण ध्वणति से.
१३५.	ध्रन शब्दे, वण इत्यपि केचित् ४५९	वाद्यों का शब्द करना	ध्रन् ध्रण ध्रणति से.
१३६.	ष्टन ४६१	गरजना	स्तन् स्तन स्तनति से.
१३७.	वन शब्दे ४६२	गरजना	वन् वन वनति से.
१३८.	वन ४६३	भली भाँति सेवा करना	वन् वन वनति से.
१३९.	षण सम्भक्तौ ४६४	भली भाँति सेवा करना	सन् सन सनति से.
१४०.	अम गत्यादिषु ४६५	जाना, रोगी होना	अम् अम अमति से.
१४१.	द्रम ४६६	जाना	द्रम् द्रम द्रमति से.
१४२.	हय गतौ ५१२	जाना	हय् हय हयति से.
१४३.	अल भूषणपर्याप्ति - वारणेषु ५१५	अलंकृत होना, मना करना, पर्याप्त होना	अल् अल अलति से.
१४४.	फल निष्पत्तौ ५३०	सफल होना, उत्पन्न करना, उत्पन्न होना	फल् फल फलति से.
१४५.	स्खल सञ्चलने ५४४	जाना, गिरना, च्युत होना	स्खल् स्खल स्खलति से.
१४६.	खल सञ्चये ५४५	एकत्र करना	खल् खल खलति से.
१४७.	गल अदने ५४६	निगलना, खाना	गल् गल गलति से.
१४८.	षल गतौ ५४७	जाना, थरथराना	सल् सल सलति से.
१४९.	दल विशरणे ५४८	कुम्हलाना, चीरना	दल् दल दलति से.
१५०.	श्वल आशुगमने ५४९	शीघ्र गति से चलना	श्वल् श्वल श्वलति से.
१५१.	त्सर छद्मगतौ ५५४	कपट पूर्वक जाना, छिपकर जाना	त्सर् त्सर त्सरति से.
१५२.	क्मर हूर्च्छने ५५५	ठगना, मन से टेढ़ा होना	क्मर् क्मर क्मरति से.
१५३.	चर गत्यर्थः,चरति - भक्षणेऽपि ५५९	जाना, खाना, आचरण करना	चर् चर चरति से.

१५४.	मव बन्धने ५९९	बाँधना, रोकना	मव्	मव	मवति	से.
१५५.	अव रक्षणगति -	संरक्षण करना	अव्	अव	अवति	से.
	कान्तिप्रीतितृप्त्य -	जाना, इच्छा करना,				
	वगमप्रवेशश्रवण	प्रीति करना,				
	स्वाम्यर्थदीप्त्यवा -	प्रवेश करना, सुनना				
	प्त्यालिङ्गनहिंसा	सुनाना, मालिक बनना, आज्ञा मानना,				
	दानभागयाचन	माँगना, कर्म करना, चमकना, प्राप्त होना,				
	क्रियेच्छावृद्धिषु ६००	आलिङ्गन करना, मारना, लेना, बढ़ना				
१५६.	कष ६८५	मारना	कष्	कष	कषति	से.
१५७.	खष ६८६	मारना	खष्	खष	खषति	से.
१५८.	जष ६८८	मारना	जष्	जष	जषति	से.
१५९.	झष ६८९	मारना	झष्	झष	झषति	से.
१६०.	मष ६९२	मार डालना	मष्	मष	मषति	से.
१६१.	शष ६९०	मार डालना	शष्	शष	शषति	से.
१६२.	वष हिंसायाम् ६९१	मार डालना	वष्	वष	वषति	से.
१६३.	भष भर्त्सने ६९५	भौंकना	भष्	भष	भषति	से.
१६४.	ह्लस ७१२	आवाज करना	ह्लस्	ह्लस	ह्लसति	से.
१६५.	रस शब्दे ७१३	आवाज करना	रस्	रस	रसति	से.
१६६.	लस श्लेषण -	आलिङ्गन -	लस्	लस	लसति	से.
	क्रीडनयो: ७१४	करना, खेलना				
१६७.	रह त्यागे ७३१	छोड़ना	रह्	रह	रहति	से.
१६८.	मह पूजायाम् ७३०	सम्मान करना, पूजना	मह्	मह	महति	से.
१६९.	चह परिकल्कने	ठगना, गर्व करना	चह्	चह	चहति	से.
	७२९	दुष्कर्म करना				
१७०.	मश शब्दे, रोष -	शब्द करना,	मश्	मश	मशति	से.
	कृते च ७२४	रोष करना				
१७१.	शव गतौ ७२५	समीप जाना, आना	शव्	शव	शवति	से.
१७२.	शश प्लुतगतौ ७२६	कूदते फुदकते जाना	शश्	शश	शशति	से.
१७३.	षम ८२९	भ्रान्त होना, व्यग्र होना	सम्	सम	समति	से.
१७४.	ष्टम अवैकल्ये ८३०	विकल न होना,	स्तम्	स्तम	स्तमति	से.
१७५.	रभ राभस्ये	आरम्भ करना,	रभ्	रभ	रभते	अ.
	९७४	वेग से करना				

१७६.	हद पुरीषोत्सर्गे ९७७	मल त्यागना,	हद्	हद	हदते	अ.
१७७.	डुलभष् प्राप्तौ ९७५	प्राप्त करना	लभ्	लभ	लभते	अ.
१७८.	यभ मैथुने ९८०	मैथुन करना	यभ्	यभ	यभति	अ.
१७९	णम प्रह्वत्वे शब्दे च ९८१	नमस्कार करना	नम्	नम	नमति	अ.
१८०.	दह भस्मी - करणे ९९१	जलाना, दुःख देना, नष्ट करना	दह्	दह	दहति	अ.
१८१.	तप सन्तापे ९८५	जलना, जलाना	तप्	तप	तपति	अ.
१८२.	त्यज. हानौ ९८६	त्यागना, दान देना	त्यज्	त्यज	त्यजति	अ.
१८३.	कटी गतौ ३२०	जाना, कष्ट से दिन बिताना	कट्	कट	कटति	से.
१८४.	कनी दीप्तिकान्ति - गतिषु ४६०	चमकना, समीप जाना	कन्	कन	कनति	से.
१८५.	छमु ४७०	खाना	छम्	छम	छमति	से.
१८६.	जमु ४७१	खाना	जम्	जम	जमति	से.
१८७.	झमु अदने ४७२ जिषु इति केचित्	खाना	झम्	झम	झमति	से.
१८८.	शसु हिंसायाम् ७२७	मार डालना, दुःख देना	शस्	शस	शसति	से.
१८९.	ञिफला विशरणे ५१६	बिखरना, खिलना, फलना	फल्	फल	फलति	से.
१९०.	घस्लृ अदने ७१५	खाना	घस्	घस	घसति	अ.
१९१.	गम्लृ गतौ ९८२	जाना	गम्	गच्छ	गच्छति	अ.
१९२.	दध धारणे ८	धारण करना, देना, अर्पण करना	दध्	दध	दधते	से.
१९३.	दद दाने १७	देना, त्याग करना	दद्	दद	ददते	से.
१९४.	ष्वद आस्वादने १८	तुष्ट होना, स्वाद लेना	स्वद्	स्वद	स्वदते	से.
१९५.	कक लौल्ये ९०	गर्व करना, चञ्चल होना, प्यासा होना	कक्	कक	ककते	से
१९६.	चक तृप्तौ प्रतिघाते च ९३	धोखा देना, तृप्त होना	चक्	चक	चकते	से.
१९७.	षच सेचने, सेवने च १६३	सेवा करना, सींचना	सच्	सच	सचते	से.

१९८.	शच व्यक्तायां वाचि १६५	स्पष्ट बोलना	शच्	शच	शचते	से.
१९९.	श्वच गतौ १६६	जाना, सरकना	श्वच्	श्वच	श्वचते	से.
२००.	कच बन्धने १६८	बाँधना, चमकना शब्द करना	कच्	कच	कचते	से.
२०१	मच कल्कने १७१	गर्व करना, शठता करना	मच्	मच	मचते	से.
२०२	अय ४७४	जाना	अय्	अय	अयते	से.
२०३.	वय ४७५	जाना	वय्	वय	वयते	से.
२०४.	पय ४७६	जाना	पय्	पय	पयते	से.
२०५	मय ४७७	जाना	मय्	मय	मयते	से.
२०६	चय ४७८	जाना	चय्	चय	चयते	से.
२०७.	तय ४७९	जाना	तय्	तय	तयते	से.
२०८.	णय गतौ ४८०	जाना	नय्	नय	नयते	से.
२०९	दय दानगति - रक्षादानेषु ४८१	देना, जाना रक्षा करना	दय्	दय	दयते	से.
२१०	रय गतौ लय च ४८२	वेग से जाना	रय्	रय	रयते	से.
२११	शल चलन - संवरणयो: ४९०	चलना, चुभना	शल्	शल	शलते	से.
२१२.	वल संवरणे संचरणे च ४९१	ढाँकना, आच्छादित करना	वल्	वल	वलते	से.
२१३.	मल धारणे ४९३	पहनना	मल्	मल	मलते	से.
२१४.	भल परिभाषण - हिंसादानेषु ४९५	व्याख्यान देना हिंसा करना, देना	भल्	भल	भलते	से.
२१५.	कल शब्द संख्यानयो: ४९७	गिनना, अस्पष्ट शब्द करना	कल्	कल	कलते	से.
२१६.	णस कौटिल्ये ६२७	टेढ़ा होना, नम होना	नस्	नस	नसते	से.
२१७.	भ्यस भये ६२८	भय होना	भ्यस्	भ्यस	भ्यसते	से.
२१८.	ग्लह ग्रहणे ६५१	ग्रहण करना	ग्लह्	ग्लह	ग्लहते	से.
२१९	यती प्रयत्ने ३०	प्रयत्न करना	यत्	यत	यतते	से.
२२०	ग्रसु ६३०	निगलना	ग्रस्	ग्रस	ग्रसते	से.

२२१	ग्लसु अदने ६३१	निगलना	ग्लस्	ग्लस	ग्लसते	से.
२२२	त्रपूष् लज्जायाम् ३७४	लज्जित होना	त्रप्	त्रप	त्रपते	से.
२२३	क्षमूष् सहने ४४२	क्षमा करना, सहना	क्षम्	क्षम	क्षमते	से.
२२४	कबृ वर्णने ३८०	रँगना	कब्	कब	कबते	से.
२२५	व्यय गतौ ८८१	जाना, खर्च करना	व्यय्	व्यय	व्ययति व्ययते	से.
२२६.	अस गतिदीप्त्यादानेषु अष इत्येके ८८६	जाना, लेना, चमकाना	अस्	अस	असति असते	से.
२२७	स्पश बाधन - स्पर्शनयो: ८८७	अवरोध करना, प्रसिद्ध होना, छूना	स्पश्	स्पश	स्पशति स्पशते	से.
	लष कान्तौ ८८८	इच्छा करना चाहना	लष्	लष	लषति लषते	से.
२२८	चष भक्षणे ८८९	खाना	चष्	चष	चषति चषते	से.
२२९.	छष हिंसायाम् ८९०	मारना	छष्	छष	छषति छषते	से.
२३०	झष आदान - संवरणयो: ८९१	ग्रहण करना, लेना, वस्त्र पहनना	झष्	झष	झषति झषते	से.
२३१.	डुपचष् पाके ९९६	पकाना	पच्	पच	पचति पचते	अ.
२३२.	षच समवाये ९९७	अच्छे से समझना, सम्बन्धी होना	सच्	सच	सचति सचते	से.
२३३.	भज सेवायाम् ९९८	भजना, उपभोग करना	भज्	भज	भजति भजते	अ.
२३४.	शप आक्रोशे १०००	शपथ लेना, गाली देना	शप्	शप	शपति शपते	अ.
२३५	खनु अवदारणे ८७८	दु:ख देना, खोदना	खन्	खन	खनति खनते	से
२३६	कटे वर्षावरणयो: २९४	ढाँकना, बरसना, घेरना	कट्	कट	कटति	से.
२३७	हसे हसने ७२१	हँसना	हस्	हस	हसति	से.
२३८	चते ८६५	माँगना	चत्	चत	चतति	से.

					चतते	
२३९	चदे याचने ८६६	माँगना	चद्	चद्	चदति	से.
					चदते	

भ्वादिगण के इदुपध धातु

२४०.	चिती संज्ञाने ३९	जानना, होश में आना	चित्	चेत	चेतति	से.
२४१	षिध गत्याम् ४७	जाना, प्राप्त करना	सिध्	सेध	सेधति	से.
२४२.	षिधू शास्त्रे माङ्गल्ये च ४८	मङ्गल करना	सिध्	सेध	सेधति	से.
२४३.	इख गतौ १४० रिख लिख इत्यपि केचित्	जाना	इख्	एख	एखति	से.
२४४.	किट ३०१	त्रास देना	किट्	केट	केटति	से.
२४५	खिट त्रासे ३०२	त्रास देना	खिट्	खेट	खेटति	से.
२४६	शिट ३०३	अनादर करना	शिट्	शेट	शेटति	से.
२४७.	षिट अनादरे ३०४	अनादर करना	सिट्	सेट	सेटति	से.
२४८	चिट परप्रेष्ये ३१५	सेवा करना	चिट्	चेट	चेटति	से.
२४९.	विट आक्रोशे हिट इत्येके ३१७	क्रोध करना	विट्	वेट	वेटति	से.
२५०.	विट शब्दे ३१६	शब्द करना	विट्	वेट	वेटति	से.
२५१.	पिट शब्दसंघातयो: ३११	शब्द करना इकट्ठा करना	पिट्	पेट	पेटति	से.
२५२.	मिह सेचने ९९२	बरसना, मूतना	मिह्	मेह	मेहति	अ.
२५३.	किट गतौ ३१९	जाना	किट्	केट	केटति	से.
२५४.	तिल गतौ ५३४	जाना	तिल्	तेल	तेलति	से.
२५५.	शिष हिंसायाम् ६८७	हिंसा करना	शिष्	शेष	शेषति	से.
२५६	रिष हिंसायाम् ६९४	हिंसा करना	रिष्	रेष	रेषति	से.
२५७.	जिषु ६९७	सींचना	जिष्	जेष	जेषति	से.
२५८.	विषु ६९८	सींचना	विष्	वेष	वेषति	से.
२५९	मिषु सेचने ६९९	सींचना	मिष्	मेष	मेषति	से.
२६०	श्रिषु ७०१	जलाना	श्रिष्	श्रेष	श्रेषति	से.
२६१.	श्लिषु दाहे ७०२	जलाना	श्लिष्	श्लेष	श्लेषति	से.
२६२	क्षिबु निरसने ५६७	थूकना	क्षिव्	क्षेव	क्षेवति	से.

२६३.	पिसृ गतौ ७१९	जाना	पिस् पेस पेसति से.
२६४.	णिश समाधौ ७२२	समाधि लगाना	निश् नेश नेशति से.
२६५	मिश शब्दे ७२३	शब्द करना	मिश् मेश मेशति से.
२६६	णिदृ कुत्सा - सन्निकर्षयो: ८७१	निन्दित कार्य करना	निद् नेद नेदति से.
२६७.	ञिष्विदा अव्यक्ते शब्दे ९७८	अव्यक्त शब्द करना	स्विद् स्वेद स्वेदति से.
२६८.	पिठ हिंसा - संक्लेशनयो: ३३९	क्लेश पहुँचाना	पिठ् पेठ पेठति से.
२६९.	विथृ याचने ३३	माँगना	विथ् वेथ वेथते से.
२७०	टिकृ १०३	जाना	टिक् टेक टेकते से.
२७१.	तिकृ गतौ १०५	जाना	तिक् तेक तेकते से.
२७२	प्लिह गतौ ६४२	जाना	प्लिह् प्लेह प्लेहते से.
२७३.	तिपृ क्षरणे ३६२	बहना	तिप् तेप तेपते अ.
२७४	ष्टिप क्षरणे ३६४	बहना	स्तिप् स्तेप स्तेपते से.
२७५	त्विष दीप्तौ १००१	प्रकाशित करना	त्विष् त्वेष त्वेषति त्वेषते अ.
२७६	मिदृ मेघाहिंसनयो: ८६८	यज्ञीय हिंसा करना	मिद् मेद मेदति मेदते से.

भ्वादिगण के उदुपध धातु

२७७.	च्युतिर् आसेचने ४०	सींचना	च्युत् च्योत च्योतति से.
२७८.	श्चुतिर् क्षरणे ४१	बहना	श्चुत् श्चोत श्चोतति से.
	श्च्युतिर् इत्येके		श्च्युत् श्च्योत श्च्योतति से.
२७९	उख गतौ १२८	जाना	उख् ओख ओखति से.
२८०.	शुच शोके १८३	शोक करना	शुच् शोच शोचति से.
२८१..	कुच शब्दे तारे १८४	चिल्लाना	कुच् कोच कोचति से.
२८२	म्रुचु १९५	जाना	म्रुच् म्रोच म्रोचति से.
२८३	म्लुचु गतौ १९६	जाना	म्लुच् म्लोच म्लोचति से.
२८४	ग्रुचु १९७	चुराना	ग्रुच् ग्रोच ग्रोचति से.
२८५	ग्लुचु १९८	चुराना	ग्लुच् ग्लोच ग्लोचति से.
२८६	कुजु १९९	चुराना	कुज् कोज कोजति से.

२८७.	खुजु स्तेयकरणे २००	चोरी करना, खोजना	खुज्	खोज	खोजति	से.
२८८.	तुज हिंसायाम् २४४	हिंसा करना	तुज्	तोज	तोजति	से.
२८९.	मुज शब्दे २५०	शब्द करना	मुज्	मोज	मोजति	से.
२९०	स्फुट विकसने २६०	खिलना	स्फुट्	स्फोट	स्फोटते	से.
२९१.	लुट विलोडने ३१४	लोटना	लुट्	लोट	लोटति	से.
२९२.	मुड मर्दने ३२३	मसलना	मुड्	मोड़	मोडति	से.
२९३.	प्रुड मर्दने ३२४	मसलना	प्रुड्	प्रोड	प्रोडति	से.
२९४	स्फुटिर् विशरणे ३२९	बिखरना, खिलना	स्फुट्	स्फोट	स्फोटति	से.
२९५.	रुठ ३३६	उपघात करना	रुठ्	रोठ	रोठति	से.
२९६	लुठ उपघाते ३३७	उपघात करना	लुठ्	लोठ	लोठति	से.
२९७	उठ च (ऊठ इत्येके)३३८	उपघात करना	उठ्	ओठ	ओठति	से.
२९८.	शुठ गतिप्रतिघाते ३४१	रुकावट डालना	शुठ्	शोठ	शोठति	से.
२९९.	चुप मन्दायां गतौ ४०३	मन्द-मन्द जाना	चुप्	चोप	चोपति	से.
३००	हुडृ गतौ ३५२	जाना	हुड्	होड	होडति	से.
३०१.	तुडृ तोडने ३५१	तोड़ना, मारना	तुड्	तोड	तोडति	से.
३०२.	तुप ४०४	मारना	तुप्	तोप	तोपति	से.
३०३.	त्रुप ४०६	मारना	त्रुप्	त्रोप	त्रोपति	से.
३०४.	तुफ ४०८	मारना	तुफ्	तोफ	तोफति	से.
३०५	त्रुफ हिंसार्था: ४१०	मारना	त्रुफ्	त्रोफ	त्रोफति	से.
३०६	घुण भ्रमणे ४३७	घूमना	घुण्	घोण	घोणते	से.
३०७.	घुषिर् अविशब्दने ६५३	चुपचाप करना, घोष करना	घुष्	घोष	घोषति	से.
३०८.	रुष हिंसायाम् ६९३	हिंसा करना, क्रोध करना	रुष्	रोष	रोषति	से.
३०९	उष दाहे ६९६	जलाना	उष्	ओष	ओषति	से.
३१०.	पुष पुष्टौ ७००	पुष्ट करना	पुष्	पोष	पोषति	से.
३११.	प्रुष ७०३	जलाना	प्रुष्	प्रोष	प्रोषति	से.
३१२.	प्लुषु दाहे ७०४	जलाना	प्लुष्	प्लोष	प्लोषति	से.
३१३.	तुस शब्दे ७१०	शब्द करना	तुस्	तोस	तोसति	से.
३१४.	तुहिर् ७३७	पीड़ा देना	तुह्	तोह	तोहति	से.
३१५	दुहिर् अर्दने ७३८	पीड़ा देना	दुह्	दोह	दोहति	से.

३१६	बुधिर् बोधने ८७५	समझना	बुध्	बोध	बोधति बोधते	से.
३१७.	उहिर् अर्दने ७३९	पीड़ा देना	उह्	ओह	ओहति	से.
३१८.	मुद हर्षे १६	प्रसन्न होना	मुद्	मोद	मोदते	से.
३१९.	गुद क्रीडायाम् २४	क्रीडा करना	गुद्	गोद	गोदते	से.
३२०.	युतृ ३१	चमकना	युत्	योत	योतते	से.
३२१.	जुतृ भासने ३२	चमकना	जुत्	जोत	जोतते	से.
३२२	कुक आदाने ९१	लेना	कुक्	कोक	कोकते	से.
३२३.	ष्टुच प्रसादे १७५	प्रसन्न करना	स्तुच्	स्तोच	स्तोचते	से.
३२४	ष्टुभु स्तम्भे ३९४	रोकना	स्तुभ्	स्तोभ	स्तोभते	से.
३२५	शुभ भाषणे भासने च ४३२	बोलना, चमकना	शुभ्	शोभ	शोभति	से.

भ्वादिगण के ऋदुपध धातु

३२६.	धृज गतौ २१९	जाना	धृज्	धर्ज	धर्जति	से.
३२७	गृज शब्दे २४८	गरजना	गृज्	गर्ज	गर्जति	से.
३२८.	पृषु सेचने ७०५	सींचना	पृष्	पर्ष	पर्षति	से.
३२९	वृषु सेचने हिंसासंक्लेशनयोश्च ७०६	सींचना	वृष्	वर्ष	वर्षति	से.
३३०.	मृषु सेचने, सहने च ७०७	सींचना, सहन करना	मृष्	मर्ष	मर्षति	से.
३३१	घृषु संघर्षे ७०८	घर्षण करना, संघर्ष करना, घिसना कूटना, पीसना	घृष्	घर्ष	घर्षति	से.
३३२	हृषु अलीके ७०९	झूठ बोलना	हृष्	हर्ष	हर्षति	से.
३३३.	हृस शब्दे ७११	शब्द करना	हृस्	हर्स	हर्सति	से.
३३४	दृह वृद्धौ ७३३	बढ़ना	दृह्	दर्ह	दर्हति	से.
३३५.	बृह वृद्धौ, बृहिर् इत्येके ७३५	बढ़ना	बृह्	बर्ह	बर्हति	से.
३३६.	कृष विलेखने ९९०	खींचना, खोदना, आकृष्ट करना	कृष्	कर्ष	कर्षति	अ.
३३७.	सृभु हिंसायाम् ४३०	मार डालना	सृभ्	सर्भ	सर्भति	से.

३३८.	सृप्लृ गतौ ९८३	जाना, सरकना	सृप्	सर्प	सर्पति	अ.
३३९.	वृक आदाने ९२	ग्रहण करना	वृक्	वर्क	वर्कते	से.
३४०.	ऋज गतिस्थाना - र्जनोपार्जनेषु १७६	गति, स्थानार्जन, उपार्जन करना	ऋज्	अर्ज	अर्जति	से.
३४१.	भृजी भर्जने १७८	भूँजना	भृज्	भर्ज	भर्जति	से.
३४२	वृतु वर्तने ७५८	वर्तमान होना	वृत्	वर्त	वर्तति	से.
३४३	वृधु वृद्धौ ७५९	बढ़ना	वृध्	वर्ध	वर्धति	से.
३४४.	शृधु ८७३	गीला करना	शृध्	शर्ध	शर्धति शर्धति	से.
३४५	मृधु उन्दने ८७४	गीला करना	मृध्	मर्ध	मर्धति मर्धति	से.
३४६	गृहू गर्हणे ६५०	गर्हा या निन्दा करना	गृह्	गर्ह	गर्हति	वे.

अब भ्वादिगण के जो धातु बचे, उन्हें पाँच वर्गों में बाँटकर पढ़ना चाहिये।

१. वे धातु जिनकी उपधा में 'र्' है तथा उस 'र्' के पूर्व में इ, उ, हैं।

ऐसे धातुओं की उपधा के 'र्' के पूर्ववर्ती इ, उ, को 'उपधायां च' सूत्र से दीर्घ होता है।

३४७.	मुर्वी बन्धने ५७५	बाँधना, रोकना	मुर्व्	मूर्व	मूर्वति	से.
३४८.	उर्वी ५६९	मार डालना	उर्व	ऊर्व	ऊर्वति	से.
३४९	तुर्वी ५७०	मार डालना	तुर्व्	तूर्व	तूर्वति	से.
३५०.	थुर्वी ५७१	मार डालना	थुर्व्	थूर्व	थूर्वति	से.
३५१	दुर्वी ५७२	मार डालना	दुर्व्	दूर्व	दूर्वति	से.
३५२.	धुर्वी हिंसार्थाः ५७३	हिंसा करना	धुर्व्	धूर्व	धूर्वति	से.
३५३.	गुर्वी उद्यमने ५७४	उद्योग करना	गुर्व्	गूर्व	गूर्वति	से.
३५४	हुर्छा कौटिल्ये २११	कुटिलता करना	हुर्च्छ्	हूर्च्छ	हूर्च्छति	से.
३५५.	मुर्छा मोह - समुच्छ्राययोः २१२	मूर्च्छित होना	मुर्च्छ्	मूर्च्छ	मूर्च्छति	से.
३५६.	स्फुर्छा विस्तृतौ २१३	विस्तृत करना, फैलाना	स्फुर्च्छ्	स्फूर्च्छ	स्फूर्च्छति	से.
३५७.	उर्द माने क्रीडायां च २०	नापना, क्रीडा करना	उर्द्	ऊर्द	ऊर्दति	से.

३५८.	कुर्द २१	कूदना, क्रीड़ा करना	कुर्द्	कूर्द	कूर्दते	से.
३५९	खुर्द २२	कूदना, क्रीड़ा करना	खुर्द्	खूर्द	खूर्दते	से.
३६०.	गुर्द क्रीडायाम् २३	कूदना, क्रीड़ा करना	गुर्द्	गूर्द	गूर्दते	से.

२. इजादि गुरुमान् धातु

अब भ्वादिगण के इजादि गुरुमान् धातु अर्थात् ऐसे धातु बतला रहे हैं, जिनके आदि में इच् = 'अ' 'आ' के अलावा कोई भी स्वर हो, साथ ही वह स्वर गुरु भी हो। इजादि गुरुमान् होने का फल लिट् लकार में मिलेगा।

३६१.	ओखृ शोषणा - लमर्थयोः १२१	सूखना, चमकना, सँवारना	ओख्	ओख	ओखति	से.
३६२.	एजृ कम्पने २३४	काँपना	एज्	एज	एजति	से.
३६३.	ईट गतौ ३१८	जाना	ईट्	ईट	ईटति	से.
३६४.	ओणृ अपनयने ४५४	दूर हो जाना	ओण्	ओण	ओणति	से.
३६५	ईक्ष्य ५१०	मत्सर करना	ईक्ष्य्	ईक्ष्य	ईक्ष्यति	से.
३६६.	ईर्ष्य ईष्यार्थौ ५११	मत्सर करना	ईर्ष्य्	ईर्ष्य	ईर्ष्यति	से.
३६७.	उच्छी विवासे २१६	समाप्त करना	उच्छ्	उच्छ	उच्छति	से.
३६८	ईष उञ्छे ६८४	एक एक दाना बीनना	ईष्	ईष	ईषति	से.
३६९.	उक्ष सेचने ६५७	सींचना, छिड़कना	उक्ष्	उक्ष	उक्षति	से.
३७०.	ऊष रुजायाम् ६८३	बीमार होना	ऊष्	ऊष	ऊषति	से.
३७१	एध वृद्धौ २	बढ़ना	एध्	एध	एधते	से.
३७२.	एजृ दीप्तौ १७९	चमकना	एज्	एज	एजते	से.
३७३.	ईज गति - कुत्सनयोः १८२	जाना, निन्दा करना	ईज्	ईज	ईजते	से.
३७४.	एठ विबाधायाम् २६७	बाधा या शठता करना	एठ्	एठ	एठते	से.
३७५	ईक्ष दर्शने ६१०	देखना	ईक्ष्	ईक्ष	ईक्षते	से.
३७६.	ईष गतिहिंसा - दर्शनेषु ६११	जाना, मारना देखना	ईष्	ईष	ईषते	से.
३७७.	ईह चेष्टायाम् ६३२	चेष्टा करना, इच्छा करना	ईह्	ईह	ईहते	से.
३७८.	ऊह वितर्के ६४८	तर्क करना	ऊह्	ऊह	ऊहते	से.
३७९	एषृ गतौ ६१८	जाना	एष्	एष	एषते	से.

३८०	ऊयी तन्तुतन्ताने ४८३	बुनना	ऊय् ऊय ऊयते से.
	इवि व्याप्तौ ५८७	व्यापना, तृप्त होना	इन्व् इन्व इन्वति से.
	इदि परमैश्वर्ये ६३	परमैश्वर्य पाना	इन्द् इन्द इन्दति से.
	उखि १२९	जाना, गति करना	उन्ख् उङ्ख उङ्खति से.
	इखि १४१	जाना, गति करना	इन्ख् इङ्ख इङ्खति से.
	ईखि १४२	जाना, गति करना	ईन्ख् ईङ्ख ईङ्खति से.
	इगि १५३	जाना, गति करना	इन्ग् इङ्ग इङ्गति से.
	उछि उञ्छे २१५	कणशः बीनना	उन्छ् उञ्छ उञ्छति से.
	ऋजि भर्जने १७७	भूँजना	ऋन्ज् ऋञ्ज ऋञ्जते से.

३. इदित् धातु

अब इदित् धातु बतला रहे हैं। इनके 'इ' की इत्संज्ञा होने के बाद, इन्हें इदितो नुम् धातोः सूत्र से नुम् = न् का आगम कीजिये। उस 'न्' को 'नश्चापदान्तस्य झलि' सूत्र से अनुस्वार बनाकर, उस अनुस्वार को 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' सूत्र से परसवर्ण कीजिये।

३८१	इवि व्याप्तौ ५८७	व्यापना, तृप्त होना	इन्व् इन्व इन्वति से.
३८२.	कुथि ४३	हिंसा करना, क्लेश देना	कुन्थ् कुन्थ कुन्थति से.
३८३.	पुथि ४४	हिंसा करना, क्लेश देना	पुन्थ् पुन्थ पुन्थति से.
३८४	लुथि ४५	हिंसा करना, क्लेश देना	लुन्थ् लुन्थ लुन्थति से.
३८५	मथि हिंसा - संक्लेशनयोः ४६	हिंसा करना, क्लेश देना	मन्थ् मन्थ मन्थति से.
३८६.	अति बन्धने ६१	बाँधना	अन्त् अन्त अन्तति से.
३८७	अदि बन्धने ६२	बाँधना	अन्द् अन्द अन्दति से.
३८८.	इदि परमैश्वर्ये ६३	परमैश्वर्य पाना	इन्द् इन्द इन्दति से.
३८९.	बिदि अवयवे ६४	एकदेश या	बिन्द् बिन्द बिन्दति से.
	भिदि इत्येके	अवयव बनना	भिन्द् भिन्द् भिन्दति से.
३९०	गडि वदनैकदेशे ६५	मुखावयव कपोल बनना	गन्ड् गण्ड गण्डति से.
३९१.	णिदि कुत्सायाम् ६६	निन्दा करना	निन्द् निन्द निन्दति से.
३९२	टुनदि समृद्धौ ६७	समृद्ध होना, प्रसन्न होना	नन्द् नन्द नन्दति से.
३९३	चदि आह्लादे दीप्तौ च ६८	चमकना, प्रसन्न होना	चन्द् चन्द चन्दति से.

३९४	त्रदि चेष्टायाम् ६९	चेष्टा करना	त्रन्द्	त्रन्द	त्रन्दति से.
३९५.	कदि ७०	बुलाना या चिल्लाना,	कन्द्	कन्द	कन्दति से.
३९६.	क्रदि ७१	बुलाना, रोना, चिल्लाना	क्रन्द्	क्रन्द	क्रन्दति से.
३९७.	क्लदि आह्वाने रोदने च ७२	बुलाना या रोना	क्लन्द्	क्लन्द	क्लन्दति से.
३९८	क्लिदि परिदेवने ७३	शोक करना	क्लिन्द्	क्लिन्द	क्लिन्दति से.
३९९.	तकि कृच्छ्रजीवने (शुक गतौ) ११८	तङ्गी सहना, जाना	तन्क्	तङ्क	तङ्कति से.
४००.	उखि १२९	जाना, गति करना	उन्ख्	उङ्ख	उङ्खति से.
४०१.	वखि १३१	जाना, गति करना	वन्ख्	वङ्ख	वङ्खति से.
४०२.	मखि १३३	जाना, गति करना	मन्ख्	मङ्ख	मङ्खति से.
४०३.	रखि १३७	जाना, गति करना	रन्ख्	रङ्ख	रङ्खति से.
४०४	णखि १३५	जाना, गति करना	नन्ख्	नङ्ख	नङ्खति से.
४०५	लखि १३९	जाना, गति करना	लन्ख्	लङ्ख	लङ्खति से.
४०६.	इखि १४१	जाना, गति करना	इन्ख्	इङ्ख	इङ्खति से.
४०७	ईखि १४२	जाना, गति करना	ईन्ख्	ईङ्ख	ईङ्खति से.
४०८.	रगि १४४	जाना, गति करना	रन्ग्	रङ्ग	रङ्गति से.
४०९	लगि १४५	जाना, गति करना	लन्ग्	लङ्ग	लङ्गति से.
४१०.	अगि १४६	जाना, गति करना	अन्ग्	अङ्ग	अङ्गति से.
४११.	वगि १४७	जाना, गति करना	वन्ग्	वङ्ग	वङ्गति से.
४१२.	मगि १४८	जाना, गति करना	मन्ग्	मङ्ग	मङ्गति से.
४१३	तगि १४९	जाना, गति करना	तन्ग्	तङ्ग	तङ्गति से.
४१४	श्रगि १५१	जाना, गति करना	श्रन्ग्	श्रङ्ग	श्रङ्गति से.
४१५.	श्लगि १५२	जाना, गति करना	श्लन्ग्	श्लङ्ग	श्लङ्गति से.
४१६.	इगि १५३	जाना, गति करना	इन्ग्	इङ्ग	इङ्गति से.
४१७	रिगि १५४	जाना, गति करना	रिन्ग्	रिङ्ग	रिङ्गति से.
४१८	लिगि गत्यर्थाः १५५	जाना, गति करना	लिन्ग्	लिङ्ग	लिङ्गति से.
४१९	त्वगि गतौ कम्पने च १५०	काँपना, जाना	त्वन्ग्	त्वङ्ग	त्वङ्गति से.
४२०.	युगि १५६	छोड़ना	युन्ग्	युङ्ग	युङ्गति से.
४२१.	जुगि १५७	छोड़ना	जुन्ग्	जुङ्ग	जुङ्गति से.

४२२	बुगि वर्जने १५८	छोड़ना	बुन्ग् बुङ्ग बुङ्गति से.
	दघि पालने १५९	पालना	दन्घ् दङ्घ दङ्घति से.
	लघि शोषणे इत्यपि केचित्	सूखना	लन्घ् लङ्घ लङ्घति से.
४२३.	मघि मण्डने १६०	सजाना	मन्घ् मङ्घ मङ्घति से.
४२४	शिघि आघ्राणे १६१	सूँघना	शिन्घ् शिङ्घ शिङ्घति से.
४२५	गुजि अव्यक्ते शब्दे २०३	गुञ्जार करना	गुन्ज् गुञ्ज गुञ्जति से.
४२६.	लाछि लक्षणे २०७	लक्षित करना, अङ्कित करना	लान्छ् लाञ्छ लाञ्छति से.
४२७.	वाछि इच्छायाम् २०८	इच्छा करना	वान्छ् वाञ्छ वाञ्छति से.
४२८.	आछि आयामे २०९	फैलना	आन्छ् आञ्छ आञ्छति से.
४२९.	उछि उञ्छे २१५	कणशः बीनना	उन्छ् उञ्छ उञ्छति से.
४३०.	ध्रजि गतौ २१८	जाना, गति करना	ध्रन्ज् ध्रञ्ज ध्रञ्जति से.
४३१	मडि भूषायाम् ३२१	सजाना	मन्ड् मण्ड मण्डति से.
४३२.	कुडि वैकल्ये ३२२	अशक्त होना	कुन्ड् कुण्ड कुण्डति से.
४३३	चुडि अल्पीभावे ३२५	कम होना	चुन्ड् चुण्ड चुण्डति से.
४३४	रुटि ३२७	चुराना	रुन्ट् रुण्ट रुण्टति से.
४३५	लुटि स्तेये ३२८ रुठि, लुठि, रुडि, लुडि इत्येके	चुराना, जाना	लुन्ट् लुण्ट लुण्टति से.
४३६.	कुठि गतिप्रतिघाते ३४२	कुण्ठित होना	कुन्ठ् कुण्ठ कुण्ठति से.
४३७	लुठि आलस्ये ३४३	आलस्य करना	लुन्ठ् लुण्ठ लुण्ठति से.
४३८	शुठि शोषणे ३४४	सूखना	शुन्ठ् शुण्ठ शुण्ठति से.
४३९	रुठि ३४५	जाना, लँगड़ाना	रुन्ठ् रुण्ठ रुण्ठति से.
४४०.	लुठि गतौ ३४६	जाना, लुढ़कना	लुन्ठ् लुण्ठ लुण्ठति से.
४४१.	गडि वदनैकदेशे ३६१	मुखावयव कपोल बनना	गन्ड् गण्ड गण्डति से.
४४२	कुबि आच्छादने ४२६	ढाँकना	कुन्ब् कुम्ब कुम्बति से.
४४३	लुबि अर्दने ४२७	पीड़ा देना	लुन्ब् लुम्ब लुम्बति से.
४४४	तुबि अर्दने ४२८	मार डालना	तुन्ब् तुम्ब तुम्बति से.
४४५.	चुबि वक्त्रसंयोगे ४२९	चूमना	चुन्ब् चुम्ब चुम्बति से.
४४६.	पिवि ५८८	सींचना	पिन्व् पिन्व पिन्वति से.

४४७.	मिवि ५८९	सींचना	मिन्व्	मिन्व	मिन्वति	से.
४४८.	णिवि सेचने ५९०	सींचना	निन्व्	निन्व	निन्वति	से.
४४९.	हिवि ५९१	प्रसन्न करना	हिन्व्	हिन्व	हिन्वति	से.
४५०	दिवि ५९२	प्रसन्न करना	दिन्व्	दिन्व	दिन्वति	से.
४५१	जिवि प्रीणनार्थाः ५९४	प्रसन्न करना	जिन्व्	जिन्व	जिन्वति	से.
४५२.	रिवि ५९५	जाना	रिन्व्	रिन्व	रिन्वति	से.
४५३.	रवि ५९६	जाना	रन्व्	रन्व	रन्वति	से.
४५४.	धवि गत्यर्थाः ५९७	जाना	धन्व्	धन्व	धन्वति	से.
४५५	काक्षि ६६७	चाहना	कान्क्ष्	काङ्क्ष	काङ्क्षति	से.
४५६.	वाक्षि ६६८	चाहना	वान्क्ष्	वाङ्क्ष	वाङ्क्षति	से.
४५७	माक्षि काङ्क्षायाम् ६६९	चाहना	मान्क्ष्	माङ्क्ष	माङ्क्षति	से.
४५८	द्राक्षि ६७०	कठोर आवाज करना	द्रान्क्ष्	द्राङ्क्ष	द्राङ्क्षति	से.
४५९	ध्राक्षि ६७१	काँव काँव करना	ध्रान्क्ष्	ध्राङ्क्ष	ध्राङ्क्षति	से.
४६०.	ध्वाक्षि घोरवाशिते च ६७२	कौए की तरह काँव काँव करना	ध्वान्क्ष्	ध्वाङ्क्ष	ध्वाङ्क्षति	से.
४६१.	रहि गतौ ७३२	वेग से जाना	रन्ह्	रंह	रंहति	से.
४६२.	दृहि ७३४	बढ़ना	दृन्ह्	दृंह	दृंहति	से.
४६३.	बृहि वृद्धौ ७३६	बढ़ना	बृन्ह्	बृंह	बृंहति	से
४६४.	स्कुदि आप्रवणे ९	आप्लावित होना, उफान आना	स्कुन्द्	स्कुन्द	स्कुन्दते	से.
४६५.	श्विदि श्वैत्ये १०	सफेद करना	श्विन्द्	श्विन्द	श्विन्दते	से.
४६६.	वदि अभिवादन - स्तुत्योः ११	वन्दना करना	वन्द्	वन्द	वन्दते	से.
४६७.	भदि कल्याणे सुखे च १२	कल्याण करना	भन्द्	भन्द	भन्दते	से.
४६८	मदि स्तुतिमोद - मदस्वप्न - कान्तिगतिषु १३	स्तुति, आलस्य, इच्छा, गति, सन्तोष करना, मद करना	मन्द्	मन्द	मन्दते	से.
४६९.	स्पदि किञ्चिच्चलने १४	हिलना, डुलना	स्पन्द्	स्पन्द	स्पन्दते	से.
४७०.	क्लिदि परिदेवने १५	शोक करना	क्लिन्द्	क्लिन्द	क्लिन्दते	से.
४७१.	श्रथि शैथिल्ये ३५	शिथिलता करना	श्रन्थ्	श्रन्थ	श्रन्थते	से.

४७२.	ग्रथि कौटिल्ये ३६	कुटिलता करना	ग्रन्थ् ग्रन्थ ग्रन्थते से.
४७३.	स्त्रकि ८३	जाना	स्त्रन्क् स्त्रङ्क स्त्रङ्कते से.
४७४.	श्रकि ८४	जाना	श्रन्क् श्रङ्क श्रङ्कते से.
४७५	श्लकि ८५	जाना	श्लन्क् श्लङ्क श्लङ्कते से.
४७६.	शकि शङ्कायाम् ८६	शङ्का करना	शन्क् शङ्क शङ्कते से.
४७७.	अकि लक्षणे ८७	अङ्कित करना	अन्क् अङ्क अङ्कते से.
४७८	वकि कौटिल्ये ८८	कुटिलता करना	वन्क् वङ्क वङ्कते से.
४७९.	मकि मण्डने ८९	सजाना	मन्क् मङ्क मङ्कते से.
४८०	ककि ९४	जाना	कन्क् कङ्क कङ्कते से.
४८१.	वकि ९५	जाना	वन्क् वङ्क वङ्कते से.
४८२	श्वकि ९६	जाना	श्वन्क् श्वङ्क् श्वङ्कते से.
४८३	त्रकि गत्यर्थाः ९७	जाना	त्रन्क् त्रङ्क त्रङ्कते से.
४८४	रघि १०७	लाँघना	रन्घ् रङ्घ रङ्घते से.
४८५	लघि गत्यर्थौ १०८	लाँघना, उल्लङ्घन करना, भोजन न करना	लन्घ् लङ्घ लङ्घते से.
४८६.	अघि १०९	निन्दित चलना	अन्घ् अङ्घ अङ्घते से.
४८७	वघि ११०	निन्दित चलना	वन्घ् वङ्घ वङ्घते से.
४८८	मघि गत्याक्षेपे कैतवे च १११	निन्दित चलना, कपट करना	मन्घ् मङ्घ मङ्घते से.
४८९.	श्वचि गतौ १६७	जाना	श्वन्च् श्वञ्च श्वञ्चते से.
	शचि च	जाना	शन्च् शञ्च शञ्चते से.
४९०.	कचि १६९	चमकना	कन्च् कञ्च कञ्चते से.
४९१	काचि दीप्ति - बन्धनयोः १७०	चमकना तथा बाँधना	कान्च् काञ्च काञ्चते से.
४९२	मुचि कल्कने १७२	दम्भ या शाठ्य करना	मुन्च् मुञ्च मुञ्चते से.
४९३.	मचि धारणोच्छ्राय - पूजनेषु १७३	धारण करना उठना	मन्च् मञ्च मञ्चते से.
४९४	पचि व्यक्तीकरणे १७४	व्यक्त करना	पन्च् पञ्च पञ्चते से.
४९५	ऋजि भर्जने १७७	भूँजना	ऋन्ज् ऋञ्ज ऋञ्जते से.
४९६.	धृजि २२०	जाना, गति करना	धृन्ज् धृञ्ज धृञ्जति से.
४९७	ध्वजि गतौ ध्रिज च २२२	जाना, गति करना	ध्वन्ज् ध्वञ्ज ध्वञ्जति से.

४९८.	खजि गतिवैकल्ये २३३	लँगड़ाना	खन्ज्	खञ्ज	खञ्जति	से.
४९९.	लजि भर्जने २३९	भूँजना	लन्ज्	लञ्ज	लञ्जति	से.
५००	लाजि भर्जने भर्त्सने च २४१	भूँजना, भर्त्सना करना	लान्ज्	लाञ्ज	लाञ्जति	से.
५०१	जजि युद्धे २४३	युद्ध करना	जन्ज्	जञ्ज	जञ्जति	से.
५०२	तुजि पालने २४५	पालना	तुन्ज्	तुञ्ज	तुञ्जति	से.
५०३.	गजि २४७	शब्द करना	गन्ज्	गञ्ज	गञ्जति	से.
५०४.	गृजि २४९	शब्द करना	गृन्ज्	गृञ्ज	गृञ्जति	से.
५०५	मुजि शब्दार्थाः २५१	शब्द करना	मुन्ज्	मुञ्ज	मुञ्जति	से.
५०६.	अठि गतौ २६१	जाना	अन्ठ्	अण्ठ	अण्ठते	से.
५०७.	वठि एकचर्यायाम् २६२	अकेले चलना	वन्ठ्	वण्ठ	वण्ठते	से.
५०८.	मठि शोके २६३	उत्कण्ठित होना	मन्ठ्	मण्ठ	मण्ठते	से.
५०९	कठि शोके २६४	शोक करना	कन्ठ्	कण्ठ	कण्ठते	से.
५१०	मठि पालने २६५	पालना	मन्ठ्	मण्ठ	मण्ठते	से.
५११	हिडि गत्यनादरयोः २६८	गति करना, अनादर करना	हिन्ड्	हिण्ड	हिण्डते	से.
५१२.	हुडि सङ्घाते २६९	इकट्ठा करना	हुन्ड्	हुण्ड	हुण्डते	से.
५१३.	कुडि दाहे २७०	जलाना	कुन्ड्	कुण्ड	कुण्डते	से.
५१४.	वडि विभाजने २७१	विभाजन करना	वन्ड्	वण्ड	वण्डते	से.
५१५	मडि च २७२	विभाजन करना	मन्ड्	मण्ड	मण्डते	से.
५१६.	भडि परिभाषणे २७३	रटना, बोलना	भन्ड्	भण्ड	भण्डते	से.
५१७.	पिडि सङ्घाते २७४	इकट्ठा करना	पिन्ड्	पिण्ड	पिण्डते	से.
५१८.	मुडि मार्जने २७५	साफ करना, झुकाना	मुन्ड्	मुण्ड	मुण्डते	से.
५१९.	तुडि तोडने २७३	तोड़ना	तुन्ड्	तुण्ड	तुण्डते	से.
५२०	हुडि वरणे, हरणे इत्येके २७७	स्वीकार करना हरण करना	हुन्ड्	हुण्ड	हुण्डते	से.
५२१.	मुडि खण्डने ३२६	तोड़ना	मुन्ड्	मुण्ड	मुण्डति	से.
५२२	चडि कोपे २७८	क्रोध करना	चन्ड्	चण्ड	चण्डते	से.
५२३	शडि रुजायां सङ्घाते च २७९	रोग विशेष होना	शन्ड्	शण्ड	शण्डते	से.
५२४	तडि ताडने २८०	मारना	तन्ड्	तण्ड	तण्डते	से.
५२५	पडि गतौ २८१	जाना	पन्ड्	पण्ड	पण्डते	से.

५२६. कडि मदे २८२	मतवाला होना	कन्ड् कण्ड कण्डते से.
५२७. खडि मन्थे २८३	मन्थन करना	खन्ड् खण्ड खण्डते से.
५२८. कपि चलने ३७५	काँपना	कन्प् कम्प कम्पते से.
५२९. रबि ३७६	शब्द करना	रन्ब् रम्ब रम्बते से.
५३०. लबि ३७७	शब्द करना	लन्ब् लम्ब लम्बते से.
५३१. अबि शब्दे ३७८	शब्द करना	अन्ब् अम्ब अम्बते से
५३२. लबि अवस्रंसने च ३७९	शब्द करना, लटकना	लन्ब् लम्ब लम्बते से.
५३३. ष्टभि ३८६	रुकना	स्तन्भ् स्तम्भ स्तम्भते से.
५३४. स्कभि प्रतिबन्धे ३८७	रुकना	स्कन्भ् स्कम्भ स्कम्भते से.
५३५. जृभि गात्रविनामे ३८९	जमुहाई लेना	जृन्भ् जृम्भ जृम्भते से.
५३६. रफि गतौ ४१४	जाना	रन्फ् रम्फ रम्फति से.
५३७. घुषि कान्तिकरणे ६५२	चमकाना	घुन्ष् घुंष घुंषते से.
५३८. घिणि ४३४	ग्रहण करना	घिन्ण् घिण्ण घिण्णते से.
५३९. घुणि ४३५	ग्रहण करना	घुन्ण् घुण्ण घुण्णते से.
५४० घृणि ग्रहणे ४३६	ग्रहण करना	घृन्ण् घृण्ण घृण्णते से.
५४१. वहि ६३३	बढ़ना	वन्ह् वंह वंहते से.
५४२. महि वृद्धौ ६३४	बढ़ना	मन्ह् मंह मंहते से.
५४३. अहि गतौ ६३५	गति करना	अन्ह् अंह अंहते से.
५४४ आङः शसि इच्छायाम् ६२९	इच्छा करना, प्रशंसा करना	आशन्स् आशंस आशंसते से.

४. भ्वादि गण के अनिदित् धातु

ये वे धातु हैं, जो उपधा में 'न्' के सहित ही धातुपाठ में पढ़े गये हैं।

५४५ मन्थ विलोडने ४२	मन्थन करना	मन्थ् मन्थ मन्थति से.
५४६. शुन्ध शुद्धौ ७४	शुद्ध करना	शुन्ध् शुन्ध शुन्धति से.
५४७ कुञ्च १८५	कम होना	कुञ्च् कुञ्च कुञ्चति से.
५४८. क्रुञ्च कौटिल्या - ल्पीभावयोः १८६	कुटिलता करना	क्रुञ्च् क्रुञ्च क्रुञ्चति से.
५४९. लुञ्च अपनयने १८७	नोचना, कतरना	लुञ्च् लुञ्च लुञ्चति से.
५५० अञ्चु गतिपूजनयोः १८८	जाना, पूजा करना	अञ्च् अञ्च अञ्चति से.
५५१. वञ्चु १८९	जाना	वञ्च् वञ्च वञ्चति से.

५५२.	चञ्चु १९०	जाना	चञ्च् चञ्च चञ्चति से.
५५३.	तञ्चु १९१	जाना	तञ्च् तञ्च तञ्चति से.
५५४.	त्वञ्चु १९२	जाना	त्वञ्च् त्वञ्च त्वञ्चति से.
५५५	म्रुञ्चु १९३	जाना	म्रुञ्च् म्रुञ्च म्रुञ्चति से.
५५६.	म्लुञ्चु गत्यर्था: १९४	जाना	म्लुञ्च् म्लुञ्च म्लुञ्चति से.
५५७.	ग्लुञ्चु गतौ २०१	जाना, छीनना	ग्लुञ्च् ग्लुञ्च ग्लुञ्चति से.
५५८.	तुम्प ४०५	हिंसा करना	तुम्प् तुम्प तुम्पति से.
५५९.	त्रुम्प ४०७	हिंसा करना	त्रुम्प् त्रुम्प त्रुम्पति से.
५६०	तुम्फ ४०९	हिंसा करना	तुम्फ् तुम्फ तुम्फति से.
५६१.	त्रुम्फ हिंसार्था: ४११	हिंसा करना	त्रुम्फ् त्रुम्फ त्रुम्फति से.
५६२.	षृम्भु हिंसार्थ: ४३१ (षिभु, षिम्भु इत्येके)	मार डालना	सृम्भ् सृम्भ सृम्भति से.
५६३.	शुम्भ भाषणे ४३३	भाषण करना	शुम्भ् शुम्भ शुम्भति से.
५६४	हम्म गतौ ४६७	जाना	हम्म् हम्म हम्मति से.
५६५	शंसु स्तुतौ ७२८	सिफारिश करना	शंस् शंस शंसति से.
५६६.	अञ्चु गतौ ८६२	जाना	अञ्च् अञ्च अञ्चति से.
५६७.	उबुन्दिर् निशामने ८७६	नुकीला बनाना	बुन्द् बुन्द बुन्दति बुन्दते से.
५६८.	स्कन्दिर् गतिशोषणयो: ९७९	जाना, सूखना	स्कन्द् स्कन्द स्कन्दति अ.
५६९	श्रम्भु प्रमादे ३९३	असावधानी करना	श्रम्भ् श्रम्भ श्रम्भते से.
५७०	स्रंसु ७५४	सरकना, अध:पतन होना	स्रंस् स्रंस स्रंसते से.
५७१.	ध्वंसु अवस्रंसने ७५५ गतौ च	सरकना, अध:पतन होना	ध्वंस् ध्वंस ध्वंसते से.
५७२.	भ्रंसु अवस्रंसने ७५६	सरकना, अध:पतन होना	भ्रंस् भ्रंस भ्रंसते से.
५७३.	स्रंभु विश्वासे ७५७	विश्वास करना	स्रम्भ् स्रंभ स्रंभते से.
५७४	स्यन्दू प्रस्रवणे ७६१	टपकना	स्यन्द् स्यन्द स्यन्दते से.
	दंश दंशने ९८९	डंक मारना	दंश् दश दशति अ.
	ष्वञ्ज परिष्वङ्गे ९७६	आलिङ्गन करना	स्वञ्ज् स्वज स्वजति अ.
	षञ्ज सङ्गे ९८७	सङ्ग करना	सञ्ज् सज सजति अ.
	रञ्ज रागे ९९९	रँगना, अनुरक्त करना	रञ्ज् रज रजति अ.

५. भ्वादिगण के शेष धातु

५७५.	टुओस्फूर्जा - वज्रनिर्घोषे २३५	मेघ का गरजना	स्फूर्ज्	स्फूर्ज	स्फूर्जति	से.
५७६.	ह्लादी सुखे च २७	संतुष्ट होना, सुखी होना	ह्लाद्	ह्लाद	ह्लादते	से.
५७७	पूयी विशरणे दुर्गन्धे च ४८४	तोड़ना, चीरना, दुर्गन्ध आना	पूय्	पूय	पूयते	से.
५७८.	क्नूयी शब्दे उन्दे च ४८५	शब्द करना गीला करना	क्नूय्	क्नूय	क्नूयते	से.
५७९	क्ष्मायी विधूनने ४८६	हिलना, काँपना,	क्ष्माय्	क्ष्माय	क्ष्मायते	से.
५८०	स्फायी ४८७	मोटा होना	स्फाय्	स्फाय	स्फायते	से.
५८१.	ओप्यायी वृद्धौ ४८८	बढ़ना, फूलना	प्याय्	प्याय	प्यायते	से.
५८२.	क्षेवु निरसने ५६८	थूकना, उल्टी करना	क्षेव्	क्षेव	क्षेवति	से.
५८३	त्वक्षू तनूकरणे ६५६	छीलना	त्वक्ष्	त्वक्ष	त्वक्षति	से.
५८४.	गाहू विलोडने ६४९	हिलाना, स्नान करना	गाह्	गाह	गाहते	वे.
५८५	राखृ १२२	सूखना, चमकना, स्वीकार नहीं करना	राख्	राख	राखति	से.
५८६.	लाखृ १२३	सूखना, चमकना, स्वीकार नहीं करना	लाख्	लाख	लाखति	से.
५८७.	द्राखृ १२४	सूखना, चमकना, स्वीकार नहीं करना	द्राख्	द्राख	द्राखति	से.
५८८.	ध्राखृ शोषणाल - मर्थयो: १२५	सूखना, चमकना, स्वीकार नहीं करना	ध्राख्	ध्राख	ध्राखति	से.
५८९.	खादृ भक्षणे ४९	खाना	खाद्	खाद	खादति	से.
५९०.	शाखृ १२६	फैलना, व्याप्त होना	शाख्	शाख	शाखति	से.
५९१.	श्लाखृ व्याप्तौ १२७	फैलना, व्याप्त होना	श्लाख्	श्लाख	श्लाखति	से.
५९२.	शौटृ गर्वे २९०	गर्व करना	शौट्	शौट	शौटति	से.
५९३.	यौटृ बन्धे २९१	बाँधना, वश में करना	यौट्	यौट	यौटति	से.
५९४.	म्लेटृ २९२	पागल होना	म्लेट्	म्लेट	म्लेटति	से.
५९५.	म्रेडृ उन्मादे २९३	पागल होना	म्रेड्	म्रेड	म्रेडति	से.
५९६.	क्रीडृ विहारे ३५०	विहार करना, खेलना	क्रीड्	क्रीड	क्रीडति	से.
५९७.	हूडृ ३५३	जाना, होड़ लगाना	हूड्	हूड	हूडति	से.
५९८.	होडृ गतौ ३५४	जाना, होड़ लगाना	होड्	होड	होडति	से.

५९९.	रौडृ अनादरे ३५५	अनादर करना	रौड्	रौड	रौडति	से.
६००	रोडृ ३५६	पागल होना,	रोड्	रोड	रोडति	से.
६०१.	लोडृ उन्मादे ३५७	पागल होना	लोड्	लोड	लोडति	से.
६०२.	शोणृ वर्णगत्यो: ४५५	लाल होना, जाना	शोण्	शोण	शोणति	से.
६०३.	श्रोणृ संघाते ४५६	एकत्र करना	श्रोण्	श्रोण	श्रोणति	से.
६०४.	श्लोणृ च ४५७	एकत्र करना	श्लोण्	श्लोण	श्लोणति	से.
६०५.	पैणृ गतिप्रेरण - श्लेषणेषु ४५८	स्पर्श करना, जाना, आलिङ्गन करना	पैण्	पैण	पैणति	से.
६०६.	मीमृ गतौ शब्दे च ४६८	मिमियाँना, जाना	मीम्	मीम	मीमति	से.
६०७.	वेलृ ५३५	काँपना, चलना	वेल्	वेल	वेलति	से.
६०८.	चेलृ ५३६	काँपना, चलना	चेल्	चेल	चेलति	से.
६०९.	केलृ ५३७	काँपना, चलना	केल्	केल	केलति	से.
६१०.	खेलृ ५३८	काँपना, खेलना	खेल्	खेल	खेलति	से.
६११.	क्ष्वेलृ चलने ५३९	काँपना, खेलना	क्ष्वेल्	क्ष्वेल	क्ष्वेलति	से.
६१२.	पेलृ ५४१	जाना, हिलना	पेल्	पेल	पेलति	से.
६१३.	फेलृ ५४२	जाना, हिलना	फेल्	फेल	फेलति	से.
६१४.	शेलृ गतौ ५४३ षेलृ इत्येके	जाना, हिलना	शेल्	शेल	शेलति	से.
६१५	खोलृ ५५१	टाँग अड़ाना	खोल्	खोल	खोलति	से.
६१६.	खोर्ऋ गतिप्रतिघाते ५५२	टाँग अड़ाना	खोर्	खोर	खोरति	से.
६१७.	धोर्ऋ गतिचातुर्ये ५५३	चतुराई से चलना	धोर्	धोर	धोरति	से.
६१८.	पेसृ गतौ ७२०	जाना	पेस्	पेस	पेसति	से.
६१९.	लाघृ ११३	समर्थ होना	लाघ्	लाघ	लाघते	से.
६२०.	द्राघृ सामर्थ्ये ११४	समर्थ होना	द्राघ्	द्राघ	द्राघते	से.
६२१.	श्लाघृ कत्थने ११५	आत्मस्तुति करना	श्लाघ्	श्लाघ	श्लाघते	से.
६२२.	लोचृ दर्शने १६४	देखना	लोच्	लोच	लोचते	से.
६२३.	भ्रेजृ १८०	चमकना	भ्रेज्	भ्रेज	भ्रेजते	से.
६२४.	भ्राजृ दीप्तौ १८१	चमकना	भ्राज्	भ्राज	भ्राजते	से.
६२५	हेडृ अनादरे २८४	अपमान करना	हेड्	हेड	हेडते	से.
६२६	होडृ अनादरे २८५	अपमान करना	होड्	होड	होडते	से.

६२७.	बाड़ृ आप्लाव्ये २८६	बाढ़ आना, डूबना	बाड्	बाड	बाडते	से.
६२८.	द्राड़ृ २८७	चीरना, कुचलना,	द्राड्	द्राड	द्राडते	से.
६२९	ध्राड़ृ विशरणे २८८	चीरना, कुचलना,	ध्राड्	ध्राड	ध्राडते	से.
६३०.	शाड़ृ श्लाघायाम् २८९	प्रशंसा करना, तैरना, शेखी मारना	शाड्	शाड	शाडते	से.
६३१.	तेपृ ३६३	सींचना, चूना, झरना	तेप्	तेप	तेपते	से.
६३२.	ष्टेपृ क्षरणार्था: ३६५	सींचना, चूना, झरना	स्तेप्	स्तेप	स्तेपते	से.
६३३.	ग्लेपृ दैन्ये ३६६	दरिद्र होना, जाना, पराधीन होना	ग्लेप्	ग्लेप	ग्लेपते	से.
६३४.	टुवेपृ कम्पने ३६७	काँपना	वेप्	वेप	वेपते	से.
६३५	केपृ ३६८	काँपना, जाना	केप्	केप	केपते	से.
६३६.	गेपृ ३६९	काँपना, जाना	गेप्	गेप	गेपते	से.
६३७.	ग्लेपृ च ३७०	काँपना, जाना	ग्लेप्	ग्लेप	ग्लेपते	से.
६३८.	मेपृ ३७१	काँपना, जाना	मेप्	मेप	मेपते	से.
६३९	रेपृ ३७२	काँपना, जाना	रेप्	रेप	रेपते	से.
६४०.	लेपृ गतौ ३७३	काँपना, जाना	लेप्	लेप	लेपते	से.
६४१.	क्लीबृ अधाष्ट्र्ये ३८१	कायर होना	क्लीब्	क्लीब	क्लीबते	से.
६४२.	क्षीबृ मदे ३८२	मतवाला होना	क्षीब्	क्षीब	क्षीबते	से.
६४३.	शीभृ कत्थने ३८३	प्रशंसा करना, शेखी मारना	शीभ्	शीभ	शीभते	से.
६४४.	चीभृ च ३८४	प्रशंसा करना, शेखी मारना	चीभ्	चीभ	चीभते	से.
६४५	रेभृ शब्दे ३८५	शब्द करना	रेभ्	रेभ	रेभते	से.
६४६.	तायृ संतानपालनयो: ४८९	संरक्षण करना, फैलना	ताय्	ताय	तायते	से.
६४७.	तेवृ ४९९	खेलना, क्रीडा करना	तेव्	तेव	तेवते	से.
६४८.	देवृ देवने ५००	दु:ख देना	देव्	देव	देवते	से.
६४९.	षेवृ ५०१	सेवा करना	सेव्	सेव	सेवते	से.
६५०	गेवृ ५०२	सेवा करना	गेव्	गेव	गेवते	से.
६५१.	ग्लेवृ ५०३	सेवा करना	ग्लेव्	ग्लेव	ग्लेवते	से.
६५२.	पेवृ ५०४	सेवा करना	पेव्	पेव	पेवते	से.
६५३.	मेवृ ५०५	सेवा करना	मेव्	मेव	मेवते	से.
६५४.	म्लेवृ सेवने ५०६	सेवा करना	म्लेव्	म्लेव	म्लेवते	से.

	शेवृ केवृ, क्लेवृ इत्येके					
६५५.	रेवृ प्लवगतौ ५०७	उछलकर चलना	रेव्	रेव	रेवते	से.
६५६.	गेषृ अन्विच्छायाम्	आविष्कार करना	गेष्	गेष	गेषते	से.
	ग्लेषृ इत्येके ६१४	आविष्कार करना	ग्लेष्	ग्लेष	ग्लेषते	से.
६५७.	पेषृ प्रयत्ने ६१५	चपलता से यत्न करना,	पेष्	पेष	पेषते	से.
	एषृ इत्यके,	ठहरना				
	येषृ इत्यप्यन्ये					
६५८.	जेषृ ६१६	जाना	जेष्	जेष	जेषते	से.
६५९	णेषृ ६१७	जाना	नेष्	नेष	नेषते	से.
६६०.	प्रेषृ गतौ ६१९	जाना	प्रेष्	प्रेष	प्रेषते	से.
६६१.	रेषृ ६२०	हिनहिनाना, अस्पष्ट शब्द करना	रेष्	रेष	रेषते	से.
६६२.	हेषृ ६२१	हिनहिनाना, अस्पष्ट शब्द करना	हेष्	हेष	हेषते	से.
६६३	ह्रेषृ अव्यक्ते शब्दे ६२२	हिनहिनाना, अस्पष्ट शब्द करना	ह्रेष्	ह्रेष	ह्रेषते	से.
६६४.	कासृ शब्दकुत्सा - याम् ६२३	खाँसना	कास्	कास	कासते	से.
६६५	भासृ दीप्तौ ६२४	चमकना	भास्	भास	भासते	से.
६६६.	णासृ ६२५	शब्द करना	नास्	नास	नासते	से.
६६७.	रासृ शब्दे ६२६	शब्द करना, क्रन्दन करना, चिल्लाना, हूहू करना, गधे का बोलना	रास्	रास	रासते	से.
६६८.	वेहृ (बेहृ) ६४३	यत्न करना, ठहरना, निश्चय करना	वेह्	वेह	वेहते	से.
६६९.	जेहृ ६४४	यत्न करना, ठहरना,	जेह्	जेह	जेहते	से.
६७०.	वाहृ प्रयत्ने ६४५	यत्न करना, ठहरना,	वाह्	वाह	वाहते	से.
	जेहृ गतावपि	यत्न करना, जाना				
६७१.	द्राहृ निद्राक्षये ६४६	जागना	द्राह्	द्राह	द्राहते	से.
६७२.	काशृ दीप्तौ ६४७	चमकना	काश्	काश	काशते	से.
६७३.	गाधृ प्रतिष्ठा - लिप्सयोर्ग्रन्थे च ४	ढूँढना, ठहरना ग्रन्थ बनाना	गाध्	गाध	गाधते	से.

६७४.	बाधृ लोडने ५	दु:ख देना, बाधा देना	बाध्	बाध	बाधते	से.
६७५	नाथृ ६	माँगना, रोगी होना	नाथ्	नाथ	नाथते	से.
६७६	नाधृ याच्ञोपतापै - श्वर्याशी:षु ७	आशीर्वाद देना श्रीमान् होना	नाध्	नाध	नाधते	से.
६७७.	वेथृ याचने ३४	माँगना	वेथ्	वेथ	वेथते	से.
६७८.	शीकृ सेचने ७५	सींचना, भिगोना	शीक्	शीक	शीकते	से.
६७९	लोकृ दर्शने ७६	देखना	लोक्	लोक	लोकते	से.
६८०.	श्लोकृ संघाते ७७	रचना करना	श्लोक्	श्लोक	श्लोकते	से.
६८१.	द्रेकृ ७८	बढ़ना, शब्द करना बड़प्पन प्रकट करना	द्रेक्	द्रेक	द्रेकते	से.
६८२.	ध्रेकृ शब्दोत्साहयो: ७९	शब्द करना, उत्साह करना	ध्रेक्	ध्रेक	ध्रेकते	से.
६८३.	रेकृ शङ्कायाम् ८०	शङ्का करना	रेक्	रेक	रेकते	से.
६८४.	सेकृ गतौ ८१	जाना	सेक्	सेक	सेकते	से.
६८५	स्रेकृ गतौ ८२	जाना	स्रेक्	स्रेक	स्रेकते	से.
६८६.	टीकृ १०४	जाना, टिकाना	टीक्	टीक	टीकते	से.
६८७.	तीकृ गत्यर्था: १०६	जाना, टिकाना	तीक्	तीक	तीकते	से.
६८८.	राघृ सामर्थ्ये ११२	समर्थ होना	राघ्	राघ	राघते	से.
६८९	ढौकृ गतौ ९८	जाना	ढौक्	ढौक	ढौकते	से.
६९०.	त्रौकृ गतौ ९९	जाना	त्रौक्	त्रौक	त्रौकते	से.
६९१.	टुयाचृ याच्ञायाम् ८६३	माँगना याचना करना	याच्	याच	याचति याचते	से.
६९२.	प्रोथृ पर्याप्तौ ८६७	शक्तिमान् होना, योग्य होना	प्रोथ्	प्रोथ	प्रोथति प्रोथते	से.
६९३.	मेदृ मेधाहिंसनयो: ८६९	मार डालना	मेद्	मेद	मेदति मेदते	से.
६९४	मेधृ सङ्गमे च ८७०	मेल करना, मारना, यज्ञीय हिंसा करना	मेध्	मेध	मेधति मेधते	से.
६९५.	णेदृ कुत्सा - सन्निकर्षयो: ८७२	निन्दा करना, समीप जाना, आना	नेद्	नेद	नेदति नेदते	से.
६९६.	चीवृ आदान- संवरणयो: ८७९	लेना, पहनना, पकड़ना	चीव्	चीव	चीवति चीवते	से.

६९७.	चायृ पूजानिशामनयोः ८८०	सम्मान करना, जानना, पूजा करना	चाय्	चाय	चायति चायते	से.
६९८	दाशृ दाने ८८२	देना, आहुति देना	दाश्	दाश	दाशति दाशते	से.
६९९	भेषृ भये, गतावित्येके ८८३	डरना, जाना	भेष्	भेष	भेषति भेषते	से.
७००.	भ्रेषृ ८८४	जाना	भ्रेष्	भ्रेष	भ्रेषति भ्रेषते	से.
७०१	भ्लेषृ गतौ ८८५	जाना	भ्लेष्	भ्लेष	भ्लेषति भ्लेषते	से.
७०२.	दासृ दाने ८९४	देना, सौंपना	दास्	दास	दासति दासते	से.
७०३	माहृ माने ८९५	नापना, गिनना, तौलना	माह्	माह	माहति माहते	से.
७०४.	वेणृ गतिज्ञान - चिन्तानिशामन - वादित्रग्रहणेषु ८७७	जाना, समझना, याद करना, बजाना	वेण्	वेण	वेणति वेणते	से.
७०५.	स्पर्ध सङ्घर्षे ३	स्पर्धा करना, मत्सर करना	स्पर्ध्	स्पर्ध	स्पर्धते	से.
७०६.	ह्राद अव्यक्ते शब्दे २६	अस्पष्ट शब्द करना	ह्राद्	ह्राद	ह्रादते	से.
७०७.	षूद क्षरणे २५	शुद्ध करना, झरना, दुःख देना	सूद्	सूद	सूदते	से.
७०८.	स्वाद आस्वादने २८	स्वाद लेना	स्वाद्	स्वाद	स्वादते	से.
७०९	पर्द कुत्सिते शब्दे २९	अपानवायु छोड़ना	पर्द्	पर्द	पर्दते	से.
७१०.	कत्थ श्लाघायाम् ३७	प्रशंसा करना	कत्थ्	कत्थ	कत्थते	से.
७११.	स्वर्द आस्वादने १९	स्वाद लेना	स्वर्द्	स्वर्द	स्वर्दते	से
७१२.	अर्द गतौ याचने च ५५	जाना, माँगना	अर्द्	अर्द	अर्दति	से.
७१३.	गर्द शब्दे ५७	शब्द करना, गरजना	गर्द्	गर्द	गर्दति	से.
७१४	तर्द हिंसायाम् ५८	दुःख देना, मार डालना	तर्द्	तर्द	तर्दति	से.
७१५	कर्द कुत्सिते शब्दे ५९	कुत्सित शब्द करना	कर्द्	कर्द	कर्दति	से.

७१६. खर्द दन्दशूके ६०	चबाना, दाँतो से काटना	खर्द् खर्द खर्दति	से.
७१७. ष्वष्क १००	जाना	ष्वष्क् ष्वष्क ष्वष्कते	से.
७१८. वस्क १०१	जाना	वस्क् वस्क वस्कते	से.
७१९ मस्क गत्यर्था: १०२	जाना	मस्क् मस्क मस्कते	से.
७२० फक्क नीचैर्गतौ ११६	धीरे धीरे चलना, अनुचित रीति से बरतना	फक्क् फक्क फक्कति	से.
७२१. बुक्क भषणे ११९.	भौंकना	बुक्क् बुक्क बुक्कति	से.
७२२. वल्ग गत्यर्थ: १४३	जाना, फुदकना	वल्ग् वल्ग वल्गति	से.
७२३. वर्च दीप्तौ १६२	चमकना	वर्च् वर्च वर्चते	से.
७२४ अर्च पूजायाम् २०४	पूजा करना	अर्च् अर्च अर्चति	से.

आगे के चार धातुओं के लिये ये सूत्र पढ़ना आवश्यक है।

छे च - 'छ' परे होने पर, 'छ' के पूर्व में स्थित जो 'ह्रस्व स्वर', उसे तुक् = त् का आगम होता है। जैसे - लछ् = ल त् छ्।

स्तो: श्चुना श्चु: - सकार तवर्ग के स्थान पर, शकार चवर्ग होता है, शकार चवर्ग के योग में।

इस सूत्र से तकार के स्थान पर चकार आदेश करके - ल त् छ् - ल च् छ् = लच्छ्। इसी प्रकार गछ् = गच्छ् / इष् = इच्छ्, आदि बनाइये।

दीर्घात् - 'छ' परे होने पर, 'छ' के पूर्व में स्थित जो 'दीर्घ स्वर', उसे भी तुक् = त् का आगम होता है। जैसे - ह्रीछ् = ह्री त् छ् / तकार को श्चुत्व करके - ह्रीच्छ्। इस सूत्र से यथास्थान तुक् का आगम करें।

७२५. लछ लक्षणे २०६	लक्षित करना	लच्छ् लच्छ लच्छति	से.
७२६. ह्रीछ लज्जायाम् २१०	लज्जित होना	ह्रीच्छ् ह्रीच्छ ह्रीच्छति	से.
७२७ म्लेच्छ अव्यक्ते शब्दे २०५	अशुद्ध बोलना	म्लेच्छ् म्लेच्छ म्लेच्छति	से.
७२८ युच्छ प्रमादे २१४	असावधानी करना	युच्छ् युच्छ युच्छति	से.
७२९ कूज अव्यक्ते शब्दे २२३	कूजना	कूज् कूज कूजति	से.
७३० अर्ज २२४	उपार्जन करना	अर्ज् अर्ज अर्जति	से.
७३१ सर्ज अर्जने २२५	उपार्जन करना,	सर्ज् सर्ज सर्जति	से.
७३२ गर्ज शब्दे २२६	गरजना	गर्ज् गर्ज गर्जति	से.
७३३ तर्ज भर्त्सने २२७	निन्दा करना, डरना	तर्ज् तर्ज तर्जति	से.

७३४	कर्ज व्यथने २२८	सताना	कर्ज्	कर्ज	कर्जति	से.
७३५	खर्ज पूजने च २२९	सताना, सम्मान करना	खर्ज्	खर्ज	खर्जति	से.
७३६	तेज पालने २३०	पालन करना	तेज्	तेज	तेजति	से.
७३७	क्षीज पालने २३७	पालना	क्षीज्	क्षीज	क्षीजति	से.
७३८	लाज भर्जने २४०	भूँजना, तलना	लाज्	लाज	लाजति	से.
७३९	अट्ट अतिक्रमहिंसयोः २५४	अधिक होना, मारना	अट्ट्	अट्ट	अट्टते	से.
७४०.	वेष्ट वेष्टने २५५	लपेटना	वेष्ट्	वेष्ट	वेष्टते	से.
७४१.	चेष्ट चेष्टायाम् २५६	चेष्टा करना	चेष्ट्	चेष्ट	चेष्टते	से.
७४२.	गोष्ट २५७	बटोरना	गोष्ट्	गोष्ट	गोष्टते	से.
७४३.	लोष्ट सङ्घाते २५८	बटोरना	लोष्ट्	लोष्ट	लोष्टते	से.
७४४.	घट्ट चलने २५९	भीड़ करना, चलना	घट्ट्	घट्ट	घट्टते	से.
७४५.	हेठ विबाधायाम् २६६	विशेष बाधा करना शठता करना	हेठ्	हेठ	हेठते	से.
७४६	चुड्ड भावकरणे ३४७	काम क्रीड़ा करना, अभिप्राय सूचित करना	चुड्ड्	चुड्ड	चुड्डति	से.
७४७	अड्ड अभियोगे ३४८	फरियाद करना	अड्ड्	अड्ड	अड्डति	से.
७४८	कड्ड कार्कश्ये ३४९ चुड्डादयस्त्रयो दोपधाः	निष्ठुर होना	कड्ड्	कड्ड	कड्डति	से.
७४९	हर्य गतिकान्त्योः ५१४	जाना, इच्छा करना	हर्य्	हर्य	हर्यति	से.
७५०	शल्भ कत्थने ३९०	जाना, इच्छा करना	शल्भ्	शल्भ	शल्भते	से.
७५१	वल्भ भोजने ३९१	खाना	वल्भ्	वल्भ	वल्भते	से.
७५२	गल्भ धाष्ट्र्ये ३९२	धृष्टता करना	गल्भ्	गल्भ	गल्भते	से.
७५३	जल्प व्यक्तायां वाचि, जपे मानसे च ३९८	बक बक करना साफ बोलना	जल्प्	जल्प	जल्पति	से.
७५४.	गर्प ४१२	जाना	पर्प्	पर्प	पर्पति	से.
७५५.	अर्ब ४१५	जाना	अर्ब्	अर्ब	अर्बति	से.
७५६.	पर्ब ४१६	जाना	पर्ब्	पर्ब	पर्बति	से.
७५७.	लर्ब ४१७	जाना	लर्ब्	लर्ब	लर्बति	से.
७५८.	बर्ब ४१८	जाना	बर्ब्	बर्ब	बर्बति	से.
७५९.	भर्ब ४१९	जाना	भर्ब्	भर्ब	भर्बति	से.

७६०.	कर्ब ४२०	जाना	कर्ब्	कर्ब	कर्बति	से.
७६१.	खर्ब ४२१	जाना	खर्ब्	खर्ब	खर्बति	से.
७६२.	गर्ब ४२२	जाना	गर्ब्	गर्ब	गर्बति	से.
७६३.	शर्ब ४२३	जाना	शर्ब्	शर्ब	शर्बति	से.
७६४.	षर्ब ४२४	जाना	सर्ब्	सर्ब	सर्बति	से.
७६५.	चर्ब गतौ ४२५	जाना	चर्ब्	चर्ब	चर्बति	से.
७६६.	घूर्ण भ्रमणे ४३८	घूमना, चक्कर आना	घूर्ण्	घूर्ण	घूर्णति	से.
७६७.	भाम क्रोधे ४४१	क्रोध करना	भाम्	भाम	भामते	से.
७६८.	वल्ल संवरणे सञ्चरणे च ४९२	ढाँकना, आच्छादित करना	वल्ल्	वल्ल	वल्लते	से.
७६९.	मल्ल धारणे ४९४	पहनना	मल्ल्	मल्ल	मल्लते	से.
७७०.	भल्ल परिभाषण हिंसादानेषु ४९६	व्याख्यान देना, हिंसा करना, देना	भल्ल्	भल्ल	भल्लते	से.
७७१.	वल्ल अव्यक्ते शब्दे अशब्द इति स्वामी ४९८	अस्पष्ट शब्द करना	वल्ल्	वल्ल	वल्लते	से.
७७२.	मव्य बन्धने ५०८	बाँधना	मव्य्	मव्य	मव्यति	से.
७७३.	सूर्क्ष्य ईर्ष्यार्थः ५०९	ईर्ष्या करना, तिरस्कार करना	सूर्क्ष्य्	सूर्क्ष्य	सूर्क्ष्यति	से.
७७४.	शुच्य अभिषवे चुच्य इत्येके ५१३	स्नान कराना, सार निकालना	शुच्य्	शुच्य	शुच्यति	से.
७७५.	मील ५१७	पलक झपकाना	मील्	मील	मीलति	से.
७७६.	श्मील ५१८	पलक झपकाना	श्मील्	श्मील	श्मीलति	से.
७७७.	स्मील ५१९	पलक झपकाना	स्मील्	स्मील	स्मीलति	से.
७७८.	क्ष्मील निमेषणे ५२०	पलक झपकाना	क्ष्मील्	क्ष्मील	क्ष्मीलति	से.
७७९.	पील प्रतिष्टम्भे ५२१	मूर्ख होना, थामना, रोकना	पील्	पील	पीलति	से.
७८०.	नील वर्णे ५२२	रँगना, रँगाना, नीला रंग लगाना	नील्	नील	नीलति	से.
७८१.	शील समाधौ ५२३	मनन करना, अर्चा करना	शील्	शील	शीलति	से.
७८२.	कील बन्धने ५२४	बाँधना, कीलों से मजबूत करना	कील्	कील	कीलति	से.
७८३.	कूल आवरणे ५२५	ढाँकना, छिपाना	कूल्	कूल	कूलति	से.

७८४.	शूल रुजायां सङ्घोषे च ५२६	पीड़ा होना, पेट - दुःखना, शूली पर चढ़ाना	शूल्	शूल	शूलति	से.
७८५.	तूल निष्कर्षे ५२७	त्यागना, निकालना	तूल्	तूल	तूलति	से.
७८६.	पूल संङ्घाते ५२८	बटोरना	पूल्	पूल	पूलति	से.
७८७.	मूल प्रतिष्ठायाम् ५२९	जड़ जमाना	मूल्	मूल	मूलति	से.
७८८.	चुल्ल भावकरणे ५३१	अपना अभिप्राय बताना	चुल्ल्	चुल्ल	चुल्लति	से.
७८९.	फुल्ल विकसने ५३२	फूलना, प्रफुल्लित होना	फुल्ल्	फुल्ल	फुल्लति	से.
७९०.	चिल्ल शैथिल्ये ५३३ भावकरणे च	मुक्त करना, ढीला करना	चिल्ल्	चिल्ल	चिल्लति	से.
७९१.	वेल्ल चलने ५४०	चलना, थरथराना	वेल्ल्	वेल्ल	वेल्लति	से.
७९२.	खल्ल आशुगमने ५५०	शीघ्र गति से चलना	खल्ल्	खल्ल	खल्लति	से.
७९३.	अभ्र ५५६	जाना, आचरण करना	अभ्र्	अभ्र	अभ्रति	से.
७९४.	वभ्र ५५७	जाना, आचरण करना	वभ्र्	वभ्र	वभ्रति	से.
७९५.	मभ्र गत्यर्थाः ५५८	जाना, आचरण करना	मभ्र्	मभ्र	मभ्रति	से.
७९६.	जीव प्राणधारणे ५६२	जीना	जीव्	जीव	जीवति	से.
७९७.	पीव ५६३	तोन्दिल होना, मोटा होनां	पीव्	पीव	पीवति	से.
७९८.	मीव ५६४	तोन्दिल होना	मीव्	मीव	मीवति	से.
७९९.	तीव ५६५	तोन्दिल होना मोटा होना	तीव्	तीव्	तीवति	से.
८००.	णीव स्थौल्ये ५६६	तोन्दिल होना मोटा होना	नीव्	नीव	नीवति	से.
८०१.	पूर्व ५७६	पूर्ण करना, भरना	पूर्व्	पूर्व	पूर्वति	से.
८०२	पर्व ५७७	पूर्ण करना, भरना	पर्व्	पर्व	पर्वति	से.
८०३.	मर्व पूरणे ५७८	पूर्ण करना, भरना	मर्व्	मर्व	मर्वति	से.
८०४.	चर्व अदने ५७९.	खाना, चबाना	चर्व्	चर्व	चर्वति	से.
८०५	भर्व हिंसायाम् ५८०	मारना	भर्व्	भर्व	भर्वति	से.
८०६.	कर्व ५८१	गर्व करना	कर्व्	कर्व	कर्वति	से.
८०७.	खर्व ५८२	गर्व करना	खर्व्	खर्व	खर्वति	से.
८०८	गर्व दर्पे ५८३	गर्व करना	गर्व्	गर्व	गर्वति	से.
८०९	अर्व ५८४	मारना	अर्व्	अर्व	अर्वति	से.
८१०.	शर्व ५८५	मारना	शर्व्	शर्व	शर्वति	से.

८११.	षर्व हिंसायाम् ५८६	मारना	सर्व्	सर्व	सर्वति	से.
८१२.	धावु गति - शुद्ध्योः ६०१	स्वच्छ करना दौड़ना	धाव्	धाव	धावति धावते	से.
८१३.	धुक्ष ६०२	प्रदीप्त करना, जीना, थकना,	धुक्ष्	धुक्ष	धुक्षते	से.
८१४	धिक्ष संदीपन - क्लेशनजीवनेषु ६०३	प्रदीप्त करना, जीना, थकना	धिक्ष्	धिक्ष	धिक्षते	से.
८१५.	वृक्ष वरणे ६०४	स्वीकार करना	वृक्ष्	वृक्ष	वृक्षते	से.
८१६.	शिक्ष विद्योपा - दाने ६०५	सीखना, विद्या ग्रहण करना	शिक्ष्	शिक्ष	शिक्षते	से.
८१७.	भिक्ष भिक्षाया - मलाभे लाभे च ६०६	भीख माँगना, प्राप्त होना प्राप्त न होना	भिक्ष्	भिक्ष	भिक्षते	से.
८१८.	क्लेश अव्यक्तायां वाचि, बाधने इति दुर्गः ६०७	मारना, अस्पष्ट शब्द करना, सताना	क्लेश्	क्लेश	क्लेशते	से.
८१९.	दक्ष वृद्धौ शीघ्रार्थे च ६०८	समृद्ध होना, शीघ्रता करना	दक्ष्	दक्ष	दक्षते	से.
८२०.	दीक्ष मौण्ड्ये - ज्योपनयन - नियमव्रतादेशेषु ६०९	क्षौर करना, दीक्षा देना, धर्म सिखाना, उपनयन करना	दीक्ष्	दीक्ष	दीक्षते	से.
८२१.	भाष व्यक्तायां वाचि ६१२	स्पष्ट बोलना	भाष्	भाष	भाषते	से.
८२२.	वर्ष स्नेहने ६१३	गीला होना	वर्ष्	वर्ष	वर्षति	से.
८२३.	गर्ह ६३६	निन्दा करना	गर्ह्	गर्ह	गर्हति	से.
८२४	गल्ह कुत्सा - याम् ६३७	निन्दा करना	गल्ह्	गल्ह	गल्हते	से.
८२५	बर्ह ६३८	श्रेष्ठ होना, फैलाना	बर्ह्	बर्ह	बर्हति	से.
८२६.	बल्ह प्राधान्ये ६३९	श्रेष्ठ होना, फैलाना	बल्ह्	बल्ह	बल्हते	से.
८२७.	वर्ह ६४०	बोलना, ढाँकना	वर्ह्	वर्ह	वर्हति	से.
८२८	वल्ह परिभाषण - हिंसाच्छादनेषु ६४१	बोलना, पीड़ा करना, ढाँकना	वल्ह्	वल्ह	वल्हते	से.
८२९	रक्ष पालने ६५८	रक्षा करना, पालना	रक्ष्	रक्ष	रक्षति	से.

८३०	णिक्ष चुम्बने ६५९	चूमना	निक्ष् निक्ष निक्षति से.
८३१.	त्रक्ष गतौ ६६०	जाना	त्रक्ष् त्रक्ष त्रक्षति से.
८३२.	ष्ट्रक्ष (तृक्ष,ष्टृक्ष) ६६१	जाना	स्त्रक्ष् स्त्रक्ष स्त्रक्षति से.
८३३	णक्ष गतौ ६६२	जाना	नक्ष् नक्ष नक्षति से.
८३४.	वक्ष रोषे इत्येके ६६३	क्रोध करना, एकत्र करना	वक्ष् वक्ष वक्षति से.
८३५.	मृक्ष संघाते ६६४	क्रोध करना, एकत्र करना	मृक्ष् मृक्ष मृक्षति से.
८३६.	तक्ष त्वचने (पक्ष परिग्रह इत्येके) ६६५	आच्छादित करना	तक्ष् तक्ष तक्षति से.
८३७.	सूर्क्ष आदरे (षर्क्ष इति केचित्) ६६६	आदर करना	सूर्क्ष् सूर्क्ष सूर्क्षति से.
८३८.	चूष पाने ६७३	चूसना	चूष् चूष चूषति से.
८३९.	तूष तुष्टौ ६७४	संतुष्ट होना	तूष् तूष तूषति से.
८४०	पूष वृद्धौ ६७५	अधिक होना	पूष् पूष पूषति से.
८४१.	मूष स्तेये ६७६	चोरी करना	मूष् मूष मूषति से.
८४२.	लूष ६७७	सँवारना, सजाना	लूष् लूष लूषति से.
८४३	रूष भूषायाम् ६७८	सँवारना, सजाना	रूष् रूष रूषति से.
८४४	शूष प्रसवे ६७९	जनना, उत्पन्न - करना	शूष् शूष शूषति से.
८४५	यूष हिंसायाम् ६८०	मारना	यूष् यूष यूषति से.
८४६	जूष च ६८१	मारना	जूष् जूष जूषति से.
८४७.	भूष अलंकारे ६८२	अलंकृत करना	भूष् भूष भूषति से.
८४८.	जर्ज ७१६	बोलना, निन्दा करना, दोष लगाना,	जर्ज् जर्ज जर्जति से.
८४९	चर्च ७१७	बोलना, निन्दा करना, दोष लगाना	चर्च् चर्च चर्चति से.
८५०	झर्झ परिभाषण - हिंसातर्जनेषु ७१८	झूठ बोलना, निन्दा करना, दोष लगाना,	झर्झ् झर्झ झर्झति से.
८५१	अर्ह पूजायाम् ७४०	सम्मान करना, योग्य होना	अर्ह् अर्ह अर्हति से.
८५२:	हिक्क अव्यक्ते	हिचकी आंना,	हिक्क् हिक्क हिक्कति से.

	शब्दे ८६१	अस्पष्ट बोलना			हिक्कते	
८५३	रेटृ परिभाषणे ८६४	कुत्ते का भौंकना	रेट्	रेट	रेटति रेटते	से.
८५४.	भ्रक्ष ८९२	खाना	भ्रक्ष्	भ्रक्ष	भ्रक्षति भ्रक्षते	से.
८५५	भ्लक्ष अदने ८९३	खाना	भ्लक्ष्	भ्लक्ष	भ्लक्षति भ्लक्षते	से.

भ्वादिगण का द्युतादि अन्तर्गण

इसका प्रयोजन लुङ् लकार में मिलेगा। द्युतादिगण के धातुओं से लुङ् लकार में 'अङ्' से बने हुए प्रत्यय लगते हैं।

८५६.	द्युत दीप्तौ ७४१	प्रकाशित होना, चमकना	द्युत्	द्योत	द्योतते	से.
८५७.	रुच दीप्तावभि - प्रीतौ च ७४५	चमकना, प्रसन्न होना, उत्साह करना, अच्छा लगना	रुच्	रोच	रोचते	से.
८५८.	घुट परिवर्तने ७४६	लौटना, पीछे - आना, बदलना	घुट्	घोट	घोटते	से.
८५९	रुट ७४७	नीचे गिरना	रुट्	रोट	रोटते	से.
८६०	लुट ७४८	नीचे गिरना	लुट्	लोट	लोटते	से.
८६१.	लुठ प्रतिघाते ७४९	नीचे गिरना	लुठ्	लोठ	लोठते	से.
८६२	शुभ दीप्तौ ७५०	चमकना, शोभा पाना	शुभ्	शोभ	शोभते	से.
८६३.	क्षुभ सञ्चलने ७५१	मथना, क्रोध करना	क्षुभ्	क्षोभ	क्षोभते	से.
८६४.	तुभ हिंसायाम् ७५३	मार डालना, दुःख देना	तुभ्	तोभ	तोभते	से.
८६५	णभ हिंसायाम् अभावे च ७५२	मार डालना	नभ्	नभ	नभते	से.
	स्रंसु ७५४	भ्रष्ट होना, नीचे गिरना	स्रंस्	स्रंस	स्रंसते	से.
	ध्वंसु ७५५	नष्ट होना	ध्वंस्	ध्वंस	ध्वंसते	से.

	भ्रंसु अवस्रंसने ७५६	भ्रष्ट होना	भ्रंस् भ्रंस भ्रंसते से.
	ध्वंसु गतौ च ७५७	भ्रष्ट होना	ध्वंस् ध्वंस ध्वंसते से.
	भ्रुशु इत्यपि केचित्	नीचे गिरना	
	स्रंभु विश्वासे ७५७	विश्वास करना	स्रंभ् स्रंभ स्रंभते से.
	वृतु वर्तने ७५८	वर्तमान रहना, होना, बर्ताव करना	वृत् वर्त वर्तते से.
	वृधु वृद्धौ ७५९	बढ़ना	वृध् वर्ध वर्धते से.
८६६	शृधु शब्द - कुत्सायाम् ७६०	अपान वायु - छोड़ना	शृध् शर्ध शर्धते से.
	स्यन्दू प्रस्रवणे ७६१	बहना	स्यन्द् स्यन्द स्यन्दते से.
	कृपू सामर्थ्ये ७६२	समर्थ होना, योग्य होना	कल्प् कल्प कल्पते से.
८६७.	श्विता वर्णे ७४२	सफेद करना	श्वित् श्वेत श्वेतते से.
८६८.	ञिमिदा स्नेहने ७४३	चिकना करना	मिद् मेद मेदते से.
८६९.	ञिष्विदा ७४४ स्नेहनमोचनयो:	चिकना करना, वश में करना	स्विद् स्वेद स्वेदते से.

इनमें संस्रु ध्वंसु, भ्रंसु, भ्रंशु, स्रंभु, स्यन्दू, ये धातु अनिदित् हैं।

भ्वादिगण का घटादि अन्तर्गण

घटादयो मित: - अब भ्वादिगण के घटादि अन्तर्गण के धातु दिये जा रहे हैं। ये धातु मित् कहलाते हैं।

मित् होने का फल आपको णिजन्त प्रक्रिया में दिखेगा। वहाँ णिच् प्रत्यय परे होने पर, जब इन धातुओं को वृद्धि होगी, तब **मितां ह्रस्व:** सूत्र से इन घटादि मित् धातुओं की उपधा को ह्रस्व हो जायेगा।

अत: हम इनके दो दो रूप दे रहे हैं। इनमें जो पहिला रूप है वह बिना णिच् लगाये है तथा जो दूसरा रूप है वह णिच् लगाने पर बना है।

इसका विस्तार णिजन्त प्रक्रिया में देखें। अब घटादि धातु दे रहे हैं -

घटादि अन्तर्गण के अदुपध धातु

८७०.	कखे हसने ७८४	हँसना	कख्	कख	कखति	कखयति	से.
८७१.	रगे शङ्कायाम् ७८५	शङ्का करना	रग्	रग	रगति	रगयति	से.
८७२.	लगे सङ्गे ७८६	लगना, चिपकना	लग्	लग	लगति	लगयति	से.
८७३.	ह्रगे ७८७	स्वीकार करना	ह्रग्	ह्रग	ह्रगति	ह्रगयति	से.

८७४.	ह्लगे ७८८	स्वीकार करना	ह्लग्	ह्लग	ह्लगति ह्लगयति	से.
८७५.	षगे ७८९	स्वीकार करना	सग्	सग	सगति सगयति	से.
८७६.	ष्टगे संवरणे ७९०	स्वीकार करना	स्तग्	स्तग	स्तगति स्तगयति	से.
८७७.	कगे नोच्यते ७९१	'कल' धातु के समान यह अनेकार्थक धातु है।	कग्	कग	कगति कगयति	से.
८७८.	घट चेष्टायाम् ७६३	होना, उचित होना, संभव होना	घट्	घट	घटते घटयति	से.
८७९.	व्यथ भयसञ्च - - लनयोः ७६४	पीड़ित होना भयभीत होना	व्यथ्	व्यथ	व्यथते व्यथयति	से.
८८०.	प्रथ प्रख्याने ७६५	प्रसिद्धि होना	प्रथ्	प्रथ	प्रथते प्रथयति	से.
८८१.	प्रस विस्तारे ७६६	विस्तृत होना	प्रस्	प्रस	प्रसते प्रसयति	से.
८८२	म्रद मर्दने ७६७	मसलना	म्रद्	म्रद	म्रदते म्रदयति	से.
८८३.	स्खद स्खदने ७६८	भागना	स्खद्	स्खद	स्खदते स्खदयति	से.
८८४.	दक्ष गतिहिंस - नयोः ७७०	जाना, हिंसा करना	दक्ष्	दक्ष	दक्षते दक्षयति	से.
८८५.	हेड वेष्टने ७७८	लपेटना,	हेड्	हेड	हेडति हेडयति	से.
८८६.	क्रप कृपायां गतौ च ७७१	जाना, दया करना	क्रप्	क्रप	क्रपते क्रपयति	से.
८८७.	ञित्वरा सम्भ्रमे ७७५	जल्दी करना	त्वर्	त्वर	त्वरते त्वरयति	से.
८८८.	ज्वर रोगे ७७६	ज्वर होना	ज्वर्	ज्वर	ज्वरति ज्वरयति	से.
८८९.	गड सेचने ७७७	गीला करना	गड्	गड	गडति गडयति	से.
८९०.	नट ७७९.	चाटुकारी करना,	नट्	नट	नटति नटयति	से.
८९१.	भट परिभाषणे ७८०	चाटुकारी करना कुत्ते का भौंकना	भट्	भट	भटति भटयति	से.
८९२.	णट नृतौ, गतौ, नतावित्येके ७८१	नाचना, अभिनय करना	नट्	नट	नटति नटयति	से.
८९३.	चक तृप्तौ ७८३	तृप्त होना	चक्	चक	चकति चकयति	से.
८९४	अक ७९२	टेढ़ा चलना	अक्	अक	अकति अकयति	से.
८९५.	अग कुटिलायां गतौ ७९३	टेढ़ा चलना क्रूरता करना	अग्	अग	अगति अगयति	से.
८९६.	कण ७९४	जाना	कण्	कण	कणति कणयति	से.

८९७.	रण गतौ ७९५	जाना	रण्	रण	रणति रणयति	से.
८९८	चण ७९६	जाना, देना	चण्	चण	चणति चणयति	से.
८९९.	शण ७९७	जाना, देना	शण्	शण	शणति शणयति	से.
९००.	श्रण दाने च शण गतावित्यन्ये ७९८	जाना, देना	श्रण्	श्रण	श्रणति श्रणयति	से.
९०१.	श्रथ ७९९	हिंसा करना	श्रथ्	श्रथ	श्रथति श्रथयति	से.
९०२.	श्लथ ८००	हिंसा करना	श्लथ्	श्लथ	श्लथति श्लथयति	से.
९०३.	क्रथ ८०१	हिंसा करना	क्रथ्	क्रथ	क्रथति क्रथयति	से.
९०४	क्लथ हिंसार्थाः ८०२	हिंसा करना	क्लथ्	क्लथ	क्लथति क्लथयति	से.
९०५.	वन च ८०३	हिंसा करना	वन्	वन	वनति वनयति	से.
९०६.	ज्वल दीप्तौ ८०४	चमकना, जलना	ज्वल्	ज्वल	ज्वलति ज्वलयति	से.
९०७.	ह्वल ८०५	हिलना, काँपना	ह्वल्	ह्वल	ह्वलति ह्वलयति	से.
९०८.	ह्मल चलने ८०६	हिलना, काँपना	ह्मल्	ह्मल	ह्मलति ह्मलयति	से.

घटादि अन्तर्गण के ऋदुपध धातु

९०९.	षृक प्रतिघाते ७८२	बदले में मारना	सृक्	सर्क्	सर्कति सर्कयति	से.

घटादि अन्तर्गण के शेष धातु

९१०.	क्षजि गतिदानयोः ७६९	गति करना, दान देना	क्षन्ज्	क्षञ्ज	क्षञ्जते क्षञ्जयति	से.
९११.	कदि ७७२	विकल होना, चिल्लाना, घबराना	कन्द्	कन्द	कन्दते कन्दयति	से.
९१२.	क्रदि ७७३	विकल होना, चिल्लाना	क्रन्द्	क्रन्द	क्रन्दते क्रन्दयति	से.
९१३.	क्लदि वैकल्ये इत्येके ७७४	विकल होना, चिल्लाना, घबराना	क्लन्द्	क्लन्द	क्लन्दते क्लन्दयति	से.

त्रयोऽप्यनिदित इति स्वामी, कदिक्रदी इदितौ, क्रद क्लद इति चानिदितौ इति मैत्रेयः। ये तीनों धातु अनिदित् हैं, ऐसा क्षीरस्वामी का मत है। कदि, क्रदि इदित् हैं तथा क्रद, क्लद् अनिदित् हैं ऐसा मैत्रेय का मत है।

अब वे धातु बतला रहे हैं, जो किसी अर्थ में मित् होते हैं तथा किसी अर्थ में मित् नहीं होते

९१४. स्मृ आध्याने ८०७ - जब इसका अर्थ आध्यान अर्थात् उत्कण्ठापूर्वक स्मरण करना होता है, तब यह धातु मित् होता है। तब इससे उपधा को ह्रस्व होकर

स्मरयति बनता है। चिन्ता अर्थ में यह धातु मित् नहीं होता, तब इससे स्मारयति बनता है।

९१५. ध्वन शब्दे ८१६ - भ्वादिगण में एक ध्वण धातु १३४, मूर्धन्यान्त पढ़ा गया है तथा भ्वादिगण के अन्तर्गण ज्वलादि में आने वाला एक ध्वन धातु ९३०, दन्त्यान्त पढ़ा जायेगा। इन दोनों धातुओं का अर्थ जब शब्द करना होता है, तभी ये मित् होते हैं। तब 'मितां ह्रस्वः' सूत्र से इनकी उपधा को ह्रस्व होकर ध्वनयति ऐसा रूप बनता है। अन्य अर्थों में ध्वानयति रूप बनता है।

गणसूत्र - दलि, वलि, स्खलि, रणि, ध्वनि, त्रपि, क्षपयश्चेति भोजः -

भोज के मत में ये धातु मित् हैं, अन्य के मत में नहीं। अतः भोज के मत में **'मितां ह्रस्वः'** सूत्र से उपधा को ह्रस्व होकर दलयति, वलयति, स्खलयति, रणयति, ध्वनयति, त्रपयति, क्षपयति, आदि रूप बनते हैं तथा अन्य के मत में मित् न होने पर दालयति, वालयति, स्खालयति, राणयति, ध्वानयति, त्रापयति, क्षापयति रूप बनते हैं।

९१६. स्वन अवतंसने ८१७ - 'अवतंसन = कर्णाभूषण बनाना' अर्थ में स्वन् धातु मित् होता है। तब मितां ह्रस्वः सूत्र से उपधा को ह्रस्व होकर स्वनयति रूप बनता है, अन्यत्र 'शब्द करना' आदि अर्थों में मित् न होने से, स्वानयति रूप बनता है।

९१७. चलि कम्पने ८१२ - जब इनका अर्थ 'कम्पन' होता है, जब इनका पाठ घटादिगण में होता है, तभी यह मित् होता है, अन्य अर्थों में नहीं।

अतः 'कम्पन' अर्थ में मितां ह्रस्वः सूत्र से उपधा को ह्रस्व होकर 'चलयति' तथा अन्य अर्थों में चालयति रूप बनता है।

९१८. लडि जिह्वोन्मथने ८१४ - जब इसका अर्थ 'लड़ना' होगा, तभी यह मित् होगा। तब उपधा को ह्रस्व होकर इसका रूप बनेगा लडयति, अन्यत्र बनेगा लाडयति।

९१९. यमोऽपरिवेषणे ८१९ - यह यम् धातु भ्वादिगण का है। जब इसका अर्थ 'परोसना' ऐसा होगा, तभी यह मित् होगा। तब मितां ह्रस्वः सूत्र से उपधा को ह्रस्व होकर इसका रूप बनेगा 'यमयति। अन्यत्र इसका रूप बनेगा आयामयति। वहाँ यह मित् नहीं होगा।

गणसूत्र - ज्वल, ह्वल, ह्मल, नमामनुपसर्गाद्वा - ये धातु उपसर्ग रहित होने पर विकल्प से मित् होते हैं। मित् होने पर 'मितां ह्रस्वः' सूत्र से उपधा को ह्रस्व होकर ज्वलयति रूप बनता है। मित् न होने पर ज्वालयति रूप बनता है।

इसी प्रकार ह्वलयति, ह्वालयति / ह्मलयति, ह्मालयति / नमयति, नामयति / ऐसे दो दो रूप बनते हैं।

विशेष - भ्वादिगण में अन्य गणों के धातु - ध्यान दें कि इस घटादि गण में बहुत से धातु भ्वादिगण में होकर भी भ्वादिगण के नहीं है। ये धातु घटादि गण में

शामिल होने के लिये अन्य गणों से यहाँ आ गये हैं। ये धातु इस प्रकार हैं -

९२०. **मदी हर्षग्लेपनयोः** ८१५ - यह धातु दिवादिगण का है। यहाँ घटादि गण में शामिल होने के लिये आया है। हर्ष और ग्लेपन अर्थ में ही यह मित् होता है। मित् होने पर णिच् लगने पर, **'मितां ह्रस्वः'** सूत्र से उपधा को ह्रस्व होकर इससे मदयति बनता है तथा अन्य चित्तविकार आदि अर्थों में मित् न होने से मादयति बनता है।

गणसूत्र -- जनी जॄष् क्नसु रञ्जोऽमन्ताश्च - जनी, जॄष्, क्नसु, रञ्ज्, ये धातु तथा जिन धातुओं के अन्त में 'अम्' हो, जैसे गम्, रम्, नम्, आदि धातु, ऐसे सारे धातु मित् होते हैं, अतः 'मितां ह्रस्वः' सूत्र से इनकी उपधा को ह्रस्व होकर जनयति, जरयति, क्नसयति, रञ्जयति, गमयति, रमयति, नमयति आदि रूप बनते हैं।

गणसूत्र - न कमि अमि चमाम् - कम्, अम्, आ + चम् धातु अमन्त होने पर भी मित् नहीं होते हैं अतः इन्हें 'मितां ह्रस्वः' सूत्र से ह्रस्व नहीं होता। अतः कामयति, आमयति, आचामयति रूप बनते हैं।

९२१. **शमो दर्शने** ८१८ - यह दिवादिगण का शम उपशमे धातु ही है। यह दर्शन अर्थ में मित् नहीं होता है। अतः दर्शन अर्थ में, इसे ह्रस्व न होकर निशामयति रूप बनेगा और उपशम अर्थ में मित् होता है, अतः वहाँ उपधा को ह्रस्व होकर शमयति रूप बनेगा। चुरादिगण का शम आलोचने धातु मित् नहीं होता। अतः उससे उपधा को ह्रस्व न होकर शामयति ही बनेगा।

९२२. **स्खदिर् अवपरिभ्यां च** ८२० - स्खदिर् धातु 'अव' या 'परि' उपसर्गों के साथ मित् नहीं होता, अतः इन उपसर्गों के साथ वहाँ अवस्खादयति, परिस्खादयति बनेगा। किन्तु उपसर्गरहित होने पर मित् होता है तो वहाँ उपधा को ह्रस्व होकर स्खदयति ही बनेगा।

९२३. **नॄ नये** ८०९ - यह धातु क्र्यादिगण का है। जब इसका अर्थ 'नय = प्राप्त कराना' होता है, तब इसका पाठ घटादिगण में होता है, तभी यह मित् होता है, अन्य अर्थों में यह मित् नहीं होता है, तो 'नय = प्राप्त कराना' अर्थ में उपधा को ह्रस्व होकर 'नरयति' बनेगा तथा अन्य अर्थों में नारयति बनेगा।

९२४. **दॄ भये** - ८०८ यह धातु क्र्यादिगण का है। जब इसका 'भय' अर्थ होता है, तब इसका पाठ घटादिगण में होता है, तभी यह मित् होता है, अन्य अर्थों में यह मित् नहीं होता है, तो 'भय' अर्थ में उपधा को ह्रस्व होकर 'दरयति' बनेगा तथा अन्य अर्थों में दारयति बनेगा।

९२५. **श्रा पाके** - ८१० एक श्रा धातु अदादिगण का है। एक भ्वादिगण के श्रै पाके धातु को भी आत्व होकर श्रा बन जाता है। जब इन दोनों धातुओं का अर्थ 'पाक' होता है, तभी इनका पाठ घटादिगण में होता है, तभी ये मित् होते हैं, अन्य अर्थों

में ये मित् नहीं होते हैं, तो 'पाक' अर्थ में मितां ह्रस्वः सूत्र से उपधा को ह्रस्व होकर 'श्रपयति' तथा अन्य अर्थों में श्रापयति बनेगा ।

९२६. **ज्ञा मारणतोषणनिशामनेषु** ८११ - एक ज्ञा अवबोधने धातु क्र्यादिगण का है तथा एक ज्ञा धातु चुरादिगण का है। जब इनका अर्थ 'मारण, तोषण, निशामन' होता है, तब इनका पाठ घटादिगण में होता है, तभी ये मित् होते हैं, अन्य अर्थों में ये मित् नहीं होते तो 'मारण, तोषण, निशामन' अर्थों में उपधा को ह्रस्व होकर 'ज्ञपयति' बनेगा तथा अन्य अर्थों में ज्ञापयति रूप बनेगा।

९२७. **छदिर् ऊर्जने** - ८१३ यह धातु चुरादिगण के 'युजादि अन्तर्गण' का है। जब इसका अर्थ बलवान् बनाना, ऐसा होगा, तभी यह मित् होगा। तब उपधा को ह्रस्व होकर इसका रूप बनेगा छदयति। जब इसका अर्थ ढाँकना ऐसा होगा, तब इसका रूप बनेगा - छादयति।

गणसूत्र - ग्लास्नावनुवमां च - ग्ला तथा वम् धातु भ्वादिगण के हैं। स्ना धातु अदादिगण का है। वन् धातु तनादिगण का है। ये धातु भी घटादिगण में होने के कारण मित् होते हैं। अतः मितां ह्रस्वः सूत्र से इनकी उपधा को ह्रस्व होकर इनसे ग्लपयति, स्नपयति, वनयति, वमयति रूप बनते हैं।

भ्वादिगण का फणादि अन्तर्गण

९२८.	फण गतौ ८२१	जाना, तेजोहीन करना	फण्	फण	फणति	से.
९२९.	स्वन ८२७	शब्द करना	स्वन्	स्वन	स्वनति	से.
९३०	ध्वन शब्दे ८२८	शब्द करना	ध्वन्	ध्वन्	ध्वनति	से.
९३१.	स्यमु ८२६	शब्द करना	स्यम्	स्यम	स्यमति	से.
९३२	राजृ दीप्तौ ८२२	चमकना	राज्	राज	राजति राजते	से.
९३३	टुभ्राजृ ८२३	चमकना प्रकाशित होना	भ्राज्	भ्राज	भ्राजते	से.
९३४	टुभ्राशृ ८२४	चमकना	भ्राश्	भ्राश	भ्राशते	से.
९३५.	टुभ्लाशृ दीप्तौ ८२५	चमकना	भ्लाश्	भ्लाश	भ्लाशते	से.

भ्वादिगण का ज्वलादि अन्तर्गण

अदुपध ज्वलादि धातु

९३६	ज्वल दीप्तौ ८३१	जलना	ज्वल्	ज्वल	ज्वलति	से.
९३७.	चल कम्पने ८३२	चलना, हिलना	चल्	चल	चलति	से.

९३८.	जल घातने ८३३	तेज, नुकीला होना	जल्	जल	जलति	से.
९३९.	टल ८३४	भयभीत होना	टल्	टल	टलति	से.
९४०.	ट्वल् वैक्लव्ये ८३५	विकल होना, डरना	ट्वल	ट्वल	ट्वलति	से.
९४१.	ष्ठल् स्थाने ८३६	स्थिर होना, थमना	स्थल्	स्थल	स्थलति	से.
९४२	हल विलेखने ८३७	खोदना,	हल्	हल	हलति	से.
९४३.	णल गन्धे बन्धन इत्येके ८३८	सूँघना, बाँधना, पास आना	नल्	नल	नलति	से.
९४४.	पल गतौ ८३९	जाना	पल्	पल	पलति	से.
९४५	बल प्राणने, धान्यावरोधने च ८४०	जीना, बलयुक्त होना, धान्य इकट्ठा करना	बल्	बल	बलति	से.
९४६.	शल गतौ ८४३	जल्दी करना	शल्	शल	शलति	से.
९४७.	क्षर सञ्चलने ८५१	टपकाना, झड़ना, ढहाना	क्षर्	क्षर	क्षरति	से.
९४८.	षह मर्षणे ८५२	सहना	सह्	सह	सहते	से.
९४९.	कस गतौ ८६०	खिलना, हिलना	कस्	कस	कसति	से.
९५०.	टुवम् उद्गिरणे ८४९	वमन करना	वम्	वम	वमति	से.
	भ्रमु चलने ८५०	घूमना	भ्रम्	भ्रम	भ्रमति	से.
	षद्लृ विशरण - गत्यवसादनेषु ८५४	शक्तिहीन होना सूखना, मुर्झाना, जाना	सद्	सीद	सीदति	अ.
	शदलृ शातने ८५५	जीर्ण होना,	शद्	शीय	शीयते	अ.
९५१.	रमु क्रीडायाम् ८५३	रमण करना, मन रमाना	रम्	रम	रमते	अ.
९५२.	पत्लृ गतौ ८४५	गिरना	पत्	पत	पतति	से.
९५३.	क्वथे निष्पाके ८४६	क्वथित होना, उबलना	क्वथ्	क्वथ	क्वथति	से.
९५४.	पथे गतौ ८४७	जाना	पथ्	पथ	पथति	से.
९५५.	मथे विलोडने ८४८	मथना	मथ्	मथ	मथति	से.

उदुपध ज्वलादि धातु

९५६.	पुल महत्वे ८४१	बढ़ना, ऊँचा होना	पुल्	पोल	पोलति	से.

९५७.	कुल संस्त्याने बन्धुषु च ८४२	बटोरना, बन्धुता से रहना	कुल	कोल	कोलति	से.
९५८.	हुल गतौ ८४४	जाना, ढाँकना	हुल्	होल	होलति	से.
९५९.	क्रुश आह्वाने रोदने च ८५६	चिल्लाना, रोना	क्रुश्	क्रोश	क्रोशति	अ.
९६०.	कुच सम्पर्चन - कौटिल्य - प्रतिष्टम्भ - विलेखनेषु ८५७	सम्पर्क करना, माँजना, टेढ़ा होना, रोकना, लिखना, कलह करना	कुच्	कोच	कोचति	से.
९६१.	बुध अवगमने ८५८	समझना	बुध्	बोध	बोधति	से.
९६२.	रुह बीजजन्मनि - प्रादुर्भावे च ८५९	ऊगना	रुह्	रोह	रोहति	अ.

भ्वादिगण का यजादि अन्तर्गण

९६३.	यज देवपूजा - सङ्गतिकरण - दानेषु १००२	यज्ञ करना अर्पण करना योग करना	यज्	यज	यजति यजते	अ.
९६४.	डुवप् बीजसन्ताने १००३	बोना	वप्	वप	वपति वपते	अ.
९६५.	वह प्रापणे १००४	ले जाना	वह्	वह	वहति वहते	अ.
९६६.	वस निवासे १००५	निवास करना	वस्	वस	वसति	अ.
९६७.	वद व्यक्तायां वाचि १००९	बोलना	वद्	वद	वदति	से.
	वेञ् तन्तु - सन्ताने १००६	बुनना	वे	वय	वयति वयते	अ.
	व्येञ् संवरणे १००७	ढाँकना	व्ये	व्यय	व्ययति व्ययते	अ.
	ह्वेञ् स्पर्धायाम् शब्दे च १००८	बुलाना, ललकारना	ह्वे	ह्वय	ह्वयति ह्वयते	अ.
	टुओश्वि गतिवृद्ध्योः १०१०	बढ़ना, फूलना	श्वि	श्वय	श्वयति	से.

भ्वादिगण के विशिष्ट तथा विकारी धातुओं का वर्ग

'शप्' परे होने पर, इन धातुओं की आकृति बदल जाती है अथवा 'शप्' के स्थान पर 'श्नु' आदि विकरण लग जाते हैं। इसका विस्तृत विवेचन भ्वादिगण के धातुरूप बनाने की विधि में है।

९६८.	पा पाने ९२५	पीना	पा	पिब	पिबति	अ.
९६९.	घ्रा गन्धोपादाने ९२६	सूँघना	घ्रा	जिघ्र	जिघ्रति	अ.
९७०.	ध्मा शब्दाग्नि - संयोगयो: ९२७	फूँकना	ध्मा	धम	धमति	अ.
९७१.	ष्ठा गतिनिवृतौ ९२८	ठहरना	स्था	तिष्ठ	तिष्ठति	अ.
९७२.	म्ना अभ्यासे ९२९	मानना	म्ना	मन	मनति	अ.
९७३.	दाण् दाने ९३०	देना	दा	यच्छ	यच्छति	अ.
९७४.	दृशिर् प्रेक्षणे ९८८	देखना	दृश्	पश्य	पश्यति	अ.
९७५	ॠ गतिप्रापणयो: ९३६	जाना, पहुँचना, प्राप्त करना	ॠ	ॠच्छ	ॠच्छति	अ.
९७६.	सृ गतौ ९३५	सरकना, दौड़ना	सृ	धौ	धावति	अ.
९७७	शद्लृ शातने ८५५	नष्ट होना	शद्	शीय	शीयते	अ.
९७८.	षद्लृ विशरण - गत्यवसादनेषु ८५४	जाना, शक्तिहीन होना,	सद्	सीद	सीदति	अ.
९७९	गुपू रक्षणे ३९५	रक्षा करना	गुप्	गोपाय	गोपायति	वे.
९८०.	धूप सन्तापे ३९६	तपाना	धूप	धूपाय	धूपायति	से.
९८१.	पण व्यवहारे स्तुतौ च ४३९	क्रय विक्रय करना, खेलना, स्तुति करना	पण्	पणाय	पणायति	से.
९८२.	पन च ४४०	स्तुति करना,	पन्	पनाय	पनायति	से.
	टुभ्राशृ ८२४	चमकना	भ्राश्	भ्राश भ्राश्य	भ्राशते भ्राश्यते	से.
	टुभ्लाशृ दीप्तौ ८२५	चमकना	भ्लाश्	भ्लाश भ्लाश्य	भ्लाशते भ्लाश्यते	से.
९८३.	भ्रमु चलने ८५०	घूमना	भ्रम्	भ्रम	भ्रमति भ्राम्यति	से.
९८४.	क्रमु पादविक्षेपे ४७३	चलना, पाद - विक्षेप करना	क्रम्	क्रम काम काम्य	क्रमते कामति काम्यति	से.

९८५	लष कान्तौ ८८८	चाहना	लष्	लष	लषति लषते	से.
				लष्य	लष्यति	
९८६.	यम उपरमे ९८४	निवृत होना	यम्	यच्छ	यच्छति	अ.
	गम्लृ गतौ ९८२	जाना	गम्	गच्छ	गच्छति	अ.
९८७.	गुहू संवरणे ८९६	छुपाना	गुह्	गूह	गूहति गूहते	से.

अब जो गुप् से लेकर शान् तक, सात धातु बतलाये जा रहे हैं, इनमें विकल्प से सन् प्रत्यय लगता है।

अत: एक बार सन् प्रत्यय लगाकर, उसके बाद शप् लगाया जाता है। ये धातु चुरादि में भी हैं, अत: एक बार णिच् लगाकर शप् लगाया जाता है।

इसका विस्तार, भ्वादिगण के रूप बनाने की विधि में देखें।

९८८.	गुप गोपने ९७०	रक्षा करना	गुप्	जुगुप्स गोपय	जुगुप्सते गोपयति	से.
९८९.	तिज निशाने ९७१	तेज करना	तिज्	तितिक्ष	तितिक्षते तेजयति	से.
९९०.	कित निवासे ९९३	रहना, चिकित्सा करना	कित्	चिकित्स	चिकित्सति केतयति	से.
९९१.	मान पूजायाम् ९७२	पूजा करना मीमांसा करना	मान्	मीमांस	मीमांसते मानयति	से.
९९२.	बध बन्धने ९७३	बाँधना	बध्	बीभत्स	बीभत्सते बाधयति	से.
९९३.	दान खण्डने ९९४	खण्डन करना	दान्	दीदांस	दीदांसति दीदांसते दानयति	से.
९९४.	शान तेजने ९९५	तेज करना	शान्	शीशांस	शीशांसति शीशांसते शानयति	से.

अब जो 'दंश्' से लेकर 'रञ्ज्' तक चार धातु बतलाये जा रहे हैं, शप् परे होने पर इनके 'न्' का लोप कीजिये। इसका विस्तार, भ्वादिगण के रूप बनाने की विधि में देखें।

९९५.	दंश दंशने ९८९	डंक मारना	दंश्	दश	दशति	अ.

९९६.	ष्वञ्ज परिष्वङ्गे ९७६	आलिङ्गन करना	स्वञ्ज्	स्वज	स्वजते	अ.
९९७.	षञ्ज सङ्गे ९८७	सङ्ग करना	सञ्ज्	सज	सजति	अ.
९९८.	रञ्ज रागे ९९९	रँगना, अनुरक्त करना	रञ्ज्	रज	रजति रजते	अ.

इन तीन धातुओं में शप् के स्थान पर 'श्नु' विकरण लगाइये -

९९९.	धिवि प्रीणने ५९३	प्रसन्न करना	धिन्व्	धिनु	धिनोति	से.
१०००.	कृवि हिंसा - करणयोश्च ५९८	हिंसा करना	कृण्व्	कृणु	कृणोति	से.
१००१.	श्रु श्रवणे ९४२	सुनना	श्रु	शृणु	शृणोति	अ.

अक्षू, तक्षू धातुओं में शप् के स्थान पर 'श्नु' विकरण विकल्प से लगाइये -

१००२.	अक्षू व्याप्तौ ६५४	व्याप्त करना	अक्ष्	अक्ष अक्ष्णु	अक्षति अक्ष्णोति	वे.
१००३.	तक्षू तनूकरणे ६५५	छीलना	तक्ष्	तक्ष तक्ष्णु	तक्षति तक्ष्णोति	वे.
१००४.	कृपू सामर्थ्ये ७६२	समर्थ होना	कल्प्	कल्प	कल्पते	वे.
१००५.	ष्ठिवु निरसने ५६०	थूकना	ष्ठिव्	ष्ठीव	ष्ठीवति	से.
१००६.	आ + चमु अदने ४६९	भोजन करना आचमन करना	आचम्	आचाम	आचामति	से.
१००७.	षस्ज गतौ २०२	सज्जित होना	सज्ज्	सज्ज	सज्जति	से.

(षस्ज् के 'स्' को 'स्तोः श्चुना श्चुः' सूत्र से 'श्चुत्व' करके 'झलां जश् झशि' सूत्र से जश्त्व हुआ है।)

१००८.	कमु कान्तौ ४४३	इच्छा करना, चाहना, कामना करना	कम्	कामय	कामयते	से.
१००९.	जभी गात्रविनामे ३८८	जमुहाई लेना	जभ्	जम्भ	जम्भते	से.
१०१०.	गाङ् गतौ ९५०	जाना	गा	गा	गाते	अ.

गाङ् धातु को वस्तुतः अदादिगण में होना चाहिये। भ्वादिगण में इसके होने का कोई प्रयोजन नहीं है।

इसके रूप अदादिगण के आकारान्त धातुओं के समान ही बनेंगे।

अदादि गण

अदिप्रभृतिभ्यः शपः -

सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर अदादिगण के सारे धातुओं से शप् विकरण लगाया

है किन्तु **'अदिप्रभृतिभ्यः शपः'** सूत्र से उस शप् का लुक् करके कर्त्रर्थक तिङ्, कृत् सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग बनाये जाते हैं।

अदादिगण के आकारान्त धातु

१०११.	या प्रापणे १०४९	प्राप्त होना, जाना, पहुँचना	या	या	याति	अ.
१०१२.	वा गति - गन्धनयोः १०५०	जाना, वायु का - बहना, पवन - जैसा चलना	वा	वा	वाति	अ.
१०१३.	भा दीप्तौ १०५०	चमकना, सुन्दर दिखना, फूँकना	भा	भा	भाति	अ.
१०१४.	ष्णा शौचे १०५२	नहाना, शुद्ध होना	स्ना	स्ना	स्नाति	अ.
१०१५.	श्रा पाके १०५३	पकाना, उबालना, पसीना निकलना	श्रा	श्रा	श्राति	अ.
१०१६.	द्रा कुत्सायाम् गतौ १०५४	लज्जित होना, भाग जाना,	द्रा	द्रा	द्राति	अ.
१०१७.	प्सा भक्षणे १०५५	भक्षण करना, संरक्षण करना	प्सा	प्सा	प्साति	अ.
१०१८.	पा रक्षणे १०५६	रक्षा करना, पालन करना	पा	पा	पाति	अ.
१०१९.	रा दाने १०५७	देना, मिल जाना	रा	रा	राति	अ.
१०२०.	ला आदाने १०५८	ग्रहण करना देना, दान देना	ला	ला	लाति	अ.
१०२१.	दाप् लवने १०५९	काटना, कुतरना	दा	दा	दाति	अ.
१०२२.	ख्या प्रकथने १०६०	प्रसिद्ध करना, व्याख्यान करना	ख्या	ख्या	ख्याति	अ.
१०२३.	प्रा पूरणे १०६१	भरना	प्रा	प्रा	प्राति	अ.
१०२४.	मा माने १०६२	मापना तौलना, समाना	मा	मा	माति	अ.
	दरिद्रा दुर्गतौ १०७३	दरिद्र होना, दुःखी होना, कृश होना	दरिद्रा	दरिद्रा	दरिद्राति	से.

अदादिगण के इकारान्त धातु

१०२५.	इण् गतौ १०४५	जाना	इ	इ	एति	अ.
१०२६.	इङ् अध्ययने नित्यमधिपूर्वः १०४६	अध्ययन करना, अभ्यास करना, सीखना, अध्ययन करना	इ	इ	अधीते	अ.
१०२७.	इक् स्मरणे १०४७	स्मरण करना, विचार करना	इ	इ	अध्येति	अ.

अदादिगण के ईकारान्त धातु

१०२८.	वी गतिव्याप्ति - प्रजनकान्त्यसन - खदनेषु १०४८	जाना, घेरना, आक्रमण करना, गर्भवती होना, इच्छा करना	वी		वेति	अ.
१०२९.	शीङ् स्वप्ने १०३२	शयन करना	शी	शी	शेते	से.

अदादिगण के उकारान्त ऊकारान्त धातु

१०३०.	यु मिश्रणेऽमिश्रणे च १०३३	मिश्रित करना,	यु	यु	यौति	से.
१०३१.	णु स्तुतौ १०३५	स्तुति करना, प्रशंसा करना	नु	नु	नौति	से.
१०३२.	टुक्षु शब्दे १०३६	छींकना, खखारना	क्षु	क्षु	क्षौति	से.
१०३३.	क्ष्णु तेजने १०३७	पैना करना,	क्ष्णु	क्ष्णु	क्ष्णौति	से.
१०३४.	ष्णु प्रस्रवणे १०३८	टपकना, चूना	स्नु	स्नु	स्नौति	से
१०३५.	द्यु अभिगमने १०४०	शत्रु पर आक्रमण करना, आगे जाना	द्यु	द्यु	द्यौति	अ.
१०३६.	षु प्रसवैश्वर्ययोः १०४१	उत्पन्न करना, अमानवीय पराक्रम होना	सु	सु	सौति	अ.
१०३७.	कु शब्दे १०४२	शब्द करना, बड़बड़ाना, भनभनाना	कु	कु	कौति	अ
१०३८.	ऊर्णुञ् आच्छादने १०३९	ढाँकना, आच्छादित करना	ऊर्णु	ऊर्णु	ऊर्णौति, ऊर्णोति ऊर्णुते	से.
१०३९.	रु शब्दे १०३४	शब्द करना	रु	रु	रौति,	से.

					रवीति	
१०४०.	ष्टुञ् स्तुतौ	प्रशंसा, स्तुति करना	स्तु	स्तु	स्तौति	अ.
	१०४३	पूजा करना,			स्तवीति	
१०४१.	ह्नुङ् अपनयने १०८२	छिपना	ह्नु	ह्नु	ह्नुते	अ.
१०४२.	ब्रूञ् व्यक्तायां	कहना, बोलना	ब्रू		ब्रवीति	से.
	वाचि १०४४				ब्रूते	
१०४३.	षूङ् प्राणिगर्भ -	जनना,	सू		सूते	से.
	विमोचने १०३१	गर्भ धारण करना,				
		उत्पन्न करना				

अदादिगण के ऋकारान्त धातु

	जागृ निद्राक्षये १०७२	जागना	जागृ	जागृ	जागर्ति	से.

अदादिगण के अदुपध धातु

१०४४	अद भक्षणे १०११	खाना, नष्ट करना	अद्	अद्	अत्ति	अ.
१०४५.	हन हिंसागत्योः	मार डालना,	हन्	हन्	हन्ति	अ.
	१०१२	प्राप्त करना, जाना				
१०४६.	वस आच्छादने	वस्त्र पहनना,	वस्	वस्	वस्ते	से.
	१०२३	ओढ़ना				
१०४७.	वच परिभाषणे	बोलना, समझाना,	वच्	वच्	वक्ति	अ.
	१०६३	पढ़ना, अध्ययन -				
		करना				
१०४८.	अस भुवि १०६५	होना, रहना	अस्	अस्	अस्ति	से.
१०४९.	षस स्वप्ने १०७८	सोना	सस्	सस्	सस्ति	से.
१०५०.	वश कान्तौ १०८०	इच्छा करना,	वश्	वश्	वष्टि	से.

अदादिगण के इदुपध धातु

१०५१.	द्विष अप्रीतौ	द्वेष करना,	द्विष्	द्विष्	द्वेष्टि	अ.
	१०१३	अपकार करना,			द्विष्टे	
१०५२.	दिह उपचये	बढ़ना, जमाना,	दिह्	दिह्	देग्धि	अ.
	१०१५	लीपना, पोतना			दिग्धे	
१०५३.	लिह आस्वादने १०१६	चाटना, चखना	लिह्	लिह्	लेढि	अ.
१०५४.	विद ज्ञाने १०६४	समझना,	विद्	विद्	वेत्ति	से.
		जानना				

अदादिगण के उदुपध धातु

१०५५. दुह प्रपूरणे १०१४	दूध निकालना, दुहना, रिक्त करना,	दुह्	दुह्	दोग्धि दुग्धे	अ.

अदादिगण के ऋदुपध धातु

१०५६. वृजी वर्जने १०२९	छोड़ना, वर्जित करना	वृज्	वृज्	वृक्ते	से.
१०५७. पृची सम्पर्चने १०३०	स्पर्श करना, छूना, संयोग करना	पृच्	पृच्	पृक्ते	से.
१०५८. मृजू शुद्धौ १०६६	धोना, सँवारना, स्वच्छ करना,	मृज्	मृज्	मार्ष्टि	वे.

अदादिगण के शेष धातु

१०५९. चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि १०१७	स्पष्ट बोलना	चक्ष्	चक्ष्	चष्टे	अ.
१०६०. ईर गतौ कम्पने च १०१८	जाना, काँपना, थरथराना	ईर्	ईर्	ईर्ते	से.
१०६१. ईड स्तुतौ १०१९	प्रशंसा करना स्तुति करना	ईड्	ईड्	ईट्टे	से.
१०६२. ईश ऐश्वर्ये १०२०	स्वामी होना	ईश्	ईश्	ईष्टे	से.
१०६३. आस [illegible]ेशने १०२१	बैठना, उपस्थित होना, जीना, विद्यमान होना	आस्	आस्	आस्ते	से.
१०६४. आङः शासु इच्छायाम् १०२२	आशा करना	आशास्	आशास्	आशास्ते	से.

अदादिगण के इदित् धातु

इन्हें इदितो नुम् धातोः सूत्र से नुम् का आगम कीजिये -

१०६५. कसि गति - शासनयो: १०२४	जाना, नष्ट करना आज्ञा करना	कंस्	कंस्	कंस्ते	से.
१०६६. णिसि चुम्बने १०२५	चूमना	निंस्	निंस्	निंस्ते	से.
१०६७ णिजि शुद्धौ १०२६	स्वच्छ करना, निर्मल करना	निंज्	निंज्	निङ्क्ते	से.
१०६८. शिजि अव्यक्ते	अस्पष्ट शब्द	शिंज्	शिंज्	शिङ्क्ते	से.

शब्दे १०२७	बोलना, झुनझुनाना			
१०६९. पिजि वर्णे सम्पर्चन इत्येके १०२८	रँगना, चमकीला करना, घुँघरुओं का शब्द होना	पिंज्	पिंज्	पिङ्क्ते से.
१०७०. षस्ति स्वप्ने १०७९	सोना	संस्त्	संस्त्	संस्ति से.
१०७१. चर्करीतं च (गणसूत्र)	यह यङ्लुक् की संज्ञा है।			

अदादि गण का अन्तर्गण रुदादि गण

१०७२. रुदिर् अश्रुविमोचने १०६७	रोना	रुद्	रुद्	रोदिति से.
१०७३. ञिष्वप् शये १०६८	सोना	स्वप्	स्वप्	स्वपिति अ.
१०७४. श्वस प्राणने १०६९	श्वास लेना	श्वस्	श्वस्	श्वसिति से.
१०७५. अन च १०७०	जीवित रहना	अन्	अन्	अनिति से.
१०७६ जक्ष भक्षहसनयोः १०७१	खाना, हँसना	जक्ष्	जक्ष्	जक्षिति से.

विशेष - जक्ष धातु जक्षादिगण तथा रुदादिगण, दोनों में है।

अदादि गण का अन्तर्गण जक्षादि गण

जक्ष भक्ष - हसनयोः १०७१	खाना, हँसना	जक्ष्	जक्ष्	जक्षिति से.
१०७७. दरिद्रा दुर्गतौ १०७३	दरिद्र होना, दुःखी होना, कृश होना	दरिद्रा	दरिद्रा	दरिद्राति से.
१०७८. दीधीङ् दीप्तिदेवनयोः १०७६	चमकना, पीड़ा करना	दीधी	दीधी	दीधीते से.
१०७९. वेवीङ् वेतिना तुल्ये १०७७	जाना, सरकना, व्याप्त होना, इच्छा करना	वेवी	वेवी	वेवीते से.
१०८० जागृ निद्राक्षये १०७२	जागना, नींद न लेना	जागृ	जागृ	जागर्ति से.
१०८१. चकासृ दीप्तौ १०७४	चमकना	चकास्	चकास्	चकास्ति से.
१०८२. शासु अनुशिष्टौ १०७५	आज्ञा देना, शासन करना,	शास्	शास्	शास्ति से.

जुहोत्यादि गण

सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर जुहोत्यादिगण के सारे धातुओं से **'कर्तरि शप्'** सूत्र से शप् विकरण लगाया है किन्तु **'जुहोत्यादिभ्यः श्लुः'** सूत्र से उसका श्लु (लोप) हो जाता है। उसके बाद **'श्लौ'** सूत्र से धातु को द्वित्व होता है।

द्वित्व करने की विधि जुहोत्यादिगण के धातुरूप बनाते समय दी गई है। उसी विधि से द्वित्व करके यहाँ कर्त्रर्थक तिङ्, कृत् सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग बनाये गये हैं।

जुहोत्यादिगण के आकारान्त धातु

१०८३.	माङ् माने शब्दे च १०८८	नापना, तौलना, समाना	मा	मिमा	मिमीते	अ.
१०८४.	ओहाङ् गतौ १०८९	जाना, चलना	हा	जिहा	जिहीते	अ.
१०८५.	ओहाक् त्यागे १०९०	छोड़ना, परित्याग करना	हा	जहा	जहाति	अ.
१०८६.	डुदाञ् दाने १०९१	देना, सौंपना, लौटाना, रखना	दा	ददा	ददाति दत्ते	अ.
१०८७.	डुधाञ् धारण - पोषणयोः १०९२	धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, देना, पास रखना	धा	दधा	दधाति धत्ते	अ.
१०८८.	गा स्तुतौ ११०६	प्रशंसा करना, सराहना	गा	जिगा	जिगाति	अ.

जुहोत्यादिगण के इकारान्त, ईकारान्त धातु

१०८९.	कि ज्ञाने ११०१ **(यह धातु छान्दस है।)**	जाना, समझना	कि	चिकि	चिकेति	अ.
१०९०.	ञिभी भये १०८४	डरना, घबराना	भी	बिभी	बिभेति	अ.
१०९१.	ह्री लज्जायाम् १०८५	शरमाना, लज्जित होना	ह्री	जिह्री	जिह्रेति	अ.

जुहोत्यादिगण के उकारान्त धातु

१०९२.	हु दानादानयोः १०८३	देना, यज्ञ करना, खाना	हु	जुहु	जुहोति	अ.

जुहोत्यादिगण के ऋकारान्त, ॠकारान्त धातु

१०९३	डुभृञ् धारण	धारण करना,	भृ	बिभृ	बिभर्ति	अ.

	पोषणयो: १०८७	पोषण करना			बिभृते	
१०९४.	पॄ पालनपूरणयो: १०८६	पालन पोषण करना, पूर्ण करना	पॄ	पिपॄ	पिपर्ति	से.
१०९५.	सृ गतौ १०९९	जाना, सरकना	सृ	ससृ	ससर्ति	अ.
१०९६.	घृ क्षरणदीप्त्यो: १०९६	टपकना, चमकना	घृ	जिघृ	जिघर्ति	अ.
१०९७.	हृ प्रसह्यकरणे १०९७	बल प्रयोग करना	हृ	जिहृ	जिहर्ति	अ.
१०९८.	ऋ गतौ १०९८	जाना, फैलना	ऋ	इऋ	इयर्ति	अ.

(इनमें से सृ, घृ, हृ, धातु छान्दस हैं। ऋ धातु लोक तथा वेद दोनों में प्रयुक्त होता है।)

भृञादि धातु

डुभृञ्, माङ् तथा ओहाङ्, ये तीन धातु भृञादि धातु कहलाते हैं। इनके अभ्यास को **भृञामित्** सूत्र से 'इ' हो जाता है। ऋ, पॄ के अभ्यास को **अर्तिपिपर्त्योश्च** सूत्र से इ हो जाता है। घृ, हृ धातु छान्दस हैं। इनके अभ्यास को **बाहुलकात्** 'इ' हो जाता है।

जुहोत्यादिगण के अदुपध धातु

१०९९.	भस भर्त्सन - दीप्त्यो: ११००	चमकना, दोष लगाना	भस्	बभस्	बभस्ति	से.
११००.	धन धान्ये ११०४	उत्पन्न होना, फलना, बौर लगना	धन्	दधन्	दधन्ति	से.
११०१.	जन जनने ११०५	उत्पन्न होना,	जन्	जजन्	जजन्ति	से.

जुहोत्यादिगण के इदुपध धातु

११०२.	धिष शब्दे ११०३	शब्द करना	धिष्	दिधिष्	दिधेष्टि	से.

(भस से धिष तक धातु छान्दस हैं।)

निजादि धातु

णिजिर्, विजिर् और विष्लृ ये तीन धातु निजादि धातु कहलाते हैं। इनके अभ्यास को **'निजां त्रयाणां गुण: श्लौ'** सूत्र से गुण हो जाता है।

११०३.	णिजिर् (शौच - पोषणयो:) १०९३	स्वच्छ करना, शुद्ध करना, पालना	निज्	नेनिज्	नेनेक्ति नेनिक्ते	अ.
११०४.	विजिर् पृथग्भावे १०९४	अलग करना, विवेक करना	विज्	वेविज्	वेवेक्ति वेविक्ते	अ.

११०५.	विष्लृ व्याप्तौ १०९५	व्यापना, फैलना प्रसृत होना	विष्	वेविष्	वेवेष्टि वेविष्टे	अ.

जुहोत्यादिगण के उदुपध धातु

११०६.	तुर त्वरणे ११०२	जल्दी करना	तुर्	तुतुर्	तुतोर्ति	से.

(तुर धातु छान्दस है।)

दिवादिगण

दिवादिभ्यः श्यन् - सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर दिवादिगण के धातुओं से श्यन् विकरण लगाया जाता है। अतः दिवादिगण के धातुओं में श्यन् विकरण लगाकर कर्त्रर्थक तिङ्, कृत् सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग बनाये गये हैं।

दिवादिगण का अन्तर्गण पुषादि गण

श्यन् परे होने पर, इन धातुओं को कुछ मत कीजिये।

पुषादिगण के अदुपध धातु

११०७.	शक विभाषितो मर्षणे ११८७	सहना	शक्	शक्य	शक्यति शक्यते	अ.
११०८.	असु क्षेपणे १२०९	फेंकना बाण चलाना	अस्	अस्य	अस्यति	से.
११०९.	जसु मोक्षणे १२११	छोड़ना, मुक्त करना	जस्	जस्य	जस्यति	से.
१११०.	तसु उपक्षये १२१२	कुम्हलाना, खोदना, उड़ना	तस्	तस्य	तस्यति	से.
११११.	दसु उपक्षये १२१३	नष्ट होना, नष्ट करना	दस्	दस्य	दस्यति	से.
१११२	वसु स्तम्भे १२१४ भसु इत्यपि केचित्	निश्चल होना	वस्	वस्य	वस्यति	से.
१११३.	मसी परिणामे १२२१	विकृत होना	मस्	मस्य	मस्यति	से.
१११४.	णभ १२४०	मार डालना	नभ्	नभ्य	नभ्यति	से.

पुषादिगण के इदुपध धातु

१११५.	श्लिष आलिङ्गने ११८६	आलिङ्गन करना, गले लगाना	श्लिष्	श्लिष्य	श्लिष्यति	अ.
१११६.	ष्विदा गात्र - प्रक्षरणे ११८८	पसीना - छूटना	स्विद्	स्विद्य	स्विद्यति	अ.

	ञिष्विदा इत्येके					
१११७.	षिधु संसिद्धौ ११९२	सिद्ध होना, पूर्ण होना, समाप्त होना	सिध्	सिध्य	सिध्यति	अ.
१११८.	बिस प्रेरणे १२१७	फेंकना, उड़ना	बिस्	बिस्य	बिस्यति	से.
१११९.	रिष हिंसायाम् १२३१	मार डालना, कम होना	रिष्	रिष्य	रिष्यति	से.
११२०.	डिप क्षेपे १२३२	भेजना, निन्दा करना	डिप्	डिप्य	डिप्यति	से.
११२१.	क्लिदू आर्द्रीभावे १२४२	गीला करना	क्लिद्	क्लिद्य	क्लिद्यति	वे.
११२२.	ञिमिदा स्नेहने १२४३	पिघलना, स्निग्ध होना	मिद्	मेद्य	मेद्यति	अ.
११२३.	ञिक्ष्विदा स्नेहन - मोचनयो: १२४४	नहाना, मुक्त करना	क्ष्विद्	क्ष्विद्य	क्ष्विद्यति	अ.

पुषादिगण के उदुपध धातु

११२४.	पुष पुष्टौ ११८२	पुष्ट होना, बढ़ाना	पुष्	पुष्य	पुष्यति	से.
११२५.	शुष शोषणे ११८३	सूखना	शुष्	शुष्य	शुष्यति	से.
११२६.	तुष प्रीतौ ११८४	संतुष्ट होना, खुश होना	तुष्	तुष्य	तुष्यति	अ.
११२७.	दुष वैकृत्ये ११८५	दूषित होना, दुष्टाचरण करना	दुष्	दुष्य	दुष्यति	अ.
११२८.	क्रुध क्रोधे कोधे ११८९	क्रोध करना	क्रुध्	क्रुध्य	क्रुध्यति	अ.
११२९.	क्षुध बुभुक्षा - याम् ११९०	भूखा होना	क्षुध्	क्षुध्य	क्षुध्यति	अ.
११३०.	शुध शौचे ११९१	शुद्ध होना, पवित्र होना	शुध्	शुध्य	शुध्यति	अ.
११३१.	व्युष विभागे १२१५ व्युस इत्यन्ये	विभाग करना	व्युष्	व्युष्य	व्युष्यति	से.
११३२.	प्लुष दाहे १२१६	जलाना, भूँजना	प्लुष्	प्लुष्य	प्लुष्यति	से.
११३३.	बुस उत्सर्गे १२१९	छोड़ना, त्यागना	बुस्	बुस्य	बुस्यति	से.
११३४.	मुस खण्डने १२२०	टुकड़े करना, चीरना	मुस्	मुस्य	मुस्यति	से.

११३५.	लुट विलोडने १२२२	लोटना, काँपना, हिलना	लुट्	लुट्य	लुट्यति	से.
११३६.	उच समवाये १२२३	इकट्ठा करना	उच्	उच्य	उच्यति	से.
११३७.	रुष हिंसायाम् १२३०	मार डालना	रुष्	रुष्य	रुष्यति	से.
११३८.	कुप क्रोधे १२३३	क्रोध करना	कुप्	कुप्य	कुप्यति	से.
११३९.	गुप व्याकुलत्वे १२३४	व्याकुल होना	गुप्	गुप्य	गुप्यति	से.
११४०.	युप १२३५	चित्त विकल होना	युप्	युप्य	युप्यति	से.
११४१.	रुप १२३६	चित्त विकल होना	रुप्	रुप्य	रुप्यति	से.
११४२	लुप विमोहने १२३७ (ष्टुप समुच्छ्राये)	चित्त विकल होना	लुप्	लुप्य	लुप्यति	से.
११४३.	लुभ गार्ध्ये १२३८	लोभ करना	लुभ्	लुभ्य	लुभ्यति	से.
११४४.	क्षुभ सञ्चलने १२३९	क्षुब्ध करना	क्षुभ्	क्षुभ्य	क्षुभ्यति	से.
११४५.	तुभ हिंसायाम् १२४१	मार डालना	तुभ्	तुभ्य	तुभ्यति	से.

पुषादिगण के ऋदुपध धातु

११४६.	भृशु अधःपतने १२२४	पतित होना,	भृश्	भृश्य	भृश्यति	से.
११४७.	वृश वरणे १२२६	पसन्द करना, बढ़ना	वृश्	वृश्य	वृश्यति	से.
११४८.	कृश तनूकरणे १२२७	दुबला होना	कृश्	कृश्य	कृश्यति	से.
११४९.	ञितृषा पिपासायाम् १२२८	प्यासा होना, लालच करना	तृष्	तृष्य	तृष्यति	से.
११५०.	हृष तुष्टौ १२२९	प्रसन्न होना	हृष्	हृष्य	हृष्यति	से.
११५१.	ऋधु वृद्धौ १२४५	बढ़ना	ऋध्	ऋध्य	ऋध्यति	से.
११५२.	गृधु अभिकाङ्क्षायाम् १२४६	लालच करना	गृध्	गृध्य	गृध्यति	से.

पुषादिगण के अनिदित् धातु

श्यन् परे होने पर, इन धातुओं की उपधा के 'न्' का 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' सूत्र से लोप कीजिये।

कुंस संश्लेषणे १२१८	मिलना, घेरना	कुंस्	कुस्य	कुस्यति	से.
भ्रंशु अधः - पतने १२२५	भ्रष्ट होना, पतित होना	भ्रंश्	भ्रश्य	भ्रश्यति	से.

पुषादि अन्तर्गण का शमादि अन्तर्गण

श्यन् परे होने पर, इन शमादि धातुओं को 'शमामष्टानां दीर्घः श्यनि' सूत्र

से दीर्घ कीजिये।

११५३. शमु उपशमे १२०१	शान्त करना, शान्त होना, स्वस्थ होना	शम्	शाम्य	शाम्यति	से.
११५४. तमु काङ्-क्षायाम् १२०२	इच्छा करना, चाहना, मानसिक, शारीरिक व्यथा से दुःखी होना, मुरझाना	तम्	ताम्य	ताम्यति	से.
११५५. दमु उपशमे १२०३	शान्त करना, दमन करना, स्वाधीन करना, सुलह करना	दम्	दाम्य	दाम्यति	से.
११५६. श्रमु तपसि - खेदे च १२०४	चमकना, दुःखी होना, व्रत करना, चान्द्रायणादि प्रायश्चित्त करना, थकना	श्रम्	श्राम्य	श्राम्यति	से.
११५७. भ्रमु अनव - स्थाने १२०५	अस्थिर होना, भ्रमण करना, भ्रान्त होना	भ्रम्	भ्राम्य	भ्राम्यति	से.
११५८. क्षमू सहने १२०६	क्षमा करना, सहना	क्षम्	क्षाम्य	क्षाम्यति	वे.
११५९. क्लमु ग्लानौ १२०७	मुरझाना	क्लम्	क्लाम्य	क्लाम्यति	से.
११६०. मदी हर्षे १२०८	हृष्ट होना	मद्	माद्य	माद्यति	से.

पुषादि अन्तर्गण का रधादि अन्तर्गण

श्यन् परे होने पर, इन धातुओं को कुछ मत कीजिये। रधादिगण का फल यह है कि रधादिगण के धातु 'रधादिभ्यश्च' सूत्र से वेट् होते हैं।

११६१. रध हिंसासंराद्ध्योः ११९३	पूरा करना, निष्पन्न करना	रध्	रध्य	रध्यति	वे.
११६२. णश अदर्शने ११९४	नष्ट होना, छुपना	नश्	नश्य	नश्यति	वे.
११६३. तृप् प्रीणने ११९५	प्रसन्न होना, तृप्त होना	तृप्	तृप्य	तृप्यति	वे.
११६४. दृप हर्षमोहनयोः ११९६	प्रसन्न होना, मोहित होना, गर्वित होना	दृप्	दृप्य	दृप्यति	वे.

११६५.	द्रुह जिघांसायाम् ११९७	द्वेष करना, मारने के लिए प्रयत्न करना, द्रोह करना	द्रुह्	द्रुह्य	द्रुह्यति	वे.
११६६.	मुह वैचित्ये ११९८	पागल होना, बुद्धि भ्रष्ट होना	मुह्	मुह्य	मुह्यति	वे.
११६७.	ष्णुह उद्गिरणे गरणे ११९९	उल्टी करना, रद्द करना, उगलना	स्नुह्	स्नुह्य	स्नुह्यति	वे.
११६८.	ष्णिह प्रीतौ १२००	स्नेह करना प्रीति करना, मित्रता करना, स्निग्ध होना	स्निह्	स्निह्य	स्निह्यति	वे.

यहाँ पुषादि अन्तर्गण के धातु समाप्त हुए। अब पुषादि अन्तर्गण से बचे हुए, दिवादिगण के धातु बतलाये जा रहे हैं।

इन्हें हम इस प्रकार वर्गीकरण करके पढ़ें -

दिवादिगण के सम्प्रसारणी धातु

श्यन् परे होने पर, इसे 'ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च' सूत्र से सम्प्रसारण कीजिये।

११६९.	व्यध ताडने ११८१	मारना, पीटना दु:ख देना, छेदना, पीड़ा देना	व्यध्	विध्य	विध्यति	अ.

दिवादिगण के जन्, यस् धातु

श्यन् परे होने पर, जन् धातु को 'ज्ञाजनोर्जा' सूत्र से 'जा' आदेश कीजिये।

११७०.	जनी प्रादुर्भावे ११४९	उत्पन्न होना	जन्	जाय	जायते	से.

'यसोऽनुपसर्गात्' अनुपसर्ग यस् धातु से विकल्प से शप् तथा श्यन् विकरण होते हैं।

११७१.	यसु प्रयत्ने १२१०	यत्न करना	यस्	यस्य / यस	यस्यति / यसति	से.

दिवादिगण के ओदित् धातु

स्वादय ओदित: - **'षूङ् प्राणिप्रसवे ११६९' से लेकर 'व्रीङ् वृणोत्यर्थे ११७७'** तक के धातु स्वादि धातु हैं। इनमें 'ओ' की इत् संज्ञा नहीं हुई है। तब भी ये धातु 'ओदित् धातु' कहलाते हैं। इनके आदित् होने का फल कृदन्त में मिलेगा। वहाँ इन 'ओदित्' धातुओं से परे आने वाले 'निष्ठा' प्रत्यय के 'त' को 'ओदितश्च' सूत्र से 'न'

हो जागा। यहाँ श्यन् परे होने पर, इन धातुओं को कुछ मत कीजिये।

११७२.	षूङ् प्राणिप्रसवे ११३२	गर्भ धारण करना, जनना, उत्पन्न करना	सू	सूय	सूयते	से.
११७३.	दूङ् परितापे ११३३	दुःख से जर्जर होना, दुःखी होना	दू	दूय	दूयते	से.
११७४.	दीङ् क्षये ११३४	ह्रास होना, झरना	दी	दीय	दीयते	अ.
११७५.	डीङ् विहायसा गतौ ११३५	उड़ना	डी	डीय	डीयते	से.
११७६.	धीङ् आधारे ११३६	धारण करना	धी	धीय	धीयते	अ.
११७७.	मीङ् हिंसायाम् ११३७	मरना, देहत्याग करना	मी	मीय	मीयते	अ.
११७८.	रीङ् स्रवणे ११३८	टपकना, चूना, झरना, गिरना	री	रीय	रीयते	अ.
११७९.	लीङ् श्लेषणे ११३९	लीन होना	ली	लीय	लीयते	अ.
११८०.	व्रीङ् वृणोत्यर्थे ११४०	ढूँढकर निकालना, ढाँकना, बीनना	व्री	व्रीय	व्रीयते	अ.

दिवादिगण के वकारान्त इगुपध धातु

श्यन् परे होने पर इन वकारान्त धातुओं की उपधा के इ को 'हलि च' सूत्र से दीर्घ कीजिये।

११८१.	दिवु क्रीडाविजि - गीषाव्यवहार - द्युतिस्तुतिमोद - मदस्वप्नकान्ति- गतिषु ११०७	लेना, खेलना, व्यापार करना, जीतने की इच्छा करना, तेजस्वी होना, प्रशंसा करना, प्रसन्न होना, सोना, भूलना, चाहना, जाना	दिव्	दीव्य	दीव्यति	से.
११८२.	षिवु तन्तु - सन्ताने ११०८	सीना, बोना, रोपना	सिव्	सीव्य	सीव्यति	से.
११८३.	स्रिवु गतिशोष - -णयोः ११०९	सूखना, जाना सरकना	स्रिव्	स्रीव्य	स्रीव्यति	से.
११८४.	ष्ठिवु निरसने १११०	थूकना	ष्ठिव्	ष्ठीव्य	ष्ठीव्यति	से.

दिवादिगण के अनिदित् धातु

श्यन् परे होने पर 'अनिदितां हल उपधाया: क्ङिति' सूत्र से इनकी उपधा के न् का लोप कीजिये।

११८५.	रञ्ज रागे ११६७	रँगना	रञ्ज्	रज्य	रज्यति रज्यते	अ.
११८६.	कुंस संश्लेषणे १२१८	मिलना, घेरना	कुंस्	कुस्य	कुस्यति	से.
११८७.	भ्रंशु अध: - पतने १२२५	भ्रष्ट होना, पतित होना	भ्रंश्	भ्रश्य	भ्रश्यति	से.

अन्तर्गणों से बचे हुए दिवादिगण के धातु

आकारान्त धातु

इन्हें श्यन् परे होने पर, कुछ मत कीजिये।

११८८.	माङ् माने ११४२	नापना, तौलना समाना	मा	माय	मायते	अ.

ईकारान्त धातु

११८९.	पीङ् पाने ११४१	पीना	पी	पीय	पीयते	अ.
११९०.	ईङ् गतौ ११४३	जाना	ई	ईय	ईयते	अ.
११९१.	प्रीङ् प्रीतौ ११४४	प्रसन्न होना	प्री	प्रीय	प्रीयते	अ.

ॠकारान्त धातु

श्यन् परे होने पर ॠ को 'ॠत इद् धातो:' सूत्र से इर् बनाकर, उसे 'हलि च' सूत्र से दीर्घ कीजिये।

११९२.	जॄष् ११३०	वृद्ध होना, नष्ट होना, जीर्ण होना, झरना	जॄ	जीर्य	जीर्यति	से.
११९३.	झॄष् वयोहानौ ११३१	वृद्ध होना, नष्ट होना, जीर्ण होना, झरना	झॄ	झीर्य	झीर्यति	से.

ओकारान्त धातु

श्यन् परे होने पर इन धातुओं के अन्तिम ओ का **'ओत: श्यनि'** सूत्र से लोप होता है।

११९४.	शो तनूकरणे ११४५	तीक्ष्ण करना	शो	श्य	श्यति	अ.
११९५.	छो छेदने ११४६	कतरना, छाँटना	छो	छ्य	छ्यति	अ.
११९६.	षो अन्तकर्मणि ११४७	समाप्त करना	सो	स्य	स्यति	अ.
११९७.	दो अवखण्डने	कतरना,	दो	द्य	द्यति	अ.

	११४८	विभाग करना				

अदुपध धातु

११९८.	ष्णसु निरसने १११२	थूकना	स्नस्	स्नस्य	स्नस्यति	से.
११९९.	क्नसु ह्वरण - दीप्त्योः १११३	चमकना, कुटिलता करना	क्नस्	क्नस्य	क्नस्यति	से.
१२००.	त्रसी उद्वेगे १११७	डरना, घबराना	त्रस्	त्रस्य	त्रस्यति	से.
१२०१.	षह चक्यर्थे ११२८	तृप्त होना, प्रसन्न होना, सहना	सह्	सह्य	सह्यति	से.
१२०२.	तप दाहे ऐश्वर्ये वा ११५९	तप्त होना, जलना, जलाना तप्त करना, ऐश्वर्यवान् - होना, मन में जलना	तप्	तप्य	तप्यते	अ.
१२०३.	णह बन्धने ११६६	बाँधना, अड़ाना, फँसाना	नह्	नह्य	नह्यति नह्यते	अ.
१२०४.	शप आक्रोशे ११६८	सौगन्ध करना, शाप देना	शप्	शप्य	शप्यति शप्यते	अ.
१२०५.	पद गतौ ११६९	स्थानान्तर करना	पद्	पद्य	पद्यते	अ.
१२०६.	अण प्राणने अन इत्येके ११७५	जीवित रहना	अण्	अण्य	अण्यते	से.
१२०७.	मन ज्ञाने ११७६	जानना, समझना मान्य करना	मन्	मन्य	मन्यते	अ.

इदुपध धातु

१२०८.	क्षिप प्रेरणे ११२१	फेंकना	क्षिप्	क्षिप्य	क्षिप्यति	अ
१२०९.	तिम आर्द्रीभावे ११२३	आर्द्र होना, छिपना	तिम	तिम्य	तिम्यति	से.
१२१०.	ष्टिम ११२४	गीला होना, भाप बनना	स्तिम्	स्तिम्य	स्तिम्यति	से.
१२११.	इष गतौ ११२७	भेजना, प्रेरित करना, लज्जित होना, शरमाना	इष्	इष्य	इष्यति	से.
१२१२.	क्लिश उपतापे ११६१	क्लेश पाना दुःखी होना	क्लिश्	क्लिश्य	क्लिश्यते	से.

१२१३.	खिद दैन्ये ११७०	दु:खी होना,	खिद्	खिद्य	खिद्यते	अ.
१२१४.	विद सत्तायाम् ११७१	जीना, रहना, विद्यमान रहना	विद्	विद्य	विद्यते	अ.
१२१५.	लिश अल्पीभावे ११७९	कम करना	लिश्	लिश्य	लिश्यते	अ.

उदुपध धातु

१२१६.	ष्णुसु अदने आदान इत्येके अदर्शन इत्यपरे ११११	खाना, निगलना अदृश्य होना, थूकना, ग्रहण करना, लेना	स्नुस्	स्नुस्य	स्नुस्यति	से.
१२१७.	व्युष दाहे १११४	जलाना, भूँजना, अलग करना	व्युष्	व्युष्य	व्युष्यति	से.
१२१८.	प्लुष च १११५	जलना	प्लुष्	प्लुष्य	प्लुष्यति	से.
१२१९.	कुथ पूतीभावे १११८	बदबू आना	कुथ्	कुथ्य	कुथ्यति	से.
१२२०.	पुथ हिंसायाम् १११९	दु:ख देना, मार डालना	पुथ्	पुथ्य	पुथ्यति	से.
१२२१.	गुध परिवेष्टने ११२०	घेरना	गुध्	गुध्य	गुध्यति	से.
१२२२	षुह चक्यर्थे ११२९	तृप्त होना, प्रसन्न होना, सहना, प्रतिरोध करना, पराक्रमी, समर्थ होना	सुह्	सुह्य	सुह्यति	से.
१२२३.	शुचिर् पूतीभावे ११६५	शुद्ध होना,	शुच्	शुच्य	शुच्यति शुच्यते	से.
१२२४.	बुध अवगमने ११७२	समझना	बुध्	बुध्य	बुध्यते	अ.
१२२५.	युध संप्रहारे ११७३	लड़ना	युध्	युध्य	युध्यते	अ.
१२२६.	अनोरुध कामे ११७४	दया करना अनुमोदन करना	अनुरुध्	अनुरुध्य	अनुरुध्यते	अ.
१२२७.	युज् समाधौ ११७७	उचित होना	युज्	युज्य	युज्यते	अ.

ऋदुपध धातु

१२२८.	नृती गात्र - विक्षेपे १११६	नृत्य करना	नृत्	नृत्य	नृत्यति	से.
१२२९.	वृतु वरणे वावृतु इति केचित्	पसन्द करना, ठहराना, सेवा	वृत्	वृत्य	वृत्यते	से.

	११६०	करना, निश्चित करना				
१२३०.	मृष तितिक्षा - याम् ११६४	सहना	मृष्	मृष्य	मृष्यति मृष्यते	से.
१२३१.	सृज विसर्गे ११७८	छोड़ना बनाना, रचना	सृज्	सृज्य	सृज्यते	अ.

शेष धातु

१२३२.	पुष्प विकसने ११२२	खिलना	पुष्प्	पुष्प्य	पुष्प्यति	से.
१२३३.	ष्टीम आर्द्री भावे ११२५	गीला होना, भाप होना	स्तीम्	स्तीम्य	स्तीम्यति	से.
१२३४.	व्रीड चोदने लज्जायाञ्च ११२६	भेजना, प्रेरित - करना, लज्जित होना, शरमाना	व्रीड्	व्रीड्य	व्रीड्यति	से.
१२३५.	दीपी दीप्तौ ११५०	प्रकाशित होना	दीप्	दीप्य	दीप्यते	से.
१२३६.	पूरी आप्यायने ११५१	भरना, पूर्ण होना	पूर्	पूर्य	पूर्यते	से.
१२३७.	तूरी गतित्वरण - हिंसयो: ११५२	जल्दी करना, दु:ख देना, सताना	तूर्	तूर्य	तूर्यते	से.
१२३८.	धूरी हिंसागत्यो: ११५३	मार डालना, पास आना, जाना	धूर्	धूर्य	धूर्यते	से.
१२३९.	गूरी हिंसागत्यो: ११५४	मार डालना, पास आना, जाना	गूर्	गूर्य	गूर्यते	से
१२४०.	घूरी हिंसावयो - हान्यो: ११५५	जीर्ण होना, पुराना होना	घूर्	घूर्य	घूर्यते	से.
१२४१.	जूरी हिंसावयो - हान्यो: ११५६	जीर्ण होना, गुस्सा होना, मार डालना, दुख: देना	जूर्	जूर्य	जूर्यते	से.
१२४२.	शूरी हिंसा - स्तम्भनयो: ११५७	मार डालना, शूर होना	शूर्	शूर्य	शूर्यते	से.
१२४३.	चूरी दाहे ११५८	जलाना, भस्म करना	चूर्	चूर्य	चूर्यते	से.
१२४४.	काशृ दीप्तौ ११६२	चमकना, प्रकाशित होना	काश्	काश्य	काश्यते	से.

१२४५. वाशृ शब्दे ११६३	शब्द करना, बुलाना, पक्षी के समान शब्द करना	वाश्	वाश्य	वाश्यते	से.
१२४६. राधोऽकर्मकाद् वृद्धावेव ११८०	सिद्ध होना, बढ़ना शुभाशुभ विचार करना	राध्	राध्य	राध्यति	अ.

स्वादिगण

स्वादिभ्यः श्नुः - सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, स्वादिगण के धातुओं से **श्नु** विकरण लगाया जाता है।

अतः स्वादिगण के धातुओं में श्नु विकरण लगाकर कर्त्रर्थक तिङ्, कृत् सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग बनाये गये हैं।

स्वादिगण के अजन्त धातु

१२४७. षुञ् अभिषवे १२४७	यज्ञान्त स्नान करना, निचोड़ना, सुरासन्धान करना	सु	सुनु	सुनोति सुनुते	अ.
१२४८. षिञ् बन्धने १२४८	बाँधना, गूँथना	सि	सिनु	सिनोति सिनुते	अ.
१२४९. शिञ् निशाने १२४९	तीक्ष्ण करना	शि	शिनु	शिनोति शिनुते	अ.
१२५०. डुमिञ् प्रक्षेपणे १२५०	फेंकना, फैलाना	मि	मिनु	मिनोति मिनुते	अ.
१२५१. चिञ् चयने १२५१	ढूँढना, फैलाना	चि	चिनु	चिनोति चिनुते	अ.
१२५२. स्तृञ् आच्छादने १२५२	ढाँकना,	स्तृ	स्तृणु	स्तृणोति स्तृणुते	अ.
१२५३. कृञ् हिंसायाम् १२५३	दुःख देना, सताना	कृ	कृणु	कृणोति कृणुते	अ.
१२५४. वृञ् वरणे १२५४	वरण करना	वृ	वृणु	वृणोति वृणुते	से.
१२५५. धुञ् कम्पने १२५५	कँपाना, हिलना	धु	धुनु	धुनोति धुनुते	अ.
धूञ् इत्येके १२५५	कँपाना,	धू	धूनु	धूनोति	अ.

				धूनुते	
१२५६. टुदु उपतापे १२५६	दुःख भोगना, दुःख देना, जलाना	दु	दुनु	दुनोति	अ.
१२५७. हि गतौ वृद्धौ च १२५७	जाना, प्रेरित करना	हि	हिनु	हिनोति	अ.
१२५८. पृ प्रीतौ १२५८	तृप्त करना, सन्तुष्ट करना	पृ	पृणु	पृणोति	अ.
१२५९. स्पृ प्रीतिपालनयोः १२५९	प्रसन्न करना, पालना	स्पृ	स्पृणु	स्पृणोति	अ.
१२६०. दृ हिंसायाम् १२८०	दुःख देना, सताना	दृ	दृणु	दृणोति	अ.
१२६१. रि हिंसायाम् १२७५	दुःख देना, सताना	रि	रिणु	रिणोति	अ.
१२६२. क्षि हिंसायाम् १२७६	क्षत विक्षत करना	क्षि	क्षिणु	क्षिणोति	से.
१२६३. चिरि हिंसायाम् १२७७	पीड़ा करना	चिरि	चिरिणु	चिरिणोति	से.
१२६४. जिरि हिंसायाम् १२७८	पीड़ा करना	जिरि	जिरिणु	जिरिणोति	से.

स्वादिगण के हलन्त धातु

१२६५. दाशृ हिंसायाम् १२७९	मार डालना	दाश्	दाश्नु	दाश्नोति	से.
१२६६. आप्लृ व्याप्तौ १२६०	व्यापना, प्राप्त करना	आप्	आप्नु	आप्नोति	अ.
१२६७. शक्लृ शक्तौ १२६१	सकना	शक्	शक्नु	शक्नोति	अ.
१२६८. राध संसिद्धौ १२६२	सिद्ध करना, पूर्ण करना	राध्	राध्नु	राध्नोति	अ.
१२६९ साध संसिद्धौ १२६३	सिद्ध करना, पूर्ण करना	साध्	साध्नु	साध्नोति	अ.
१२७०. अशू व्याप्तौ सङ्घाते च १२६४	व्यापना, संग्रह - करना	अश्	अश्नु	अश्नुते	वे.
१२७१. ष्टिघ आस्कन्दने १२६५	घेर लेना	स्तिघ्	स्तिघ्नु	स्तिघ्नुते	से.
१२७२. तिक आस्कन्दने गतौ च १२६६	आक्रमण करना, जाना	तिक्	तिक्नु	तिक्नोति	से.
१२७३. तिग आस्कन्दने गतौ च १२६७	आक्रमण करना, जाना	तिग्	तिग्नु	तिग्नोति	से.
१२७४. षघ हिंसायाम् १२६८	मारना, दुःख देना	सघ्	सघ्नु	सघ्नोति	से.

१२७५.	ञिधृषा प्रागल्भ्ये १२६९	गर्व करना अभिभव करना	धृष्	धृष्णु	धृष्णोति	से.
१२७६.	ऋधु वृद्धौ १२७१	बढ़ना	ऋध्	ऋध्नु	ऋध्नोति	से.
	तृप प्रीणन इत्येके	तृप्त करना	तृप्	तृप्नु	तृप्नोति	से.
१२७७.	अह व्याप्तौ १२६०	व्यापना	अह्	अह्नु	अह्नोति	से.
१२७८.	दघ घातने पालने च १२७३	मारना, पोषण करना	दघ्	दघ्नु	दघ्नोति	से.
१२७९.	चमु भक्षणे १२७४	खाना	चम्	चम्नु	चम्नोति	से.

स्वादिगण के अनिदित् धातु

श्नु परे होने पर 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' सूत्र से इसकी उपधा के न् का लोप होता है।

१२८०.	दम्भु दम्भने १२७०	ढोंग करना, ठगना	दम्भ्	दभ्नु	दभ्नोति	से.

छन्दसि (गणसूत्र) -

१. अह, दघ, चमु, रि, क्षि, चिरि ,जिरि, दाश्, दृ, ये धातु छान्दस (वैदिक) हैं।

२. क्षि धातु भाषा (संस्कृत) में भी होता है।

३. कुछ आचार्य कहते हैं कि रि, क्षि, ये दो धातु नहीं हैं अपितु रिक्षि यह एक ही धातु है। इससे रिक्षिणोति रूप बनेगा।

कुछ आचार्य कहते हैं कि यह ऋक्षि धातु है। इससे ऋक्षिणोति रूप बनेगा।

तुदादि गण

तुदादिभ्यः शः - सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर तुदादिगण के धातुओं से 'श' विकरण लगाया जाता है। अतः तुदादिगण के धातुओं में 'श' विकरण लगाकर सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग बनाये गये हैं।

तुदादिगण के इकारान्त धातु

श प्रत्यय परे होने पर **'अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ'** सूत्र से 'इ, ई' को इयङ् = इय् बनायें।

१२८१.	रि गतौ १४०४	जाना	रि	रिय	रियति	अ.
१२८२.	पि गतौ १४०५	जाना	पि	पिय	पियति	अ.
१२८३.	धि गतौ १४०६	युक्त होना	धि	धिय	धियति	अ.
१२८४.	क्षि निवासगत्योः	जाना,	क्षि	क्षिय	क्षियति	अ.

१४०७	निवास करना				

तुदादिगण के उकारान्त धातु

श प्रत्यय परे होने पर **अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ** सूत्र से 'उ, ऊ' को उवङ् = उव् बनायें।

१२८५. गु पुरीषोत्सर्गे १३९९	हगना, मल विसर्जन करना	गु	गुव	गुवति	अ.
१२८६. ध्रु गतिस्थैर्ययो: १४००	स्थिर होना	ध्रु	ध्रुव	ध्रुवति	अ.
१२८७. कुङ् शब्दे १४०१	अस्पष्ट बोलना	कु	कुव	कुवते	अ.

तुदादिगण के ऊकारान्त धातु

१२८८. णू स्तवने १३९७	प्रशंसा करना	नू	नुव	नुवति	से.
१२८९. धू विधूनने १३९८	काँपना	धू	धुव	धुवति	से.
१२९०. षू प्रेषणे १४०८	भेजना, उड़ना	सू	सुव	सुवति	से.

तुदादिगण के ऋकारान्त धातु

श प्रत्यय परे होने पर **'रिङ्शयग्लिङ्क्षु'** सूत्र से 'ऋ' को 'रि' बनायें। पृ + श / प्रि + अ / अब **'अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ'** सूत्र से 'इ' को इयङ् = इय् बनायें - प्रि + अ - प्रिय् + अ = प्रिय।

१२९१. पृङ् व्यायामे १४०२	किसी कृत्य में लगे रहना	पृ	प्रिय	प्रियते	अ.
१२९२. मृङ् प्राणत्यागे १४०३	देह त्याग करना	मृ	म्रिय	म्रियते	अ.
१२९३. दृङ् आदरे १४११	सत्कार करना	दृ	द्रिय	द्रियते	अ.
१२९४. धृङ् अवस्थाने १४१२	स्थिर रहना जीवित रहना	धृ	ध्रिय	ध्रियते	अ.

तुदादिगण के ॠकारान्त धातु

'श' प्रत्यय परे होने पर **'ॠत इद् धातो:'** सूत्र से 'ॠ' को इ = इर् बनायें।

१२९५. कॄ विक्षेपे १४०९	फेंक देना	कॄ	किर	किरति	से.
१२९६. गॄ निगरणे १४१०	खाना, निगलना	गॄ	गिर	गिरति	से.

तुदादिगण का अन्तर्गण मुचादिगण

'श' प्रत्यय परे होने पर **'शे मुचादीनां'** सूत्र से इन मुचादि धातुओं को नुम् का आगम करें।

१२९७. मुच्लृ मोक्षणे १४३०	मुक्त करना छुड़ाना	मुच्	मुञ्च	मुञ्चति मुञ्चते	अ.

१२९८.	लुप्लृ छेदने १४३१	कतरना, घिसना, नष्ट करना, लुप्त करना	लुप्	लुम्प	लुम्पति लुम्पते	अ.
१२९९.	विद्लृ लाभे १४३२	प्राप्त करना,	विद्	विन्द	विन्दति विन्दते	से.
१३००.	लिप उपदेहे १४३३	लीपना, विलेपन करना, बढ़ाना	लिप्	लिम्प	लिम्पति लिम्पते	अ.
१३०१.	षिच क्षरणे १४३४	प्रोक्षण करना, सींचना	सिच्	सिञ्च	सिञ्चति सिञ्चते	अ.
१३०२.	खिद परिघाते १४३६	दु:ख देना, सताना, रोकना	खिद्	खिन्द	खिन्दति	अ.
१३०३.	कृती छेदने १४३५	कतरना, काटना	कृत्	कृन्त	कृन्तति	से.
१३०४.	पिश अवयवे १४३७	टुकड़े टुकड़े करना, व्यवस्था करना	पिश्	पिंश	पिंशति	से.

तुदादिगण के सम्प्रसारणी धातु

'श' प्रत्यय परे होने पर इन सम्प्रसारणी धातुओं को 'ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचति - वृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च' सूत्र से सम्प्रसारण करें।

१३०५	ओव्रश्चू छेदने १२९२	कतरना, छेद करना, रेतना	व्रश्च्	वृश्च	वृश्चति	बे.
१३०६.	व्यच व्याज़ीकरणे १२९३	ठगना, फँसाना	व्यच्	विच	विचति	से.
१३०७.	प्रच्छ ज्ञीप्सायाम् १४१३	पूछना, जानने की इच्छा करना	प्रच्छ्	पृच्छ	पृच्छति	अ.
१३०८.	भ्रस्ज पाके १२८४	भूँजना, पकाना	भ्रज्ज्	भृज्ज	भृज्जति भृज्जते	अ.

तुदादिगण के विशेष धातु

१३०९.	ओलस्जी व्रीडायाम् १२९१	लज्जित होना	लज्ज्	लज्ज	लज्जते	से.
१३१०.	टुमस्जो शुद्धौ	स्नान करना	मज्ज्	मज्ज	मज्जति	अ.

१४१५

(भ्रस्ज्, लस्ज्, मस्ज् के स् को स्तोः श्चुना श्चुः सूत्र से श्चुत्व करके झलां जश् झशि सूत्र से जश्त्व हुआ है।)

१३११.	इष इच्छायाम् १३५१	इच्छा करना,	इष्	इच्छ	इच्छति	से.

(इष् धातु को 'इषुगमियमां छः' से 'छ्' आदेश करके 'छे च' से 'तुक्' का आगम हुआ है।)

१३१२	विच्छ गतौ १४२३	समीप जाना या आना	विच्छ	विच्छाय	विच्छायति	से.
१३१३.	षद्लृ विशरण - गत्यवसादनेषु १४२७	जाना, शक्तिहीन होना, मुरझाना,	सद्	सीद	सीदति	अ.
१३१४.	शद्लृ शातने १४२८	जीर्ण होना, नीचे फेंकना, नीचे गिराना, गिरना,	शद्	शीय	शीयते	अ

तुदादिगण के शेष धातु

अब वर्ग बनाकर तुदादिगण के शेष धातु बतला रहे हैं। श प्रत्यय परे होने पर इन्हें कुछ मत कीजिये।

तुदादिगण के अदुपध धातु

१३१५.	चल विलसने १३५६	खेलना, क्रीड़ा करना	चल्	चल	चलति	से

तुदादिगण के इदुपध धातु

१३१६.	दिश अतिसर्जने १२८३	पारितोषिक देना कहना, बोलना, आज्ञा देना,	दिश्	दिश	दिशति दिशते	अ.
१३१७.	क्षिप प्रेरणे १२८५	भेजना, उड़ाना	क्षिप्	क्षिप	क्षिपति क्षिपते	अ.
१३१८.	ओविजी भय - चलनयोः १२८९	आपद्ग्रस्त करना, आपद् ग्रस्त होना, डरना, डराना	उद्विज्	उद्विज	उद्विजते	से.

(इसका प्रयोग उत् उपसर्ग के साथ किया जाता है।)

१३१९.	रिफ कत्थनयुद्ध - निन्दाहिंसादानेषु	युद्ध करना, दोष लगाना	रिफ्	रिफ	रिफति	से.

१३०६ (रिह इत्येके)

१३२०.	विध विधाने १३२५	क्रम से रखना	विध्	विध	विधति	से.
१३२१.	मिष स्पर्धायाम् १३५२	स्पर्धा करना कलह करना	मिष्	मिष	मिषति	से.
१३२२.	किल श्वैत्यक्रीड - नयो: १३५३	सफेद होना, खेलना	किल्	किल	किलति	से.
१३२३.	तिल स्नेहने १३५४	चिकना होना, तेल लगाना	तिल्	तिल	तिलति	से.
१३२४.	चिल वसने १३५५	कपड़े पहनना	चिल्	चिल	चिलति	से.
१३२५.	इल स्वप्न - क्षेपणयो: १३५७	नींद लेना, बिखेरना, भेजना	इल्	इल	इलति	से.
१३२६.	विल संवरणे १३५८	छिद्र करना, वस्त्र पहनना	विल्	विल	विलति	से.
१३२७.	बिल भेदने १३५९	ढँकना, छिपाना	बिल्	बिल	बिलति	से.
१३२८.	णिल गहने १३६०	कुछ का कुछ समझना	निल्	निल	निलति	से.
१३२९.	हिल भावकरणे १३६१	नखरा करना, क्रीडा करना	हिल्	हिल	हिलति	से.
१३३०.	शिल उञ्छे १३६२	एक एक करके बीनना	शिल्	शिल	शिलति	से.
१३३१.	षिल उञ्छे १३६३	एक एक करके बीनना	सिल्	सिल	सिलति	से
१३३२.	मिष श्लेषणे १३६४	झपकना, देखना	मिष्	मिष	मिषति	से.
१३३३.	लिख अक्षरविन्यासे १३६५	लिखना	लिख्	लिख	लिखति	से.
१३३४.	रिश हिंसायाम् १४२०	मारने का यत्न करना, दु:ख देना	रिश्	रिश	रिशति	अ.
१३३५.	लिश गतौ १४२१	जाना, आना	लिश्	लिश	लिशति	अ.
१३३६.	विश प्रवेशने च १४२४	घुसना, प्रवेश करना	विश्	विश	विशति	अ.
१३३७.	मिल सङ्गमे १४२९	मिलना, संयुक्त होना	मिल्	मिल	मिलति मिलते	से.

तुदादिगण के उदुपध धातु

१३३८.	तुद व्यथने १२८१	दु:ख देना, पीड़ा पहुँचाना	तुद्	तुद	तुदति तुदते	अ.
१३३९.	णुद प्रेरणे १२८२	भेजना, प्रेरणा करना, जाना	नुद्	नुद	नुदति नुदते	अ.
१३४०.	जुषी प्रीतिसेव - नयो: १२८८	सेवा करना, प्रसन्न करना	जुष्	जुष	जुषते	से.
१३४१.	लुभ विमोहने १३०५	मतिभ्रंश होना, ललचाना	लुभ्	लुभ	लुभति	से.
१३४२.	तुप १३०९	मार डालना	तुप्	तुप	तुपति	से.
१३४३.	तुफ १३११	मार डालना	तुफ्	तुफ	तुफति	से.
१३४४.	गुफ ग्रन्थे १३१७	गुम्फन करना	गुफ्	गुफ	गुफति	से.
१३४५.	उभ पूरणे १३१९	भरना, पूर्ण करना	उभ्	उभ	उभति	से.
१३४६.	शुभ शोभार्थे १३२१	शोभायमान होना	शुभ्	शुभ	शुभति	से.
१३४७.	जुड गतौ १३२६	जूड़ा बनाना, जाना	जुड्	जुड	जुडति	से.
१३४८.	तुण कौटिल्ये १३३२	टेढ़ा होना, वक्र होना	तुण्	तुण	तुणति	से.
१३४९.	पुण कर्मणि - शुभे १३३३	पवित्र होना धर्मकार्य करना	पुण्	पुण	पुणति	से.
१३५०.	मुण प्रतिज्ञाने १३३४	प्रण करना	मुण्	मुण	मुणति	से.
१३५१.	कुण शब्दोप - करणयो:१३३५	दानादिक से संरक्षण करना	कुण्	कुण	कुणति	से.
१३५२.	शुन गतौ १३३६	जाना	शुन्	शुन	शुनति	से.
१३५३.	तुण हिंसागति - कौटिल्येषु १३३७	हिंसा करना, वक्र होना, जाना	तुण्	तुण	तुणति	से.
१३५४.	घुण भ्रमणे १३३८	चक्राकार घूमना	घुण्	घुण	घुणति	से.
१३५५.	खुर ऐश्वर्यदीप्त्यो: १३४०	ऐश्वर्य होना, चमकना	खुर्	खुर	खुरति	से.
१३५६.	कुर शब्दे १३४१	शब्द करना	कुर्	कुर	कुरति	से.
१३५७.	खुर छेदने १३४२	कतरना, खुरचना	खुर्	खुर	खुरति	से.
१३५८.	मुर संवेष्टने १३४३	घेरना, लपेटना	मुर्	मुर	मुरति	से.

१३५९.	क्षुर विलेखने १३४४	लकीर खींचना, छेदना	क्षुर्	क्षुर	क्षुरति	से.
१३६०.	घुर भीमार्थशब्दयोः १३४५	भयङ्कर शब्द - होना, घूरना, आवाज करना	घुर्	घुर	घुरति	से.
१३६१.	पुर अग्रगमने १३४६	अग्रभाग में जाना आगे चलना	पुर्	पुर	पुरति	से.
१३६२.	रुजो भङ्गे १४१६	रोग से पीड़ित होना, रोगी होना	रुज	रुज	रुजति	अ.
१३६३.	भुजो कौटिल्ये १४१७	वक्र होना, टेढ़ा होना	भुज्	भुज	भुजति	अ.
१३६४.	छुप स्पर्शे १४१८	छूना, स्पर्श करना	छुप्	छुप	छुपति	अ.
१३६५.	रुश हिंसायाम् १४१९	मार डालना	रुश्	रुश	रुशति	अ.
१३६६.	णुद प्रेरणे १४२६	भेजना, प्रेरणा देना	नुद्	नुद	नुदति	अ.
१३६७.	कृष विलेखने १२८६	कृषि कर्म करना, रेखा करना	कृष्	कृष	कृषति कृषते	अ.
१३६८.	ऋषी गतौ १२८७	जाना, आना, मार डालना	ऋष्	ऋष	ऋषति	से.
१३६९.	ऋच स्तुतौ १३०२	प्रशंसा करना, आच्छादित करना	ऋच्	ऋच	ऋचति	से.
१३७०.	तृप १३०७	तृप्त होना, तृप्त करना	तृप्	तृप	तृपति	से.
१३७१.	दृप १३१३	पीड़ा करना, दुख देना	दृप्	दृप	दृपति	से.
१३७२.	ऋफ १३१५	मार डालना, दुःख देना	ऋफ्	ऋफ	ऋफति	से.
१३७३.	दृभी ग्रन्थे १३२३	रचना, गूँथना	दृभ्	दृभ	दृभति	से.
१३७४.	चृती हिंसा - श्रन्थनयोः	पीड़ा करना, एकत्र करके बाँधना	चृत्	चृत	चृतति	से.

१३७५. मृड सुखने १३२७	सुख देना, प्रसन्न करना	मृड्	मृड	मृडति	से.
१३७६. पृड च १३२८	आनन्द करना, संतोष करना	पृड्	पृड	पृडति	से.
१३७७. पृण प्रीणने १३२९	संतोष पाना, आनन्द करना	पृण्	पृण	पृणति	से.
१३७८. वृण च १३३०	आनन्द करना, उत्साह करना	वृण्	वृण	वृणति	से.
१३७९. मृण हिंसायाम् १३३१	दुःख देना, पीड़ा देना	मृण्	मृण	मृणति	से.
१३८०. वृहू उद्यमने १३४७ (बृहू इत्यन्ये)	यत्न करना	वृह्	वृह	वृहति बृहति	वे.
१३८१. तृहू १३४८	मार डालना,	तृह्	तृह	तृहति	वे.
१३८२. स्तृहू हिंसार्थौ १३४९	मार डालना, पीड़ा करना	स्तृह्	स्तृह	स्तृहति	वे.
१३८३. सृज विसर्गे १४१४	त्याग करना, रचना	सृज्	सृज	सृजति	अ.
१३८४. स्पृश संस्पर्शने १४२२	स्पर्श करना, हाथ से लेना	स्पृश्	स्पृश	स्पृशति	अ.
१३८५. मृश आमर्शने १४२५	स्पर्श करना, देखना, विचार करना	मृश्	मृश	मृशति	अ.

तुदादिगण के अनिदित् धातु

शे तृम्फादीनां नुम्वाच्यः (वार्तिक) –

तुदादिगण में ये जो 'तृम्फादि धातु' हैं। इनसे 'अपित् अर्थात् ङित् सार्वधातुक प्रत्यय' 'श' परे होने पर, **अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति** सूत्र से इनके 'न्' का लोप कीजिये।

लोप होने के बाद, शे **तृम्फादीनां नुम्वाच्यः (वार्तिक)** से इन्हें पुनः नुम् का आगम हो जाता है।

१३८६. तृम्फ तृप्तौ १३०८	तृप्त होना या तृप्त करना	तृम्फ्	तृम्फ	तृम्फति	से.
१३८७. तुम्प हिंसायाम्	मार डालना,	तुम्प्	तुम्प	तुम्पति	से.

१३१०	दुःख देना				
१३८८. तुम्फ हिंसायाम् १३१२	मार डालना, दुःख देना	तुम्फ्	तुम्फ	तुम्फति	से.
१३८९. दृम्फ उत्क्लेशे १३१४	पीड़ा करना, दुःख देना	दृम्फ्	दृम्फ	दृम्फति	से.
१३९०. ऋम्फ हिंसायाम् १३१६	मार डालना, पीड़ा देना	ऋम्फ्	ऋम्फ	ऋम्फति	से.
१३९१. गुम्फ ग्रन्थे १३१८	गूँथना, गुम्फन - करना, रचना	गुम्फ्	गुम्फ	गुम्फति	से.
१३९२. उम्भ पूरणे १३२०	भरना, पूर्ण करना	उम्भ्	उम्भ	उम्भति	से.
१३९३. शुम्भ शोभार्थे १३२२	प्रकाशित होना, देदीप्यमान होना	शुम्भ्	शुम्भ	शुम्भति	से.
१३९४. तृन्हू हिंसार्थः १३५०	मार डालना, दुःख देना	तृंह्	तृंह	तृंहति	वे.

तुदादिगण का - कुटादि अन्तर्गण

१३९५. कुट कौटिल्ये १३६६	टेढ़ा होना, ठगना, फँसाना	कुट्	कुट	कुटति	से.
१३९६. पुट संश्लेषणे १३६७	गले लगाना, एक में एक लटकाना	पुट्	पुट	पुटति	से.
१३९७. कुच सङ्कोचने १३६८	आकुञ्चित होना, या आकुञ्चित करना	कुच्	कुच	कुचति	से.
१३९८. गुज शब्दे १३६९	शब्द करना, गुञ्जार करना	गुज्	गुज	गुजति	से.
१३९९. गुड रक्षायाम् १३७०	संरक्षण करना,	गुड्	गुड	गुडति	से.
१४००. डिप क्षेपे १३७१	भेजना, निन्दा करना	डिप्	डिप	डिपति	से.
१४०१. छुर छेदने १३७२	कतरना, तोड़ना	छुर्	छुर	छुरति	से.
१४०२. स्फुट विकसने १३७३	खिलना, प्रफुल्लित होना	स्फुट्	स्फुट	स्फुटति	से.
१४०३. मुट आक्षेपमर्दनयोः १३७४	निन्दा करना, मर्दन करना	मुट्	मुट	मुटति	से.

१४०४. त्रुट छेदने १३७५	कतरना, तोड़ना संशय निवारण करना	त्रुट्	त्रुट	त्रुटति	से.
१४०५. तुट कलहकर्मणि १३७६	झगड़ना, दुःख देना	तुट्	तुट	तुटति	से.
१४०६. चुट छेदने १३७७	चोट मारना, कलाहीन होना	चुट्	चुट	चुटति	से.
१४०७. छुट छेदने १३७८	कतरना, तोड़ना, छोटा करना	छुट्	छुट	छुटति	से.
१४०८. जुट बन्धने १३७९	जाना, जूड़ा बनाना, जोड़ना	जुट्	जुट	जुटति	से.
१४०९. कड मदे १३८०	आनन्दित होना	कड्	कड	कडति	से.
१४१०. लुट संश्लेषणे १३८१	भूमि का स्पर्श - करना, जमीन पर - लोटना, झरना	लुट्	लुट	लुटति	से.
१४११. कृड घनत्वे १३८२	दृढ़ होना, जम जाना, जमना	कृड्	कृड	कृडति	से.
१४१२. कुड बाल्ये १३८३	बालक के समान खेलना, खाना	कुड्	कुड	कुडति	से.
१४१३. पुड उत्सर्गे १३८४	छोड़ना, आच्छादन करना	पुड्	पुड	पुडति	से.
१४१४. घुट प्रतिघाते १३८५	मन मसोस कर - घुटते रहना	घुट्	घुट	घुटति	से.
१४१५. तुड तोडने १३८६	तोड़ना, कतरना	तुड्	तुड	तुडति	से.
१४१६. थुड १३८७	आच्छादित करना, वस्त्र धारण करना	थुड्	थुड	थुडति	से.
१४१७. स्थुड सम्वरणे १३८८	वस्त्र धारण करना, आच्छादित करना	स्थुड्	स्थुड	स्थुडति	से.
१४१८. स्फुर सञ्चलने स्फुरणे च १३८९	हिलना, स्फुरित होना, सूझना, फैलना, स्पष्ट होना	स्फुर्	स्फुर	स्फुरति	से.
१४१९. स्फुल सञ्चलने १३९०	हिलना, स्फुरित होना, सूझना,	स्फुल्	स्फुल	स्फुलति	से.

१४२०.	स्फुड संवरणे १३९१	वेष्टित करना	स्फुड्	स्फुड	स्फुडति	से.
१४२१.	चुड सम्वरणे १३९२	लपेटना, घेरना छिपाना	चुड्	चुड	चुडति	से.
१४२२.	व्रुड सम्वरणे १३९३	स्वीकार करना, राशि करना	व्रुड्	व्रुड	व्रुडति	से.
१४२३.	क्रुड १३९४	गोद में घुसना, डूबना	क्रुड्	क्रुड	क्रुडति	से.
१४२४.	मृड निमज्जने १३९५	गोद में घुसना, डूबना	मृड्	मृड	मृडति	से.
१४२५.	गुरी उद्यमने १३९६	प्रयत्न करना	गुर्	गुर	गुरते	से.
	णू स्तवने १३९७	प्रशंसा करना, स्तुति करना	नू	नुव	नुवति	से.
	धू विधूनने १३९८	कम्पित करना,	धू	धुव	धुवति	से.
	गु पुरीषोत्सर्गे १३९९	मलोत्सर्ग करना, दस्त होना	गु	गुव	गुवति	अ.
	ध्रु गतिस्थैर्ययो: १४००	स्थिर होना,	ध्रु	ध्रुव	ध्रुवति	अ.
	कुङ् शब्दे १४०१	दु:ख कारक शब्द करना, विह्वल होना	कु	कुव	कुवते	अ.

तुदादिगण के शेष धातु

१४२६.	उछि उञ्छे १२९४	थोड़ा थोड़ा एकत्र करना	उञ्छ्	उञ्छ	उञ्छति	से.
१४२७.	उच्छी विवासे १२९५	पूरा करना	उच्छ्	उच्छ	उच्छति	से.
१४२८.	ऋच्छ गतीन्द्रिय - प्रलयमूर्तिभावेषु १२९६	इन्द्रिय का बल घट जाना, दृढ़ होना	ऋच्छ्	ऋच्छ	ऋच्छति	से.
१४२९.	मिच्छ उत्क्लेशे १२९७	पीड़ा करना, दु:ख देना, रोकना, निषेध करना	मिच्छ्	मिच्छ	मिच्छति	से.
१४३०.	जर्ज १२९८	बोलना, निन्दा करना	जर्ज्	जर्ज	जर्जति	से.

१४३१. चर्च १२९९	चर्चा करना	चर्च्	चर्च	चर्चति	से.
१४३२. झर्झ परिभाषण - भर्त्सनयोः १३००	भर्त्सना करना, कहना, दुःख देना	झर्झ्	झर्झ	झर्झति	से.
१४३३. त्वच संवरणे १३०१	आच्छादित करना लपेटना, ढाँकना	त्वच्	त्वच	त्वचति	से.
१४३४. उब्ज आर्जवे १३०३	सीधी रीति से सरल बर्ताव करना	उब्ज्	उब्ज	उब्जति	से.
१४३५. उज्झ उत्सर्गे १३०४	त्यागना, छोड़ना	उज्झ्	उज्झ	उज्झति	से.
१४३६. घूर्ण भ्रमणे १३३९	चक्राकार घूमना	घूर्ण्	घूर्ण	घूर्णति	से.
१४३७. ओलजी व्रीडायाम् १२९०	लज्जित होना, शरमाना	लज्	लज	लजते	से.

तुदादिगण का किरादि अन्तर्गण

कॄ विक्षेपे १४०९	फेंक देना	कॄ	किर	किरति	से.
गॄ निगरणे १४१०	खाना, निगलना	गॄ	गिर	गिरति	से.
दृङ् आदरे १४११	सत्कार करना	दृ	**द्रिय**	**द्रियते**	अ
धृङ् अवस्थाने १४१२	रहना, धारण करना, जीवित रहना	धृ	ध्रिय	ध्रियते	अ
प्रच्छ ज्ञीप्सायाम् १४१३	पूछना, जानने की इच्छा करना	प्रच्छ्	पृच्छ	पृच्छति	अ

रुधादिगण

रुधादिभ्यः श्नम् - सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर रुधादिगण के धातुओं से श्नम् विकरण लगाया जाता है। अतः रुधादिगण के धातुओं में श्नम् विकरण लगाकर कर्त्रर्थक तिङ्, कृत् सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग बनाये गये हैं।

मिदचोऽन्यात् परः - श्नम् मित् प्रत्यय है। मित् प्रत्यय जिससे भी लगता है, उसके अन्तिम अच् के बाद ही वह बैठता है। अतः मित् होने के कारण यह 'श्नम्' विकरण धातु के अन्तिम अच् के बाद लगेगा। यथा - रुध् - रुणध्।

श्नान्नलोपः - यदि इस श्नम् के बाद न् हो तो उसका लोप होता है। यथा - इन्ध् - इनन्ध् / श्नम् के बाद वाले न् का लोप करके - इनध् / इसी प्रकार - अञ्ज् - अनञ्ज् / श्नम् के बाद वाले न् का लोप करके - अनज्। इसी प्रकार भञ्ज् - भनञ्ज् / श्नम् के बाद वाले न् का लोप करके - भनज् आदि।

श्नसोरल्लोपः - जब रुधादिगण के धातुओं के बाद अपित् अर्थात् ङित्

सार्वधातुक प्रत्यय आता है, तब श्नम् के 'अ' का लोप हो जाता है। यथा - रुणध् + तः = रुन्ध् + तः / भिनद् + तः = भिन्द् + तः।

इसलिये यहाँ ध्यान दीजिये कि रुधादिगण में सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये दो - दो प्रकार के अङ्ग बने हुए हैं। इनमें से जो पहला है जिसमें श्नम् प्रत्यय पूरा दिख रहा है, अर्थात् रुणध् आदि, उसी में आप पित् सार्वधातुक प्रत्यय लगाइये और जिसमें श्नम् के अ का लोप हो गया है, अर्थात् रुन्ध् आदि, उसमें आप अपित् सार्वधातुक प्रत्यय अर्थात् ङित् सार्वधातुक प्रत्यय लगाइये।

१४३८.	रुधिर् आवरणे १४३८	रोकना, घेरना	रुध्	रुणध्	रुन्ध्	रुणद्धि रुन्धे	अ.
१४३९.	ञिइन्धी दीप्तौ १४४८	प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना	इन्ध्	इनध्	इन्ध्	इन्धे	से.
१४४०.	भिदिर् विदारणे १४३९	चीरना, तोड़ना	भिद्	भिनद्	भिन्द्	भिनत्ति भिन्ते	अ.
१४४१.	छिदिर् द्वैधीकरणे १४४०	छिन्न - भिन्न करना	छिद्	छिनद्	छिन्द्	छिनत्ति छिन्ते	अ.
१४४२.	क्षुदिर् सम्पेषणे १४४३	कूटना, पीसना, मुक्की मारना	क्षुद्	क्षुणद्	क्षुन्द्	क्षुणत्ति क्षुन्ते	अ.
१४४३.	उच्छृदिर् दीप्ति - देवनयोः १४४५	चमकना प्रकाशित होना	छृद्	छृणद्	छृन्द्	छृणत्ति छृन्ते	से.
१४४४.	उतृदिर् हिंसानादरयोः १४४६	मार डालना, दुःख देना अवज्ञा करना	तृद्	तृणद्	तृन्द्	तृणत्ति तृन्ते	से.
१४४५.	खिद दैन्ये १४४९	खिन्न होना, दुःखी होना, दीनता प्रकट करना	खिद्	खिनद्	खिन्द्	खिन्ते	अ.
१४४६.	विद विचारणे १४५०	मनन करना विचार करना	विद्	विनद्	विन्द्	विन्ते	अ.
१४४७.	उन्दी क्लेदने १४५७	गीला होना	उन्द्	उनद्	उन्द्	उनत्ति	से.
१४४८.	कृती वेष्टने १४४७	घेरना, वेष्टित करना	कृत्	कृणत्	कृन्त्	कृणत्ति	से.
१४४९.	रिचिर् विरेचने	खाली करना,	रिच्	रिणच्	रिन्च्	रिणक्ति	अ.

१४४१	दस्त होना				रिङ्क्ते	
१४५०. विचिर् पृथग्भावे १४४२	पृथक् - करना, अलग अलग होना, छूटना	विच्	विनच्	विन्च्	विनक्ति विङ्क्ते	अ.
१४५१. तञ्चू सङ्कोचने १४५९	संकुचित होना, संकोच होना	तञ्च्	तनच्	तन्च्	तनक्ति	वे.
१४५२. पृची सम्पर्के १४६२	स्पर्श करना, करना, संयोग करना	पृच्	पृणच्	पृन्च्	पृणक्ति	से.
१४५३. युजिर् योगे १४४४	जुड़ना, मिलाना, एकत्र करना	युज्	युनज्	युन्ज्	युनक्ति युङ्क्ते	अ.
१४५४. भञ्जो आमर्दने १४५३	नष्ट करना	भञ्ज्	भनज्	भन्ज्	भनक्ति	अ.
१४५५. भुज पालनाभ्यव - हारयोः १४५४	संरक्षण करना, पालन करना, खाना	भुज्	भुनज्	भुन्ज्	भुनक्ति भुङ्क्ते	अ.
१४५६. अञ्जू व्यक्तिमर्षण कान्तिगतिषु १४५८	सराहना, विख्यात करना, प्रकाशित करना	अञ्ज्	अनज्	अन्ज्	अनक्ति	वे.
१४५७. ओविजी भयचल- नयोः १४६०	विपति में - पड़ना, भय से काँपना, आपदग्रस्त होना	विज्	विनज्	विन्ज्	विनक्ति	से.
१४५८. वृजी वर्जने १४६१	छोड़ना, वर्जित करना	वृज्	वृणज्	वृन्ज्	वृणक्ति	से.
१४५९. शिष्लृ विशेषणे १४५१	अलग करना	शिष्	शिनष्	शिन्ष्	शिनष्टि	अ.
१४६०. पिष्लृ संचूर्णने १४५२	चूर्ण करना, पीसना	पिष्	पिनष्	पिन्ष्	पिनष्टि	अ.
१४६१. हिसि हिंसायाम् १४५६	मारना, दुःख देना	हिंस्	हिनस्	हिन्स्	हिनस्ति	से.
१४६२. तृह हिंसायाम् १४५५	मार डालना	तृह	तृणह	तृन्ह	तृणेढि	से.

रुधादिगण के अनिदित् धातु

रुधादि गण के ञिइन्धी दीप्तौ, तञ्चु संकोचने, उन्दी क्लेदने, भञ्जो आमर्दने, अञ्जू व्यक्तिमर्षणकान्तिगतिषु, ये ५ धातु अनिदित् धातु हैं।

रुधादिगण के इजादि गुरुमान् धातु

रुधादि गण के उन्द् इन्ध् ये दो धातु इजादि गुरुमान् धातु हैं।

तनादिगण

तनादिकृञ्भ्यः उः - सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर तनादिगण के धातुओं में 'उ' विकरण लगाया जाता है। अतः तनादिगण के धातुओं में 'उ' विकरण लगाकर कर्त्रर्थक तिङ्, कृत् सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग बनाये गये हैं।

१४६३. तनु विस्तारे १४६३	फैलाना, बढ़ाना	तन्	तनु	तनोति तनुते	से.
१४६४. षणु दाने १४६४	देना, दान करना	सन्	सनु	सनोति सनुते	से.
१४६५. क्षणु हिंसायाम् १४६५	मार डालना, दुःख देना	क्षण्	क्षणु	क्षणोति क्षणुते	से.
१४६६. क्षिणु हिंसायाम् १४६६	मार डालना,	क्षिण्	क्षेणु	क्षेणोति क्षेणुते	से.
१४६७. ऋणु गतौ १४६७	जाना, गमन करना	ऋण्	अर्णु	अर्णोति अर्णुते	से.
१४६८. तृणु अदने १४६८	घास खाना, चरना	तृण्	तर्णु	तर्णोति तर्णुते	से.
१४६९. घृणु दीप्तौ १४६९	चमकना, प्रकाशित होना	घृण्	घर्णु	घर्णोति घर्णुते	से.
१४७०. वनु याचने १४७०	माँगना, याचना - करना	वन्	वनु	वनुते	से.
१४७१. मनु अवबोधने	जानना, समझना	मन्	मनु	मनुते	से.
१४७२. डुकृञ् करणे १४७२	करना	कृ	करु, कुरु	करोति कुरुते	अ.

विशेष - कृ धातु से पित् सार्वधातुक प्रत्यय लगने पर 'करु' यह अङ्ग बनकर 'करोति' आदि रूप बनते हैं, तथा कृ धातु से अपित् सार्वधातुक प्रत्यय लगने पर 'कुरु' यह अङ्ग बनकर कुरुते आदि रूप बनते हैं।

क्र्यादिगण

क्र्यादिभ्यः श्ना (ना) – सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर क्र्यादिगण के धातुओं में श्ना विकरण लगाया जाता है। अतः क्र्यादिगण के धातुओं में श्ना विकरण लगाकर कर्त्रर्थक तिङ्, कृत् सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग बनाये गये हैं।

क्र्यादिगण के अजन्त धातु

१४७३. डुक्रीञ् द्रव्य – विनिमये १४७३	खरीदना	क्री	क्रीणा	क्रीणाति क्रीणीते	अ.
१४७४. प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च १४७४	प्रीति करना, तृप्त करना	प्री	प्रीणा	प्रीणाति प्रीणीते	अ.
१४७५. श्रीञ् पाके १४७५	पकाना, राँधना	श्री	श्रीणा	श्रीणाति श्रीणीते	अ.
१४७६. मीञ् बन्धने १४७६	बाँधना, गूँथना, फन्दे में पकड़ना	मी	मीना	मीनाति मीनीते	अ.
१४७७. षिञ् बन्धने १४७७	बाँधना, गूँथना, फन्दे में पकड़ना	सि	सिना	सिनाति सिनीते	अ.
१४७८. स्कुञ् आप्रवणे १४७८	कूदना, फुदकना उड़ाना	स्कु	स्कुना	स्कुनाति स्कुनीते	अ.
१४७९. युञ् बन्धने १४७९	बाँधना	यु	युना	युनाति युनीते	अ.
१४८०. क्नूञ् शब्दे १४८०	शब्द करना, आवाज करना,	क्नू	क्नूना	क्नूनाति क्नूनीते	अ.
१४८१. द्रूञ् १४८१	पवित्र करना	द्रू	द्रूणा	द्रूणाति द्रूणीते	अ.

अब अन्तर्गण बतला रहे हैं। क्र्यादिगण के अन्दर दो अन्तर्गण हैं। **प्वादिगण और ल्वादिगण।**

पूञ् पवने (१४८२) से लेकर प्ली गतौ (१५०३) तक प्वादि अन्तर्गण कहलाता है। कुछ के अनुसार प्वादि अन्तर्गण क्षीष् धातु (१५०६) तक है।

प्वादीनां ह्रस्वः – शित् प्रत्यय परे रहने पर प्वादि धातुओं को ह्रस्व होता है।

'श्ना' भी शित् प्रत्यय है, अतः इसके परे रहने पर इन प्वादि धातुओं को

'प्वादीनां ह्रस्वः' सूत्र से ह्रस्व कीजिये।

लूञ् छेदने (१४८३) से लेकर प्ली गतौ (१५०३) धातु तक, ल्वादि अन्तर्गण कहलाता है।

इन ल्वादि धातुओं से परे आने वाले 'निष्ठा प्रत्यय' के 'त' को 'ल्वादिभ्यः' सूत्र से 'न' होगा।

क्र्यादिगण का प्वादि अन्तर्गण

यह अन्तर्गण यहाँ से प्ली गतौ (१५०३) धातु तक चलेगा।

१४८२. पूञ् पवने १४८२	पवित्र करना प्रारम्भ करना	पू	पुना	पुनाति पुनीते	अ.

क्र्यादिगण का ल्वादि अन्तर्गण

१४८३. लूञ् छेदने १४८३	कतरना, चीरना प्रारम्भ करना	लू	लुना	लुनाति लुनीते	अ.
१४८४. स्तॄञ् आच्छादने १४८४	ओढ़ना, वस्त्रादि से ढाँकना	स्तॄ	स्तृणा	स्तृणाति स्तृणीते	से.
१४८५. कॄञ् हिंसायाम् १४८५	दुःख देना, मार डालना	कॄ	कृणा	कृणाति कृणीते	से.
१४८६. वृञ् वरणे १४८६	पसन्द करना,	वृ	वृणा	वृणाति वृणीते	से.
१४८७. धूञ् कम्पने १४८७	कँपाना, हिलना, हिलाना	धू	धुना	धुनाति धुनीते	से.
१४८८. शॄ हिंसायाम् १४८८	मार डालना, दुःख देना	शॄ	शृणा	शृणाति	से.
१४८९. पॄ पालन - पूरणयोः १४८९	पालन करना, पूर्ण करना, भरना	पॄ	पृणा	पृणाति	से.
१४९०. वॄ वरणे भरण इत्येके १४९०	पसन्द करना, आश्रय देना, सँभालना	वॄ	वृणा	वृणाति	से.
१४९१. भॄ भर्त्सने १४९१	तिरस्कार - करना	भॄ	भृणा	भृणाति	से.
१४९२. मॄ हिंसायाम् १४९२	मार डालना दुःख देना	मॄ	मृणा	मृणाति	से.

१४९३. दॄ विदारणे १४९३	चीरना, फाड़ना, टुकड़े करना	दॄ	दृणा	दृणाति	से.
१४९४. जॄ वयोहानौ १४९४	वृद्ध होना, जीर्ण होना	जॄ	जृणा	जृणाति	से.
१४९५. नॄ नये १४९५	ले जाना	नॄ	नृणा	नृणाति	से.
१४९६. कॄ हिंसायाम् १४९६	दुःख देना,	कॄ	कृणा	कृणाति	से.
१४९७. ॠ गतौ १४९७	जाना	ॠ	ऋणा	ऋणाति	से.
१४९८. गॄ शब्दे १४९८	शब्द करना	गॄ	गृणा	गृणाति	से.
१४९९. ज्या वयोहानौ १४९९.	जीर्ण होना, वृद्ध होना	ज्या	जिना	जिनाति	अ.
१५००. री गतिरेषणयोः १५००	जाना, पीड़ा - करना	री	रिणा	रिणाति	अ.
१५०१. ली श्लेषणे १५०१	युक्त होना, प्राप्त होना	ली	लिना	लिनाति	अ.
१५०२. ब्ली वरणे १५०२	पसन्द करना, ढूँढ़ निकालना	ब्ली	ब्लिना	ब्लिनाति	अ.
१५०३. प्ली गतौ १५०३	जाना	प्ली	प्लिना	प्लिनाति	अ.

(प्वादि अन्तर्गण, ल्वादि अन्तर्गण समाप्त)

१५०४. व्री वरणे १५०४	बीनना, ढँकना	व्री	व्रीणा	व्रीणाति	अ.
१५०५. भ्री भये १५०५	डरना	भ्री	भ्रीणा	भ्रीणाति	अ.
१५०६. क्षीष हिंसायाम् १५०६	मार डालना, दुःख देना	क्षी	क्षीणा	क्षीणाति	अ.
१५०७. वृङ् सम्भक्तौ १५०९	सेवा करना	वृ	वृणा	वृणीते	से.
१५०८. ज्ञा अवबोधने १५०७	जानना, समझना	ज्ञा	जाना	जानाति जानीते	अ.

क्र्यादि गण के हलन्त धातु

१. अनिदित् हलन्त धातु

श्ना परे होने पर 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' सूत्र से इनकी उपधा के न् का लोप कीजिये।

१५०९. बन्ध बन्धने १५०८	बाँधना	बन्ध्	बध्ना	बध्नाति	अ

१५१०.	श्रन्थ विमोचन - प्रतिहर्षयोः १५०९	छोड़ना	श्रन्थ्	श्रथ्ना	श्रथ्नाति	से.
१५११.	मन्थ विलोडने १५१०	बिलोना, मथना	मन्थ्	मथ्ना	मथ्नाति	से.
१५१२.	श्रन्थ सन्दर्भे १५११	रचना करना, गुम्फित करना,	श्रन्थ्	श्रथ्ना	श्रथ्नाति	से.
१५१३.	ग्रन्थ सन्दर्भे १५१३	रचना करना, गुम्फित करना	ग्रन्थ्	ग्रथ्ना	ग्रथ्नाति	से.
१५१४.	कुन्थ संश्लेषणे १५१४	मिल के रहना	कुन्थ्	कुथ्ना	कुथ्नाति	से.

२. शेष हलन्त धातु

१५१५.	मृद क्षोदे १५१५	चूर्ण करना, पीसना, कूटना	मृद्	मृद्ना	मृद्नाति	से.
१५१६.	मृड च १५१६	चूर्ण करना पीसना, कूटना	मृड्	मृड्णा	मृड्णाति	से.
१५१७.	गुध रोषे १५१७	क्रोध करना, गुस्सा करना	गुध्	गुध्ना	गुध्नाति	से.
१५१८.	कुष निष्कर्षे १५१८	बाहर निकलना चमकना	कुष्	कुष्णा	कुष्णाति	से.
१५१९.	क्षुभ सञ्चलने १५१९	मथना	क्षुभ्	क्षुभ्ना	क्षुभ्नाति	से.
१५२०.	णभ हिंसायाम् १५२०	नष्ट होना, दुःख देना	नभ्	नभ्ना	नभ्नाति	से.
१५२१.	तुभ हिंसायाम् १५२१	मार डालना, दुःख देना	तुभ्	तुभ्ना	तुभ्नाति	से.
१५२२.	क्लिशू विबाधने १५२२	क्लेश या दुःख देना	क्लिश्	क्लिश्ना	क्लिश्नाति	वे.
१५२३.	अश भोजने १५२३	खाना, भोगना	अश्	अश्ना	अश्नाति	से.
१५२४.	उध्रस् उञ्छे १५२४	बीनना, एक एक करके चुनना	ध्रस्	ध्रस्ना	ध्रस्नाति उध्रस्नाति	से.
१५२५.	इष आभीक्ष्ण्ये १५२५	बार बार करना	इष्	इष्णा	इष्णाति	से.
१५२६.	विष विप्रयोगे १५२६	अलग करना निकाल देना,	विष्	विष्णा	विष्णाति	अ.

१५२७. प्रुष १५२७	सौम्य होना, स्निग्ध होना, पूर्ण करना	प्रुष	प्रुष्णा	प्रुष्णाति से.
१५२८. प्लुष स्नेहन - सेवनपूरणेषु १५२८	सौम्य होना, स्निग्ध होना, पूर्ण करना	प्लुष्	प्लुष्णा	प्लुष्णाति से.
१५२९. पुष पुष्टौ १५२९	पोषण करना पालन करना	पुष्	पुष्णा	पुष्णाति से.
१५३०. मुष स्तेये १५३०	चुराना, जकड़ना,	मुष्	मुष्णा	मुष्णाति से.
१५३१. खच भूतप्रादुर्भावे १५३१	बाँधना, पुनर्जन्म होना	खच्	खच्ञा	खच्ञाति से.
१५३२. हेठ च १५३२	जकड़ना, बाँधना, पुनर्जन्म होना	हेठ्	हेठ्णा	हेठ्णाति से.

'श्ना' प्रत्यय परे होने पर 'ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च' सूत्र से ग्रह् धातु को सम्प्रसारण करें।

१५३३. ग्रह उपादाने १५३३	लेना, स्वीकार करना	ग्रह्	गृह्णा	गृह्णाति से. गृह्णीते

चुरादिगण

चुरादिगण के धातुओं में **'सत्यापपाशरूपवीणातूलश्लोकसेनालोमत्वचवर्म-वर्णचूर्णचुरादिभ्यो णिच्'** सूत्र से पहिले स्वार्थ में णिच् प्रत्यय लगाया जाता है। णिच् प्रत्यय लगाने के बाद ही इनसे 'कर्तरि शप्' सूत्र से शप् विकरण लगाया जाता है। अतः यहाँ चुरादिगण के धातुओं में णिच् प्रत्यय लगाने के बाद 'शप्' विकरण लगाकर कर्त्रर्थक तिङ्, कृत् सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग बनाये गये हैं।

चुरादिगण के धातुओं में पद का निर्णय -

णिचश्च - चुरादिगण के धातुओं में, स्वार्थ में णिच् प्रत्यय लगाया जाता है। णिच् प्रत्यय लगने से, ये सारे धातु णिजन्त हो जाते है। जो धातु णिजन्त होते हैं, उनमें परस्मैपद या आत्मनेपद में से, कोई भी प्रत्यय लगाये जा सकते हैं।

किन्तु कुछ धातु इसके अपवाद हैं -

आकुस्मादात्मनेपदिनः - चुरादिगण में १८१२ से १८५० तक जो धातु हैं, उनका नाम 'आकुस्मीय' धातु है। इन धातुओं से णिच् प्रत्यय लगने के बाद भी इनमें केवल आत्मनेपद के प्रत्यय लगाये जाते हैं, परस्मैपद के नहीं।

आगर्वादात्मनेपदिनः - चुरादिगण में १८५१ से १८६० तक जो धातु हैं, उनका नाम 'आगर्वीय' धातु है। इन धातुओं से णिच् प्रत्यय लगने के बाद भी इनमें केवल

आत्मनेपद के प्रत्यय लगाये जाते हैं, परस्मैपद के नहीं।

आगर्वीय, आकुस्मीय धातुओं को छोड़कर शेष सारे चुरादिगण के धातु उभयपदी होते हैं।

विशेष – चुरादिगण के भीतर आपको एक वर्ग में 'वैकल्पिक णिच् वाले धातु' मिलेंगे। इनमें जब णिच् प्रत्यय लगेगा, तब तो इनसे परस्मैपद या आत्मनेपद में से, कोई भी प्रत्यय लग सकेंगे किन्तु जब इनसे णिच् न लगकर केवल शप् विकरण लगेगा, तब इनसे 'शेषात् कर्तरि परस्मैपदम्' सूत्र से केवल परस्मैपद के प्रत्यय लगेंगे।

ये वैकल्पिक णिच् वाले धातु भी यदि 'अनुदात्तेत्' या 'ङित्' हों तब इनसे भी केवल आत्मनेपद के प्रत्यय लगेंगे, परस्मैपद के नहीं।

ये वैकल्पिक णिच् वाले धातु यदि 'स्वरितेत्' या 'ञित्' हों, तब इनसे परस्मैपद या आत्मनेपद में से, कोई भी प्रत्यय लग सकेंगे।

इडागम विचार – चुरादिगण के सारे धातुओं में स्वार्थिक णिच् प्रत्यय लगता है, अत: ये अनेकाच् हो जाते हैं। अनेकाच् हो जाने के कारण ये सब सेट् ही होते हैं।

चुरादिगण के अजन्त धातु

१५३४.	ज्ञा नियोगे १७३२	आज्ञा देना	ज्ञा	ज्ञापय	ज्ञापयति/ ते	से.
१५३५.	चिञ् चयने १६२९	चुनना, बटोरना	चि	चयय	चययति/ ते	से.
१५३६.	च्यु सहने हसने चेत्येके १७४६	हँसना, सहना	च्यु	च्यावय	च्यावयति/ते	से.
१५३७.	भुवोऽवकल्कने चिन्तने इत्येके	मिश्रित करना, सोचना	भू	भावय	भावयति/ ते	से.
१५३८.	घृ प्रस्रवणे १६५०	बहना	घृ	घारय	घारयति/ ते	से.
१५३९.	पॄ पूरणे १५४८	भरना	पॄ	पारय	पारयति/ ते	से.

अदुपध धातु

१५४०.	लड उपसेवायाम् १५४०	पालन करना, लाड़ करना	लड्	लाडय	लाडयति/ ते	से.
१५४१.	जल अपवारणे १५४३	जाल से ढाँकना छुपाना	जल्	जालय	जालयति/ ते	से.
१५४२.	नट अवस्यन्दने १५४५	गिरना, नाचना	नट्	नाटय	नाटयति/ ते	से.
१५४३.	श्रथ प्रयत्ने १५४६	प्रयत्न करना	श्रथ्	श्राथय	श्राथयति/ ते	से.

१५४४.	बध संयमने १५४७	बाँधना	बध्	बाधय	बाधयति/ते	से
१५४५.	प्रथ प्रख्याने १५५३	फैलाना, बखान करना, जाहिर करना	प्रथ्	प्राथय	प्राथयति/ते	से.
१५४६.	शठ १५६४	ठीक न बनना,	शठ्	शाठय	शाठयति/ते	से.
१५४७.	श्वठ असंस्कारगत्यो: श्वठि इत्येके १५६५	ठीक न बनना, अधूरा छोडना	श्वठ्	श्वाठय	श्वाठयति/ते	से.
१५४८.	श्रण दाने १५७८	देना	श्रण्	श्राणय	श्राणयति/ते	से.
१५४९.	तड आघाते १५७९	मारना	तड्	ताडय	ताडयति/ते	से.
१५५०.	खड भेदने १५८०	टुकड़े करना	खड्	खाडय	खाडयति/ते	से.
१५५१.	क्षल शौचकर्मणि १५९७	स्वच्छ करना, धोना	क्षल्	क्षालय	क्षालयति/ते	से.
१५५२.	तल प्रतिष्ठायाम् १५९८	पूर्ण करना, स्थापित करना	तल्	तालय	तालयति/ते	से.
१५५३.	कल क्षेपे १६०४	फेंकना	कल्	कालय	कालयति/ते	से.
१५५४.	चल भृतौ १६०८	पालना, बढ़ाना	चल्	चालय	चालयति/ते	से.
१५५५.	लष हिंसायाम् १६१०	हिंसा करना	लष्	लाषय	लाषयति/ते	से.
१५५६.	व्रज मार्ग - संस्कारगत्यो: १६१७	पूरा करना, सिद्ध करना	व्रज्	व्राजय	व्राजयति/ते	से.
१५५७.	गज शब्दार्थ: १६४७	शब्द करना	गज्	गाजय	गाजयति/ते	से.
१५५८.	ह्लप व्यक्तायां वाचि १६५८ क्लप इत्येके, ह्वप इत्यन्ये	स्पष्ट बोलना	ह्लप	ह्लापय	ह्लापयति/ते	से.
१५५९.	कण निमीलने १७१५	आँख मूँदना	कण्	काणय	काणयति/ते	से.
१५६०.	पश बन्धने १७१९	बाँधना	पश्	पाशय	पाशयति/ते	से.
१५६१.	अम रोगे १७२०	रोगी होना,	अम्	आमय	आमयति/ते	से.
१५६२.	चट भेदने १७२१	चटकाना, तोड़ना	चट्	चाटय	चाटयति/ते	से.
१५६३.	घट संघाते १७२३	इकट्ठा करना	घट्	घाटय	घाटयति/ते	से.
१५६४.	लस शिल्पयोगे १७२८	कुशल होना	लस्	लासय	लासयति/ते	से.
१५६५.	भज विश्राणने १७३३	देना, भोजन - पकाना	भज्	भाजय	भाजयति/ते	से.
१५६६.	यत निकारो - पस्कारयो: १७३५	अपमान करना, बदला लेना, चुकाना	यत्	यातय	यातयति/ते	से.
१५६७.	रक १७३६	स्वाद लेना	रक्	राकय	राकयति/ते	से.

१५६८.	लग आस्वादने १७३७	स्वाद लेना	लग्	लागय	लागयति/ते	से.
१५६९.	त्रस धारणे १७४१	पकड़ना, जबरन लेना, डराना	त्रस्	त्रासय	त्रासयति/ते	से.
१५७०.	नस स्नेहच्छेदा - पहरणेषु १७४४	दया करना, कतरना, अपहरण करना	नस्	नासय	नासयति/ते	से.
१५७१.	चर संशये १७४५	संशय करना, विचार करना	चर्	चारय	चारयति/ते	से.
१५७२.	ष्वद आस्वादने १८०५	स्वाद लेना	स्वद्	स्वाद	स्वादयति/ते	से.

चुरादिगण के मित् धातु - अब ज्ञप से चिञ् तक ६ धातु बतलाये जा रहे हैं। ये धातु मित् धातु कहलाते हैं।

हम जानते हैं कि चुरादिगण के धातुओं में स्वार्थिक णिच् प्रत्यय लगता है। इसके लगने पर केवल 'ज्ञप' से 'चिञ्' तक धातु ही मित् होते है, अन्य नहीं। इसी भाव से यहाँ गणसूत्र बनाया गया है -

नान्ये मितोऽहेतौ - णिच् प्रत्यय दो प्रकार का होता है। चुरादिगण में लगने वाला स्वार्थिक णिच्, और प्रयोज्य प्रयोजक व्यापार होने पर **'हेतुमति च'** सूत्र से लगने वाला णिच् प्रत्यय।

इनमें से जिन धातुओं में स्वार्थिक णिच् लगता है, उनमें केवल ज्ञप से चिञ् तक छह धातु ही मित् कहलाते हैं और मित् होने के कारण, **'मितां ह्रस्वः'** सूत्र से केवल इन्हीं की उपधा को ह्रस्व होता है।

ज्ञपादि छह मित् धातु

१५७३.	ज्ञप ज्ञानज्ञापन - मारणतोषण निशामनेषु १६२४	बताना, ज्ञापित - करना, मार डालना, प्रसन्न करना	ज्ञप	ज्ञपय	ज्ञपयति/ते	से.
१५७४.	यम च परिवेषणे चान्मित् १६२५	परोसना	यम्	यमय	यमयति/ते	से.
१५७५.	चह परिकल्कने चप इत्येके १६२६	ठगना, दुष्कर्मी होना, कूटना	चह्	चहय	चहयति/ते	से.
१५७६.	रह त्यागे १६२७	छोड़ना, अकेला करना	रह्	रहय	रहयति/ते	से.
१५७७.	बल प्राणने १६२८	शक्ति देना,	बल्	बलय	बलयति/ते	से.

	चिञ् चयने १६२९	बटोरना, चुनना	चि	चयय	चययति/ते	से.

इदुपध धातु

१५७८.	पिस गतौ १५६८	जाना	पिस्	पेसय	पेसयति/ते	से.
१५७९.	ष्णिह स्नेहने १५७२	चिकना करना	स्नेह्	स्नेहय	स्नेहयति/ते	से.
१५८०.	स्मिट अनादरे १५७३	अनादर करना	स्मिट्	स्मेटय	स्मेटयति/ते	से.
१५८१.	श्लिष श्लेषणे १५७४	चिपकना, आलिङ्गन करना	श्लिष्	श्लेषय	श्लेषयति/ते	से.
१५८२.	पिच्छ कुट्टने १५७६	कूटना	पिच्छ्	पिच्छय	पिच्छयति/ते	से.
१५८३.	विल क्षेपे १६०५	आक्षेप करना	विल्	वेलय	वेलयति/ते	से.
१५८४.	बिल भेदने १६०६	बिल बनाना, भेद करना	बिल्	बेलय	बेलयति/ते	से.
१५८५.	तिल स्नेहने १६०७	चिकना करना	तिल्	तेलय	तेलयति/ते	से.
१५८६.	तिज निशातने १६५२	तेज करना	तिज्	तेजय	तेजयति/ते	से.
१५८७.	डिप क्षेपे १६७१	आक्षेप करना	डिप्	डेपय	डेपयति/ते	से.
१५८८.	इल प्रेरणे १६६०	प्रेरित करना	इल्	एलय	एलयति/ते	से.

उदुपध धातु

१५८९.	चुर स्तेये १५३४	चोरी करना	चुर्	चोरय	चोरयति/ते	से.
१५९०.	चुद संचोदने १५९२	हाँकना, प्रेरित करना	चुद्	चोदय	चोदयति/ते	से.
१५९१.	तुल उन्माने १५९९	तौलना	तुल्	तोलय	तोलयति/ते	से.
१५९२.	दुल उत्क्षेपे १६००	उचकाना, उठाना	दुल्	दोलय	दोलयति/ते	से.
१५९३	पुल महत्वे १६०१	ढेर होना, बढ़ना	पुल्	पोलय	पोलयति/ते	से.
१५९४.	चुल समुच्छ्राये १६०२	बढ़ाना, भिगोना	चुल्	चोलय	चोलयति/ते	से.
१५९५.	चुट छेदने १६१३	कतरना, चोट मारना,	चुट्	चोटय	चोटयति/ते	से.
१५९६.	मुट संचूर्णने १६१४	चूर्ण करना, मर्दन करना	मुट्	मोटय	मोटयति/ते	से.
१५९७.	शुठ आलस्ये १६४४	आलस्य करना	शुठ्	शोठय	शोठयति/ते	से.

१५९८.	जुड प्रेरणे १६४६	प्रेरणा करना, भेजना, चूर्ण करना	जुड्	जोडय	जोडयति/ते	से.
१५९९.	स्फुट भेदने १७२२	कतरना, छेदना,	स्फुट्	स्फोटय	स्फोटयति/ते	से.
१६००.	मुद संसर्गे १७४०	मिश्रित करना, एकत्र करना	मुद्	मोदय	मोदयति/ते	से.
१६०१.	मुच प्रमोचने मोदने च १७४३	छोड़ना, द्रव्यादि देना, प्रसन्न होना	मुच्	मोचय	मोचयति/ते	से.
१६०२.	रुष रोषे, रुट इत्येके १६७०	क्रोध करना, गुस्सा करना	रुष्	रोषय	रोषयति/ते	से.
१६०३.	ष्टुप समुच्छ्राये	ढेर करना, राशि करना	स्तुप्	स्तोपय	स्तोपयति/ते	से.
१६०४.	घुषिर् विशब्दने १७२६	घोषित करना	घुष्	घोषय	घोषयति/ते	से.

ऋदुपध धातु

१६०५.	पृथ प्रक्षेपे १५५४	फेंकना, उड़ाना	पृथ	पर्थय	पर्थयति/ते	से.

चुरादिगण के शेष धातु

१६०६.	पुंस अभिवर्धने १६३७	बढ़ना, वृद्धि होना, बढ़ाना	पुंस्	पुंसय	पुंसयति/ते	से.
१६०७.	षम्ब सम्बन्धने १५५५	संयोग करना, ढेर करना	सम्ब्	सम्बय	सम्बयति/ते	से.
१६०८.	शम्ब सम्बन्धने १५५६	ढेर करना, राशि करना	शम्ब्	शम्बय	शम्बयति/ते	से.
१६०९.	लुण्ट स्तेये १५६३	चुराना	लुण्ट्	लुण्टय	लुण्टयति/ते	से.
	अञ्चु विशेषणे १७३८	विशेषित करना, पृथक् करना	अञ्च्	अञ्चय	अञ्चयति/ते	से.
	वञ्चु प्रलम्भने १७०३	ठगना, फँसाना, प्रताड़ना देना	वञ्च्	वञ्चय	वञ्चयति/ते	से.
१६१०.	चिति स्मृत्याम् १५३५	चिन्ता करना, सोचना	चिन्त्	चिन्तय	चिन्तयति/ते	से.
१६११.	यत्रि संकोचे १५३६	यन्त्रणा देना	यन्त्र्	यन्त्रय	यन्त्रयति/ ते	से.
१६१२.	स्फुडि परिहासे	विनोद करना,	स्फुन्ड्	स्फुण्डय	स्फुण्डयति /ते	से.

	१५३७					
१६१३.	कुद्रि अनृतभाषणे १५३९	झूठ बोलना	कुन्द्र	कुन्द्रय	कुन्द्रयति/ ते	से.
१६१४.	मिदि स्नेहने १५४१	चिकना होना, पिघलना	मिन्द्	मिन्दय	मिन्दयति/ते	से.
१६१५	ओलडि उत्क्षेपणे १५४२	ऊपर को फेंकना, ऊपर उड़ाना	लन्ड्	लण्डय	लण्डयति/ते	से.
१६१६.	तुजि १५६६	मार डालना, रहना, चमकना	तुन्ज्	तुञ्जय	तुञ्जयति/ते	से.
१६१७.	पिजि हिंसा - बलादाननिकेतनेषु तुज, पिज इति केचित्। लज, लुजि इत्येके १५६७	मार डालना रहना, चमकना वास देना	पिन्ज्	पिञ्जय	पिञ्जयति/ते	से.
१६१८.	पथि गतौ १५७५	जाना, घूमना	पन्थ्	पन्थय	पन्थयति/ते	से.
१६१९.	छदि संम्वरणे १५७७	ढाँकना, आच्छादन करना	छन्द्	छन्दय	छन्दयति/ते	से.
१६२०.	खडि १५८१	टुकड़े करना, खण्डित करना	खन्ड्	खण्डय	खण्डयति/ते	से.
१६२१.	कुडि भेदने १५८२	टुकड़े करना	कुन्ड्	कुण्डय	कुण्डयति/ते	से.
१६२२.	कुडि रक्षणे १५८३	रक्षा करना, सँभालना	कुन्ड्	कुण्डय	कुण्डयति/ते	से.
१६२३.	गुडि वेष्टने १५८४	घेरना, पीसना	गुन्ड्	गुण्डय	गुण्डयति/ते	से.
१६२४.	खुडि खण्डने १५८५	चीरना, टुकड़े करना	खुन्ड्	खुण्डय	खुण्डयति/ते	से.
१६२५.	वटि विभाजने १५८६	पृथक् करना, बाँटना	वन्ट्	वण्टय	वण्टयति/ते	से.
१६२६.	मडि भूषायाम् हर्षे च १५८७	सँवारना, आनन्दित करना	मन्ड्	मण्डय	मण्डयति/ते	से.
१६२७.	भडि कल्याणे १५८८	शुद्ध करना	भन्ड्	भण्डय	भण्डयति/ते	से.

१६२८.	पडि नाशने १६१५	नष्ट करना	पन्ड्	पण्डय	पण्डयति/ते	से.
१६२९	पसि नाशने १६१६	नष्ट करना	पंस्	पंसय	पंसयति/ ते	से.
१६३०.	चपि गत्याम् १६१९	जाना	चम्प्	चम्पय	चम्पयति/ते	से.
१६३१.	क्षपि क्षान्त्याम् १६२०	सहना, दया करना	क्षम्प्	क्षम्पय	क्षम्पयति/ते	से.
१६३२.	छजि कृच्छ्र - जीवने १६२१	तंगी से जीना	छन्ज्	छञ्जय	छञ्जयति/ते	से.
१६३३.	चुबि हिंसायाम् १६३५	मार डालना	चुम्ब्	चुम्बय	चुम्बयति/ते	से.
१६३४.	टकि बन्धने १६३८	बाँधना, टाँकना	टन्क्	टङ्कय	टङ्कयति/ते	से.
१६३५.	शुठि शोषणे १६४५	सूखना, सुखाना	शुन्ठ्	शुण्ठय	शुण्ठयति/ते	से.
१६३६.	पचि विस्तारवचने १६५१	फैलना, पसारना, विस्तार से कहना	पन्च्	पञ्चय	पञ्चयति/ते	से.
१६३७	कुबि आच्छादने १६५५	आच्छादित करना	कुम्ब्	कुम्बय	कुम्बयति/ते	से.
१६३८.	लुबि १६५६	अन्तर्हित होना, गुप्त होना	लुम्ब्	लुम्बय	लुम्बयति/ते	से.
१६३९.	तुबि अदर्शने १६५७	अन्तर्हित होना, गुप्त होना	तुम्ब्	तुम्बय	तुम्बयति/ते	से.
१६४०.	चुटि छेदने १६५९	कतरना, नोचना	चुन्ट्	चुण्टय	चुण्टयति/ते	से.
१६४१.	जसि रक्षणे १६६६	संरक्षण करना	जंस	जंसय	जंसयति/ते	से.
१६४२.	पिडि सङ्घाते १६६९	राशि करना	पिन्ड्	पिण्डय	पिण्डयति/ते	से.
१६४३.	जभि नाशने १७१६	नष्ट करना	जम्भ्	जम्भय	जम्भयति/ते	से.
१६४४.	तसि अलङ्करणे १७२९	सजाना, अलंकृत करना	तंस्	तंसय	तंसयति/ते	से.
१६४५.	लिगि चित्रीकरणे १७३९	अनेक तरह का रंग देना	लिन्ग्	लिङ्गय	लिङ्गयति/ते	से.
१६४६.	घट्ट चलने १६३०	स्थानान्तर करना	घट्ट्	घट्टय	घट्टयति/ ते	से.
१६४७.	मुस्त सङ्घाते १६३१	ढेर करना बटोरना, एकत्र करना	मुस्त्	मुस्तय	मुस्तयति/ ते	से.

१६४८.	खट्ट संवरणे १६३२	आच्छादन करना	खट्ट्	खट्टय	खट्टयति/ते	से.
१६४९.	षट्ट १६३३	मार डालना	सट्ट्	सट्टय	सट्टयति/ ते	से.
१६५०.	स्फिट्ट हिंसायाम् १६३४	मार डालना	स्फिट्ट्	स्फिट्टय	स्फिट्टयति/ते	से.
१६५१.	पूल सङ्घाते १६३६	ढेर करना, बटोरना	पूल्	पूलय	पूलयति/ते	से.
१६५२.	धूस कान्तिकरणे १६३९	शोभित होना,	धूस्	धूसय	धूसयति/ते	से.
१६५३.	कीट वर्णे १६४०	रँगना, बाँधना	कीट्	कीटय	कीटयति/ते	से.
१६५४.	चूर्ण सङ्कोचने १६४१	प्रेरणा करना, आकर्षण करना	चूर्ण्	चूर्णय	चूर्णयति/ते	से.
१६५५	पूज पूजायाम् १६४२	पूजा करना,	पूज्	पूजय	पूजयति/ते	से.
१६५६.	मार्ज शब्दार्थः १६४८	शब्द करना	मार्ज्	मार्जय	मार्जयति/ते	से.
१६५७.	मर्च च १६४९	शब्द करना	मर्च्	मर्चय	मर्चयति/ते	से.
१६५८.	कृत संशब्दने १६५३	प्रसिद्ध करना, कीर्तित करना	कीर्त्	कीर्तय	कीर्तयति/ते	से.
१६५९.	वर्ध छेदनपूरणयोः १६५४	काटना, चीरना	वर्ध्	वर्धय	वर्धयति/ते	से.
१६६०.	म्रक्ष म्लेच्छने १६६१	मिश्रित करना अशुद्ध करना	म्रक्ष्	म्रक्षय	म्रक्षयति/ते	से.
१६६१.	म्लेच्छ अव्यक्तायां वाचि १६६२	अस्पष्ट बोलना, जंगली भाषा बोलना, अशुद्ध बोलना	म्लेच्छ्	म्लेच्छय	म्लेच्छयति/ते	से.
१६६२.	ब्रूस १६६३	मार डालना दुःख देना	ब्रूस्	ब्रूसय	ब्रूसयति/ ते	से.
१६६३.	बर्ह हिंसायाम् १६६४	मार डालना, दुःख देना	बर्ह्	बर्हय	बर्हयति/ते	से.
१६६४.	गुर्द पूर्वनिकेतने १६६५	वास करना, आमंत्रण करना	गूर्द्	गूर्दय	गूर्दयति/ते	से.
१६६५	ईड स्तुतौ १६६७	प्रशंसा करना,	ईड्	ईडय	ईडयति/ते	से.

		स्तुति करना				
१६६६.	चर्च अध्ययने १७१२	पढ़ना, पदच्छेद करना	चर्च्	चर्चय	चर्चयति/ते	से.
१६६७.	बुक्क भषणे १७१३	भौंकना, कुत्ते के समान शब्द करना	बुक्क्	बुक्कय	बुक्कयति/ते	से.
१६६८.	शब्द उपसर्गा - दाविष्कारे च १७१४	शब्द करना	शब्द्	शब्दय	शब्दयति/ते	से.
१६६९.	षूद क्षरणे १७१७	झरना, अमानत रखना	सूद्	सूदय	सूदयति/ते	से.
१६७०.	अर्ज प्रतियत्ने १७२५	उद्योग करना, अर्जन करना	अर्ज्	अर्जय	अर्जयति/ते	से.
१६७१.	आङः क्रन्द सातत्ये १७२७	बुलाना, पुकारना	आक्रन्द्	आक्रन्दय	आक्रन्दयति/ते	से.
१६७२.	भूष अलङ्करणे १७३०	सँवारना, अलंकृत करना	भूष्	भूषय	भूषयति/ते	से.
१६७३.	लक्ष दर्शनाङ्क - नयो: १५३८	संकेत लगाना, निरूपण करना	लक्ष्	लक्षय	लक्षयति/ते	से.
१६७४.	पीड अवगाहने १५४४	प्रतिकूल होना, पीड़ा देना	पीड्	पीडय	पीडयति/ते	से.
१६७५.	ऊर्ज बलप्राणनयो: १५४९	शक्तिमान् होना, जिलाना	ऊर्ज्	ऊर्जय	ऊर्जयति/ते	से.
१६७६.	पक्ष परिग्रहे १५५०	ग्रहण करना, पक्षपात करना, एक ओर होना	पक्ष्	पक्षय	पक्षयति/ते	से.
१६७७.	वर्ण १५५१	बखानना, प्रकाशित करना	वर्ण्	वर्णय	वर्णयति/ते	से.
१६७८.	चूर्ण प्रेरणे १५५२	खींचना पीसना	चूर्ण	चूर्णय	चूर्णयति/ते	से.
१६७९.	भक्ष अदने १५५७	खाना	भक्ष्	भक्षय	भक्षयति/ते	से.
१६८०.	कुट्ट छेदन - भर्त्सनयो: १५५८	कतरना, दोष लगाना	कुट्ट्	कुट्टय	कुट्टयति/ते	से.

१६८१.	पुट्ट १५५९	घटना, न्यून होना	पुट्ट्	पुट्टय	पुट्टयति/ते	से.
१६८२.	चुट्ट अल्पीभावे १५६०	कम होना	चुट्ट्	चुट्टय	चुट्टयति/ते	से.
१६८३.	अट्ट १५६१	अनादर करना, सूक्ष्म होना	अट्ट्	अट्टय	अट्टयति/ते	से.
१६८४.	षुट्ट अनादरे १५६२	अपमान करना, थाह लगाना	सुट्ट्	सुट्टय	सुट्टयति/ते	से.
१६८५	षान्त्व सम्प्रयोगे १५६९	समाधान करना	सान्त्व्	सान्त्वय	सान्त्वयति/ते	से.
१६८६.	श्वल्क परिभाषणे १५७०	भाषण करना, बोलना	श्वल्क्	श्वल्कय	श्वल्कयति/ते	से.
१६८७.	वल्क परिभाषणे १५७१	बोलना	वल्क्	वल्कय	वल्कयति/ते	से.
१६८८.	छर्द वमने १५८९	वमन करना, कै करना	छर्द्	छर्दय	छर्दयति/ते	से.
१६८९.	पुस्त १५९०	आदर करना, अनादर करना	पुस्त्	पुस्तय	पुस्तयति/ते	से.
१६९०.	बुस्त आदरा - नादरयोः १५९१	आदर सत्कार देना, धिक्कारना	बुस्त्	बुस्तय	बुस्तयति/ते	से.
१६९१.	नक्क १५९३	उच्छेद करना	नक्क्	नक्कय	नक्कयति/ते	से.
१६९२.	धक्क नाशने १५९४	नष्ट करना, हटाना	धक्क्	धक्कय	धक्कयति/ते	से
१६९३.	चक्क १५९५	दुःख देना	चक्क्	चक्कय	चक्कयति/ते	से
१६९४.	चुक्क व्यथने १५९६	दुःख देना दुःख होना	चुक्क्	चुक्कय	चुक्कयति/ते	से.
१६९५.	मूल रोहणे १६०३	बीजारोपण - करना, बोना	मूल्	मूलय	मूलयति/ ते	से.
१६९६.	पाल रक्षणे १६०९	पालन करना, संरक्षण करना	पाल्	पालय	पालयति/ते	से.
१६९७.	शुल्ब माने १६११	नापना, गिनना तौलना	शुल्ब्	शुल्बय	शुल्बयति/ते	से.
१६९८.	शूर्प च १६१२	नापना, तौल	शूर्प्	शूर्पय	शूर्पयति/ते	से.

		करना, गिनना				
१६९९.	शुल्क अतिस्पर्शने अतिसर्जने इत्येके १६१८	उत्पत्ति कर देना	शुल्क्	शुल्कय	शुल्कयति/ते	से.
१७००.	श्वर्त गत्याम् १६२२	जाना, गड्ढे में गिरना	श्वर्त्	श्वर्तय	श्वर्तयति/ते	से.
१७०१.	श्वभ्र च १६२३	जाना, छेदना	श्वभ्र्	श्वभ्रय	श्वभ्रयति/ते	से.
१७०२.	अर्ह पूजायाम् १७३१	पूजा करना, पूजनीय होना	अर्ह्	अर्हय	अर्हयति/ते	से.
१७०३.	बर्ह १७६९	चमकना, बोलना	बर्ह्	बर्हय	बर्हयति/ते	से.
१७०४.	वल्ह भाषार्थौ, भासार्थौ वा १६७०	प्रकाशित होना, बोलना	वल्ह्	वल्हय	वल्हयति/ते	से.
१७०५.	अर्क स्तवने तपन इत्येके १६४३	तपाना, प्रशंसा करना	अर्क्	अर्कय	अर्कयति/ते	से.

चुरादिगण के वैकल्पिक णिच् वाले धातु

अब चुरादिगण के वे धातु बतला रहे हैं, जिनमें णिच् प्रत्यय विकल्प से लगता है।

१. चुरादिगण के वैकल्पिक णिच् वाले ईदित्, उदित्, ऊदित्, धातु

चुरादिगण के **ईदित्, उदित्, ऊदित्,** धातुओं से णिच् प्रत्यय विकल्प से लगता है। जब णिच् लगता है, तब 'णिचश्च' सूत्र से दोनों पदों के प्रत्यय लग सकते हैं।

जब णिच् नहीं लगता है, तब केवल शप् लगाकर 'शेषात् कर्तरि परस्मैपदम्' सूत्र से केवल परस्मैपदी प्रत्यय लगते हैं।

ये वैकल्पिक णिच् वाले धातु यदि 'स्वरितेत्' या 'ञित्' हों, तब इनसे णिच् प्रत्यय न होने पर भी 'स्वरितञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले' सूत्र से परस्मैपद या आत्मनेपद में से, कोई भी प्रत्यय लग सकेंगे।

चुरादिगण के ईदित्, उदित्, ऊदित्, धातु

	पूरी आप्यायने १८०३	आनन्द करना, संतोष होना, भरना	पूर्	पूरय पूर	पूरयति/ते पूरति	से.
१७०६.	अञ्चु विशेषणे १७३८	विशेषित करना, पृथक् करना	अञ्च्	अञ्चय अञ्च	अञ्चयति/ते अञ्चति	से.
१७०७	दिवु मर्दने १७२४	मसलना	दिव्	देवय	देवयति/ते	से.

				देव	देवति	
१७०८.	जसु ताडने	मारना	जस्	जासय	जासयति/ते	से.
	१७१८			जस	जसति	
१७०९	जसु हिंसायाम्	जान से मारना	जस्	जासय	जासयति/ते	से.
	१६६८			जस	जसति	
१७१०.	शृधु प्रसहने	सहना	शृध्	शर्धय	शर्धयति/ते	से.
	१७३४			शर्ध	शर्धति	
१७११.	वृतु १७८१	बोलना, चमकना	वृत्	वर्तय	वर्तयति/ते	से.
				वर्त	वर्तति	
१७१२.	वृधु भाषार्थौ	बोलना, चमकना	वृध्	वर्धय	वर्धयति/ते.	से.
	१७८२			वर्ध	वर्धति	
	तनु श्रद्धोपकर -	भरोसा करना	तन्	तानय	तानयति/ते	से.
	णयोः, उपसर्गाच्च	आश्रय देना		तन	तनति	
	दैर्घ्ये, चन श्रद्धो -	शब्द करना				
	पहननयोः इत्येके १८४०					
१७१३.	उध्रस उञ्छे	बीनना	उध्रस्	उध्रासय	उध्रासयति/ते	से.
	१७४२			उध्रस	उध्रसति	
				ध्रस	ध्रसति	
	मृजू शौचालङ्का -	स्वच्छ करना,	मृज्	मार्जय	मार्जयति/ते	से.
	रयोः १८४८	धोना		मार्ज	मार्जति	
	वञ्चु प्रलम्भने	ठगना, फँसाना,	वञ्च्	वञ्चय	वञ्चयते	से.
	१७०३	प्रताड़ना देना		वञ्च	वञ्चति	

ध्यान रहे कि कृप तथा भू धातुओं से 'अवकल्कन अर्थात् मिलाने' अर्थ में ही णिच् होता है। अन्य अर्थ में नहीं।

	भुवोऽवकल्कने	मिश्रित करना,	भू	भावय	भावयति/ ते	से.
	चिन्तने इत्येके	सोचना		भव	भवति	से.
१७१४.	कृप अवकल्कने	मिलाना	कल्प्	कल्पय	कल्पयति/ते	से.
	१७४८	चिन्ता करना		कल्प	कल्पति	

२. चुरादिगण के वैकल्पिक णिच् वाले आस्वदीय अन्तर्गण के धातु

गणसूत्र - आस्वदः सकर्मकात् - आस्वदीय धातु जब सकर्मक होते हैं,

तभी इनसे णिच् प्रत्यय होता है। किन्तु जब ये धातु अकर्मक होते हैं तब उनसे केवल शप् प्रत्यय लगता है, णिच् प्रत्यय नहीं लगता।

१७१५.	ग्रस ग्रहणे १७४९	घेर लेना	ग्रस्	ग्रासय ग्रस	ग्रासयति/ते ग्रसति	से.
१७१६.	दल विदारणे १७५१	दलना	दल्	दालय दल	दालयति/ते दलति	से.
१७१७.	रुज हिंसायाम् १८०४	मारना	रुज्	रोजय रोज	रोजयति/ते रोजति	से.
१७१८.	पुष धारणे १७५०	धारण करना	पुष्	पोषय पोष	पोषयति/ते पोषति	से.

अब जि १७१९ से लेकर तर्क १७६५ तक जो धातु हैं, उनका अर्थ धातुपाठ में लिखा है 'भाषार्थाः, भासार्थाः वा'। इसका अर्थ है - चमकना, प्रकाशित होना, बोलना आदि। परन्तु यहाँ यह जानना चाहिये कि धातुपाठ में दिये हुए अर्थनिर्देश उपलक्षणमात्र हैं। उनके अर्थ लोक में ढूँढ़ना चाहिये। इतने सारे धातु, एक सामान्य अर्थ को लेकर नहीं हैं। अब सारे 'भाषार्थक, भासार्थक' धातु बतला रहे हैं।

१७१९.	जि (जुचि) १७९३	प्रकाशित करना	जि	जायय जय	जाययति/ते जयति	से.
१७२०.	चि १७९४	प्रकाशित करना	चि	चायय चय	चाययति/ते चयति	से.
१७२१.	पट १७५२	चमकना, बोलना	पट्	पाटय पट	पाटयति/ते पटति	से.
१७२२.	घट १७६६	चमकना, बोलना	घट्	घाटय घट	घाटयति/ते घटति	से.
१७२३.	णद १७७८	चमकना, बोलना	नद्	नादय नद	नादयति/ते नदति	से.
१७२४.	नट १७९१	चमकना, बोलना	नट्	नाटय नट	नाटयति/ते नटति	से.
१७२५.	तड १८०१	चमकना, बोलना	तड्	ताडय तड	ताडयति/ते तडति	से.
१७२६.	नल च १८०२	चमकना, बोलना	नल्	नालय नल	नालयति/ते नलति	से.
१७२७.	पुट १७५३	चमकना, बोलना	पुट्	पोटय	पोटयति/ते	से.

				पोट	पोटति	
१७२८.	लुट १७५४	चमकना, बोलना	लुट्	लोटय	लोटयति/ते	से.
				लोट	लोटति	
१७२९.	गुप १७७१	चमकना, बोलना	गुप्	गोपय	गोपयति/ते	से.
				गोप	गोपति	
१७३०.	पुथ १७७५	चमकना, बोलना	पुथ्	पोथय	पोथयति/ते	से.
				पोथ	पोथति	
१७३१.	कुप १७७९	चमकना, बोलना	कुप्	कोपय	कोपयति/ते	से.
				कोप	कोपति	
१७३२.	रुट १७८३	चमकना, बोलना	रुट्	रोटय	रोटयति/ते	से.
				रोट	रोटति	
	वृतु १७८१	बोलना, चमकना	वृत्	वर्तय	वर्तयति/ते	से.
				वर्त	वर्तति	
	वृधु १७८२	बोलना, चमकना	वृध्	वर्धय	वर्धयति/ते	से.
				वर्ध	वर्धति	
१७३३.	तुजि १७५५.	चमकना, बोलना	तुन्ज्	तुञ्जय	तुञ्जयति/ते	से.
				तुञ्ज	तुञ्जति	
१७३४.	मिजि १७५६	चमकना, बोलना	मिन्ज्	मिञ्जय	मिञ्जयति/ते	से.
				मिञ्ज	मिञ्जति	
१७३५.	पिजि १७५७	चमकना, बोलना	पिन्ज्	पिञ्जय	पिञ्जयति/ते	से.
				पिञ्ज	पिञ्जति	
१७३६.	लुजि १७५८	चमकना, बोलना	लुन्ज्	लुञ्जय	लुञ्जयति/ते	से.
				लुञ्ज	लुञ्जति	
१७३७	भजि १७५९	चमकना, बोलना	भन्ज्	भञ्जय	भञ्जयति/ते	से.
				भञ्ज	भञ्जति	
१७३८.	लघि १७६०	चमकना, बोलना	लन्घ्	लङ्घय	लङ्घयति/ते	से.
				लङ्घ	लङ्घति	
१७३९.	त्रसि १७६१	बोलना, चमकना	त्रंस्	त्रंसय	त्रंसयति/ते	से.
				त्रंस	त्रंसति	
१७४०.	पिसि १७६२	चमकना, बोलना	पिंस्	पिंसय	पिंसयति/ते	से.
				पिंस	पिंसति	
१७४१.	कुसि १७६३.	चमकना, बोलना	कुंस्	कुंसय	कुंसयति/ते	से.

					कुंस	कुंसति	
१७४२	दशि	१७६४	चमकना, बोलना	दंश्	दंशय	दंशयति/ते	, से.
					दंश	दंशति	
१७४३	कुशि	१७६५	चमकना, बोलना	कुंश्	कुंशय	कुंशयति/ते	से.
					कुंश	कुंशति	
१७४४	घटि	१७६७	चमकना, बोलना	घन्ट्	घण्टय	घण्टयति/ते	से.
					घण्ट	घण्टति	
१७४५	बृहि	१७६८	बढ़ना, चमकना,	बृंह्	बृंहय	बृंहयति/ते	से.
					बृंह	बृंहति	
१७४६.	लजि	१७८४	चमकना, बोलना	लन्ज्	लञ्जय	लञ्जयति/ते	से.
					लञ्ज	लञ्जति	
१७४७.	अजि	१७८५	चमकना, बोलना	अन्ज्	अञ्जय	अञ्जयति/ते	से.
					अञ्ज	अञ्जति	
१७४८.	दसि	१७८६	चमकना, बोलना	दंस्	दंसय	दंसयति/ते	से.
					दंस	दंसति	
१७४९.	भृशि	१७८७	चमकना, बोलना	भृंश्	भृंशय	भृंशयति/ते	से.
					भृंश	भृंशति	
१७५०.	रुशि	१७८८	चमकना, बोलना	रुंश्	रुंशय	रुंशयति/ते	से.
					रुंश	रुंशति	
१७५१.	रुसि	१७९०	चमकना, बोलना	रुंस्	रुंसय	रुंसयति/ते	से.
					रुंस	रुंसति	
१७५२.	पुटि	१७९२	चमकना, बोलना	पुन्ट्	पुण्ट्य	पुण्टयति/ते	से.
					पुण्ट	पुण्टति	
१७५३.	रघि	१७९५	चमकना, बोलना	रन्घ्	रङ्घय	रङ्घयति/ते	से.
					रंघ	रङ्घति	
१७५४.	लघि	१७९६	चमकना, बोलना	लन्घ्	लङ्घय	लङ्घयति/ते	से.
					लंघ	लङ्घति	
१७५५.	अहि	१७९७	चमकना, बोलना	अंह्	अहंय	अंहयति/ते	से
					अंह	अंहति	
१७५६.	रहि	१७९८	चमकना, बोलना	रंह्	रंहय	रंहयति/ते	से.
					रंह	रंहति	
१७५७.	महि	१७९९	चमकना, बोलना	मंह्	मंहय	मंहयति/ते	से.

धातु	अर्थ	मूल	अङ्ग	रूप	
			मंह	मंहति	
१७५८. लडि १८००	चमकना, बोलना	लन्ड्	लण्डय	लण्डयति/ते	से.
			लण्ड	लण्डति	
१७५९. विच्छ १७७३	चमकना, बोलना	विच्छ्	विच्छाय	विच्छाययति/ते	से.
			विच्छाय	विच्छायति	
१७६०.. चीव १७७४	चमकना, बोलना	चीव्	चीवय	चीवयति/ ते	से.
			चीव	चीवति	
१७६१. लोकृ १७७६	चमकना, बोलना	लोक्	लोकय	लोकयति/ ते	से.
			लोक	लोकति	
१७६२. लोचृ १७७७	चमकना, बोलना	लोच्	लोचय	लोचयति/ ते	से.
			लोच	लोचति	
१७६३. तर्क १७८०	चमकना, बोलना	तर्क्	तर्कय	तर्कयति/ते	से.
			तर्क	तर्कति	
१७६४. शीक १७८९	चमकना, बोलना	शीक्	शीकय	शीकयति/ते	से.
			शीक	शीकति	
१७६५ धूप १७७२ भाषार्था:, भासार्था: वा	चमकना, बोलना	धूप्	धूपाय	धूपाययति/ते	से.
			धूपाय	धूपायति	
१७६६ पूरी आप्यायने १८०३	आनन्द करना, संतोष होना, भरना	पूर्	पूरय	पूरयति/ते	से.
			पूर	पूरति	

३. चुरादिगण के वैकल्पिक णिच् वाले आधृषीय अथा युजादि अन्तर्गण के धातु

गणसूत्र - आधृषाद् वा - आधृषीय धातुओं से णिच् प्रत्यय विकल्प से लगता है। जब णिच् न लगे, तब केवल शप् लगाकर कर्त्रर्थक तिङ्, कृत् सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग बनता है। इन्हें युजादि धातु भी कहते हैं।

इकारान्त आधृषीय धातु

धातु	अर्थ	मूल	अङ्ग	रूप	
१७६७. ली द्रवीकरणे १८११	पतला करना, गलाना	ली	लायय	लाययति/ते	से.
			लय	लयति	
१७६८. ज्रि वयोहानौ १८१५	वृद्ध होना, जीर्ण होना	ज्रि	ज्रायय	ज्राययति/ते	से.
			ज्रय	ज्रयति	
१७६९. मी गतौ १८२४	समझना, जानना	मी	मायय	माययति/ते	से.

		जाना		मय	मयति	
१७७०.	प्रीञ् तर्पणे १८३६	प्रीति करना,	प्री	प्रीणय	प्रीणयति/ते	से.
		तृप्त करना		प्रायय	प्राययति/ते	
				प्रय	प्रयति / ते	

उकारान्त आधृषीय धातु

१७७१.	भू प्राप्तौ १८४४	प्राप्त होना,	भू	भावय	भावयते	से.
	आत्मनेपदी	मिल जाना,		भव	भवते	
	णिच् सन्नियोगेनैव	एकत्र करना,				
	आत्मनेपदमित्येके	चिन्तन करना				
१७७२.	धूञ् १८३५	कँपाना,	धू	धूनय	धूनयति / ते	से.
		क्षुब्ध होना		धावय	धावयति / ते	से.
				धव	धवति / ते	से.

ऋकारान्त आधृषीय धातु

१७७३.	वृञ् आवरणे	पसन्द करना,	वृ	वारय	वारयति/ ते	से.
	१८१३	ढाँकना, रोकना		वर	वरति / ते	
१७७४.	जॄ वयोहानौ १८१४	वृद्ध होना,	जॄ	जारय	जारयति/ते	से.
		जीर्ण होना		जर	जरति	

अदुपध आधृषीय धातु

१७७५.	षह मर्षणे	सहन करना,	सह्	साहय	साहयति/ते	से.
	१८०९			सह	सहति	
१७७६.	तप दाहे १८१८	तृप्त होना,	तप्	तापय	तापयति/ते	से.
		शरीर में जलना		तप	तपति	
१७७७.	श्रथ मोक्षणे	मुक्त करना,	श्रथ्	श्राथय	श्राथयति/ते	से.
	१८२३	पीड़ा करना		श्रथ	श्रथति	
१७७८.	छद अपवारणे	हटाना, छिपाना,	छद्	छादय	छादयति/ते	से.
	१८३३	बचाना		छद	छदति	
१७७९.	तनु श्रद्धोपकर -	भरोसा करना	तन्	तानय	तानयति/ते	से.
	णयो:,उपसर्गाच्च	आश्रय देना		तन	तनति	
	दैर्घ्ये, चन श्रद्धो-	शब्द करना				
	पहननयो: इत्येके १८४०					

१७८०.	वद सन्देशवचने १८४१	कहना, स्पष्ट कहना, समझाना	वद्	वादय वद	वादयति/ते वदति	से.
१७८१.	वच परिभाषणे १८४२	बोलना, समझाना कहना, पढ़ना	वच्	वाचय वच	वाचयति/ ते वचति	से.
१७८२.	आङः षद पद्यर्थे १८३१	चढ़ाई करना, जाना, प्राप्त करना	आसद्	आसादय आसीद	आसादयति/ते आसीदति	से.

इदुपध आधृषीय धातु

१७८३.	रिच वियोजन - सम्पर्चनयोः १८१६	एकत्र करना, अलग अलग करना	रिच्	रेचय रेच	रेचयति/ ते रेचति	से.
१७८४.	शिष असर्वोपयोगे १८१७	शेष रखना, पूरा खर्च न करना	शिष्	शेषय शेष	शेषयति/ ते शेषति	से.
१७८५.	युज संयमने १८०६	संयत करना, काम में लगाना	युज्	योजय योज	योजयति/ ते योजति	से.
१७८६.	जुष परितर्कणे १८३४	विचार करना, पीड़ा करना	जुष्	जोषय जोष	जोषयति/ ते जोषति	से.

ऋदुपध आधृषीय धातु

१७८७.	पृच संयमने १८०७	स्पर्श करना, हरकत करना	पृच्	पर्चय पर्च	पर्चयति/ ते पर्चति	से.
१७८८.	वृजी वर्जने १८१२	छोड़ना वर्जित करना	वृज्	वर्जय वर्ज	वर्जयति/ते वर्जति	से.
१७८९.	तृप तृप्तौ १८१९ १८१९	तृप्त होना, प्रसन्न करना	तृप्	तर्पय तर्प	तर्पयति/ते तर्पति	से.
१७९०.	छृदी संदीपने १८२०	जलाना प्रज्वलित करना	छृद्	छर्दय छर्द	छर्दयति/ते छर्दति	से.
१७९१.	दृभी ग्रन्थे (भये) १८२१	डरना, सम्बन्ध लगाना	दृभ्	दर्भय दर्भ	दर्भयति/ते दर्भति	से.
१७९२.	दृभ सन्दर्भे १८२२	सन्दर्भ लगाना	दृभ्	दर्भय दर्भ	दर्भयति/ते दर्भति	से.
१७९३.	मृजू शौचालङ्का - रयोः १८४८	स्वच्छ करना, धोना	मृज्	मार्जय मार्ज	मार्जयति/ते मार्जति	से.
१७९४.	मृष तितिक्षायाम्	सहन करना	मृष्	मर्षय	मर्षयति/ते	से.

	१८४९			मर्ष	मर्षति	
१७९५.	धृष प्रसहने	जीतना,	धृष्	धर्षय	धर्षयति/ते	से.
	१८५०	पराभव करना		धर्ष	धर्षति	

शेष आधृषीय धातु

१७९६.	ग्रन्थ बन्धने	बाँधना,	ग्रन्थ	ग्रन्थय	ग्रन्थयति/ते	से.
	१८२५	गाँठ लगाना		ग्रन्थ	ग्रन्थति	
१७९७.	ग्रन्थ सन्दर्भे	ग्रन्थ लिखना,	ग्रन्थ्	ग्रन्थय	ग्रन्थयति/ते	से.
	१८३८	सन्दर्भ लगाना		ग्रन्थ	ग्रन्थति	
१७९८	श्रन्थ सन्दर्भे	रचना करना,	श्रन्थ	श्रन्थय	श्रन्थयति/ते	से.
	१८३७	क्रम से रखना		श्रन्थ	श्रन्थति	
१७९९.	शुन्ध शौचकर्मणि	शुद्ध होना,	शुन्ध्	शुन्धय	शुन्धयति/ते	से.
	१८३२	शुद्ध करना		शुन्ध	शुन्धति	
१८००.	हिसि हिंसायाम्	मारना, वध करना	हिंस्	हिंसय	हिंसयति/ते	से.
	१८२९	दुःख देना		हिंस	हिंसति	
१८०१.	कठि शोके, प्रायेण	शोक करना,	कन्ठ	कण्ठय	कण्ठयति/ते	से.
	उत्पूर्वः १८४७	रोकना		कण्ठ	कण्ठति	
१८०२.	अर्च पूजायाम्	पूजा करना,	अर्च्	अर्चय	अर्चयति/ते	से.
	१८०८	मान करना		अर्च	अर्चति	
१८०३.	ईर क्षेपे १८१०	जाना, हाँकना,	ईर्	ईरय	ईरयति/ते	से.
		प्रेरणा देना		ईर	ईरति	
१८०४.	शीक आमर्षणे	स्पर्श करना,	शीक्	शीकय	शीकयति /ते	से.
	१८२६	शान्त करना		शीक	शीकति	
१८०५.	चीक आमर्षणे	उतावला होना,	चीक्	चीकय	चीकयति/ते	से.
	१८२७	असहिष्णु होना		चीक	चीकति	
१८०६.	अर्द हिंसायाम्	मारना, वध	अर्द्	अर्दय	अर्दयति /ते	से.
	१८२८	करना, सताना		अर्द	अर्दति	
१८०७.	अर्ह पूजायाम्	सत्कार करना,	अर्ह्	अर्हय	अर्हयति/ते	से.
	१८३०	पूजा योग्य बनाना		अर्ह	अर्हति	
१८०८.	आप्लृ लम्भने	प्राप्त कराना,	आप्	आपय	आपयति/ते	से.
	१८३९	पाना		आप	आपति	
१८०९.	मान पूजायाम्	सत्कार करना,	मान्	मानय	मानयति/ते	से.

	१८८३	मानना		मान	मानति	
१८१०.	गर्ह विनिन्दने १८४५	दोष लगाना, दु:खित करना	गर्ह्	गर्हय गर्ह	गर्हयति/ते गर्हति	से.
१८११.	मार्ग अन्वेषणे १८४६	ढूँढ़ना, स्वच्छ करना, शुद्ध करना	मार्ग्	मार्गय मार्ग	मार्गयति/ते मार्गति	से.

चुरादिगण के 'पूरी' से लेकर 'मार्ग' तक जो धातु कहे गये हैं, वे वैकल्पिक णिच् वाले धातु हैं। इनमें णिच् + शप् भी लग सकता है तथा केवल शप् भी लग सकता है। इनके अतिरिक्त गर्व, अर्थ, मूत्र, कर्त, कत्र, पत, ये वैकल्पिक णिच् वाले धातु, आगे अदन्त वर्ग में भी हैं, उन्हें वहीं अदन्त वर्ग में देखें।

चुरादिगण का आकुस्मीय अन्तर्गण

गणसूत्र - आकुस्मादात्मनेपदिन: - ये आकुस्मीय धातु आत्मनेपदी ही होते हैं।

अजन्त आकुस्मीय धातु

१८१२.	यु जुगुप्सायाम् १७१०	अपमान करना, निन्दा करना	यु	यावय	यावयते	से.
१८१३.	गृ विज्ञाने १७०७	समझना, जानना	गृ	गारय	गारयते	से.

अदुपध आकुस्मीय धातु

१८१४.	डप सङ्घाते १६७६	एकत्र करना, बटोरना	डप्	डापय	डापयते	से.
१८१५.	स्पश ग्रहण - संश्लेषणयो: १६८०	लेना, संयोग करना	स्पश्	स्पाशय	स्पाशयते	से.
१८१६.	लल ईप्सायाम् १६८७	इच्छा करना, स्थापित करना	लल्	लालय	लालयते	से.
१८१७.	शठ श्लाघायाम् १६९१	प्रशंसा करना, स्तुति करना	शठ्	शाठय	शाठयते	से.
१८१८.	स्मय वितर्के १६९३	चिन्तन करना, मनन करना	स्मय्	स्मायय	स्माययते	से.
१८१९.	शम आलोचने १६९५	प्रसिद्ध करना, जाहिर करना	शम्	शामय	शामयते	से.
१८२०.	गल स्रवणे १६९९	टपकना	गल्	गालय	गालयते	से.
१८२१.	भल आभण्डने	निरूपण करना	भल्	भालय	भालयते	से.

	१७००	वाद विवाद करना				
१८२२.	मद तृप्तियोगे १७०५	तृप्त करना, समाधान करना	मद्	मादय	मादयते	से.

इदुपध आकुस्मीय धातु

१८२३.	चित संचेतने १६७३	विचार करना, चिन्तन करना	चित्	चेतय	चेतयते	से.
१८२४.	डिप संघाते १६७७	मारना, एकत्र करना	डिप्	डेपय	डेपयते	से.
१८२५.	दिवु परिकूजने	दुःखी होना, शोक करना	दिव्	देवय	देवयते	से.
१८२६.	विद चेतनाख्यान - निवासेषु १७०६	जानना, अनुभव करना	विद्	वेदय	वेदयते	से.

उदुपध आकुस्मीय धातु

१८२७.	त्रुट छेदने १६९८	कतरना, तोड़ना छटना	त्रुट्	त्रोटय	त्रोटयते	से.

ऋदुपध आकुस्मीय धातु

१८२८.	वृष शक्तिबन्धने १७०४	अमानवीय पराक्रम करना	वृष्	वर्षय	वर्षयते	से.

शेष आकुस्मीय धातु

१८२९.	तर्ज तर्जने १६८१	निन्दा करना, धिक्कार करना	तर्ज्	तर्जय	तर्जयते	से.
१८३०.	दशि दंशने १६७४	चमकना, डंक मारने के समान बोलना	दंश्	दंशय	दंशयते	से.
१८३१.	दसि दर्शनदंशनयोः १६७५	देखना, काटना डसना	दंस्	दंसय	दंसयते	से.
१८३२.	तत्रि कुटुम्बधारणे १६७८	फैलाना, कुटुम्ब पोषण करना,	तन्त्र्	तन्त्रय	तन्त्रयते	से.
१८३३.	मत्रि गुप्तपरि - भाषणे १६७९	गुप्त भाषण करना, सलाह करना	मन्त्र्	मन्त्रय	मन्त्रयते	से.
१८३४.	भर्त्स तर्जने १६८२	धिक्कार करना, डराना	भर्त्स्	भर्त्सय	भर्त्सयते	से.

१८३५. बस्त अर्दने १६८३	जाना, माँगना, मार डालना	बस्त् बस्तय बस्तयते		से.
१८३६. गन्ध अर्दने १६८४	दुःख देना, मार डालना	गन्ध् गन्धय गन्धयते		से.
१८३७. विष्क हिंसायाम् १६८५	दुःख देना, मारना	विष्क् विष्कय विष्कयते		से.
१८३८. निष्क परिमाणे १६८६	नापना, तौलना गिनना	निष्क् निष्कय निष्कयते		से.
१८३९. कूण सङ्कोचे १६८८	संकोचित होना, ऐंठना	कूण् कूणय कूणयते		से.
१८४०. तूण पूरणे १६८९	भरना पूर्ण करना	तूण् तूणय तूणयते		से.
१८४१. भ्रूण आशा - विशङ्कयोः १६९०	आशा करना भरोसा करना	भ्रूण् भ्रूणय भ्रूणयते		से.
१८४२. यक्ष पूजायाम् १६९२	आराधना करना सत्कार करना	यक्ष् यक्षय यक्षयते		से.
१८४३. गूर उद्यमने १६९४	प्रयत्न करना, भक्षण करना	गूर गूरय गूरयते		से.
१८४४. लक्ष आलोचने १६९६	देखना, संकेत लगाना	लक्ष् लक्षय लक्षयते		से.
१८४५. कुत्स अनक्षेपणे १६९७	तिरस्कार करना; दोष लगाना	कुत्स् कुत्सय कुत्सयते		से.
१८४६. कूट आप्रदाने अवसादने इत्येके १७०१	मालूम न होना	कूट् कूटय कूटयते		से.
१८४७. कुट्ट प्रतापने १७०२	गरम करना	कुट्ट् कुट्टय कुट्टयते		से.
१८४८. वञ्चु प्रलम्भने १७०३	ठगना, फँसाना, प्रताड़ना देना	वन्च् वञ्चय वञ्चयते		से.
१८४९. मान स्तम्भने १७०९	बन्द करना, गर्वीला होना	मान् मानय मानयते		से.
१८५०. कुस्म नाम्नो वा १७११	अयोग्य रीति से हँसना	कुस्म् कुस्मय कुस्मयते		से.

चुरादिगण के अदन्त धातुओं का वर्ग

चुरादिगण के भीतर १८५१ से १९४३ तक के धातुओं को देखिये। इनके अन्त में 'अ' है। अभी तक के धातुओं की भाँति 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से इस 'अ' की इत् संज्ञा नहीं होती। इसलिये ये धातु 'अदन्त धातु' कहलाते हैं। अदन्त होने के कारण ये ये अनेकाच् ही होते हैं। इन धातुओं में ये बातें ध्यान देने योग्य हैं -

१. णिच् प्रत्यय परे होने पर अदन्त धातुओं के अन्तिम 'अ' का 'अतो लोपः' सूत्र से लोप कीजिये। 'अ' का लोप होने से ये धातु 'अग्लोपी' धातु कहलाते हैं।

जैसे - कथ + णिच् = कथ् + इ / अब देखिये कि अन्तिम 'अ' का 'अतो लोपः' सूत्र से लोप करने के बाद, धातु की 'उपधा' में 'अ' है। णिच् परे होने पर, इस उपधा के 'अ' को **'अत उपधायाः'** सूत्र से वृद्धि प्राप्त है। यह 'वृद्धि' मत कीजिये क्योंकि **'अचः परस्मिन् पूर्वविधौ'** सूत्र, 'अतो लोपः' सूत्र से लोप किये हुए, उस लुप्त 'अ' को स्थानिवत् कर देता है। अतः **'अत उपधायाः'** सूत्र को 'अतो लोपः' सूत्र से लोप किया हुआ अन्तिम 'अ' दिखता रहता है। इसलिये उपधा को 'वृद्धि' न करके, 'धातु + इ' को, ज्यों का त्यों जोड़ दिया जाता है। जैसे - कथ + णिच् - कथ् + इ = कथि / कथि + शप् - सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके - कथे + अ / एचोऽयवायावः सूत्र से अय् आदेश करके - कथय् + अ - कथय = कथयति / इसी प्रकार - गण + णिच् - गण् + अ = गणि / गणि + शप् - गणय = गणयति आदि।

२. अन्तिम 'अ' का 'अतो लोपः' सूत्र से लोप करने के बाद जब धातु की 'उपधा' में 'लघु इक्' दिखे, तब इस उपधा के 'लघु इक्' को **'पुगन्तलघूपधस्य च'** सूत्र से जो गुण प्राप्त है, वह 'गुण' मत कीजिये, क्योंकि **'अचः परस्मिन् पूर्वविधौ'** सूत्र, 'अतो लोपः' सूत्र से लोप किये हुए, उस लुप्त 'अ' को स्थानिवत् कर देता है। अतः **'पुगन्तलघूपधस्य च'** सूत्र को 'अतो लोपः' सूत्र से लोप किया हुआ, अन्तिम 'अ' दिखता रहता है। उपधा को 'गुण' न करके, अब 'धातु + इ' को, ज्यों का त्यों जोड़ दिया जाता है। जैसे -

क्षिप + णिच् - क्षिप् + अ = क्षिपि / क्षिपि + शप् - क्षिपय = क्षिपयति
गुण + णिच् - गुण् + अ = गुणि / गुणि + शप् - गुणय = गुणयति
मृग + णिच् - मृग् + अ = मृगि / मृगि + शप् - मृगय = मृगयते।

अदन्त वर्ग के नित्य णिच् वाले तथा वैकल्पिक णिच् वाले धातु

चुरादिगण के इस अदन्तवर्ग में कैसे जानें कि इन धातुओं से णिच् प्रत्यय नित्य लगाया जाये या विकल्प से ?

१. 'अतो लोपः' सूत्र से अदन्त धातुओं के अन्तिम 'अ' का लोप करने के

बाद देखिये कि जिन धातुओं की 'उपधा' में 'ह्रस्व अ' है, जैसे - कथ्, गण्, पद् आदि/ उन धातुओं से णिच् प्रत्यय नित्य ही लगता है। जैसे - कथ् + णिच् + शप् = कथयति।

२. जिन धातुओं की उपधा में 'लघु इक्' है, जैसे - क्षिप्, कुह्, गृह् आदि, उन धातुओं से भी णिच् प्रत्यय नित्य ही लगता है। जैसे - क्षिप् + णिच् + शप् = क्षिपयति / कुह् + णिच् + शप् = कुहयते / गृह् + णिच् + शप् = गृहयते आदि।

३. जिन धातुओं की उपधा में 'गुरु स्वर' है, उन धातुओं से णिच् प्रत्यय नित्य ही लगता है। जैसे - शूर् + णिच् + शप् = शूरयते / वीर् + णिच् + शप् = वीरयते आदि।

४. इस अदन्त वर्ग में, जो धातु 'स' से प्रारम्भ हो रहे हों, वे धातु अनेकाच् होने के कारण, 'अषोपदेश' धातु हैं, ऐसे 'अषोपदेश' धातुओं से भी णिच् प्रत्यय, नित्य ही लगता है, जैसे - सत्र - सत्रयते / सूत्र - सूत्रयति आदि। 'षोपदेश' धातु' प्रथम पाठ में पृष्ठ ३९ पर देखिये।

५. चुरादिगण में १९१५ धातु के बाद नामधातु आये हैं, उन नामधातुओं से भी णिच् प्रत्यय नित्य ही लगता है।

६. चुरादिगण के जिन धातुओं की उपधा में 'ह्रस्व अ' 'लघु इक्' अथवा 'गुरु स्वर' नहीं हैं, जो धातु 'अषोपदेश' नहीं हैं, तथा जो धातु, नामधातु भी नहीं हैं, उन धातुओं से णिच् प्रत्यय विकल्प से लगता है। जैसे - मूत्र - मूत्रति, मूत्रयति / गर्व् - गर्वयते, गर्वति / कत्र् - कत्रयति, कत्रति आदि। इसी आधार पर हमने वैकल्पिक णिच् लगाया गया है।

७. इनके अलावा 'वा णिजन्तः' इस गणसूत्र के सामर्थ्य से पत् धातु से भी णिच् प्रत्यय विकल्प से लगता है। **अब 'अदन्त' धातु बतलाते हैं -**

अदन्त धातुओं के अन्तर्गत, आगर्वीय धातु

गणसूत्र - आगर्वादात्मनेपदिनः - इस अदन्तवर्ग के भीतर पद गतौ (१८५१) से लेकर गर्व माने (१८६०) तक धातुओं को आगर्वीय धातु कहते हैं।

इन आगर्वीय धातुओं की विशेषता यह है कि इनसे आत्मनेपद के ही प्रत्यय लगते हैं, परस्मैपद के नहीं। इन धातुओं की उपधा को कोई अङ्गकार्य भी नहीं होता। जैसे - गृह् + अय = गृहयते, कुह् + अय = कुहयते आदि।

१८५१.	पद गतौ १८९८	जाना, स्थानान्तरण करना	पद्	पदय	पदयते	से.
१८५२.	गृह ग्रहणे १८९९	लेना, स्वीकार करना	गृह्	गृहय	गृहयते	से.

१८५३.	मृग अन्वेषणे १९००	शिकार करना, ढूँढ़ना	मृग्	मृगय	मृगयते	से.
१८५४.	कुह विस्मापने १९०१	ऊगना, मोहित करना, चमत्कार करना	कुह्	कुहय	कुहयते	से.
१८५५.	शूर १९०२	पराक्रमी होना, शूरवीर होना	शूर्	शूरय	शूरयते	से.
१८५६.	वीर विक्रान्तौ १९०३	शूरवीर होना, पराक्रम करना	वीर्	वीरय	वीरयते	से.
१८५७.	स्थूल परिबृंहणे १९०४	मोटा होना, स्थूल होना	स्थूल्	स्थूलय	स्थूलयते	से.
१८५८.	सत्र सन्तान - क्रियायाम् १९०६	फैलाना, विस्तार करना	सत्र्	सत्रय	सत्रयते	से.

(गुरु स्वर होने के बाद भी 'अषोपदेश' होने के कारण, सत्र् धातु से णिच् प्रत्यय नित्य ही होता है।)

१८५९.	अर्थ उपयाच्ञायाम् १९०५	माँगना, याचना करना	अर्थ्	अर्थय अर्थ	अर्थयते अर्थते	से.
१८६०.	गर्व माने १९०७	अभिमान करना	गर्व	गर्वय गर्व	गर्वयते गर्वते	से.

(उपधा में 'ह्रस्व अ' 'लघु इक्' अथवा 'गुरु स्वर' न होने से अर्थ् तथा गर्व् धातुओं से, विकल्प से णिच् प्रत्यय होता है।)

चुरादिगण के शेष अदन्त धातु

१८६१.	कथ वाक्यप्रबन्धे १८५१	कहना, व्याख्यान करना	कथ्	कथय	कथयति/ते	से.
१८६२.	वर ईप्सायाम् १८५२	इच्छा करना, चाहना	वर्	वरय	वरयति/ते	से.
१८६३.	गण संख्याने १८५३	गिनना, नापना, मानना, समझना	गण्	गणय	गणयति/ते	से.
१८६४.	शठ १८५४	दुर्भाषण करना, मौन धारण करना	शठ्	शठय	शठयति/ते	से.
१८६५.	श्वठ सम्यगव - भाषणे १८५५	आशीर्वाद देना, शुभ बोलना	श्वठ्	श्वठय	श्वठयति/ते	से.

१८६६.	पट १८५६	गूँथना, हिस्से में बाँटना	पट्	पटय	पटयति/ते	से.
१८६७.	वट ग्रन्थे	गूँथना, हिस्से में बाँटना	वट	वटय	वटयति/ते	से.
१८६८.	रह त्यागे १८५८	अकेला छोड़ना	रह्	रहय	रहयति/ते	से.
१८६९.	स्तन देवशब्दे १८५९	मेघ की गर्जना होना	स्तन्	स्तनय	स्तनयति/ते	से.
१८७०.	गदी देवशब्दे १८६०	मेघ का गरजना	गद्	गदय	गदयति/ते	से.
१८७१.	पत गतौ	नीचे गिरना	पत्	पतय	पतयति/ते	से.
	वा णिजन्त:,			पातय	पातयति/ते	से.
	वा अदन्त इत्येके १८६१			पत	पतति	

('वा णिजन्त:', इस गणसूत्र के सामर्थ्य से पत् धातु से विकल्प से णिच् प्रत्यय होता है।)

१८७२.	पष अनुपसर्गात् गतौ १८६२	जाना, फाँस लगाना	पष्	पषय	पषयति/ते	से.
१८७३.	स्वर आक्षेपे १८६३	शब्द करना, आवाज करना	स्वर्	स्वरय	स्वरयति/ते	से.
१८७४.	रच प्रतियत्ने १८६४	रचना, ग्रन्थ बनाना	रच्	रचय	रचयति/ते	से.
१८७५.	कल गतौ, संख्याने च १८६५	जाना, गिनना	कल्	कलय	कलयति/ते	से.
१८७६.	चह परिकल्कने १८६६	पीसना, कूटना	चह्	चहय	चहयति/ते	से.
१८७७.	मह पूजायाम् १८६७	सम्मान करना, पूजा करना	मह्	महय	महयति/ते	से.
१८७८.	सार १८६८	दुर्बल होना	सार्	सारय	सारयति/ते	से.
१८७९.	कृप १८६९	दुर्बल होना	कृप्	कृपय	कृपयति/ते	से.
१८८०.	श्रथ दौर्बल्ये १८७०	दुर्बल होना	श्रथ्	श्रथय	श्रथयति/ ते	से.
१८८१.	स्पृह ईप्सायाम् १८७१	इच्छा करना	स्पृह्	स्पृहय	स्पृहयति/ते	से.
१८८२.	भाम क्रोधने १८७२	घुड़कना, क्रोध करना, गुस्सा करना	भाम्	भामय	भामयति/ते	से.

१८८३.	सूच पैशुन्ये १८७३	सूचित करना चुगली करना	सूच्	सूचय	सूचयति/ते	से.
१८८४.	खेट भक्षणे, खोट इति अन्ये १८७४	खाना, भक्षण करना	खेट्	खेटय	खेटयति/ते	से.
१८८५.	क्षोट क्षेपे १८७५	भेजना, फेंकना	क्षोट्	क्षोटय	क्षोटयति/ते	से.
१८८६.	गोम उपलेपने १८७६	लीपना, पोतना	गोम्	गोमय	गोमयति/ते	से.
१८८७.	कुमार क्रीडायाम् १८७७	बालक के समान खेलना	कुमार्	कुमारय	कुमारयति/ते	से.
१८८८.	शील उपधारणे १८७८	धारण करना	शील्	शीलय	शीलयति/ते	से.
१८८९.	साम सान्त्वप्रयोगे १८७९	सान्त्वना देना	साम्	सामय	सामयति/ते	से.
१८९०.	वेल कालोपदेशे, काल इति पृथग् धातुरित्येके १८८०	काल गणना करना, समय पर समझना	वेल्	वेलय	वेलयति/ते	से.
१८९१.	पल्यूल लवन - पवनयो: १८८१	काटना, कतरना, गिरना	पल्यूल्	पल्यूलय	पल्यूलयति/ते	से.
१८९२.	वात सुखसेवनयो:, गतिसुखसेवनेषु इति केचित् १८८२	सुखी होना सेवा करना, जाना	वात्	वातय	वातयति/ते	से.
१८९३.	गवेष मार्गणे १८८३	ढूँढ़ना, पता करना प्रयत्न करना	गवेष्	गवेषय	गवेषयति/ते	से.
१८९४.	वास उपसेवायाम् १८८४	वासित करना, सुगन्धित करना	वास्	वासय	वासयति/ते	से.
१८९५.	निवास आच्छादने १८८५	आच्छादित करना लपेटना, ठहराना	निवास्	निवासय	निवासयति/ते	से.
१८९६.	भाज पृथक्कर्मणि १८८६	टुकड़े-टुकड़े करना, विभाजित करना	भाज्	भाजय	भाजयति/ते	से.
१८९७.	सभाज प्रीति - दर्शनयो:, प्रीति	प्रीति करना, सेवा करना, स्नेह	सभाज्	सभाजय	सभाजयति/ ते	से.

	सेवनयोरित्येके	पूर्वक देखना				
	१८८७					
१८९८.	ऊन परिहाणे	कम करना,	ऊन	ऊनय	ऊनयति/ते	से.
	१९८८	घटाना				
१८९९.	ध्वन शब्दे	शब्द करना,	ध्वन्	ध्वनय	ध्वनयति/ते	से.
	१८८९	आवाज करना				
१९००.	कूट परितापे	दुःख देना,	कूट्	कूटय	कूटयति/ते	से.
	परिदाह इत्यन्ये	जलाना, बुलाना				
	१८९०	सलाह देना				
१९०१.	संकेत	आमन्त्रण करना	संकेत्	संकेतय	संकेतयति/ते	से.
	१८९१	संकेत करना				
१९०२.	ग्राम १८९२	बुलाना,	ग्राम्	ग्रामय	ग्रामयति/ते	से.
		उपदेश करना				
१९०३.	कुण १८९३	उपदेश करना	कुण्	कुणय	कुणयति/ते	से.
१९०४.	गुण चामन्त्रणे	बुलाना,	गुण्	गुणय	गुणयति/ते	से.
	१८९४	उपदेश करना				
१९०५.	केत श्रावणे	आमन्त्रित	केत्	केतय	केतयति/ते	से.
	निमन्त्रणे १८९५	करना, सलाह देना				
१९०६.	कूट सङ्कोचनेऽपि	बुलाना, आमन्त्रित	कूट्	कूटय	कूटयति/ते	से.
	१८९६	करना				
१९०७.	स्तेन चौर्ये १८९७	चुराना, लूटना	स्तेन्	स्तनेय	स्तनेयति/ते	से.
१९०८.	सूत्र वेष्टने	सूत से लपेटना,	सूत्र्	सूत्रय	सूत्रयति/ते	से.
	१९०८	मुक्त करना				
१९०९.	मूत्र प्रस्रवणे	मूत्र त्याग करना,	मूत्र्	मूत्रय	मूत्रयति/ते	से.
	१९०९	पेशाब करना		मूत्र	मूत्रति	

(उपधा में 'ह्रस्व अ' 'लघु इक्' अथवा 'गुरु स्वर' न होने के कारण मूत्र धातु से विकल्प से णिच् प्रत्यय होता है।)

१९१०.	रूक्ष पारुष्ये	कठिन होना,	रूक्ष्	रूक्षय	रूक्षयति/ते	से.
	१९१०	सूखना				
१९११.	पार १९११	कार्य पूर्ण करना	पार्	पारय	पारयति/ते	से.
१९१२.	तीर कर्मसमाप्तौ	पार लगाना	तीर्	तीरय	तीरयति/ते	से.
	१९१२					

१९१३.	पुट संसर्गे १९१३	आलिङ्गन करना, बन्द करना	पुट्	पुटय	पुटयति/ते	से.
१९१४.	धेक दर्शन इत्येके १९१४	देखना	धेक्	धेकय	धेकयति/ते	से.
१९१५.	कत्र शैथिल्ये कर्त इत्येके १९१४	ढीला करना, मुक्त करना	कत्र्	कत्रय	कत्रयति/ते	से.
				कत्र	कत्रति	से.
			कर्त्	कर्तय	कर्तयति/ते	से.
				कर्त	कर्तति	

यह 'कत्र' अथवा 'कर्त्' धातु वैकल्पिक णिच् वाला है।

इसके बाद कुछ गणसूत्र दे रहे हैं -

प्रातिपदिकाद्धात्वर्थे बहुलमिष्ठवच्च / तत्करोति तदाचष्टे / तेनातिक्रामति / धातु रूपं च / आख्यानात्कृतस्तदाचष्टे कृल्लुक्प्रकृतिप्रत्ययापत्तिः प्रकृतिवच्च कारकम् / कर्तृकरणाद्धात्वर्थे। इनका विवेचन नामधातु वाले प्रकरण में है।

१९१६.	वष्क दर्शने १९१६	देखना	वष्क्	वष्कय	वष्कयति/ते	से.
१९१७.	चित्र चित्रीकरणे कदाचिद्दर्शने १९१७	तस्वीर खींचना चित्र बनाना, आश्चर्य करना	चित्र्	चित्रय	चित्रयति/ते	से.
१९१८.	अंस समाघाते १९१८	विभाग करना बाँटना	अंस्	अंसय	अंसयति/ते	से.
१९१९.	वट विभाजने १९१९	विभाग करना बाँटना	वट्	वटय	वटयति/ते	से.
१९२०.	लज प्रकाशने वटि लजि इत्येके १९२०	प्रकट होना स्पष्ट होना	लज्	लजय	लजयति/ते	से.
१९२१.	मिश्र सम्पर्के १९२१	मिश्रित करना	मिश्र्	मिश्रय	मिश्रयति/ते	से.
१९२२.	सङ्ग्राम युद्धे अनुदात्तेत् १९२२	युद्ध करना, लड़ाई करना	सङ्ग्राम्	सङ्ग्रामय	संङ्ग्रामयते	से.

(अनुदात्तेत् होने से यह धातु केवल आत्मनेपदी ही होता है।)

१९२३.	स्तोम श्लाघायाम् १९२३	प्रशंसा करना, आत्म श्लाघा करना	स्तोम्	स्तोमय	स्तोमयति/ते	से.

१९२४.	छिद्र कर्णभेदने करण भेदने इत्येके कर्ण इति धात्वन्तर - मित्यपरे १९२४	कानों को छिदवाना, छेद करना, चुगली करना	छिद्र्	छिद्रय	छिद्रयति/ते	से.
१९२५.	अन्ध दृष्ट्युपघाते उपसंहार इत्येके १९२५	अन्धा करना	अन्ध्	अन्धय	अन्धयति/ते	से.
१९२६.	दण्ड दण्ड - निपातने १९२६	शासन करना, दण्ड देना	दण्ड्	दण्डय	दण्डयति/ते	से.
१९२७.	अङ्क पदे लक्षणे च १९२७	चिह्न करना, टेढ़ा जाना	अङ्क्	अङ्कय	अङ्कयति/ते	से.
१९२८.	अङ्ग १९२८	गिनना	अङ्ग	अङ्गय	अङ्गयति/ते	से.
१९२९	सुख १९२९	सुखी करना	सुख्	सुखय	सुखयति/ ते	से.
१९३०.	दुःख तत्क्रियायाम् १९३०	दुःखी करना	दुःख्	दुःखय	दुःखयति/ ते	से.
१९३१.	रस आस्वादन - स्नेहनयोः १९३१	स्वाद लेना, चखना	रस्	रसय	रसयति/ ते	से.
१९३२.	व्यय वित्तसमुत्सर्गे १९३२	खर्च करना	व्यय्	व्ययय	व्यययति/ते	से.
१९३३.	रूप रूपक्रियायाम् १९३३	बनाना, आकार देना	रूप्	रूपय	रूपयति/ते	से.
१९३४.	छेद द्वैधीकरणे १९३४	कतराना, छेद करना	छेद्	छेदय	छेदयति/ते	से.
१९३५.	छद अपवारणे १९३५	हटाना, ढाँकना	छद्	छदय	छदयति/ते	से.
१९३६.	लाभ प्रेरणे १९३६	प्रेरणा करना,	लाभ्	लाभय	लाभयति/ते	से.
१९३७.	व्रण गात्रविचूर्णने १९३७	क्षत करना, घाव करना	व्रण्	व्रणय	व्रणयति/ते	से.
१९३८.	वर्ण वर्णगुण - क्रियाविस्तारवचनेषु १९३८	वर्णन करना, बखानना	वर्ण्	वर्णय	वर्णयति/ते	से.
१९३९.	पर्ण हरितभावे १९३९	हरा करना,	पर्ण्	पर्णय	पर्णयति/ते	से.
१९४०	विष्क दर्शने १९४०	देखना	विष्क्	विष्कय	विष्कयति/ते	से.
१९४१.	क्षिप प्ररेणे १९४१	फेंकना, भेजना,	क्षिप्	क्षिपय	क्षिपयति/ते	से.

१९४२.	वस निवासे १९४२	निवास करना	वस्	वसय	वसयति/ते	से.
१९४३.	तुत्थ आवरणे १९४३	परदा डालना आच्छादित करना	तुत्थ्	तुत्थय	तुत्थयति/ते	से.

बहुलमेतन्निदर्शनम् इत्येके (गणसूत्र) - कुछ का मत है कि अदन्त धातु केवल इतने ही नहीं हैं अपितु बाहुलक से भी अन्य हो सकते हैं। जैसे - आन्दोलयति, प्रेङ्खोलयति विडम्बयति अवधीरयति इत्यादि।

अन्ये तु दशगणपाठो बहुलमित्याहुः, तेनेह अपठिता अपि सौत्राः लौकिकाः वैदिकाः अपि द्रष्टव्याः इत्याहुः - भ्वादि से लेकर चुरादि तक दशगणी में जो धातु पढ़े गये हैं, उनके अतिरिक्त भी पाणिनीय सूत्रों में 'जु', 'तु' आदि लौकिक धातु मिलते हैं। 'तद्रक्षांसि रात्रिभिरसुभ्नन्' इत्यादि में सुभ् इत्यादि वैदिक धातु भी मिलते हैं इसलिये यह नहीं समझना चाहिये कि धातु इतने ही हैं।

अपरे तु नवगणीपाठो बहुलमित्याहुः - कुछ कहते हैं कि भ्वादि से लेकर क्र्यादि तक जो नवगणी है, वह पाठ भी बहुल है। अतः रामो राज्यमचीकरत् आदि में तनादिगण के 'कृ' धातु से भी णिच् प्रत्यय हो जाता है।

यहाँ चुरादिगण समाप्त हुआ। अब कण्ड्वादिगण के धातु बतला रहे हैं।

कण्ड्वादिगण

१९४४.	कुषुभ क्षेपे	आक्षेप करना	कुषुभ्	कुषभ्य	कुषुभ्यति	से.
१९४५.	सुख तत्क्रियायाम्	सुख पहुँचाना	सुख्	सुख्य	सुख्यति	से.
१९४६.	दुःख तत्क्रियायाम्	दुःख पहुँचाना	दुःख्	दुःख्य	दुःख्यति	से.
१९४७.	सपर पूजायाम्	पूजा करना	सपर्	सपर्य	सपर्यति	से.
१९४८.	अरर आराकर्मणि	चाबुक मारना, प्रेरित मारना	अरर्	अरर्य	अरर्यति	से.
१९४९.	इषुध शरधारणे	बाण धारण करना	इषुध्	इषुध्य	इषुध्यति	से.
१९५०.	चरण	जाना	चरण्	चरण्य	चरण्यति	से.
१९५१.	वरण गतौ	जाना	वरण्	वरण्य	वरण्यति	से.
१९५२.	चुरण चौर्ये	चुराना	चुरण्	चुरण्य	चुरण्यति	से.
१९५३.	तुरण त्वरायाम्	जल्दी मचाना	तुरण्	तुरण्य	तुरण्यति	से.
१९५४.	भुरण धारण - पोषणयोः	धारण करना, पोषण करना	भुरण्	भुरण्य	भुरण्यति	से.
१९५५.	गद्गद वाक्स्खलने	गद्गद स्वर में बोलना	गद्गद्	गद्गद्य	गद्गद्यति	से.

१९५६.	लिटअल्पकुत्सनयो:	कम करना निन्दित करना	लिट्	लिट	लिट्यति	से.
१९५७.	लाट जीवने	जीना	लाट्	लाट	लाट्यति	से.
१९५८.	अगद नीरोगत्वे	स्वस्थ करना	अगद्	अगद्य	अगद्यति	से.
१९५९.	तरण गतौ	जाना	तरण्	तरण्य	तरण्यति	से.
१९६०.	अम्बर	भरना	अम्बर्	अम्बर्य	अम्बर्यति	से.
१९६१.	संवर संवरणे	भरना	संवर्	संवर्य	संवर्यति	से.
१९६२.	वेद धौर्त्ये स्वप्ने च	धूर्तता करना	वेद्	वेद्य	वेद्यति	से.
१९६३.	मगध परिवेष्टने	घेरना	मगध्	मगध्य	मगध्यति	से.
१९६४.	लेट्	धूर्तता करना	लेट्	लेट्य	लेट्यति	से.
१९६५.	लोट् धौर्त्ये स्वप्ने पूर्वाभावे च	धूर्तता करना	लोट्	लोट्य	लोट्यति	से.
१९६६.	लेला दीप्तौ	चमकना	लेला	लेलाय	लेलायति	से.
१९६७.	मेधा आशुग्रहणे	शीघ्र समझना	मेधा	मेधाय	मेधायति	से.
१९६८.	एला	विलास करना	एला	एलाय	एलायति	से.
१९६९.	केला	विलास करना	केला	केलाय	केलायति	से.
१९७०.	खेला विलासे	विलास करना	खेला	खेलाय	खेलायति	से.
१९७१.	लेखा स्खलने च	विलास करना स्खलित होना	लेखा	लेखाय	लेखायति	से.
१९७२.	रेखा श्लाघा - सादनयो:	श्लाघा करना पाना	रेखा	रेखाय	रेखायति	से.
१९७३.	महीङ् पूजायाम्	पूजा करना	मही	महीय	महीयते	से.
१९७४.	हृणीङ् रोषणे लज्जायाम् च	क्रोध करना लज्जित होना	हृणी	हृणीय	हृणीयते	से.
१९७५.	कण्डूञ् गात्र - विघर्षणे	खुजलाना	कण्डू	कण्डूय	कण्डूयति कण्डूयते	से.
१९७६.	मन्तु अपराधे	अपराध करना	मन्तु	मन्तूय	मन्तूयति	से.
१९७७.	वल्गु पूजामाधुर्ययो:	पूजा करना	वल्गु	वल्गूय	वल्गूयति	से.
१९७८.	असु उपतापे	ईर्ष्या करना	असु	असूय	असूयति	से.
१९७९.	इरस्	ईर्ष्या करना	इरस्	इरस्य	इरस्यति	से.
१९८०.	इरज्	ईर्ष्या करना	इरज्	इरज्य	इरज्यति	से.

१९८१.	इरज् ईर्ष्यायाम्	ईर्ष्या करना	इर्	ईर्य	ईर्यति	से.
१९८२.	उषस् प्रभातीभावे	प्रभात होना	उषस्	उषस्य	उषस्यति	से.
१९८३.	तन्तस्	दु:खी होना	तन्तस्	तन्तस्य	तन्तस्यति	से.
१९८४.	पम्पस् दु:खे	दु:खी होना	पम्पस्	पम्पस्य	पम्पस्यति	से.
१९८५.	भिषज् चिकित्सायाम्	चिकित्सा करना	भिषज्	भिषज्य	भिषज्यति	से.
१९८६.	भिष्णज् चिकित्सायाम्	चिकित्सा करना	भिष्णज्	भिष्णज्य	भिष्णज्यति	से.
१९८७.	द्रवस् परितापपरिचरणयो:	परिचर्या करना	द्रवस्	द्रवस्य	द्रवस्यति	से.
१९८८.	तिरस् अन्तर्धौ	छुपना	तिरस्	तिरस्य	तिरस्यति	से.
१९८९.	उरस् बलार्थ:	बलवान् होना	उरस्	उरस्य	उरस्यति	से.
१९९०.	पयस् प्रसृतौ	फैलना	पयस्	पयस्य	पयस्यति	से.
१९९१.	संभूयस् प्रभूतभावे	बढ़ाना	संभूयस्	संभूयस्य	संभूयस्यति	से.

धातुओं के पद का निर्णय

आत्मनेपदप्रकरण

अनुदात्तङित आत्मनेपदम् - धातुपाठ में जिन धातुओं में अनुदात्त स्वर की इत् संज्ञा हुई हो, उन धातुओं को 'अनुदात्तेत् धातु' कहते हैं। धातुपाठ में जिन धातुओं में 'ङ्' की इत् संज्ञा हुई हो, उन धातुओं को 'ङित् धातु' कहते हैं। ऐसे अनुदात्तेत् तथा ङित् धातुओं से आत्मनेपद होता है। जैसे - आस - आस् - आस्ते / एध - एध् - एधते / षूङ् - सूते / शीङ् - शेते आदि।

भावकर्मणोः - भाववाच्य तथा कर्मवाच्य में सारे धातुओं से आत्मनेपद होता है। जैसे -

भाववाच्य में - आस्यते देवदत्तेन, ग्लायते भवता, सुप्यते भवता। ग्लै तथा स्वप् धातु, धातुपाठ में परस्मैपदी धातु हैं तथापि यहाँ इनसे भाववाच्य में आत्मनेपद हुआ है।

कर्मवाच्य में - देवदत्तेन वेदः पठ्यते, देवदत्तेन फलं खाद्यते। यहाँ परस्मैपदी पठ् तथा खाद् धातुओं से कर्मवाच्य में आत्मनेपद हुआ है।

कर्तरि कर्मव्यतिहारे - यदि एक की क्रिया दूसरा करे, तो उसे कर्मव्यतिहार कहते हैं। ऐसे क्रिया के व्यतिहार अर्थात् अदल बदल करने अर्थ में, कर्तृवाच्य में धातु से आत्मनेपद होता है। जैसे - व्यतिलुनते क्षेत्रम् (एक दूसरे के खेत काटते हैं)। व्यतिपुनते वस्त्रम् (एक दूसरे के वस्त्र धोते हैं)।

न गतिहिंसार्थेभ्यः - गत्यर्थक तथा हिंसार्थक धातुओं से क्रिया के व्यतिहार अर्थात् अदल बदल करने अर्थ में कर्तृवाच्य में आत्मनेपद नहीं होता है। जैसे - गत्यर्थक - व्यतिगच्छन्ति, व्यतिसर्पन्ति / हिंसार्थक - व्यतिहिंसन्ति, व्यतिघ्नन्ति।

इतरेतरान्योन्योपपदाच्च- इतरेतर, तथा अन्योन्य शब्द उपपद में (समीप में) श्रूयमाण हों, तो भी धातु से क्रिया के व्यतिहार अर्थात् अदल बदल करने अर्थ में कर्तृवाच्य में, आत्मनेपद नहीं होता है। जैसे - इतरेतरस्य व्यतिलुनन्ति / अन्योन्यस्य व्यतिलुनन्ति (एक दूसरे का काटते हैं।)

अब वे धातु बतला रहे हैं, जो परस्मैपदी या उभयपदी होते हुए भी किसी उपसर्ग के लग जाने से या किसी अन्य कारण से आत्मनेपदी हो जाते हैं।

नेर्विशः - विश् धातु, धातुपाठ में परस्मैपदी पढ़ा गया है। किन्तु यदि इसमें नि उपसर्ग लग जाये, तब ऐसे नि उपसर्गपूर्वक विश् धातु से आत्मनेपद होता है।
जैसे - निविशते निविशेते निविशन्ते

परिव्यवेभ्यः क्रियः - ञित् होने के कारण डुक्रीञ् धातु, धातुपाठ में उभयपदी पढ़ा गया है। किन्तु यदि इसमें परि, वि, अव, उपसर्ग लग जायें, तब ऐसे परि, वि, अव, उपसर्गपूर्वक डुक्रीञ् धातु से आत्मनेपद होता है।
जैसे - परिक्रीणीते विक्रीणीते अवक्रीणीते

विपराभ्यां जेः - जि धातु, धातुपाठ में परस्मैपदी पढ़ा गया है। किन्तु यदि इसमें वि, परा, उपसर्ग लग जायें, तब ऐसे वि, परा, उपसर्गपूर्वक जि धातु से आत्मनेपद होता है। जैसे - विजयते / पराजयते।

आङो दोऽनास्यविहरणे - ञित् होने के कारण डुदाञ् धातु यद्यपि उभयपदी है तथापि आङ् उपसर्गपूर्वक डुदाञ् धातु से केवल आत्मनेपद होता है, यदि उसका अर्थ, मुँह खोलना न हो तो। जैसे - विद्याम् आदत्ते। मुँह खोलने अर्थ में केवल परस्मैपद ही होता है - आस्यं व्याददाति (मुँह खोलता है।)

क्रीडोऽनुसंपरिभ्यश्च - क्रीड् धातु यद्यपि परस्मैपदी धातु है तथापि अनु, सम्, परि, और आङ् उपसर्गपूर्वक क्रीड् धातु से आत्मनेपद होता है। जैसे - अनुक्रीडते (साथ में खेलता है), संक्रीडते (मस्त होकर खेलता है), परिक्रीडते (खूब खेलता है), आक्रीडते (खेलता है।)

समवप्रविभ्यः स्थः - स्था धातु यद्यपि परस्मैपदी धातु है तथापि सम्, अव, प्र, और वि उपसर्गपूर्वक स्था धातु से आत्मनेपद होता है। जैसे - संतिष्ठते (सम्यक् स्थित होता है), अवतिष्ठते (अवस्थित होता है), प्रतिष्ठते (प्रस्थान करता है), वितिष्ठते (विशेष रूप से स्थित होता है।)

प्रकाशनस्थेयाख्ययोश्च - स्था धातु यद्यपि परस्मैपदी धातु है, तथापि यदि उसका अर्थ अपने भाव का प्रकाशन करना हो, तो उससे आत्मनेपद होता है। जैसे - विद्या तिष्ठते छात्राय (विद्या छात्र को अपना स्वरूप प्रकाशित करती है)।

यदि स्था धातु का अर्थ विवाद का निर्णय करना हो, तो भी उससे आत्मनेपद होता है। त्वयि तिष्ठते (निर्णायक के रूप में तुम्हारे ऊपर आश्रित है)। मयि तिष्ठते (निर्णायक के रूप में मेरे ऊपर आश्रित है)।

उदोऽनूर्ध्वकर्मणि - स्था धातु यद्यपि परस्मैपदी धातु है तथापि यदि उसका अर्थ

ऊपर उठना न हो, तो उद् उपसर्गपूर्वक स्था धातु से आत्मनेपद होता है। जैसे - गेहे उत्तिष्ठते (घर में उन्नति करता है), कुटुम्बे उत्तिष्ठते (कुटुम्ब में उन्नति करता है।) यदि उसका अर्थ ऊपर उठना हो, तो उससे परस्मैपद ही होता है। जैसे - आसनाद् उत्तिष्ठति।

उपान्मन्त्रकरणे - यदि उप उपसर्गपूर्वक स्था धातु का अर्थ मन्त्रकरण हो, तो उससे आत्मनेपद होता है। जैसे - ऐन्द्र्या गार्हपत्यमुपतिष्ठते (इन्द्र देवता वाली ऋचा को बोलकर गार्हपत्य अग्नि के समीप आता है)। आग्नेय्या आग्नीध्र - मुपतिष्ठते (अग्नि देवता वाली ऋचा को बोलकर आग्नीध्र के पास जाता है।)

अकर्मकाच्च - यदि उप उपसर्गपूर्वक स्था धातु अकर्मक हो, तो उससे आत्मनेपद होता है। जैसे - यावद्भुक्तमुपतिष्ठते (भोजन के समय आ के खड़ा होता है।)

उद्विभ्यां तपः - तप् धातु परस्मैपदी धातु है तथापि उत् तथा वि उपसर्गपूर्वक अकर्मक तप् धातु से आत्मनेपद होता है। जैसे - उत्तपते (खूब गरम होता है।) वितपते (विशेष रूप से गरम होता है।)

आङो यमहनः - आङ् उपसर्गपूर्वक अकर्मक यम्, हन् धातुओं से आत्मनेपद होता है। जैसे - आयच्छते, आहते।

समो गम्यृच्छिप्रच्छिस्वरत्यर्तिश्रुविदिभ्यः - सम् उपसर्गपूर्वक अकर्मक गम् धातु, तथा ऋच्छ्, प्रच्छ्, स्वृ, ऋ, श्रु, विद् धातुओं से आत्मनेपद होता है। जैसे - सङ्गच्छते (साथ साथ चलता है), समृच्छते (प्राप्त होता है।) आदि।

निसमुपविभ्यो ह्वः - यद्यपि ह्वेञ् धातु उभयपदी धातु है, तथापि यदि वह नि, सम् उप, वि, उपसर्गपूर्वक हो, तो उससे आत्मनेपद होता है। जैसे - निह्वयते (निश्चय रूप से बुलाता है), संह्वयते (अच्छी प्रकार से बुलाता है), उपह्वयते (समीप बुलाता है), विह्वयते (विशेष रूप से बुलाता है।)

स्पर्धायामाङः - आङ् उपसर्गपूर्वक ह्वेञ् धातु का अर्थ यदि स्पर्धा हो, तो उससे आत्मनेपद होता है। जैसे - मल्लो मल्लमाह्वयते (एक पहलवान दूसरे पहलवान को कुश्ती के लिये ललकारता है।)

गन्धनावक्षेपणसेवनसाहसिक्यप्रतियत्नप्रकथनोपयोगेषु कृञः - गन्धन - चुगली करना, अवक्षेपण - धमकाना, सेवन - सेवा करना, साहसिक्य - जबरदस्ती करना, प्रतियत्न - किसी गुण को भिन्न गुण में बदलना, प्रकथन - बढ़ा चढ़ाकर कहना, उपयोग - धर्मादि कार्यों में लगाना, इन अर्थों में कृञ् धातु से आत्मनेपद

होता है। जैसे -

गन्धन - चुगली करना - उत्कुरुते, उदाकुरुते।

अवक्षेपण - धमकाना - श्येनो वर्तिकाम् उत्कुरुते, उदाकुरुते।

सेवन - सेवा करना - आचार्यम् उपकुरुते शिष्यः।

साहस - जबरदस्ती करना - परदारान् प्रकुरुते।

प्रतियत्न - गुणाधान करना - एधो दकस्य उपस्कुरुते। काण्डं गुडस्य उपस्कुरुते।

प्रकथन - बढ़ा चढ़ाकर कहना - जनापवादान् प्रकुरुते। गाथाः प्रकुरुते।

उपयोग - सत्कार्य में लगाना - शतं प्रकुरुते। सहस्रं प्रकुरुते।

अधेः प्रसहने - प्रसहन अर्थ में अधि पूर्वक कृञ् धातु से आत्मनेपद होता है। जैसे - शत्रुमधिकुरुते।

वेः शब्दकर्मणः - शब्दकर्मवाले विपूर्वक कृञ् धातु से आत्मनेपद होता है। जैसे - क्रोष्टा विकुरुते स्वरान् (गीदड़ स्वरों को बिगाड़ बिगाड़ कर बोलता है।)

अकर्मकाच्च - वि उपसर्गपूर्वक अकर्मक कृञ् धातु से भी आत्मनेपद होता है। जैसे - विकुर्वति सैन्धवाः (अच्छी प्रकार से सिखाये गये घोड़े चौकड़ी मारते हैं।

सम्माननोत्सञ्जनाचार्यकरणज्ञानभृतिविगणनव्ययेषु नियः - सम्मानन - पूजा, उत्सञ्जन - उछालना, आचार्यकरण - आचार्य क्रिया, ज्ञान - तत्त्व निश्चय, भृति - वेतन, विगणन - ऋणादि चुकाना, व्यय - धर्मादि कार्यों में व्यय, इन अर्थों में णीञ् धातु से आत्मनेपद होता है। जैसे -

सम्मानन - मातरं सन्नयते। उत्सञ्जन - दण्डमुन्नयते।

आचार्यकरण - माणवकमुन्नयते। ज्ञान - वेदेषु बुद्धिः नयते।

भृति - कर्मकरान् उपनयते। विगणन - मद्राः करं विनयन्ते।

व्यय - शतं विनयते।

कर्तृस्थे चाशरीरे कर्मणि - वि उपसर्ग पूर्वक 'णीञ्' धातु का अर्थ दूर करना होता है। यदि दूर किया जाने वाला कर्म, कर्ता के ही शरीर में स्थित हो, और शरीर से भिन्न हो, तो णीञ् धातु से आत्मनेपद होता है। जैसे - क्रोधं विनयते (क्रोध को दूर करता है।) यहाँ क्रोध कर्ता में स्थित है किन्तु शरीर से भिन्न है।

यदि दूर करने की क्रिया का कर्म शरीर से भिन्न न हो, तो परस्मैपद

ही होता है। गडुं विनयति (घेंघे को दूर करता है।)

वृत्तिसर्गतायनेषु क्रमः - वृत्ति - अनिरोध, सर्ग - उत्साह, तायन - विस्तार, इन अर्थों में क्रम् धातु से आत्मनेपद होता है। जैसे - वृत्ति - मन्त्रेषु अस्य क्रमते बुद्धिः (मन्त्रों में इसकी बुद्धि खूब चलती है।) सर्ग - व्याकरणाध्ययनाय क्रमते (व्याकरण पढ़ने में उत्साहित होता है।) तायन - अस्मिन् शास्त्राणि क्रमन्ते (इसमें शास्त्र समृद्ध होते हैं।)

उपपराभ्याम् - वृत्ति - अनिरोध, सर्ग - उत्साह, तायन - विस्तार, इन अर्थों में उप और परा उपसर्गपूर्वक क्रम् धातु से आत्मनेपद होता है। जैसे - उपक्रमते (प्रारम्भ करता है), पराक्रमते (पुरुषार्थ करता है।)

आङ उद्गमने - आङ् उपसर्गपूर्वक क्रम् धातु से, उद्गम = उदय होने के अर्थ में आत्मनेपद होता है। जैसे - आदित्य आक्रमते (सूर्य उदय होता है।)

वेः पादविहरणे - वि उपसर्गपूर्वक क्रम् धातु से पादविहरण = पैर उठाने के अर्थ में आत्मनेपद होता है। जैसे - विक्रमते वाजी (घोड़ा कदम उठाता है।)

अनुपसर्गाद्वा - अनुपसर्ग क्रम् धातु से विकल्प से आत्मनेपद होता है। जैसे- क्रमते, क्रामति (चलता है।)

अपह्नवे ज्ञः - अपह्नव = मिथ्याभाषण के अर्थ में ज्ञा धातु से आत्मनेपद होता है। जैसे - शतम् अपजानीते (सौ रुपये के लिये झूठ बोलता है।)

अकर्मकाच्च - अकर्मक ज्ञा धातु से भी आत्मनेपद होता है - सर्पिषो जानीते (घी समझकर भोजन में प्रवृत्त होता है)।

संप्रतिभ्यामनाध्याने - सम् प्रति पूर्वक ज्ञा धातु से, अनाध्यान अर्थ में भी आत्मनेपद होता है। जैसे - शतं संजानीते / शतं प्रतिजानीते (सौ की प्रतिज्ञा करता है।) सहस्रं संजानीते / सहस्रं प्रतिजानीते (हजार की प्रतिज्ञा करता है।)

भासनोपसंभाषाज्ञानयत्नविमत्युपमन्त्रणेषु वदः - भासन आदि अर्थों में वद् धातु से आत्मनेपद होता है। जैसे -

भासन = प्रकाशित होना - शास्त्रे वदते (शास्त्र उसकी बुद्धि में प्रकाशित होता है।)

उपसंभाषा = सान्त्वना देना - कर्मकरान् उपवदते।

ज्ञान = जानना - व्याकरणे वदते।

यत्न = पुरुषार्थ करना - क्षेत्रे वदते / गेहे वदते।

विमति = विवाद करना - क्षेत्रे विवदन्ते / गेहे विवदन्ते।
उपमन्त्रण = सलाह करना - राजानम् उपवदते।

व्यक्तवाचां समुच्चारणे - स्पष्टवाणीवालों का सहोच्चारण अर्थ हो, तो वद् धातु से आत्मनेपद होता है। जैसे - सम्प्रवदन्ते ब्राह्मणाः (ब्राह्मण परस्पर मिलकर उच्चारण करते हैं।)

अनोरकर्मकात् - अनु उपसर्गपूर्वक, अकर्मक वद् धातु से स्पष्टवाणीवालों के सहोच्चारण अर्थ में आत्मनेपद होता है। जैसे - अनुवदते कठः कलापस्य (जैसे कलाप शाखाध्यायी बोलता है, वैसे ही उसके पीछे कठ शाखाध्यायी बोलता है।)

विभाषा विप्रलापे - स्पष्टवाणीवालों के सहोच्चारण में, परस्पर विरुद्ध कथन अर्थ में, वद् धातु से विकल्प से आत्मनेपद होता है। जैसे - विप्रवदन्ते सांवत्सराः, विप्रवदन्ति सांवत्सराः (ज्योतिषी लोग परस्पर मिलकर विरुद्ध कथन करते हैं।)

अवाद् ग्रः - अव उपसर्गपूर्वक गृ धातु से आत्मनेपद होता है। जैसे - अवगिरते (निगलता है।)

समः प्रतिज्ञाने - सम् उपसर्गपूर्वक गृ धातु से स्वीकार करने के अर्थ में आत्मनेपद होता है। जैसे - शब्दं संगिरते (शब्द नित्य है, ऐसा स्वीकार करता है।)

उदश्चरः सकर्मकात् - उत् उपसर्गपूर्वक सकर्मक चर् धातु से, आत्मनेपद होता है। जैसे - गुरुवचनम् उच्चरते (गुरु की बात न मानकर चला जाता है।)

समस्तृतीयायुक्तात् - तृतीया विभक्ति से युक्त, सम् उपसर्गपूर्वक चर् धातु से आत्मनेपद होता है। जैसे - अश्वेन संचरते (घोड़े से चलता है।)

दाणश्च सा चेच्चतुर्थ्यर्थे - तृतीया विभक्ति से युक्त, सम् उपसर्गपूर्वक दाण् धातु से भी, आत्मनेपद होता है यदि वह तृतीया, चतुर्थी के अर्थ में हो तो। जैसे - स्वयं ह ओदनं भुङ्क्ते, उपाध्यायेन सक्तून् संप्रयच्छते (छात्र स्वयं चावल खाता है और उपाध्याय को सत्तू देता है।)

उपाद्यमः स्वकरणे - उप उपसर्गपूर्वक यम् धातु से स्वकरण = पाणिग्रहण के अर्थ में आत्मनेपद होता है। जैसे - कन्यामुपयच्छते (कन्या से विवाह करता है।)

ज्ञाश्रुस्मृदृशां सनः - सन्नन्त ज्ञा, श्रु, स्मृ, दृश् धातुओं से आत्मनेपद होता है।
धर्मं जिज्ञासते - (धर्म को जानने की इच्छा करता है।)
गुरुं शुश्रूषते - (गुरु के वचन को सुनने की इच्छा करता है।)

नष्टं सुस्मूर्षति - (नष्ट हुए को याद करने की इच्छा करता है।)
नृपं दिदृक्षते - (राजा को देखने की इच्छा करता है।)
नानोर्ज्ञः - अनु उपसर्गपूर्वक सन्नन्त ज्ञा धातु से आत्मनेपद नहीं होता है। जैसे - पुत्रं अनुजिज्ञासति (पुत्र को आज्ञा देना चाहता है।)
प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः - प्रति तथा आङ्पूर्वक सन्नन्त श्रु धातु से आत्मनेपद नहीं होता है। जैसे - प्रतिशुश्रूषति (बदले में सुनना चाहता है।) / आशुश्रूषति (अच्छे से सुनना चाहता है।)
शदेः शितः - शद्ऌ शातने धातु परस्मैपदी है। किन्तु इस शद्ऌ शातने धातु से शित् प्रत्यय परे होने पर आत्मनेपद होता है। जैसे - शद् + शप् - शीय = शीयते (काटता है।) शित् प्रत्यय न होने पर परस्मैपद ही होता है - शत्स्यति, शिशत्सति।
म्रियतेर्लुङ्लिङोश्च - मृङ् धातु यद्यपि आत्मनेपदी है, किन्तु शित् प्रत्यय परे होने पर तथा लुङ्, लिङ् प्रत्यय परे होने पर ही मृङ् धातु से आत्मनेपद होता है। जैसे - शित् प्रत्यय परे होने पर - म्रि + श - म्रिय = म्रियते / लुङ्लकार में - अमृत / लिङ्लकार में - मृषीष्ट।

शेष प्रत्यय परे होने पर इससे परस्मैपद ही होता है - मरिष्यति।
पूर्ववत्सनः - सन् प्रत्यय के लगने के पूर्व, जिस धातु का जो भी पद रहा हो, सन् प्रत्यय लगाकर सन्नन्त धातु बन जाने के बाद भी, उस धातु का वही पद रहता है। जैसे - आत्मनेपदी आस् धातु से सन् प्रत्यय लगाकर - आसिसिषते। परस्मैपदी पठ् धातु से सन् प्रत्यय लगाकर - पठ् - पिपठिषति।
आम्प्रत्ययवत् कृञोऽनुप्रयोगस्य - जिस धातु से आम् प्रत्यय लगाया जाता है, उस धातु से आम् प्रत्यय लगने के बाद, कृ, भू, अस् धातुओं का अनुप्रयोग होता है, किन्तु आमन्त धातु से लगे हुए इन कृ, भू, अस् धातुओं का वही पद होता है, जो पद आमन्त धातु का है। जैसे - एध् धातु आत्मनेपदी है। अतः उसमें आम् लगने के बाद जो कृ, भू, अस् धातु आयेंगे वे भी आत्मनेपदी ही होंगे - एधाञ्चक्रे / एधाम्बभूवे / एधामासे।

इङ्ख् धातु परस्मैपदी है। अतः उसमें आम् लगने के बाद जो कृ, भू, अस् धातु आयेंगे, वे परस्मैपदी ही होंगे - इङ्खाञ्चकार / इङ्खाम्बभूव / इङ्खामास।

प्रोपाभ्यां युजेरयज्ञपात्रेषु - अयज्ञपात्र के विषय में प्र, उप उपसर्गपूर्वक युजिर् योगे धातु से आत्मनेपद होता है। जैसे - प्रयुङ्क्ते, उपयुङ्क्ते।

समः क्ष्णुवः - सम् उपसर्ग पूर्वक क्ष्णु धातु से आत्मनेपद होता है। जैसे - संक्ष्णुते (तीक्ष्ण करता है।)

भुजोऽनवने - भुज् धातु का अर्थ जब पालन करना होता है, तब उससे परस्मैपद होता है। जैसे - नृपः राज्यं भुनक्ति (राजा राज्य का पालन करता है।) भुज् धातु का अर्थ जब पालन करना नहीं होता है, तब भुज् धातु से आत्मनेपद होता है। जैसे - भुङ्क्ते (खाता है।)

णेरणौ यत्कर्म णौ चेत्स कर्ताऽनाध्याने - अण्यन्त अवस्था का कर्म, यदि ण्यन्त अवस्था में कर्ता बन रहा हो तो ऐसे ण्यन्त धातु से आत्मनेपद होता है, आध्यान = उत्कण्ठापूर्वक स्मरण, अर्थ को छोड़कर। जैसे -

आरोहन्ति हस्तिनं हस्तिपकाः (महावत हाथी पर चढ़ते हैं।) यहाँ चढ़ना अण्यन्त क्रिया है और हाथी इस चढ़ने की क्रिया का कर्म है।

चढ़ाना ण्यन्त क्रिया है। जब हम कहते हैं कि हाथी स्वयं झुककर महावत को चढ़ाने की क्रिया करता है - आरोहयते हस्तिपकं हस्ती स्वयमेव। तब जो हस्ती कर्म था, वही इस ण्यन्त अवस्था में कर्ता बन जाता है, और ण्यन्त आ + रुह् धातु से आत्मनेपद हो जाता है; जैसा आरोहयते में हुआ है।

भीस्म्योर्हेतुभये - ण्यन्त भी, स्मि, इन ण्यन्त धातुओं से हेतु = प्रयोजक कर्ता से भय होने पर, आत्मनेपद होता है। जैसे - मुण्डो भीषयते, जटिलो विस्मापयते।

गृधिवञ्च्योः प्रलम्भने - गृधु तथा वञ्चु इन ण्यन्त धातुओं से प्रलम्भन अर्थात् ठगने अर्थ में आत्मनेपद होता है। जैसे - माणवकं गर्धयते, माणवकं वञ्चयते - बच्चे को ठगता है।

लियः सम्माननशालीनीकरणयोश्च - यहाँ लियः से लीङ् श्लेषणे तथा ली श्लेषणे दोनों धातुओं का ग्रहण है। सम्मानन, शालीनीकरण अर्थात् अभिभवन तथा प्रलम्भन अर्थ में वर्तमान, ण्यन्त ली धातु से आत्मनेपद होता है। जैसे -

सन्मानन अर्थ में - जटाभिः आलापयते - जटाओं से सम्मान पाता है।
शालीनीकरण अर्थ में - श्येनो वर्तिकामुल्लापयते - बाज बत्तख को दबोचता है।
प्रलम्भन अर्थ में - कस्त्वामुल्लापयते - कौन तुम्हें ठगता है ?

मिथ्योपपदात् कृञोऽभ्यासे - मिथ्या शब्द है उपपद में जिसके, ऐसे ण्यन्त कृञ् धातु से अभ्यास अर्थात् बार बार करने के अर्थ में आत्मनेपद होता है। जैसे - पदं मिथ्या कारयते (पद का बार बार अशुद्ध उच्चारण करता है।)

उभयपदप्रकरण

स्वरितञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले - जिन धातुओं में स्वरित स्वर की इत् संज्ञा हुई हो, उन धातुओं को स्वरितेत् धातु कहते हैं। जिन धातुओं में ञ् की इत् संज्ञा हुई हो, उन धातुओं को ञित् धातु कहते हैं। ऐसे स्वरितेत् तथा ञित् धातुओं की क्रिया का फल जब कर्ता को मिलता हो, तब इन धातुओं से आत्मनेपद होता है, जैसे - यजते (अपने लिये यज्ञ करता है।) हरते (अपने लिये ले जाता है।)

यदि इन स्वरितेत् तथा ञित् धातुओं की क्रिया का फल कर्ता को न मिलता हो, तब उस स्वरितेत् तथा ञित् धातु से परस्मैपद होता है। यजति (यजमान के लिये यज्ञ करता है।) हरति (दूसरे के लिये ले जाता है।)

अपाद्वदः - अप उपसर्ग पूर्वक वद् धातु से, आत्मनेपद होता है, यदि उस क्रिया का फल कर्ता को मिलता हो तो। जैसे - धनकामो न्यायम् अपवदते (धन का लोभी न्याय छोड़कर बोलता है।) यदि उस क्रिया का फल कर्ता को न मिलता हो, तो परस्मैपद ही होगा - अपवदति - झूठ बोलता है।

णिचश्च - जिन धातुओं से णिच् प्रत्यय लग जाता है, ऐसे णिजन्त धातुओं से आत्मनेपद होता है, यदि उस क्रिया का फल कर्ता को मिलता हो तो। जैसे - कटं कारयते (चटाई को अपने लिये बनवाता है।) यदि उस क्रिया का फल कर्ता को न मिलता हो, तो परस्मैपद होता है। जैसे - कटं कारयति (दूसरे के लिये चटाई बनवाता है।)

समुदाङ्भ्यो यमोऽग्रन्थे - यदि ग्रन्थ विषयक प्रयोग न हो तो, सम्, उद्, आङ् उपसर्ग पूर्वक यम् धातु से, आत्मनेपद होता है, यदि उस क्रिया का फल कर्ता को मिलता हो तो। जैसे - व्रीहीन् संयच्छते - (चावलों को इकट्ठा करता है।) भारम् उद्यच्छते - (भार को उठाता है।) वस्त्रम् आयच्छते - (वस्त्र को फैलाता है)। क्रिया का फल कर्ता को न मिलने पर परस्मैपद ही होता है। संयच्छति, आयच्छति, उद्यच्छति। ग्रन्थ विषयक प्रयोग में भी परस्मैपद ही होता है। उद्यच्छति चिकित्सां वैद्यः - वैद्य ग्रन्थ देखकर चिकित्सा करता है।

अनुपसर्गाज्ज्ञः - उपसर्ग रहित ज्ञा धातु से आत्मनेपद होता है, यदि उस क्रिया

का फल कर्ता को मिलता हो तो। जैसे - गां जानीते (अपनी गाय को जानता है।) यदि ज्ञा धातु उपसर्ग युक्त हो, तो परस्मैपद ही होता है। जैसे - स्वर्गं लोकं न प्रजानाति मूढः।

विभाषोपपदेन प्रतीयमाने - उपपद (समीपोच्चारित पद) के द्वारा क्रियाफल के प्रतीत होने पर विकल्प से आत्मनेपद होता है, यदि उस क्रिया का फल कर्ता को मिलता हो तो। जैसे - स्वं यज्ञं यजते / स्वं यज्ञं यजति (अपने यज्ञ को करता है।)

परस्मैपदप्रकरण

शेषात् कर्तरि परस्मैपदम् - अनुदात्तेत्, ङित्, स्वरितेत् तथा ञित्, धातुओं से जो भी धातु शेष बचे, अर्थात् जो उदात्तेत् आदि धातु, उनसे कर्तृवाच्य में परस्मैपद होता है। जैसे - याति (जाता है), वाति (चलता है।)

अब वे धातु बतला रहे हैं, जो आत्मनेपदी या उभयपदी होते हुए भी किसी उपसर्ग के लग जाने से, या किसी अन्य कारण से परस्मैपदी हो जाते हैं।

अनुपराभ्यां कृञः - कृञ् धातु उभयपदी है, किन्तु अनु, परा उपसर्ग पूर्वक कृञ् धातु से परस्मैपद ही होता है। जैसे - अनुकरोति (अनुकरण करता है।) पराकरोति (दूर करता है।)

अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः - क्षिप् धातु उभयपदी है, किन्तु अभि, प्रति तथा अति उपसर्ग पूर्वक क्षिप् धातु से परस्मैपद ही होता है। जैसे - अभिक्षिपति (इधर उध र फेंकता है।) प्रतिक्षिपति (बदले में फेंकता है।) अतिक्षिपति (बहुत अधिक फेंकता है।)

प्राद्वहः - वह् धातु उभयपदी है, किन्तु प्र उपसर्ग पूर्वक वह् धातु से, परस्मैपद ही होता है। जैसे - प्रवहति।

परेर्मृषः - मृष् धातु उभयपदी है, किन्तु परि उपसर्ग पूर्वक मृष् धातु से, परस्मैपद ही होता है। जैसे - परिमृष्यति।

व्याङ्परिभ्यो रमः - रम् धातु आत्मनेपदी है, किन्तु वि, आङ्, परि उपसर्ग पूर्वक रम् धातु से परस्मैपद होता है। जैसे - विरमति (रुकता है।) आरमति (खेलता है।) परिरमति (चारों ओर खेलता है।)

उपाच्च - उप उपसर्ग पूर्वक रम् धातु से परस्मैपद होता है। जैसे - देवदत्तं

उपरमति (देवदत्त को हटाता है।)

विभाषाऽकर्मकात् – उप उपसर्ग पूर्वक, अकर्मक रम् धातु से, विकल्प से परस्मैपद होता है। जैसे – यावद्भुक्तमुपरमति, यावद्भुक्तमुपरमते (प्रत्येक भोजन से निवृत्त होता है।)

बुधयुधनशजनेङ्प्रुद्रुस्रुभ्यो णेः – बुध्, युध्, नश्, जन्, इङ्, प्रु, द्रु, स्रु, इन ण्यन्त धातुओं से परस्मैपद होता है। जैसे – बोधयति (बोध कराता है), योधयति (लड़ाता है), नाशयति (नाश कराता है), जनयति (उत्पन्न कराता है), प्रापयति (प्राप्त कराता है), द्रावयति (पिघलाता है), स्रावयति (टपकाता है।)

निगरणचलनार्थेभ्यश्च – निगरण अर्थात् निगलने अर्थवाले तथा चलनार्थक ण्यन्त धातुओं से परस्मैपद होता है। जैसे – निगारयति (निगलवाता है), आशयति (खिलाता है), भोजयति (खिलाता है), चलयति (चलाता है।) आदि।

अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्त्तृकात् – अण्यन्त अवस्था में जो अकर्मक तथा चेतन कर्ता वाला धातु हो, उससे ण्यन्त अवस्था में परस्मैपद होता है। जैसे – अण्यन्त अवस्था में – आस्ते देवदत्तः (देवदत्त बैठता है)। ण्यन्त अवस्था में – आसयति देवदत्तम् (देवदत्त को बिठाता है।)

न पादम्याङ्यमाङ्यसपरिमुहरुचिनृतिवदवसः – ण्यन्त पा, दमि धातु, आङ् उपसर्ग पूर्वक ण्यन्त यम् धातु, आङ् उपसर्ग पूर्वक ण्यन्त यस् धातु, परि उपसर्ग पूर्वक ण्यन्त मुह् धातु तथा ण्यन्त रुचि, नृति, वद्, वस् धातु, इन ण्यन्त धातुओं से परस्मैपद नहीं होता है। जैसे – पाययते (पिलाता है), दमयते (दमन कराता है), आयामयते (फिंकवाता है), आयासयते (फिंकवाता है), परिमोहयते (अच्छी प्रकार से मोहित करता है), रोचयते (पसन्द कराता है), नर्त्तयते (नचाता है), वादयते (कहलाता है), वासयते (बसाता है।)

वा क्यषः – क्यष् प्रत्ययान्त धातु से विकल्प से परस्मैपद होता है। जैसे – लोहित + क्यष् = लोहितायति / लोहितायते।

द्युद्भ्यो लुङि – द्युतादि धातुओं से लुङ् लकार को विकल्प से परस्मैपद होता है। जैसे – अद्युतत्, अद्योतिष्ट।

वृद्भ्यः स्यसनोः – वृतादि धातुओं से स्य और सन् प्रत्ययों को विकल्प से परस्मैपद होता है। जैसे – परस्मैपद में – वर्त्स्यति, अवर्त्स्यत्, विवृत्सति / आत्मनेपद में – वर्तिष्यते, अवर्तिष्यत, विवर्तिषते।

लुटि च क्लृपः – कृपू (क्लृप्) धातु से लुट्, स्य और सन् प्रत्ययों को विकल्प से परस्मैपद होता है। जैसे परस्मैपद में – कल्प्ता, कल्प्स्यति, अकल्प्स्यत्

द्वितीय पाठ

वर्णमाला, माहेश्वर सूत्र, प्रत्याहार, पारिभाषिक शब्द, सूत्रों के प्रकार तथा प्रमुख सन्धियाँ

व्याकरण शब्द शास्त्र है। यह अत्यन्त कठिन है। हमारा सम्पूर्ण प्रयास यही है कि हम आपको इसकी दुरूहता से बचायें, तथापि व्याकरण में प्रवेश करने से पहिले स्वर, व्यञ्जन, मातृकापाठ, माहेश्वर सूत्र तथा प्रत्याहारों का ज्ञान तो होना ही चाहिये। इसी अभिप्राय से उन्हें बताया जा रहा है।

भले ही इस पाठ को पढ़ते समय हमें लगे, कि यह तो बच्चों जैसी बात है। हम सीखने तो जा रहे हैं, दसों लकारों के धातुरूप बनाना और पढ़ रहे हैं वर्णमाला। पर यह अपरिहार्य है। इसे बड़ी दृढ़ता से जान लेना चाहिए, अन्यथा आगे पदे पदे काठिन्य होगा।

स्वर तथा व्यञ्जन - स्वर ९ हैं - अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ। इन्हें 'अच्' भी कहते हैं। स्वर, वे ध्वनियाँ हैं, जो बिना किसी अन्य वर्ण की सहायता के बोली जा सकें, अतः इन्हें बोलकर, उच्चारण करके प्रमाणित कर लीजिये कि क्या ये ध्वनियाँ स्वतन्त्र रूप से बोली जा सकती हैं ? अतः बोलिए 'अ'। अब सुनिये कि इसे बोलने में 'अ' के अतिरिक्त अन्य कोई ध्वनि मिली हुई नहीं सुनाई पड़ी। तब स्वतन्त्र उच्चारण होने के कारण जानिये कि यह स्वर है।

अब व्यञ्जन बतला रहे हैं - बोलिए 'क'। अब सुनिये कि इसमें 'क्' के साथ 'अ' की ध्वनि मिली हुई है। इसके बिना आप इस क् को बोल नहीं सकते। 'क्' के उच्चारण के लिये उसमें, नौ में से किसी न किसी स्वर का मिलना आवश्यक है। अतः 'अच्' के अधीन उच्चारण होने के कारण यह 'क्' 'व्यञ्जन' है। इस प्रकार व्यञ्जन वे ध्वनियाँ हैं जो स्वतन्त्र रूप से न बोली जा सकें। व्यञ्जन ३३ होते हैं। उनमें से 'क' से 'म' तक आने वाले २५ व्यञ्जन स्पर्श, य, र, ल, व, 'अन्तःस्थ', तथा श, ष, स, ह 'ऊष्म' हैं। व्यञ्जनों को उच्चारणस्थान के आधार पर वर्गीकृत किया गया है। जैसे - क, ख, ग, घ, ङ, ये पाँच व्यञ्जन मुख में कण्ठ से ही बोले जाते हैं, अतः इन सबका एक वर्ग बनाया और उसका

नाम रखा - कवर्ग। इसी प्रकार च, छ, ज, झ, ञ, ये पाँच व्यञ्जन मुख में तालु से बोले जाते हैं, अतः इन सबका एक वर्ग बनाया और उसका नाम रखा - चवर्ग। इसी प्रकार आगे जानिये। सारे व्यञ्जन इस प्रकार हैं -

मातृकापाठ - वर्णमाला

	१	२	३	४	५	उच्चारण स्थान
कवर्ग - कु	क	ख	ग	घ	ङ	कण्ठ
चवर्ग - चु	च	छ	ज	झ	ञ	तालु
टवर्ग - टु	ट	ठ	ड	ढ	ण	मूर्धा
तवर्ग - तु	त	थ	द	ध	न	दन्त
पवर्ग - पु	प	फ	ब	भ	म	ओष्ठ
अन्तःस्थ	य	र	ल	व		
ऊष्म	श	ष	स	ह		

इन्हें ध्यान से देखें, इनमें ५-५ वर्णों के जो समूह बनाये गये हैं, उनके नाम इस प्रकार हैं - कवर्ग = कु / चवर्ग = चु / टवर्ग = टु / तवर्ग = तु / पवर्ग = पु / इन्हीं समूहों के छोटे नाम कु, चु, टु, तु, पु, हैं। सूत्रों में जब भी 'कु' कहा जायेगा, तो उसे कवर्ग समझिये। कु अर्थात् क, ख, ग, घ, ङ। इसी प्रकार 'चु' कहा जायेगा, तो उसे चवर्ग समझिये। चु अर्थात् च, छ, ज, झ, ञ। इसी प्रकार आगे जानिये। पाणिनीय व्याकरण में इन्हीं वर्णों के इस क्रम में एक विशिष्ट उलटफेर करके माहेश्वर सूत्रों का निर्माण किया गया है। माहेश्वर सूत्र १४ हैं, जो इस प्रकार हैं -

माहेश्वर सूत्र

१. अइउण् २.ऋऌक् ३. एओङ् ४. ऐऔच् ५. हयवरट् ६. लण् ७. ञमङणनम् ८. झभञ् ९. घढधष् १०. जबगडदश् ११. खफछठथचटतव्, १२. कपय् १३. शषसर् १४. हल्।

इन्हें ध्यान से देखिये - इन १४ सूत्रों के अन्त में जो व्यञ्जन हैं, उनका नाम है 'इत्'। इन इतों को अनुबन्ध भी कहा जाता है। जिसका नाम 'इत्' है, उसका लोप हो जाता है, अतः आप इन्हें वर्णों की गणना में शामिल मत कीजिये। इसीलिये हमने आगे इन्हें कोष्ठक में रख दिया है।

हम जान चुके हैं कि 'अनुबन्ध' और 'इत्' पर्यायवाची हैं। इन इतों को छोड़कर जो वर्ण बचेंगे, उनकी व्यवस्था इस प्रकार जानिये -

सूत्र क्रमाङ्क १ से ४ अर्थात् अइउ (ण्)/ ऋऌ (क्) / एओ (ङ्)/ ऐऔ (च्), में आये हुए सारे के सारे ९ वर्ण 'स्वर' हैं। ये स्वर 'अ' से 'च्' के बीच में बैठे हैं, अतः स्वरों को अच् भी कहते हैं।

अब सूत्र क्रमाङ्क ५, ६ को देखिये - अर्थात् हयवर (ट्) / ल (ण्)/ इनमें 'ह' को छोड़ दीजिये तो बचे य, र, ल, व। ये चारों अन्तःस्थ हैं। इन्हें यण् कहते हैं, क्योंकि ये 'य' से 'ण्' के बीच में बैठे हैं।

अब सूत्र क्रमाङ्क ७ को देखिये - अर्थात् ञमङणन (म्)। ये पाँचों वर्ण ऊपर बतलाई गई वर्णमाला के पाँचवें क्रमाङ्क के वर्ण हैं जैसे- ञ, चवर्ग का पाँचवाँ वर्ण है। 'म' पवर्ग का पाँचवाँ वर्ण है। 'ण' टवर्ग का पाँचवाँ वर्ण है तथा 'न' तवर्ग का पाँचवाँ वर्ण है। इस प्रकार प्रत्येक वर्ग से पाँचवाँ-पाँचवाँ वर्ण लिया और सूत्र बना दिया - ञमङणनम्।

अब सूत्र क्रमाङ्क ८-९ को देखिये - अर्थात् झभ(ञ्) तथा घढध (ष्)। ये वर्णमाला के चतुर्थ वर्ण हैं। प्रत्येक वर्ग का चौथा-चौथा वर्ण लिया तो दो सूत्र बने - झभञ् तथा घढधष्।

अब सूत्र क्रमाङ्क १० को लीजिये - अर्थात् जबगडद (श्)। देखिये कि प्रत्येक वर्ग के तीसरे - तीसरे वर्ण को ले लिया है तथा सूत्र बनाया है - जबगडदश्।

अब सूत्र क्रमाङ्क ११ - १२ को लीजिये - अर्थात् खफछठथचटत (व्) / कप (य्) । देखिये कि प्रत्येक वर्ग का दूसरा - दूसरा वर्ण लिया तो बना खफछठथ तथा प्रत्येक वर्ग का पहला-पहला वर्ण लिया तो बना चटतव् / कपय्।

अब सूत्र क्रमाङ्क १३, १४ को लीजिए अर्थात् - शषस(र्) / ह (ल्)। ये हैं - श, ष, स, ह अर्थात् ऊष्म। ये श से 'ल्' के बीच में आये हैं, अतः इन्हें 'शल्' भी कह सकते हैं।

इस प्रकार हमने माहेश्वर सूत्रों की संरचना देखी, तो पाया कि उनमें सबसे पहिले स्वर हैं, उसके बाद ४ अन्तःस्थ हैं, उसके बाद ५, ४, ३, २, १, के क्रम से २५ स्पर्श हैं तथा सबसे अन्त में ऊष्म हैं।

अब प्रश्न उठता है कि अच्छी भली वर्णमाला में उलट फेर करने के

पीछे भगवान् पाणिनि का क्या प्रयोजन है ? इन माहेश्वर सूत्रों के बनाने का प्रयोजन है - प्रत्याहार बनाना। प्रत्याहार का अर्थ होता है -'संक्षेप'। अभी तक हमारे पास ऐसी कोई विधि नहीं थी कि हम दो, चार, दस, बीस वर्णों को एक साथ बोल सकें। पर अब हम बोल सकते हैं। यदि हमें अ, इ, उ इन तीन वर्णों को एक साथ बोलना है, तो हम अइउण् में 'अ' को 'ण्' से जोड़ देंगे तो बनेगा 'अण्'। जिसका अर्थ होगा अ, इ, उ। केवल पञ्चम वर्ण कहना हो तो 'ञ' को 'म्' से जोड़ देंगे तो बनेगा 'ञम्'/ इसी प्रकार केवल चतुर्थ वर्ण कहना हो तो 'झ' को 'ष्' से जोड़ देंगे तो बनेगा 'झष्'।

यदि हमें सारे तीसरे वर्ण एक साथ बोलना है तो हम 'जबगडदश्' को एक साथ कहेंगे - 'जश्', जिसका अर्थ होगा - ज,ब,ग,ड,द / केवल द्वितीय - प्रथम वर्ण, कहना हो तो 'खय्'/ केवल प्रथम वर्ण कहना हो तो 'चय्'/ केवल अन्तःस्थ कहना हो तो 'यण्' / केवल ऊष्म कहना हो तो शल्' / चतुर्थ, तृतीय दोनों वर्ण कहना हो तो 'झश्' कहेंगे।

इसी प्रकार हमें यदि सारे स्वर एक साथ कहना हो तो, 'अच्'/ सारे व्यञ्जन एक साथ कहना हो तो 'हल्' / सारे स्वर, व्यञ्जन अर्थात् ४२ वर्ण एक साथ कहना हो, तो हम प्रारम्भिक 'अ' को अन्तिम 'ल्' से जोड़कर कहेंगे - अल्। इस प्रकार माहेश्वर सूत्रों से प्रत्याहार बनाने का अभ्यास कर लेना चाहिए। प्रत्येक सूत्र के अनुबन्धों से बनने वाले प्रत्याहारों की संख्या इस प्रकार है -

अइउण् - इसके ण् से एक प्रत्याहार बनाइए - अण्।
ऋऌक् - इसके क् से तीन प्रत्याहार बनाइये - अक्, इक्, उक्।
एओङ् - इसके ङ् से एक प्रत्याहार बनाइए - एङ्।
ऐऔच् - इसके च् से चार प्रत्याहार बनाइए - अच्, इच्, एच्, ऐच्।
हयवरट् - इसके ट् से एक प्रत्याहार बनाइये - अट्।
लण् - इसके ण् से तीन प्रत्याहार बनाइए - अण्, इण्, यण्।
ञमङणनम् - इसके 'म्' से तीन प्रत्याहार बनाइए - अम्, ञम्, ङम्।
झभञ् - इसके 'ञ्' से एक प्रत्याहार बनाइए - यञ्।
घढधष् - इसके 'ष्' से दो प्रत्याहार बनाइए - भष्, झष्।
जबगडदश् - इसके 'श्' से छह प्रत्याहार बनाइए - अश्, हश्, वश्, जश्,

झश्, बश्।

खफछठथचटतव् - इसके 'व्' से एक प्रत्याहार बनाइए - छव्।

कपय् - इसके 'य्' से चार प्रत्याहार बनाइए - यय्, मय्, झय्, खय्।

शषसर् - इसके 'र्' से पाँच प्रत्याहार बनाइये - यर्, झर्, खर्, चर्, शर्।

हल् - इसके 'ल्' से छह प्रत्याहार बनाइये - अल्, हल्, वल्, रल्, झल् और शल्।

इस प्रकार इन प्रत्याहारों का अभ्यास कर लेने से सम्पूर्ण व्याकरण शास्त्र में गति हो जाती है, अतः प्रत्याहारों का समुचित अभ्यास करके ही इस शास्त्र में प्रवेश कीजिये।

व्याकरण शास्त्र के पारिभाषिक शब्द

प्रत्येक शास्त्र की अपनी पारिभाषिक शब्दावली होती है। इसलिये उस शास्त्र में प्रवेश करने के पहले उस शास्त्र के पारिभाषिक शब्दों को जान लेना आवश्यक है। अतः हम यहाँ व्याकरण शास्त्र के कुछ पारिभाषिक शब्द बतला रहे हैं। इन्हें भली भाँति समझकर ही आगे बढ़ें।

१. तपर - तपरस्तत्कालस्य - जब हम 'अ' कहते हैं, तब उसका अर्थ 'अ' 'आ', दोनों ही होता है परन्तु यदि हमें केवल ह्रस्व 'अ' कहना हो, तो हम उस 'अ' के बाद 'त्' लगा देते हैं, तब 'अत्' कहने पर उसका अर्थ केवल ह्रस्व 'अ' होता है। इसी प्रकार आत् = दीर्घ अ / इत् = ह्रस्व इ / ईत् = दीर्घ ई / उत् = ह्रस्व उ / ऊत् = दीर्घ ऊ / ऋत् = ह्रस्व ऋ / ॠत् = दीर्घ ॠ / एत् = ए / ओत् = ओ / आदि जानना चाहिये। जिनके अन्त में 'त्' लगा है, ऐसे वर्ण तपर कहलाते हैं।

२. उपधा - अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा - किसी भी शब्द के अन्तिम वर्ण के ठीक पहिले वाला वर्ण 'उपधा' कहलाता है। जैसे - 'पठ्' में अन्तिम वर्ण ठ् है, उसके ठीक पूर्व वाला 'अ' उपधा है। 'चित्' में अन्तिम वर्ण त् है, उसके ठीक पूर्व वाला 'इ' उपधा है। 'मुद्' में अन्तिम वर्ण 'द्' है, उसके ठीक पूर्व वाला 'उ' उपधा है। वृष् में अन्तिम वर्ण 'ष्' है, उसके ठीक पूर्व वाला 'ऋ' उपधा है।

भ्रंश्, स्रंस्, ध्वंस् में 'न्' उपधा है। यहाँ 'न्' ही अनुस्वार हो गया है। शुम्भ्, हम्म्, कम्प् में भी न् उपधा है, यहाँ न् ही म् बन गया है। इस प्रकार

किसी भी धातु को देखते ही हमें 'उपधा' को पहिचान लेना चाहिये।

जिन धातुओं की उपधा में ह्रस्व 'अ' है, उन्हें हम अदुपध धातु कहते हैं। जिन धातुओं की उपधा में ह्रस्व 'इ' है, उन्हें हम इदुपध धातु कहते हैं। जिन धातुओं की उपधा में ह्रस्व 'उ' है, उन्हें हम उदुपध धातु कहते हैं, जिन धातुओं की उपधा में ह्रस्व 'ऋ' है, उन्हें हम ऋदुपध धातु कहते हैं। जिन धातुओं की उपधा में 'न्' है, उन्हें हम नोपध धातु कहते है, इसी प्रकार सर्वत्र जानना चाहिये, जैसे -

अदुपध धातु	इदुपध धातु	उदुपध धातु	ऋदुपध धातु	नोपध धातु
पठ्	मिद्	मुद्	दृष्	भ्रंश्
वद्	भिद्	बुध्	कृष्	स्रंस्
रट्	छिद्	शुभ्	हृष्	कम्प्
हन्	चित्	रुच्	वृध्	अञ्च्
आदि	आदि	आदि	आदि	आदि

३. **गुण - अदेङ् गुणः** - अ, ए, ओ, अर् अल् - ये गुण कहलाते हैं।

४. **वृद्धि - वृद्धिरादैच्** - आ, ऐ, औ, आर्, आल्, ये वृद्धि हैं।

उरण् रपरः - 'ऋ' के स्थान पर जब भी अ, इ, उ होना कहा जाता है, तब वे अ, इ, उ, 'रपर' होकर अर्, इर्, उर् बन जाते हैं। इसीलिये ऋ के स्थान पर जब 'अ' गुण होता है, तब वह 'अर्' बन जाता है और ऋ के स्थान पर जब 'आ' वृद्धि होती है तब वह 'आर्' बन जाती है।

ऋ के स्थान पर जब 'इ' होता है, तब वह 'इर्', बन जाता है तथा ऋ के स्थान पर जब 'उ' होता है, तब वह 'उर्' बन जाता है।

गुण वृद्धि इस प्रकार जानें -

	अ	इ	उ	ऋ	ऌ	ए	ओ
गुण	अ	ए	ओ	अर्	अल्	ए	ओ
वृद्धि	आ	ऐ	औ	आर्	आल्	ऐ	औ

गुण का अर्थ है - 'इ', 'ई' को 'ए' हो जाना। जैसे - जि - जे/ श्रि - श्रे आदि। 'उ', 'ऊ' को 'ओ' हो जाना। जैसे - भू - भो / द्रु - द्रो

आदि। 'ऋ', 'ॠ' को 'अर्' हो जाना। जैसे - हृ - हर् / तॄ - तर् आदि।

वृद्धि के उदाहरण - ली - लै / भू - भौ / वृ - वार् / हृ - हार्।

५. सम्प्रसारण - इग्यणः सम्प्रसारणम् - जब य्, व्, र्, ल् के स्थान पर इ, उ, ऋ, लृ आदेश हो जायें, तो हम कहते हैं कि सम्प्रसारण हो गया। जैस - यज् - इज् -(य् को इ सम्प्रसारण) / वप् - उप् - (व् को उ सम्प्रसारण) ग्रह् - गृह् - (र् को ऋ सम्प्रसारण)

६. टि - अचोऽन्त्यादि टि - किसी भी अजन्त शब्द को देखिये। उसमें जो अन्तिम 'अच्' होता है, उसका नाम 'टि' होता है।

जैसे - राम में 'अ', हरि में 'इ', गुरु में 'उ' आदि 'टि' हैं। किसी भी हलन्त शब्द में, जो अन्तिम 'अच्' होता है, उस अन्तिम 'अच्' को मिलाकर, उसके आगे जो भी 'हल्' हो, उसका नाम 'टि' होता है। जैसे - मनस् में 'अस्', चर्मन् में 'अन्', भवत् में 'अत्' आदि।

७. सुप् प्रत्यय - प्रातिपदिकों में जो प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी विभक्तियाँ लगती हैं, उन्हीं का नाम सुप् प्रत्यय होता है। वे यथा स्थान बतलाये जायेंगे। यहाँ धात्वधिकार में उनकी आवश्यकता नहीं है।

८. तिङ् प्रत्यय - तिप् तस् झि सिप् थस् थ मिप् वस् मस् त आताम् झ थास् आथाम् ध्वम् इट् वहि महिङ् - ये १८ प्रत्यय 'तिङ्' प्रत्यय कहलाते है। इन्हीं १८ तिङ् प्रत्ययों से सारे लकारों के ति, तः अन्ति आदि तिङ् प्रत्यय बनते हैं, जो कि प्रथम अध्याय में विस्तार से बतलाये जा चुके हैं।

९. विभक्ति - विभक्तिश्च - इन्हीं सुप् तथा तिङ् प्रत्ययों का नाम विभक्ति भी होता है।

१०. धातु - प्रथम पाठ में बतला चुके हैं कि क्रियावाची 'भू' आदि की धातु संज्ञा 'भूवादयो धातवः' सूत्र से होती है तथा सन् आदि प्रत्यय लगाकर बने हुए प्रत्ययान्त धातुओं की धातु संज्ञा 'सनाद्यन्ता धातवः' सूत्र से होती है।

११. घुसंज्ञक धातु - दाधाध्वदाप् - दाप्, दैप् धातुओं को छोड़कर जितने भी दारूप और धारूप धातु हैं, उनकी घु संज्ञा होती है।

१२. प्रातिपादिक - अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपादिकम् - धातुओं को छोड़कर, प्रत्ययों को छोड़कर तथा प्रत्ययान्त को छोड़कर, जो भी अर्थवान् शब्द होते हैं, उनका नाम प्रातिपदिक होता है। जैसे - भू यह तो धातु है, इसका नाम

प्रातिपदिक नहीं है किन्तु राम, बालक, कृष्ण, वृक्ष आदि का नाम प्रातिपादिक है।

कृत्तद्धितसमासाश्च - जब धातुओं में 'कृत्' प्रत्यय लग जाते हैं तब धातुओं का नाम भी प्रातिपदिक हो जाता है। जैसे - कृष् धातु है। इसमें यदि 'न' यह कृत् प्रत्यय लगा दिया जाये, तो जो कृष् + न = कृष्ण शब्द बनेगा, उसका नाम प्रातिपदिक हो जायेगा। इस प्रातिपदिक में यदि 'सु' विभक्ति लगा दी जाये, तो कृष्ण + सु = कृष्णः, यह पद बन जायेगा।

इस कृष्णः पद में पुनः यदि कोई तद्धित प्रत्यय लगा दिया जाये, जैसे - कृष्णः + इञ् = कार्ष्णि, तब इसका नाम, पुनः प्रातिपादिक हो जायेगा।

१३. पद तथा अपद - सुप्तिङन्तं पदम् - 'सुप्' तथा 'तिङ्' ये प्रत्यय जिसके भी अन्त में लगते हैं, उनका नाम 'पद' हो जाता है। जब तक धातु से तिङ् प्रत्यय न लग जाये, तब तक वह धातु 'अपद' ही रहता है। जैसे 'भू' धातु को देखिये। इसके अन्त में 'तिङ्' प्रत्यय न होने से यह अपद है। जब इस 'भू' में हमने शप् विकरण लगाया, तो भू + शप् को मिलाकर 'भव' बना। इसके अन्त में भी 'तिङ्' प्रत्यय न होने से यह अपद है। अब भव + ति को मिलाकर जब हमने भवति बनाया, तो 'ति' लग जाने से इसका नाम तिङन्त पद हो गया।

प्रातिपदिकों में जब सुप् प्रत्यय लगते हैं, तब प्रातिपादिकों का नाम भी पद हो जाता है। जैसे - 'कृष्ण' यह प्रातिपदिक है, किन्तु इससे जब हम प्रथमा आदि विभक्तियाँ लगाकर कृष्णः कृष्णौ कृष्णाः आदि शब्दरूप बना लेते हैं, तब इनका नाम पद हो जाता है। हमने जाना कि पद दो प्रकार के होते है। सुबन्त पद तथा तिङन्त पद। **पद अपद को पहिचानकर ही सन्धिकार्य करना चाहिये।**

१४. द्वित्व - गम् को जब गम् गम् हो जाता है, तब हम कहते हैं कि गम् को 'द्वित्व' हो गया है। ऐसा कब कब होता है ?

लिट् लकार के प्रत्यय परे होने पर, सन्, यङ्, चङ् प्रत्यय परे होने पर तथा जुहोत्यादिगण में शप् का लोप हो जाने पर अर्थात् श्लु हो जाने पर, धातुओं को द्वित्व हो जाता है। **ये द्वित्व करने वाले सारे सूत्र अष्टाध्यायी में ६.१.१ से लेकर ६.१.१२ तक हैं।** यह सारी विधि आगे यथास्थान बतलाई जायेगी।

१५. अभ्यास - पूर्वोऽभ्यासः - जब भी किसी धातु को हम द्वित्व करते हैं, जैसे - गम् को गम् गम् / भू को भू भू / पठ् को पठ् पठ् / आदि, तब इन दो में जो प्रथम होता है, उसका नाम अभ्यास होता है।

१६. **अभ्यस्त - उभे अभ्यस्तम्** - द्वित्व कर देने के बाद, जो एक के स्थान पर दो धातु दिखने लगते हैं, उन दोनों का सम्मिलित नाम अभ्यस्त होता है। जैसे - दा - दा में, दोनों 'दा' का सम्मिलित नाम अभ्यस्त है, किन्तु अभ्यास नाम केवल पूर्व वाले 'दा' का ही है।

जक्षित्यादयः षट् - अदादिगण के जक्ष्, जागृ, दरिद्रा, चकासृ, शासु, दीधीङ्, वेवीङ् ये सात धातु बिना द्वित्व किये ही अभ्यस्त कहलाते है।

१७. **आदि** - आदि का अर्थ प्रारम्भ होता है। जैसे - पठ्, वद्, खाद् के आदि (प्रारम्भ) में, हल् (व्यञ्जन) हैं, अतः ये धातु हलादि हैं। अत्, इच्छ् आदि धातुओं के आदि (प्रारम्भ) में, अच् (स्वर) हैं, अतः ये धातु अजादि हैं।

१८. **अपृक्त - अपृक्त एकाल् प्रत्ययः** - जिन प्रत्ययों में एक ही अल् (वर्ण) होता है, वे एक अल् वाले एकाल् प्रत्यय, अपृक्त प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे - लङ् लकार परस्मैपद के त्, स् प्रत्यय 'अपृक्त प्रत्यय' कहलाते हैं।

१९ **अन्यतरस्याम्, वा, विभाषा तथा बाहुलक** - जब सूत्र में कहा हुआ कोई कार्य हो भी सकता हो, और न भी हो सकता हो, तब सूत्र में उसे 'अन्यतरस्याम्' 'वा' 'विभाषा' आदि शब्दों से कहा जाता है।

किन्तु वैदिक शब्दों की सिद्धि के लिये जो 'बहुलं छन्दिसि' आदि सूत्र हैं, उनमें कई कार्यों के लिये कहा गया है, कि वे कार्य बहुल करके होते हैं -

बहुल का अर्थ होता है कि वे कार्य हो भी सकते हैं, नहीं भी हो सकते हैं, विकल्प से भी हो सकते हैं, और जहाँ जो होना है, वहाँ वह न होकर कुछ और भी हो सकता है। इसी का नाम बाहुलक है।

२०. **परे** - भू + ति में 'भू' के बाद 'ति' आया है, तो इसे हम कहेंगे कि ति प्रत्यय भू धातु से परे है। पूरे ग्रन्थ में प्रत्यय लगने पर, इसी शब्द का प्रयोग किया जायेगा। भू + शप् में, शप् प्रत्यय लगने पर, भू धातु को गुण होता है तो हम कहेंगे कि शप् प्रत्यय परे होने पर भू धातु को गुण होता है।

२१, २२. **स्थानी तथा आदेश** - किसी वर्ण को या पूरे शब्द को हटाकर, जब उसकी जगह, कोई दूसरा वर्ण या शब्द आकर, बैठ जाता है, तब जिसे हटाया जाता है, उसे 'स्थानी' कहते हैं तथा जो स्थानी की जगह आकर बैठ जाता है, उसे 'आदेश' कहते हैं। वह स्थानी की जगह आकर बैठ जाने वाला वर्ण या शब्द, हटाने की क्रिया करता है, अतः शत्रु के समान होता है, इसलिये व्याकरणशास्त्र

में आदेश को शत्रु के समान कहा जाता है - **शत्रुवदादेशः।**

प्रति + एकः = प्रत्येकः को देखिये। 'इ' को हटाकर उसके स्थान पर आकर, 'य्' बैठ गया है। अतः इ स्थानी है और य् आदेश है।

२३. **निमित्त** - 'इ' के स्थान पर 'य्' क्यों हुआ है ? इ को य् होने का निमित्त अर्थात् कारण है 'ए'। अतः जिसके कारण कोई भी कार्य होता है, उसे उस कार्य का निमित्त कहा जाता है। अतः यहाँ 'इ' के स्थान पर 'य्' होने का निमित्त 'ए' है।

२४. **आगम** - जैसे हमारे घर मित्र आता है, तो वह हमें हटाये बिना आकर घर में बैठ जाता है। उसी प्रकार जब किसी भी वर्ण को हटाये बिना कोई दूसरा वर्ण आकर बैठ जाता है, तो उसे हम 'आगम' कहते हैं। जैसे -

'वदि' धातु में हम 'इ' की इत् संज्ञा करते हैं, और इदितो नुम् धातोः सूत्र से, इसके अन्तिम अच् के ठीक बाद में 'नुम्' को बैठा देते हैं। जैसे - वन्द्। इसके लिये हम किसी वर्ण को हटाते नहीं हैं। जो बिना किसी को हटाये चुपचाप आकर मित्र जैसा बैठ जाये, उसे हम आगम कहते हैं - **मित्रवदागमः।**

२५. **संयोग** - ऐसे दो या दो से अधिक व्यञ्जन, जिनके बीच में कोई स्वर न आया हो, उनका नाम संयोग होता है। जैसे -

पुष्प में - ष् + प् का संयोग है। बुद्धि में - द् + ध् का संयोग है। कृत्स्न में - त् + स् + न् का संयोग है। वृष्णि में - ष् + ण् का संयोग है।

२६. **ह्रस्व** - एक मात्रा वाले, अ, इ, उ, ऋ, ऌ, इन पाँच स्वरों का नाम ह्रस्व है।

२७. लघु - **ह्रस्वं लघु** - इन्हीं पाँच ह्रस्व स्वरों का ही नाम लघु भी होता है।

संयोगे गुरु - इन ह्रस्व अ, इ, उ, ऋ, ऌ, इन पाँच स्वरों के बाद यदि कोई संयुक्त व्यञ्जन आये, तो ये लघु स्वर ही गुरु कहलाने लगते हैं। जैसे-

हट्ट - इसमें ह्रस्व अ के बाद ट् + ट् का संयोग है। इसलिये इस संयोग के पूर्व में स्थित ह्रस्व 'अ' अब 'गुरु' कहलायेगा।

किन्नर - इसमें ह्रस्व इ के बाद न् + न् का संयोग है। इसलिये इस संयोग के पूर्व में स्थित ह्रस्व 'इ' अब 'गुरु' कहलायेगा।

मुद्गर - इसमें ह्रस्व उ के बाद द् + ग् का संयोग है। इसलिये इस संयोग

के पूर्व में स्थित ह्रस्व 'उ' अब 'गुरु' कहलायेगा।

कृष्ण - इसमें ह्रस्व ऋ के बाद ष् + ण् का संयोग है। इसलिये इस संयोग के पूर्व में स्थित ह्रस्व 'ऋ' अब 'गुरु' कहलायेगा।

२८. **दीर्घ** - आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ ये दीर्घ स्वर कहलाते हैं।

दीर्घञ्च - इन आठ दीर्घ स्वरों का नाम गुरु भी है।

२९. **लोप** - किसी शब्द में कोई वर्ण दिख रहा हो, किन्तु किसी कारणवश उसका दिखना बन्द हो जाये, तो उस न दिखने को ही 'लोप' कहा जाता है।

जैसे - भ्रंश् धातु को देखिये। इसमें 'न्' दिखाई पड़ रहा है, किन्तु जब इसमें 'यते' प्रत्यय लगता है, तब भ्रंश् + यते = भ्रश्यते बनता है। अब देखिये कि भ्रंश् में जो न् दिख रहा था, वह भ्रश्यते में नहीं दिख रहा है। तो हम कहते है कि न् का लोप हो गया है।

३०. **अनुवृत्ति** - अष्टाध्यायी में सूत्र ऐसी व्यवस्था से बैठे हैं कि यदि ऊपर के सूत्रों के पदों की आवश्यकता नीचे के सूत्रों को है, तो नीचे के सूत्र ऊपर के सूत्रों के पदों को खींचकर ले सकते हैं। जैसे -

'उपदेशेजनुनासिक इत्' यह सूत्र है। इसमें इत् पद है। इसके नीचे हलन्त्यम्, न विभक्तौ तुस्माः, षः प्रत्ययस्य, आदिर्ञिटुडवः, चुटू, लशक्वतद्धिते, ये ६ सूत्र हैं। इन छहों सूत्रों को इत् पद की आवश्यकता है। अतः ये छहों सूत्र 'उँपदेशेजनुनासिक इत्' सूत्र से 'इत्' पद को खींच लेते हैं। इसी को 'अनुवृत्ति' कहा जाता है। इस अनुवृत्ति से लाभ यह होता है कि सूत्रों के अर्थ नहीं रटना पड़ते हैं।

सूत्रों के प्रकार - सूत्र ६ प्रकार के होते हैं

१. **संज्ञा सूत्र** - जो सूत्र, संज्ञा अर्थात् नामकरण करते हैं, वे सूत्र संज्ञा सूत्र कहलाते हैं। जैसे 'उपदेशेजनुनासिक इत्' सूत्र, 'इत् संज्ञा' करता है, अतः यह संज्ञा सूत्र है। 'वृद्धिरादैच्' सूत्र वृद्धि संज्ञा करता है अतः यह संज्ञा सूत्र है।

२. **परिभाषा सूत्र** - जो सूत्र, विधि सूत्रों के अर्थों को स्पष्ट करते हैं वे परिभाषा सूत्र कहलाते हैं। जैसे - 'आद्गुणः' सूत्र, जब ऋ के स्थान पर 'अ' गुण करने को कहता है, तब 'उरण् रपरः' सूत्र आकर उसके अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहता है कि 'ऋ' के स्थान पर 'अ' गुण न होकर 'अर्' गुण कीजिये। अतः यह सूत्र, आद्गुणः सूत्र के अर्थ को स्पष्ट करने के कारण 'परिभाषा' सूत्र

है।

३. **विधि सूत्र** – जो सूत्र, गुण, वृद्धि, सम्प्रसारण, लोप आदि किसी भी कार्य का विधान करते हैं, वे विधि सूत्र कहलाते हैं।

४. **नियम सूत्र** – एक विधि सूत्र के द्वारा कोई कार्य कह दिये जाने पर, यदि दूसरा सूत्र किसी कारणवश उसी कार्य को पुन: कहता है तो उस सूत्र को नियम सूत्र कहा जाता है।

५. **अधिकार सूत्र** – अष्टाध्यायी में जो भी कार्य कहा जाता है, उसे आगे पीछे से एक अधिकार में बाँध दिया जाता है। जैसे अष्टाध्यायी में धातु से लगने वाले प्रत्यय कहना है, तो पहिले एक सूत्र बनाते हैं – धातो: (३.१.९१) इसका अर्थ है – धातु से। बस यहाँ से वे सारे प्रत्यय कहना प्रारम्भ कर दिया, जो प्रत्यय धातुओं से लगाये जाते हैं। अब बार बार धातो:, धातो: कहने की आवश्यकता नहीं है। **यह 'धातो:' अधिकार ३.१.९१ से ३.४.११७ तक चलता है** और यह 'धातो:' सूत्र इन सारे सूत्रों में जाकर लगता रहता है अर्थात् अनुवृत्त होता है। इस अधिकार से पहिले और इस अधिकार के बाद धातुओं से किसी प्रत्यय का विधान अष्टाध्यायी में नहीं मिलेगा। इसी प्रकार **'तद्धिता:'** यह एक अधिकार सूत्र बनाया और इसके भीतर सारे तद्धित प्रत्यय कह दिये। अधिकार और अनुवृत्ति ही वस्तुत: अष्टाध्यायी के प्राण हैं।

६. **अतिदेश सूत्र** – जो जैसा नहीं है, उसे वैसा मान लेने को ही 'अतिदेश' कहते हैं। यह मानने का कार्य जिन सूत्रों के कारण होता है, उन सूत्रों को हम अतिदेश सूत्र कहते हैं।

लोक में भी ऐसा होता है, कि जब गुरुजी न हों, तो उनके स्थान में गुरुपुत्र को 'गुरु' जैसा मान लिया जाता है। इसी प्रकार शास्त्र में भी अनेक जगह ऐसा करना पड़ता है कि जो जैसा नहीं होता, उसे वैसा मान लेना पड़ता है। जो जैसा नहीं है, उसे वैसा मान लेने को ही अतिदेश कहते हैं। जैसे –

सार्वधातुकमपित् – जो अपित् सार्वधातुक प्रत्यय हैं, उन्हें ङित् न होते हुए भी ङित् जैसा मान लिया जाता है। इसलिये इन्हें ङित् प्रत्यय भी कह सकते हैं।

ये प्रमुख पारिभाषिक शब्द बतलाये गये। आगे जिनकी भी आवश्यकता पड़ेगी, उन्हें वहीं बतलायेंगे।

कुछ प्रमुख सन्धियाँ तथा षत्व, णत्व विधि

यहाँ कुछ प्रमुख सन्धियाँ ही बतलायी जा रही हैं।

प्रमुख अच् सन्धियाँ -

यण् सन्धि - इको यणचि - इक् अर्थात् इ, उ, ऋ, लृ, के स्थान पर यण् अर्थात् य् व् र् ल् आदेश होते हैं, अच् परे रहने पर -

प्रति + एकः - प्रत्य् + एकः = प्रत्येकः ।
मधु + अरिः - मध्व् + अरिः = मध्वरिः ।
धातृ + अंशः - धात्र् + अंशः = धात्रंशः ।
लृ + आकृतिः - ल् + आकृतिः = लाकृतिः ।

अयादि सन्धि - एचोऽयवायावः - एच् के स्थान पर क्रमशः अय्, अव्, आय्, आव् आदेश होते हैं, अच् परे होने पर। अर्थात् ए को अय् / ओ को अव् / ऐ को आय् / औ को आव्। क्रमशः उदाहरण -

ए को अय् - ने + अ - नय् + अ = नय
ओ को अव् - भो + अ - भव् + अ = भव
ऐ को आय् - ध्यै + अ - ध्याय् + अ = ध्याय
औ को आव् - पौ + इ - पाव् + इ = पावि

ध्यान रहे कि यदि ए, ओ, ऐ, औ, के बाद हल् = व्यञ्जन हो, तब ये आदेश नहीं होते।

सवर्ण दीर्घ सन्धि - अकः सवर्णे दीर्घः - अक् के बाद, सवर्ण अक् आने पर पूर्व + पर के स्थान पर एक दीर्घ आदेश होता है। अर्थात् -

अ + अ = आ

दैत्य + अरिः = दैत्यारिः / विद्या + आलयः = विद्यालयः
हिम + आलयः = हिमालयः / रमा + अस्ति = रमास्ति

इ + इ = ई

पठति + इदम् = पठतीदम् / नदी + ईशः = नदीशः
मुनि + ईशः = मुनीशः / गौरी + इयम् = गौरीयम्

उ + उ = ऊ

भानु + उदयः = भानूदयः / श्वश्रू + ऊकारः = श्वश्रूकारः

ऋ + ऋ = ॠ

लघु + ऊर्मिः = लघूर्मिः / होतृ + ऋकारः = होतॄकारः

गुण सन्धि – आद् गुणः – अ, आ, से इक् अर्थात् इ, उ, ऋ, ऌ परे होने पर पूर्व + पर के स्थान पर एक गुण आदेश होता है –

अ, आ + इ = ए – भव + ईत् = भवेत्

अ, आ + उ = ओ – सूर्य + उदयः = सूर्योदयः

अ, आ + ऋ = अर् – ब्रह्म + ऋषिः = ब्रह्मर्षिः

वृद्धि सन्धि – वृद्धिरेचि – अ, आ से एच् (ए, ओ, ऐ, औ,) परे होने पर पूर्व + पर के स्थान पर एक वृद्धि आदेश होता है। यथा –

अ, आ + ए = ऐ – कृष्ण + एकत्वम् = कृष्णैकत्वम्

अ, आ + ओ = औ – गङ्गा + ओघः = गङ्गौघः

अ, आ + ऐ = ऐ – एध + ऐ = एधै

अ, आ + औ = औ – कृष्ण + औत्कण्ठ्यम् = कृष्णौत्कण्ठ्यम्।

पररूप सन्धि –

अतो गुणे – अपदान्त 'अ' को पररूप होता है, गुण परे होने पर अर्थात् अ, ए, ओ परे होने पर।

अभी हमने देखा कि –

अ + अ में – अकः सवर्ण दीर्घः से दीर्घ सन्धि होती है।

अ + ए में – वृद्धिरेचि से वृद्धि सन्धि होती है।

अ + ओ में – वृद्धिरेचि से वृद्धि सन्धि होती है।

किन्तु यहाँ विचार करना चाहिए कि यदि यह पूर्व वाला 'अ' किसी पद के अन्त में है अर्थात् 'पदान्त अ' है, तब तो ये सन्धियाँ होती हैं, किन्तु यदि यह 'अ' किसी पद के अन्त में नहीं है, तो हमें समझना चाहिये कि यह अपदान्त 'अ' है। ऐसे 'अपदान्त अ' के बाद 'गुण' आने पर अर्थात् 'ह्रस्व अ', 'ए', 'ओ' आने पर न तो 'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से दीर्घ होता है, न ही 'वृद्धिरेचि' सूत्र से वृद्धि होती है, अपितु 'अतो गुणे' सूत्र से पररूप हो जाता है।

पररूप का अर्थ है कि यह 'अ' जाकर अपने आगे वाले अ, ए, ओ में इस प्रकार मिल जाता है, कि दिखता ही नहीं है। जैसे पानी में घुला नमक दिखता नहीं है। जैसे –

भव + अन्ति को देखिये – यहाँ अ + अ है। इनमें सवर्ण दीर्घ सन्धि

होनी चाहिए थी, किन्तु जब हम पूर्व वाले 'अ' को देखते हैं, तो पाते हैं कि यह 'अ' तो 'भव' के अन्त में है और यह 'भव' तो अभी पद बना ही नहीं है, अतः यह पद के अन्त में न होने के कारण 'पदान्त अ' नहीं है, अपितु अपद के अन्त में होने के कारण 'अपदान्त अ' है। ऐसे 'अपदान्त अ' को 'अ' परे होने पर, कभी भी सवर्णदीर्घ होकर भवान्ति नहीं बनेगा, अपितु पररूप ही होगा, तो भव + अन्ति / पूर्व 'अ' को पररूप होकर - भव् + अन्ति = भवन्ति, ही बनेगा।

इसी प्रकार पच + ए को देखिये - यहाँ अ + ए है। इनमें वृद्धि सन्धि होनी चाहिए थी, किन्तु जब हम पूर्व वाले 'अ' को देखते हैं तो पाते हैं कि यह 'अ' तो 'पच' के अन्त में है और यह 'पच' तो अभी पद बना ही नहीं है, अतः यह पद के अन्त में न होने के कारण 'पदान्त अ' नहीं है, अपितु अपद के अन्त में होने के कारण 'अपदान्त अ' है। ऐसे 'अपदान्त अ' को 'ए' परे होने पर, कभी भी वृद्धि होकर पचै नहीं बनेगा, अपितु पररूप ही होगा, तो पच + ए / पूर्व 'अ' को पररूप होकर - पच् + ए = पचे, ही बनेगा।

धातु रूप बनाते समय इस सूत्र का विशेष ध्यान रखें। क्योंकि वहाँ प्रत्यय के पूर्व में जो भी होगा वह अपद ही होगा।

आटश्च - लङ् लकार के रूप बनाते समय अजादि धातुओं के आदि में 'आट्' का आगम होता है। इस आट् के बाद 'अच्' आने पर अभी तक जो जो सन्धियाँ कही गई हैं, उन सभी को बाधकर, पूर्व + पर के स्थान पर, एक वृद्धि आदेश ही होता है, गुण आदि कुछ नहीं।

यथा - आट् + अटत् - आ + अटत् / यहाँ **अकः सवर्णे दीर्घः** सूत्र से आ + अ को आ दीर्घ होना था। उस दीर्घ को बाधकर पूर्व पर के स्थान पर एक वृद्धि आदेश 'आ' ही होता है, दीर्घ आदि कुछ नहीं।

आट् + इच्छत् = आ + इच्छत् / यहाँ **आद्गुणः** सूत्र से आ + इ को 'ए' गुण होना था। उस गुण को बाधकर 'आटश्च' सूत्र से पूर्व + पर के स्थान पर एक वृद्धि आदेश 'ऐ' ही होता है, गुण आदि कुछ नहीं - आ + इच्छत् = ऐच्छत्।

आट् + उक्षत् = आ + उक्षत् / यहाँ भी **आद्गुणः** सूत्र से आ + उ को 'ओ' गुण होना था। उस गुण को बाधकर पूर्वपर के स्थान पर एक वृद्धि आदेश 'औ' ही होता है, गुण आदि कुछ नहीं - आ + उक्षत् = औक्षत्।

आट् + ऋच्छत् = आ + ऋच्छत् / यहाँ भी **आद्गुणः** सूत्र से आ + ऋ को अर् गुण होना था। उस गुण को बाधकर पूर्वपर के स्थान पर एक वृद्धि आदेश आर् ही होता है, गुण आदि कुछ नहीं। आ + ऋच्छत् = आर्च्छत्।

आट् + एधत = आ + एधत / यहाँ वृद्धिरेचि सूत्र से अ + ए को 'ऐ' वृद्धि होना था। किन्तु यहाँ वृद्धिरेचि सूत्र से होने वाली वृद्धि को बाधकर पूर्वपर के स्थान पर आटश्च सूत्र से वृद्धि होती है, वृद्धिरेचि सूत्र से वृद्धि नहीं होती - आ + एधत = ऐधत।

आट् + ओखत् / यहाँ वृद्धिरेचि सूत्र से आ + ओ को 'औ' वृद्धि होना था। उस वृद्धिरेचि सूत्र से होने वाली वृद्धि को बाधकर पूर्वपर के स्थान पर आटश्च सूत्र से वृद्धि होर्ती है, वृद्धिरेचि सूत्र से नहीं - आ + ओखत् = औखत्।

ये प्रमुख़ अच् सन्धियाँ है। विशेष अच् सन्धियाँ तथा हल् सन्धियाँ विशेष स्थलों पर बतलाई जायेंगी।

णत्व विधि

रषाभ्यां नो णः समानपदे - र् और ष् के बाद आने वाले न् को ण् होता है, समानपद में। यथा आस्तीर् + न = आस्तीर्णः / इसको देखिये - इसमें र् के बाद 'न' आया है, अतः उसे 'ण' हुआ है।

पुष + श्ना = पुष्णा / मुष् + श्ना = मुष्णा में 'ष्' के बाद 'न' आया है, अतः उसे 'ण' हुआ है।

ऋवर्णान्नस्य णत्वं वाच्यम् - ऋ के बाद आने वाले न् को भी ण् होता है, समानपद में। गृह् + श्ना = गृह्णा में, ऋवर्ण के बाद न आया है, अतः उसे णत्व हुआ है।

अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि - यदि र्, ष्, ऋ के बाद 'अट्' अर्थात् अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र, कवर्ग, पवर्ग, आङ् अथवा अनुस्वार आये हों, और उनके बाद 'न' आया हो, तो भी 'न' को णत्व हो जाता है।

क्रीणा में - र् + न् के बीच में इ है, तब भी न् को ण् हो गया है।
पुष्णा में - ष् + न् के बीच में उ है, तब भी न् को ण् हो गया है।
गृह्णा में - ऋ + न के बीच में ह् है, तब भी न् को ण् हो गया है।

उपसर्गादसमासेऽपि णोपदेशस्य - उन धातुओं को देखिये, जो 'न' अथवा 'ण' से प्रारम्भ हो रहे हैं। इनमें से, नर्द्, नाट्, नाथ्, नाध्, नन्द्, नक्क्,

नृ, नृत्, इन आठ धातुओं को छोड़कर शेष नकारादि, णकारादि धातु णोपदेश कहलाते हैं। यदि किसी उपसर्ग में 'र्' 'ष्' आये हों, तब उनसे परे आने वाले इन 'णोपदेश' धातुओं के 'न्' को ही 'ण्' होता है, सभी धातुओं के 'न्' को नहीं। यथा - प्र + नदति = प्रणदति, प्रणमति आदि।

यह णत्व विधि है। आगे इसी विधि से आवश्यकतानुसार णत्व करते चलें। अष्टाध्यायी में णत्व के सारे सूत्र ८.४.१ से लेकर ८.४.३१ तक हैं। इन्हें अष्टाध्यायी की काशिकावृत्ति में एक साथ देख लेना चाहिये। यहाँ प्रमुख सूत्र ही बतलाये हैं।

षत्व विधि

आदेशप्रत्यययो: - इण् अर्थात् इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र्, ल तथा कवर्ग के बाद आने वाले, आदेश के सकार को तथा प्रत्यय के सकार को 'षकार' आदेश होता है।

इण् के बाद आने वाले प्रत्यय के सकार को 'षकार' आदेश होना

ने + स्यति = नेष्यति, हो + स्यति = होष्यति, आदि में प्रत्यय के 'स्' के पूर्व में 'इण्' है, अत: प्रत्यय के 'स्यति' को 'ष्यति' बन जाता है।

इसी प्रकार - 'शक् + स्यति' में प्रत्यय के 'स्' के पूर्व में कवर्ग है, अत: स्यति को ष्यति बन जाता है - शक् + स्यति - शक् + ष्यति। क् + ष् मिलकर क्ष् बनता है (क्ष्संयोगे क्ष:) - शक् + ष्यति = शक्ष्यति बनेगा। इसी प्रकार - स्वर् + स्यति - स्वर् + ष्यति = स्वर्ष्यति आदि बनाइये।

'पास्यति' में स के पूर्व में 'आ' है, यह 'आ' 'इण्' में नहीं आता है। अत: इस 'आ' से परे आने वाला 'स्', 'स्' ही रहेगा।

इण् के बाद आने वाले आदेश के सकार को 'षकार' आदेश होना

उन धातुओं को देखिये, जो 'ष्' से प्रारम्भ हो रहे हैं। इनके 'ष्' के स्थान पर 'धात्वादे: ष: स:' सूत्र से 'स्' आदेश होता है। जैसे - षूद् - सूद्, ष्वप् - स्वप्, षिध् - सिध् आदि।

किसी वर्ण को हटाकर, जब उसकी जगह, कोई दूसरा वर्ण आकर, बैठ जाता है, तब जो वर्ण स्थानी की जगह आकर बैठ जाता है, उसे 'आदेश' कहते हैं। अत: 'ष्' के स्थान पर आया हुआ यह 'स्,' आदेश का सकार है। यदि ऐसा आदेश का सकार 'इण्' के बाद आया हो, तो उसे 'आदेशप्रत्यययो:' सूत्र से 'ष्'

हो जाता है। जैसे - सिषेध, सुष्वाप, सुषूदे आदि में। जो आदेश का सकार न हो, उसे 'ष्' नहीं होता। जैसे - चुस्कुन्दे आदि में।

अष्टाध्यायी में षत्व के सारे सूत्र ८.३.५५ से लेकर ८.३.११९ तक हैं। सारे षत्व कार्यों को, अष्टाध्यायी की काशिकावृत्ति में एक साथ देख लेना चाहिये। यहाँ प्रमुख सूत्र ही बतलाये गये है।

पूर्वपरनित्यान्तरङ्गापवादानामुत्तरोत्तरं बलीयः

अष्टाध्यायी में कुल ३९७८ सूत्र हैं। इन्हें आचार्य ने अष्टाध्यायी में आठ अध्यायों में रखा है। प्रत्येक अध्याय में चार चार पाद हैं। कभी कभी ऐसा होता है कि एक ही स्थान पर कार्य करने के लिये, दो सूत्र एक साथ प्राप्त हो जाते हैं। ऐसे स्थलों पर निर्णय कैसे हो ?

पूर्व सूत्र से परसूत्र बली होते हैं -

अष्टाध्यायी के सवा सात अध्यायों को सपादसप्ताध्यायी कहते हैं तथा इनसे बचे हुए जो अष्टमाध्याय के तीन पाद हैं, उन्हें त्रिपादी कहते हैं।

विप्रतिषेधे परं कार्यम् - जब 'सपादसप्ताध्यायी' के ऐसे दो सूत्र, एक साथ, एक ही स्थल पर काम करने के लिये उपस्थित हो जायें, जिन्हें यदि हम एक जगह काम न करने दें, तो भी वे अन्यत्र काम कर सकें, तो इसे विप्रतिषेध अथवा तुल्यबलविरोध कहा जाता है। 'सपादसप्ताध्यायी' के सूत्रों में ऐसा तुल्यबलविरोध होने पर, जो सूत्र क्रम में बाद वाला हो अर्थात् पर हो, उसी से कार्य करना चाहिये। जैसे -

शक्नु + अन्ति / इसे देखिये। यहाँ 'इको यणचि' सूत्र ६.१.७७ से यण् प्राप्त है, तथा 'अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ' सूत्र ६.४.७७ से उवङ् प्राप्त है। इन दोनों में से कौन हो ?

देखिये कि ये दोनों ही सूत्र 'सपादसप्ताध्यायी' के हैं। इनमें से 'अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वारियङुवङौ' सूत्र ६.४.७७ ही क्रम में पर, अर्थात् बाद का है।

अतः यहाँ इको यणचि से यण् न होकर, 'अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ' सूत्र से उवङ् ही होगा। **इसे ही कहते हैं कि परसूत्र ने, पूर्वसूत्र को बाध लिया।**

पूर्वत्रासिद्धम् - किन्तु यदि दोनों सूत्र त्रिपादी के हाते हैं, तब पूर्वसूत्र काम करता है और परसूत्र असिद्ध हो जाता है। जैसे - अबान्ध् + सिच् + ताम् में 'झलो झलि' ८.२.२६ से सलोप तथा 'एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः' सूत्र

८.२.४२ से भष्भाव, ये दोनों ही प्राप्त हैं। ये दोनों ही सूत्र त्रिपादी के हैं। अत: इनमें पूर्वसूत्र का कार्य सलोप होगा और परसूत्र का कार्य भष्भाव असिद्ध हो जायेगा, तो 'अबान्धाम्' प्रयोग बनेगा।

अब देखिये कि इस व्यवस्था के अनुसार 'त्रिपादी' के किसी सूत्र से कार्य कर चुकने के बाद, यदि 'सपादसप्ताध्यायी' का कोई सूत्र, पुन: कार्य करने के लिये आ जाये, तो 'त्रिपादी' के सूत्र के द्वारा किये हुए कार्य को ऐसा समझना चाहिये कि मानों वह कार्य हुआ ही नहीं है। जैसे - अस्मै + उद्धर, को देखिये। यहाँ 'एचोऽयवायाव:' इस 'सपादसप्ताध्यायी' के सूत्र से 'ऐ' को 'आय्' आदेश कर देने के बाद, 'अस्माय् + उद्धर' बनता है।

अब यहाँ 'लोप: शाकल्यस्य' ८.३.१९, इस त्रिपादी के सूत्र से, अस्माय् + उद्धर में य् का लोप करके 'अस्मा + उद्धर', बन जाने के बाद, पुन: 'आद्गुण:' ६.१.८७ इस सपादसप्ताध्यायी के सूत्र से गुण प्राप्त होता है। यह गुण करें कि न करें ?

'पूर्वत्रासिद्धम्' सूत्र कहता है कि 'सपादसप्ताध्यायी' के सूत्र 'आद्गुण:' ६.१.८७ के आने पर, 'त्रिपादी' के सूत्र 'लोप: शाकल्यस्य' ८.३.१९ के द्वारा किया गया 'यलोप', असिद्ध अर्थात् न हुए जैसा हो जायेगा, तो आद्गुण: सूत्र को वहाँ पुन: य् दिखने लगेगा इसलिये आद्गुण: सूत्र वहाँ गुण नहीं कर पायेगा, तो 'अस्मा उद्धर' ही बना रहेगा।

परसूत्र से नित्यसूत्र बली होते हैं -

नित्य सूत्र परसूत्र से भी बली होते हैं। जैसे - पुच्छ + णिच् में 'अचो ञ्णिति' सूत्र से वृद्धि भी प्राप्त है, तथा 'टे:' सूत्र से टिलोप भी प्राप्त है।

अब देखिये कि यदि हम पुच्छ + णिच् को 'अचो ञ्णिति' सूत्र से - पुच्छा + णिच्, ऐसे वृद्धि कर भी लेते हैं, तब भी 'टे:' सूत्र से इसकी 'टि' का लोप प्राप्त होता ही है। जो विधि, एक सूत्र से कार्य कर चुकने के पहिले भी प्राप्त हो तथा कार्य कर चुकने के बाद प्राप्त हो, उसे नित्य विधि कहते हैं - कृताकृतप्रसङ्गविधिर्नित्य:। अत: 'टि' का लोप नित्य है। उसे ही होना चाहिये। वृद्धि को नहीं।

नित्यसूत्र से अन्तरङ्ग सूत्र बली होते हैं -

जैसे - अधि + इ + ति, इसको देखिये। यहाँ इ + इ में 'अक: सवर्णे

दीर्घः' सूत्र से सवर्णदीर्घ सन्धि प्राप्त है। साथ ही 'ति' प्रत्यय के कारण धातु के 'इ' को 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से गुण भी प्राप्त है।

यदि हम पहिले 'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से सवर्णदीर्घ सन्धि करते हैं, तो अधि + इ = अधी बनाकर / अधी + ति में 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से गुण करने से 'अधेति' ऐसा अनिष्ट प्रयोग बनने लगेगा।

अतः हमें यहाँ कार्यों की अन्तरङ्गता और बहिरङ्गता का विचार करना चाहिये। जैसे अपने शरीर सम्बन्धी कोई आवश्यकता उपस्थित होने पर हम अन्य सारे कार्यों को रोककर पहिले उसी को करते हैं, क्योंकि वह कार्य अन्तरङ्ग होता है। उसके बाद ही अन्य बहिरङ्ग कार्यों को करते हैं, ठीक उसी प्रकार यहाँ विचार करें -

उपसर्ग, सदा धातु प्रत्यय से पृथक् होता है। वह वास्तव में धातु से अलग शब्द ही है। अतः धातु तथा उपसर्ग के बीच में होने वाला बहिरङ्ग कार्य कहलाता है तथा धातु और प्रत्यय के बीच में होने वाला कार्य अन्तरङ्ग कहलाता है।

अतः हम पहिले 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से, धातु और प्रत्यय के बीच में होने वाले गुणकार्य को कर लेते हैं, क्योंकि वह कार्य अन्तरङ्ग है। इ + ति / गुण करके - ए + ति / अब अधि + एति के बीच 'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से सवर्णदीर्घ प्राप्त ही नहीं है, अपितु 'इको यणचि' से यण् प्राप्त है। अतः यण् करके अधि + एति = अध्येति बनता है।

ध्यान रहे कि अन्तरङ्गता और बहिरङ्गता अनेक प्रकार की होती है।

अन्तरङ्ग सूत्र से बली अपवाद सूत्र होते हैं -

अ अत् + णल् में 'अकः सवर्णे दीर्घः' से दीर्घ, 'अतो गुणे' से पररूप, तथा 'अत आदेः' से अभ्यास को दीर्घ प्राप्त है। इनमें से 'अत आदेः' सूत्र ऐसा है, जिसे यहाँ काम न करने देंगे, तो उसे कहीं भी काम करने का स्थान ही नहीं बचेगा। वह सर्वथा निरवकाश हो जायेगा।

ऐसे निरवकाश सूत्रों को अपवाद सूत्र कहा जाता है। अपवाद सूत्र सबसे बली होते हैं। अतः यहाँ 'अत आदेः' सूत्र से अभ्यास को दीर्घ ही होगा।

अष्टाध्यायी पढ़ते समय इन सबका ध्यान रखना चाहिये।

❀ ❀ ❀

तृतीय पाठ

संक्षिप्त अङ्गकार्य

सारे प्रत्ययों को हम प्रथम अध्याय में विस्तार से बतला चुके हैं। अङ्गकार्य बतलाने के लिये, इन्हें प्रसङ्गवश पुनः बतला रहे हैं। हम जानते हैं कि प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं। सार्वधातुक प्रत्यय तथा आर्धधातुक प्रत्यय। सार्वधातुक प्रत्यय पुनः तीन प्रकार के होते हैं। तिङ् सार्वधातुक प्रत्यय, कृत् सार्वधातुक प्रत्यय तथा विकरण सार्वधातुक प्रत्यय।

तिङ् सार्वधातुक प्रत्यय पुनः दो प्रकार के होते हैं।

प्रथम गण समूह के तिङ् सार्वधातुक प्रत्यय तथा द्वितीय गण समूह के तिङ् सार्वधातुक प्रत्यय। ये सारे प्रत्यय इस प्रकार हैं -

१. तिङ् सार्वधातुक प्रत्यय

प्रथम गणसमूह के तिङ् सार्वधातुक प्रत्यय

भ्वादि, दिवादि, तुदादि, चुरादिगण के धातुओं के, लट्, लोट्, लङ् तथा विधिलिङ् लकारों के रूप बनाने के लिये इन प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है।

प्रत्ययान्त धातुओं के अन्त में जब 'अ' हो, तब भी लट्, लोट्, लङ् तथा विधिलिङ् लकारों के रूप बनाने के लिये इन प्रत्ययों का प्रयोग कीजिये।

लट् लकार

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	ति	तः	अन्ति	ते	इते	अन्ते
म. पु.	सि	थः	थ	से	इथे	ध्वे
उ. पु.	मि	वः	मः	ए	वहे	महे

लोट् लकार

प्र. पु.	तु, तात्	ताम्	अन्तु	ताम्	इताम्	अन्ताम्
म. पु.	०, तात्	तम्	त	स्व	इथाम्	ध्वम्
उ. पु.	आनि	आव	आम	ऐ	आवहै	आमहै

लङ् लकार

प्र. पु.	त्	तांम्	अन्	त	इताम्	अन्त
म. पु.	स् (:)	तम्	त	थाः	इथाम्	ध्वम्
उ. पु.	अम्	व	म	इ	वहि	महि

विधिलिङ् लकार

प्र.पु.	इत्	इताम्	इयुः	ईत	ईयाताम्	ईरन्
म.पु.	इः	इतम्	इत	ईथाः	ईयाथाम्	ईध्वम्
उ.पु.	इयम्	इव	इम	ईय	ईवहि	ईमहि

द्वितीय गण समूह के तिङ् सार्वधातुक प्रत्यय

अदादि, जुहोत्यादि, स्वादि, रुधादि, तनादि, क्र्यादि गण के धातुओं के, लट्, लोट्, लङ् तथा विधिलिङ् लकारों के रूप बनाने के लिये इन प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है।

प्रत्ययान्त धातुओं के अन्त में जब 'अ' न हो, तब भी लट्, लोट्, लङ् तथा विधिलिङ् लकारों के रूप बनाने के लिये इन प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है।

लट् लकार

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	*ति*	तः	अन्ति	ते	आते	अते
म. पु.	*सि*	थः	थ	से	आथे	ध्वे
उ. पु.	*मि*	वः	मः	ए	वहे	महे

लोट् लकार

प्र. पु.	*तु*, तात्	ताम्	अन्तु	ताम्	आताम्	अताम्
म. पु.	हि, तात्	तम्	त	स्व	आथाम्	ध्वम्
उ. पु	***आनि***	***आव***	***आम***	***ऐ***	***आवहै***	***आमहै***

लङ् लकार

प्र. पु.	*त*	ताम्	अन्	त	आताम्	अत
म. पु.	*स् (:)*	तम्	त	थाः	आथाम्	ध्वम्
उ. पु.	***अम्***	व	म	इ	वहि	महि

विधिलिङ् लकार

प्र. पु.	यात्	याताम्	युः	ईत	ईयाताम्	ईरन्
म. पु.	याः	यातम्	यात्	ईथाः	ईयाथाम्	ईध्वम्
उ. पु.	याम्	याव	याम	ईय	ईवहि	ईमहि

ये ७४ प्रत्यय यद्यपि अदादि, जुहोत्यादि, स्वादि रुधादि, तनादि, तथा क्र्यादि गणों के लिये हैं, तथापि जब कभी धातु को द्वित्व होकर, धातु अभ्यस्त हो जाता है, तब उस अभ्यस्त धातु से परे आने वाले, अन्ति की जगह अति, अन्तु की जगह अतु तथा अन् की जगह जुस् = उः, प्रत्यय लगते हैं। इस प्रकार इनकी संख्या ७७ हो जाती है। इस प्रकार प्रथम गण समूह के ७४ प्रत्यय हैं तथा द्वितीय गण समूह के ७७ प्रत्यय हैं।

लेट् लकार के सार्वधातुक प्रत्यय

अट् लगाकर बने हुए लेट् लकार के सार्वधातुक प्रत्यय

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	*अति*	*अतः*	*अन्ति*	*अते*	*ऐते*	*अन्ते*
	अत्	–	*अन्*	*अतै*	–	*अन्तै*
	अद्					
म. पु.	*असि*	*अथः*	*अथ*	*असे*	*ऐथे*	*अध्वे*
	अः	–	–	*असै*	–	*अध्वै*
उ. पु.	*अमि*	*अवः*	*अमः*	*ए*	*अवहे*	*अमहे*
	अम्	*अव*	*अम*	*ऐ*	*अवहै*	*अमहै*

आट् लगाकर बने हुए लेट् लकार के सार्वधातुक प्रत्यय

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	*आति*	*आतः*	*आन्ति*	*आते*	*ऐते*	*आन्ते*
	आत्	–	*आन्*	*आतै*	–	*आन्तै*
	आद्	–				
म. पु.	*आसि*	*आथः*	*आथ*	*आसे*	*ऐथे*	*आध्वे*

	आः	-	-	*आसै*	-	*आध्वै*
उ. पु.	*आमि*	*आवः*	*आमः*	*ए*	*आवहे*	*आमहे*
	आम्	*आव*	*आम*	*ऐ*	*आवहै*	*आमहै*

धातुओं से लगने वाले प्रत्ययों में, लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् लकारों के प्रथमगणसमूह के ७४ प्रत्यय + द्वितीयगणसमूह के ७७ प्रत्यय + सार्वधातुक लेट् लकारों के ६४ प्रत्यय = २१५ प्रत्यय, तिङ् सार्वधातुक प्रत्यय कहलाते हैं।

इन तिङ् सार्वधातुक प्रत्ययों का वर्गीकरण

ध्यान से देखिये कि अभी तक, जितने भी तिङ् सार्वधातुक प्रत्यय बतलाये गये हैं, इन सार्वधातुक प्रत्ययों में, कुछ प्रत्यय तिरछे, मोटे तथा बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं। इनका नाम पित् सार्वधातुक प्रत्यय है। इन पित् सार्वधातुक प्रत्ययों में से भी, जो प्रत्यय, 'अच्' से प्रारम्भ हो रहे हैं, उनका नाम 'अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय' है तथा जो प्रत्यय 'हल्' से प्रारम्भ हो रहे हैं, उनका नाम 'हलादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय' है।

जो प्रत्यय सीधे, पतले तथा छोटे अक्षरों में लिखे गये हैं, इनका नाम अपित् सार्वधातुक प्रत्यय है। इन अपित् सार्वधातुक प्रत्ययों में से भी, जो प्रत्यय, 'अच्' से प्रारम्भ हो रहे हैं, उनका नाम 'अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय' है तथा जो प्रत्यय 'हल्' से प्रारम्भ हो रहे हैं, उनका नाम 'हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय' है। इस निर्देश के अनुसार सार्वधातुक प्रत्ययों के कुल चार वर्ग बने -

१. तिरछे, मोटे तथा बड़े अक्षरों में लिखे गये, हलादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय इस प्रकार हैं -

लट् लकार के - ***ति, सि, मि।***
लोट् लकार के - ***तु।***
लङ् लकार के - ***त्, स्।***
विधिलिङ् लकार के - कोई नहीं।
लेट् लकार के - कोई नहीं।

२. तिरछे, मोटे तथा बड़े अक्षरों में लिखे गये, अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय इस प्रकार हैं -

लट् लकार के - कोई नहीं
लोट् लकार के - ***आनि, आव, आम, ऐ, आवहै, आमहै।***

लङ् लकार के - *अम्।*
विधिलिङ् लकार के - कोई नहीं।
लेट् लकार के - *ऊपर कहे गये अट्, आट् से प्रारम्भ होने वाले सारे ६४ प्रत्यय।*

३. सीधे, पतले तथा छोटे अक्षरों में लिखे गये, हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय इस प्रकार हैं -

लट् लकार के - तः, थः, थ, वः, मः, ते, से, ध्वे, वहे, महे।
लोट् लकार के - तात्, ताम्, हि, तात्, तम्, त, ताम्, स्व, ध्वम्।
लङ् लकार के - ताम्, तम्, त, व, म, त, थाः, ध्वम्, वहि, महि।
विधिलिङ् लकार के - यात्, याताम्, युः, याः, यातम्, यात, याम्, याव, याम।

४. सीधे, पतले तथा छोटे अक्षरों में लिखे गये, अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय इस प्रकार हैं -

लट् लकार के - अन्ति, आते, अते, आथे, ए, अति।
लोट् लकार के - अन्तु, आताम्, अताम्, आथाम्, अतु।
लङ् लकार के - अन्, आताम्, अत, आथाम्, इ, उः।
विधिलिङ् लकार के - ईत, ईयाताम्, ईरन्, ईथाः, ईयाथाम्, ईध्वम्, ईय, ईवहि, ईमहि
लेट् लकार के - कोई नहीं।

२. कृत् सार्वधातुक प्रत्ययों का वर्गीकरण

धातुओं से लगने वाले ऐसे कृत् प्रत्यय, जिनमें श् की इत् संज्ञा हुई हो, वे प्रत्यय कृत् सार्वधातुक प्रत्यय कहलाते हैं। ये इस प्रकार हैं -

शतृ, शानच्, शानन्, चानश्, खश्, श, एश्, शध्यै, शध्यैन् = ९

अनुबन्ध हटाकर ही प्रत्ययों को पहिचानिये और देखिये कि अनुबन्ध हटाने के बाद ये सारे कृत् प्रत्यय अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय हैं।

३. विकरण सार्वधातुक प्रत्ययों का वर्गीकरण

शप्, श्यन्, श्नु, श, श्नम्, श्ना, शायच्, शानच्, = ये ८ शित् प्रत्यय, ऐसे प्रत्यय हैं, जो न तो तिङ् हैं, न ही कृत् हैं।

ये प्रत्यय वस्तुतः विकरण सार्वधातुक प्रत्यय हैं। देखिये कि अनुबन्ध हटाने के बाद ये विकरण प्रत्यय इस प्रकार हैं -

अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय - **शप्।**
अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय - श, शायच्, शानच्।
हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय - श्यन्, श्नु, श्नम्, श्ना, शायच्, शानच्।

सार्वधातुकमपित् - जो अपित् सार्वधातुक प्रत्यय हैं, उन्हें ङित् न होते हुए भी ङित् जैसा मान लिया जाता है। इन्हें ङित् प्रत्यय भी कह सकते हैं।

इनके लगने पर वे सारे कार्य किये जाते हैं जो कार्य ङित् प्रत्यय लगने पर किये जाते हैं। ये कार्य आगे बतलाये जायेंगे।

अब प्रकरणवश पुनः अङ्ग बतला रहे हैं।

अङ्ग

यस्मात् प्रत्ययविधिस्तदादिप्रत्ययेऽङ्गम् - जब हम धातुओं से प्रत्यय लगाते हैं, तब उस प्रत्यय के परे होने पर, उस प्रत्यय के पूर्व में जो भी होता है, वह पूरा का पूरा, उस प्रत्यय का अङ्ग कहलाता है। जैसे -

जब हम भू धातु से 'ति' प्रत्यय लगाते हैं, तब भू + ति में, 'ति' प्रत्यय का अङ्ग 'भू' होता है। किन्तु जब हम भू धातु से 'शप्' प्रत्यय भी लगा देते हैं, तब भू + शप् + ति में क्या होता है ?

इस भू + शप् + ति को देखिये। इसमें दो प्रत्यय हैं, शप् और ति। इन दोनों प्रत्ययों के अङ्गों को अलग अलग जानना चाहिये। यहाँ 'शप्' प्रत्यय के पूर्व में भू धातु है अतः शप् प्रत्यय का अङ्ग भू धातु है। 'ति' प्रत्यय के पूर्व में भू + शप् = भव है, अतः ति प्रत्यय का अङ्ग, भू + शप् = भव है।

दा + सीष्ट = दासीष्ट को देखिये। इसमें 'सीष्ट' प्रत्यय का अङ्ग केवल 'दा' है क्योंकि सीष्ट प्रत्यय के पूर्व में केवल वही है।

इस प्रकार हमें प्रत्येक प्रत्यय के अङ्ग को पहचान लेना चाहिये। क्योंकि कभी केवल धातु अङ्ग होता है और कभी धातु + विकरण को जोड़कर बना हुआ धातु अङ्ग होता है।

जैसे - 'भू + शप् + ति' में 'ति' प्रत्यय का अङ्ग 'भू + शप् = भव' है, किन्तु यह ध्यान रखिये कि धातु में विकरण लग जाने के बाद भी यह 'भव' धातु तो है ही। अतः हम इसे धातु भी कह सकते हैं, अङ्ग भी।

इसी प्रकार 'क्री + श्ना + ति' में 'ति' प्रत्यय का अङ्ग 'क्री + श्ना = क्रीणा' है, किन्तु यह ध्यान रखिये कि धातु में विकरण लग जाने के बाद भी

यह 'क्रीणा' धातु तो है ही। अतः हम इसे धातु भी कह सकते हैं, अङ्ग भी।

इस विषय में आपको भ्रान्ति नहीं होना चाहिये।

अङ्गकार्य

हम कुछ सन्धियाँ पढ़ चुके हैं, कुछ आगे पढ़ेंगे। अभी हम अङ्गकार्य पढ़ें और जानें कि अङ्गकार्य और सन्धिकार्य में क्या अन्तर होता है ?

नी + शप् (अ) को देखिये। यहाँ 'इको यणचि' सूत्र से, नी के 'ई' को 'यण्' = 'य्' होना प्राप्त है। यह य्, 'इ' के आगे, 'अ' वर्ण होने के कारण प्राप्त है।

किसी वर्ण को, अपने सामने कोई विशिष्ट वर्ण दिखने पर, उस आगे वाले 'वर्ण' को निमित्त मानकर जो कार्य होते हैं, वे सन्धिकार्य कहलाते हैं, किन्तु जो अङ्गकार्य होते हैं, वे वर्ण को निमित्त मानकर नहीं होते। अङ्गकार्य को, अङ्ग के सामने कोई विशिष्ट प्रत्यय ही चाहिये। जैसे -

इसी नी + शप् (अ) में, शप् प्रत्यय को देखकर, आगे आने वाले 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से, नी के 'ई' को गुण (ए) होना भी प्राप्त है, तो दोनों मे से हम किसे करें ? इसके लिये यह समझिये कि 'वर्ण' को निमित्त मानकर होने वाला 'यण्' तो सन्धिकार्य है, और 'प्रत्यय' को निमित्त मानकर होने वाला 'गुण' अङ्गकार्य है।

वार्णादाङ्गं बलीयः - जब एक ही स्थान पर अङ्गकार्य तथा सन्धिकार्य, ये दोनों एक साथ प्राप्त हों, तब सन्धिकार्य को बाधकर अर्थात् रोककर अङ्गकार्य ही किया जाता है।

इसलिये यहाँ नी + शप् (अ) में, 'इको यणचि' सूत्र से प्राप्त होने वाले सन्धिकार्य यण् को रोककर, 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से प्राप्त होने वाले अङ्गकार्य, गुण को ही किया जाता है, तो गुण करके - नी + अ = ने + अ, बन जाता है।

अङ्गकार्य कर चुकने के बाद यदि सन्धिकार्य प्राप्त हों, तो उन्हें भी कर लिया जाता है, किन्तु अङ्गकार्य कर चुकने के बाद ही। जैसे -

नी + शप् (अ) में, सन्धिकार्य यण् को रोककर, 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से अङ्गकार्य गुण, कर चुकने के बाद, अब ने + अ में, 'एचोऽयवायावः' सूत्र से 'अय्' आदेश प्राप्त है। इसे करके - ने + अ = नय बन जाता है।

इस प्रकार किसी वर्ण के परे होने पर, वर्ण पर होने वाले प्रभाव को सन्धिकार्य या वर्णकार्य कहा जाता है और सामान्यत: किसी प्रत्यय के परे होने पर, अङ्ग पर होने वाले प्रभाव को अङ्गकार्य कहा जाता है।

पाणिनीय अष्टाध्यायी में अङ्गकार्य के सारे सूत्र, ६.४.१ से लेकर ७.४.९७ तक हैं, यह ध्यान रखें। इसे ही अङ्गाधिकार कहते हैं।

तिङन्तोपयोगी सूत्रों को हमने इस ग्रन्थ के द्वितीय खण्ड के पीछे, अष्टाध्यायी के ही क्रम से, परिशिष्ट के रूप में दे दिया है। सूत्रों को अष्टाध्यायी के ही क्रम से याद करना चाहिये। इससे सूत्रों के अर्थ याद नहीं करना पड़ेंगे। वर्तमान क्रम अङ्गों के आधार पर, समझने के लिये स्वीकार किया गया है।

पाणिनीय अष्टाध्यायी में धातुओं से प्रत्यय लगने पर, होने वाले अङ्गकार्य, तीन प्रकार से बतलाये गये हैं।

१. केवल सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, होने वाले अङ्गकार्य।

२. केवल आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर, होने वाले अङ्गकार्य।

३. सार्वधातुक तथा आर्धधातुक दोनों ही प्रकार के प्रत्यय परे होने पर, होने वाले अङ्गकार्य।

इनमें से पहिले हम प्रथम और तृतीय वर्ग के अङ्गकार्य बतला रहे हैं। आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर, होने वाले अङ्गकार्य, पाठ के अन्त में बतलायेंगे। ये सब केवल सामान्य अङ्गकार्य हैं। विशेष अङ्गकार्य विशेष स्थलों पर देंगे।

धातुओं से प्रत्यय लगा कर काम करने की विधि यही है कि ज्योंही किसी अङ्ग के सामने, कोई सा भी प्रत्यय उपस्थित हो, त्योंही आपका पहिला प्रश्न यह होना चाहिये कि वह प्रत्यय किस प्रकार का है ? सार्वधातुक है या आर्धधातुक है ? यदि वह सार्वधातुक है, तो पहिचानिये कि वह पित् सार्वधातुक है या अपित् सार्वधातुक है ? यदि वह पित् सार्वधातुक है तो आप उसे पुन: पहिचानिये कि वह हलादि पित् सार्वधातुक है या अजादि पित् सार्वधातुक है? यदि वह अपित् सार्वधातुक है तो आप उसे पुन: पहिचानिये कि वह अजादि अपित् सार्वधातुक है या हलादि अपित् सार्वधातुक है।

यह निर्णय करना ही हमारा पहिला काम होना चाहिये।

जैसे - रि + श / यह अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय है। क्री + श्ना (ना) / यह हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय है। भू + शप् (अ) / यह अजादि

पित् सार्वधातुक प्रत्यय है। दिव् + श्यन् (य) / यह हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय है। यह पहिचानकर हम उसी वर्ग का अङ्ग कार्य करें, जिस वर्ग का वह प्रत्यय है। यही इस पूरे कार्य की रीढ़ है।

अङ्ग कार्य करने का सारा विज्ञान, इस प्रत्यय की पहचान में ही टिका हुआ है। अतः आप यहीं प्रत्ययों को पहचानने का अभ्यास कर लें, तभी आगे बढ़ें। यदि हम प्रत्यय की पहिचान सही कर लेते हैं, तभी हमारा अङ्गकार्य सही होगा तथा रूप भी सही ही बनेगा।

प्रत्यय पहिचानने के बाद आप अजन्त अङ्गों को इस प्रकार पहिचानिये कि वह -

अकारान्त है, आकारान्त है, इकारान्त है, ईकारान्त है, उकारान्त है, ऊकारान्त है, ऋकारान्त है, ॠकारान्त है, अथवा एजन्त है।

हलन्त अङ्गों को इस प्रकार पहिचानिये कि वह -

अनिदित् धातु है, सम्प्रसारणी धातु है, इदुपध धातु है, उदुपध धातु है, ऋदुपध धातु है, अथवा इनमें से कुछ भी नहीं है।

इस प्रकार आप धातु को पहिचानिये, प्रत्यय को पहिचानिये, तदनुसार निर्णय कीजिये कि आपको किस प्रकार से अङ्गकार्य करना है ?

इन अङ्गकार्यों को केवल पढ़िये और समझिये, रटिये मत। इसलिये मत रटिये कि आगे प्रयोग स्थल आने पर, हम इन सूत्रों को पुनः उद्धृत करेंगे।

यह अध्याय केवल इसलिये है कि अङ्गकार्यों का विज्ञान समझ में आ जाये। जब भी अङ्गकार्यों के विषय में कोई भी सन्देह हो, तब इस अध्याय का उपयोग कोश के समान कीजिये।

सबसे पहिले हम 'अकारान्त' = अदन्त अङ्गों' का विचार करें -

ह्रस्व अकारान्त अर्थात् अदन्त अङ्ग + सार्वधातुक प्रत्यय

अकारान्त अङ्ग को ही व्याकरण में 'अदन्त अङ्ग' कहा जाता है। जब 'अदन्त अङ्ग' से परे कोई प्रत्यय आये तब पहिले आप पहिचानिये कि 'अदन्त अङ्ग' से परे आने वाला प्रत्यय सार्वधातुक है अथवा आर्धधातुक है।

यदि अदन्त अङ्ग से परे आने वाला प्रत्यय सार्वधातुक हो तो आप इन सूत्रों से कार्य कीजिये -

१. अतो गुणे - अपदान्त 'अ' को पररूप होता है, गुण परे होने पर

अर्थात् अ, ए, ओ परे होने पर।

भव + अन्ति / यहाँ 'अकः सवर्णे दीर्घः' से दीर्घ सन्धि होना चाहिए थी, किन्तु उसे बाधकर, पूर्व 'अ' को पररूप होकर - भव् + अन्ति = भवन्ति बनता है।

इसी प्रकार पच + ए को देखिये - यहाँ 'वृद्धिरेचि' से वृद्धि सन्धि होना चाहिए थी, किन्तु उसे बाधकर, पूर्व 'अ' को पररूप होकर - पच् + ए = पचे ही बनता है।

२. **अतो दीर्घो यञि** - जब अङ्ग अदन्त हो तथा उसके बाद आने वाला सार्वधातुक प्रत्यय व, म, से प्रारम्भ हो रहा हो, तब अदन्त अङ्ग के अन्तिम 'अ' को दीर्घ हो जाता है। उदाहरण -

नय	+	मि	-	नया	+	मि	=	नयामि
नय	+	वः	-	नया	+	वः	=	नयावः
नय	+	मः	-	नया	+	मः	=	नयामः

अब अन्य अङ्गों का विचार करें -

सार्वधातुक प्रत्ययों के चार वर्ग हम पढ़ चुके हैं। अब हम इन चारों वर्गों के सार्वधातुक प्रत्ययों के लगने पर, अङ्गों पर इन प्रत्ययों का क्या प्रभाव होता है, यह बतला रहे हैं।

अङ्गों में हलादि पित् सार्वधातुक प्रत्ययों को जोड़ने की विधि

आकारान्त अङ्ग + हलादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय

हलादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, आकारान्त अङ्गों के अन्तिम अन्तिम 'आ' को कुछ नहीं होता है।

क्रीणा	+	ति	=	क्रीणाति
क्रीणा	+	सि	=	क्रीणासि
क्रीणा	+	मि	=	क्रीणामि
अक्रीणा	+	त्	=	अक्रीणात्
अक्रीणा	+	स्	=	अक्रीणाः
क्रीणा	+	तु	=	क्रीणातु

हलादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय लगने पर सारे आकारान्त अङ्गों के रूप

इसी प्रकार बनाइये।

इगन्त (इ, उ, ऋ से अन्त होने वाले) अङ्ग + हलादि पित्
सार्वधातुक प्रत्यय

सार्वधातुकार्धधातुकयोः - कित्, ङित्, ञित्, णित् से भिन्न सार्वधातुक तथा आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर, इगन्त अङ्ग को गुण होता है।

अर्थात् अङ्ग के अन्त में आने वाले - इ - ई को ए / उ - ऊ को ओ / ऋ - ॠ को अर् / ऐसे गुण आदेश होते हैं। यथा -

इकारान्त, ईकारान्त अङ्ग -

इ + ति = एति - इ को ए गुण हुआ है।
बिभी + ति = बिभेति - ई को ए गुण हुआ है।

उकारान्त, ऊकारान्त अङ्ग -

चिनु + ति = चिनोति - उ को ओ गुण हुआ है।
बोभू + ति = बोभोति - ऊ को ओ गुण हुआ है।

ऋकारान्त, ॠकारान्त अङ्ग -

बिभृ + ति = बिभर्ति - ऋ को अर् गुण हुआ है।
तातॄ + ति = तातर्ति - ॠ को अर् गुण हुआ है।

अब हलन्त अङ्गों का विचार करते हैं -

इदुपध, उदुपध, ऋदुपध अङ्ग + हलादि पित्
सार्वधातुक प्रत्यय

पुगन्तलघूपधस्य च - कित्, ङित्, से भिन्न, सार्वधातुक तथा आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर अङ्ग की उपधा के लघु इक् को गुण होता है अर्थात् उपधा के लघु इ को ए / लघु उ को ओ / लघु ऋ को अर् / ऐसा गुण होता है। यथा -

नेनिज् + ति = नेनेक्ति - उपधा के लघु इ को ए गुण हुआ है।
मोमुद् + ति = मोमोत्ति - उपधा के लघु उ को ओ गुण हुआ है।
चरीकृष् + ति = चरीकर्ष्टि - उपधा के लघु ऋ को अर् गुण हुआ है।

शेष सारे हलन्त अङ्ग + हलादि पित्
सार्वधातुक प्रत्यय

इन्हें हलादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर कोई अङ्गकार्य नहीं

होता। अतः अङ्ग + प्रत्यय को सन्धि करके जोड़ दिया जाता है।

कुछ सन्धियाँ पीछे बतलाई जा चुकी हैं। कुछ आगे 'सन्धि' पाठ में बतलाई जायेंगी। उदाहरण -

तात्वञ्च् + ति = तात्वङ्क्ति
वावश् + ति = वावष्टि
बोबुक्क् + ति = बोबुक्ति
मेमील् + ति = मेमील्ति
बोभूष् + ति = बोभूष्टि।

हमने जाना कि हलादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर -

१. सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से इगन्त अङ्ग के अन्तिम इ - ई को ए / उ - ऊ को ओ / ऋ - ॠ को अर् / ऐसे गुण आदेश होते हैं।

२. पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से हलन्त अङ्ग की उपधा के लघु इ को ए / लघु उ को ओ / लघु ऋ को अर् / ऐसे गुण आदेश होते हैं।

३. शेष सारे हलन्त अङ्गों के अन्त और उपधा को कुछ नहीं होता है।

अङ्गों में अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्ययों को जोड़ने की विधि

आकारान्त अङ्ग + अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय

आकारान्त अङ्गों के अन्तिम आ को कोई अङ्गकार्य नहीं होता। अतः अङ्ग + प्रत्यय को सन्धि करके जोड़ दिया जाता है।

क्रीणा + आनि = क्रीणानि   क्रीणा + आव = क्रीणाव
क्रीणा + आम = क्रीणाम   क्रीणा + ऐ = क्रीणै
क्रीणा + आवहै = क्रीणावहै   क्रीणा + आमहै = क्रीणामहै

इगन्त अङ्ग + अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय

सार्वधातुकार्धधातुकयोः - कित्, ङित्, ञित्, णित् से भिन्न सार्वधातुक तथा आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर, इगन्त अङ्ग को गुण होता है।

अर्थात् अङ्ग के अन्त में आने वाले - इ - ई को ए / उ - ऊ को ओ / ऋ - ॠ को अर् / ऐसे गुण आदेश होते हैं। जैसे -

इकारान्त, ईकारान्त अङ्ग - जि + आनि - जे + आनि /

गुण करने के बाद यदि अन्त में ए, ओ दिखें तब -

एचोऽयवायावः - एच् के स्थान पर क्रमशः अय्, अव्, आय्, आव् आदेश होते हैं, अच् परे होने पर। जे + आनि - जय् + आनि = जयानि। इसी प्रकार-

नी + आनि - ने + आनि - नय् + आनि = नयानि

बिभी + आनि - बिभे + आनि - बिभय् + आनि = बिभयानि

यह गुण करना अङ्गकार्य है। इस गुण को करने के बाद जो अयादि आदेश किये गये हैं वे सन्धिकार्य हैं।

इसके अपवाद - दीधी, वेवी धातु -

दीधीवेवीटाम् - दीधी, वेवी धातुओं के अन्तिम 'ई' को, गुण, वृद्धि आदि कोई कार्य नहीं होते। चाहे उनसे परे आने वाला प्रत्यय पित् हो, चाहे अपित्।

यथा - दीधी + ऐ - गुण न होने से 'एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य' सूत्र से 'ई' को 'यण्' करके - दीधी + ऐ - दीध्य् + ऐ = दीध्यै / दीधी + आवहै - दीध्य् + आवहै = दीध्यावहै / दीधी + आमहै = दीध्यामहै।

इसी प्रकार वेवी + ऐ - वेव्य् + ऐ = वेव्यै। वेवी + आवहै - वेव्य् + आवहै = वेव्यावहै / वेवी + आमहै - वेव्य् + आमहै = वेव्यामहै आदि बनाइये।

उकारान्त, ऊकारान्त अङ्ग -

सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके तथा एचोऽयवायावः सूत्र से अव् आदेश करके -

चिनु + आनि - चिनो + आनि - चिनव् + आनि = चिनवानि

बोभू + आनि - बोभो + आनि - बोभव् + आनि = बोभवानि

ऋकारान्त, ॠकारान्त अङ्ग -

सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके -

बिभृ + आनि - बिभर् + आनि = बिभराणि

तातॄ + आनि - तातर् + आनि = तातराणि

इस प्रकार ध्यान दें कि हलादि पित् प्रत्यय परे होने पर केवल गुण होगा किन्तु अजादि पित् प्रत्यय परे रहने पर गुण के बाद ए, ओ को अय्, अव् आदेश भी होंगे।

ऋ, ॠ को गुण करके चूँकि अर् आदेश होता है अतः यहाँ अयादेश

का प्रश्न ही नहीं होता।

यह अजन्त अङ्ग + अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय, का विचार हुआ है। अब हलन्त अङ्गों का विचार करते हैं।

इदुपध, उदुपध, ऋदुपध अङ्ग + अजादि पित्
सार्वधातुक प्रत्यय

पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से गुण करके -

चित्	+	आनि	-	चेत्	+	आनि	=	चेतानि
प्लुष्	+	आनि	-	प्लोष्	+	आनि	=	प्लोषाणि
वृष्	+	आनि	-	वर्ष्	+	आनि	=	वर्षाणि

शेष सारे हलन्त अङ्ग + अजादि पित्
सार्वधातुक प्रत्यय

इन्हें अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर कुछ भी नहीं होता।

तात्वञ्च्	+	ईति	=	तात्वञ्चीति
वावश्	+	ईति	=	वावशीति
बोबुक्क्	+	ईति	=	बोबुक्कीति
मेमील्	+	ईति	=	मेमीलीति
बोभूष्	+	ईति	=	बोभूषीति।

ये अजादि पित् प्रत्यय परे होने पर होने वाले सामान्य अङ्ग कार्य बतलाए गये। हमने जाना कि अजादि पित् प्रत्यय परे होने पर -

१. 'सार्वधातुकार्धधातुकयो:' सूत्र से इगन्त अङ्ग के अन्तिम इ - ई को ए / उ - ऊ को ओ / ऋ - ॠ को अर् / ऐसे गुण आदेश होते हैं। उसके बाद ए, ओ को एचोऽयवायाव: सूत्र से अय्, अव् आदेश होते हैं।

२. पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से हलन्त अङ्ग की उपधा के लघु इ को ए / लघु उ को ओ / लघु ऋ को अर् / ऐसे गुण आदेश होते हैं।

३. शेष हलन्त अङ्गों के अन्त और उपधा को कुछ नहीं होता है।

यह धातुओं में हलादि पित् तथा अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय, जोड़ने का विचार हुआ है।

अब धातुओं में हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय, जोड़ने का विचार करते हैं।

अङ्गों में हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्ययों को जोड़ने की विधि

सार्वधातुकमपित् - धातुओं में अपित् सार्वधातुक प्रत्ययों को जोड़ने के पहिले यह जानिये कि सारे अपित् सार्वधातुक प्रत्यय ङिद्वत् होते हैं।

प्रश्न उठता है कि जिसमें 'ङ्' की इत् संज्ञा होती है, उसी का नाम तो ङित् होता है। ये जो अपित् सार्वधातुक प्रत्यय हैं, इनमें से तो किसी में भी 'ङ्' की इत् संज्ञा नहीं हुई है, तो ये प्रत्यय ङित् कैसे कहलायेंगे ?

इसका उत्तर यह है कि जो अपित् सार्वधातुक प्रत्यय होते हैं, वे ङित् न होते हुए भी इस 'सार्वधातुकमपित्' सूत्र से ङित् के समान अर्थात् ङिद्वत् मान लिये जाते हैं। अतः हम इन 'अपित्' प्रत्ययों को 'ङित्' भी कह सकते हैं।

अब हम धातुओं में हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय लगायें -

आकारान्त अङ्ग + हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय

आकारान्त अङ्ग पाँच प्रकार के होते है।

१. ज्या धातु।

२. क्र्यादिगण के श्ना प्रत्ययान्त ६१ धातु।

३. दा, धा धातु को छोड़कर, द्वित्व किये हुए, शेष अभ्यस्तसंज्ञक आकारान्त धातु।

४. द्वित्व किये हुए, अभ्यस्तसंज्ञक दा, धा धातु।

५. बिना द्वित्व किये हुए आकारान्त धातु।

इन सबको जोड़ने की विधि अलग अलग है। इसे हम जानें -

१. ज्या धातु + हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय

ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च - ग्रह्, ज्या, वय्, व्यध्, वश्, व्यच्, व्रश्च्, प्रच्छ्, भ्रस्ज् इन धातुओं को सम्प्रसारण होता है कित् या ङित् प्रत्यय परे होने पर।

सम्प्रसारण क्या होता है -

इग्यणः सम्प्रसारणम् - जब य्, व्, र्, ल् के स्थान पर इ, उ, ऋ, लृ आदेश हो जायें, तो हम कहते हैं कि सम्प्रसारण हो गया।

अतः ज्या धातु से श्ना प्रत्यय परे होने पर, 'य्' को 'इ' सम्प्रसारण करके - ज् इ आ + ना -

सम्प्रसारणाच्च - सम्प्रसारण से अच् परे होने पर, पूर्वपर के स्थान पर एक पूर्वरूप आदेश होता है। ज् इ आ + ना में, आ को सम्प्रसारणाच्च से पूर्वरूप करके - ज् इ + ना = जि + ना

हलः - अङ्ग का अवयव जो हल्, उससे परे जो सम्प्रसारण, उसे दीर्घ होता है। यथा - जि + ना = जी + ना

प्वादीनां ह्रस्वः - क्र्यादिगण का धातुपाठ देखिये। इसमें १४८२ से १५०८ तक धातुओं का प्वादि अन्तर्गण है। प्वादि अन्तर्गण के इन धातुओं को शित् प्रत्यय परे होने पर ह्रस्व होता है - जी + ना = जिना।

यदि प्रत्यय शित् न हो तब ह्रस्व नहीं होता है - जाज्या + तः।

देखिये कि यह 'तः' प्रत्यय शित् नही है। अतः यहाँ केवल सम्प्रसारण और दीर्घ होंगे - जाज्या : तः / ग्रहिज्या. से सम्प्रसारण होकर - जाजि + तः / हलः से दीर्घ होकर - जाजी + तः = जाजीतः।

अब आगे के कार्यों के लिये हम इन सूत्रों के अर्थों को पहिले बुद्धिस्थ कर लें -

दाधाध्वदाप् - दाप्, दैप् धातुओं को छोड़कर जितने भी दारूप और धारूप धातु हैं, उनकी घु संज्ञा होती है।

उभे अभ्यस्तम् - जब भी किसी धातु को, किसी भी कारण से द्वित्व होता है, तब उस द्वित्व किये हुए समुदाय में जो दो धातु होते हैं, उन दोनों का ही नाम 'अभ्यस्त' होता है।

जैसे - दा - दा दा। ये दोनों ही 'अभ्यस्त' हैं।

श्नाभ्यस्तयोरातः - इस सूत्र के तीन अर्थ हैं -

१. श्नान्त धातुओं के 'आ' का लोप होता है, 'केवल अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर'।

क्रीणा + अन्ति - क्रीण् + अन्ति = क्रीणन्ति

२. दा, धा, के अलावा, शेष अभ्यस्तसंज्ञक आकारान्त धातुओं के 'आ' का भी लोप होता है, 'केवल अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर'।

जहा + अति - जह् + अति = जहति

३. दा, धा धातुओं को जब द्वित्व कर दिया जाता है, तब ऐसे घुसंज्ञक दा - ददा / धा - दधा, इन अभ्यस्त धातुओं के 'आ' का लोप होता है, 'अजादि

तथा हलादि दोनों ही प्रकार के अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर'।

ददा	+	तः	-	दद्	+	तः	=	दत्तः
दधा	+	तः	-	दध्	+	तः	=	धत्तः
ददा	+	अति	-	दद्	+	अति	=	ददति
दधा	+	अति	-	दध्	+	अति	=	दधति

ई हल्यघोः - इस सूत्र के दो अर्थ हैं -

१. श्ना प्रत्यय से बने हुए आकारान्त अङ्गों के अन्तिम 'आ' को 'ई' आदेश होता है, हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर। यथा - क्रीणा + तः = क्रीणीतः।

२. घुसंज्ञक अङ्गों को छोड़कर, शेष सारे अभ्यस्तसंज्ञक अङ्गों के, अन्तिम आ को भी 'ई' आदेश होता है, हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर। इन सूत्रों के अर्थों को बुद्धिस्थ करके ही अब हम आगे के कार्य करें-

२. क्र्यादिगण के श्ना प्रत्ययान्त ६१ धातु + हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय

श्नान्त अङ्ग - क्र्यादिगण में ६१ धातु हैं। क्र्यादिगण का विकरण श्ना है। क्र्यादिगण के धातुओं में जब हम श्ना विकरण लगा लेते हैं, तब उनसे क्री + श्ना = क्रीणा, प्री + श्ना = प्रीणा आदि जो ६१ आकारान्त अङ्ग बनते हैं, इनका नाम श्नान्त अङ्ग होता है।

सारे श्नान्त अङ्गों के अन्तिम 'आ' को 'ई हल्यघोः' सूत्र से 'ई' आदेश होता है -

क्रीणा	+	तः	-	क्रीणी	+	तः	=	क्रीणीतः
क्रीणा	+	थः	=	क्रीणी	+	थः	=	क्रीणीथः
क्रीणा	+	ते	=	क्रीणी	+	ते	=	क्रीणीते आदि

३. द्वित्व किये हुए दा, धा धातुओं को छोड़कर, शेष अभ्यस्तसंज्ञक आकारान्त धातु + हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय

इनके अन्तिम 'आ' को भी 'ई हल्यघोः' सूत्र से 'ई' आदेश होता है-

जहा	+	तः	-	जही	+	तः	=	जहीतः
मिमा	+	ते	-	मिमी	+	ते	=	मिमीते
जिहा	+	ते	-	जिही	+	ते	=	जिहीते आदि

४. द्वित्व किये हुए अभ्यस्तसंज्ञक दा, धा धातु + हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय

दा, धा धातुओं को घु कहा जाता है।

हम जानते हैं कि दा, धा को द्वित्व करके बने हुए, घुसंज्ञक अभ्यस्त धातुओं के 'आ' का 'श्नाभ्यस्तयोरातः' सूत्र से लोप होता है, 'अजादि तथा हलादि दोनों ही प्रकार के अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर'।

ददा + तः - दद् + तः = दत्तः
दधा + तः - दध् + तः = धत्तः

५. बिना द्वित्व किये हुए आकारान्त धातु + हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय

पाँचवें वर्ग में वे आकारान्त धातु आते हैं, जो न तो ज्या धातु हैं, न ही क्र्यादिगण के श्नान्त धातु हैं, न ही जिनकी संज्ञा अभ्यस्त है, न ही जो घुसंज्ञक हैं। जैसे - बिना द्वित्व किये हुए वा, मा, ला आदि आकारान्त धातु।

इनके आ को कुछ भी नहीं होता। यथा -

वा + तः = वातः / भा + तः = भातः आदि।

ये वा, भा आदि न तो श्ना प्रत्ययान्त धातु हैं, न ही ये घु हैं, न ही इनका नाम अभ्यस्त है।

हमने जाना कि आकारान्त अङ्गों से हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर -

१. ज्या धातु को ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च सूत्र से सम्प्रसारण होता है। ज्या + श्ना - जिना।

२. श्ना प्रत्ययान्त धातुओं के 'आ' को ई हल्यघोः सूत्र से 'ई' आदेश होता है - क्रीणीतः

३. ददा, दधा को छोड़कर शेष अभ्यस्तसंज्ञक अङ्गों के 'आ' को भी 'ई हल्यघोः' सूत्र से 'ई' आदेश होता है - जहा + तः = जहीतः

४. जो घुसंज्ञक आकारान्त अङ्ग हैं अर्थात् ददा और दधा, उनके आ का 'श्नाभ्यस्तयोरातः' सूत्र से लोप होता है। ददा + तः = दत्तः / दधा + तः = धत्तः।

५. शेष आकारान्त अङ्गों के आ को कुछ भी नहीं होता।

यह आकारान्त अङ्गों से हलादि अपित् प्रत्यय परे होने पर होने वाले अङ्ग कार्य बतलाये गये।

इगन्त अङ्ग + हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय

ध्यान रहे कि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय 'सार्वधातुकमपित्' सूत्र से ङिद्वत् होते हैं।

क्ङिति च - कित्, ङित्, गित् प्रत्यय परे होने पर, इक् के स्थान पर होने वाले गुण, वृद्धि कार्य नहीं होते। जैसे -

इकारान्त, ईकारान्त अङ्ग - क्ङिति च सूत्र से गुणनिषेध होकर -
जेजि + तः = जेजितः / बिभी + तः = बिभीतः / जिह्री + तः = जिह्रीतः।

उकारान्त, ऊकारान्त अङ्ग - क्ङिति च सूत्र से गुणनिषेध होकर -
दोद्रु + तः = दोद्रुतः / बोभू + तः = बोभूतः / लोलू + तः = लोलूतः।

ऋकारान्त अङ्ग - क्ङिति च सूत्र से गुणनिषेध होकर -
बिभृ + तः = बिभृतः / चर्कृ + तः = चर्कृतः / जर्हृ + तः = जर्हृतः।

ॠकारान्त अङ्ग -

ॠत इद् धातोः - कित्, ङित्, गित् प्रत्यय परे होने पर जब **'क्ङिति च'** सूत्र से गुण निषेध हो जाता है, तब धातु के अन्त में आने वाले 'ॠ' को 'इ' आदेश होता है, जो कि 'उरण् रपरः' सूत्र से 'रपर' होकर क्रमशः 'इर्' बन जाता है।

तातॄ + तः = तातिर् + तः / चाकॄ + तः = चाकिर् + तः

हलि च - जब धातु के अन्त में र् या व् हों, तब उस धातु की उपधा के 'इक्' को दीर्घ होता है, हल् परे होने पर। यथा -

तातिर् + तः - तातीर् + तः = तातीर्तः
चाकिर् + तः - चाकीर् + तः = चाकीर्तः

उदोष्ठ्यपूर्वस्य - यहाँ यह ध्यान देना चाहिये, कि यदि अङ्ग के अन्तिम 'ॠ' के पूर्व में कोई ओष्ठ से उच्चरित होने वाला व्यञ्जन हो अर्थात् प्, फ्, ब्, भ्, म्, या व् हों तब, ॠ के स्थान पर 'इ' आदेश न होकर, 'उ' आदेश होता है और 'उरण् रपरः' सूत्र की सहायता से यह 'उ' उर् बन जाता है।

उसके बाद हल् होने पर वह 'उ' 'हलि च' सूत्र से दीर्घ हो जाता है। यथा -

पिपॄ + तः - पिपुर् + तः = पिपूर्तः

इस प्रकार हमने जाना कि -

ॠ को हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर ईर् आदेश होता है, किन्तु 'ॠ' के पूर्व में यदि कोई ओष्ठ से उच्चरित होने वाला व्यञ्जन हो, तब ॠ के स्थान पर, ईर् आदेश न होकर, ऊर् आदेश होता है।

ओकारान्त धातु + हलादि अपित्
सार्वधातुक प्रत्यय

ओतः श्यनि - श्यन् प्रत्यय परे होने पर ओकारान्त अङ्गों के 'ओ' का लोप होता है। यथा -

छो + श्यन् - छ् + य = छ्य
शो + श्यन् - श् + य = श्य
सो + श्यन् - स् + य = स्य
दो + श्यन् - द् + य = द्य

यह हलादि अपित् प्रत्यय परे होने पर, अजन्त अङ्गों का विचार हुआ। अब हलादि अपित् प्रत्यय परे होने पर, हलन्त अङ्गों का वर्गीकरण करके उनका विचार करते हैं।

अनिदित् धातु + हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय

अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति - कित् या ङित् प्रत्यय परे होने पर, अनिदित् हलन्त धातुओं की उपधा के 'न्' का लोप हो जाता है।

हमने ऐसे अनिदित् हलन्त धातु, धातुपाठ में अलग से दे दिये हैं तथा यहाँ प्रकरणवश इकट्ठे करके पुनः दे रहे हैं। ये इस प्रकार हैं -

स्कन्द् स्रंस् ध्वंस् भ्रंस् भ्रंश् स्रंभ् मन्थ् ग्रन्थ् श्रन्थ्
कुन्थ् शुन्ध् कुञ्च् क्रुञ्च् लुञ्च् म्रुञ्च् म्लुञ्च् ग्लुञ्च् वञ्च्
चञ्च् त्वञ्च् तञ्च् श्रम्भ् दम्भ् षृम्भ् हम्म् शंस् कुंस्
रञ्ज् स्यन्द् भञ्ज् बन्ध् अञ्च् अञ्ज् उन्द् इन्ध् त्रुम्प्
त्रुम्फ् तृम्फ् तुम्फ् दृम्फ् ऋम्फ् गुम्फ् उम्भ् शुम्भ् तुम्प्
तृन्ह् बुन्द् षञ्ज् ष्वञ्ज् दंश् = ५०

हम जानते हैं कि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय ङिद्वत् होते हैं।

अतः इन सारे अनिदित् धातुओं से, अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने

पर, **अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति** सूत्र से इनकी उपधा के न् का लोप कीजिये। जैसे -

भ्रंश्	+	श्यन्	=	भ्रश्	+	य	=	भ्रश्य
कुंस्	+	श्यन्	=	कुस्	+	य	=	कुस्य
बन्ध्	+	श्ना	=	बध्	+	ना	=	बध्ना
मन्थ्	+	श्ना	=	मथ्	+	श्ना	=	मथ्ना

कित् प्रत्यय परे होने पर भी इन अनिदित् धातुओं की उपधा के न् का लोप होता है -

स्रंस्	+	क्त	-	स्रस्	+	त	=	स्रस्त
भ्रंश्	+	क्त	-	भ्रश्	+	त	=	भ्रष्ट
अञ्च्	+	क्त	-	अच्	+	त	=	अक्त आदि।

सम्प्रसारणी धातु + हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय

ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च - ग्रह्, ज्या, वय्, व्यध्, वश्, व्यच्, व्रश्च्, प्रच्छ्, भ्रस्ज्, इन धातुओं को सम्प्रसारण होता है कित् या ङित् प्रत्यय परे होने पर।

इन्हें सम्प्रसारण इस प्रकार होता है -

ग्रह्	+	श्ना	-	गृह्	+	ना	=	गृह्णा
ज्या	+	श्ना	-	जि	+	ना	=	जिना
वय्	+	क्तः	-	उय्	+	तः	=	उतः
वाव्यध्	+	तः	-	वाविध्	+	तः	=	वाविद्धः
वश्	+	तः	-	उश्	+	तः	=	उष्टः
वाव्यच्	+	तः	-	वाविच्	+	तः	=	वाविक्तः
वाव्रश्च्	+	तः	-	वावृश्च्	+	तः	=	वावृष्टः
पाप्रच्छ्	+	तः	-	पापृच्छ्	+	तः	=	पापृष्टः
बाभ्रस्ज्	+	तः	-	बाभृज्ज्	+	तः	=	बाभृष्टः

इदुपध, उदुपध, ऋदुपध हलन्त धातु + हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय

'क्ङिति च' सूत्र से गुणनिषेध हो जाने के कारण, इनकी उपधा को, 'पुगन्तलघूपधस्य च' सूत्र से प्राप्त होने वाला गुण नहीं होता।

मोमुद् + तः = मोमुत्तः
चरीकृष् + तः = चरीकृष्टः आदि।

शेष हलन्त अङ्ग + हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय

इन्हें हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर कुछ भी नहीं होता।

बोबुक्क् + तः = बोबुक्तः
मेमील् + तः = मेमील्तः
बोभूष् + तः = बोभूष्टः।

अजादि अपित् सार्वधातुक

अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्ययों के दो वर्ग बनाकर इनके अङ्गकार्य अलग अलग समझिये -

१. जुस् प्रत्यय में ज् की इत् संज्ञा होकर 'उः' प्रत्यय बचता है। पहिले हम जुस् प्रत्यय परे होने पर, होने वाले अङ्गकार्य समझेंगे।

२. उसके बाद जुस् से बचे हुए अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, होने वाले अङ्गकार्य समझेंगे।

धातुओं में जुस् प्रत्यय कैसे लगायें ?

आकारान्त धातु + जुस् प्रत्यय

उस्यपदान्तात् - 'उः' प्रत्यय परे होने पर, सारे आकारान्त अङ्गों के अन्तिम 'आ' को, पररूप आदेश होता है। यथा -

ददा + उः - दद् + उः = ददुः
दधा + उः - दध् + उः = दधुः
बभा + उः - बभ् + उः = बभुः
अवा + उः - अव् + उः = अवुः
जिज्या+ उः - जिज्य् + उः = जिज्युः

इगन्त धातु + जुस् प्रत्यय

जुसि च - जुस् प्रत्यय परे होने पर अङ्ग के अन्त में आने वाले इक् को गुण होता है। अर्थात् इ को ए, उ को ओ, ऋ को अर् होता है। यथा -

इकारान्त, ईकारान्त धातु -

अचिकि + उः - जुसि च से गुण करके - अचिके + उः - एचोऽयवायावः से अय् आदेश करके - अचिकय् + उः = अचिकयुः।

अबिभी + उः - जुसि च से गुण करके - अबिभे + उः - एचोऽयवायावः से अय् आदेश करके - अबिभय् + उः = अबिभयुः ।

अजिह्री + उः - जुसि च से गुण करके - अजिह्रे + उः - एचोऽयवायावः से अय् आदेश करके - अजिह्रय् + उः = अजिह्रयुः ।

उकारान्त, ऊकारान्त धातु -

अजुहु + उः - जुसि च से गुण करके - अजुहो + उः - एचोऽयवायावः से अय् आदेश करके - अजुहव् + उः = अजुहवुः ।

ऋकारान्त, ॠकारान्त धातु -

अबिभृ + उः - जुसि च से गुण करके - अबिभर् + उः = अबिभरुः ।

अपिपॄ + उः - जुसि च से गुण करके - अपिपर् + उः = अपिपरुः ।

धातुओं में जुस् से बचे हुए अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय कैसे लगायें ?

आकारान्त धातु + जुस् प्रत्यय से बचे हुए अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय

हम जानते हैं कि अपित् प्रत्यय परे होने पर आकारान्त धातुओ के पाँच वर्ग होते हैं -

१. ज्या धातु ।
२. क्र्यादिगण के श्ना प्रत्ययान्त ६१ धातु ।
३. दा, धा धातु को छोड़कर, द्वित्व किये हुए शेष अभ्यस्तसंज्ञक आकारान्त धातु ।
४. द्वित्व किये हुए अभ्यस्तसंज्ञक दा, धा धातु ।
५. बिना द्वित्व किये हुए आकारान्त धातु ।

अब इन सबको जोड़ने का क्रमशः विचार करें -

१. ज्या धातु + जुस् प्रत्यय से बचे हुए अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय

जाज्या + अति / ज्या धातु सम्प्रसारणी धातु है, अतः अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर इसे सम्प्रसारण होगा - जाज्या + अति = जाजि + अति । अब क्ङिति च सूत्र से, गुणनिषेध होने के कारण -

एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य - यदि इकारान्त, ईकारान्त धातु अनेकाच् हों और उनके पूर्व में संयोग न हो, तब ऐसे असंयोगपूर्व अनेकाच् इकारान्त, ईकारान्त

धातुओं के अन्तिम इ, ई के स्थान पर 'यण्' आदेश होता है, अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय अर्थात् ङित् प्रत्यय परे होने पर - जाजि + अति = जाज्यति।

२ क्र्यादिगण के श्ना प्रत्ययान्त ६१ धातु + जुस् प्रत्यय से बचे हुए अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय

हम जानते हैं कि श्नाभ्यस्तयोरातः सूत्र के तीन अर्थ हैं।

श्नान्त धातुओं के 'आ' का 'श्नाभ्यस्तयोरातः' सूत्र से लोप होता है, केवल अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर।

क्रीणा + अन्ति - क्रीण् + अन्ति = क्रीणन्ति

३. दा, धा धातु को छोड़कर, द्वित्व किये हुए, शेष अभ्यस्तसंज्ञक आकारान्त धातु + जुस् प्रत्यय से बचे हुए अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय

दा, धा, के अलावा, शेष अभ्यस्तसंज्ञक आकारान्त धातुओं के 'आ' का भी 'श्नाभ्यस्तयोरातः' सूत्र से लोप होता है, केवल अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर।

जहा + अति - जह् + अति = जहति

४. द्वित्व किये हुए अभ्यस्तसंज्ञक दा, धा धातु + जुस् प्रत्यय से बचे हुए अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय

दा, धा को द्वित्व करके बने हुए, घुसंज्ञक अभ्यस्त धातुओं के 'आ' का भी 'श्नाभ्यस्तयोरातः' सूत्र से लोप होता है, अजादि तथा हलादि दोनों ही प्रकार के अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर।

ददा + अति - दद् + अति = ददति
दधा + अति - दध् + अति = दधति

५. बिना द्वित्व किये हुए आकारान्त धातु + जुस् प्रत्यय से बचे हुए अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय

अब पाँचवें वर्ग के शेष आकारान्त धातु बचे। उनके 'आ' का लोप नहीं होता। अतः 'अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय' परे होने पर वहाँ, 'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से सवर्णदीर्घ सन्धि कीजिये - वा + अन्ति = वान्ति।

ये, आकारान्त धातुओं से सारे 'अजादि अपित् प्रत्यय' परे होने पर, होने वाले अङ्ग कार्य बतलाये गये।

अब हम इकारान्त, ईकारान्त धातुओं का विचार करें -

इकारान्त, ईकारान्त धातु + जुस् प्रत्यय से बचे हुए अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय

अङ्गकार्यों के लिये, इन इकारान्त, ईकारान्त धातुओं के पाँच वर्ग बनाइये।

१. इण् धातु।

२. इण् धातु से भिन्न एकाच् इकारान्त, ईकारान्त धातु।

३. संयोगपूर्व अनेकाच् इकारान्त, ईकारान्त धातु।

४. असंयोगपूर्व अनेकाच् इकारान्त, ईकारान्त धातु।

५. दीधी, वेवी धातु।

अब इन पाँचों प्रकार के धातुओं के अङ्गकार्य इस प्रकार अलग अलग जानिये -

१. इण् धातु + जुस् प्रत्यय से बचे हुए शेष अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय

इणो यण् - इण् धातु को यण् आदेश होता है, अजादि कित् ङित् प्रत्यय परे होने पर। इ + अन्ति - य् + अन्ति = यन्ति।

२. इण् धातु से भिन्न, एकाच् इकारान्त, ईकारान्त धातु + जुस् प्रत्यय से बचे हुए अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय

वी + अन्ति, इस ईकारान्त धातु को देखिये। यह जो 'वी' धातु है, इसमें एक ही अच् है, और इससे परे आने वाला 'अन्ति' प्रत्यय, अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय है। अतः इसे 'अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ' सूत्र से इयङ् (इय्) होकर बना - वी + अन्ति - विय् + अन्ति = वियन्ति आदि। इसी प्रकार -

'श' यह विकरण भी, अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय है तथा 'रि' जो धातु है, इसमें एक ही अच् है, तो इसे 'अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ' सूत्र से इयङ् (इय्) होकर बना - रि + श - रिय् + अ - रिय, आदि।

इसी प्रकार -

क्षि	+ श	-	क्षिय्	+	अ	=	क्षिय
धि	+ श	-	धिय्	+	अ	=	धिय
पि	+ श	-	पिय्	+	अ	=	पिय आदि।

३. संयोगपूर्व अनेकाच् इकारान्त, ईकारान्त धातु + जुस् प्रत्यय से बचे हुए अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय

जिह्री + अति, इसे देखिये। 'ह्री धातु' को द्वित्व करके बना हुआ यह जो 'जिह्री' धातु है, इसके 'ई' के पूर्व में, ह् + र्, इन दो व्यञ्जनों का संयोग है, और इससे परे आने वाला 'अन्ति' प्रत्यय, अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय है। अतः इसे अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ सूत्र से इयङ् (इय्) होकर बना - जिह्री + अति = जिह्रिय् + अति = जिह्रियति।

४. असंयोगपूर्व अनेकाच् इकारान्त, ईकारान्त धातु + जुस् प्रत्यय से बचे हुए अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय

बिभी + अति - यह 'भी' धातु को द्वित्व करके बना हुआ अनेकाच् 'ईकारान्त धातु' है। इसके 'ई' के पूर्व में संयोग भी नहीं है। अतः इस असंयोगपूर्व 'ई' के स्थान पर 'एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य' सूत्र से 'यण्' ही होगा -

बिभ्य् + अति = बिभ्यति। सूत्र का अर्थ पहिले बतला चुके हैं।

इसी प्रकार नेनी + अति = नेन्यति। दीधी + आते = दीध्याते। वेवी + आते = वेव्याते आदि बनाइये।

५. दीधी, वेवी धातु + जुस् प्रत्यय से बचे हुए अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय

अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, दीधी, वेवी धातुओं के 'ई' को, 'एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य' सूत्र से 'यण्' करके - दीधी + आते = दीध्याते/ वेवी + आते = वेव्याते आदि बनाइये।

किन्तु इवर्ण अथवा यकारादि प्रत्यय परे होने पर 'ई' का लोप कीजिये-

यीवर्णयोर्दीधीवेव्योः - दीधी, वेवी धातुओं के अन्तिम 'ई' का लोप होता है, केवल यकार तथा इवर्ण परे होने पर।

दीधी + ईत - दीध् + ईत = दीधीत।
वेवी + ईत - वेव् + ईत = वेवीत, आदि।

उकारान्त, ऊकारान्त धातु + जुस् प्रत्यय से बचे हुए अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय

अङ्गकार्यो के लिये, इन उकारान्त, ऊकारान्त धातुओं के पाँच वर्ग बनाइये।

१. असंयोगपूर्व श्नुप्रत्ययान्त धातु।
२. संयोगपूर्व श्नुप्रत्ययान्त धातु।
३. श्नुप्रत्यय के अलावा, किसी अन्य उकारान्त प्रत्यय से बने हुए धातु।
४. हु धातु।
५. अन्य उकारान्त, ऊकारान्त धातु।

अब इन पाँचों प्रकार के उकारान्त धातुओं के अङ्गकार्यों की व्यवस्था अलग अलग जानिये -

१. असंयोगपूर्व श्नुप्रत्ययान्त धातु + जुस् प्रत्यय से बचे हुए अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय

स्वादिगण का विकरण श्नु है। स्वादि गण में ३४ धातु हैं। इन धातुओं में जब हम श्नु विकरण लगा लेते हैं, तब इनसे चि + श्नु = चिनु, सु + श्नु = सुनु आदि, जो ३४ उकारान्त धातु बनते हैं, इनका नाम श्नुप्रत्ययान्त धातु होता है।

स्वादिगण के अजन्त धातुओं में श्नुप्रत्यय लगाने के बाद, श्नु प्रत्यय के पूर्व में दो व्यञ्जनों का संयोग कभी नहीं मिलता है, जैसे - चिनु, सुनु आदि। अत: इन्हें असंयोगपूर्व श्नुप्रत्ययान्त धातु कहते हैं। ऐसे धातु, हमने धातुपाठ में १२४७ से १२६४ तक रखे हैं।

ऐसे असंयोगपूर्व श्नुप्रत्ययान्त धातुओं के बाद अजादि अपित् प्रत्यय आने पर इन धातुओं के अन्तिम 'उ' के स्थान पर **'हुश्नुवो: सार्वधातुके'** सूत्र से यण् = व् होता है। सूत्र का अर्थ है -

हुश्नुवो: सार्वधातुके - हु धातु को तथा असंयोगपूर्व श्नुप्रत्ययान्त धातुओं को यण् होता है, अजादि कित्, ङित् प्रत्यय परे होने पर। यथा -

चिनु + अन्ति - चिन्व् + अन्ति = चिन्वन्ति। इसी प्रकार सुनु + अन्ति = सुन्वन्ति आदि।

२. संयोगपूर्व श्नुप्रत्ययान्त धातु + जुस् प्रत्यय से बचे हुए अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय

स्वादिगण के हलन्त धातुओं में श्नुप्रत्यय लगाने के बाद, श्नु प्रत्यय के पूर्व में दो व्यञ्जनों का संयोग अवश्य मिलता है, जैसे - आप्नु, शक्नु, स्तिघ्नु आदि। देखिये कि इनमें 'उ' के पूर्व में प् + न् / क् + न् / घ् + न् आदि

का संयोग है। अतः इन्हें संयोगपूर्व श्नुप्रत्ययान्त धातु कहते हैं। ऐसे धातु, हमने धातुपाठ में १२६५ से १२८० तक रखे हैं।

ऐसे संयोगपूर्व श्नुप्रत्ययान्त धातुओं के अन्तिम 'उ' को, पूर्वोक्त 'अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ' सूत्र से उवङ् (उव्) आदेश होता है। यथा -

आप्नु + अन्ति - आप्नुव् + अन्ति = आप्नुवन्ति / इसी प्रकार शक्नु + अन्ति - शक्नुव् + अन्ति = शक्नुवन्ति / अश्नु + अते - अश्नुव् + अते = अश्नुवते / आदि।

३. श्नुप्रत्यय के अलावा, किसी भी अन्य उकारान्त प्रत्यय से बने हुए उकारान्त धातु + जुस् प्रत्यय से बचे हुए अजादि सार्वधातुक प्रत्यय

ऐसे उकारान्त धातु, जिनके अन्त में 'उ' तो हो, किन्तु वह 'उ' न तो धातु का हो, न ही श्नुप्रत्यय का हो, ऐसे श्नु से भिन्न प्रत्ययों से बने हुए उकारान्त धातुओं के बाद अजादि अपित् प्रत्यय आने पर, इन अङ्गों के अन्तिम 'उ' के स्थान पर 'इको यणचि' इस सन्धि सूत्र से यण् = व् ही होता है। यथा - तनु + अन्ति - तन्व् + अन्ति = तन्वन्ति।

ध्यान रहे कि 'तनु' में 'उ' प्रत्यय है, श्नु प्रत्यय नहीं। साथ ही यह भी ध्यान रहे कि उकारान्त धातुओं में जहाँ कोई भी अङ्गकार्य प्राप्त न हों, वहाँ इक् के स्थान पर 'इको यणचि' इस सन्धि सूत्र से ही, यण् आदेश होता है।

४. हु धातु + जुस् प्रत्यय से बचे हुए अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय

अजादि अपित् प्रत्यय परे होने पर, हु धातु के अन्तिम 'उ' के स्थान पर 'हुश्नुवोः सार्वधातुके' सूत्र से यण् = व् कीजिये। यथा - जुहु + अति - जुह्व् + अति = जुह्वति।

५. अन्य उकारान्त, ऊकारान्त धातु + जुस् प्रत्यय से बचे हुए अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय

अब हु धातु के अलावा, जो सारे उकारान्त, ऊकारान्त धातु बचे, जिनके अन्त में कोई भी प्रत्यय न दिख रहा हो, जैसे - बोभू, पोपू, लोलू आदि, उनके अन्तिम 'उ, ऊ' को अजादि कित्, ङित् प्रत्यय परे होने पर'अचि श्नुधातुभ्रुवां

य्वोरियङुवङौ' सूत्र से उवङ् (उव्) आदेश ही कीजिये। चाहे वे एकाच् हों चाहे अनेकाच्। चाहे वे संयोगपूर्व हों चाहे असंयोगपूर्व।

बोभू + अति - बोभुव् + अति = बोभुवति
लोलू + अति - लोलुव् + अति = लोलुवति
पोपू + अति - पोपुव् + अति = पोपुवति
पोप्लु + अति - पोप्लुव् + अति = पोप्लुवति
यु + अन्ति - युव् + अति = युवन्ति आदि।

ऋकारान्त धातु + जुस् प्रत्यय से बचे हुए अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय

ऋकारान्त धातुओं से अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, क्ङिति च सूत्र से, इक् के स्थान पर प्राप्त गुण, वृद्धि कार्य का निषेध हो जाता है। अत: 'इको यणचि' सूत्र से यण् होता है।

बिभृ + अति - बिभ्र् + अति = बिभ्रति।

इसके अपवाद -

ऋकारान्त धातु + श प्रत्यय

रिङ्शयग्लिङ्क्षु - तुदादिगण के विकरण 'श' को देखिये। यह भी अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय है, किन्तु इस 'श' के परे होने पर, यक् परे होने पर तथा आशीर्लिङ् लकार के यकारादि प्रत्यय परे होने पर, 'ह्रस्व ऋ' के स्थान पर रिङ् आदेश होता है, न गुण, न ही यण्। यथा -

मृ + श - मृ + अ - रिङ् आदेश होकर - म् रि + अ = म्रि
पृ + श - पृ + अ - रिङ् आदेश होकर - प् रि + अ = प्रि
धृ + श - धृ + अ - रिङ् आदेश होकर - ध् रि + अ = ध्रि

इस प्रकार ह्रस्व ऋकारान्त अङ्गों से अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय' परे होने पर

१. ह्रस्व ऋकारान्त अङ्गों से 'जुस्' प्रत्यय परे होने पर 'ऋ' को 'जुसि च' सूत्र से गुण होता है।

२. ह्रस्व ऋकारान्त अङ्गों से 'श' प्रत्यय परे होने पर 'ऋ' को 'रिङ्शयग्लिङ्क्षु' सूत्र से 'रिङ्' होकर इयङ् होता है।

१. ह्रस्व ऋकारान्त अङ्गों से 'शेष अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय'

परे होने पर 'ऋ' को 'इको यणचि' सूत्र से यण् ही होता है।

दीर्घ ॠकारान्त धातु + शेष अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय

ॠत इद् धातोः - धातु के अन्त में आने वाले ॠ को 'इ' आदेश होता है, अपित् प्रत्यय परे होने पर।

हम जानते हैं कि, जब भी ऋ, ॠ के स्थान पर अ, इ, या उ होते हैं तब वे 'उरण् रपरः' सूत्र से 'रपर' होकर क्रमशः अर्, इर, या उर् बन जाते हैं। यहाँ ॠत इद् धातोः सूत्र 'ॠ' के स्थान पर 'इ' कर रहा है, अतः 'उरण् रपरः' सूत्र की सहायता से यह 'इ' 'इर्' बन जायेगा।

तातॄ	+	अति	-	तातिर्	+	अति	-	तातिरति
चाकॄ	+	अति	-	चाकिर्	+	अति	-	चाकिरति

इस प्रकार हमने जाना कि - ॠ को अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर इर् आदेश होता है किन्तु -

उदोष्ठ्यपूर्वस्य - यहाँ यह ध्यान देना चाहिये कि यदि अङ्ग के अन्तिम ॠ के पूर्व में कोई ओष्ठ से उच्चरित होने वाला व्यञ्जन हो अर्थात् प्, फ्, ब्, भ्, म्, या व् हों तब ॠ के स्थान पर, **इर् आदेश न होकर उर्,** आदेश होता है। यथा -

पिपॄ	+	अति	-	पिपुर्	+	अति	=	पिपुरति

इस प्रकार हमने जाना कि -

ॠ को अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर इर् आदेश होता है, किन्तु ॠ के पूर्व में यदि कोई ओष्ठ से उच्चरित होने वाला व्यञ्जन हो, अर्थात् प्, फ्, ब्, भ्, म्, या व् हों तब ॠ के स्थान पर, इर् आदेश न होकर, उर् आदेश होता है।

यह अजन्त धातुओं का विचार हुआ। अब हलन्त धातुओं का विचार करें।

अनिदित् धातु + अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय

अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति - हम जानते हैं कि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय ङिद्वत् होते हैं। हम यह भी जानते हैं कि, जब प्रत्यय कित् या ङित् हो, तब अनिदित् हलन्त धातुओं की उपधा के 'न्' का लोप हो जाता है।

ऐसे अनिदित् हलन्त धातु पीछे बतलाये जा चुके हैं। अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, इनकी उपधा के 'न्' का लोप कीजिये। जैसे -

बरीभ्रंश्	+	अति	=	बरीभ्रश्	+	अति	=	बरीभ्रशति
चोकुंस्	+	अति	=	चोकुस्	+	अति	=	चोकुसति
बाबन्ध्	+	अति	=	बाबध्	+	अति	=	बाबधति
मामन्थ्	+	अति	=	मामथ्	+	अति	=	मामथति।

अनिदित् धातुओं में से तृम्फ्, तुम्फ्, दृम्फ्, ऋम्फ्, गुम्फ्, उम्भ, शुम्भ्, तुम्प्, तृन्ह्, ये नौ धातु 'तृम्फादि धातु' कहलाते हैं।

अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' सूत्र से इन नौ तृम्फादि धातुओं की उपधा के न् का लोप हो जाने के बाद, इन्हें पुनः नुम् = न् का आगम कीजिये। नुम् = न् का आगम करने वाला वार्तिक है -

शे तृम्फादीनां नुम्वाच्यः (वार्तिक) - श प्रत्यय परे होने पर इन तृम्फादि धातुओं को नुम् = न् का आगम होता है।

'म्' की इत् संज्ञा होने से यह नुम् आगम 'मित्' आगम कहलाता है। हम जानते हैं कि मित् आगम जिसे भी होता है, 'मिदचोऽन्त्यात्परः' सूत्र की सहायता से वह उसके अन्तिम अच् के, ठीक बाद में ही बैठता है।

श प्रत्यय परे होने पर इन तृम्फादि धातुओं में, इस प्रकार अङ्गकार्य कीजिये -

तृम्फ् + श - अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति सूत्र से उपधा के 'न्' का लोप करके - तृफ् + अ / 'शे तृम्फादीनां नुम्वाच्यः', इस वार्तिक से, नुम् का आगम करके - तृ न् फ् + अ = तृम्फ / 'तृफ्' में अन्तिम अच् 'ऋ' ही है, अतः नुम्, इस 'ऋ' के ठीक बाद में ही बैठा है।

श प्रत्यय लगने पर, नलोप करके तथा पुनः नुमागम करके इन तृम्फादि धातुओं के रूप इस प्रकार बनते हैं -

				नलोप करके				पुनः नुमागम करके				
तृम्फ्	+	श	-	तृफ्	+	अ	-	तृम्फ	+	अ	=	तृम्फ
तुम्फ्	+	श	-	तुफ्	+	अ	-	तुम्फ्	+	अ	=	तुम्फ
दृम्फ्	+	श	-	दृफ्	+	अ	-	दृम्फ्	+	अ	=	दृम्फ
ऋम्फ्	+	श	-	ऋफ्	+	अ	-	ऋम्फ्	+	अ	=	ऋम्फ
गुम्फ्	+	श	-	गुफ्	+	अ	-	गुम्फ्	+	अ	=	गुम्फ

उम्भ् + श - उभ् + अ - उम्भ् + अ = उम्भ
शुम्भ् + श - शुभ् + अ - शुम्भ् + अ = शुम्भ
तुम्प् + श - तुप् + अ - तुम्प् + अ = तुम्प
तृन्ह् + श - तृह् + अ - तृन्ह् + अ = तृंह

सम्प्रसारणी धातु + अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय

ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च - ग्रह्, ज्या, वय्, व्यध्, वश्, व्यच्, व्रश्च्, प्रच्छ्, भ्रस्ज् इन धातुओं को सम्प्रसारण होता है, कित् या ङित् प्रत्यय परे होने पर।

अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर इन्हें इस प्रकार सम्प्रसारण कीजिये -

जाज्या + अति - जाजि + अति = जाज्यति
जाग्रह् + अति - जागृह् + अति = जागृहति
वाव्यध् + अति - वाविध् + अति = वाविधति
वाव्यच् + अति - वाविच् + अति = वाविचति
वाव्रश्च् + अति - वावृश्च् + अति = वावृश्चति
पाप्रच्छ् + अति - पापृच्छ् + अति = पापृच्छति
बरीभ्रज्ज् + अति - बरीभृज्ज् + अति = बरीभृज्जति

इदुपध, उदुपध, ऋदुपध हलन्त धातु + अजादि
अपित् सार्वधातुक प्रत्यय

'क्ङिति च' सूत्र गुणनिषेध करके -

बेभिद् + अति = बेभिदति
मोमुद् + अति = मोमुदति
चरीकृष् + अति = चरीकृषति आदि।

शेष हलन्त अङ्ग + अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय

इन्हें भी अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर कुछ भी नहीं होता।

बोबुक्क् + अति = बोबुक्कति
मेमील् + अति = मेमीलति
बोभूष् + अति = बोभूषति।

हमने जाना कि हलादि तथा अजादि दोनों ही प्रकार के अपित्

सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, हमें -

१. गुणनिषेध

२. अनिदित् धातुओं की उपधा के न् का लोप।

३. सम्प्रसारणी धातुओं को सम्प्रसारण, करना ही चाहिये।

ये, सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर होने वाले अङ्गकार्य संक्षेप में बतलाये गये। अब हम आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर, होने वाले सामान्य अङ्गकार्यों का संक्षेप में विचार करें।

आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर, होने वाले सामान्य अङ्गकार्य

यह विचार हम आर्धधातुक प्रत्ययों के चार वर्ग बनाकर करें।

१. ञित् णित् आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर, होने वाले संक्षिप्त अङ्गकार्य।

२. कित् ङित् आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर, होने वाले संक्षिप्त अङ्गकार्य।

३. ञित्, णित्, कित्, ङित् से भिन्न आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर, होने वाले संक्षिप्त अङ्गकार्य।

४. सभी आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर, होने वाले संक्षिप्त अङ्गकार्य।

ञित् णित् प्रत्यय दो प्रकार के हैं -

१. जब ये धातुओं से लगते हैं, तब ये आर्धधातुक प्रत्यय कहलाते हैं।

२. जब ये धातुओं से न लगकर प्रातिपदिकों से लगते हैं, तब ये आर्धधातुक प्रत्यय नहीं कहलाते हैं।

इनके परे होने पर, अलग अलग, इस प्रकार अङ्गकार्य कीजिये -

१. आर्धधातुक ञित्, णित् प्रत्यय परे होने पर, होने वाले संक्षिप्त अङ्गकार्य

अचो ञ्णिति - अजन्त अङ्ग को वृद्धि होती है, ञित् णित् प्रत्यय परे होने पर। यथा -

जि + णिच् - जै + इ = जायि / जाययति
भू + णिच् - भौ + इ = भावि / भावयति
कृ + णिच् - कार् + इ = कारि / कारयति, आदि।

अत उपधायाः - अदुपध हलन्त धातुओं की उपधा के 'अ' को वृद्धि

होती है, ञित् णित् प्रत्यय परे होने पर। जैसे -

लड् + णिच् - लाड् + इ = लाडि / लाडयति
नट् + णिच् - नाट् + इ = नाटि / नाटयति
बध् + णिच् - बाध् + इ = बाधि / बाधयति
चल् + णिच् - चाल् + इ = चालि / चालयति आदि।

पुगन्तलघूपधस्य च - कित्, ङित्, से भिन्न, सार्वधातुक तथा आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर अङ्ग की उपधा के लघु इक् को गुण होता है अर्थात् उपधा के लघु इ को ए / लघु उ को ओ / लघु ऋ को अर् / ऐसा गुण होता है। यथा -

भिद् + णिच् = भेद् + णिच् - उपधा के लघु इ को ए गुण हुआ है।
मुद् + णिच् = मोद् + णिच् - उपधा के लघु उ को ओ गुण हुआ है।
कृष् + णिच् = कर्ष् + णिच् - उपधा के लघु ऋ को अर् गुण हुआ है।

जो आर्धधातुक न हों, ऐसे णिच् तथा णिङ् प्रत्यय परे होने पर होने वाले अङ्गकार्य

बहुत सावधानी से यह ध्यान देना चाहिये कि जब णिच् तथा णिङ् प्रत्यय, धातुओं से लगते हैं, तब इनका नाम आर्धधातुक प्रत्यय होता है।

जब ये णिच् तथा णिङ् प्रत्यय, धातुओं से न लगकर, प्रातिपदिकों से लगते हैं, तब इनका नाम आर्धधातुक प्रत्यय नहीं होता है। जैसे -

कुमार + णिच् को देखिये। यह णिच् प्रत्यय, धातु से न लगकर, प्रातिपदिक से लगा हैं, अतः इसका नाम आर्धधातुक प्रत्यय नहीं है।

पुच्छ् + णिङ् को देखिये। यह णिङ् प्रत्यय, धातुओं से न लगकर, प्रातिपदिक से लगा हैं, अतः इसका नाम आर्धधातुक प्रत्यय नहीं है।

जब इनका नाम आर्धधातुक प्रत्यय नहीं होता है, तब ये णिच् तथा णिङ् प्रत्यय, **'णौ प्रातिपदिकस्य इष्ठवत् कार्य भवतीति वक्तव्यम्'** इस वार्तिक से, तद्धित के 'इष्ठ' प्रत्यय के समान माने जाने लगते हैं और इन णिच् तथा णिङ् प्रत्ययों के परे होने पर, वे सभी कार्य होने लगते हैं, जो कार्य तद्धित के 'इष्ठ' प्रत्यय परे होने पर होते हैं। ये कार्य इस प्रकार हैं -

पुंवद्भाव -

भस्याढे तद्धिते पुंवद्भावः - यदि स्त्रीलिङ्ग शब्द के अन्त में कोई

स्त्रीप्रत्यय होता है, तो उस स्त्रीप्रत्यय का लोप करके, उस स्त्रीलिङ्ग प्रातिपदिक को पुंवद्भाव हो जाता है। यथा - पयस्विनी + णिच् / पुंवद्भाव करके अर्थात् स्त्री प्रत्यय का लोप करके - पयस्विन् + णिच् /

इसी प्रकार - कुमारी + णिच् - कुमार + णिच् / हंसी + णिच् - हंस + णिच् / एनी + णिच् - एत + णिच् आदि।

२. विन् तथा मतुप प्रत्ययों का लुक् -

विन्मतोर्लुक् - यदि किसी प्रातिपदिक के अन्त में विन् प्रत्यय हो, अथवा मतुप् प्रत्यय हो और ऐसे विन्नन्त या मतुबन्त प्रातिपदिकों से णिच् प्रत्यय लगे, तब उस णिच् प्रत्यय के परे होने पर, विन्नन्त प्रातिपदिक के विन् का तथा मतुबन्त प्रातिपदिक के मतुप् का लोप हो जाता है। जैसे -

स्रग्विन् + णिच् / विन्मतोर्लुक् से विन् का लोप करके - स्रज् + णिच्।

पयस्विनी + णिच् / भस्याढे तद्धिते पुंवद्भावः से पुंवद्भाव करके अर्थात् स्त्री प्रत्यय का लोप करके - पयस्विन् + णिच् / विन्मतोर्लुक् से विन् का लुक् करके - पयस् + णिच्।

३. टिलोप -

टेः - इष्ठन्, इमनिच्, तथा ईयसुन् इन तद्धित प्रत्ययों के परे होने पर अनेकाच् अङ्ग की 'टि' का लोप होता है। यथा-

विद्वस् + णिच् - टिलोप होकर - विद्व् + णिच् / हरि + णिच् - टिलोप होकर - हर् + णिच् / विधु + णिच् - टिलोप होकर - विध् + णिच् / महत् + णिच् - टिलोप होकर - मह् + णिच् / करिन् + णिच् - टिलोप होकर - कर् + णिच् / रवि + णिच् - टिलोप होकर - रव् + णिच् आदि।

अव्ययानां भमात्रे टिलोपः - यदि प्रातिपदिक अव्यय है, तब णिच् प्रत्यय परे होने पर, अनेकाच् न होते हुए भी उसकी की टि का लोप हो ही जाता है। स्वर् + णिच् - टिलोप होकर - स्व् + णिच् /

टिलोप कहाँ नहीं करें -

प्रकृत्यैकाच् -

यदि प्रातिपदिक एकाच् हो तो णिच् प्रत्यय परे होने पर उस एकाच् अङ्ग की टि का लोप नहीं होता। यथा -

स्व + णिच् - स्व + णिच् / गो + णिच् - गो + णिच्। यहाँ प्रातिपदिक

एकाच् हैं, अतः इनकी 'टि' का लोप नहीं होगा।

(विशेष - किन्तु यदि प्रातिपदिक नान्त हो, तो एकाच् होने के बाद भी उसकी 'टि' का लोप 'नस्तद्धिते' सूत्र से हो जाता है।)

इनका विस्तार बतलाना नामधातु प्रकरण का विषय है। अतः उसे वहीं देखें। हम यहाँ प्रक्रिया नहीं बतला रहे हैं, केवल यह निर्णय कर रहे हैं कि अङ्गकार्य किस प्रकार से किये जायें ?

२. कित् ङित् आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर, होने वाले अङ्गकार्य

आकारान्त धातु + अजादि कित्, ङित् आर्धधातुक प्रत्यय

आतो लोप इटि च - आकारान्त धातुओं के अन्तिम 'आ' का लोप होता है, अजादि कित्, ङित् आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर तथा इट् परे होने पर। जैसे - पपा + अतुः - पप् + अतुः = पपतुः / ददा + अतुः - दद् + अतुः = ददतुः आदि।

आकारान्त धातु + हलादि कित्, ङित् आर्धधातुक प्रत्यय

घुमास्थागापाजहातिसां हलि - आकारान्त तथा एजन्त धातुओं में से घुसंज्ञक धातु अर्थात् दो - दा, देङ् - दा, डुदाञ् - दा, दाण् - दा, धेट् - धा, डुधाञ् - धा, इन ६ धातुओं के आ को, तथा मा, स्था, गा, पा, हा, षो (सा) इन ६ धातुओं के आ को अर्थात् कुल १२ धातुओं के 'आ' को 'ई' होता है हलादि कित् ङित् प्रत्यय परे होने पर। जैसे -

दा + यक् - दी + य - दीय = दीयते
धा + यक् - धी + य - धीय = धीयते
मा + यक् - मी + य - मीय = मीयते
गा + यक् - गी + य - गीय = गीयते
पा + यक् - पी + य - पीय = पीयते
हा + यक् - ही + य - हीय = हीयते
स्था + यक् - स्थी + य - स्थीय = स्थीयते
सा + यक् - सी + य - सीय = सीयते

ध्यान रहे कि यह सूत्र केवल इन १२ आकारान्त धातुओं के लिये ही है। शेष आकारान्त धातुओं के 'आ' को, कुछ नहीं होता। जैसे - वा + यते = वायते / भा + यते = भायते / ला + यते = लायते, आदि।

इगन्त तथा लघु इगुपध धातु + सारे कित्, ङित् प्रत्यय

क्ङिति च - कित्, ङित्, गित् प्रत्यय परे होने पर न तो धातु के अन्तिम इक् को 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से होने वाला गुण होता है, न ही उपधा के लघु इक् को 'पुगन्तलघूपधस्य' च सूत्र से होने वाला गुण होता है। जैसे -

नी + यक् - नीय = नीयते
भू + यक् - भूय = भूयते
लिख् + यक् - लिख्य = लिख्यते
बुध् + यक् - बुध्य = बुध्यते आदि।

इसे याद रखें। विशेष विधि बतलाई जा चुकी हैं।

३. ञित्, णित्, कित्, ङित् से भिन्न, आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर, होने वाले संक्षिप्त अङ्गकार्य

इगन्त धातुओं से, कित्, ङित्, ञित्, णित् से भिन्न आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर, **'सार्वधातुकार्धधातुकयोः'** सूत्र से गुण कीजिये। यथा - नी + ता = नेता / हु + ता = होता / कृ + ता = कर्ता।

लघु इगुपध धातुओं से, कित्, ङित्, ञित्, णित् से भिन्न आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर, **'पुगन्तलघूपधस्य च '** सूत्र से धातु की उपधा को गुण कीजिये। यथा - भिद् + ता = भेत्ता / तुद् + ता = तोत्ता / कृष् + ता = कर्ष्टा।

४. सभी आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर, होने वाले संक्षिप्त अङ्गकार्य

उपदेशावस्था में जिनके अन्त में ह्रस्व 'अ' हो, ऐसे अदन्त अङ्गों से परे, कोई भी आर्धधातुक प्रत्यय आने पर आप इस सूत्र से कार्य कीजिये -

अतो लोपः - उपदेशावस्था में जो अदन्त अङ्ग, उसके अन्तिम 'अ' का लोप होता है, कोई भी आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर। यथा - कथ + णिच् / 'अ' का लोप करके - कथ् + इ = कथि। मृग + णिच् / 'अ' का लोप करके - मृग् + इ = मृगि।

अब हम प्रमुख अङ्गकार्य सीख चुके हैं। अतः अब हम एक एक गण के धातुओं को लेकर उनमें उस उस गण का विकरण लगायें और तिङ्, कृत् सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग तैयार करें ताकि हम लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् तथा सार्वधातुक लेट् इन पाँच लकारों के धातुरूप बना सकें।

❀ ❀ ❀

सार्वधातुक लकार

चतुर्थ पाठ

प्रथम गण समूह के धातुओं के लट्, लोट्, लङ्, तथा विधिलिङ् लकारों के रूप बनाने की विधि

पहिले भ्वादि के धातुओं के लट्, लोट्, लङ्, तथा विधिलिङ् लकारों के रूप बनायें -

'भवति' को देखिये। इसके तीन खण्ड हैं - धातु + विकरण + प्रत्यय। हम जानते हैं कि किसी भी धातु के, लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् तथा सार्वधातुक लेट् लकारों के कर्तृवाच्य के रूप, धातु + विकरण + प्रत्यय को जोड़कर बनते हैं, किन्तु धातु + विकरण + प्रत्यय को दो हिस्सों में जोड़ा जाता है।

१. पहिले धातु + विकरण को जोड़ा जाता है।

२. धातु + विकरण को जोड़ने से जो बनता है, उसी में लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् तथा लेट् लकारों के कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्यय लगाये जाते हैं तथा उसी में सार्वधातुक कृत् प्रत्यय लगाये जाते हैं, क्योंकि कर्त्रर्थक तिङ् सार्वधातुक प्रत्यय तथा कर्त्रर्थक कृत् सार्वधातुक प्रत्यय, धातु से सीधे कभी नहीं जोड़े जाते।

अतः अब हम, एक एक गण के धातुओं को लेकर, उनमें उस गण का विकरण जोड़ेंगे। हम अपना यह कार्य भ्वादिगण से प्रारम्भ करेंगे। भ्वादिगण में १०१० धातु हैं।

शप् विकरण लगाकर, अङ्गकार्य करते समय, हम उन सूत्रों के अर्थ दोबारा नहीं बतलायेंगे, जिनके अर्थ अभी 'संक्षिप्त अङ्गकार्य' में बतलाये जा चुके हैं। अतः नये सूत्रों के अर्थ बतलायेंगे और पुराने सूत्रों का केवल नामोल्लेख करेंगे।

भ्वादिगण के धातुओं में शप् विकरण जोड़ने की विधि

कर्तरि शप् - हम जानते हैं कि जब भी भ्वादिगण के धातुओं के सामने, लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् तथा सार्वधातुक लेट् लकारों के कर्त्रर्थक तिङ् या कृत् सार्वधातुक प्रत्यय बैठे हों, तब 'कर्तरि शप्' सूत्र से भ्वादिगण के धातुओं

में 'शप्' विकरण अवश्य लगता है, और पहले धातु + शप् को जोड़कर जो अङ्ग तैयार होता है, उसी में ये तिङ् या कृत् सार्वधातुक प्रत्यय लगाये जाते हैं।

अब भ्वादिगण का धातुपाठ खोलकर सामने रख लीजिये।

कल्पना कीजिये कि भ्वादिगण के ये जो १०१० धातु हैं, उनके सामने तिङ् या कृत् सार्वधातुक प्रत्यय बैठे हैं और हमें इन धातुओं में शप् विकरण को जोड़ना है।

यस्मात् प्रत्ययविधिस्तदादिप्रत्ययेऽङ्गम् – धातु से प्रत्यय लगते ही धातु का नाम अङ्ग हो जाता है, यह हम जानते ही हैं। अतः शप् के बैठते ही ये सारे धातु अङ्ग बन गये हैं।

जब भी अङ्ग के सामने कोई भी प्रत्यय आये तब हमारा पहला विचार यह होना चाहिये कि वह प्रत्यय, जो अङ्ग के सामने बैठा है वह 'सार्वधातुक प्रत्यय' है या 'आर्धधातुक प्रत्यय' है ?

यदि वह सार्वधातुक प्रत्यय है, तो हमारा पुनः यह विचार होना चाहिये कि वह 'पित् सार्वधातुक प्रत्यय' है या 'अपित् सार्वधातुक प्रत्यय' है। यदि वह 'पित् सार्वधातुक प्रत्यय' है तो हमें निश्चय करना चाहिये कि वह 'हलादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय' है या 'अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय' है।

यदि वह अपित् सार्वधातुक प्रत्यय है तो हमें यह पुनः निश्चय करना चाहिये कि वह 'हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय' है या 'अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय' है।

शप् प्रत्यय में हलन्त्यम् सूत्र से प् की तथा लशक्वतद्धिते सूत्र से श् की इत्संज्ञा करके 'अ' शेष बचता है।

श् की इत्संज्ञा होने से यह प्रत्यय 'शित्' है। शित् होने से यह सार्वधातुक है। प् की इत्संज्ञा होने से यह प्रत्यय 'पित्' भी है। अतः यह 'पित् सार्वधातुक प्रत्यय' है।

अन्य गणों के धातु

भ्वादिगण के धातुपाठ में १०१० धातु पढ़े गये हैं। उनमें से दॄ, नॄ, श्रा, ज्ञा, छदिर्, मदी, ध्वन्, स्वन्, शम्, ये ९ धातु, वस्तुतः भ्वादिगण में होकर भी भ्वादिगण के नहीं हैं। ये घटादिगण में शामिल होकर, मित् बनने के लिये ही, भ्वादिगण में आये हैं। गाङ् धातु वस्तुतः भ्वादिगण में होकर भी, भ्वादिगण का

नहीं है। अत: इनके रूप भ्वादिगण में नहीं बनाये जायेंगे, यह जानिये। इस प्रकार १००० धातु ही भ्वादिगण के हैं।

इन १००० धातुओं में 'शप्' विकरण लगाने की विधि एक समान नहीं है। अत: इन धातुओं का इस प्रकार वर्गीकरण करके हम इनमें शप् प्रत्यय लगायें-

१. विशिष्ट धातु -

इन धातुओं को, हमने धातुपाठ में, क्रमाङ्क ९६४ से क्रमाङ्क १०१० तक, अलग वर्ग बनाकर रख दिया है। इनमें 'शप्' प्रत्यय इस प्रकार लगायें -

पा घ्रा ध्मा स्था म्ना दाण् दृशि अर्ति सर्ति शद सदां, पिब जिघ्र धम तिष्ठ मन यच्छ पश्य ऋच्छ धौ शीय सीदा: -

कोई भी 'शित् प्रत्यय' परे होने पर, पा, घ्रा, ध्मा, स्था, म्ना, दाण्, दृश्, ऋ, सृ, शद्, सद् इन धातुओं के स्थान पर क्रमश: पिब्, जिघ्र्, धम्, तिष्ठ्, मन्, यच्छ्, पश्य्, ऋच्छ्, धौ, शीय्, तथा सीद् आदेश हाते हैं।

शप्, 'शित् प्रत्यय' है अत: इस शित् प्रत्यय, शप् के परे होने पर इन धातुओं के स्थान पर इस प्रकार आदेश कीजिये -

पा	+	शप्	-	पिब्	+	अ	=	पिब
घ्रा	+	शप्	-	जिघ्र्	+	अ	=	जिघ्र
ध्मा	+	शप्	-	धम्	+	अ	=	धम
स्था	+	शप्	-	तिष्ठ्	+	अ	=	तिष्ठ
म्ना	+	शप्	-	मन्	+	अ	=	मन
दाण्	+	शप्	-	यच्छ्	+	अ	=	यच्छ
दृश्	+	शप्	-	पश्य्	+	अ	=	पश्य
ऋ	+	शप्	-	ऋच्छ्	+	अ	=	ऋच्छ
सृ	+	शप्	-	धौ	+	अ	=	धाव
शद्	+	शप्	-	शीय्	+	अ	=	शीय
सद्	+	शप्	-	सीद्	+	अ	=	सीद

इषुगमियमां छ: - इष्, गम्, तथा यम् धातुओं के अन्तिम वर्ण के स्थान पर छ् आदेश होता है।

अब देखिये कि छ् होने से ये धातु इछ्, गछ्, तथा यछ् बन गये हैं।

छे च - छकार परे होने पर ह्रस्व अच् को तुक् का आगम होता है।

गम्	+	शप्	-	गछ्	+	शप्	-	गच्छ्	+	अ = गच्छ
यम्	+	शप्	-	यछ्	+	शप्	-	यच्छ्	+	अ = यच्छ
इष्	+	शप्	-	इछ्	+	शप्	-	इच्छ्	+	अ = इच्छ

(ध्यान दें कि इनमें से, इष् धातु तुदादिगण का है। उसका उपयोग तुदादिगण में ही करें।)

क्रमः परस्मैपदेषु - क्रम् धातु को दीर्घ होता है, परस्मैपदसंज्ञक शित् प्रत्यय परे होने पर। क्रम् + शप् - क्राम् + अ - क्राम = क्रामति।

यदि क्रम् धातु से परे आने वाला प्रत्यय आत्मनेपदी हो, तो दीर्घ नहीं होता और क्रम् + शप् / क्रम् + अ - क्रम = क्रमते ही बनता है।

वा भ्राशभ्लाशभ्रमुक्रमुत्रसित्रुटिलषः - भ्राश्, भ्लाश्, भ्रम्, क्रम्, त्रस्, त्रुट्, लष् इन धातुओं से विकल्प से शप्, श्यन् प्रत्यय होते हैं।

श्यन् प्रत्यय परे होने पर इनमें से क्रम् धातु को ऊपर कहे गये 'क्रमः परस्मैपदेषु' सूत्र से दीर्घ भी होता है तथा श्यन् प्रत्यय परे होने पर इनमें से भ्रम् धातु को 'शमामष्टानां दीर्घः श्यनि' सूत्र से दीर्घ होता है। सूत्र का अर्थ इस प्रकार है -

शमामष्टानां दीर्घः श्यनि - शम्, तम्, दम्, श्रम्, भ्रम्, क्षम्, क्लम्, मद्, इन ८ धातुओं से श्यन् प्रत्यय परे होने पर इन धातुओं के 'अ' को दीर्घ होता है। अब भ्राश्, भ्लाश्, भ्रम्, क्रम्, त्रस्, त्रुट्, लष् धातुओं में विकल्प से शप्, श्यन् प्रत्यय लगाइये -

शप् प्रत्यय लगाकर		**श्यन् प्रत्यय लगाकर**
भ्राश् + शप् = भ्राश		भ्राश् + श्यन् = भ्राश्य
भ्लाश् + शप् = भ्लाश		भ्लाश् + श्यन् = भ्लाश्य
भ्रम् + शप् = भ्राम		भ्रम् + श्यन् = भ्राम्य
क्रम् + शप् = क्राम		क्रम् + श्यन् = क्राम्य
त्रस् + शप् = त्रस		त्रस् + श्यन् = त्रस्य
त्रुट् + शप् = त्रोट		त्रुट् + श्यन् = त्रुट्य
लष् + शप् = लष		लष् + श्यन् = लष्य

ष्ठिवुक्लमुचमां शिति - ष्ठिव्, क्लम् तथा चम्, इन धातुओं को शित् प्रत्यय परे होने पर दीर्घ होता है -

ष्ठिव्	+	शप्	=	ष्ठीव
आ + चम्	+	शप्	=	आचाम
क्लम्	+	शप्	=	क्लाम
क्लम्	+	श्यन्	=	क्लाम्य

श्रुवः श्रृ च - श्रु धातु में शप् विकरण न लगकर, श्नु विकरण लगता है, साथ ही श्रु धातु को 'श्रृ' ऐसा आदेश भी होता है।

श्नु विकरण लगने के कारण, इसके रूप बनाने की विधि स्वादिगण में बतलाई गई है। स्वादिगण में जिस प्रकार - चि - चिनु - चिनोति बनता है, ठीक उसी प्रकार - श्रृ - श्रृणु - श्रृणोति बनेगा।

अक्षोऽन्यतरस्याम् - अक्षू धातु से विकल्प से शप् तथा श्नु विकरण लगते हैं। शप् लगने पर - अक्ष् + शप् = अक्ष, यह अङ्ग बनकर, अक्षति रूप बनेगा।

श्नु विकरण लगने पर, इससे अक्ष + श्नु = अक्ष्णु, यह अङ्ग बनेगा। श्नु विकरण लगने के कारण, इस 'अक्ष्णु' के रूप बनाने की विधि स्वादिगण में बतलाई गई है। स्वादिगण में जिस प्रकार - चि - चिनु - चिनोति बनता है, ठीक उसी प्रकार - अक्ष् - अक्ष्णु - अक्ष्णोति बनेगा।

तनूकरणे तक्षः - तनूकरण (छीलना) अर्थ में तक्षू धातु से शप्, श्नु विकरण विकल्प से लगते हैं।

शप् विकरण लगने पर -	तक्ष्	+ शप् -	तक्ष	=	तक्षति
श्नु विकरण लगने पर -	तक्ष्	+ श्नु -	तक्ष्णु	=	तक्ष्णोति

इसके रूप बनाने की विधि भी स्वादिगण में सीखें।

धिन्विकृण्व्योर च - धिवि, कृवि, इन धातुओं से 'उ' विकरण लगता है, साथ ही इसके अन्तिम वर्ण को 'अ' आदेश होता है।

धिवि + उ / 'इ' की इत् संज्ञा होकर 'इदितो नुम् धातोः' सूत्र से 'नुम्' का आगम होकर, धिन्व् + उ / अन्तिम 'व्' को 'अ' आदेश होकर - धिन - उ, 'अतो लोपः' से 'अ' का लोप होकर धिन् + उ = धिनु। इसी प्रकार कृण्व् से कृणु बनाइये।

'उ' विकरण तनादिगण का है, अतः इनके रूप तनादिगण के तन् धातु के समान बनते हैं। इसकी प्रक्रिया वहीं सीखें।

गुप्तिज्किद्भ्यः सन् - गुप् धातु से निन्दा अर्थ में, तिज् धातु से क्षमा

अर्थ में, तथा कित् धातु व्याधिप्रतीकार अर्थ में, सन् प्रत्यय लगता है।

धातुओं में 'सन्' प्रत्यय को कैसे जोड़ते हैं, यह 'सन्' प्रत्यय के पाठ में विस्तार से बतलाया गया है। जिज्ञासु पाठक वहीं देखें। यहाँ हमने इन धातुओं में 'सन्' प्रत्यय को जोड़कर ही रूप दे दिये हैं। इन्हें ऐसा ही याद कर लें।

सनाद्यन्ता धातवः - किसी भी धातु से जब सन्, क्यच्, काम्यच्, क्यङ्, क्यष्, क्विप्, णिच्, अङ्, यक्, आय, ईयङ्, णिङ्, ये प्रत्यय लगें, तब उन प्रत्ययों के लगने के बाद भी उस धातु का नाम धातु ही रहता है। जैसे -

गुप् यह तो धातु है किन्तु जब उससे सन् प्रत्यय लगाकर जुगुप्स बनता है, तब इस जुगुप्स की संज्ञा भी 'धातु' ही रहती है। धातु संज्ञा रहने के कारण ही सार्वधातुक प्रत्यय 'ति' आदि परे होने पर इस 'जुगुप्स' धातु' से 'कर्तरि शप्' सूत्र से 'शप् विकरण' होता है। जुगुप्स + शप् /

अतो गुणे - हमने सन्धि प्रकरण में पढ़ा है कि यद्यपि अ + अ की सन्धि 'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से सवर्ण दीर्घ ही होना चाहिये। किन्तु हमने उसके ठीक बाद में यह भी पढ़ा है कि यदि पूर्व वाला 'अ' अपदान्त 'अ' हो और उसके बाद अ, ए या ओ, ये गुण आये हों, तब पूर्व वाले अपदान्त 'अ' को 'अतो गुणे' सूत्र से पररूप आदेश होता है। अतः -

जुगुप्स + शप् / जुगुप्स + अ / 'अतो गुणे' सूत्र से पररूप होकर - जुगुप्स् + अ = जुगुप्स = जुगुप्सते। इसी प्रकार -

तिज् + सन् - तितिक्ष + शप् = तितिक्षते
कित् + सन् - चिकित्स + शप् = चिकित्सति

मान्बध्दान्शान्भ्यो दीर्घश्चाभ्यासस्य - मान् धातु से जिज्ञासा अर्थ में, बध् धातु से वैरूप्य अर्थ में, दान् धातु से आर्जव अर्थ में, शान् धातु धातु से निशान अर्थ में, सन् प्रत्यय लगता है, तथा धातु के अभ्यास को दीर्घ होता है।

मान् + सन् - मीमांस + शप् = मीमांसते
बध् + सन् - बीभत्स + शप् = बीभत्सते
दान् + सन् - दीदांस + शप् = दीदांसते
शान् + सन् - शीशांस + शप् = शीशांसते

ये अर्थ न होने पर इन धातुओं से गोपयति / तेजयति / केतयति / मानयति / बाधयति / दानयति / शानयति रूप भी बनते हैं।

दंशसञ्जस्वञ्जां शपि / रञ्जेश्च – दंश् ,सञ्ज्, स्वञ्ज्, रञ्ज्, इन धातुओं के 'न्' का लोप होता है शप् परे होने पर।

दंश् + शप् = दश / सञ्ज् + शप् = सज

स्वञ्ज् + शप् = स्वज / रञ्ज् + शप् = रज

रधिजभोरचि – रध् धातु तथा जभ् धातु को अजादि प्रत्यय परे होने पर, नुम् का आगम होता है। जभ् + शप् - जम्भ् + अ - जम्भ = जम्भते।

(घ्यान दें कि इनमें रध् धातु दिवादि गण का है।)

ऊदुपधाया गोहः – गुहू धातु की उपधा को अजादि प्रत्यय परे होने पर दीर्घ होता है - नि + गुह् + शप् - निगूह = निगूहते।

गुपूधूपविच्छिपणिपनिभ्य आयः – गुपू, धूप् तथा विच्छ् धातु से, सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, 'आय' प्रत्यय लगता है।

गुप् + आय - 'पुगन्तलघूपधस्य च' सूत्र से उपधा के लघु 'उ' को गुण करके - गोप् + आय - गोपाय /

अब सनाद्यन्ता धातवः सूत्र से धातुसंज्ञा होकर, कर्तरि शप् से शप् करके - गोपाय + शप् - गोपाय + अ / अतो गुणे से पररूप करके - गोपाय् + अ = गोपाय = गोपायति।

इसी प्रकार - धूप् + आय - धूपाय = धूपायति / विच्छ् + आय - विच्छाय = विच्छायति।

(ध्यान दें कि यह विच्छ् धातु तुदादि, तथा चुरादिगण का है।)

पण् तथा पन् धातु – पण् धातु का अर्थ स्तुति तथा व्यवहार है किन्तु पन् धातु का अर्थ केवल स्तुति है। यहाँ यह ध्यान देना चाहिये कि स्तुति अर्थ में ही, इन दोनों धातुओं से 'आय' प्रत्यय लगता है। साथ ही 'आय' प्रत्यय लगने पर इनसे परस्मैपदी प्रत्यय ही लगते हैं। यथा - पणायति / पनायति।

पण् धातु का अर्थ जब व्यवहार होता है, तब इससे 'आय' प्रत्यय नहीं लगता है। साथ ही 'आय' प्रत्यय न लगने पर इनसे आत्मनेपदी प्रत्यय ही लगते हैं। यथा - पणते।

पन् धातु का अर्थ तो व्यवहार होता ही नहीं है। अतः इससे 'आय' प्रत्यय लगकर 'पनायति ही बनता है।

पण् + आय + शप् = पणाय

पण् - - + शप् = पण

पन + आय + शप् = पनाय

ऋतेरीयङ् - यह धातु, धातुपाठ में नहीं है, इसी सूत्र में है। जो धातु, धातुपाठ में न हों, केवल सूत्र में हों, उन्हें सौत्र धातु कहते हैं। इस सौत्र धातु 'ऋत्' से पहिले ईयङ् प्रत्यय लगाया जाता है, उसके बाद उससे शप् लगाकर तिङ् तथा कृत् सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग बनाया जाता है।

सारे सार्वधातुक प्रत्यय इसी से लगाये जाते हैं। ऋत् + ईयङ् = ऋतीय/ ऋतीय + शप् - ऋतीय = ऋतीयते।

कमेर्णिङ् - 'कमु कान्तौ' धातु से णिङ् प्रत्यय लगता है।

कम् + णिङ् - अत उपधायाः सूत्र से उपधा के 'अ' को वृद्धि होकर - काम् + इ = कामि /

अब इस 'कामि' की सनाद्यन्ता धातवः सूत्र से धातु संज्ञा करके, उससे शप् प्रत्यय लगाकर सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग बनाइये। कामि + शप् - कामि + अ / सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से 'इ' को गुण करके - कामे + अ - अब एचोऽयवायावः सूत्र से ए को अयादेश करके - कामय् + अ - कामय = कामयते।

आयादय आर्धधातुके वा - ध्यान रहे कि आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर ये आय, णिङ्, ईयङ् आदि प्रत्यय विकल्प से लगते हैं।

कृपो रो लः - कृप् धातु को क्लृप् आदेश होता है। कृप् + शप् / क्लृप् + शप् / सार्वधातुकार्धधातुकयोः से गुण होकर - कल्प् + अ = कल्प = कल्पते।

षस्ज गतौ धातु - इस धातु में, 'धात्वादेः षः सः' सूत्र से 'ष्' को 'स्' करके 'सस्ज्' बनाइये। उसके बाद 'स्तोः श्चुना श्चुः' सूत्र से 'स्' को 'श्' करके, 'झलां जश् झशि' से जश्त्व करके 'सज्ज्' ऐसा आदेश करके, सज्ज् + शप् - सज्ज् + अ = सज्ज ऐसा अङ्ग बनाकर, सज्जते रूप बनाइये।

२. भ्वादिगण के इगन्त धातु

अब भ्वादिगण के जो धातु बच गये, उन्हें देखिये। उनमें से जिन धातुओं के अन्त में इक् है, अर्थात् इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ हैं, वे इगन्त धातु हैं। ऐसे इगन्त धातुओं में शप् प्रत्यय को इस प्रकार लगाइये -

सार्वधातुकार्धधातुकयोः - पित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, अथवा कित्, डित्, ञित्, णित् से भिन्न आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर अङ्ग के अन्तिम इक् को गुण होता है। जैसे - जि + शप् - जे + अ / भू + शप् - भो + अ / हृ + शप् - हर् + अ आदि।

एचोऽयवायावः - ए के स्थान पर अय्, ओ के स्थान पर अव्, ऐ के स्थान पर आय्, औ के स्थान पर आव् आदेश होते हैं, अच् परे होने पर। जैसे - जे + अ - जय् + अ = जय / भो + अ - भव् + अ = भव / आदि।

अतः इगन्त धातुओं से शप् प्रत्यय इस प्रकार लगा -

इ को ए - अय् - जि + शप् - जे + अ - जय् + अ = जय
ई को ए - अय् - नी + शप् - ने + अ - नय् + अ = नय
उ को ओ - अव् - द्रु + शप् - द्रो + अ - द्रव् + अ = द्रव
ऊ को ओ - अव् - भू + शप् - भो + अ - भव् + अ = भव
ऋ को - अर् - हृ + शप् - हर् + अ - हर् + अ = हर
ॠ को - अर् - तॄ + शप् - तर् + अ - तर् + अ = तर

३. भ्वादिगण के एजन्त धातु

अब भ्वादिगण के उन धातुओं को देखिये, जिन धातुओं के अन्त में ए, ओ, ऐ, औ हैं। ये एजन्त धातु हैं।

ऐसे एजन्त धातुओं से शप् प्रत्यय परे होने पर, 'एचोऽयवायावः' सूत्र से ए के स्थान पर अय्, ओ के स्थान पर अव्, ऐ के स्थान पर आय्, औ के स्थान पर आव् आदेश कीजिये। जैसे -

ए को अय् बनाइये - धे + शप् - धय् + अ = धय
ऐ को आय् बनाइये - म्लै + शप् - म्लाय् + अ = म्लाय
औ को आव् बनाइये - धौ + शप् - धाव् + अ = धाव

अब भ्वादिगण के हलन्त धातुओं का इस प्रकार वर्गीकरण करके, उनमें शप् प्रत्यय जोड़िये -

४. भ्वादिगण के लघु इगुपध धातु

अब भ्वादिगण के उन धातुओं को देखिये, जिन धातुओं की उपधा में लघु इ, लघु उ, लघु ऋ, हैं, ये लघु इगुपध धातु हैं। ऐसे लघु इगुपध धातुओं में शप् प्रत्यय को इस प्रकार लगाइये -

पुगन्तलघूपधस्य च - जिनकी उपधा में लघु इक् है, ऐसे लघु इगुपध धातुओं की उपधा के लघु इक् को गुण होता है, सार्वधातुक तथा आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर।

शप् परे होने पर, उपधा के लघु इक् को इस प्रकार गुण करें -

लघु इ को ए बनाइये - चित् + शप् - चेत् + अ = चेत
लघु उ को ओ बनाइये - मुद् + शप् - मोद् + अ = मोद
लघु ऋ को अर् बनाइये - वृष् + शप् - वर्ष् + अ = वर्ष

विशेष - सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से अन्त के इक् के स्थान पर होने वाला गुण ह्रस्व तथा दीर्घ, इन दोनों ही 'इक्' को होता है किन्तु पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से होने वाला उपधागुण केवल लघु इ, लघु उ, लघु ऋ को ही होता है।

इसलिये ध्यान रहे कि यदि उपधा में दीर्घ इक् हों, तब उन्हें कदापि गुण न करें। जैसे - मील् + शप् = मील आदि।

६. शेष धातु

इगन्त, एजन्त, लघु इगुपध, विशिष्ट तथा विकारी धातुओं के अलावा अब जितने भी धातु बचते हैं उनके अङ्ग बनाने के लिये आपको कोई श्रम नहीं करना है, बस धातु + शप् को मिलाकर जोड़ देना है, जैसे -

मील् + शप् - मील् + अ = मील
वन्द् + शप् - वन्द् + अ = वन्द
एध् + शप् - एध् + अ = एध
मूष् + शप् - मूष् + अ = मूष
शीक् + शप् - शीक् + अ = शीक
वद् + शप् - वद् + अ = वद
बाध् + शप् - बाध् + अ = बाध

यह भ्वादिगण के सभी धातुओं में, शप् विकरण लगाने की विधि पूर्ण हुई। अब इन्हीं धातु + विकरण को जोड़कर बनाये हुए अङ्गों में ही आप लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् तथा सार्वधातुक लेट् लकारों के प्रत्यय लगाइये।

कृदन्त प्रकरण में आने वाले, शतृ, शानच्, शानन्, चानश्, खश्, श, एश्, शध्यै, शध्यैन् = ९, ये सार्वधातुक कृत् प्रत्यय भी इन्हीं से लगाइये।

हमने धातुपाठ में, धातु + शप् को जोड़कर, बने बनाये अङ्ग दे दिये हैं। यहाँ विधि भी बतला दी है ताकि आप अङ्ग, स्वयं बना सकें, आपको रटना न पड़े।

ध्यान दें कि धातुपाठ के स्तम्भ क्रमाङ्क पाँच में, हमने धातु + शप् को जोड़कर, तिङ् तथा कृत् सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये, ये अङ्ग बनाकर रख दिये हैं। अभी बतलाई हुई विधि से आप अङ्ग बनायें तथा वहाँ देखकर निर्णय करें कि आपने अङ्ग सही बनाया है या नहीं।

यह अवश्य ध्यान रखें कि स्तम्भ क्रमाङ्क चार में जो निरनुबन्ध धातु दिया गया है, वही आर्धधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग है। आर्धधातुक प्रत्यय लगाना हो, तो क्रमाङ्क ४ से आप धातु को लें और यदि कर्त्रर्थक तिङ् या कृत् सार्वधातुक प्रत्यय लगाना हो, तो आप क्रमाङ्क पाँच से, धातु + विकरण को जोड़कर, बनाये हुए अङ्ग को लेकर, उसी में कर्त्रर्थक तिङ् या कृत् सार्वधातुक प्रत्यय लगायें, सीधे धातुओं से न लगा दें।

लङ् लकार के अङ्गों को अट्, आट् आगम

आपने अब सारे धातुओं के अङ्ग बना लिये हैं। इन्हीं अङ्गों में, लट् लोट्, लङ्, विधिलिङ् तथा सार्वधातुक लेट्, इन पाँच लकारों के प्रत्यय तथा कृत् सार्वधातुक प्रत्यय लगेंगे। किन्तु जब धातु का लङ् लकार का रूप बनाना हो, तब इस प्रकार बनायें -

लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः - हलादि अङ्गों को अट् (अ) का आगम होता है, लुङ्, लङ्, लृङ् लकार के प्रत्यय परे होने पर।

आद्यन्तौ टकितौ - टित् आगम जिसे भी होता है, उसके आदि में बैठता है। कित् आगम जिसे भी होता है, उसके अन्त में बैठता है। यह 'अट्' टित् आगम है। अतः यह आदि में बैठेगा। इसे इस प्रकार समझें -

आपने अभी तक जो अङ्ग बनाये हैं, उनमें से जो हलादि धातुओं से बने हुए अङ्ग हैं, उन अङ्गों के पूर्व में अट् (अ) का आगम कर देना चाहिये।

जैसे - नी + शप् = नय, ऐसा अङ्ग हमने बनाया है, तो उसे अट् (अ) का आगम करके 'अनय' बना लीजिये। यदि 'पठ' है तो अपठ, वद को 'अवद' गच्छ को 'अगच्छ' आदि।

आडजादीनाम् - यदि धातु 'अच्' से प्रारम्भ हो रहा हो अर्थात् अजादि

हो, जैसे - इच्छ, उक्ष, अत आदि, तब उन अङ्गों के पूर्व में अट् (अ) का आगम न करके आट् (अ) का आगम कर देना चाहिये। यह 'आट्' भी टित् आगम है। अतः यह भी आदि में ही बैठेगा। यथा -

अत = आ + अत

इच्छ = आ + इच्छ

उक्ष = आ + उक्ष

एध = आ + एध

ऋच्छ = आ + ऋच्छ आदि।

अब इनकी सन्धि कैसे करें ? हमने सन्धि में पढ़ा है कि -

आ + अ, आ में - अकः सवर्णे दीर्घः से आ होता है।

आ + इ, ई में - आद् गुणः से ए होता है।

आ + उ, ऊ में - आद् गुणः से ओ होता है।

आ + ऋ, ॠ में - आद् गुणः से अर् होता है।

किन्तु यहाँ आ + अत में, न तो **'अकः सवर्ण दीर्घः'** सूत्र से दीर्घ होता है, न ही, आ + इच्छ / आ + उक्ष / आ + ऋच्छ, में **'आद् गुणः'** सूत्र से गुण होता है, अपितु यहाँ **'आटश्च'** सूत्र से वृद्धि ही होती है।

आटश्च - आट् के बाद अच् आने पर पूर्व पर के स्थान पर एक वृद्धि आदेश ही होता, है दीर्घ, गुण कुछ आदि नहीं। यथा -

आ + इ, ई = ऐ - आ + इच्छ = ऐच्छ

आ + उ, ऊ = औ - आ + उक्ष = औक्ष

आ + ऋ, ॠ = आर् - आ + ऋच्छ = आर्च्छ

आ + ए = ऐ - आ + एध = ऐध

आ + ओ = औ - आ + ओख = औख

न माङ्योगे - लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः तथा आडजादीनाम् सूत्रों से लुङ्, लङ्, लृङ् परे होने पर, अङ्ग को जो अट् आट् के आगम कहे गये हैं, वे माङ् (मा) का योग होने पर नहीं होते। यथा -

लुङ् में - मा भवान् कार्षीत् / मा भवान् हार्षीत् / मा भवान् ईहिष्ट।

लङ् में - मा स्म करोत् / मा स्म हरत् / मा भवान् ईहत।

जब आपको लङ् लकार के रूप बनाना हो, तब आप हलादि अङ्गों

में अडागम तथा अजादि अङ्गों में आडागम कीजिये, उसके बाद ही उनमें आप लङ् लकार के प्रत्यय जोड़िये।

वेद के लिये विशेष विधि -

छन्दस्यपि दृश्यते - लोक में आडजादीनाम् सूत्र से अजादि अङ्गों को आट् का आगम कहा गया है, किन्तु वेद में जो हलादि अङ्ग होते हैं, उन्हें भी आट् का आगम हो जाता है। यथा - आवः / आनक् / आयुनक् आदि।

बहुलं छन्दस्यमाङ्योगेऽपि - लोक में लुङ्, लङ्, लृङ् परे होने पर, अङ्ग को अट् आट् का आगम होना कहा गया है तथा माङ् (मा) का योग होने पर अङ्ग को अट् आट् के आगम का निषेध कहा गया है, किन्तु वेद में माङ् (मा) का योग होने पर भी अट् आट् के आगम हो जाते हैं। जैसे - मा अभित्थाः / मा आवः / आदि।

तथा माङ् (मा) का योग न होने पर भी अट् आट् के आगम नहीं होते हैं। जैसे - जनिष्ठा उग्रः / कामम् ऊनयीः / कामम् अर्दयीत् आदि।

अब ध्यान से देखिये कि भ्वादिगण के १००० धातुओं में शप् विकरण लगाकर जो अङ्ग हमने बनाये हैं, ये सारे के सारे अङ्ग अदन्त हैं।

अदन्त का अर्थ है कि इनके अन्त में ह्रस्व 'अ' ही है।

अदन्त अङ्ग होने पर क्या करें ?

जब भी, धातु + विकरण को जोड़कर बनाये हुए अङ्ग, अदन्त हों, तब उनके लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् तथा सार्वधातुक लेट् लकारों के रूप बनाने के लिये आप प्रथम गण समूह वाले प्रत्यय ही लगाइये। भूलकर भी द्वितीय गण समूह वाले प्रत्यय मत लगाइये।

अब इन प्रत्ययों को याद कर लीजिये।

प्रथम गणसमूह के तिङ् सार्वधातुक प्रत्यय

परस्मैपद **आत्मनेपद**

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	ति	तः	अन्ति	ते	इते	अन्ते
म. पु.	सि	थः	थ	से	इथे	ध्वे
उ. पु.	मि	वः	मः	ए	वहे	महे

लोट् लकार

प्र. पु.	तु, तात्	ताम्	अन्तु	ताम्	इताम्	अन्ताम्
म. पु.	0, तात्	तम्	त	स्व	इथाम्	ध्वम्
उ. पु.	आनि	आव	आम	ऐ	आवहै	आमहै

लङ् लकार

प्र. पु.	त्	ताम्	अन्	त	इताम्	अन्त
म. पु.	स् (:)	तम्	त	था:	इथाम्	ध्वम्
उ. पु.	अम्	व	म	इ	वहि	महि

विधिलिङ् लकार

प्र.पु.	इत्	इताम्	इयु:	ईत	ईयाताम्	ईरन्
म.पु.	इ:	इतम्	इत	ईथा:	ईयाथाम्	ईध्वम्
उ.पु.	इयम्	इव	इम	ईय	ईवहि	ईमहि

अदन्त अङ्ग + तिङ् प्रत्ययों को जोड़ने की विधि

अब धातुओं को जोड़ने के लिये इन प्रत्ययों के छह वर्ग बनाइये।

१. ह्रस्व 'अ' तथा 'ए' से प्रारम्भ होने वाले प्रत्यय

अतो गुणे - अपदान्त अत् (अ) से गुण अर्थात् अ, ए, ओ परे होने पर अत् (अ) को पररूप होता है। वस्तुत: यह कार्य अङ्गकार्य नहीं है। यह तो पररूप सन्धि है।

जब अङ्ग अदन्त हो और प्रत्यय ह्रस्व 'अ' से प्रारम्भ हो रहा हो तो पूर्व वाले अ को पररूप हो जाता है अर्थात् वह 'अ' जाकर बाद वाले 'अ' का रूप बन जाता है, तो आपको एक बाद वाला 'अ' दिखेगा पूर्व वाला नहीं। जैसे - नी + अ (शप्) = नय, यह अङ्ग है इसमें अन्ति प्रत्यय को जोड़ना है, तो नय + अन्ति, इनमें अक: सवर्णे दीर्घ: सूत्र से सवर्णदीर्घ न होकर पूर्व वाले अ को पररूप हो जायेगा तो पररूप होकर बनेगा - नय् + अन्ति = नयन्ति।

इसी प्रकार नय + ए, इनमें वृद्धिरेचि सूत्र से वृद्धि न होकर पूर्व वाले अ को पररूप हो जायेगा, तो पररूप होकर बनेगा - नय् + ए = नये।

ध्यान रहे कि यह पररूप तभी होता है जब अ से प्रारम्भ होने वाले प्रत्यय सार्वधातुक हों। आर्धधातुक प्रत्यय होने पर यह पररूप कभी नहीं होगा।

'ह्रस्व अ' तथा 'ए' से प्रारम्भ होने प्रत्ययों के लगने पर पूर्व अ को

पररूप करके इस प्रकार रूप बनाइये -

नय	+	अन्ति	=	नयन्ति	लट् लकार परस्मैपद
नय	+	अन्तु	=	नयन्तु	लोट् लकार परस्मैपद
अनय	+	अन्	=	अनयन्	लङ् लकार परस्मैपद
अनय	+	अम्	=	अनयम्	लङ् लकार परस्मैपद
नय	+	अन्ते	=	नयन्ते	लट् लकार आत्मनेपद
नय	+	अन्ताम्	=	नयन्ताम्	लोट् लकार आत्मनेपद
अनय	+	अन्त	=	अनयन्त	लङ् लकार आत्मनेपद
नय	+	ए	=	नये	लट् लकार आत्मनेपद

ध्यान दीजिये कि इन सात प्रत्ययों के लगने पर अङ्ग का अन्तिम 'अ' जाकर बाद वाले अ, ए में मिल गया है।

अतः ऐसा समझ लें कि पररूप लोप के समान ही होता है।

२. दीर्घ 'आ' से प्रारम्भ होने वाले प्रत्यय

इनके परे होने पर अकः सवर्णे दीर्घः सूत्र से दीर्घ कीजिये -

अकः सवर्णे दीर्घः - अक् (अ, इ, उ, ऋ) के बाद सवर्ण अक् आने पर पूर्व पर के स्थान पर एक सवर्ण दीर्घ आदेश होता है।

नय	+	आनि	=	नयानि	लोट् लकार परस्मैपद
नय	+	आव	=	नयाव	लोट् लकार परस्मैपद
नय	+	आम	=	नयाम	लोट् लकार परस्मैपद
नय	+	आवहै	=	नयावहै	लोट् लकार आत्मनेपद
नय	+	आमहै	=	नयामहै	लोट् लकार आत्मनेपद

३. ऐ से प्रारम्भ होने वाले प्रत्यय

वृद्धिरेचि - अ के बाद एच् (ए, ओ, ऐ, औ,) आने पर पूर्व पर के स्थान पर एक वृद्धि आदेश होता है।

नय + ऐ = नयै लोट् लकार आत्मनेपद

४. इ, ई, से प्रारम्भ होने वाले प्रत्यय

प्रथम गण समूह में २६ प्रत्यय इ, ई से शुरू होने वाले हैं। उनके लगने पर अङ्ग के अन्तिम अ तथा प्रत्यय के इ, इन दोनों को हटाकर इनके स्थान पर एक गुण आदेश 'ए' हो जाता है। सूत्र है -

आद्गुणः - अ, आ, के बाद, इक् अर्थात इ, उ, ऋ, लृ आने पर पूर्व पर दोनों वर्णों के स्थान पर, एक गुण आदेश होता है। जैसे -

अ + इ = ए / अ + उ = ओ
अ + ऋ = अर् / अ + लृ = अल्

अतः गुण करके अ + इ = ए बनाइये।

(ध्यान दें कि अ + इ = ए होना तो सन्धि का विषय है, यह अङ्गकार्य नहीं है, इसका सम्बन्ध इन प्रत्ययों से ही नहीं है, अपितु अ + इ इन वर्णों से है।)

नय	+	इते	=	नयेते	लट् लकार आत्मनेपद
नय	+	इथे	=	नयेथे	लट् लकार आत्मनेपद
नय	+	इताम्	=	नयेताम्	लोट् लकार आत्मनेपद
नय	+	इथाम्	=	नयेथाम्	लोट् लकार आत्मनेपद
अनय	+	इताम्	=	अनयेताम्	लङ् लकार आत्मनेपद
अनय	+	इथाम्	=	अनयेथाम्	लङ् लकार आत्मनेपद
अनय	+	इ	=	अनये	लङ् लकार आत्मनेपद
नय	+	ईत	=	नयेत	विधिलिङ् लकार आत्मनेपद
नय	+	ईयाताम्	=	नयेयाताम्	विधिलिङ् लकार आत्मनेपद
नय	+	ईरन्	=	नयेरन्	विधिलिङ् लकार आत्मनेपद
नय	+	ईथाः	=	नयेथाः	विधिलिङ् लकार आत्मनेपद
नय	+	ईयाथाम्	=	नयेथाथाम्	विधिलिङ् लकार आत्मनेपद
नय	+	ईध्वम्	=	नयेध्वम्	विधिलिङ् लकार आत्मनेपद
नय	+	ईय	=	नयेय	विधिलिङ् लकार आत्मनेपद
नय	+	ईवहि	=	नयेवहि	विधिलिङ् लकार आत्मनेपद
नय	+	ईमहि	=	नयेमहि	विधिलिङ् लकार आत्मनेपद
नय	+	इत्	=	नयेत्	विधिलिङ् लकार परस्मैपद
नय	+	इताम्	=	नयेताम्	विधिलिङ् लकार परस्मैपद
नय	+	इयुः	=	नयेयुः	विधिलिङ् लकार परस्मैपद
नय	+	इः	=	नयेः	विधिलिङ् लकार परस्मैपद
नय	+	इतम्	=	नयेतम्	विधिलिङ् लकार परस्मैपद

नय	+	इत	=	नयेत	विधिलिङ् लकार परस्मैपद
नय	+	इयम्	=	नयेयम्	विधिलिङ् लकार परस्मैपद
नय	+	इव	=	नयेव	विधिलिङ् लकार परस्मैपद
नय	+	इम	=	नयेम	विधिलिङ् लकार परस्मैपद

५. व, म, से प्रारम्भ होने वाले प्रत्यय

प्रथमगण समूह के प्रत्ययों में ९ प्रत्यय व, म, से शुरू होने वाले हैं। इनके लगने पर अदन्त अङ्ग के अन्तिम 'अ' को दीर्घ कर दीजिये। जैसे - नय + मि - नया + मि = नयामि। दीर्घ करने वाला सूत्र है -

अतो दीर्घो यञि - जब अङ्ग अदन्त हो तथा उसके बाद आने वाला सार्वधातुक प्रत्यय यञ् प्रत्याहार से अर्थात् व, म, से प्रारम्भ हो रहा हो, तब अदन्त अङ्ग के अन्तिम 'अ' को दीर्घ हो जाता है। उदाहरण -

नय	+	मि	=	नयामि	लट् लकार परस्मैपद
नय	+	वः	=	नयावः	लट् लकार परस्मैपद
नय	+	मः	=	नयामः	लट् लकार परस्मैपद
अनय	+	व	=	अनयाव	लङ् लकार परस्मैपद
अनय	+	म	=	अनयाम	लङ् लकार परस्मैपद
नय	+	वहे	=	नयावहे	लट् लकार आत्मनेपद
नय	+	महे	=	नयामहे	लट् लकार आत्मनेपद
अनय	+	वहि	=	अनयावहि	लङ् लकार आत्मनेपद
अनय	+	महि	=	अनयामहि	लङ् लकार आत्मनेपद

ध्यान रहे कि यह दीर्घ तभी होता है, जब व, म से प्रारम्भ होने वाला प्रत्यय, सार्वधातुक हो। आर्धधातुक प्रत्यय होने पर यह दीर्घ कभी नहीं होगा।

६. शेष प्रत्यय

जो प्रत्यय, स्वर से या व, म, से प्रारम्भ न हो रहे हों, ऐसे प्रत्यय परे होने पर आपको कोई भी अङ्गकार्य या सन्धिकार्य नहीं करना है। इन प्रत्ययों को आप अङ्ग में ज्यों का त्यों जोड़ दीजिये। जैसे -

नय	+	ति	=	नयति	लट् लकार परस्मैपद
नय	+	तः	=	नयतः	लट् लकार परस्मैपद
नय	+	सि	=	नयसि	लट् लकार परस्मैपद

नय	+	थः	=	नयथः	लट् लकार परस्मैपद
नय	+	थ	=	नयथ	लट् लकार परस्मैपद
नय	+	तु	=	नयतु	लोट् लकार परस्मैपद
नय	+	ताम्	=	नयताम्	लोट् लकार परस्मैपद
नय	+	०	=	नय	लोट् लकार परस्मैपद
नय	+	तात्	=	नयतात्	लोट् लकार परस्मैपद
नय	+	तम्	=	नयतम्	लोट् लकार परस्मैपद
नय	+	त	=	नयत	लोट् लकार परस्मैपद
अनय	+	त्	=	अनयत्	लङ् लकार परस्मैपद
अनय	+	ताम्	=	अनयताम्	लङ् लकार परस्मैपद

लङ् लकार के स् प्रत्यय परे होने पर इस प्रकार कार्य कीजिये। अनय + स् - अनयस्। अब देखिये कि इस तिङन्त पद के अन्त में 'स्' है। यह पदान्त सकार है।

ससजुषो रुः - पदान्त सकार तथा सजुष् शब्दान्त षकार के स्थान पर, रु - र् आदेश होता है। अनयस् - अनयर्।

खरवसानयोर्विसर्जनीयः - खर् परे होने पर तथा अवसान में आने वाले, र् को विसर्ग होता है - अनयर् - अनयः । इस प्रकार -

अनय	+	स्	=	अनयः	लङ् लकार परस्मैपद
अनय	+	तम्	=	अनयतम्	लङ् लकार परस्मैपद
अनय	+	त	=	अनयत	लङ् लकार परस्मैपद
नय	+	ते	=	नयते	लट् लकार आत्मनेपद
नय	+	से	=	नयसे	लट् लकार आत्मनेपद
नय	+	ध्वे	=	नयध्वे	लट् लकार आत्मनेपद
नय	+	ताम्	=	नयताम्	लोट् लकार आत्मनेपद
नय	+	स्व	=	नयस्व	लोट् लकार आत्मनेपद
नय	+	ध्वम्	=	नयध्वम्	लोट् लकार आत्मनेपद

अब आप प्रथम गण समूह के ७४ प्रत्ययों को जोड़कर, पूरे धातु रूप बना चुके हैं तथा उन्हें बनाने की विधि भी सीख चुके हैं।

अब आप सारे रूपों को व्यवस्थित करके क्रम से रख लें, तो भ्वादिगण

के उभयपदी 'नी' धातु के रूप इस प्रकार बने -

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
	लट् लकार (वर्तमान काल)					
प्र.पु.	नयति	नयतः	नयन्ति	नयते	नयेते	नयन्ते
म.पु.	नयसि	नयथः	नयथ	नयसे	नयेथे	नयध्वे
उ.पु.	नयामि	नयावः	नयामः	नये	नयावहे	नयामहे
	लङ् लकार (अनद्यतन भूत काल)					
प्र.पु.	अनयत्	अनयताम्	अनयन्	अनयत	अनयेताम्	अनयन्त
म.पु.	अनयः	अनयतम्	अनयत	अनयथाः	अनयेथाम्	अनयध्वम्
उ.पु.	अनयम्	अनयाव	अनयाम	अनये	अनयावहि	अनयामहि
	लोट् लकार (आज्ञार्थ)					
प्र.पु.	नयतु / नयतात्	नयताम्	नयन्तु	नयताम्	नयेताम्	नयन्ताम्
म.प्र.	नय / नयतात्	नयतम्	नयत	नयस्व	नयेथाम्	नयध्वम्
उ.पु.	नयानि	नयाव	नयाम	नयै	नयावहै	नयामहै
	विधिलिङ् लकार					
प्र.पु.	नयेत्	नयेताम्	नयेयुः	नयेत	नयेयाताम्	नयेरन्
म.पु.	नयेः	नयेतम्	नयेत	नयेथाः	नयेयाथाम्	नयेध्वम्
उ.पु.	नयेयम्	नयेव	नयेम	नयेय	नयेवहि	नयेमहि

इसी 'नय' के समान आप भ्वादिगण के पूरे १००० धातुओं में शप् विकरण जोड़कर बनाये हुए अङ्गों के रूप बना लीजिये। बस यह ध्यान रखिये कि यदि धातु परस्मैपद का है तो आप परस्मैपद के प्रत्यय लगायें। आत्मनेपद का है तो आप आत्मनेपद के प्रत्यय लगायें और यदि उभयपद का है, तब आपको स्वतन्त्रता है कि जिस पद का चाहें, उस पद का प्रत्यय लगा लें।

वेद में अम् धातु के लिये विशेष विधि -

तुरुस्तुशम्यमः सार्वधातुके - तु, रु, स्तु, शम्, अम् धातुओं से परे आने वाले, हलादि सार्वधातुक प्रत्ययों को विकल्प से ईट् का आगम होता है। अम् + ईट् + ति - अम् + ईति = अमीति।

छान्दस प्रयोगों में 'बहुलं छन्दसि' से बाहुलकात् शप् विकरण नहीं होता। अत: 'शप् विकरण' लगाये बिना ही वेद में अम् धातु से अमीति बन सकता है।

इस प्रकार भ्वादिगण के लट्, लङ्, लोट् तथा विधिलिङ् लकारों के धातुरूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।

चुरादिगण के धातुओं के लट्, लोट्, लङ् तथा विधिलिङ् लकारों के रूप बनाने की विधि

चुरादिगण के धातुरूप बनाने की विधि के तीन हिस्से हैं -

१. धातु + णिच् को जोड़कर णिजन्त धातु बनाना।

२. णिजन्त धातु + शप् विकरण को जोड़कर सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग बनाना।

३. अंङ्ग + प्रत्यय को जोड़कर धातुरूप बनाना।

यह कार्य हम क्रमश: करें -

धातु + णिच् को जोड़कर णिजन्त धातु बनाना

१. सत्यापपाशरूपवीणातूलश्लोकसेनालोमत्वचवर्मवर्णचूर्णचुरादिभ्यो णिच् - सत्याप, पाश, रूप, वीणा, तूल, श्लोक, सेना, लोम, त्वच्, वर्म, वर्ण, चूर्ण, इन प्रतिपदिकों से तथा 'चुरादि गण के सारे धातुओं से' किसी भी प्रत्यय को लगाने के पहिले, णिच् प्रत्यय लगाया जाता है।

यह प्रत्यय स्वार्थ में अर्थात् धातु के ही अर्थ में लगता है। स्वार्थ में लगने का अर्थ है कि इसके लगने से धातु के अर्थ में कोई भी वृद्धि नहीं होती।

चुरादिगण के किसी भी धातु में, कोई सा भी प्रत्यय लगाने के पहिले इस सूत्र से णिच् प्रत्यय अवश्य लगाइये।

णिच् प्रत्यय में 'हलन्त्यम्' सूत्र से च् की तथा 'चुटू' सूत्र से ण् की इत् संज्ञा करके तस्य लोप: सूत्र से दोनों का लोप करके 'इ' शेष बचाइये।

शित् न होने से तथा धातु से विहित होने से, यह णिच् प्रत्यय, आर्धधातुक प्रत्यय है और ण् की इत् संज्ञा होने से, यह 'णित् आर्धधातुक प्रत्यय' है।

अब हमें चुरादिगण के सारे धातुओं में णिच् प्रत्यय जोड़ना है। यह कार्य हम चुरादिगण के धातुओं को, इस प्रकार वर्गों में बाँटकर करें। चुरादिगण का धातुपाठ, खोलकर सामने रख लें -

चुरादिगण के अजन्त धातुओं का इस प्रकार वर्गीकरण करें -

१. चुरादिगण के आकारान्त धातुओं में णिच् प्रत्यय लगाने की विधि

अर्तिह्रीब्लीरीक्नूयीक्ष्माय्यातां पुङ्णौ - ऋ, ह्री, ब्ली, री, क्नूयी, क्ष्मायी तथा आकारान्त धातुओं को पुक् का आगम होता है, णिच् परे होने पर।

जैसे - ज्ञा + णिच् / पुक् का आगम करने पर - ज्ञा + पुक् + णिच् = ज्ञा + प् + इ = ज्ञापि बना।

सारे आकारान्त धातुओं में इसी प्रकार 'णिच्' प्रत्यय लगाइये।

सनाद्यन्ता धातवः - किसी भी धातु से जब सन्, क्यच्, काम्यच्, क्यङ्, क्यष्, क्विप्, णिच्, अङ्, यक्, आय, ईयङ्, णिङ्, ये प्रत्यय लगें, तब उन प्रत्ययों के लगने के बाद भी, उस धातु का नाम धातु ही रहता है।

'ज्ञा' धातु तो धातुपाठ में पढ़ा गया है, इसलिये धातुपाठ में पढ़ा होने के कारण 'भूवादयो धातवः' सूत्र से इस 'ज्ञा' का नाम धातु है, किन्तु ज्ञा - णिच् = ज्ञापि, आदि तो धातुपाठ में नहीं पढे गये हैं, तब भी 'सनाद्यन्ता धातवः' सूत्र से, उन सभी का नाम 'धातु' हो जाता है, जिनके भी अन्त में 'णिच् प्रत्यय' लग जाता है। अतः इस सूत्र से उन सभी धातुओं की, पुनः धातुसंज्ञा करते चलिये, जिनके भी अन्त में णिच् प्रत्यय लगा हो।

णिजन्त धातुओं में शप् प्रत्यय लगाने की विधि

कर्तरि शप् - कर्ता अर्थ वाला, कोई भी तिङ् या कृत् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, धातु से शप् प्रत्यय लगाया जाता है।

तात्पर्य यह है कि जब भी आपको चुरादिगण के धातुओं से कोई भी प्रत्यय लगाना हो, तब आप चुरादिगण के धातुओं से पहिले णिच् प्रत्यय लगाइये। उसके बाद धातु + णिच् को जोड़कर, जो णिजन्त धातु बने, उस णिजन्त धातु के लट्, लङ्, लोट् तथा विधिलिङ् लकारों के कर्त्रर्थक धातुरूप बनाने के लिये, इस णिजन्त धातु से ही शप् आदि अन्य प्रत्यय लगाइये।

जैसे ज्ञप् + णिच् से बने हुए ज्ञापि से शप् प्रत्यय लगाकर - ज्ञापि + शप् / शप् में हलन्त्यम् सूत्र से प् की तथा लशक्वतद्धिते सूत्र से श् की इत् संज्ञा करके तथा तस्य लोपः सूत्र से श्, प् का लोप करके अ शेष बचाइये। ज्ञापि + शप् - ज्ञापि + अ।

शित् होने से यह शप् प्रत्यय सार्वधातुक प्रत्यय है तथा पित् होने से यह पित् सार्वधातुक प्रत्यय है।

अतः 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से अङ्ग के अन्तिम इक् को गुण करके - ज्ञापे + अ / एचोऽयवायावः सूत्र से ए के स्थान पर अय् आदेश करके - ज्ञापय् + अ = ज्ञापय बना।

यह 'ज्ञापय' ही लट्, लङ्, लोट् तथा विधिलिङ् लकारों के प्रत्ययों के लिये अङ्ग है। अतः इस ज्ञापय में ही लट्, लङ्, लोट् तथा विधिलिङ् लकारों के प्रत्यय जोड़िये।

धातु में, णिच् + शप् लगाकर बने हुए इस अङ्ग 'ज्ञापय' को देखिये। यह अदन्त अङ्ग है। चुरादिगण के सारे धातुओं में शप् विकरण लगाकर बने हुए अङ्ग भी अदन्त ही होंगे। हम जानते हैं कि भ्वादिगण के धातुओं में शप् विकरण लगाकर बने हुए अङ्ग भी अदन्त ही थे।

ध्यान दें कि अदन्त अङ्ग + तिङ् प्रत्ययों को जोड़कर, धातुरूप बनाने की जो विधि हमने अभी भ्वादिगण में सीखी है, वह विधि वस्तुतः भ्वादिगण के धातुओं में तिङ् प्रत्यय जोड़ने की विधि नहीं है, अपितु सारे अदन्त अङ्गों में तिङ् प्रत्ययों को जोड़ने की विधि है। अतः जब भी अङ्ग अदन्त हों, उनमें उसी विधि से प्रत्यय जोड़कर धातुरूप बनते हैं, जो विधि भ्वादिगण में बतलाई गई है। अतः इस ज्ञापय में भ्वादिगण के समान ही लट्, लङ्, लोट् तथा विधिलिङ् लकारों के प्रत्यय जोड़िये - ज्ञापय + ति = ज्ञापयति आदि।

णिचश्च - णिजन्त धातुओं के रूप दोनों पदों में बनते हैं। यथा - ज्ञापयति, ज्ञापयते आदि। पूरे रूप इस प्रकार बने -

परस्मैपद			आत्मनेपद		
लट् लकार (वर्तमान काल)					
ज्ञापयति	ज्ञापयतः	ज्ञापयन्ति	ज्ञापयते	ज्ञापयेते	ज्ञापयन्ते
ज्ञापयसि	ज्ञापयथः	ज्ञापयथ	ज्ञापयसे	ज्ञापयेथे	ज्ञापयध्वे
ज्ञापयामि	ज्ञापयावः	ज्ञापयामः	ज्ञापये	ज्ञापयावहे	ज्ञापयामहे
लङ् लकार (अनद्यतन भूत काल)					
अज्ञापयत्	अज्ञापयताम्	अज्ञापयन्	अज्ञापयत	अज्ञापयेताम्	अज्ञापयन्त
अज्ञापयः	अज्ञापयतम्	अज्ञापयत	अज्ञापयथाः	अज्ञापयेथाम्	अज्ञापयध्वम्

अज्ञापयम् अज्ञापयाव अज्ञापयाम अज्ञापये अज्ञापयावहि अज्ञापयामहि

लोट् लकार (आज्ञार्थ)

ज्ञापयतु / ज्ञापयतात्	ज्ञापयताम्	ज्ञापयन्तु	ज्ञापयताम्	ज्ञापयेताम्	ज्ञापयन्ताम्
ज्ञापय / ज्ञापयतात्	ज्ञापयतम्	ज्ञापयत	ज्ञापयस्व	ज्ञापयेथाम्	ज्ञापयध्वम्
ज्ञापयानि	ज्ञापयाव	ज्ञापयाम	ज्ञापयै	ज्ञापयावहै	ज्ञापयामहै

विधिलिङ् लकार

ज्ञापयेत्	ज्ञापयेताम्	ज्ञापयेयुः	ज्ञापयेत	ज्ञापयेयाताम्	ज्ञापयेरन्
ज्ञापयेः	ज्ञापयेतम्	ज्ञापयेत	ज्ञापयेथाः	ज्ञापयेयाथाम्	ज्ञापयेध्वम्
ज्ञापयेयम्	ज्ञापयेव	ज्ञापयेम	ज्ञापयेय	ज्ञापयेवहि	ज्ञापयेमहि

अब हम चुरादिगण के अन्य धातुओं में णिच् लगायें -

२. चुरादिगण के इकारान्त, उकारान्त, ऋकारान्त धातुओं में णिच् प्रत्यय लगाने की विधि

चुरादि गण का धातुपाठ देखिये। इनमें जो इकारान्त, उकारान्त, ऋकारान्त धातु हैं, उनमें णिच् प्रत्यय लगाकर इस प्रकार अङ्गकार्य कीजिये।

अचो ञ्णिति - अजन्त अङ्ग को वृद्धि होती है ञित् णित् प्रत्यय परे होने पर। 'णिच्' णित् प्रत्यय है। अतः इसके परे हाने पर इन अङ्गों के अन्तिम अच् (स्वर) को वृद्धि कर दीजिये। यथा - जि + णिच् - जै + इ आदि।

एचोऽयवायावः - एच् के स्थान पर क्रमशः अय् अव् आय् आव् आदेश होते हैं, अच् परे होने पर।

इस सूत्र से ऐ को आय् तथा औ को आव् आदेश करके उसमें णिच् = इ जोड़ दीजिये। जैसे - जै + इ - जाय् + इ - जायि।

(जब णिच् प्रत्यय लग जाये, तब उन णिजन्त धातुओं में 'कर्तरि शप्' से 'शप्' विकरण लगाकर ज्ञापयति के समान ही पूरे धातुरूप बनाइये।)

जि + णिच् - जै + णिच् - जाय् + इ - जायि = जाययति / ते
च्यु + णिच् - च्यौ + णिच् - च्याव् + इ - च्यावि = च्यावयति / ते
घृ + णिच् - घार् + णिच् - घार् + इ - घारि = घारयति / ते
पृ + णिच् - पार् + णिच् - पार् + इ - पारि = पारयति / ते

यह चुरादिगण के अजन्त धातुओं के रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई। अब चुरादिगण के हलन्त धातुओं में णिच् लगाकर उनके रूप बनायें।

चुरादिगण के हलन्त धातुओं का इस प्रकार वर्गीकरण करें

१. चुरादिगण के अदन्त धातुओं में णिच् प्रत्यय लगाने की विधि

धातुपाठ में चुरादिगण में १८५१ से १९४३ तक अदन्त धातु हैं। पहिले हम इन्हीं के रूप बनायें -

अतो लोपः - अदन्त अङ्ग के अन्तिम 'अ' का लोप होता है, कोई भी आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर। यथा - कथ + णिच् / 'अ' का लोप करके - कथ् + इ / मृग् + णिच् - 'अ' का लोप करके - मृग + इ /

इस सूत्र से इन सारे 'अदन्त' धातुओं के अन्तिम 'अ' का लोप कीजिये।

लोप हो जाने के बाद, कथ् + इ, की उपधा को, 'अत उपधायाः' सूत्र से वृद्धि मत कीजिये तथा मृग + इ की उपधा को, 'पुगन्तलघूपधस्य च' सूत्र से गुण मत कीजिये क्योंकि 'अचः परस्मिन् पूर्वविधौ' सूत्र से लुप्त हुए 'अ' को स्थानिवद्भाव हो जायेगा और जब कोई भी सूत्र इस लुप्त 'अ' के पूर्व में कोई भी अङ्गकार्य करना चाहेगा, तो उसे यह लुप्त 'अ' दिखने लगेगा।

अतः इन अदन्त धातुओं के 'अ' का लोप करने के बाद, कोई भी अङ्गकार्य किये बिना, इनमें सीधे णिच् = इ को जोड़ लीजिये। जैसे -

कथ् + णिच् - कथि + शप् = कथयति / ते
गण् + णिच् - गणि + शप् = गणयति / ते
क्षिप् + णिच् - क्षिपि + शप् = क्षिपयति / ते
पुट् + णिच् - पुटि + शप् = पुटयति / ते
मृग् + णिच् - मृगि + शप् = मृगयते

१८५१ से १९४३ तक अदन्त धातुओं के रूप इसी प्रकार बनाइये।

२. चुरादिगण के कृप्, कृत् धातुओं में णिच् प्रत्यय लगाने की विधि

कृप् धातु - इसके ऋ को 'कृपो रो लः' सूत्र से 'ल' बनाकर - कृप् + णिच् - क्लृप् + इ बनाइये / अब उपधागुण करके - कल्प् + इ - कल्पि / कल्पि + शप् - कल्पय = कल्पयति, कल्पयते बनाइये।

कॄत् धातु - इसके 'ॠ' को उपधायाश्च सूत्र से, 'इ' बनाइये। अब 'उरण् रपरः' सूत्र की सहायता से, इस 'इ' को इर् बनाकर, 'उपधायाञ्च' सूत्र से दीर्घ करके इसे कीर्त् बनाइये।

कॄत् + णिच् - कीर्त् + इ - कीर्ति / कीर्ति + शप् - कीर्तय = कीर्तयति, कीर्तयते।

३. चुरादिगण के मित् धातुओं में णिच् प्रत्यय लगाने की विधि

ज्ञपादि धातु - धातुपाठ देखिये। इसमें १५७३ (ज्ञप्) से लेकर १५७७ (चिञ्) तक जो धातु हैं, वे मित् धातु कहलाते हैं।

मितां ह्रस्वः - मित् धातुओं की उपधा को ह्रस्व हो जाता है। अतः ज्ञप + अय में **'अत उपधायाः'** से अङ्ग की उपधा के 'अ' को वृद्धि करके पहिले 'ज्ञापि' बनाइये और उसके बाद उसे 'मितां ह्रस्वः' सूत्र से ह्रस्व कर दीजिये तो बनेगा ज्ञपि। इन ज्ञपादि धातुओं के रूप इस प्रकार बने -

ज्ञप् + णिच् - ज्ञाप् + इ - ज्ञापि - ज्ञपि = ज्ञपयति / ते
यम् + णिच् - याम् + इ - यामि - यमि = यमयति / ते
चह् + णिच् - चाह् + इ - चाहि - चहि = चहयति / ते
रह् + णिच् - राह् + इ - राहि - रहि = रहयति / ते
बल् + णिच् - बाल् + इ - बालि - बलि = बलयति / ते

चि, जॄ ये अजन्त धातु भी मित् हैं।

चि + णिच् - चै चाय् + इ - चायि - चयि = चययति / ते
जॄ + णिच् - जार् + इ - जारि - जरि = जरयति / ते

यह चुरादिगण के ज्ञपादि धातुओं के रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।

अब हम चुरादिगण के, अदन्त धातुओं से बचे हुए, धातुओं में णिच् लगायें -

४. चुरादिगण के अदन्त धातुओं से बचे हुए, अदुपध धातुओं में णिच् प्रत्यय लगाने की विधि

जिनकी उपधा में 'ह्रस्व अ' होता है, उन धातुओं को 'अदुपध धातु' कहते हैं। जैसे - नट्, चल्, बध् आदि। अब हम चुरादिगण के उन 'अदुपध धातुओं' के रूप बनायें, जो धातु ऊपर कहे गये 'अदन्त' वर्ग के नहीं हैं।

अत उपधायाः - जो अदुपध धातु 'अदन्त' नहीं हैं, उनकी उपधा के

'अ' को वृद्धि होती है, ञित् णित् प्रत्यय परे होने पर।

जैसे - नट् + णिच् - 'अत उपधायाः' से वृद्धि करके - नट् + इ - नाटि / अब 'शप्' विकरण लगाकर - नाटि + शप् / सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके - नाटे + अ / अयादेश करके - नाटय् + अ - नाटय = नाटयति। इसी प्रकार -

लड् + णिच् - लाड् + इ - लाडि = लाडयति / ते
नट् + णिच् - नाट् + इ - नाटि = नाटयति / ते
बध् + णिच् - बाध् + इ - बाधि = बाधयति / ते
चल् + णिच् - चाल् + इ - चालि = चालयति / ते

५. चुरादिगण के अदन्त धातुओं के वर्ग से बचे हुए लघु इगुपध धातुओं में णिच् प्रत्यय लगाने की विधि

चुरादिगण के जो धातु 'अदन्त' न हों और उनकी उपधा में लघु अ, लघु इ, लघु उ, लघु ऋ, हों तो, उनमें इस प्रकार णिच् = इ को जोड़िये -

पुगन्तलघूपधस्य च - अङ्ग की उपधा के लघु इक् को गुण होता है पित् सार्वधातुक प्रत्यय तथा कित् ङित् से भिन्न आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर।

जैसे - पिस् + णिच् / 'पुगन्तलघूपधस्य च' से उपधा को गुण करके - पेस् + इ - पेसि / अब 'शप्' विकरण लगाकर - पेसि + शप् / सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके - पेसे + अ / अयादेश करके - पेसय् + अ = पेसय - पेसयति। इसी प्रकार -

पिस् + णिच् - पेस् + इ - पेसि = पेसयति / ते
चुर् + णिच् - चोर् + इ - चोरि = चोरयति / ते
वृत् + णिच् - वर्त् + इ - वर्ति = वर्तयति / ते

ध्यान रहे कि यदि उपधा में दीर्घ इक् हो तो उसे कुछ नहीं होता है। जैसे - शील् - शीलयति / सूच् - सूचयति आदि।

६. चुरादिगण के वैकल्पिक णिजन्त धातुओं में णिच् प्रत्यय लगाने की विधि

अब चुरादिगण के वे धातु बतला रहे हैं, जिनमें एक बार णिच् + शप् लगेंगे और एक बार केवल शप् = अ लगेगा। ऐसे धातु हमने धातुपाठ में क्रमाङ्क १७०७ से क्रमाङ्क १८११ तक रखे हैं।

इनके अलावा १८५९, १८६०, १८७१, १९०९, १९१५ धातु भी वैकल्पिक णिच् वाले धातु हैं। इनकी विशेषता यह है, कि इनमें णिच् प्रत्यय विकल्प से लगता है। अत: इनके रूप दो दो प्रकार से बनते हैं।

एक बार णिच् + शप् लगने पर, चुरादिगण के समान रूप बनेंगे। जैसे - युज् + णिच् + शप् - योजय = योजयति आदि। एक बार केवल शप् लगने पर भ्वादिगण के समान रूप बनेंगे। जैसे - युज् + शप् - योज = योजति आदि।

७. चुरादिगण के शेष धातुओं में णिच् प्रत्यय लगाने की विधि

जिन हलन्त धातुओं की उपधा में लघु अ, लघु इ, लघु उ, लघु ऋ, न हों उनमें बिना किसी परिवर्तन के णिच् = इ जोड़ दीजिये। जैसे - चिन्त् + णिच् - चिन्ति = चिन्तयति / चूर्ण् + णिच् - चूर्णि = चूर्णयति

चुरादिगण के धातुओं के पद का विचार

१. **आकुस्मादात्मनेपदिन:** - क्रमाङ्क १८१२ से लेकर क्रमाङ्क १८५० तक जो धातु हैं, वे आकुस्मीय धातु कहलाते हैं। इनकी विशेषता यह है, कि इनमें णिच् लगने के बाद, इनके रूप केवल आत्मनेपद में ही बनते हैं, परस्मैपद में नहीं। जैसे - चित् - चेतयते / गन्ध् - गन्धयते / कुस्म् - कुस्मयते आदि।

२. **आगर्वादात्मनेपदिन:** - अदन्त वर्ग में क्रमाङ्क १८५१ से १८६० तक के दस धातुओं को देखिये। ये धातु आगर्वीय धातु कहलाते है। इनके रूप भी केवल आत्मनेपद में बनते है। परस्मैपद में नहीं। जैसे - मृग - मृगयते/ गर्ह् - गर्ह्यते आदि।

इन दोनों को अलग अलग इसलिये रखा है, कि आगर्वीय धातु तो अदन्त धातुओं के अन्तर्गत आते हैं, अत: अदन्त होने के कारण, इनकी उपधा को 'पुगन्तलघूपधस्य च' से होने वाला गुण और 'अत उपधाया:' से होने वाली वृद्धि आदि कार्य नहीं होते।

आकुस्मीय धातु, अदन्त धातुओं के वर्ग के बाहर बैठे हैं, अत: इनकी उपधा को गुण वृद्धि यदि प्राप्त होते हैं, तो वे हो ही जाते हैं।

३. **णिचश्च** - आकुस्मीय तथा आगर्वीय से बचे हुए जो णिजन्त धातु हैं, उनके रूप दोनों पदों में बनते हैं। यथा - चोरयति, चोरयते आदि।

ध्यान रहे कि जब आपको चुरादिगण के धातुओं से सार्वधातुक प्रत्यय लगाना हो तब आप धातुओं से णिच् + शप् लगाइये। जैसे - चुर् + णिच् +

शप् + ति = चोरयति, और जब आपको चुरादिगण के धातुओं से आर्धधातुक प्रत्यय लगाना हो तब आप धातुओं से केवल णिच् लगाइये - जैसे चुर् + णिच् - चोरि / चोरि + यक् + ते = चोर्यते आदि।

यह चुरादिगण के समस्त धातुओं के लट्, लङ्, लोट् तथा विधिलिङ् लकारों के रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।

दिवादिगण के धातुओं के लट्, लोट्, लङ् तथा विधिलिङ् लकारों के रूप बनाने की विधि

दिवादिभ्यः श्यन् - दिवादिगण के धातुओं का गणचिह्न श्यन् है। कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर दिवादिगण के धातुओं से 'श्यन्' यह विकरण लगाया जाता है।

इस विकरण को धातु में जोड़कर जो अङ्ग बनता है, उससे ही सारे कर्त्रर्थक तिङ् तथा कृत् सार्वधातुक प्रत्यय लगाये जाते है।

धातुपाठ में से दिवादिगण का धातुपाठ खोलकर सामने रख लीजिये। ये धातु ११०७ से १२४६ तक हैं। इनमें श्यन् लगाइये।

श्यन् प्रत्यय में 'हलन्त्यम्' सूत्र से 'न्' की तथा 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से 'श्' की इत् संज्ञा होकर 'तस्य लोपः' सूत्र से उन न्, श् का लोप होकर 'य' शेष बचता है। शित् होने से यह सार्वधातुक प्रत्यय है। श्यन् में प् की इत् संज्ञा नहीं हुई है अतः यह पित् नहीं है। अतः जानिये कि 'श्यन्' अपित् सार्वधातुक प्रत्यय है।

सार्वधातुकमपित् - जो अपित् सार्वधातुक प्रत्यय होते हैं, वे ङित् न होते हुए भी ङित् जैसे मान लिये जाते हैं।

ङित् होने का फल क्या होता है ? हम 'संक्षिप्त अङ्गकार्य' वाले पाठ में पढ़ चुके हैं कि पूरे धात्वधिकार में जब भी कोई प्रत्यय ङित् या कित् होता है तब ये तीन अङ्गकार्य तो होते ही हैं -

१. अनिदित् धातुओं की उपधा के न् का लोप।

२. सम्प्रसारणी धातुओं को सम्प्रसारण।

३. अन्त और उपधा के इक् को गुणनिषेध।

अब हम दिवादिगण के धातुओं का वर्गीकरण करें और उनमें श्यन् लगाकर उनके धातुरूप बनायें -

१. दिवादिगण के अनिदित् धातु

जिन धातुओं में 'इ' की इत् संज्ञा होती है, उन्हें इदित् धातु कहा जाता है। जो धातु इदित् नहीं होते, उन्हें अनिदित् धातु कहा जाता है।

दिवादिगण में रञ्ज्, भ्रंश्, कुंस्, ये तीन ही अनिदित् धातु हैं। इनके रूप इस प्रकार बनायें -

अनिदितां हल उपधाया: क्ङिति - अनिदित् धातुओं की उपधा के न् का लोप होता है कित् या ङित् प्रत्यय परे होने पर।

रञ्ज् + श्यन् - रज् + य - रज्य = रज्यति
कुंस् + श्यन् - कुस् + य - कुस्य = कुस्यति
भ्रंश् + श्यन् - भ्रश् + य - भ्रश्य = भ्रश्यति

यह 'न्' का लोप सदा अनिदित् धातुओं में ही होता है, यदि उनके बाद आने वाला प्रत्यय कित् या ङित् हो तो।

इसी अभिप्राय से हमने दसों गणों के जो भी अनिदित् धातु हैं, उन्हें अलग अलग निकालकर रख दिया है तथा उनके ऊपर 'अनिदित् धातु' ऐसा शीर्षक भी दे दिया है।

२. दिवादिगण के सम्प्रसारणी धातु

ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च - ग्रह्, ज्या, वय्, व्यध्, वश्, व्यच्, व्रश्च्, प्रच्छ्, भ्रस्ज् इतने धातुओं को सम्प्रसारण होता है कित् अथवा ङित् प्रत्यय परे होने पर।

इग्यण: सम्प्रसारणम् - य्, व्, र्, ल् को इ, उ, ऋ, लृ हो जाना सम्प्रसारण होना कहलाता है।

दिवादिगण में से केवल एक सम्प्रसारणी धातु है - व्यध् (१२४६)। इसके रूप सम्प्रसारण करके इस प्रकार बनायें -

व्यध् + श्यन् - य् को सम्प्रसारण होकर - व् इ अ ध् + य / सम्प्रसारणाच्च से 'अ' को पूर्वरूप होकर - विध् + य - विध्य = विध्यति।

३. दिवादिगण का मिद् धातु

मिदेर्गुण: - मिद् धातु को गुण होता है, भले ही उससे परे आने वाला प्रत्यय कित् या ङित् ही क्यों न हो। अत: मिद् को गुण करके मेद् बनाइये -

मेद् + य - मेद् + य - मेद्य = मेद्यति।

४. दिवादिगण का जन् धातु

ज्ञाजनोर्जा - क्र्यादिगण के ज्ञा धातु को तथा दिवादिगण के जन् धातु को जा आदेश हो जाता है शित् प्रत्यय परे रहने पर। जन् + य - जा + य / जाय = जायते।

५. दिवादिगण का यस् धातु

यसोऽनुपसर्गात् - यस् धातु (१२४५) यदि उपसर्ग से रहित हो, तो उसमें विकल्प से शप् या श्यन् विकरण लगते हैं। अतः इसके दो दो रूप बनेंगे। यस् + श्यन् - यस्य = यस्यति / यस् + शप् - यस = यसति।

ध्यान रहे कि उपसर्ग होने पर केवल श्यन्' होता है - आयस्यति।

६. दिवादिगण के ओदित् धातु

ओतः श्यनि - दिवादिगण के ओकारान्त धातुओं के ओ का लोप होता है, श्यन् परे होने पर। दिवादिगण का धातुपाठ देखिये। क्रमाङ्क ११८४ से ११८७ तक जो धातु हैं, वे ओकारान्त हैं। इनके रूप इस प्रकार बनेंगे -

शो + श्यन् - श्य = श्यति
दो + श्यन् - द्य = द्यति
षो + श्यन् - स्य = स्यति
छो + श्यन् - छ्य = छ्यति

७. दिवादिगण के शमादि अन्तर्गण के धातु

शमामष्टानां दीर्घः श्यनि - दिवादिगण में क्रमाङ्क ११५३ से ११६० तक जो ८ धातु हैं, वे शमादि धातु कहलाते हैं। श्यन् परे होने पर, इन शमादि ८ धातुओं को दीर्घ होता है।

शम् + श्यन् - शाम्य = शाम्यति
तम् + श्यन् - ताम्य = ताम्यति
दम् + श्यन् - दाम्य = दाम्यति
श्रम् + श्यन् - श्राम्य = श्राम्यति
भ्रम् + श्यन् - भ्राम्य = भ्राम्यति
क्षम् + श्यन् - क्षाम्य = क्षाम्यति
क्लम् + श्यन् - क्लाम्य = क्लाम्यति
मद् + श्यन् - माद्य = माद्यति

८. दिवादिगण के दीर्घ ॠकारान्त धातु

ॠत इद् धातोः – धातु के अन्त में दीर्घ ॠ हो, तथा उससे परे आने वाला प्रत्यय कित् या ङित् हो, तो दीर्घ ॠ को इ आदेश होता है।

उरण् रपरः सूत्र की सहायता से यह इ 'रपर' होता है। जैसे –

जॄ + श्यन् = जिर् + श्यन्
झॄ + श्यन् = झिर् + श्यन्

हलि च – यदि धातु के अन्त में र्, या व् हों और और र्, व् के पूर्व में अर्थात् उपधा में, इक् (इ, उ, ऋ) हों, तो उन इक् को, दीर्घ हो जाता है, हल् परे होने पर।

जॄ + श्यन् - जिर् + य - जीर् + य - जीर्य = जीर्यति
झॄ + श्यन् - झिर् + य - झीर् + य - झीर्य = झीर्यति।

(यहाँ यह ध्यातव्य है कि रेफान्त, वान्त धातुओं की उपधा के इ, उ को दीर्घ तभी होगा, जब प्रत्यय हलादि होगा।)

९. दिवादिगण के वकारान्त इगुपध धातु

अब उन धातुओं को देखिये, जिनके अन्त में र् या व् हो और उपधा में इ या उ, हो।

हलि च – रेफान्त तथा वकारान्त इगुपध धातुओं की उपधा के इक् को दीर्घ होता है।

दिव् + श्यन् - दीव्य = दीव्यति
षिव् + श्यन् - सीव्य = सीव्यति
स्रिव् + श्यन् - स्रीव्य = स्रीव्यति
ष्ठिव् + श्यन् - ष्ठीव्य = ष्ठीव्यति

१०. दिवादिगण के शेष धातु

क्ङिति च – कित् या ङित् प्रत्यय परे होने पर, इक् के स्थान पर होने वाले गुण या वृद्धि कार्य कभी नहीं होते। चाहे वह गुण, **सार्वधातुकार्धधातुकयोः** सूत्र से अन्तिम इक् के स्थान पर प्राप्त होने वाला गुण हो, चाहें उपधा के लघु इक् के स्थान पर **पुगन्तलघूपधस्य च** सूत्र से प्राप्त होने वाला गुण हो।

तो हमने जाना कि अपित् सार्वधातुक होने के कारण, श्यन् प्रत्यय ङित्वत् है। अतः इसके लगने पर, धातुओं में बिना गुण किये, श्यन् प्रत्यय जोड़ दिया

जाता है। जैसे -

पुष्	+	श्यन्	-	पुष्य	=	पुष्यति
श्लिष्	+	श्यन्	-	श्लिष्य	=	श्लिष्यति
नृत्	+	श्यन्	-	नृत्य	=	नृत्यति ।

ध्यान दीजिये कि इनकी उपधा के इ, उ, ऋ, ज्यों के त्यों हैं। इन्हें गुण नहीं हुआ है, जबकि भ्वादि तथा चुरादिगण में हुआ था।

पित् और अपित् प्रत्यय का, यही सबसे बड़ा भेद है कि पित् प्रत्यय लगने पर गुण होता है, और अपित् प्रत्यय लगने पर कभी भी गुण नहीं होता। इस प्रकार दिवादिगण के सभी धातुओं में, श्यन् प्रत्यय जोड़ने की विधि पूर्ण हुई।

धातुपाठ में हमने ये अङ्ग तथा धातुरूप बनाकर दिये हैं। उनसे मिलाकर देखिये कि आपका कार्य शुद्ध है।

अब इनमें लट् लकार के प्रत्यय ठीक उसी प्रकार लगाइये जिस प्रकार भ्वादिगण में लगाये हैं।

दिवादिगण के उभयपदी शुच् पूतीभावे धातु के रूप

परस्मैपद **आत्मनेपद**

लट् लकार

प्र. पु.	शुच्यति	शुच्यतः	शुच्यन्ति	शुच्यते	शुच्येते	शुच्यन्ते
म. पु.	शुच्यसि	शुच्यथः	शुच्यथ	शुच्यसे	शुच्येथे	शुच्यध्वे
उ. पु.	शुच्यामि	शुच्यावः	शुच्यामः	शुच्ये	शुच्यावहे	शुच्यामहे

लङ् लकार

प्र. पु.	अशुच्यत्	अशुच्यताम्	अशुच्यन्	अशुच्यत	अशुच्येताम्	अशुच्यन्त
म. पु.	अशुच्यः	अशुच्यतम्	अशुच्यत	अशुच्यथाः	अशुच्येथाम्	अशुच्यध्वम्
उ. पु.	अशुच्यम्	अशुच्याव	अशुच्याम	अशुच्ये	अशुच्यावहि	अशुयामहि

लोट् लकार

प्र. पु.	शुच्यतु शुच्यतात्	शुच्यताम्	शुच्यन्तु	शुच्यताम्	शुच्येताम्	शुच्यन्ताम्
म. पु.	शुच्य शुच्यतात्	शुच्यतम्	शुच्यत	शुच्यस्व	शुच्येथाम्	शुच्यध्वम्
उ.पु.	शुच्यानि	शुच्याव	शुच्याम	शुच्यै	शुच्यावहै	शुच्यामहै

विधिलिङ् लकार

प्र. पु.	शुच्येत्	शुच्येताम्	शुच्येयुः	शुच्येत	शुच्येयाताम्	शुच्येरन्
म. पु.	शुच्येः	शुच्येतम्	शुच्येत	शुच्येथाः	शुच्येयाथाम्	शुच्येध्वम्
उ. पु.	शुच्येयम्	शुच्येव	शुच्येम	शुच्येय	शुच्येवहि	शुच्येमहि

दिव्रादिगण के पूरे ८२ धातुओं में, ऊपर कहे अनुसार विकरण को जोड़कर उनके रूप, शुच् - शुच्य के समान ही बना डालिये।

वेद में शम् धातु के लिये विशेष विधि -

तुरुस्तुशम्यमः सार्वधातुके - तु, रु, स्तु, शम्, अम् धातुओं से परे आने वाले, हलादि सार्वधातुक प्रत्ययों को, विकल्प से ईट् का आगम होता है।

छान्दस प्रयोग में 'बहुलं छन्दसि' से बाहुलकात् श्यन् विकरण नहीं होता।

अतः वेद में शम् धातु से शाम्यध्वम् आदि रूप भी बनेंगे।

यह दिवादिगण के सारे धातुओं के लट् लोट् लङ् तथा विधिलिङ् लकारों के रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई ।

तुदादिगण के धातुओं के लट्, लोट्, लङ्, तथा विधिलिङ् लकारों के रूप बनाने की विधि

तुदादिभ्यः शः - कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर तुदादिगण के धातुओं से 'श' विकरण लगाया जाता है। इस विकरण को धातु में जोड़कर जो अङ्ग बनता है, उससे ही सारे तिङ् तथा कृत् सार्वधातुक प्रत्यय लगाये जाते है।

• धातुपाठ में से तुदादिगण का धातुपाठ खोलकर सामने रख लीजिये। ये धातु १२८१ से १४३७ तक है। इनमें 'श' लगाइये।

धातु + विकरण को जोड़कर जो अङ्ग तैयार हो, उसी में सारे तिङ् या कृत् सार्वधातुक प्रत्यय अर्थात् लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् लकार के प्रत्यय तथा अन्य सार्वधातुक कृत् प्रत्यय लगाइये।

अब हम तुदादिगण के धातुओं में श विकरण को जोड़कर, सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग बनाने की विधि सीखें।

सार्वधातुकमपित् - अपित् सार्वधातुक प्रत्यय ङित्वत् होते हैं। अतः 'श' प्रत्यय भी अपित् सार्वधातुक होने के कारण ङित्वत् है। इसे ङित् समझिये।

ङित् होने के कारण इसके लगने पर, कभी भी अङ्ग को गुण वृद्धि

कार्य नहीं होंगे, क्योंकि क्ङिति च सूत्र, गुण का निषेध कर देगा।

अब हम तुदादिगण के धातुओं का वर्गीकरण करके, उनमें 'श' विकरण लगायें -

१. तुदादिगण के इकारान्त तथा उकारान्त धातु

अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ - इण् धातु को छोड़कर एक अच् वाले सारे इवर्णान्त धातु, जैसे रि, क्षि आदि / जिनके पूर्व में दो या दो से अधिक व्यञ्जनों का संयोग है, ऐसे संयोगपूर्व अनेकाच् इवर्णान्त धातु, जैसे - जिह्री आदि / जिनके पूर्व में दो या दो से अधिक व्यञ्जनों का संयोग है, ऐसे संयोगपूर्व श्नुप्रत्ययान्त धातु, जैसे - शक्नु, आप्नु आदि / एवं हु धातु को छोड़कर शेष सारे उवर्णान्त धातु / इन्हें अजादि कित्, ङित् प्रत्यय परे होने पर इयङ् उवङ् आदेश होते हैं। ध्यान रहे कि 'इ' को इयङ्, तथा 'उ' को 'उवङ्' होता है।

अतः 'श' प्रत्यय परे होने पर तुदादिगण के इकारान्त, ईकारान्त धातुओं को इस सूत्र से इयङ् = इय् बनाइये -

रि + श - रिय् + अ = रियति
पि + श - पिय् + अ = पियति
धि + श - धिय् + अ = धियति
क्षि + श - क्षिय् + अ = क्षियति आदि।

'श' प्रत्यय परे होने पर तुदादिगण के उकारान्त, ऊकारान्त धातुओं को इस सूत्र से उवङ् = उव् बनाइये

गु + श - गुव् + अ - गुव = गुवति
ध्रु + श - ध्रुव् + अ - ध्रुव = ध्रुवति
कु + श - कुव् + अ - कुव = कुवते
नु + श - नुव् + अ - नुव = नुवति
सू + श - सुव् + अ - सुव = सुवति आदि।

२. तुदादिगण के ऋकारान्त धातु

रिङ्शयग्लिङ्क्षु - श् यक् और लिङ् परे होने पर ऋकारान्त धातुओं के ऋ को रिङ् (रि) आदेश होता है। यथा - पृ + श = प्रि + अ

देखिये कि यह धातु अब इकारान्त बन गया है, अतः इसे अचिश्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ सूत्र से इयङ् (इय्) बना दीजिये, तो बना - पृ + श - प्रि + अ

/ इ को इयङ् करके - प्रिय् + अ = प्रिय - प्रियते।

इसी प्रकार अन्तिम ऋ को 'रि' बनाकर, तथा उस 'इ' को 'इय्' बनाकर तुदादिगण के ऋकारान्त धातुओं के रूप बना लीजिये -

मृ से म्रिय - म्रियते। दृ से द्रिय - द्रियते। धृ से ध्रिय - ध्रियते, आदि।

३. तुदादिगण के दीर्घ ॠकारान्त धातु

ॠत इद् धातोः - दीर्घ ॠकारान्त धातुओं के बाद जब कित् ङित् प्रत्यय हो तो ॠ को इर् आदेश होता है।

कॄ + श - किर् + अ - किर् = किरति
गॄ + श - गिर् + अ - गिर = गिरति आदि।

इसे इस प्रकार याद रखें।

श लगने पर - इ को इय् / उ को उव् / ऋ को रिय् / ॠ को इर् बनाइये।

४. तुदादिगण के मुचादि धातु

शे मुचादीनाम् - तुदादिगण के मुचादि अन्तर्गण में १२९७ से १३०४ तक, जो मुचादि धातु है, उनको, नुम् का आगम होता है, 'श' परे होने पर।

नुम् में म्, उ की इत् संज्ञा होकर न् शेष बचता है। म् की इत् संज्ञा होने से यह आगम, मित् आगम है।

मिदचोऽन्त्यात्परः - मित् आगम जिसे कहे जाते हैं, उसके अन्तिम अच् के बाद बैठते हैं। अतः यह नुम्, मुचादि धातुओं के अन्तिम अच् के बाद बैठेगा। नुमागम करके तथा सन्धि करके, इनके रूप इस प्रकार बनेंगे -

मुच् + नुम् + श - मु न् च् + अ - मुञ्च् + अ = मुञ्चति
लुप् + नुम् + श - लु न् प् + अ - लुम्प् + अ = लुम्पति
विद् + नुम् + श - वि न् द् + अ - विन्द् + अ = विन्दति
लिप् + नुम् + श - लि न् प् + अ - लिम्प् + अ = लिम्पति
सिच् + नुम् + श - सि न् च् + अ - सिञ्च् + अ = सिञ्चति
कृत् + नुम् + श - कृ न् त् + अ - कृन्त् + अ = कृन्तति
खिद् + नुम् + श - खि न् त् + अ - खिन्द् + अ = खिन्दति
पिश् + नुम् + श - पि न् श् + अ - पिंश् + अ = पिंशति

ये धातु हमने तुदादिगण के धातुपाठ में १२९७ से १३०४ तक रखे हैं।

५. तुदादिगण के सम्प्रसारणी धातु

ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च - ग्रह्, ज्या, वय्, व्यध्, वश्, व्यच्, व्रश्च्, प्रच्छ्, भ्रस्ज् इतने धातुओं को सम्प्रसारण होता है कित् अथवा ङित् प्रत्यय परे होने पर।

'श' ङित् प्रत्यय है अतः इसके लगने पर तुदादिगण के इन धातुओं को इस प्रकार सम्प्रसारण होगा।

व्रश्च् + श - वृश्च् + अ - वृश्च = वृश्चति
व्यच् + श - विच् + अ - विच = विचति
प्रच्छ् + श - पृच्छ् + अ - पृच्छ = पृच्छति
भ्रस्ज् + श - भृज्ज् + अ - भृज्ज = भृज्जति

ये धातु हमने तुदादिगण के धातुपाठ में १३०५ से १३०८ तक रखे हैं।

६. तुदादिगण के विशेष धातु

मस्ज् लस्ज् धातु - स्तोः श्चुना श्चुः सूत्र से स् को श् करके, झलां जश् झशि से जश्त्व करके, 'मज्ज्' 'लज्ज्' ऐसा आदेश करके, मज्ज् + श - मज्ज = मज्जति तथा लज्ज् + श - लज्ज = लज्जते, रूप बनाइये।

इष् धातु - इषुगमियमां छः सूत्र से इष् को इच्छ् बनाइये।

इष् + श - इच्छ् + अ - इच्छ = इच्छति

षद्, शद् धातु - पाघ्राध्मास्थाम्नादाण्दृश्यर्तिसर्तिशदसदां, पिबजिघ्रधम तिष्ठमनयच्छपश्यच्छंधौशीयसीदाः, इस सूत्र से षद् को सीद्, शद् को शीय् बनाइये।

षद् + श - सीद् + अ - सीद = सीदति
शद् + श - शीय् + अ - शीय = शीयते

इषुगमियमां छः तथा पाघ्राध्मा. सूत्र भ्वादि में दिये जा चुके हैं, इन्हें वहीं देखें।

विच्छ् धातु - गुपूधूपविच्छपणिपनिभ्यः आयः सूत्र से विच्छ् धातु में आय लगाकर विच्छायति बनाइये।

७. तुदादि गण के अनिदित् धातु

तुदादि गण में जितने भी अनिदित् धातु हैं, वे तृम्फादि धातु कहलाते हैं। ये धातु हमने धातुपाठ में १३८६ से १३९४ तक अलग से दे रखे हैं।

अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति - कित् ङित् प्रत्यय परे होने पर

अनिदित् धातुओं की उपधा के न् का लोप होता है। 'श' भी ङित्वत् प्रत्यय है। अतः इसके परे होने पर भी तुदादिगण के इन अनिदित् धातुओं की उपधा के न् का लोप होता है। जैसे - गुम्फ् + श - गुफ् + अ, आदि। किन्तु -

शे तृम्फादीनां नुम् वाच्यः - इन तृम्फादि धातुओं के न् का लोप होकर इस वार्तिक से पुनः वहाँ न् आकर बैठ जाता है।

अतः गुफ् से पुनः गुम्फ् बन जाता है और गुम्फति रूप बनता है। ऐसी स्थिति में यहाँ 'न्' का लोप होता हुआ भी दिखाई नहीं देता।

८. तुदादि गण के शेष धातु

इन धातुओं के अलावा तुदादि गण के जो शेष धातु हैं, उनमें बिना किसी परिवर्तन के 'श' विकरण जोड़ दीजिये। यथा -

दिश् + श (अ) - दिश = दिशति
तुद् + श (अ) - तुद = तुदति आदि।

तुदादिगण के शेष धातु हमने धातुपाठ में १३१५ से तुदादिगण के अन्त तक अलग से दे रखे हैं।

यह तुदादिगण के धातुओं में 'श' विकरण लगाकर सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग बनाने की विधि पूर्ण हुई।

धातुपाठ में हमने धातु + विकरण को जोड़कर, अङ्ग बनाकर दिये हैं, उनसे मिलाकर शुद्धता प्रमाणित कीजिये।

विशेष - ध्यान रहे कि यहाँ भी धातु + विकरण को जोड़कर सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये जो अङ्ग बने हैं, वे सारे के सारे भ्वादि तथा चुरादिगण के समान अदन्त ही हैं। अतः भ्वादि तथा चुरादिगण के समान ही यहाँ भी प्रत्यय जोड़े जायेंगे। जैसे भव से - भवति भवतः भवन्ति आदि रूप बनाये हैं, वैसे ही तुद से, तुदति तुदतः तुदन्ति आदि बनाइये।

तुदादिगण के उभयपदी 'तुद्' धातु के रूप

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
			लट् लकार			
प्र. पु.	तुदति	तुदतः	तुदन्ति	तुदते	तुदेते	तुदन्ते
म.पु.	तुदसि	तुदथः	तुदथ	तुदसे	तुदेथे	तुदध्वे
उ. पु.	तुदामि	तुदावः	तुदामः	तुदे	तुदावहे	तुदामहे

लङ् लकार

प्र. पु.	अतुदत्	अतुदताम्	अतुदन्	अतुदत	अतुदेताम्	अतुदन्त
म. पु.	अतुदः	अतुदतम्	अतुदत	अतुदथाः	अतुदेथाम्	अतुदध्वम्
उ. पु.	अतुदम्	अतुदाव	अतुदाम	अतुदे	अतुदावहि	अतुदामहि

लोट् लकार

प्र. पु.	तुदतु तुदतात्	तुदताम्	तुदन्तु	तुदताम्	तुदेताम्	तुदन्ताम्
म. पु.	तुद तुदतात्	तुदतम्	तुदत	तुदस्व	तुदेथाम्	तुदध्वम्
उ. पु.	तुदानि	तुदाव	तुदाम	तुदै	तुदावहै	तुदामहै

विधिलिङ् लकार

प्र.पु.	तुदेत्	तुदेताम्	तुदेयुः	तुदेत	तुदेयाताम्	तुदेरन्
म. पु.	तुदेः	तुदेतम्	तुदेत	तुदेथाः	तुदेयाथाम्	तुदेध्वम्
उ. पु.	तुदेयम्	तुदेव	तुदेम	तुदेय	तुदेवहि	तुदेमहि

इसी के समान तुदादिगण के सारे ७३ धातुओं के रूप आप बना लीजिये।

यह ध्यान दीजिये कि हम भ्वादि, दिवादि, तुदादि तथा चुरादि के सारे धातुओं के लट्‌लोट् लङ् तथा विधिलिङ् लकारों के रूप बनाना सीख चुके हैं।

पञ्चम पाठ

द्वितीय गणसमूह के धातुओं के लट्, लोट्, लङ्, तथा विधिलिङ् लकारों के रूप बनाने की विधि

हम जानते हैं कि धातुओं के १० गण होते हैं। ये गण दो समूहों में बँटे हुए हैं।

१. प्रथमगण समूह अर्थात् भ्वादि, दिवादि, तुदादि, तथा चुरादि गण।

२. द्वितीयगण समूह अर्थात् अदादि, जुहोत्यादि, स्वादि, रुधादि, तनादि, तथा क्र्यादि गण।

हमने देखा कि प्रथमगण समूह के ४ गणों के धातुओं में विकरण लगाने पर जो भी अङ्ग बने हैं, वे अदन्त ही हैं। जैसे -

भू + शप् = भव - इसके अन्त में 'अ' है।
चुर् + णिच् + शप् = चोरय - इसके अन्त में 'अ' है।
दिव् + श्यन् = दीव्य - इसके अन्त में 'अ' है।
तुद् + श = तुद - इसके अन्त में भी 'अ' है।

जब भी अङ्ग अदन्त हों, तब उनके सार्वधातुक लकारों के रूप बनाने के लिये सदा प्रथमगण समूह के प्रत्यय ही लगाना चाहिये। यह कार्य हम सीख चुके हैं।

द्वितीयगण समूह के ६ गणों के धातुओं में विकरण लगाने के बाद जो अङ्ग बनते हैं, उनके अन्त में कभी भी 'अ' नहीं होता, अतः वे अङ्ग अनदन्त ही होते हैं।

जब भी अङ्ग अनदन्त हों, तब उनके सार्वधातुक लकारों के रूप बनाने के लिये सदा द्वितीयगण समूह के प्रत्यय ही लगाना चाहिये।

अतः यह बुद्धिस्थ कर लीजिये कि -

१. जब धातु + विकरण को जोड़कर बनाया हुआ अङ्ग अदन्त होता तब प्रथमगण समूह वाले प्रत्यय ही लगाये जाते हैं।

२.जब धातु + विकरण को जोड़कर बनाया हुआ अङ्ग अनदन्त होता

है, तब द्वितीयगण समूह वाले प्रत्यय ही लगाये जाते हैं।

इनमें प्रथम गण समूह के प्रत्ययों को जोड़ने की विधि बतलाई जा चुकी है। अब द्वितीयगण समूह के प्रत्ययों को जोड़ने की विधि बतलाई जायेगी। अतः अब द्वितीयगण समूह के प्रत्यय पुनः बतलाये जा रहे हैं -

द्वितीय गण समूह के तिङ् सार्वधातुक प्रत्यय

अदादि, जुहोत्यादि, स्वादि, रुधादि, तनादि, क्र्यादिगण के धातुओं के लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् तथा सार्वधातुक लेट् लकारों के रूप बनाने के लिये इन प्रत्ययों का प्रयोग कीजिये।

लट् लकार

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	***ति***	तः	अन्ति	ते	आते	अते
म. पु.	***सि***	थः	थ	से	आथे	ध्वे
उ. पु.	***मि***	वः	मः	ए	वहे	महे

देखिये कि इन सार्वधातुक प्रत्ययों में, तथा आगे दिये जाने वाले सार्वधातुक प्रत्ययों में भी कुछ प्रत्यय तिरछे, मोटे तथा बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं। ऐसे प्रत्ययों का नाम पित् सार्वधातुक प्रत्यय है, यह जानिये। इनमें से भी जो प्रत्यय हल् से प्रारम्भ हो रहे हैं, वे हलादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय हैं तथा जो अच् से प्रारम्भ हो रहे हैं, वे अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय हैं, यह जानिये।

जो प्रत्यय सीधे, पतले तथा छोटे अक्षरों में लिखे गये हैं, उनका नाम अपित् सार्वधातुक प्रत्यय है। इनमें से भी जो प्रत्यय हल् से प्रारम्भ हो रहे हैं, वे हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय हैं, तथा जो अच् से प्रारम्भ हो रहे हैं, वे अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय हैं। इन्हें पहिचानना धातुरूप बनाने की क्रिया का सबसे आवश्यक कार्य है।

इन प्रत्ययों को इस प्रकार पहिचानिये -

हलादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय - ***ति, सि, मि।***
अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय - कोई नहीं।
हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय - तः, थः, थ, वः, मः, ते, से, ध्वे, वहे, महे।
अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय - अन्ति, आते, अते, आथे, ए।

लोट् लकार

प्र. पु.	***तु***, तात्	ताम्	अन्तु	ताम्	आताम्	अताम्
म. पु.	हि, तात्	तम्	त	स्व	आथाम्	ध्वम्
उ. पु	***आनि***	***आव***	***आम***	***ऐ***	***आवहै***	***आमहै***

इन प्रत्ययों को इस प्रकार पहिचानिये -

हलादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय - **तु** ।
अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय - आनि, आव, आम, ऐ, आवहै, आमहै।
हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय - हि, तात्, ताम्, तात्, तम्, त, ताम्, स्व, ध्वम्।
अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय - अन्तु, आताम्, अताम्, आथाम्।

लङ् लकार

प्र. पु.	***त्***	ताम्	अन्	त	आताम्	अत
म. पु.	***स् (:)***	तम्	त	थाः	आथाम्	ध्वम्
उ. पु.	***अम्***	व	म	इ	वहि	महि

इन प्रत्ययों को इस प्रकार पहिचानिये -

हलादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय - ***त्, स्।***
अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय - अम्।
हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय - ताम्, तम्, त, व, म, त, थाः, ध्वम्, वहि, महि।
अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय - अन्, आताम्, अत, आथाम्, इ।

विधिलिङ् लकार

प्र. पु.	यात्	याताम्	युः	ईत	ईयाताम्	ईरन्
म. पु.	याः	यातम्	यात	ईथाः	ईयाथाम्	ईध्वम्
उ. पु.	याम्	याव	याम	ईय	ईवहि	ईमहि

इन प्रत्ययों को इस प्रकार पहिचानिये -

इनमें 'य' से प्रारम्भ होने वाले सारे परस्मैपदी प्रत्यय हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय हैं तथा 'ई' से प्रारम्भ होने वाले सारे आत्मनेपदी प्रत्यय अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय हैं।

ये ७४ प्रत्यय अदादि, जुहोत्यादि, स्वादि रुधादि, तनादि, क्र्यादि गणों के धातुओं लिये तथा यङ्लुगन्त धातुओं के लिये हैं।

अदभ्यस्तात् - हम जानते हैं कि जब भी किसी धातु को द्वित्व होता

है, तब उभे अभ्यस्तम् सूत्र से दोनों का नाम अभ्यस्त हो जाता है। ऐसे अभ्यस्त धातुओं से परे आने वाले - अन्ति की जगह अति / अन्तु की जगह अतु / तथा अन् की जगह उः / प्रत्यय लगते हैं। ये तीनों प्रत्यय अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय हैं। इस प्रकार द्वितीयगण समूह के प्रत्ययों की संख्या ७७ हुई।

जब भी किसी धातु से ये प्रत्यय लगें, तब हमें सबसे पहिले यही निर्णय करना चाहिये कि धातु से लगा हुआ प्रत्यय, इन चार वर्गों में से किस वर्ग का है। अब हम एक एक गण के धातुओं को लेकर उनके धातुरूप बनायें -

क्र्यादिगण के धातुओं के लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् लकारों के रूप बनाने की विधि

क्र्यादिभ्यः श्ना - क्र्यादिगण का विकरण 'श्ना' है। लट्, लोट्, लङ् तथा विधिलिङ् लकार के कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्यय तथा सार्वधातुक कृत् प्रत्यय परे होने पर क्र्यादिगण के धातुओं से श्ना विकरण लगाना चाहिये।

अब कल्पना कीजिये कि क्र्यादिगण के जो ६१ धातु हैं, उनके सामने लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् लकार के तिङ् सार्वधातुक प्रत्यय बैठे हुए हैं। अतः क्र्यादिगण के इन सारे धातुओं से 'श्ना' विकरण लगाइये।

विशेष - धातु से ज्यों ही कोई प्रत्यय लगता है, त्योंही धातु का नाम 'अङ्ग' हो जाता है। यथा 'क्री' यह धातु है। इसमें 'श्ना' प्रत्यय लगते ही 'क्री' धातु श्ना प्रत्यय का अङ्ग बन जाता है, किन्तु जब क्री + श्ना से 'ति' प्रत्यय लगाया जाता है, यथा - क्री + श्ना + ति, तब इसमें क्री + श्ना = क्रीणा, यह पूरा का पूरा, 'ति' प्रत्यय का अङ्ग बन जाता है।

यह बात बुद्धि में एकदम स्पष्ट होना चाहिये।

हम जानते हैं कि धातु रूप बनाने की प्रक्रिया के दो खण्ड होते हैं -

१. धातु + विकरण को जोड़कर तिङ् तथा कृत् सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग बनाना।

२. इस धातु + विकरण को जोड़कर, बने हुए अङ्ग में, तिङ् तथा कृत् सार्वधातुक प्रत्यय लगाना।

क्र्यादिगण के धातुओं में श्ना विकरण को जोड़कर, तिङ् तथा कृत् सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग बनाना

धातुपाठ में क्रमाङ्क १४७३ से १५३३ तक क्र्यादिगण के धातु हैं। इन

धातुओं में 'क्र्यादिभ्यः श्ना' सूत्र से श्ना विकरण को जोड़कर, तिङ् तथा कृत् सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग तैयार करना है।

ध्यान रहे कि यह श्ना प्रत्यय, हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय है।

सार्वधातुकमपित् - जो अपित् सार्वधातुक प्रत्यय हैं, उन्हें ङित् न होते हुए भी ङित् जैसा मान लिया जाता है। अतः श्ना को ङित् प्रत्यय भी कह सकते हैं। इसके लगने पर वे सारे कार्य किये जाते हैं, जो कार्य ङित् प्रत्यय लगने पर किये जाते हैं।

अब धातुपाठ खोल लें, और क्र्यादिगण के धातुओं में 'श्ना' प्रत्यय लगाने का कार्य हम खण्ड खण्ड में करें।

१. क्र्यादिगण के १४७३ से १४८१ तक, तथा १५०४ से १५०७ तक के अजन्त धातु + श्ना प्रत्यय

क्री + श्ना - क्री + ना / श्ना प्रत्यय के ङित्वत् होने के कारण, यहाँ 'क्ङिति च' सूत्र से गुणनिषेध करके, धातुओं में प्रत्यय को ज्यों का त्यों जोड़ दें -

क्री + श्ना = क्रीणा   प्री + श्ना = प्रीणा
श्री + श्ना = श्रीणा   मी + श्ना = मीना
सि + श्ना = सिना   स्कु + श्ना = स्कुना
यु + श्ना = युना   क्नू + श्ना = क्नूना
द्रू + श्ना = द्रूणा   व्री + श्ना = व्रीणा
भ्री + श्ना = भ्रीणा   क्षी + श्ना = क्षीणा
वृ + श्ना = वृणा

वेद के लिये विशेष -

मीनातेर्निगमे - वेद के विषय में 'मीञ् हिंसायाम्' धातु को शित् प्रत्यय परे होने पर ह्रस्व होता है। अत : मी + श्ना = मिना बनाइये। यथा - प्रमिणन्ति व्रतानि। **अब यहाँ णत्व विधि का स्मरण करें -**

रषाभ्यां नो णः समानपदे - र् अथवा ष् के बाद आने वाले 'न्' को 'ण्' होता है, समानपद में।

ऋवर्णान्नस्य णत्वं वाच्यम् - 'ऋ' के बाद आने वाले 'न्' को भी 'ण्' होता है, समानपद में।

अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि - र्, ष्, ॠ के बाद 'न्' तो आया हो परन्तु र् + न् / ष् + न् / ॠ + न् / में र्, ष्, ॠ तथा उनके आगे आने वाले न् के बीच में यदि अट् अर्थात् अ, इ, उ, ॠ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र, का, कवर्ग, पवर्ग का, आङ् का, अथवा अनुस्वार का व्यवधान हो तो भी 'न्' को ण् हो जाता है। यथा -

ऊपर क्री + ना = क्रीणा / प्री + ना = प्रीणा को देखिये। इनमें 'र्' के बाद 'न्' तो आया है, किन्तु ध्यान दीजिये कि इनमें र् + न् के बीच में 'ई' है, तब भी 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' सूत्र से न् को ण् हो गया है।

आगे आने वाले गृह् + श्ना = गृह्णा / आदि में 'ॠ' और 'न्' के बीच में 'ह्' है। तब भी 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' सूत्र से न् को ण् हो गया है।

विशेष - युना, सिना, मीना आदि में आने वाले 'न' के पूर्व में र् अथवा ष् नहीं हैं, इसलिये इनके न् को ण् नहीं हुआ है।

२. क्र्यादिगण के १४८२ से १५०३ तक के प्वादि धातु + श्ना प्रत्यय

प्वादीनां ह्रस्वः - क्र्यादिगण के धातुओं में क्रमाङ्क १४८२ (पू) धातु से क्रमाङ्क १५०३ (प्ली) तक के धातु, प्वादि धातु कहलाते है। इन्हें शित् प्रत्यय परे होने पर ह्रस्व होता है।

श्ना प्रत्यय परे होने पर, इन धातुओं को 'प्वादीनां ह्रस्वः' सूत्र से ह्रस्व कीजिये। तो तिङ् तथा कृत् सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये इनके अङ्ग इस प्रकार बने -

पू	+	श्ना	=	पुना	दॄ	+	श्ना	=	दृणा
लूञ्	+	श्ना	=	लुना	जॄ	+	श्ना	=	जृणा
स्तॄञ्	+	श्ना	=	स्तृणा	नॄ	+	श्ना	=	नृणा
कॄञ्	+	श्ना	=	कृणा	कॄ	+	श्ना	=	कृणा
वॄञ्	+	श्ना	=	वृणा	ॠ	+	श्ना	=	ऋणा
धू	+	श्ना	=	धुना	गॄ	+	श्ना	=	गृणा
शॄ	+	श्ना	=	शृणा	री	+	श्ना	=	रिणा
पॄ	+	श्ना	=	पृणा	ली	+	श्ना	=	लिना

वॄ	+	श्ना	=	वृणा	ब्ली	+	श्ना	=	ब्लिना
भॄ	+	श्ना	=	भृणा	प्ली	+	श्ना	=	प्लिना
मॄ	+	श्ना	=	मृणा					

इसका अपवाद – ज्या धातु

विशेष – ज्या धातु भी प्वादि अन्तर्गण में है, परन्तु यहाँ 'प्वादीनां ह्रस्वः' से ह्रस्व होने के पूर्व ही 'ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च' इस सूत्र से सम्प्रसारण होता है।

इग्यणः सम्प्रसारणम् – य्, व्, र्, ल् को इ, उ, ऋ, लृ हो जाना सम्प्रसारण होना कहलाता है। ज्या + श्ना - ज् इ + श्ना।

अब 'हलः' सूत्र से इस 'इ' को दीर्घ होकर - ज् + ई + ना बनता है। अनन्तर प्वादीनां ह्रस्वः सूत्र से इस 'ई' को ह्रस्व होकर पुनः ज् + इ + ना = जिना, बन जाता है।

विशेष – दृणा, ऋणा, मृणा, आदि में जो ऋ के बाद आने वाले न् को ण् हुआ है, वह 'ऋवर्णान् नस्य णत्वं वाच्यम्' इस वार्तिक से हुआ है।

३. क्र्यादिगण का ज्ञा धातु + श्ना प्रत्यय

ज्ञाजनोर्जा – शित् प्रत्यय परे होने पर, ज्ञा धातु (१५०८) को जा आदेश होता है। ज्ञा + श्ना - जा + ना = जाना।

४. ग्रह् धातु + श्ना प्रत्यय

'ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च' इस सूत्र से सम्प्रसारण होकर - ग्रह् + श्ना - गृह् + ना = गृह्णा।

गृह्णा में जो 'ऋ' के बाद आने वाले 'न्' को 'ण्' हुआ है, वह 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' इस सूत्र से हुआ है।

५. क्र्यादिगण के अनिदित् धातु + श्ना प्रत्यय

अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति – अनिदित् धातुओं की उपधा के 'न्' का लोप होता है, कित् ङित् प्रत्यय परे होने पर।

बन्ध्	+	श्ना	=	बध्ना	श्रन्थ्	+	श्ना	=	श्रथ्ना
ग्रन्थ्	+	श्ना	=	ग्रथ्ना	कुन्थ्	+	श्ना	=	कुथ्ना
मन्थ्	+	श्ना	=	मथ्ना					

६. क्र्यादिगण के शेष धातु + श्ना प्रत्यय

शेष धातुओं में श्ना को ज्यों को त्यों जोड़ दीजिये क्योंकि श्ना के ङित् होने के कारण अङ्ग को गुणकार्य नहीं होगा। जैसे -

पुष + श्ना = पुष्णा / मृद् + श्ना = मृद्ना आदि।

ध्यान दीजिये कि श्ना प्रत्यय के ङित् होने के कारण, यहाँ पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से गुण नहीं हुआ है।

इस प्रकार क्र्यादिगण के सारे धातुओं में विकरण लगाने का कार्य पूर्ण हुआ।

क्र्यादिगण के धातुपाठ को सामने रखकर, उसमें पञ्चम स्तम्भ में दिये हुए अङ्गों से इन अङ्गों को मिलाकर, इनकी शुद्धता प्रमाणित कर लीजिये।

इन अङ्गों का नाम श्नान्त अङ्ग है। ध्यान दें कि ये सब के सब आकारान्त हैं। धातु + विकरण से बने हुए, इन्हीं अङ्गों में सारे कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्यय लगाये जाते हैं।

श्नान्त अङ्गों में लट्, लोट्, लङ्, तथा विधिलिङ् इन सार्वधातुक लकारों के प्रत्यय जोड़ने की विधि

हम जानते हैं कि सार्वधातुक प्रत्यय चार प्रकार के हैं। इन चारों प्रकार के प्रत्ययों में इन श्नान्त अङ्गों को जोड़ने की विधि बतला रहे हैं।

लङ् लकार के प्रत्यय परे होने पर, 'लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः' सूत्र से हलादि धातुओं को 'अट्' का, तथा 'आडजादीनाम्' सूत्र से अजादि धातुओं को 'आट्' का आगम अवश्य कीजिये।

१. हलादि पित् प्रत्यय परे होने पर श्नान्त अङ्गों को कुछ नहीं होता।

क्रीणा + ति = क्रीणाति   अक्रीणा + त् = अक्रीणात्
क्रीणा + सि = क्रीणासि   अक्रीणा + स् (:) = अक्रीणाः
क्रीणा + मि = क्रीणामि   क्रीणा + तु = क्रीणातु

२. अजादि पित् प्रत्यय परे होने पर भी श्नान्त अङ्गों को कुछ नहीं होता। केवल यथाप्राप्त सन्धि होती है -

क्रीणा + आनि = क्रीणानि   क्रीणा + ऐ = क्रीणै
क्रीणा + आव = क्रीणाव   क्रीणा + आवहै = क्रीणावहै
क्रीणा + आम = क्रीणाम   क्रीणा + आमहै = क्रीणामहै

अक्रीणा + अम् = अक्रीणाम्

३. हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर 'ई हल्यघोः' सूत्र से श्नान्त अङ्गों के 'आ' को ई होता है।

क्रीणा	+	तः	=	क्रीणीतः	क्रीणा	+	यातम्	=	क्रीणीयातम्
क्रीणा	+	थः	=	क्रीणीथः	क्रीणा	+	यात	=	क्रीणीयात
क्रीणा	+	थ	=	क्रीणीथ	क्रीणा	+	याम्	=	क्रीणीयाम्
क्रीणा	+	वः	=	क्रीणीवः	क्रीणा	+	याव	=	क्रीणायाव
क्रीणा	+	मः	=	क्रीणीमः	क्रीणा	+	याम	=	क्रीणायाम
अक्रीणा	+	ताम्	=	अक्रीणीताम्	क्रीणा	+	ते	=	क्रीणीते
अक्रीणा	+	तम्	=	अक्रीणीतम्	क्रीणा	+	से	=	क्रीणीषे
अक्रीणा	+	त	=	अक्रीणीत	क्रीणा	+	ध्वे	=	क्रीणीध्वे
अक्रीणा	+	व	=	अक्रीणीव	क्रीणा	+	वहे	=	क्रीणीवहे
अक्रीणा	+	म	=	अक्रीणीम	क्रीणा	+	महे	=	क्रीणीमहे
क्रीणा	+	ताम्	=	क्रीणीताम्	अक्रीणा	+	त	=	अक्रीणीत
क्रीणा	+	हि	=	क्रीणीहि	अक्रीणा	+	थाः	=	अक्रीणीथाः
क्रीणा	+	तम्	=	क्रीणीतम्	अक्रीणा	+	ध्वम्	=	अक्रीणीध्वम्
क्रीणा	+	त	=	क्रीणीत	अक्रीणा	+	वहि	=	अक्रीणीवहि
क्रीणा	+	यात्	=	क्रीणीयात्	अक्रीणा	+	महि	=	अक्रीणीमहि
क्रीणा	+	याताम्	=	क्रीणीयाताम्	क्रीणा	+	ताम्	=	क्रीणीताम्
क्रीणा	+	युः	=	क्रीणीयुः	क्रीणा	+	स्व	=	क्रीणीष्व
क्रीणा	+	याः	=	क्रीणीयाः	क्रीणा	+	ध्वम्	=	क्रीणीध्वम्

ध्यान रहे कि - क्रीणीषे / क्रीणीष्व में 'आदेशप्रत्यययोः' सूत्र से प्रत्यय के 'स्' को षत्व हुआ है।

४. अजादि अपित् प्रत्यय परे होने पर, 'श्नाभ्यस्तयोरातः' सूत्र से श्नान्त अङ्गों के अन्तिम 'आ' का लोप होता है।

जैसे - क्रीणा + अन्ति - क्रीण् + अन्ति = क्रीणन्ति, आदि।

क्रीणा	+	अन्ति	=	क्रीणन्ति	क्रीणा	+	ईमहि	=	क्रीणीमहि
क्रीणा	+	अन्तु	=	क्रीणन्तु	क्रीणा	+	आते	=	क्रीणाते
क्रीणा	+	अते	=	क्रीणते	क्रीणा	+	आथे	=	क्रीणाथे

अक्रीणा + अन्	= अक्रीणन्	क्रीणा	+	ए	= क्रीणे
क्रीणा + ईत	= क्रीणीत	अक्रीणा	+	आताम्	= अक्रीणाताम्
क्रीणा + ईयाताम्	= क्रीणीयाताम्	अक्रीणा	+	अत	= अक्रीणत
क्रीणा + ईरन्	= क्रीणीरन्	अक्रीणा	+	आथाम्	= अक्रीणाथाम्
क्रीणा + ईथाः	= क्रीणीथाः	अक्रीणा	+	इ	= अक्रीणि
क्रीणा + ईयाताम्	= क्रीणीयाताम्	क्रीणा	+	आताम्	= क्रीणाताम्
क्रीणा + ईध्वम्	= क्रीणीध्वम्	क्रीणा	+	अताम्	= क्रीणताम्
क्रीणा + ईय	= क्रीणीय	क्रीणा	+	आथाम्	= क्रीणाथाम्
क्रीणा + ईवहि	= क्रीणीवहि ।				

अब क्र्यादिगण के उभयपदी अजन्त 'क्री' धातु के ये पूरे रूप व्यवस्थित करके दिये जा रहे हैं -

परस्मैपद **आत्मनेपद**

लट् लकार (वर्तमान काल)

प्र.पु.	क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति	क्रीणीते	क्रीणाते	क्रीणते
म.पु.	क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ	क्रीणीषे	क्रीणाथे	क्रीणीध्वे
उ.पु.	क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः	क्रीणे	क्रीणीवहे	क्रीणीमहे

लङ् लकार (भूतकाल)

प्र.पु.	अक्रीणात्	अक्रीणीताम्	अक्रीणन्	अक्रीणीत	अक्रीणाताम्	अक्रीणत
म.पु.	अक्रीणाः	अक्रीणीतम्	अक्रीणीत	अक्रीणीथाः	अक्रीणाथाम्	अक्रीणीध्वम्
उ.पु.	अक्रीणाम्	अक्रीणीव	अक्रीणीम	अक्रीणि	अक्रीणीवहि	अक्रीणीमहि

लोट् लकार (आज्ञार्थ)

प्र.पु.	क्रीणातु क्रीणीतात्	क्रीणीताम्	क्रीणन्तु	क्रीणीताम्	क्रीणाताम्	क्रीणताम्
म.पु.	क्रीणीहि क्रीणीतात्	क्रीणीतम्	क्रीणीत	क्रीणीष्व	क्रीणाथाम्	क्रीणीध्वम्
उ.पु.	क्रीणानि	क्रीणाव	क्रीणाम	क्रीणै	क्रीणावहै	क्रीणामहै

विधिलिङ् लकार(विध्यर्थ)

प्र.पु	क्रीणीयात्	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयुः	क्रीणीत	क्रीणीयाताम्	क्रीणीरन्
म.पु.	क्रीणीयाः	क्रीणीयातम्	क्रीणीयात	क्रीणीथाः	क्रीणीयाथाम्	क्रीणीध्वम्
उ.पु.	क्रीणीयाम्	क्रीणीयाव	क्रीणीयाम	क्रीणीय	क्रीणीवहि	क्रीणीमहि

क्र्यादिगण में १४७३ से १५०८ तक अजन्त धातु हैं, उन सभी के रूप

इसी प्रकार बनाइये।

क्र्यादिगण के हलन्त धातुओं से परे आने वाले, 'हि' प्रत्यय के लिये विशेष विधि

क्र्यादिगण में १५०९ से १५३३ तक हलन्त धातु हैं। इनके रूप भी इसी प्रकार बनते हैं। केवल 'हि' प्रत्यय परे होने पर इन सूत्रों को अवश्य ध्यान रखें-

हल: श्न: शानज्झौ - हलन्त धातुओं से परे श्ना प्रत्यय हो, और उस श्ना प्रत्यय के बाद 'हि' प्रत्यय हो, तो श्ना प्रत्यय के स्थान पर, शानच् आदेश होता है। जैसे - बध्ना + हि / बध् + शानच् + हि / बध् + आन + हि = बधान + हि / देखिये कि अब यह 'बधान' अदन्त अङ्ग है।

अतो हे: - अदन्त अङ्ग से परे आने वाले हि प्रत्यय का लोप होता है। बधान + हि = बधान।

सारे हलन्त धातुओं से 'हि' प्रत्यय लगाकर रूप इस प्रकार बने -

मुष्णा	+	हि	=	मुषाण	गृह्णा	+	हि	=	गृहाण
मृद्ना	+	हि	=	मृदान	पुष्णा	+	हि	=	पुषाण
बध्ना	+	हि	=	बधान	हेठ्णा	+	हि	=	हेठाण
मथ्ना	+	हि	=	मथान	श्रथ्ना	+	हि	=	श्रथान
ग्रथ्ना	+	हि	=	ग्रथान	कुथ्ना	+	हि	=	कुथान
मृड्णा	+	हि	=	मृडाण	गुध्ना	+	हि	=	गुधान
कुष्णा	+	हि	=	कुषाण	क्षुभ्ना	+	हि	=	क्षुभाण
नभ्ना	+	हि	=	नभान	तुभ्ना	+	हि	=	तुभान
क्लिश्ना	+	हि	=	क्लिशान	अश्ना	+	हि	=	अशान
ध्रस्ना	+	हि	=	ध्रसान	इष्णा	+	हि	=	इषाण
विष्णा	+	हि	=	विषाण	प्रुष्णा	+	हि	=	प्रुषाण
प्लुष्णा	+	हि	=	प्लुषाण	खच्ञा	+	हि	=	खचान

हमने जाना कि -

क्र्यादिगण के अजन्त तथा हलन्त धातुओं के रूप बनाने की सारी विधि तो एक समान है -

किन्तु क्र्यादिगण १५०९ से १५३३ तक जो हलन्त धातु हैं, उनके लोट् लकार मध्यम पुरुष एकवचन में श्ना को शानच् होता है, और 'अतो

हे:' सूत्र से 'हि' प्रत्यय का लोप करके बधान, गृहाण, मुषाण आदि रूप बनते हैं।

शेष रूप 'क्री धातु' के समान ही रहते हैं। क्र्यादिगण के हलन्त धातुओं में 'हि' प्रत्यय लगाते समय इस विशेष विधि को अवश्य ध्यान रखें।

वेद के लिये विशेष -

छन्दसि शायजपि - वेद में, हि प्रत्यय परे होने पर, श्ना प्रत्यय के स्थान पर विकल्प से शायच् तथा शानच् आदेश होते हैं। जैसे - गृभाय जिह्वया मधु/ बधान पशुम्।

अब क्र्यादिगण के उभयपदी हलन्त 'ग्रह् - गृह्णा' धातु के ये पूरे रूप व्यवस्थित करके दिये जा रहे हैं। सारे हलन्त धातुओं के रूप इसी प्रकार बनाइये।

लट् लकार (वर्तमान काल)

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
प्र.पु.	गृह्णाति	गृह्णीतः	गृह्णन्ति	गृह्णीते	गृह्णाते	गृह्णते
म.पु.	गृह्णासि	गृह्णीथः	गृह्णीथ	गृह्णीषे	गृह्णाथे	गृह्णीध्वे
उ.पु.	गृह्णामि	गृह्णीवः	गृह्णीमः	गृह्णे	गृह्णीवहे	गृह्णीमहे

लङ् लकार (भूतकाल)

प्र.पु.	अगृह्णात्	अगृह्णीताम्	अगृह्णन्	अगृह्णीत	अगृह्णाताम्	अगृह्णत
म.पु.	अगृह्णाः	अगृह्णीतम्	अगृह्णीत	अगृह्णीथाः	अगृह्णाथाम्	अगृह्णीध्वम्
उ.पु.	अगृह्णाम्	अगृह्णीव	अगृह्णीम	अगृह्णि	अगृह्णीवहि	अगृह्णीमहि

लोट् लकार (आज्ञार्थ)

प्र.पु.	गृह्णातु गृह्णीतात्	गृह्णीताम्	गृह्णन्तु	गृह्णीताम्	गृह्णाताम्	गृह्णताम्
म.पु.	गृहाण	गृह्णीतम्	गृह्णीत	गृह्णीष्व	गृह्णाथाम्	गृह्णीध्वम्
उ.पु.	गृह्णानि	गृह्णाव	गृह्णाम	गृह्णै	गृह्णावहै	गृह्णामहै

विधिलिङ् लकार (विध्यर्थ)

प्र.पु	गृह्णीयात्	गृह्णीयाताम्	गृह्णीयुः	गृह्णीत	गृह्णीयाताम्	गृह्णीरन्
म.पु.	गृह्णीयाः	गृह्णीयातम्	गृह्णीयात	गृह्णीथाः	गृह्णीयाथाम्	गृह्णीध्वम्
उ.पु.	गृह्णीयाम्	गृह्णीयाव	गृह्णीयाम	गृह्णीय	गृह्णीवहि	गृह्णीमहि

यह क्र्यादिगण के समस्त धातुओं के लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् तथा लकारों के रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।

स्वादिगण के धातुओं के लट्, लोट्, लङ् तथा विधिलिङ् लकारों के रूप बनाने की विधि

धातुपाठ में क्रमाङ्क १२४७ से १२८० तक स्वादिगण के धातु हैं।

हम जानते हैं कि सार्वधातुक लकारों के धातुरूप बनाने की प्रक्रिया के दो खण्ड होते हैं -

१. धातु + विकरण को जोड़ना।

२. इस धातु + विकरण को जोड़कर, बने हुए अङ्ग में, तिङ् तथा कृत् सार्वधातुक प्रत्यय लगाना।

अतः पहिले हम स्वादिगण के धातुओं में 'श्नु' विकरण को जोड़ें -

स्वादिभ्यः श्नुः - स्वादिगण का विकरण श्नु है। स्वादिगण के धातुओं से कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्यय परे रहने पर श्नु विकरण लगता है।

सार्वधातुकमपित् - जो अपित् सार्वधातुक प्रत्यय हैं, उन्हें ङित् न होते हुए भी ङित् जैसा मान लिया जाता है। अतः श्नु प्रत्यय को ङित् प्रत्यय भी कह सकते हैं। इसके लगने पर वे सारे कार्य किये जाते हैं, जो कार्य ङित् प्रत्यय लगने पर किये जाते हैं। जैसे -

श्नु प्रत्यय परे होने पर, सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से प्राप्त होने वाले गुण का निषेध क्ङिति च सूत्र से हो जाता है। यथा -

चि + श्नु - क्ङिति च सूत्र से गुणनिषेध होकर = चिनु / सु + श्नु - क्ङिति च सूत्र से गुणनिषेध होकर = सुनु, आदि।

श्नु प्रत्यय परे होने पर, पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से प्राप्त होने वाले गुण का निषेध भी क्ङिति च सूत्र से हो जाता है। यथा -

तिग् + श्नु - क्ङिति च सूत्र से गुणनिषेध होकर = तिग्नु / स्तिघ् + श्नु - क्ङिति च सूत्र से गुणनिषेध होकर = स्तिघ्नु / आदि।

स्वादिगण में १२४६ से १२६४ तक हमने अजन्त धातुओं को रखा है। ध्यान दें कि इन अजन्त धातुओं में जब श्नु प्रत्यय लगता है, जैसे - चि + नु = चिनु / सु + नु = सुनु आदि में, तब जो अङ्ग बनते हैं, उन अङ्गों के अन्तिम उकार के पूर्व कभी भी दो व्यञ्जनों का संयोग नहीं होता। अतः ये अङ्ग असंयोगपूर्व श्नु प्रत्ययान्त अङ्ग कहलाते हैं।

स्वादिगण में १२६५ से १२८० तक हमने हलन्त धातुओं को रखा है।

ध्यान दें कि इन हलन्त धातुओं में जब श्नु प्रत्यय लगता है, जैसे - आप् + नु = आप्नु / शक् + नु = शक्नु / आदि में, तब जो अङ्ग बनते हैं, उन अङ्गों के अन्तिम उकार के पूर्व में सदा दो या दो से अधिक व्यञ्जनों का संयोग होता ही है। अतः ये अङ्ग संयोगपूर्व श्नु प्रत्ययान्त अङ्ग कहलाते हैं।

अतः ध्यान दीजिये कि ये सारे के सारे अङ्ग श्नु प्रत्ययान्त उकारान्त अङ्ग हैं, परन्तु इन श्नुप्रत्ययान्त उकारान्त अङ्गों के दो वर्ग हैं -

१. स्वादिगण के अजन्त धातुओं (१२४७ से १२६४) में श्नु प्रत्यय लगाकर बने हुए अङ्ग 'असंयोगपूर्व श्नुप्रत्ययान्त उकारान्त' अङ्ग है।।

२. स्वादिगण के हलन्त धातुओं (१२६५ से १२८०) में श्नु प्रत्यय लगाकर बने हुए अङ्ग 'संयोगपूर्व श्नुप्रत्ययान्त उकारान्त' अङ्ग हैं।

इन दोनों प्रकार के अङ्गों को बुद्धि में अलग अलग रखें, क्योंकि दोनों के धातुरूप बनाने की विधि में अन्तर है।

अब हम दोनों वर्ग के धातुओं के रूप अलग अलग बनाकर देखें -

स्वादिगण के अजन्त धातुओं से बने हुए, असंयोगपूर्व श्नुप्रत्ययान्त अङ्गों से लट्, लोट्, लङ्, तथा विधिलिङ् लकारों के रूप बनाने की विधि

अब हम स्वादिगण के अजन्त धातुओं से (१२४७ से १२६४) बने हुए अङ्गों में से, किसी एक को ले लें, जैसे चिनु को। इस असंयोगपूर्व श्नुप्रत्ययान्त अङ्ग को सार्वधातुक प्रत्ययों में इस प्रकार जोड़ें -

असंयोगपूर्व श्नुप्रत्ययान्त अङ्ग + हलादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय

हलादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से अङ्ग के अन्तिम उ को गुण कीजिये -

चिनु	+	ति	=	चिनोति	अचिनु	+	स्	= अचिनोः
चिनु	+	सि	=	चिनोषि	अचिनु	+	त्	= अचिनोत्
चिनु	+	मि	=	चिनोमि	चिनु	+	तु	= चिनोतु

असंयोगपूर्व श्नुप्रत्ययान्त अङ्ग + अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय

अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर **सार्वधातुकार्धधातुकयोः** सूत्र से अङ्ग के अन्तिम उ को गुण कीजिये। चिनु + आनि - उ को गुण करके

- चिनो + आनि / अब ओ को एचोऽयवायाव: सूत्र से अवादेश करके - चिनो + आनि - चिनव् + आनि = चिनवानि बनाइये। अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, पूरे रूप इस प्रकार बने -

चिनु + आनि - चिनो + आनि - चिनव् + आनि = चिनवानि
चिनु + आव - चिनो + आव - चिनव् + आव = चिनवाव
चिनु + आम - चिनो + आम - चिनव् + आम = चिनवाम
अचिनु + अम् - अचिनो + अम् - अचिनव् + अम् = अचिनवम्
चिनु + ऐ - चिनो + ऐ - चिनव् + ऐ = चिनवै
चिनु + आवहै - चिनो + आवहै - चिनव् + आवहै = चिनवावहै
चिनु + आमहै - चिनो + आमहै - चिनव् + आमहै = चिनवामहै

असंयोगपूर्व श्नुप्रत्ययान्त अङ्ग + हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय

हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्ययों के तीन वर्ग बनाइये -

१. असंयोगपूर्व श्नुप्रत्ययान्त अङ्ग + हि प्रत्यय

उतश्च प्रत्ययादसंयोगपूर्वात् - जिनके पूर्व में संयोग नहीं है, ऐसे असंयोगपूर्व उकारान्त अङ्गों से परे आने वाले, **'हि'** प्रत्यय का नित्य लोप हो जाता है, चाहे वह उकारान्त अङ्ग 'श्नु' प्रत्यय से बना हो चाहे 'उ' प्रत्यय से। जैसे - चिनु + हि = चिनु।

२. असंयोगपूर्व श्नुप्रत्ययान्त अङ्ग + व, म से प्रारम्भ होने वाले प्रत्यय

लोपश्चास्यान्यतरस्यां म्वोः - जो असंयोगपूर्व उकारान्त अङ्ग हैं, उन अङ्गों के 'उ' का विकल्प से लोप होता है, वकारादि तथा मकारादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर।

हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्ययों में से, वः, मः, वहे, महे, व, म, वहि, महि, ये ८ हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय व, म, से शुरू हो रहे हैं।

इनके परे होने पर, इन अङ्गों के अन्तिम 'उ' का, विकल्प से लोप कीजिये। जैसे -

				लोप न होने पर	लोप होने पर
चिनु	+	वः	=	चिनुवः	चिन्वः
चिनु	+	मः	=	चिनुमः	चिन्मः

चिनु	+	वहे	=	चिनुवहे	चिन्वहे
चिनु	+	महे	=	चिनुमहे	चिन्महे
अचिनु	+	वः	=	अचिनुव	अचिन्व
अचिनु	+	वहि	=	अचिनुवहि	अचिन्वहि
अचिनु	+	महि	=	अचिनुमहि	अचिन्महि

ध्यातव्य – संयोगपूर्व श्नुप्रत्ययान्त अङ्गों में यह 'हिलोप' तथा 'उलोप' कदापि मत कीजिये।

इनको छोड़कर शेष २७ हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्ययों के परे होने पर -

असंयोगपूर्व श्नुप्रत्ययान्त अङ्गों को कुछ नहीं होता। शेष २७ हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय इस प्रकार हैं -

लट् लकार परस्मैपद -

चिनु + तः = चिनुतः
चिनु + थः = चिनुथः
चिनु + थ = चिनुथ

लोट् लकार परस्मैपद -

चिनु + ताम् = चिनुताम्
चिनु + तम् = चिनुतम्
चिनु + त = चिनुत

लङ् लकार परस्मैपद -

अचिनु + ताम् = अचिनुताम्
अचिनु + तम् = अचिनुतम्
अचिनु + त = अचिनुत

विधिलिङ् लकार परस्मैपद -

चिनुं + यात् = चिनुयात्
चिनु + याताम् = चिनुयाताम्
चिनु + युः = चिनुयुः
चिनु + याः = चिनुयाः
चिनु + यातम् = चिनुयातम्

चिनु + यात = चिनुयात
चिनु + याम् = चिनुयाम्
चिनु + याव = चिनुयाव
चिनु + याम = चिनुयाम

लट् लकार आत्मनेपद -

चिनु + ते = चिनुते
चिनु + से = चिनुषे
चिनु + ध्वे = चिनुध्वे

लङ् लकार आत्मनेपद -

अचिनु + त = अचिनुत
अचिनु + थाः = अचिनुथाः
अचिनु + ध्वम् = अचिनुध्वम्

लोट् लकार आत्मनेपद -

चिनु + ताम् = चिनुताम्
चिनु + स्व = चिनुष्व
चिनु + ध्वम् = चिनुध्वम्

असंयोगपूर्व श्नुप्रत्ययान्त अङ्ग + अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय

हुश्नुवोः सार्वधातुके - हु धातु को तथा असंयोग पूर्व श्नुप्रत्ययान्त अङ्ग के 'उ' को यण् = 'व्' ही होता है, अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर। यथा -

लट् लकार परस्मैपद -

चिनु + अन्ति - चिन्व् + अन्ति = चिन्वन्ति

लोट् लकार परस्मैपद -

चिनु + अन्तु - चिन्व् + अन्तु = चिन्वन्तु

लङ् लकार परस्मैपद -

अचिनु + अन् - अचिन्व् + अन् = अचिन्वन्

लट् लकार आत्मनेपद -

चिनु + आते - चिन्व् + आते = चिन्वाते

चिनु	+	अते	-	चिन्व्	+	अते	=	चिन्वते
चिनु	+	आथे	-	चिन्व्	+	आथे	=	चिन्वाथे
चिनु	+	ए	-	चिन्व्	+	ए	=	चिन्वे

लोट् लकार आत्मनेपद -

चिनु	+	आताम्	-	चिन्व्	+	आताम्	=	चिन्वाताम्
चिनु	+	अताम्	-	चिन्व्	+	अताम्	=	चिन्वताम्
चिनु	+	आथाम्	-	चिन्व्	+	आथाम्	=	चिन्वाथाम्

लङ् लकार आत्मनेपद -

अचिनु	+	आताम्	-	अचिन्व्	+	आताम्	=	अचिन्वाताम्

विधिलिङ् लकार आत्मनेपद -

चिनु	+	ईत	-	चिन्व्	+	ईत	=	चिन्वीत
चिनु	+	ईयाताम्	-	चिन्व्	+	ईयाताम्	=	चिन्वीयाताम्
चिनु	+	ईरन्	-	चिन्व्	+	ईरन्	=	चिन्वीरन्
चिनु	+	ईथाः	-	चिन्व्	+	ईथाः	=	चिन्वीथाः
चिनु	+	ईयाथाम्	-	चिन्व्	+	ईयाथाम्	=	चिन्वीयाथाम्
चिनु	+	ईध्वम्	-	चिन्व्	+	ईध्वम्	=	चिन्वीध्वम्
चिनु	+	ईय	-	चिन्व्	+	ईय	=	चिन्वीय
चिनु	+	ईवहि	-	चिन्व्	+	ईवहि	=	चिन्वीवहि
चिनु	+	ईमहि	-	चिन्व्	+	ईमहि	=	चिन्वीमहि

इन्हें संक्षेप में इस प्रकार याद रखें -

स्वादिगण के अजन्त धातुओं में श्नु लगाकर बने हुए असंयोगपूर्व उकारान्त अङ्गों से -

१. हलादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर गुण होता है।

२. अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर गुण, अवादेश होते हैं।

३. अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर यण् होता है।

४. हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्ययों में से -

आठ वकारादि, मकारादि प्रत्यय परे होने पर, श्नु के 'उ' का विकल्प से लोप होता है।

'हि' प्रत्यय का नित्य लोप होता है।

शेष २७ हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर कुछ नहीं होता।

स्वादिगण के उभयपदी अजन्त 'चि - चिनु' धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

लट् लकार

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
प्र.पु.	चिनोति	चिनुतः	चिन्वन्ति	चिनुते	चिन्वाते	चिन्वते
म.पु.	चिनोषि	चिनुथः	चिनुथ	चिनुषे	चिन्वाथे	चिनुध्वे
उ.पु.	चिनोमि	चिनुवः	चिनुमः	चिन्वे	चिनुवहे	चिनुमहे
		चिन्वः	चिन्मः		चिन्वहे	चिन्महे

लङ् लकार

प्र.पु.	अचिनोत्	अचिनुताम्	अचिन्वन्	अचिनुत	अचिन्वाताम्	अचिन्वत
म. पु.	अचिनोः	अचिनुतम्	अचिनुत	अचिनुथाः	अचिन्वाथाम्	अचिनुध्वम्
उ.पु.	अचिनवम्	अचिनुव	अचिनुम	अचिन्वि	अचिनुवहि	अचिनुमहि
		अचिन्व	अचिन्म		अचिन्वहि	अचिन्महि

लोट् लकार

प्र. पु.	चिनोतु चिनुतात्	चिनुताम्	चिन्वन्तु	चिनुताम्	चिन्वाताम्	चिन्वताम्
म. पु.	चिनु	चिनुतम्	चिनुत	चिनुष्व	चिन्वाथाम्	चिनुध्वम्
उ. पु.	चिनवानि	चिनवाव	चिनवाम	चिनवै	चिनवावहै	चिनवामहै

विधिलिङ् लकार

प्र.पु.	चिनुयात्	चिनुयाताम्	चिनुयुः	चिन्वीत	चिन्वीयाताम्	चिन्वीरन्
म.पु.	चिनुयाः	चिनुयातम्	चिनुयात	चिन्वीथाः	चिन्वीयाथाम्	चिन्वीध्वम्
उ.पु.	चिनुयाम्	चिनुयाव	चिनुयाम	चिन्वीय	चिन्वीवहि	चिन्वीमहि

स्वादिगण के सारे अजन्त धातुओं के रूप इसी प्रकार बनाइये।

स्वादिगण के हलन्त धातुओं के रूप बनाने की विधि

स्वादिगण के हलन्त धातुओं (१२६५ से १२८०) में श्नु प्रत्यय लगाकर बने हुए अङ्ग संयोगपूर्व हैं।

स्वादिगण के हलन्त धातुओं में कोई भी धातु उभयपदी नहीं है, अतः हम परस्मैपद के प्रत्यय लगाने के लिये, हलन्त शक् + नु = शक्नु, इस अङ्ग का प्रयोग करेंगे तथा आत्मनेपदी प्रत्यय लगाने के लिये हलन्त अश् + श्नु =

अश्नु, इस अङ्ग का प्रयोग करेंगे।

संयोगपूर्व श्नु प्रत्ययान्त अङ्ग + हलादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय

'चिनु' के समान ही सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से अङ्ग के अन्तिम 'उ' को गुण कीजिये। यथा -

शक्नु + ति = शक्नोति अशक्नु + त् = अशक्नोत्
शक्नु + सि = शक्नोषि अशक्नु + स् = अशक्नोः
शक्नु + मि = शक्नोमि शक्नु + तु = शक्नोतु

संयोगपूर्व श्नुप्रत्ययान्त अङ्ग + अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय

'चिनु' के समान ही सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से अङ्ग के अन्तिम 'उ' को गुण करके एचोऽयवायावः सूत्र से ओ को अव् आदेश कीजिये -

शक्नु + आनि - शक्नो + आनि - शक्नव् + आनि = शक्नवानि।

परस्मैपद के अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय -

शक्नु + आनि - शक्नव् + आनि = शक्नवानि
शक्नु + आव - शक्नव् + आव = शक्नवाव
शक्नु + आम - शक्नव् + आम = शक्नवाम
अशक्नु + अम् - अशक्नव् + अम् = अशक्नवम्

आत्मनेपद के अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय -

अश्नु + ऐ - अश्नव् + ऐ = अश्नवै
अश्नु + आवहै - अश्नव् + आवहै = अश्नवावहै
अश्नु + आमहै - अश्नव् + आमहै = अश्नवामहै

हमने जाना कि - पित् प्रत्यय परे होने पर, संयोगपूर्व उकारान्त अङ्ग तथा असंयोगपूर्व उकारान्त अङ्ग के रूप एक समान ही बनते हैं।

किन्तु अपित् प्रत्यय परे होने पर भेद है। वह इस प्रकार है -

संयोगपूर्व श्नुप्रत्ययान्त अङ्ग + अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय

स्वादिगण के हलन्त धातुओं के (१२६५ से १२८०) तक अङ्ग असंयोगपूर्व हैं, क्योंकि इनके अन्तिम उ के पूर्व दो व्यञ्जनों का संयोग है। जैसे -

आप्नु, शक्नु, स्तिघ्नु आदि को देखिये। इनके अन्त में श्नु प्रत्यय है तथा श्नु प्रत्यय के उ के पूर्व में, प् + न् / क् + न् / घ् + न्, इन व्यञ्जनों

का संयोग है।

ऐसे संयोगपूर्व श्नुप्रत्ययान्त अङ्गों के अन्तिम 'उ' को अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे हाने पर यण् न होकर, 'अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ' सूत्र से उवङ् (उव्) आदेश होता है, यथा -

लट् लकार परस्मैपद -

शक्नु + अन्ति - शक्नुव् + अन्ति = शक्नुवन्ति

लोट् लकार परस्मैपद -

शक्नु + अन्तु - शक्नुव् + अन्तु = शक्नुवन्तु

लङ् लकार परस्मैपद -

अशक्नु + अन् - अशक्नुव् + अन् = अशक्नुवन्

लट् लकार आत्मनेपद -

अश्नु + आते - अश्नुव् + आते = अश्नुवाते
अश्नु + अते - अश्नुव् + अते = अश्नुवते
अश्नु + आथे - अश्नुव् + आथे = अश्नुवाथे
अश्नु + ए - अश्नुव् + ए = अश्नुवे

लङ् लकार आत्मनेपद -

आट् का आगम करके - आट् + अश् + श्नु = आश्नु, बनाकर प्रत्यय लगाइये।

आश्नु + आताम् - आश्नुव् + आताम् = आश्नुवाताम्
आश्नु + अत - आश्नुव् + अत = आश्नुवत
आश्नु + आथाम् आश्नुव् + आथाम् = आश्नुवाथाम्
आश्नु + इ = आश्नुव् + इ = आश्नुवि

लोट् लकार आत्मनेपद -

अश्नु + आताम् - अश्नुव् + आताम् = अश्नुवाताम्
अश्नु + अताम् - अश्नुव् + अताम् = अश्नुवताम्
अश्नु + आथाम् - अश्नुव् + आथाम् = अश्नुवाथाम्

विधिलिङ् लकार आत्मनेपद -

अश्नु + ईत - अश्नुव् + ईत = अश्नुवीत
अश्नु + ईयाताम् - अश्नुव् + ईयाताम् = अश्नुवीयाताम्

अश्नु	+	ईरन्	-	अश्नुव्	+	ईरन्	=	अश्नुवीरन्
अश्नु	+	ईथाः	-	अश्नुव्	+	ईथाः	=	अश्नुवीथाः
अश्नु	+	ईयाथाम्	-	अश्नुव्	+	ईयाथाम्	=	अश्नुवीयाथाम्
अश्नु	+	ईध्वम्	-	अश्नुव्	+	ईध्वम्	=	अश्नुवीध्वम्
अश्नु	+	ईय	-	अश्नुव्	+	ईय	=	अश्नुवीय
अश्नु	+	ईवहि	-	अश्नुव्	+	ईवहि	=	अश्नुवीवहि
अश्नु	+	ईमहि	-	अश्नुव्	+	ईमहि	=	अश्नुवीमहि

संयोगपूर्व श्नुप्रत्ययान्त अङ्ग + हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय

संयोगपूर्व श्नुप्रत्ययान्त अङ्गों से वकारादि, मकारादि प्रत्यय परे होने पर, लोपश्चास्यान्यतरस्यां म्वोः' सूत्र से होने वाला 'उलोप' मत कीजिये।

'उतश्च प्रत्ययादसंयोगपूर्वात्' सूत्र से होने वाला 'हि' का लोप भी मत कीजिये।

अतः १२६५ से १२८० तक के हलन्त धातुओं से बने हुए संयोगपूर्व श्नुप्रत्ययान्त अङ्गों से, सारे हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर 'क्ङिति च' सूत्र से गुण निषेध होने के कारण अङ्ग को कुछ मत कीजिये। जैसे -

लट् लकार परस्मैपद -

शक्नु	+	तः	=	शक्नुतः
शक्नु	+	थः	=	शक्नुथः
शक्नु	+	थ	=	शक्नुथ
शक्नु	+	वः	=	शक्नुवः
शक्नु	+	मः	=	शक्नुमः

लोट् लकार परस्मैपद -

शक्नु	+	ताम्	=	शक्नुताम्
शक्नु	+	हि	=	शक्नुहि
शक्नु	+	तम्	=	शक्नुतम्
शक्नु	+	त	=	शक्नुत

लङ् लकार परस्मैपद -

अशक्नु	+	ताम्	=	अशक्नुताम्
अशक्नु	+	तम्	=	अशक्नुतम्

अशक्नु + त = अशक्नुत
अशक्नु + व = अशक्नुव
अशक्नु + म = अशक्नुम

विधिलिङ् लकार परस्मैपद -

शक्नु + यात् = शक्नुयात्
शक्नु + याताम् = शक्नुयाताम्
शक्नु + युः = शक्नुयुः
शक्नु + याः = शक्नुयाः
शक्नु + यातम् = शक्नुयातम्
शक्नु + यात = शक्नुयात
शक्नु + याम् = शक्नुयाम्
शक्नु + याव = शक्नुयाव
शक्नु + याम = शक्नुयाम

लट् लकार आत्मनेपद -

अश्नु + ते = अश्नुते
अश्नु + से = अश्नुषे
अश्नु + ध्वे = अश्नुध्वे
अश्नु + वहे = अश्नुवहे
अश्नु + महे = अश्नुमहे

लोट् लकार आत्मनेपद -

अश्नु + ताम् = अश्नुताम्
अश्नु + स्व = अश्नुष्व
अश्नु + ध्वम् = अश्नुध्वम्

लङ् लकार आत्मनेपद -

आट् का आगम करके - आट् + अश् + श्नु = आश्नु, बनाकर प्रत्यय लगाइये।

आश्नु + त = अश्नुत
आश्नु + थाः = अश्नुथाः
आश्नु + ध्वम् = अश्नुध्वम्

आश्नु + वहि = अश्नुवहि
आश्नु + महि = अश्नुमहि

यह स्वादिगण के धातुओं के सार्वधातुक लकारों के रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।

विशेष - भ्वादिगण में श्रु, अक्षू, तथा तक्षू ये तीन धातु हैं। इनमें श्नु विकरण लगकर इनके अङ्ग बनते हैं - शृणु, अक्ष्णु, तक्ष्णु।

इनमें से शृणु असंयोगपूर्व अङ्ग है, अतः इसके रूप बिल्कुल चिनु के समान बनाइये - शृणोति, शृणुतः, शृण्वन्ति आदि। परन्तु ध्यान रखिये कि ये धातु भ्वादिगण के हैं।

अक्ष्णु, तक्ष्णु संयोगपूर्व हैं अतः इसके रूप बिल्कुल शक्नु के समान बनाइये - अक्ष्णोति अक्ष्णुतः अक्ष्णुवन्ति / तक्ष्णोति तक्ष्णुतः तक्ष्णुवन्ति आदि।

परन्तु ध्यान रखिये कि ये धातु भ्वादिगण के हैं।

स्वादिगण के परस्मैपदी हलन्त शक् धातु तथा आत्मनेपदी
अश् धातु के पूरे रूप

लट् लकार

प्र.पु.	शक्नोति	शक्नुतः	शक्नुवन्ति	अश्नुते	अश्नुवाते	अश्नुवते
म.पु.	शक्नोषि	शक्नुथः	शक्नुथ	अश्नुषे	अश्नुवाथे	अश्नुध्वे
उ.पु.	शक्नोमि	शक्नुवः	शक्नुमः	अश्नुवे	अश्नुवहे	अश्नुमहे

लङ् लकार

प्र.पु.	अशक्नोत्	अशक्नुताम्	अशक्नुवन्	आश्नुत	आश्नुवाताम्	आश्नुवत
म. पु.	अशक्नोः	अशक्नुतम्	अशक्नुत	आश्नुथाः	आश्नुवाथाम्	आश्नुध्वम्
उ.पु.	अशक्नवम्	अशक्नुव	अशक्नुम	आश्नुवि	आश्नुवहि	आश्नुमहि

लोट्लकार

प्र. पु.	शक्नोतु शक्नुतात्	शक्नुताम्	शक्नुवन्तु	अश्नुताम्	अश्नुवाताम्	अश्नुवताम्
म. पु.	शक्नुहि शक्नुतात्	शक्नुतम्	शक्नुत	अश्नुष्व	अश्नुवाथाम्	अश्नुध्वम्
उ. पु.	शक्नवानि	शक्नाव	शक्नवाम	अश्नवै	अश्नवावहै	अश्नवामहै

विधिलिङ् लकार

प्र.पु.	शक्नुयात्	शक्नुयाताम्	शक्नुयुः	अश्नुवीत	अश्नुवीयाताम्	अश्नुवीरन्

म.पु.	शक्नुया:	शक्नुयातम्	शक्नुयात	अश्नुवीथा:	अश्नुवीयाथाम्	अश्नुवीध्वम्
उ.पु.	शक्नुयाम्	शक्नुयाव	शक्नुयाम	अश्नुवीय	अश्नुवीवहि	अश्नुवीमहि

तनादिगण के धातुओं के लट्, लोट्, लङ् तथा विधिलिङ् लकारों के रूप बनाने की विधि

तनादिकृञ्भ्य: उ: - तनादिगण में १० धातु हैं। तनादि गण के इन धातुओं से कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, 'उ' विकरण लगता है।

जैसे -

तन् + उ = तनु / सन् + उ = सनु
क्षण् + उ = क्षणु / वन् + उ = वनु
मन् + उ = मनु /

ध्यान दें कि यह 'उ', आर्धधातुक प्रत्यय है। अत: इसके लगने पर यदि अङ्ग की उपधा में लघु इक् हो, तो उसे **पुगन्तलघूपधस्य च** सूत्र से गुण काजिये।

क्षिण् + उ = क्षेणु / ऋण् + उ = अर्णु
तृण् + उ = तर्णु / घृणु + उ = घर्णु

अब हम इनके सार्वधातुक लकारों के रूप बनायें -

इनमें से तनु, सनु, क्षणु, वनु, मनु, क्षेणु, असंयोगपूर्व उकारान्त अङ्ग हैं।

अत: इनके रूप बिल्कुल स्वादिगण के, चि - चिनु के समान ही बनाइये-

तनदिगण के उभयपदी अजन्त तन् - तनु धातु के पूरे रूप

लट् लकार

प्र. पु.	तनोति	तनुत:	तन्वन्ति	तनुते	तन्वाते	तन्वते
म. पु.	तनोषि	तनुथ:	तनुथ	तनुषे	तन्वाथे	तनुध्वे
उ. पु.	तनोमि	तनुव:	तनुम:	तन्वे	तनुवहे	तनुमहे
		तन्व:	तन्म:		तन्वहे	तन्महे

लङ् लकार

प्र. पु.	अतनोत्	अतनुताम्	अतन्वन्	अतनुत	अतन्वाताम्	अतन्वत
म. पु.	अतनो:	अतनुतम्	अतनुत	अतनुथा:	अतन्वाथाम्	अतनुध्वम्
उ. पु.	अतनवम्	अतनुव	अतनुम	अतन्वि	अतनुवहि	अतनुमहि
		अतन्व	अतन्म		अतन्वहि	अतन्महि

लोट् लकार

प्र. पु.	तनोतु तनुतात्	तनुताम्	तन्वन्तु	तनुताम्	तन्वाताम्	तन्वताम्
म. पु.	तनु तनुतात्	तनुतम्	तनुत	तनुष्व	तन्वाथाम्	तनुध्वम्
उ. पु.	तनवानि	तनवाव	तनवाम	तनवै	तनवावहै	तनवामहै

विधिलिङ् लकार

प्र.पु.	तनुयात्	तनुयाताम्	तनुयुः	तन्वीत	तन्वीयाताम्	तन्वीरन्
म.पु.	तनुयाः	तनुयातम्	तनुयात	तन्वीथाः	तन्वीयाथाम्	तन्वीध्वम्
उ.पु.	तनुयाम्	तनुयाव	तनुयाम	तन्वीय	तन्वीवहि	तन्वीमहि

अर्णु, घर्णु, तर्णु के रूप बिल्कुल स्वादिगण के, शक् - शक्नु के समान ही बनाइये, क्योंकि ये भी उसी के समान संयोगपूर्व उकारान्त अङ्ग हैं।

विशेष - भ्वादिगण के धिवि - धिन्व् - धिनु / कृवि - कृण्व् - कृणु इन धातुओं के रूप भी ठीक 'तनोति' के समान ही बनेंगे।

तनदिगण के उभयपदी हलन्त अर्ण् - अर्णु धातु के पूरे रूप

लट् लकार

प्र.पु.	अर्णोति	अर्णुतः	अर्णुवन्ति	अर्णुते	अर्णुवाते	अर्णुवते
म.पु.	अर्णोषि	अर्णुथः	अर्णुथ	अर्णुषे	अर्णुवाथे	अर्णुध्वे
उ.पु.	अर्णोमि	अर्णुवः	अर्णुमः	अर्णुवे	अर्णुवहे	अर्णुमहे

लङ् लकार

प्र.पु.	आर्णोत्	आर्णुताम्	आर्णुवन्	आर्णुत	आर्णुवाताम्	आर्णुवत
म. पु.	आर्णोः	आर्णुतम्	आर्णुत	आर्णुथाः	आर्णुवाथाम्	आर्णुध्वम्
उ.पु.	आर्णवम्	आर्णुव	आर्णुम	आर्णुवि	आर्णुवहि	आर्णुमहि

लोट्लकार

प्र. पु.	अर्णोतु अर्णुतात्	अर्णुताम्	अर्णुवन्तु	अर्णुताम्	अर्णुवाताम्	अर्णुवताम्
म. पु.	अर्णुहि अर्णुतात्	अर्णुतम्	अर्णुत	अर्णुष्व	अर्णुवाथाम्	अर्णुध्वम्
उ. पु.	अर्णवानि	अर्णाव	अर्णवाम	अर्णवै	अर्णवावहै	अर्णुवामहै

विधिलिङ् लकार

प्र.पु.	अर्णुयात्	अर्णुयाताम्	अर्णुयुः	अर्णुवीत	अर्णुवीयाताम्	अर्णुवीरन्

म.पु.	अर्णुयाः	अर्णुयातम्	अर्णुयात	अर्णुवीथाः	अर्णुवीयाथाम्	अर्णुवीध्वम्
उ.पु.	अर्णुयाम्	अर्णुयाव	अर्णुयाम	अर्णुवीय	अर्णुवीवहि	अर्णुवीमहि

विशेष - ध्यान रहे कि 'चिनु' में अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर 'हुश्नुवोः सार्वधातुके' सूत्र से यण् होता है।

किन्तु यहाँ तनादिगण के धातुओं में अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर 'इको यणचि' सूत्र से ही यण् होता है।

कृ धातु के रूप बनाने की विधि

तनादिगण के कृ धातु में उ विकरण लगाकर दो प्रकार के अङ्ग बनाये जाते है। अतः ध्यान से पित् प्रत्यय कृ + उ = करु से लगाइये / अपित् प्रत्यय कृ + उ = कुरु से लगाइये।

नित्यं करोतेः - व, म, से प्रारम्भ होने वाले प्रत्यय परे होने पर, कृ + उ = कुरु, के अन्तिम 'उ' का लोप, विकल्प से न होकर, नित्य होता है।

ये च - य से प्रारम्भ होने वाले प्रत्यय परे होने पर भी, कृ + उ = कुरु के अन्तिम 'उ' का लोप होता है। अतः 'व' 'म' 'य' से प्रारम्भ होने वाले प्रत्ययों को 'कुर्' से लगाइये। जैसे -

कुरु	+	वः	-	कुर्	+	वः	=	कुर्वः
कुरु	+	मः	-	कुर्	+	मः	=	कुर्मः
कुरु	+	वहे	-	कुर्	+	वहे	=	कुर्वहे
कुरु	+	महे	-	कुर्	+	महे	=	कुर्महे
अकुरु	+	व	-	अकुर्	+	व	=	अकुर्व
अकुरु	+	म	-	अकुर्	+	म	=	अकुर्म
अकुरु	+	वहि	-	अकुर्	+	वहि	=	अकुर्वहि
अकुरु	+	महि	-	अकुर्	+	महि	=	अकुर्महि
कुरु	+	यात्	-	कुर्	+	यात्	=	कुर्यात्
कुरु	+	याताम्	-	कुर्	+	याताम्	=	कुर्याताम्
कुरु	+	युः	-	कुर्	+	युः	=	कुर्युः
कुरु	+	याः	-	कुर्	+	याः	=	कुर्याः
कुरु	+	यातम्	-	कुर्	+	यातम्	=	कुर्यातम्
कुरु	+	यात	-	कुर्	+	यात	=	कुर्यात

कुरु	+	याम्	-	कुर्	+	याम्	=	कुर्याम्
कुरु	+	याव	-	कुर्	+	याव	=	कुर्याव
कुरु	+	याम	-	कुर्	+	याम	=	कुर्याम

इन अङ्गकार्यो को संक्षेप में इस प्रकार याद रखें -

१. हलादि पित् प्रत्यय परे होने पर - कृ - करु - करो बनाइये।

२. अजादि पित् प्रत्यय परे होने पर - कृ - करु - करो - करव् बनाइये।

३. अजादि अपित् प्रत्ययों में यण् करके - कृ - कुरु - कुर्व् बनाइये।

४. व, म, य, से शुरू होने वाले हलादि अपित् प्रत्यय परे होने पर, कृ को कुर् बनाइये। शेष हलादि अपित् प्रत्ययों में कुरु को कुरु ही रहने दीजिये।

५. हि प्रत्यय का लोप कीजिये।

तनदिगण के उभयपदी कृ - करु / कुरु

धातु के पूरे रूप

लट् लकार

करोति	कुरुत:	कुर्वन्ति	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते
करोषि	कुरुथ:	कुरुथ	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
करोमि	कुर्व:	कुर्म	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे

लोट् लकार

करोतु कुरुतात्	कुरुताम्	कर्वन्तु	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्
कुरु कुरुतात्	कुरुतम्	कुरुत	कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्
करवाणि	करवाव	करवाम	करवै	करवावहै	करवामहै

लङ् लकार

अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत
अकरो:	अकुरुतम्	अकुरुत	अकुरुथा:	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्
अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि

विधिलिङ् लकार

कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्यु:	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्
कुर्या:	कुर्यातम्	कुर्यात	कुर्वीथा:	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्

कुर्याम् कुर्याव कुर्याम कुर्वीय कुर्वीवहि कुर्वीमहि

यह तनादि गण के धातुओं के सार्वधातुक लकारों के रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।

अदादिगण के अजन्त धातुओं के लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् लकारों के रूप बनाने की विधि

अदिप्रभृतिभ्यः शपः - धातुपाठ में क्रमाङ्क १०११ से १०७० तक अदादिगण के धातु है। इनका गणचिह्न शप्लुक् है।

अदादिगण के धातुओं से कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर 'कर्तरि शप्' से शप् विकरण लगता है, किन्तु अदादिगण के धातुओं से परे आने वाले शप् विकरण का 'अदिप्रभृतिभ्यः शपः' सूत्र से लोप हो जाता है।

विकरण का लुक् हो जाने के कारण अदादिगण के धातुओं को लुग्विकरण धातु कहा जाता है।

अतः आप अदादिगण के सारे धातुओं से 'कर्तरि शप्' सूत्र से शप् प्रत्यय लगाइये, और 'अदिप्रभृतिभ्यः शपः' सूत्र से उसका लुक् (लोप) कर दीजिये।

विकरण का लुक् हो जाने के बाद जो धातु बचे, उसी से सारे लकारों के प्रत्यय लगाइये।

इन प्रत्ययों को लगाने के लिये धातुओं के दो वर्ग बनाइये। अजन्त धातु तथा हलन्त धातु।

अब हम अदादिगण का धातुपाठ को खोलकर सामने रख लें और पहिले अदादिगण के अजन्त धातुओं के रूप बनाना सीखें।

अदादिगण के आकारान्त धातुओं के लट्, लोट्, लङ् तथा विधिलिङ् लकारों के रूप बनाने की विधि

अदादिगण में क्रमाङ्क १०११ से क्रमाङ्क १०२४ तक आकारान्त धातु हैं। इनके लिये इन विधियों को ध्यान रखें -

लङः शाकटायनस्यैव - आकारान्त धातुओं से परे आने लङ् लकार के प्रथमपुरुष बहुवचन में विकल्प से अन् और उः प्रत्यय लगाइये।

शेष प्रत्यय ज्यों के त्यों रहेंगे।

उस्यपदान्तात् - अपदान्त 'आ' से 'उः' प्रत्यय परे होने पर, आ + उ के स्थान पर एक पररूप एकादेश होता है। अर्थात् 'आ' जाकर आगे वाले 'उः'

में मिल जाता है। जैसे - अवा + उः - अव् + उः = अवुः।

शेष प्रत्यय परे होने पर कोई भी अङ्गकार्य नहीं होता है। अतः यथास्थान सन्धि भर होती है।

यथा वा + अन्ति - 'अकः सवर्ण दीर्घः' सूत्र से दीर्घ सन्धि होकर = वान्ति / अवा + अन् = अवान् आदि।

अब एक आकारान्त परस्मैपदी 'वा' धातु के पूरे रूप दिये जा रहे हैं। इसी के समान अदादिगण के सारे आकारान्त धातुओं के रूप बना डालिये।

भ्वादिगण का गाङ् धातु भी आकारान्त है। अतः उसके रूप भी इसी प्रकार बनाइये।

आकारान्त परस्मैपदी 'वा' धातु के पूरे रूप

लट् लकार

प्र.पु.	वाति	वातः	वान्ति
म.पु.	वासि	वाथः	वाथ
उ.पु.	वामि	वावः	वामः

लोट् लकार

प्र.पु.	वातु / वातात्	वाताम्	वान्तु
म.पु	वाहि / वातात्	वातम्	वात
उ.पु.	वानि	वाव	वाम

लङ् लकार

प्र.पु.	अवात्	अवाताम्	अवान् / अवुः
म.पु.	अवाः	अवातम्	अवात
उ.पु.	अवाम्	अवाव	अवाम

विधिलिङ् लकार

प्र.पु.	वायात्	वायाताम्	वायुः
म.पु.	वायाः	वायातम्	वायात
उ.पु.	वायाम्	वायाव	वायाम्

अदादिगण के आकारान्त या, वा, भा, ष्णा, श्रा, द्रा, प्सा, पा, रा, ला, दा, ख्या, प्रा, मा, धातुओं के रूप इसी प्रकार बनाइये।

भ्वादिगण के आकारान्त आत्मनेपदी गा धातु के रूप भी इसी प्रकार

बनाइये

गा + आते = गाते में सवर्णदीर्घ सन्धि / गा + ए = गै में वृद्धि सन्धि / अगा + इ = अगै आदि में गुण सन्धि / आदि सन्धियाँ कीजिये।

लट् लकार

प्र.पु.	गाते	गाते	गाते
म.पु.	गासे	गाथे	गाध्वे
उ.पु.	गै	गावहे	गामहे

लोट् लकार

प्र.पु.	गाताम्	गाताम्	गाताम्
म.पु	गास्व	गाथाम्	गाध्वम्
उ.पु.	गै	गावहै	गामहै

लङ् लकार

प्र.पु.	अगात	अगाताम्	अगात
म.पु.	अगाथाः	अगाथाम्	अगाध्वम्
उ.पु.	अगे	अगावहि	अगामहि

विधिलिङ् लकार

प्र.पु.	गेत	गेयाताम्	गेरन्
म.पु.	गेथाः	गेयाथाम्	गेध्वम्
उ.पु.	गेय	गेमहि	गेमहि

इसके अपवाद – किन्तु ध्यान रहे कि दरिद्रा धातु के रूप इस प्रकार नहीं बनते। इसलिये उसे इन आकारान्त धातुओं से अलग रखा गया है। इसकी प्रक्रिया इस प्रकार है –

अदादिगण का आकारान्त परस्मैपदी दरिद्रा धातु

जक्षित्यादयः षट् - अदादि गण का धातुपाठ देखिये। उसमें अदादिगण के भीतर जक्षादि नामक एक अन्तर्गण है।

इस अन्तर्गण में जक्ष्, जागृ, दरिद्रा, चकास्, शास्, दीधीङ्, वेवीङ् ये सात धातु हैं। इन धातुओं का नाम अभ्यस्त होता है।

अदभ्यस्तात् - हम जानते हैं कि जब भी धातु का नाम अभ्यस्त होता है, तब अन्ति की जगह अति, अन्तु की जगह अतु और अन् की जगह उः प्रत्यय

लगाये जाते हैं। इन जक्षादि धातुओं के रूप बनाते समय, हम प्रत्ययों में यह सावधानी अवश्य रखें।

इद् दरिद्रस्य - दरिद्रा धातु के 'आ' को 'इ' होता है, हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर -

दरिद्रा + तः - दरिद्रि + तः = दरिद्रितः

दरिद्रा + थः - दरिद्रि + थः = दरिद्रिथः

दरिद्रा + वः - दरिद्रि + वः = दरिद्रिवः

दरिद्रा + मः - दरिद्रि + मः = दरिद्रिमः आदि।

श्नाभ्यस्तयोरातः - श्नान्त तथा अभ्यस्तसंज्ञक अङ्गों के 'आ' का लोप होता है, अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर -

दरिद्रा + अति - दरिद्र् + अति = दरिद्रति

दरिद्रा + अतु - दरिद्र् + अतु = दरिद्रतु आदि।

शेष रूप आकारान्त 'वा' के समान ही बनायें।

इन सारी विधियों को ध्यान में रखते हुए दरिद्रा धातु के पूरे रूप इस प्रकार बनाइये -

लट् लकार

प्र.पु.	दरिद्राति	दरिद्रितः	दरिद्रति
म.पु.	दरिद्रासि	दरिद्रिथः	दरिद्रिथ
उ.पु.	दरिद्रामि	द्ररिद्रिवः	दरिद्रिमः

लोट् लकार

प्र.पु.	दरिद्रातु/दरिद्रितात्	दरिद्रिताम्	दरिद्रतु
म.पु.	दरिद्रिहि/दरिद्रितात्	दरिद्रितम्	दरिद्रित
उ.पु.	दरिद्राणि	दरिद्राव	दरिद्राम

लङ् लकार

प्र.पु.	अदरिद्रात्	अदरिद्रिताम्	अदरिद्रुः
म.पु.	अदरिद्राः	अदरिद्रितम्	अदरिद्रित
उ.पु.	अदरिद्राम्	अदरिद्रिव	अदरिद्रिम

विधिलिङ् लकार

प्र.पु.	दरिद्रियात्	दरिद्रियाताम्	दरिद्रियुः

म.पु.	दरिद्रियाः	दरिद्रियातम्	दरिद्रियात
उ.पु.	दरिद्रियाम्	दरिद्रियाव	दरिद्रियाम

अदादिगण के इकारान्त, ईकारान्त धातुओं के लट्, लोट्, लङ् तथा विधिलिङ् लकारों के रूप बनाने की विधि

इकारान्त, ईकारान्त धातुओं में प्रत्यय जोड़ने की विधि २२४ - २२५ पृष्ठों पर विस्तार से दी गई है। उसे वहीं देखिये। यहाँ संक्षेप में देंगे।

अदादिगण के धातुपाठ में क्रमाङ्क १०२५ से १०२९ धातु और १०८१, १०८२ धातु, इकारान्त, ईकारान्त धातु हैं।

इनमें कर्तरि शप् सूत्र से शप् विकरण लगाइये और अदिप्रभृतिभ्यः शपः सूत्र से उस शप् का लुक् कर दीजिये।

शप् का लुक् होकर जो धातु बचे, इन्हीं में लट्, लोट्, लङ् तथा विधिलिङ् लकारों के प्रत्यय लगाइये।

इसके लिये धातुओं का इस प्रकार वर्गीकरण कर लीजिये।

दीधी, वेवी धातु -

'जक्षित्यादयः षट्' सूत्र से इन धातुओं का नाम अभ्यस्त है। अतः 'अदभ्यस्तात्' सूत्र से अन्ति की जगह अति, अन्तु की जगह अतु और अन् की जगह उः प्रत्यय लगेंगे, यह सावधानी अवश्य रखें।

ध्यान रहे कि ये दोनों ईकारान्त धातु केवल आत्मनेपदी हैं।

१. हलादि तथा अजादि पित् प्रत्यय परे होने पर -

दीधीवेवीटाम् - दीधी, वेवी धातुओं को पित् अपित् आदि कोई भी प्रत्यय परे होने पर, गुण, वृद्धि कार्य नहीं होते। अतः -

दीधी + ऐ / 'एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य' सूत्र से यण् करके दीध्य् + ऐ = दीध्यै। इसी प्रकार दीध्य् + आवहै = दीध्यावहै / दीध्य् + आमहै = दीध्यामहै।

२. हलादि अपित् प्रत्यय परे होने पर -

दीधीवेवीटाम् से गुणनिषेध होकर अङ्ग को कुछ नहीं होगा। दीधी + ते - दीधीते।

३. अजादि अपित् इकारादि सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर -

दीधी, वेवी धातुओं के अन्तिम ई का 'यीवर्णयोर्दीधीवेव्योः' सूत्र से लोप होगा। दीधी + ईत - दीध् + ईत - दीधीत। वेवी + ईत - वेव् + ईत - वेवीत।

शेष अजादि अपित् प्रत्यय परे होने पर ई के स्थान पर 'एरनेकाचो ऽसंयोगपूर्वस्य' सूत्र से यण् आदेश होगा।

यथा - दीधी + आते = दीध्याते / वेवी + आते - वेव्याते।

पूरे रूप इस प्रकार बने -

लट् लकार

प्र.पु.	दीधीते	दीध्याते	दीध्यते
म.पु.	दीधीषे	दीध्याथे	दीधीध्वे
उ.पु.	दीध्ये	दीधीवहे	दीधीमहे

लोट् लकार

प्र.पु.	दीधीताम्	दीध्याताम्	दीध्यताम्
म.पु.	दीधीष्व	दीध्याथाम्	दीधीध्वम्
उ.पु.	दीध्यै	दीध्यावहै	दीध्यामहै

लङ् लकार

प्र.पु.	अदीधीत	अदीध्याताम्	अदीध्यत
म.पु.	अदीधीथाः	अदीध्याथाम्	अदीधीध्वम्
उ.पु.	अदीध्यि	अदीधीवहि	अदीधीमहि

विधिलिङ् लकार

प्र. पु.	दीधीत	दीधीयाताम्	दीधीरन्
म.पु.	दीधीथाः	दीधीयाथाम्	दीधीध्वम्
उ.पु.	दीधीय	दीधीवहि	दीधीमहि

वेवी धातु के पूरे रूप भी इसी प्रकार बनाइये -

लट् लकार

प्र.पु.	वेवीते	वेव्याते	वेव्यते
म.पु.	वेवीषे	वेव्याथे	वेवीध्वे
उ.पु.	वेव्ये	वेवीवहे	वेवीमहे

लोट् लकार

प्र.पु.	वेवीताम्	वेव्याताम्	वेव्यताम्
म.पु.	वेवीष्व	वेव्याथाम्	वेवीध्वम्
उ.पु.	वेव्यै	वेव्यावहै	वेव्यामहै

लङ् लकार

प्र.पु.	अवेवीत	अवेव्याताम्	अवेव्यत
म.पु.	अवेवीथाः	अवेव्याथाम्	अवेवीध्वम्
उ.पु.	अवेव्यि	अवेवीवहि	अवेवीमहि

विधिलिङ् लकार

प्र. पु.	वेवीत	वेवीयाताम्	वेवीरन्
म.पु.	वेवीथाः	वेवीयाथाम्	वेवीध्वम्
उ.पु.	वेवीय	वेवीवहि	वेवीमहि

इण् गतौ धातु -

सारे हलादि पित् प्रत्यय परे होने पर, सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से **गुण कीजिये -**

इ + ति = एति / इ + सि = एषि

इ + मि = एमि / इ + तु = एतु

लङ् लकार में आडजादीनाम् सूत्र से आट् का आगम होता है। अतः यहाँ आट् का आगम होने से - आट् + धातु + प्रत्यय, ये तीन खण्ड प्राप्त होंगे। अतः प्रश्न होगा कि किस कार्य को पहिले किया जाये ? किसे बाद में।

इसका उत्तर यह है कि -

पहिले अङ्गकार्य कीजिये। उसके बाद आटश्च सूत्र से वृद्धि करके उस धातु में आट् को जोड़िये। अन्त में प्रत्यय को जोड़िये। जैसे - लङ् लकार प्रथम पुरुष एकवचन में -

आट् + इ + त् / सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके - आ + ए + त् / अब - आ + ए, में आटश्च सूत्र से वृद्धि करके - ऐ + त् = ऐत्। इसी प्रकार - आ + इ + स् / ऐ + स् (:) = ऐः, बनाइये।

अजादि पित् प्रत्यय 'अम्' परे होने पर -आट् का आगम करके - आ + इ + अम् / सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से इ को गुण करके - आ + ए + अम् / अब - आ + ए को, आटश्च सूत्र से वृद्धि करके - ऐ + अम् / अब एचोऽयवायावः से आयादेश करके - आय् + अम् = आयम्।

जहाँ लोट् आदि लकारों में आट् का आगम प्राप्त न हो वहाँ अजादि पित् प्रत्यय परे होने पर सीधे अङ्गकार्य करके अयादेश कीजिये -

इ + आनि - ए + आनि = अयानि
इ + आव - ए + आव = अयाव
इ + आम - ए + आम = अयाम

सारे हलादि अपित् प्रत्यय परे होने पर क्ङिति च से गुणनिषेध होने से कुछ मत कीजिये -

इ + तः = इतः
इ + थः = इथः
इ + थ = इथ आदि।

अजादि अपित् प्रत्यय परे होने पर इणो यण् से 'यण्' कीजिये -

इणो यण् - इण् धातु रूप अङ्ग को यण् आदेश होता है, अजादि अपित् प्रत्यय परे हाने पर।

इ + अन्ति - य् + अन्ति = यन्ति
इ + अन्तु - य् + अन्तु = यन्तु
आ + इ + अन् - आ + य् + अन् = आयन्

इण् धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

लट् लकार

प्र.पु.	एति	इतः	यन्ति
म.पु.	एषि	इथः	इथ
उ.पु.	एमि	इवः	इमः

लोट् लकार

प्र.पु.	एतु, इतात्	इताम्	यन्तु
म.पु.	इहि, इतात्	इतम्	इत
उ.पु.	अयानि	अयाव	अयाम

लङ् लकार

प्र.पु.	ऐत्	ऐताम्	आयन्
म.पु.	ऐः	ऐतम्	ऐत
उ.पु.	आयम्	ऐव	ऐम

विधिलिङ् लकार

प्र.पु.	इयात्	इयाताम्	इयुः

म.पु.	इया:	इयातम्	इयात
उ.पु.	इयाम्	इयाव	इयाम

इक् स्मरणे धातु -

इण्वदिक इति वक्तव्यम् - इक् धातु, इण् धातु के समान ही होता है। अत: इक् धातु के रूप बनाने की प्रक्रिया पूर्वोक्त इण् धातु के समान ही होती है।

परन्तु यह ध्यान रखें कि इस धातु का प्रयोग अधि उपसर्ग के साथ ही होता है अकेले नहीं। अभी हमने इण् गतौ धातु पढ़ा है। उसी के बने बनाये रूपों में अधि उपसर्ग जोड़ दीजिये तो इक् धातु के रूप बन जायेंगे।

जैसे - अधि + एति - इको यणचि से यण् सन्धि करके = अध् + य् + एति - अध्येति / अधि + इत: - अक: सवर्णे दीर्घ: से दीर्घ सन्धि करके = अधीत: / अधि + यन्ति = अधियन्ति आदि।

ध्यान रहे कि उपसर्ग जोड़ने का कार्य, सारे कार्य हो चुकने के बाद ही किया जाता है। पूरे रूप इस प्रकार बनेंगे -

लट् लकार

प्र.पु.	अध्येति	अधीत:	अधियन्ति
म.पु.	अध्येषि	अधीथ:	अधीथ
उ.पु.	अध्येमि	अधीव:	अधीम:

लोट् लकार

प्र.पु.	अध्येतु, अधीतात्	अधीताम्	अधियन्तु
म.पु.	अधीहि, अधीतात्	अधीतम्	अधीत
उ.पु.	अध्ययानि	अध्ययाव	अध्ययाम

लङ् लकार

प्र.पु.	अध्यैत्	अध्यैताम्	अध्यायन्
म.पु.	अध्यै:	अध्यैतम्	अध्यैत
उ.पु.	अध्यायम्	अध्यैव	अध्यैम

विधिलिङ् लकार

प्र.पु.	अधीयात्	अधीयाताम्	अधीयु:
म.पु.	अधीया:	अधीयातम्	अधीयात

उ.पु. अधीयाम् अधीयाव अधीयाम

इङ् अध्ययने धातु – यह धातु भी सदा अधि उपसर्ग से युक्त ही रहता है। कभी भी अकेले नहीं होता। यही बात धातुपाठ में कही गई है – **नित्यमधिपूर्वः।** यह धातु एकाच् इकारान्त है। एकाच् इकारान्त अङ्ग होने के कारण इसके रूप बनाने की प्रक्रिया ठीक इक् के समान ही होगी।

किन्तु यहाँ अधि उपसर्ग + धातु + प्रत्यय, ये तीन खण्ड प्राप्त होंगे। अतः प्रश्न होगा कि किस कार्य को पहिले किया जाये ? किसे बाद में।

इसका उत्तर यह है कि –

१. पहिले अङ्गकार्य कीजिये। उसके बाद उसमें प्रत्यय को जोड़िये। अन्त में सन्धि सूत्रों के अनुसार उसमें अधि उपसर्ग को जोड़ दीजिये। जैसे – लट् लकार प्रथम पुरुष बहुवचन में –

अधि + इ + अते / अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ सूत्र से अङ्गकार्य इयङ् करके – अधि + इय् + अते / प्रत्यय को जोड़कर – अधि + इयते / अब अकः सवर्णे दीर्घः से सवर्ण दीर्घ सन्धि करके उपसर्ग को जोड़कर = अधीयते।

२. लङ् लकार में आडजादीनाम् सूत्र से आट् का आगम होता है। अतः यहाँ आट् का आगम होने से – अधि उपसर्ग + आट् आगम + धातु + प्रत्यय, ये चार खण्ड प्राप्त होंगे।

अतः प्रश्न होगा कि किस कार्य को पहिले किया जाये? किसे बाद में। इसका उत्तर यह है कि –

१. पहिले अङ्गकार्य कीजिये। अङ्गकार्य करने के बाद 'आटश्च' सूत्र से उस धातु में आट् को जोड़िये। उसके बाद प्रत्यय को जोड़िये। अन्त में सन्धि सूत्रों के अनुसार अधि उपसर्ग को जोड़ दीजिये।

जैसे – लङ् लकार प्रथम पुरुष बहुवचन में –

अधि + आट् + इ + अत / अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ सूत्र से अङ्गकार्य इयङ् करके – अधि + आ + इय् + अत /

अब – आ + इय् में आटश्च सूत्र से वृद्धि करके – अधि + ऐय् + अत / अब प्रत्यय को जोड़कर – अधि + ऐयत / अब अधि + ऐयत में, 'इको यणचि' इस सन्धि सूत्र से यण् करके = अध्यैयत।

(यहाँ यह ध्यान रखें कि यदि किसी भी धातु से उपसर्ग लगा हो तब

भी ये अट्, आट् के आगम धातु के ही ठीक पूर्व में बैठेंगे, उपसर्ग के पूर्व कदापि नहीं।)

अब हम अधि + इ धातु के रूप बनायें। ङित् होने से यह धातु आत्मनेपदी ही है।

हलादि पित् प्रत्यय परे होने पर - आत्मनेपदी होने के कारण इससे परे कोई भी हलादि पित् प्रत्यय मिलेगा ही नहीं।

अजादि पित् प्रत्यय परे होने पर - अधि + इ + ऐ / सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके - अधि + ए + ऐ / एचोऽयवायावः सूत्र से अयादेश करके - अधि + अय् + ऐ / अब इको यणचि, इस सन्धि सूत्र के अनुसार यण् सन्धि करके उपसर्ग को जोड़कर - अध्यय् + ऐ = अध्ययै।

अधि + इ + आवहै / सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके - अधि + ए + आवहै / एचोऽयवायावः सूत्र से अयादेश करके - अधि + अय् + आवहै / अब इको यणचि, इस सन्धि सूत्र के अनुसार यण् सन्धि करके उपसर्ग को जोड़कर - अध्यय् + आवहै = अध्ययावहै।

इसी प्रकार अधि + इ + आमहै = अध्ययामहै रूप बनाइये।

हलादि अपित् प्रत्यय परे होने पर - कुछ नहीं होगा।

अधि + इ + ताम् = अधीताम्। अधि + इ + स्व - आदेशप्रत्यययोः सूत्र से प्रत्यय के स् को ष् होकर - अधीष्व आदि।

अजादि अपित् प्रत्यय परे होने पर - अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ सूत्र से इयङ् होगा - अधि + इ + आते / अधि + इय् + आते - अधि + इयाते / अकः सवर्णे दीर्घः से दीर्घ करके = अधीयाते /

अधि + इ + अते - अधि + इय् + अते = अधीयते आदि।

इङ् धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने।

लट् लकार (आत्मनेपद)

प्र.पु.	अधीते	अधीयाते	अधीयते
म.पु.	अधीषे	अधीयाथे	अधीध्वे
उ.पु.	अधीये	अधीवहे	अधीमहे

लोट् लकार (आत्मनेपद)

प्र.पु.	अधीताम्	अधीयाताम्	अधीयताम्

म.पु.	अधीष्व	अधीयाथाम्	अधीध्वम्
उ.पु.	अध्ययै	अध्ययावहै	अध्ययामहै

लङ् लकार (आत्मनेपद)

प्र.पु.	अध्यैत	अध्यैयाताम्	अध्यैयत
म.पु.	अध्यैथाः	अध्यैयाथाम्	अध्यैध्वम्
उ.पु.	अध्यैयि	अध्यैवहि	अध्यैमहि

विधिलिङ् लकार (आत्मनेपद)

प्र.पु.	अधीयीत	अधीयीयाताम्	अधीयीरन्
म.पु.	अधीयीथाः	अधीयीयाथाम्	अधीयीध्वम्
उ.पु.	अधीयीय	अधीयीवहि	अधीयीमहि

शीङ् स्वप्ने धातु -

यह आत्मनेपदी धातु है तो इसमें केवल आत्मनेपद के प्रत्यय लगाइये। इसके रूप बनाने में अनेक अपवाद हैं -

शीङः सार्वधातुके (गुणः) - 'शीङ्' धातु को सारे ही सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, 'क्ङिति च' सूत्र से गुणनिषेध न होकर, गुण ही होता है, चाहे वह प्रत्यय पित् हो, चाहे अपित्।

अतः सारे प्रत्यय परे होने पर, इस सूत्र से अङ्ग को गुण करते चलिये। शी + ते - शे + ते = शेते।

२. जहाँ गुण करके इ को ए बनाने के बाद अच् = स्वर मिले, वहाँ एचोऽयवायावः सूत्र से अयादेश भी कीजिये। शी + आते - शे + आते - शयाते।

३. **शीङो रुट्** - शीङ् धातु से परे आने वाले प्रथम पुरुष बहुवचन के प्रत्यय अते, अत, अताम् को रुट् का आगम होता है। अतः रुट् का आगम करके इनके रूप इस प्रकार बनाइये -

'शीङः सार्वधातुके' से गुण कीजिये। शी + अते / शीङो रुट् से रुट् का आगम करके = शे + रुट् + अते / रुट् में उ, ट् की इत् संज्ञा करके उनका लोप करके - शेरते। शी धातु के पूरे रूप इस प्रकार बनेंगे -

लट् लकार -

शी + ते = शे + ते = शेते

शी + आते = शे + आते = शयाते

शी + अते = शे + रुट् + अते = शेरते
शी + से = शे + से = शेषे
शी + आथे = शे + आथे = शयाथे
शी + ध्वे = शे + ध्वे = शेध्वे
शी + ए = शे + ए = शये
शी + वहे = शे + वहे = शेवहे
शी + महे = शे + महे = शेमहे

लोट् लकार

शी + ताम् = शे + ताम् = शेताम्
शी + आताम् = शे + आताम् = शयाताम्
शी + अताम् = शे + रुट् + अताम् = शेरताम्
शी + ष्व = शे + ष्व = शेष्व
शी + आथाम् = शे + आथाम् = शयाथाम्
शी + ध्वम् = शे + ध्वम् = शेध्वम्
शी + ऐ = शे + ऐ = शयै
शी + आवहै = शे + आवहै = शयावहै
शी + आमहै = शे + आमहै = शयामहै

लङ् लकार

अशी + त = अशे + त = अशेत
अशी + आताम् = अशे + आताम् = अशयाताम्
अशी + अत = अशे + रुट् + अत = अशेरत
अशी + थाः = अशे + थाः = अशेथाः
अशी + आथाम् = अशे + आथाम् = अशयाथाम्
अशी + ध्वम् = अशे + ध्वम् = अशेध्वम्
अशी + इ = अशे + इ = अशयि
अशी + वहि = अशे + वहि = अशेवहि
अशी + महि = अशे + महि = अशेमहि

विधिलिङ् लकार –

शी + ईत = शे + ईत = शयीत

शी	+	ईयाताम्	=	शे	+	ईयाताम्	=	शयीयाताम्
शी	+	ईरन्	=	शे	+	ईरन्	=	शयीरन्
शी	+	ईथा:	=	शे	+	ईथा:	=	शयीथा:
शी	+	ईयाथाम्	=	शे	+	ईयाथाम्	=	शयीयाथाम्
शी	+	ईध्वम्	=	शे	+	ईध्वम्	=	शयीध्वम्
शी	+	ईय	=	शे	+	ईय	=	शयीय
शी	+	ईवहि	=	शे	+	ईवहि	=	शयीवहि
शी	+	ईमहि	=	शे	+	ईमहि	=	शयीमहि

पूरे रूप इस प्रकार बने -

लट् लकार

प्र.पु.	शेते	शयाते	शेरते
म.पु.	शेषे	शयाथे	शेध्वे
उ.पु.	शये	शेवहे	शेमहे

लोट् लकार

प्र.पु.	शेताम्	शयाताम्	शेरताम्
म.पु.	शेष्व	शयाथाम्	शेध्वम्
उ.पु.	शयै	शयावहै	शयामहै

लङ् लकार

प्र.पु.	अशेत	अशयाताम्	अशेरत
म.पु.	अशेथा:	अशयाथाम्	अशेध्वम्
उ.पु.	अशयि	अशेवहि	अशेमहि

विधिलिङ् लकार

प्र. पु.	शयीत	शयीयाताम्	शयीरन्
म.पु.	शयीथा:	शयीयाथाम्	शयीध्वम्
उ.पु.	शयीय	शयीवहि	शयीमहि

वी धातु -

१. सारे हलादि पित् प्रत्यय परे होने पर 'सार्वधातुकार्धधातुकयो:' सूत्र **से गुण कीजिये -**

वी + ति = वेति

वी + सि. = वेषि
वी + मि = वेमि
वी + तु = वेतु
अवी + त् = अवेत्

२. अजादि पित् प्रत्यय परे होने पर सार्वधातुकार्धधातुकयो: सूत्र से गुण करके एचोऽयवायाव: से अयादेश कीजिये -

अवी + अम् - अवे + अम् - अवय् + अम् = अवयम्
वी + आनि - वे + आनि - वय् + आनि = वयानि
वी + आव - वे + आव - वय् + आव = वयाव
वी + आम - वे + आम - वय् + आम = वयाम

३. हलादि अपित् प्रत्यय परे होने पर कुछ मत कीजिये -

वी + त: - वी + त: आदि।

४. एकाच् इकारान्त अङ्ग होने के कारण अजादि अपित् प्रत्यय परे होने अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ सूत्र से इयङ् कीजिये -

वी + अन्ति - वियु + अन्ति = वियन्ति। पूरे रूप इस प्रकार बने -

लट् लकार

प्र.पु.	वेति	वीत:	वियन्ति
म.पु.	वेषि	वीथ:	वीथ
उ.पु.	वेमि	वीव:	वीम:

लङ् लकार

प्र.पु.	अवेत्	अवीताम्	अवियन्
म.पु.	अवे:	अवीतम्	अवीत
उ.पु.	अवयम्	अवीव	अवीम

लोट् लकार

प्र.पु.	वेतु / वीतात्	वीताम्	वियन्तु
म.पु.	वीहि / वीतात्	वीतम्	वीत
उ.पु.	वयानि	वयाव	वयाम

विधिलिङ् लकार

प्र.पु.	वीयात्	वीयाताम्	वीयु:

म.पु.	वीयाः	वीयातम्	वीयात
उ.पु.	वीयाम्	वीयाव	वीयाम

अदादिगण के उकारान्त, ऊकारान्त धातुओं के धातुरूप बनाने की विधि

अदादिगण के उकारान्त, ऊकारान्त धातु १०३० से १०४३ तक हैं। 'अदिप्रभृतिभ्यः शपः' सूत्र से शप् का लुक् होने से, ये धातु ही यहाँ अङ्ग रहेंगे।

हमने पढ़ा है कि उकारान्त धातुओं को सारे पित् प्रत्यय परे होने पर सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण होता है। किन्तु अदादि गण में इसमें केवल एक परिवर्तन होता है। वह इस प्रकार है -

उतो वृद्धिर्लुकि हलि - जब भी शप् का लुक् होता है, तब हलादि पित् प्रत्यय परे होने पर उकारान्त अङ्ग को वृद्धि होती है, गुण नहीं। जैसे -

'यु' उकारान्त धातु है। यु + ति में शप् लगाया, तो बना - यु + शप् + ति। अब 'अदिप्रभृतिभ्यः शपः' से शप् का लुक् किया तो बना - यु + ति।

लुक् होने पर जब हलादि पित् प्रत्यय दिखे, तो उ को 'उतो वृद्धिर्लुकि हलि' सूत्र से वृद्धि कीजिये। वृद्धि करके बना - यौ + ति = यौति।

सारे हलादि पित् प्रत्ययों के परे होने पर भी इसी प्रकार रूप बनेंगे - यौषि, यौमि, अयौत्, अयौः, यौतु।

शेष तीनों प्रकार के प्रत्ययों को जोड़ने की विधि में कोई परिवर्तन नहीं होगा। शेष प्रत्यय परे होने पर यथोक्त अङ्गकार्य कीजिये। अर्थात् -

अजादि पित् प्रत्यय - परे होने पर अङ्ग के अन्तिम उकार को सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण कीजिये। गुण करने के बाद एचोऽयवायावः सूत्र से अवादेश कीजिये।

यु + आनि = यवानि / यु + आव = यवाव / यु + आम = यवाम / अयु + अम् = अयवम् बनाइये।

हलादि अपित् प्रत्यय - परे होने पर कुछ मत कीजिये।

यु + तः = युतः / यु + थः = युथः / यु + वः = युवः / यु + मः = युमः आदि।

अजादि अपित् प्रत्यय - परे होने पर उकार को 'अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ' सूत्र से उवङ् कीजिये।

युु + अन्ति - युव् + अन्ति = युवन्ति।
यु + अन्तु - युव् + अन्तु = युवन्तु
अयु + अन् - अयुव् + अन् = अयुवन्

युु धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

लट् लकार

प्र.पु.	यौति	युतः	युवन्ति
म.पु.	यौषि	युथः	युथ
उ.पु.	यौमि	युवः	युमः

लोट् लकार

प्र.पु.	यौतु / युतात्	युताम्	युवन्तु
म.पु	युहि / युतात्	युतम्	युत
उ.पु.	यवानि	यवाव	यवाम

लङ् लकार

प्र.पु.	अयौत्	अयुताम्	अयुवन्
म.पु.	अयौः	अयुतम्	अयुत
उ.पु.	अयवम्	अयुव	अयुम

विधिलिङ् लकार

प्र.पु.	युयात्	युयाताम्	युयुः
म.पु.	युयाः	युयातम्	युयात
उ.पु.	युयाम्	युयाव	युयाम्

इसी प्रकार १०३० से १०४० तक आये हुए यु, रु,नु, क्षु, क्ष्णु, स्नु, द्यु, षु, ह्नु, कु, इन उकारान्त धातुओं के रूप बना डालिये।

ऊर्णुञ् आच्छादने धातु -

ऊर्णोतेर्विभाषा - ऊर्णु धातु के 'उ' को विकल्प से वृद्धि होती है, हलादि पित् प्रत्यय परे होने पर।

अतः एक पक्ष में इससे वृद्धि होगी और एक पक्ष में गुण होगा। ऊर्णु + ति = उर्णौति / ऊर्णोति / इसी प्रकार - ऊर्णौषि / ऊर्णोषि / ऊर्णौतु / ऊर्णोतु आदि बनेंगे।

इसके अपवाद - गुणोऽपृक्ते - अपृक्त प्रत्ययों के परे रहने पर ऊर्णु धातु को केवल गुण होता है, वृद्धि नहीं।

अपृक्त प्रत्यय किसे कहते हैं -

अपृक्त एकाल् प्रत्ययः - अपृक्त का अर्थ होता है, एक वर्ण वाला प्रत्यय। ऐसे अपृक्त प्रत्यय दो हैं। लङ् लकार के त् और स्।

इनके परे होने पर ऊर्णु धातु को केवल गुण होता है, वृद्धि नहीं। प्रौर्णोत् / प्रौर्णोः। पूरे रूप इस प्रकार बनेंगे -

लट् लकार

प्र.पु.	ऊर्णौति /ऊर्णोति	ऊर्णुतः	ऊर्णुवन्ति
म.पु.	ऊर्णौषि /ऊर्णोषि	ऊर्णुथः	ऊर्णुथ
उ.पु.	ऊर्णौमि /ऊर्णोमि	ऊर्णुवः	ऊर्णुमः

लङ् लकार

प्र.पु.	और्णोत्	और्णुताम्	और्णुवन्
म.पु.	और्णोः	और्णुतम्	और्णुत
उ.पु.	और्णवम्	और्णुव	औणुम

लोट् लकार

प्र.पु.	ऊर्णौतु / ऊर्णोतु ऊर्णुतात्	ऊर्णुताम्	ऊर्णुवन्तु
म.पु.	ऊर्णुहि/ऊर्णुतात्	ऊर्णुतम्	ऊर्णुत
उ.पु.	ऊर्णवानि	ऊर्णवाव	ऊर्णवाम

विधिलिङ् लकार

प्र. पु.	ऊर्णुयात्	ऊर्णुयाताम्	ऊर्णुयुः
म.पु.	ऊर्णुयाः	ऊर्णुयातम्	ऊर्णुयात
उ.पु.	ऊर्णुयाम्	ऊर्णुयाव	ऊर्णुयाम

रु शब्दे धातु -

तुरुस्तुशम्यमः सार्वधातुके - तु, रु, स्तु, शम्, अम् धातुओं से परे आने वाले हलादि पित् सार्वधातुक प्रत्ययों को तथा हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्ययों को विकल्प से ईट् का आगम होता है।

('तु' धातु इस सूत्र में ही होने के कारण सौत्र धातु है। यह धातु धातुपाठ

में नहीं है।)

ईट् का आगम न होने पर - उतो वृद्धिर्लुकि हलि सूत्र से वृद्धि होकर इसके रूप ठीक यु धातु के समान ही बनेंगे - रौति, रुतः, रुवन्ति आदि।

ईट् का आगम होने पर - रु + ति - रु + ईट् + ति - रु + ईति बनेगा। देखिये कि 'ति' पहिले हलादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय था। अब 'ईट्' का आगम होने से यह अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय हो गया है। अतः अब यहाँ वृद्धि न होकर गुण होगा।

रु को **सार्वधातुकार्धधातुकयोः** सूत्र से गुण होकर - रो + ईति। एचोऽयवायावः से अवादेश होकर बनेगा - रव् + ईति = रवीति।

रु + तः / ईट् का आगम होकर - रु + ईतः / यह हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय है, अतः गुण न होकर - 'अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ' सूत्र से उवङ् आदेश होकर - रु + ईतः - रुव् + ईतः = रुवीतः बनेगा।

'अन्ति' प्रत्यय चूँकि अजादि प्रत्यय है, अतः इसे ईट् का आगम नहीं होगा और परे होने पर उकार को 'अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ' सूत्र से उवङ् होकर - रु + अन्ति = रुवन्ति बनेगा।

रु धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

लट् लकार

ईट् आगम न होने पर			ईट् आगम होने पर		
रौति	रुतः	रुवन्ति	रवीति	रुवीतः	रुवन्ति
रौषि	रुथः	रुथ	रवीषि	रुवीथः	रुवीथ
रौमि	रुवः	रुमः	रवीमि	रुवीवः	रुवीमः

लङ् लकार

अरौत्	अरुताम्	अरुवन्	अरवीत्	अरुवीताम्	अरुवन्
अरौः	अरुतम्	अरुत	अरवीः	अरुवीतम्	अरुवीत
अरवम्	अरुव	अरुम	अरवम्	अरुवीव	अरुवीम

लोट् लकार

रौतु / रुतात्	रुताम्	रुवन्तु	रवीतु	रुवीताम्	रुवन्तु
रुहि / रुतात्	रुतम्	रुत	रुवीहि	रुवीतम्	रुवीत
रवानि	रवाव	रवाम	रवानि	रवाव	रवाम

विधिलिङ् लकार

रुयात्	रुयाताम्	रुयु:	रुवीयात्	रुवीयाताम्	रुवीयु:
रुया:	रुयातम्	रुयात	रुवीया:	रुवीयातम्	रुवीयात
रुयाम्	रुयाव	रुयाम	रुवीयाम्	रुवीयाव	रुवीयाम

ष्टुञ् स्तुतौ - स्तु धातु - इसके रूप रु के समान ही बनाइये।

लट् लकार

स्तौति	स्तुत:	स्तुवन्ति	स्तवीति	स्तुवीत:	स्तुवन्ति
स्तौषि	स्तुथ:	स्तुथ	स्तवीषि	स्तुवीथ:	स्तुवीथ
स्तौमि	स्तुव:	स्तुम:	स्तवीमि	स्तुवीव:	स्तुवीम:

लङ् लकार

अस्तौत्	अस्तुताम्	अस्तुवन्	अस्तवीत्	अस्तुवीताम्	अस्तुवन्
अस्तौ:	अस्तुतम्	अस्तुत	अस्तवी:	अस्तुवीतम्	अस्तुवीत
अस्तवम्	अस्तुव	अस्तुम	अस्तवम्	अस्तुवीव	अस्तुवीम

लोट् लकार

स्तौतु / स्तुतात्	स्तुताम्	स्तुवन्तु	स्तवीतु	स्तुवीताम्	स्तुवन्तु
स्तुहि / स्तुतात्	स्तुतम्	स्तुत	स्तुवीहि	स्तुवीतम्	स्तुवीत
स्तवानि	स्तवाव	स्तवाम	स्तवानि	स्तवाव	स्तवाम

विधिलिङ् लकार

स्तुयात्	स्तुयाताम्	स्तुयु:	स्तुवीयात्	स्तुवीयाताम्	स्तुवीयु:
स्तुया:	स्तुयातम्	स्तुयात	स्तुवीया:	स्तुवीयातम्	स्तुवीयात
स्तुयाम्	स्तुयाव	स्तुयाम	स्तुवीयाम्	स्तुवीयाव	स्तुवीयाम

ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि धातु - ब्रुव ईट् - ब्रू धातु से केवल हलादि पित् प्रत्यय परे आने पर उन्हें यह ईड् का आगम होता है।

हलादि पित् प्रत्यय हैं - ति, सि, मि, त्, स्, तु।

इनमें ईट् का आगम होकर तथा अङ्ग को गुण होकर रूप बनेंगे - ब्रू + ई + ति - सार्वधातुकार्धधातुकयो: सूत्र से गुण होकर - ब्रो + ई + ति - एचोऽयवायाव: सूत्र से अवादेश करके - ब्रव् + ई + ति = ब्रवीति / इसी प्रकार ब्रवीषि, ब्रवीमि, अब्रवीत्, अब्रवी:, ब्रवीतु बनाइये।

ब्रुव: पञ्चानामादित आहो ब्रुव: - लट्लकार में ब्रू धातु के प्रारम्भ

के पाँच रूपों के स्थान पर विकल्प से 'आह' आदेश होता है। साथ ही ति, तः, अन्ति, सि, थः के स्थान पर णल्, अतुस्, उस्, थल्, अथुस् आदेश होते हैं। यथा - ब्रू + ति / आह + णल् / आह् + अ = आह। इसी प्रकार ब्रू + अतुः - आहतुः / ब्रू + उः - आहुः। ब्रू + अथुः - आहथुः /

ब्रू + सि / आह + थल् / आह् + थ -

आहस्थः - आह् के ह् को थ् होता है। आह् + थ - आत्थ।

६ से ९ प्रत्ययों में धातु तथा प्रत्ययों के रूप नहीं बदलते। वे रूप पूर्ववत् ही रहते हैं। अतः ब्रू धातु के लट् लकार के पूरे रूप इस प्रकार बने -

लट् लकार परस्मैपद

प्र.पु.	ब्रवीति / आह	ब्रूतः / आहतुः	ब्रुवन्ति / आहुः
म.पु.	ब्रवीषि / आत्थ	ब्रूथः / आहथुः	ब्रूथ
उ.पु.	ब्रवीमि	ब्रूवः	ब्रूमः

लङ् लकार परस्मैपद

प्र.पु.	अब्रवीत्	अब्रूताम्	अब्रुवन्
म.पु.	अब्रवीः	अब्रूतम्	अब्रूत
उ.पु.	अब्रवम्	अब्रूव	अब्रूम

लोट् लकार परस्मैपद

अजादि पित् प्रत्ययों मे - ब्रू + आनि - सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण होकर - ब्रो + आनि - एचोऽयवायावः सूत्र से अवादेश करके - ब्रव् + आनि = ब्रवाणि / इसी प्रकार ब्रवाव, ब्रवाम।

प्र.पु.	ब्रवीतु / ब्रूतात्	ब्रूताम्	ब्रुवन्तु
म.पु.	ब्रूहि / ब्रूतात्	ब्रूतम्	ब्रूत
उ.पु.	ब्रवाणि	ब्रवाव	ब्रवाम

विधिलिङ् लकार परस्मैपद

प्र.पु.	ब्रूयात्	ब्रूयाताम्	ब्रूयुः
म.पु.	ब्रूयाः	ब्रूयातम्	ब्रूयात
उ.पु.	ब्रूयाम	ब्रूयाव	ब्रूयाम

आत्मनेपद में कोई नई विधि नहीं है। अतः हलादि अपित् प्रत्ययों में कुछ न करें - ब्रू + ते = ब्रूते /

अजादि अपित् में अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ सूत्र से उवङ् आदेश करें - ब्रू + आते = ब्रुव् + आते = ब्रुवाते /

अजादि पित् प्रत्ययों मे - ब्रू + ऐ - सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण होकर - ब्रो + ऐ - एचोऽयवायावः सूत्र से अवादेश करके - ब्रव् + ऐ = ब्रवै।

पूरे रूप इस प्रकार बनेंगे -

लट् लकार आत्मनेपद

प्र.पु.	ब्रूते	ब्रुवाते	ब्रुवते
म.पु.	ब्रूषे	ब्रुवाथे	ब्रूध्वे
उ.पु.	ब्रुवे	ब्रूवहे	ब्रूमहे

लङ् लकार आत्मनेपद

प्र.पु.	अब्रूत	अब्रुवाताम्	अब्रुवत
म.पु.	अब्रूथाः	अब्रुवाथाम्	अब्रूध्वम्
उ.पु.	अब्रुवि	अब्रूवहि	अब्रूमहि

लोट् लकार आत्मनेपद

प्र.पु.	ब्रूताम्	ब्रुवाताम्	ब्रुवताम्
म.पु.	ब्रूष्व	ब्रुवाथाम्	ब्रूध्वम्
उ.पु.	ब्रवै	ब्रवावहै	ब्रवामहै

विधिलिङ् लकार आत्मनेपद

प्र.पु.	ब्रुवीत	ब्रुवीयाताम्	ब्रुवीरन्
म.पु.	ब्रुवीथाः	ब्रुवीयाथाम्	ब्रुवीध्वम्
उ.पु.	ब्रुवीय	ब्रुवीवहि	ब्रुवीमहि

ह्नु धातु - ठीक 'ब्रू' धातु के आत्मनेपदी रूपों के समान -

लट् लकार

प्र.पु.	ह्नुते	ह्नुवाते	ह्नुवते
म.पु.	ह्नुषे	ह्नुवाथे	ह्नुध्वे
उ.पु.	ह्नुवे	ह्नुवहे	ह्नुमहे

लङ् लकार

प्र.पु.	अह्नुत	अह्नुवाताम्	अह्नुवत
म.पु.	अह्नुथाः	अह्नुवाथाम्	अह्नुध्वम्

उ.पु.	अह्नुवि	अह्नुवहि	अह्नुमहि

लोट् लकार

प्र.पु.	ह्नुताम्	ह्नुवाताम्	ह्नुवताम्
म.पु.	ह्नुष्व	ह्नुवाथाम्	ह्नुध्वम्
उ.पु.	ह्नवै	ह्नवावहै	ह्नवामहै

विधिलिङ् लकार

प्र.पु.	ह्नुवीत	ह्नुवीयाताम्	ह्नुवीरन्
म.पु.	ह्नुवीथाः	ह्नुवीयाथाम्	ह्नुवीध्वम्
उ.पु.	ह्नुवीय	ह्नुवीवहि	ह्नुवीमहि

सू धातु - भूसुवोस्तिङि - भू, सू धातुओं को सार्वधातुक तिङ् प्रत्यय परे होने पर गुण नहीं होता है। सू + ऐ - इस सूत्र से गुणनिषेध हो जाने से, अचि श्नु. से उवङ् आदेश होकर - सुवै। इसी प्रकार, सुवावहै, सुवामहै बनाइये।

लट् लकार

प्र.पु.	सूते	सुवाते	सुवते
म.पु.	सूषे	सुवाथे	सूध्वे
उ.पु.	सुवे	सूवहे	सूमहे

लङ् लकार

प्र.पु.	असूत	असुवाताम्	असुवत
म.पु.	असूथाः	असुवाथाम्	असूध्वम्
उ.पु.	असुवि	असूवहि	असूमहि

लोट् लकार

प्र.पु.	सूताम्	सुवाताम्	सुवताम्
म.पु.	सूष्व	सुवाथाम्	सूध्वम्
उ.पु.	सुवै	सुवावहै	सुवामहै

विधिलिङ् लकार

प्र.पु.	सुवीत	सुवीयाताम्	सुवीरन्
म.पु.	सुवीथाः	सुवीयाथाम्	सुवीध्वम्
उ.पु.	सुवीय	सुवीवहि	सुवीमहि

यह अदादि गण के उकारान्त धातुओं के रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।

अब हम अदादिगण के ऋकारान्त धातुओं के रूप बनायें -

अदादि गण के ऋकारान्त धातुओं के धातुरूप बनाने की विधि

जागृ धातु - जक्षित्यादयः षट् - अदादिगण का धातुपाठ देखिये। इसमें जक्ष्, जागृ, दरिद्रा, चकास्, शास्, दीधीङ्, वेवीङ् ये सात धातु हैं। इन सात धातुओं का नाम अभ्यस्त होता है।

हम जानते हैं कि जब भी धातु का नाम अभ्यस्त होता है, तब 'अदभ्यस्तात्' सूत्र से अन्ति की जगह अति, अन्तु की जगह अतु प्रत्यय लगाये जाते हैं, तथा 'सिजभ्यस्तविदिभ्यश्च' सूत्र से लङ् लकार के 'अन्' की जगह 'जुस् - उः' प्रत्यय लगाया जाता है। अब जागृ धातु के रूप इस प्रकार बनाइये -

१. सारे पित् प्रत्यय परे होने पर सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण कीजिये -

जागृ	+	ति	-	जागर्	+	ति	=	जागर्ति
जागृ	+	सि	-	जागर्	+	सि	=	जागर्षि
जागृ	+	मि	-	जागर्	+	मि	=	जागर्मि
जागृ	+	तु	-	जागर्	+	तु	=	जागर्तु
जागृ	+	आनि	-	जागर्	+	आनि	=	जागराणि
जागृ	+	आव	-	जागर्	+	आव	=	जागराव
जागृ	+	आम	-	जागर्	+	आम	=	जागराम
अजागृ	+	त्	-	अजागर्	+	त्	=	अजागः
अजागृ	+	स्	-	अजागर्	+	स्	=	अजागः
अजागृ	+	अम्	-	अजागर्	+	अम्	=	अजागरम्

अजागृ + त् - सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके - अजागर् + त्। यहाँ देखिये हल् के बाद अपृक्त (अकेला) तकार है। इसका हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से लोप कर दीजिये। अजागर् + त् - अजागर्।

खरवसानयोर्विसर्जनीयः - खर् परे होने पर तथा अवसान में आने वाले र् को विसर्ग होता है - अजागर् - अजागः। इसी प्रकार अजागृ + स् से भी अजागः बनाइये।

२. हलादि अपित् प्रत्यय परे होने पर कुछ मत कीजिये -

जागृ + तः = जागृतः

जागृ + थः = जागृथः

३. अजादि अपित् प्रत्ययों में से लङ् लकार का जुस् - उः प्रत्यय परे होने जुसि च सूत्र से गुण कीजिये - अजागृ + उः - अजागर् + उः= अजागरुः /

शेष अजादि अपित् प्रत्यय परे होने इको यणचि सूत्र से यण् कीजिये - जागृ + अति - जाग्र् + अति = जाग्रति। पूरे रूप इस प्रकार बने -

लट् लकार

प्र.पु.	जागर्ति	जागृतः	जाग्रति
म.पु.	जागर्षि	जागृथः	जागृथ
उ.पु.	जागर्मि	जागृवः	जागृमः

लङ् लकार

प्र.पु.	अजागः	अजागृताम्	अजागरुः
म.पु.	अजागः	अजागृतम्	अजागृत
उ.पु.	अजागरम्	अजागृव	अजागृम

लोट् लकार

प्र.पु.	जागर्तु / जागृतात्	जागृताम्	जागरतु
म.पु.	जागृहि / जागृतात्	जागृतम्	जागृत
उ.पु.	जागराणि	जागराव	जागराम

विधिलिङ् लकार

प्र.पु.	जागृयात्	जागृयाताम्	जागृयुः
म.पु.	जागृयाः	जागृयातम्	जागृयात
उ.पु.	जागृयाम्	जागृयाव	जागृयाम

हम अदादिगण के अजन्त धातुओं में लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् लकारों के प्रत्ययों को जोड़ने की विधि सीख चुके हैं।

नियमानुसार अब हमें अदादिगण के हलन्त धातुओं के रूप बनाना सीखना चाहिये किन्तु चूँकि अजन्त अङ्गों के रूप बनाने की विधि हम जान चुके हैं, इसलिये हम अब जुहोत्यादि गण के अजन्त धातुओं के सार्वधातुक लकारों के रूप भी बना सकते हैं।

अतः हम अदादिगण के हलन्त धातुओं के रूप बनाने का कार्य अभी यहीं रोक दें और जुहोत्यादिगण के जो भी अजन्त धातु हैं उनके रूप पहले बनाना

सीख लें। इससे हमें सरलता होगी। जुहोत्यादिगण के अजन्त धातुओं के रूप बना चुकने के बाद हम अदादिगण, जुहोत्यादिगण तथा रुधादिगण के सारे हलन्त धातुओं के रूप एक साथ बनाना सीखेंगे।

जुहोत्यादिगण के अजन्त धातुओं के लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् लकारों के रूप बनाने की विधि

जुहोत्यादिभ्यः श्लुः - सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर जुहोत्यादिगण के सारे धातुओं से कर्तरि शप् सूत्र से शप् विकरण लगाया है किन्तु उस शप् का श्लु (लोप) हो जाता है।

श्लौ - श्लु परे होने पर, धातु को द्वित्व होता है। जैसे - हु - हुहु - जुहु / मा - मामा - ममा / हा - हाहा - जहा आदि।

उभे अभ्यस्तम् - जब भी किसी धातु को द्वित्व हो जाता है, तब उन दोनों का नाम अभ्यस्त होता है। अतः जुहोत्यादिगण के ये सारे धातु जिन्हें हम द्वित्व करते हैं, इनका नाम अभ्यस्त होता है, यह जानिये।

अभ्यस्त धातुओं के लिये विशेष प्रत्यय - धातुओं की जब अभ्यस्त संज्ञा हो जाती है तब उन अभ्यस्त संज्ञक अङ्गों के बाद आने वाले लट् लकार के अन्ति के स्थान पर अति, लोट् लकार के अन्तु के स्थान पर अतु, तथा लङ् लकार के अन् के स्थान पर उः प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है। शेष प्रत्यय ज्यों के त्यों रहते हैं।

ध्यान रहे कि जुहोत्यादिगण के ये सारे अङ्ग अदन्त न होने के कारण अनदन्त है अतः इनसे द्वितीय गण समूह वाले प्रत्यय ही लगाये जायेंगे, प्रथम गण समूह वाले नहीं।

जुहोत्यादिगण का धातुपाठ खोलकर सामने रख लीजिये तथा देखिये कि १०८३ से १०९८ तक जो धातु हैं, उनके अन्त में अच् है। अतः इनको द्वित्व करके बने हुए अङ्ग अजन्त हैं।

इनके रूप आप इसलिये पहले बना लीजिये कि आप अजन्त अङ्गों में सार्वधातुक प्रत्ययों को जोड़ने की पूरी विधि जान चुके हैं। ठीक उसी विधि से अजन्त अङ्गों में जुहोत्यादिगण के सार्वधातुक प्रत्ययों को जोड़ना है।

अब जुहोत्यादिगण के सारे धातुओं को द्वित्व करके दे रहे हैं। द्वित्व करने की विस्तृत विधि लिट् लकार में देखें।

धातु	निरनुबन्ध धातु	द्वित्व किया हुआ धातु
आकारान्त धातु –		
माङ् माने शब्दे च	मा	मिमा
ओहाङ् गतौ	हा	जिहा
ओहाक् त्यागे	हा	जहा
डुदाञ् दाने	दा	ददा
डुधाञ् धारणपोषणयोः	धा	दधा
गा स्तुतौ	गा	जिगा
इकारान्त, ईकारान्त धातु –		
ञिभी भये	भी	बिभी
ह्री लज्जायाम्	ह्री	जिह्री
कि ज्ञाने	कि	चिकि
उकारान्त धातु –		
हु दानादानयोः	हु	जुहु
ऋकारान्त ॠकारान्त धातु –		
सृ गतौ	सृ	ससृ
घृ क्षरणदीप्त्योः	घृ	जिघृ
हृ प्रसह्यकरणे	हृ	जिहृ
डुभृञ् धारणपोषणयोः	भृ	बिभृ
ऋ गतौ	ऋ	इऋ
पॄ पालनपूरणयोः	पॄ	पिपॄ

भृञादि धातु –

डुभृञ्, माङ् तथा ओहाङ् तथा ये तीन धातु भृञादि धातु कहलाते हैं। इनके अभ्यास को भृञामित् सूत्र से 'इ' हो जाता है।

ऋ, पॄ, के अभ्यास को अर्तिपिपर्त्योश्च सूत्र से 'इ' हो जाता है।

घृ, हृ के अभ्यास को बाहुलकात् 'इ' हो जाता है।

जुहोत्यादिगण के हलन्त धातु –

भस भर्त्सनदीप्त्योः	भस्	बभस्
धन धान्ये	धन्	दधन्

जन जनने	जन्	जजन्
धिष शब्दे	धिष्	दिधिष्
तुर त्वरणे	तुर्	तुतुर्

निजादि धातु -

णिजिर्, विजिर् और विष्लृ ये तीन धातु निजादि धातु कहलाते हैं। इनके अभ्यास को **'निजां त्रयाणां गुणः श्लौ'** सूत्र से गुण हो जाता है।

णिजिर् शौचपोषणयोः	निज्	नेनिज्
विजिर् पृथग्भावे	विज्	वेविज्
विष्लृ व्याप्तौ	विष्	वेविष्

अब धातु + विकरण को मिलाकर सार्वधातुक लकारों के तिङ् प्रत्यय तथा सार्वधातुक कृत् प्रत्ययों के लिये अङ्ग बन चुके है। इन अङ्गों में ही हमें सार्वधातुक लकारों के तिङ् प्रत्यय तथा सार्वधातुक कृत् प्रत्यय जोड़ना चाहिये।

प्रत्यय जोड़ते समय यह कभी मत भूलिये कि वह प्रत्यय किस वर्ग का है ? हलादि पित् है या अजादि पित् है ? हलादि अपित् है या अजादि अपित् है?

अब हम क्रमशः एक एक वर्ग के अङ्गों को प्रत्ययों में जोड़ें -

आकारान्त धातु - जुहोत्यादिगण के मिमा, जिहा, जहा, जिगा, ददा, दधा ये द्वित्व करके बने हुए आकारान्त धातु हैं। पहले हम इनमें से मिमा, जिहा, जहा, जिगा के रूप बनायें। याद रखिये कि जुहोत्यादि गण के सारे अङ्गों का नाम अभ्यस्त है।

मा - मिमा, हा - जिहा, हा - जहा, गा - जिगा, इन आकारान्त अभ्यस्त धातुओं के रूप बनाने की विधि

ध्यान रहे कि इन अभ्यस्तसंज्ञक अङ्गों के बाद आने वाले लट् लकार के अन्ति के स्थान पर अति, लोट् लकार के अन्तु के स्थान पर अतु, तथा लङ् लकार के अन् के स्थान पर उः प्रत्ययों का प्रयोग किया जाये।

हमने क्र्यादिगण के आकारान्त अङ्ग 'क्रीणा' के रूप बनाये हैं। ठीक उसी विधि से इनके रूप बनाइये, अर्थात् -

१. हलादि पित् प्रत्यय परे होने पर कुछ न करें।
२. अजादि पित् प्रत्यय परे होने पर कुछ न करें।
३. हलादि अपित् प्रत्यय परे होने पर ई हल्यघोः से आ को ई बनायें।

४. अजादि अपित् प्रत्यय परे होने पर श्नाभ्यस्तयोरातः से आ का लोप कर दें।

मा - मिमा - आत्मनेपदी धातु के पूरे रूप -

	लट्			लङ्	
मिमीते	मिमाते	मिमते	अमिमीत	अमिमाताम्	अमिमत
मिमीषे	मिमाथे	मिमीध्वे	अमिमीथाः	अमिमाथाम्	अमिमीध्वम्
मिमे	मिमीवहे	मिमीमहे	अमिमि	अमिमीवहि	अमिमीमहि
	लोट्			**विधिलिङ्**	
मिमीताम्	मिमाताम्	मिमताम्	मिमीत	मिमीयाताम्	मिमीरन्
मिमीष्व	मिमाथाम्	मिमीध्वम्	मिमीथाः	मिमीयाथाम्	मिमीध्वम्
मिमै	मिमावहै	मिमामहै	मिमीय	मिमीवहि	मिमीमहि

हा - जिहा आत्मनेपदी धातु के पूरे रूप -

	लट्			लङ्	
जिहीते	जिहाते	जिहते	अजिहीत	अजिहाताम्	अजिहत
जिहीषे	जिहाथे	जिहीध्वे	अजिहीथाः	अजिहाथाम्	अजिहीध्वम्
जिहे	जिहीवहे	जिहीमहे	अजिहि	अजिहीवहि	अजिहीमहि
	लोट्			**विधिलिङ्**	
जिहीताम्	जिहाताम्	जिहताम्	जिहीत	जिहीयाताम्	जिहीरन्
जिहीष्व	जिहाथाम्	जिहीध्वम्	जिहीथाः	जिहीयाथाम्	जिहीध्वम्
जिहै	जिहावहै	जिहामहै	जिहीय	जिहीवहि	जिहीमहि

गा - जिगा परस्मैपदी धातु के पूरे रूप -

	लट्			लङ्	
जिगाति	जिगीतः	जिगति	अजिगात्	अजिगीताम्	अजिगुः
जिगासि	जिगीथः	जिगीथ	अजिगाः	अजिगीतम्	अजिगीत
जिगामि	जिगीवः	जिगीमः	अजिगाम्	अजिगीव	अजिगीम
	लोट्			**विधिलिङ्**	
जिगातु / जिगीतात्	जिगीताम्	जिगतु	जिगीयात्	जिगीयाताम्	जिगीयुः
जिगीहि / जिगीतात्	जिगीतम्	जिगीत	जिगीयाः	जिगीयाताम्	जिगीयात

जिगानि	जिगाव	जिगाम	जिगीयाम्	जिगीयाव	जिगीयाम

हा - जहा परस्मैपदी धातु के लिए विशेष विधि -

जहातेश्च - जहा धातु के आ को विकल्प से इ, ई आदेश होते है, हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर। यथा - जहा + तः = जहितः, जहीतः।

आ च हौ - जहा धातु के आ को हि प्रत्यय परे होने पर, विकल्प से इ, ई तथा आ आदेश होते हैं। यथा - जहा + हि = जहिहि / जहीहि / जहाहि।

लोपो यि - हा धातु के आ का लोप होता है यकारादि सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर। जहा + यात् - जह् + यात् = जह्यात्।

जहा के शेष रूप उपर बताये अनुसार, मिमा के समान ही बनेंगे। परस्मैपदी हा धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

लट् लकार

जहाति	जहीतः / जहितः	जहति
जहासि	जहीथः / जहिथः	जहीथ / जहिथ
जहामि	जहीवः / जहिवः	जहीमः / जहिमः

लङ् लकार

अजहात्	अजहीताम् / अजहिताम्	अजहुः
अजहाः	अजहीतम् / अजहितम्	अजहीत / अजहित
अजहाम्	अजहीव / अजहिव	अजहीम / अजहिम

लोट् लकार

जहातु / जहितात् जहीतात्	जहीताम् / जहिताम्	जहतु
जहीहि / जहिहि जहाहि / जहितात् जहीतात्	जहीतम् / जहितम्	जहित
जहानि	जहाव	जहाम

विधिलिङ् लकार

जह्यात्	जह्याताम्	जह्युः
जह्याः	जह्यातम्	जह्यात
जह्याम्	जह्याव	जह्याम

ददा तथा दधा, इन आकारान्त अभ्यस्त धातुओं के रूप बनाने की विधि

१. ददा तथा दधा रूप जो अङ्ग हैं, हलादि पित् तथा अजादि पित् प्रत्यय परे होने पर इन्हें कोई भी अङ्गकार्य न करें। केवल सन्धि करें।

ददा	+	ति	=	ददाति	/	दधा	+	ति	=	दधाति
ददा	+	सि	=	ददासि	/	दधा	+	सि	=	दधासि
ददा	+	मि	=	ददामि	/	दधा	+	मि	=	दधामि
अददा	+	त्	=	अददात्	/	अदधा	+	त्	=	अदधात्
अददा	+	स्	=	अददाः	/	अदधा	+	तस	=	अदधाः
अददा	+	अम्	=	अददाम्	/	अदधा	+	अम्	=	अदधाम्
ददा	+	आनि	=	ददानि	/	दधा	+	आनि	=	दधानि
ददा	+	आव	=	ददाव	/	दधा	+	आव	=	दधाव
ददा	+	आम	=	ददाम	/	दधा	+	आम	=	दधाम
ददा	+	ऐ	=	ददै	/	दधा	+	ऐ	=	दधै
ददा	+	आवहै	=	ददावहै	/	दधा	+	आवहै	=	दधावहै
ददा	+	आमहै	=	ददामहै	/	दधा	+	आमहै	=	दधामहै

२. अजादि अपित् और हलादि अपित् प्रत्यय परे होने पर ददा तथा दधा के 'आ' का श्नाभ्यस्तयोरातः सूत्र से लोप करें। जैसे -

ददा	+	तः	-	दद्	+	तः	=	दत्तः
दधा	+	तः	-	दध्	+	तः	=	धत्तः
ददा	+	अति	-	दद्	+	अति	=	ददति
दधा	+	अति	-	दध्	+	अति	=	दधति

दधस्तथोश्च - तकारादि तथा थकारादि प्रत्यय परे होने पर दधा के द को ध होता है। दध् + तः - धध् + तः / खरि च सूत्र से 'ध्' को चर्त्व करके = धत्तः। इसी प्रकार दध् + थः - धध् + थः = धत्थः / दध् + थ - धध् + थ = धत्थ। (खरि च का अर्थ सन्धि के पाठ में देखें)

घ्वसोरेद्धावभ्यासलोपश्च - घु संज्ञक जो दा और धा धातु इनके अन्त को ए आदेश होता है तथा अभ्यास का लोप भी होता है, हि प्रत्यय परे होने पर। ददा + हि = देहि / दधा + हि = धेहि। यह दा - ददा तथा धा - दधा के

सार्वधातुक लकारों के रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई। अब इनके पूरे रूप दिये जा रहे हैं। ऊपर की विधियों को ध्यान में रखकर इन रूपों को स्वयं बनाने का अभ्यास करें।

दा - ददा के रूप -

परस्मैपद			आत्मनेपद		
		लट् लकार			
ददाति	दत्तः	ददति	दत्ते	ददाते	ददते
ददासि	दत्थः	दत्थ	दत्से	ददाथे	दद्ध्वे
ददामि	दद्वः	दद्मः	ददे	दद्वहे	द्दमहे
		लङ् लकार			
अददात्	अदत्ताम्	अददुः	अदत्त	अददाताम्	अददत
अददाः	अदत्तम्	अदत्त	अदत्थाः	अददाथाम्	अदद्ध्वम्
अददाम्	अदद्व	अदद्म	अददि	अदद्वहि	अदद्महि
		लोट् लकार			
ददातु / दत्तात्	दत्तम्	ददतु	दत्ताम्	ददाताम्	ददताम्
देहि / दत्तात्	दत्तम्	दत्त	दत्स्व	ददाथाम्	दद्ध्वम्
ददानि	ददाव	ददाम	ददै	ददावहै	ददामहै
		विधिलिङ् लकार			
दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः	ददीत	ददीयाताम्	ददीरन्
दद्याः	दद्याताम्	दद्यात	ददीथाः	ददीयाथाम्	ददीध्वम्
दद्याम्	दद्याव	दद्याम	ददीय	ददीवहि	ददीमहि

धा - दधा के रूप -

		लट् लकार			
दधाति	धत्तः	दधति	धत्ते	दधाते	दधते
दधासि	धत्थः	धत्थ	धत्से	दधाथे	धद्ध्वे
दधामि	दध्वः	दध्मः	दधे	दध्वहे	दध्महे
		लङ् लकार			
अदधात्	अधत्ताम्	अदधुः	अधत्त	अदधाताम्	अदधत
अदधाः	अधत्तम्	अधत्त	अधत्थाः	अदधाथाम्	अधद्ध्वम्

अदधाम्	अदध्व	अदध्म	अदधि	अदध्वहि	अदध्महि

लोट् लकार

दधातु / धत्तात्	धत्ताम्	दधतु	धत्ताम्	दधाताम्	दधताम्
धेहि / धत्तात्	धत्तम्	धत्त	धत्स्व	दधाथाम्	धद्ध्वम्
दधानि	दधाव	दधाम	दधै	दधावहै	दधामहै

विधिलिङ् लकार

दध्यात्	दध्याताम्	दध्युः	दधीत	दधीयाताम्	दधीरन्
दध्याः	दध्यातम्	दध्यात	दधीथाः	दधीयाथाम्	दधीध्वम्
दध्याम्	दध्याव	दध्याम	दधीय	दधीवहि	दधीमहि

इकारान्त धातुओं के दो वर्ग बनाइये -

१. असंयोगपूर्व अनेकाच् इकारान्त धातु।

२. संयोगपूर्व अनेकाच् इकारान्त धातु।

असंयोगपूर्व अनेकाच् इकारान्त धातुओं के रूप बनाने की विधि -

जुहोत्यादिगण के भी - बिभी / कि - चिकि / ये द्वित्व करके बने हुए इकारान्त धातु हैं। इनके अन्तिम 'इ' के पूर्व में संयोग न होने के कारण ये असंयोगपूर्व इकारान्त धातु हैं।

१. इन्हें हलादि पित् प्रत्यय परे होने पर 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से गुण कीजिये। बिभी + ति - बिभे + ति - बिभेति / चिकि + ति - चिकेति।

२. इन्हें अजादि पित् प्रत्यय परे होने पर 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से गुण करके 'एचोऽयवायावः' सूत्र से अयादेश कीजिये। बिभी + आनि - बिभे + आनि - बिभय् + आनि = बिभयानि / चिकि + आनि - चिके + आनि - चिकय् + आनि = चिकयानि।

३. हलादि अपित् प्रत्यय परे होने पर क्ङिति च सूत्र से गुणनिषेध होने से अङ्ग को कुछ नहीं कीजिये। बिभी + तः - बिभीतः / चिकि + तः - चिकितः

४. अजादि अपित् प्रत्यय परे होने पर देखिये कि ये अङ्ग संयोगपूर्व अनेकाच् इकारान्त अङ्ग हैं या असंयोगपूर्व अनेकाच् इकारान्त अङ्ग हैं।

यदि ये अङ्ग असंयोगपूर्व अनेकाच् इकारान्त अङ्ग हैं, जैसे - भी - बिभी, कि - चिकि, तब अजादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर इनके अन्तिम इ, ई के स्थान पर एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य सूत्र से यण् आदेश कीजिये। यथा

- बिभी + अति = बिभ्य् + अति = बिभ्यति / चिकि + अति = चिक्य् + अति = चिक्यति।

५. जुस् - उः प्रत्यय परे होने पर अङ्ग के अन्त में आने वाले इ, ई को जुसि च सूत्र से ए गुण कीजिये। यथा - अबिभी + उः - जुसि च से गुण करके - अबिभे + उः - एचोऽयवायावः से अय् आदेश करके - अबिभय् + उः - अबिभयुः।

६. लङ् लकार के त्, स् प्रत्यय, एकाच् होने के कारण अपृक्त प्रत्यय हैं। इनके परे होने पर इस प्रकार कार्य कीजिये।

ये हलादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय हैं। अतः इनके परे होने पर इकारान्त, ईकारान्त धातु को सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से ए गुण कीजिये।

अबिभी + स् - अबिभे + स् - अबिभेस् / अचिकि + स् - अचिके + स् - अचिकेस्।

ससजुषो रुः - पदान्त सकार तथा सजुष् शब्दान्त षकार के स्थान पर रु - र् आदेश होता है। अबिभेस् - अबिभेर् / अचिकेस् - अचिकेर्।

खरवसानयोर्विसर्जनीयः - खर् परे होने पर तथा अवसान में आने वाले र् को विसर्ग होता है - अबिभेर् - अबिभेः। इसी प्रकार - अचिकेर् - अचिकेः बनाइये।

कि - चिकि धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

लट् लकार

चिकेति	चिकितः	चिक्यति
चिकेषि	चिकिथः	चिकिथ
चिकेमि	चिकिवः	चिकिमः

लङ् लकार

अचिकेत्	अचिकिताम्	अचिकयुः
अचिकेः	अचिकितम्	अचिकित
अचिकयम्	अचिकिव	अचिकिम

लोट् लकार

चिकेतु / चिकितात्	चिकिताम्	चिक्यतु
चिकिहि / चिकितात्	चिकितम्	चिकित

चिकयानि	चिकयाव	चिकयाम

विधिलिङ् लकार

चिकियात्	चिकियाताम्	चिकियुः
चिकियाः	चिकियातम्	चिकियात
चिकियाम	चिकियाव	चिकियाम

भी – बिभी धातु के लिये विशेष विधि – यह धातु असंयोगपूर्व अनेकाच् इकारान्त धातु है।

भियोऽन्यतरस्याम् – हलादि अपित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, भी धातु के 'ई' के स्थान पर विकल्प से 'इ' आदेश होता है। बिभी + तः = बिभीतः, बिभितः / बिभी + थः = बिभीथः, बिभिथः। शेष पूर्ववत्।

बिभी के पूरे रूप इस प्रकार बने –

लट् लकार

बिभेति	बिभीतः / बिभितः	बिभ्यति
बिभेषि	बिभीथः / बिभिथः	बिभीथ / बिभिथ
बिभेमि	बिभीवः / बिभिवः	बिभीमः / बिभिमः

लङ् लकार

अबिभेत्	अबिभीताम् / अबिभिताम्	अबिभयुः
अबिभेः	अबिभीतम् / अबिभितम्	अबिभीत / अबिभित
अबिभयम्	अबिभीव / अबिभिव	अबिभीम / अबिभिम

लोट् लकार

बिभेतु / बिभितात् बिभीतात्	बिभीताम् / बिभिताम्	बिभ्यतु
बिभिहि / बिभितात् बिभीतात्	बिभीतम् / बिभितम्	बिभीत / बिभित
बिभयानि	बिभयाव	बिभयाम

विधिलिङ् लकार

बिभीयात् / बिभियात्	बिभीयाताम् / बिभियातम्	बिभीयुः / बिभियुः
बिभीयाः / बिभियाः	बिभीयाताम् / बिभियातम्	बिभीयात / बिभियात
बिभीयाम् / बिभियाम्	बिभीयाव / बिभियाव	बिभीयाम / बिभियाम

संयोगपूर्व अनेकाच् इकारान्त ह्री - जिह्री धातु -

१. पूर्ववत् हलादि तथा अजादि पित् परे होने पर सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण कीजिये। जिह्री + ति - जिह्रे + ति - जिह्रेति। जिह्री + आनि - जिह्रे + आनि - एचोऽयवायावः से अय् आदेश करके - जिह्रयाणि।

२. पूर्ववत् हलादि अपित् प्रत्यय परे होने पर क्ङिति च सूत्र से गुणनिषेध होने से अङ्ग को कुछ नहीं कीजिये। जिह्री + तः - जिह्रीतः।

केवल क्रमाङ्क चार में यह अन्तर है कि -

३. अजादि अपित् प्रत्यय परे होने पर - देखिये कि ये अङ्ग संयोगपूर्व अनेकाच् इकारान्त अङ्ग हैं या असंयोगपूर्व अनेकाच् इकारान्त अङ्ग हैं।

यदि ये अङ्ग संयोगपूर्व अनेकाच् इकारान्त अङ्ग हैं, जैसे - जिह्री आदि, तो ऐसे संयोगपूर्व अनेकाच् इकारान्त अङ्गों के अन्तिम इ, ई के स्थान पर अचिश्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ सूत्र से इयङ् (इय्) आदेश कीजिये। यथा -

जिह्री + अति = जिह्रिय् + अति = जिह्रियति।

५. जुस् - उः प्रत्यय परे होने पर अङ्ग के अन्त में आने वाले इ, ई को जुसि च सूत्र से ए गुण कीजिये। अजिह्री + उः - जुसि च से गुण करके - अजिह्रे + उः - एचोऽयवायावः से अय् आदेश करके - अजिह्रय् + उः - अजिह्रयुः।

६. लङ् लकार के हलादि पित् सार्वधातुक त्, स् प्रत्यय परे होने पर भी पूर्ववत् कार्य कीजिये। ह्री - जिह्री धातु के रूप इस प्रकार बने-

लट् लकार

जिह्रेति	जिह्रीतः	जिह्रियति
जिह्रेषि	जिह्रीथः	जिह्रीथ
जिह्रेमि	जिह्रीवः	जिह्रीमः

लङ् लकार

अजिह्रेत्	अजिह्रीताम्	अजिह्रयुः
अजिह्रेः	अजिह्रीतम्	अजिह्रीत
अजिह्रयम्	अजिह्रीव	अजिह्रीम

लोट् लकार

जिह्रेतु / जिह्रीतात्	जिह्रीताम्	जिह्रियतु

जिह्रीहि / जिह्रीतात्	जिह्रीतम्	जिह्रीत
जिह्रयाणि	जिह्रयाव	जिह्रयाम

विधिलिङ् लकार

जिह्रीयात्	जिह्रीयाताम्	जिह्रीयुः
जिह्रीयाः	जिह्रीयातम्	जिह्रीयात
जिह्रीयाम	जिह्रीयाव	जिह्रयाम

उकारान्त अभ्यस्त धातुओं के रूप बनाने की विधि -

जुहोत्यादिगण में हु - जुहु यह द्वित्व करके बना हुआ उकारान्त धातु है।

१. उकारान्त अङ्ग को हलादि तथा अजादि पित् प्रत्यय परे होने पर 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से 'ओ' गुण कीजिये। जुहु + ति - जुहो + ति - जुहोति / जुहु + सि - जुहो + सि - जुहोषि /

२. अजादि पित् प्रत्यय परे होने पर 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से गुण करके 'एचोऽयवायावः' सूत्र से अयादेश कीजिये। जुहु + आनि - जुहो + आनि - जुहवानि।

३. उकारान्त अङ्ग को हलादि अपित् प्रत्यय परे होने पर क्ङिति च सूत्र से गुणनिषेध होने से अङ्ग को कुछ नहीं कीजिये। जुहु + तः - जुहुतः।

४. अजादि अपित् प्रत्यय परे होने पर - हु धातु को हुश्नुवोः सार्वधातुके सूत्र से यण् कीजिये। यथा - जुहु + अति - जुह्व् + अति - जुह्वति।

५. जुस् - उः प्रत्यय परे होने पर अङ्ग के अन्त में आने वाले उ को जुसि च सूत्र से ओ गुण कीजिये। यथा - अजुहु + उः - जुसि च से गुण करके - अजुहो + उः - एचोऽयवायावः से अव् आदेश करके - अजुहव् + उः - अजुहवुः।

हुझल्भ्यो हेर्धिः - हु धातु तथा झलन्त धातुओं से परे आने वाले हि प्रत्यय के स्थान पर धि आदेश होता है। यथा - जुहु + हि - जुहुधि।

हु - जुहु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

लट् लकार			लोट् लकार		
जुहोति	जुहुतः	जुह्वति	जुहोतु	जुहुताम्	जुह्वतु
जुहोषि	जुहुथः	जुहुथ	जुहुधि	जुहुतम्	जुहुत
जुहोमि	जुहुवः	जुहुमः	जुहवानि	जुहवाव	जुहवाम

लङ् लकार			विधिलिङ् लकार		
अजुहोत्	अजुहुताम्	अजुहवुः	जुहुयात्	जुहुयाताम्	जुहुयुः
अजुहोः	अजुहुतम्	अजुहुत	जुहुयाः	जुहुयातम्	जुहुयात्
अजुहवम्	अजुहुव	अजुहुम	जुहुयाम्	जुहुयाव	जुहुयाम

ऋकारान्त अभ्यस्त धातुओं के रूप बनाने की विधि -

जुहोत्यादिगण में भृ - बिभृ / सृ - ससृ / घृ - जिघृ / हृ - जिहृ/ ऋ - इयृ / ये द्वित्व करके बने हुए ऋकारान्त धातु हैं।

१. ऋकारान्त धातु को हलादि तथा अजादि पित् प्रत्यय परे होने पर सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से अर् गुण कीजिये। बिभृ + ति - बिभृर् + ति - बिभर्ति / बिभृ + आनि - बिभृर् + आनि - बिभराणि।

२. हलादि अपित् प्रत्यय परे होने पर क्ङिति च सूत्र से गुणनिषेध होने से ऋकारान्त धातु को कुछ नहीं कीजिये। बिभृ + तः - बिभृतः।

३. अजादि अपित् प्रत्यय परे होने पर इको यणचि सूत्र से यण् कीजिये। बिभृ + ति - बिभ्र् + ति - बिभ्रति।

४. जुस् = उः प्रत्यय परे होने पर धातु के अन्त में आने वाले ऋ को जुसि च सूत्र से 'अर्' गुण कीजिये। यथा - अबिभृ + उः - जुसि च से गुण करके - अबिभर् + उः - अबिभरुः।

५. लङ् लकार के त्, स् प्रत्यय अपृक्त प्रत्यय हैं। ये हलादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय हैं। इनके परे होने पर इस प्रकार कार्य कीजिये -

इनके परे होने पर इकारान्त, ईकारान्त धातु को सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से ए गुण कीजिये। अबिभृ + त् - अबिभर् + त्

हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् - लङ् लकार के त्, स् प्रत्यय अपृक्त प्रत्यय हैं। ये प्रत्यय यदि हल् के बाद आते हैं तो इनका लोप हो जाता है। अबिभर् + त् - यहाँ देखिये कि हल् के बाद अपृक्त (अकेला) तकार है। इसका हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से लोप कर दीजिये। अबिभर् + त् - अबिभर्।

खरवसानयोर्विसर्जनीयः - खर् परे होने पर तथा अवसान में आने वाले र् को विसर्ग होता है - अबिभर् - अबिभः / इसी प्रकार अबिभृ + स् से अबिभः बनाइये। बिभृ के पूरे रूप इस प्रकार बने -

लट् लकार			लङ् लकार		
बिभर्ति	बिभृतः	बिभ्रति	अबिभः	अबिभृताम्	अबिभरुः
बिभर्षि	बिभृथः	बिभृथ	अबिभः	अबिभृतम्	अबिभृत
बिभर्मि	बिभृवः	बिभृमः	अबिभरम्	अबिभृव	अबिभृम

लोट् लकार			विधिलिङ् लकार		
बिभर्तु / बिभृतात्	बिभृताम्	बिभ्रतु	बिभृयात्	बिभृयाताम्	बिभृयुः
बिभृहि / बिभृतात्	बिभृतम्	बिभृत	बिभृयाः	बिभृयातम्	बिभृयात
बिभराणि	बिभराव	बिभराम	बिभृयाम्	बिभृयाव	बिभृयाम

ॠकारान्त अभ्यस्त धातुओं के रूप बनाने की विधि -

जुहोत्यादिगण में पॄ - पिपॄ, यह द्वित्व करके बना हुआ दीर्घ ॠकारान्त धातु है।

१. ॠकारान्त धातु को हलादि तथा अजादि पित् परे होने पर सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से अर् गुण कीजिये। पिपॄ + ति - पिपर् + ति - पिपर्ति / पिपॄ + आनि - पिपर् + आनि - पिपराणि।

२. पवर्ग जिसके पूर्व में है, ऐसे ॠकारान्त धातु को हलादि अपित् प्रत्यय परे होने पर उदोष्ठ्यपूर्वस्य सूत्र से 'उ' कीजिये। इस 'उ' को उरण् रपरः सूत्र से रपर करके 'उर्' बनाइये - पिपॄ + तः - पिपुर् + तः / अब इस 'उर्' को हलि च सूत्र से दीर्घ करके 'ऊर्' बनाइये। पिपुर् + तः - पिपूर् + तः - पिपूर्तः।

४. अजादि अपित् प्रत्यय परे होने पर भी उदोष्ठ्यपूर्वस्य सूत्र से उर् कीजिये। पिपॄ + अति - पिपुर् + अति - पिपुरति। ध्यान रहे कि यहाँ हलि च सूत्र से दीर्घ नहीं होगा क्योंकि यह अजादि प्रत्यय है।

५. जुस् = उः प्रत्यय परे होने पर, अङ्ग के अन्त में आने वाले ॠ को जुसि च सूत्र से अर् गुण कीजिये। यथा - अपिपॄ + उः - अपिपर् + उः - अपिपरुः। पिपॄ के पूरे रूप इस प्रकार बने -

लट् लकार			लङ् लकार		
पिपर्ति	पिपूर्तः	पिपुरति	अपिपः	अपिपूर्ताम्	अपिपरुः
पिपर्षि	पिपूर्थः	पिपूर्थ	अपिपः	अपिपूर्तम्	अपिपूर्त
पिपर्मि	पिपूर्वः	पिपूर्मः	अपिपरम्	अपिपूर्व	अपिपूर्म

लोट् लकार			विधिलिङ् लकार		
पिपर्तु / पिपूर्तात्	पिपूर्ताम्	पिपुरतु	पिपूर्यात्	पिपूर्याताम्	पिपूर्युः
पिपूर्हि / पिपूर्तात्	पिपूर्तम्	पिपूर्त	पिपूर्याः	पिपूर्यातम्	पिपूर्यात
पिपराणि	पिपराव	पिपराम	पिपूर्याम्	पिपूर्याव	पिपूर्याम

हम अदादि तथा जुहोत्यादिगण के अजन्त धातुओं के लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् लकारों के रूप बनाने की विधि सीख चुके हैं।

अभी तक हमने अदादिगण तथा जुहोत्यादिगण के केवल अजन्त धातुओं के लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् लकारों के रूप बनाना सीखा है तथा हलन्त धातुओं को रोक रखा है।

अब हमें अदादिगण तथा जुहोत्यादिगण के हलन्त धातुओं के लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् तथा सार्वधातुक लेट् लकारों के रूप बनाना है। रुधादिगण के सारे धातु हलन्त ही हैं। अतः उनके रूप भी हम इन्हीं के साथ बनायेंगे।

हमने अभी तक जितने धातुओं के रूप बनाये हैं, एक बार उसका सिंहावलोकन कीजिये तो आप पायेंगे कि अभी तक जितने भी धातुओं में विकरण लगाकर हमने सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग तैयार किये है, वे सभी अङ्ग स्वरान्त अर्थात अजन्त ही हैं। जैसे हम पढ़ चुके हैं कि भ्वादि, दिवादि, तुदादि तथा चुरादि गण के धातुओं में विकरण लगाने के बाद जो अङ्ग बनते हैं वे अदन्त ही होते हैं अर्थात् उनके अन्त में ह्रस्व अ ही होता है।

क्र्यादि गण के जो ६१ अङ्ग हैं वे श्ना विकरण लगाकर बनने से आकारान्त हैं। स्वादि गण के जो अङ्ग है वे श्नु विकरण लगने के कारण उकारान्त है। तनादि गण के जो अङ्ग है वे 'उ' विकरण लगने के कारण उकारान्त है।

इसके अलावा हमने अभी तक अदादि तथा जुहोत्यादि गण के जितने भी धातुओं के रूप बनाये वे सारे के सारे धातु भी विकरण जोड़कर तथा विकरण का लोप करने के बाद भी अजन्त ही हैं।

इस प्रकार हमने जाना कि हमने अभी तक जितने भी धातुओं के रूप बनाये हैं, उन सभी में विकरण लगाकर जो सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग तैयार हुए हैं, वे सभी अङ्ग अजन्त ही है।

अब देखिये कि अदादिगण, जुहोत्यादिगण तथा रुधादि गण के जो धातु बचे हैं, वे धातु + विकरण को जोड़ने के बाद भी हलन्त ही हैं। अब हमें इन

हलन्त धातुओं के रूप बनाना है। इन हलन्त धातुओं को प्रत्ययों में कैसे जोड़ा जाये ?

अङ्गकार्य तथा वर्णकार्य

दुह् + ति = दोग्धि को देखिये। यहाँ 'ति' इस हलादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय को देखकर 'दुह्' इस अङ्ग की उपधा के लघु इक् को पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से जो गुण होकर 'दोह्' बना है इसका नाम अङ्गकार्य है, क्योंकि यह गुण रूपी अङ्ग कार्य 'ति' इस प्रत्यय के कारण हुआ है।

अब दुह् + ति को गुण रूपी अङ्गकार्य कर लेने पर, जब दोह् + ति बन गया, तब इस दोह् में ति प्रत्यय को जोड़ना बाकी रह गया। यह दो वर्णों को परस्पर जोड़ने का कार्य है अतः इसका नाम सन्धिकार्य है। यह सन्धिकार्य दो वर्णों में होता है, इसे प्रत्यय की आवश्यकता नहीं होती। यथा - दोह् + ति = दोग्धि को देखिये इसमें जो ह् को ग् हुआ है तथा ति के त् को ध् हुआ है, ये दोनों कार्य ही वर्णकार्य है। ये अङ्गकार्य नहीं है।

वर्णकार्य में एक वर्ण अपने आगे बैठे हुए वर्ण को देखता है। अङ्गकार्य में वर्ण अपने आगे बैठे हुए प्रत्यय को देखता है। इस प्रकार हमें अङ्गकार्य तथा वर्णकार्य को सूक्ष्मता से पहिचानना चाहिये तथा अङ्गकार्य कर चुकने के बाद ही सदा वर्णकार्य अर्थात् सन्धिकार्य करना चाहिये।

ये वर्णकार्य या सन्धिकार्य, गण आदि का भेद छोड़कर वर्ण + वर्ण के बीच में होते हैं। इन्हें करने के लिये प्रत्यय की जाति का विचार नहीं करना चाहिये। यह भर सदा ध्यान में बना रहे कि अङ्ग कार्य कर चुकने के बाद ही हमें सन्धि कार्य करना चाहिये।

इन हलन्त अङ्गों को प्रत्ययों में जोड़ने के लिये हल् सन्धि जानना आवश्यक है अतः हल् सन्धियों की अत्यन्त संक्षिप्त विधि बतला रहे हैं।

षष्ठ पाठ

हल् सन्धि

हमने अभी तक धातुओं से लगने वाले जितने भी प्रत्यय पढ़े हैं, उन्हें देखने पर आप पायेंगे कि ये प्रत्यय, अचों से अर्थात् अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ से / अथवा य, र, व, म, न / त, थ, ध, स / इन अक्षरों से ही प्रारम्भ हो रहे हैं। ध्यान दीजिये कि जब भी प्रत्यय अच् से अथवा य, व, र, म, से प्रारम्भ होता है, तब कोई सन्धि नहीं होती। यथा -

अ से प्रारम्भ होने वाले प्रत्यय	-	रुन्ध्	+	अन्ति	=	रुन्धन्ति
आ से प्रारम्भ होने वाले प्रत्यय	-	रुणध्	+	आवहै	=	रुणधावहै
इ से प्रारम्भ होने वाले प्रत्यय	-	अरुन्ध्	+	इ	=	अरुन्धि
ई से प्रारम्भ होने वाले प्रत्यय	-	रुन्ध्	+	ईत	=	रुन्धीत
उ से प्रारम्भ होने वाले प्रत्यय	-	अबिभय्	+	उः	=	अबिभयुः
ऊ से प्रारम्भ होने वाले प्रत्यय	-	जागर्	+	ऊकः	=	जागरूकः
ए से प्रारम्भ होने वाले प्रत्यय	-	रुन्ध्	+	ए	=	रुन्धे
ऐ से प्रारम्भ होने वाले प्रत्यय	-	रुणध्	+	ऐ	=	रुणधै
य से प्रारम्भ होने वाले प्रत्यय	-	रुन्ध्	+	यात्	=	रुन्ध्यात्
र से प्रारम्भ होने वाले प्रत्यय	-	दीप्	+	रः	=	दीप्रः
व से प्रारम्भ होने वाले प्रत्यय	-	रुन्ध्	+	वः	=	रुन्ध्वः
म से प्रारम्भ होने वाले प्रत्यय	-	रुन्ध्	+	मः	=	रुन्ध्मः
न से प्रारम्भ होने वाले प्रत्यय	-	यत्	+	नः	=	यत्नः आदि।

जब प्रत्यय त, थ, ध, स से प्रारम्भ होता है, तभी सन्धिकार्य होकर वर्ण में परिवर्तन होता है। यह परिवर्तन कभी केवल पूर्व में होता है। जैसे - भिनद् + ति - भिनत् + ति = भिनत्ति आदि। कभी केवल पर में होता है, जैसे - चष् + ते = चष्टे, यष् + ता = यष्टा आदि। कभी दोनों ओर होता है - जैसे - दोघ् + ति = दोग् + धि - दोग् + धि = दोग्धि आदि।

अब हमें हलन्त धातुओं में तकारादि, थकारादि, धकारादि, सकारादि,

प्रत्यय जोड़ना सीखना है। यह कार्य करना हम खण्ड खण्ड में सीखेंगे।

ध्यान रहे कि यहाँ सूत्र जिस क्रम से दिये जा रहे हैं, उनके अर्थ उसी क्रम से ही याद करते चलें, क्योंकि ये सूत्र, इसी क्रम से ही कार्य करेंगे।

हलन्त धातुओं में प्रत्यय जोड़ने के लिये पहिले इन प्रत्ययों के चार वर्ग बनाइये

१. हलन्त धातुओं में लङ् लकार के त् और स् प्रत्यय को जोड़ने की विधि।
२. हलन्त धातुओं में लङ् लकार के स् प्रत्यय को छोड़कर शेष सारे सकारादि प्रत्ययों को जोड़ने की विधि।
३. हलन्त धातुओं में लङ् लकार के त् प्रत्यय को छोड़कर, शेष सारे तकारादि, थकारादि प्रत्ययों को जोड़ने की विधि।
४. हलन्त धातुओं में धकारादि प्रत्ययों को जोड़ने की विधि।

पहिले हम लङ् लकार के त् और स् प्रत्ययों को हलन्त धातुओं में जोड़ने की विधि बतलाते हैं।

सारे हलन्त धातुओं में लङ् लकार के त् और स् प्रत्ययों को जोड़ने की विधि

अपृक्त एकाल् प्रत्ययः - एक अल् (वर्ण) वाले प्रत्ययों को अपृक्त प्रत्यय कहा जाता है। इसलिये लङ् लकार के त्, स् प्रत्यय, एक अल् वाले अर्थात् एक वर्ण वाले प्रत्यय होने से, अपृक्त प्रत्यय हैं।

त्, स् प्रत्ययों को धातुओं में जोड़ने का कार्य तीन खण्डों में कीजिये-

प्रथम खण्ड - त्, स् का लोप -

हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् - हल् के बाद आने वाले, अपृक्त प्रत्ययों का लोप हो जाता है। यथा -

अरुणध् + त् = अरुणध् | अरुणध् + स् = अरुणध्।
अभिनद् + त् = अभिनद् | अभिनद् + स् = अभिनद्।
अहन् + त् = अहन् | अहन् + स् = अहन्
अधोघ् + त् = अधोघ् | अधोघ् + स् = अधोघ्
असंस्त् + त् = असंस्त् | असंस्त् + स् = असंस्त् आदि।

यदि कोई अजन्त धातु भी कभी गुण, वृद्धि आदि होकर हलन्त बन जाये, तब उस हलन्त धातु से भी अपृक्त प्रत्यय परे होने पर यह लोप अवश्य कीजिये।

यथा - अजागृ + त् / ऋ को गुण होकर - अजागर् + त् - अपृक्त प्रत्यय त् का लोप होकर - अजागर्।

द्वितीय खण्ड - पदान्त में तथा झल् परे होने पर होने वाली विधियाँ-

अब ध्यान दीजिये कि यहाँ त्, स्, का लोप होने के बाद, जो शब्द बचे हैं, वे अब धातु नहीं है। इनमें तिङ् प्रत्यय लग चुके हैं, भले ही उनका लोप हो चुका है। अतः ये, अरुणध्, अभिनद्, अहन्, असंस्त् आदि अब 'सुप्तिङन्तं पदं' सूत्र के अनुसार 'तिङन्त पद' हैं और इनके अन्त में आने वाले 'हल्' अब 'पदान्त हल्' हैं। अब इन पदों में क्रम से ये कार्य कीजिये (यदि ये कार्य प्राप्त हों तो)।

१. **स्कोः संयोगाद्योरन्ते च** - यदि पद के अन्त में संयोग हो, और उस संयोग के आदि में स् या क् हों, तब उस संयोग के आदि में स्थित 'स्' 'क्' का लोप हो जाता है, झल् परे होने पर तथा पदान्त में।

जैसे - त्, स् प्रत्ययों का लोप करके बने हुए 'असंस्त्' पद को देखिये। इसके अन्त में स् + त् का संयोग है। यह पदान्त संयोग है। इस संयोग का आदि अवयव 'स्' है। अतः इस सूत्र से संयोग के आदि अवयव 'स्' का लोप करके - असंस्त् - असंत् बनाइये।

अबरीभ्रस्ज् + त् / त् का लोप करके - अबरीभ्रस्ज् / इस पद के अन्त में स् + ज् का संयोग है। यह पदान्त संयोग है। इस संयोग के आदि अवयव 'स्' का लोप करके - अबरीभ्रज् बनाइये। इसी प्रकार अलालस्ज् + त् से अलालज् / असासस्ज् + त् से असासज् /बनाइये।

अवाव्रश्च् + त् / त् का लोप करके - अवाव्रश्च् / इस पद के अन्त में श् + च् का संयोग है। इस संयोग के आदि अवयव 'स्' का लोप करके - अवाव्रच् बनाइये।

ध्यान रहे कि यहाँ जो 'श्' दिख रहा है, वह 'स्' ही है। यह 'स्' ही 'च्' से मिलकर 'स्तोः श्चुना श्चुः' सूत्र से श्चुत्व होकर 'श्' बन गया है।

२. **संयोगान्तस्य लोपः** - यदि पद के अन्त में संयोग हो, और उस संयोग के आदि में स् या क् न हों, तब उस संयोग के अन्तिम वर्ण का लोप हो जाता है, पदान्त में तथा झल् परे होने पर। जैसे -

अबाबन्ध् + त् / त् का लोप करके - अबाबन्ध्। देखिये कि इस पद के अन्त में, न् + ध् का संयोग है और इस संयोग के आदि में 'स्' या 'क्'

नहीं हैं। अत: संयोगान्तस्य लोप: सूत्र से अन्तिम संयोग के अन्तिम वर्ण 'ध्' का लोप करके - अबाबन् बनाइये।

यदि 'स्को: संयोगाद्योरन्ते च' सूत्र से संयोग के आदि अवयव 'स्' का लोप करके भी, पद के अन्त में संयोग बचे, तो उस पदान्त संयोग के अन्तिम वर्ण का भी, इसी सूत्र से लोप कीजिये। जैसे -

असंस्त् + त् में 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से 'त्' प्रत्यय का लोप करके, तथा 'स्को: संयोगाद्योरन्ते च' सूत्र से संयोग के आदि अवयव 'स्' का लोप करके 'असंत्', यह पद बना है, इसे देखिये।

'स्' का लोप करके भी इस पद के अन्त में, अनुस्वार + त् का संयोग है। पद के अन्त में होने के कारण, यह पदान्त संयोग है। अत: इस पदान्त संयोग के अन्तिम वर्ण 'त्' का 'संयोगान्तस्य लोप:' सूत्र से लोप करके - असन् बनाइये।

३. व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां ष: - व्रश्च्, भ्रस्ज्, सृज्, मृज्, यज्, राज्, भ्राज्, छकारान्त तथा शकारान्त धातुओं के अन्तिम वर्ण को ष् होता है, झल् परे होने पर तथा पदान्त में। जैसे -

अवाव्रच्	-	अवाव्रष्	अबाभ्रज्	-	अबाभ्रष्
असरीसृज्	-	असरीसृष्	अमरीमृज्	-	अमरीमृष्
अयायज्	-	अयायष्	अराराज्	-	अराराष्
अबाभ्राज्	-	अबाभ्राष्	अपाप्रष्	-	अपाप्रष्
अवावश्	-	अवावष्			

४. चो: कु: - व्रश्च्, भ्रस्ज्, सृज्, मृज्, यज्, राज्, भ्राज् तथा छकारान्त धातुओं से बचे हुए जो चवर्गान्त धातु, उनके 'चवर्ग' के स्थान पर 'कवर्ग' होता है, झल् परे होने पर तथा पदान्त में। जैसे - अवच् - 'चो: कु:' सूत्र से कुत्व करके - अवक् / तात्यज् - 'चो: कु:' सूत्र से कुत्व करके - तात्यग् आदि।

५. हो ढ: - धातुओं के अन्त में स्थित 'ह्' को 'ढ्' होता है, झल् = त, थ, ध, स परे होने पर तथा पदान्त में।

झल् परे होने पर - गर्ह् + स्यते - गर्ढ् + स्यते / गर्ह् + ता - गर्ढ् + ता / जागृह् + धि - जागृढ् + धि / जागृह् + थ: - जागृढ् + थ:।

पदान्त में - अतृणेह् - ह् को ढ् होकर - अतृणेढ्।

६. दादेर्धातोर्घ: - यदि धातु के आदि में 'द' हो और अन्त में 'ह्'

हो, तब ऐसे दकारादि हकारान्त धातुओं के 'ह्' को 'घ्' होता है, झल् = त, थ, ध, स परे होने पर तथा पदान्त में।

झल् परे होने पर - दोह् + ति - दोघ् + ति / दुह् + थः - दुघ् + थः / दुह् + धि - दुघ् + धि / दोह् + सि - दोघ् + सि।

पदान्त में - अदोह् - अदोघ्।

७. **वा द्रुहमुहष्णुहष्णिहाम्** - द्रुह् मुह् ष्णुह् ष्णिह्, धातुओं के 'ह्' को विकल्प से 'ढ्' तथा 'घ्' होते हैं, झल् परे होने पर, तथा पदान्त में।

झल् परे होने पर -

द्रुह् + ता - द्रोघ् + ता - द्रोढ् + ता
मुह् + ता - मोघ् + ता - मोढ् + ता
स्नुह् + ता - स्नोघ् + ता - स्नोढ् + ता
स्निह् + ता - स्नेघ् + ता - स्नेढ् + ता

पदान्त में -

अदोद्रोह् - अदोद्रोघ् / अदोद्रोढ्
अमोमोह् - अमोमोघ् / अमोमोढ्
अस्नोनोह् - अस्नोनोघ् / अस्नोनोढ्
अस्नेनेह् - अस्नेनेघ् / अस्नेनेढ्

८. **नहो धः** - नह् धातु के 'ह्' को 'ध्' होता है, झल् = त, थ, ध, स परे होने पर तथा पदान्त में।

झल् परे होने पर - जैसे - नह् + स्यति - नध् + स्यति / नह् + ता - नध् + ता / **पदान्त में** - अनानह् + त् - अनानह् = अनानध्।

९. **एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः** - जिन एकाच् धातुओं के अन्त में वर्ग के चतुर्थाक्षर 'झष्' अर्थात् झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, हों, तथा आदि में बश् = ब, ग, द, हों, तो उन्हें 'एकाच् बशादि झषन्त' धातु कहते हैं। जैसे - बन्ध्, बुध्।

यदि धातु एकाच् बशादि झषन्त न हों, किन्तु ऊपर कहे गये सूत्रों से 'ह्' के स्थान पर ढ्, घ् आदि बन जाने से, वे एकाच् बशादि झषन्त हो गये हों, जैसे - दुह् - दुघ् आदि, उन्हें भी 'एकाच् बशादि झषन्त' धातु कहते हैं।

ऐसे एकाच् बशादि झषन्त धातु के आदि में स्थित ब, ग, द, के स्थान पर उसी वर्ग के चतुर्थाक्षर भष् = भ, घ, ध, हो जाते हैं, सकारादि प्रत्यय परे

होने पर, ध्व शब्द परे होने पर, तथा पदान्त में।

सकारादि प्रत्यय परे होने पर बश् को भष् होना - बन्ध् + स्यति - भन्ध् + स्यति / बोध् + स्यते - भोध् + स्यते।

गर्ह् + स्यते, को देखिये कि यह हकारान्त धातु है, पर जब हम इसके 'ह्' को हो ढः सूत्र से 'ढ्' बना देते हैं, तब गर्ह् + स्यते - गर्ढ् + स्यते, यह बशादि झषन्त हो जाता है। झषन्त होने से इसके आदि 'बश्' के स्थान पर भी 'भष्' हो जाता है - गर्ढ् + स्यते - घर्ढ् + स्यते।

इसी प्रकार दोह् + सि, यह हकारान्त धातु है। जब हम इसके 'ह्' को दादेर्धातोर्घः सूत्र से 'घ्' बना देते हैं, तब दोघ् + सि, यह बशादि झषन्त हो जाता है। झषन्त होने से इसके आदि 'बश्' के स्थान पर 'भष्' हो जाता है - दोघ् + सि - धोघ् + सि।

ध्व शब्द परे होने पर बश् को भष् होना - दुह् + ध्वे - दादेर्धातोर्घः सूत्र से दुघ् + ध्वे / एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः सूत्र से - धुघ् + ध्वे।

पदान्त में बश् को भष् होना - अदोह् + त्, अदोह् + स् / 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से त् स् का लोप करके - अदोह्। ध्यान दें कि प्रत्यय का लोप हो जाने के बाद, अब यह 'अदोह्' 'पद' है।

'दादेर्धातोर्घः' सूत्र से पदान्त 'ह्' को 'घ्' करके - अदोघ् / 'एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः' सूत्र से भष् करके - अधोघ् / इसी प्रकार - अदेघ् - अदेघ् आदि।

तृतीय खण्ड - जश्त्व तथा चर्त्व विधियाँ -

यह सब कर चुकने के बाद अब सबसे अन्त में देखिये कि पद के अन्त में कौन सा वर्ण है ? यदि पद के अन्त में वर्ग के पञ्चमाक्षर हों, तो उन्हें कुछ मत कीजिये। जैसे -

अहन् = अहन् / असन् = असन् / अबाबन् - अबाबन् आदि।

यदि पद के अन्त में 'झल्' हों अर्थात् वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ व्यञ्जन, अथवा श्, ष्, स्, ह् हों तब उन्हें इस प्रकार जश्त्व, चर्त्व कीजिये।

जश्त्व विधि

१० झलां जशोऽन्ते - पदान्त झल् को जश् होता है।

जश्त्व करने का अर्थ होता है - वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ

व्यञ्जनों को उसी वर्ग का तृतीय व्यञ्जन बना देना। जैसे - अरुणध् को देखिये। यह पदान्त 'ध्' तवर्ग का चतुर्थ व्यञ्जन है। इसे जश्त्व करके तवर्ग का ही तृतीय व्यञ्जन 'द्' बनाइये - अरुणध् = अरुणद्।

इसी प्रकार अधोघ् को देखिये। यह पदान्त 'घ्' कवर्ग का चतुर्थ व्यञ्जन है। इसे जश्त्व करके कवर्ग का ही तृतीय व्यञ्जन 'ग्' बनाइये - अधोघ् = अधोग्।

अवक् को देखिये। यह पदान्त 'क्' कवर्ग का प्रथम व्यञ्जन है। इसे जश्त्व करके कवर्ग का ही तृतीय व्यञ्जन 'ग्' बनाइये - अवक् = अवग्।

अलेढ् को देखिये। यह पदान्त 'ढ्' टवर्ग का चतुर्थ व्यञ्जन है। इसे जश्त्व करके टवर्ग का ही तृतीय व्यञ्जन 'ड्' बनाइये - अलेढ् = अलेड्।

वैकल्पिक चर्त्व विधि

११ वाऽवसाने - अवसान अर्थात् अन्त में स्थित झल् को विकल्प से चर् होता है। चर्त्व होने का अर्थ होता है - वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ व्यञ्जनों को, विकल्प से उसी वर्ग का प्रथम व्यञ्जन बना देना।

अत: अवसान के 'झल्' को विकल्प से झलां जशोऽन्ते से 'जश्' तथा वाऽवसाने से 'चर्' बनाइये। जैसे -

अवच् - अवग् / अवक्   अधोघ् - अधोग् / अधोक्
अरुणध् - अरुणद् / अरुणत्   अभिनद् - अभिनद् / अभिनत्
अलेढ् - अलेड् / अलेट्   अतृणेढ् - अतृणेड् / अतृणेट् आदि।

फलत: जश्त्व तथा चर्त्व इस प्रकार होते हैं -

कवर्गान्त धातु - कवर्ग को जश् 'ग्' होता है तथा कवर्ग को चर् 'क्' होता है - अशाशक् - जश्त्व होकर अशाशग् / चर्त्व होकर - अशाशक्।

चवर्गान्त धातु - चवर्ग के सदा दो वर्ग बनाकर कार्य कीजिये -

१. व्रश्च्, भ्रस्ज्, सृज्, मृज्, यज्, राज्, भ्राज्, छकारान्त तथा शकारान्त धातु - इन धातुओं के अन्तिम वर्ण को पहिले व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' बनाइये। उसके बाद ष् को विकल्प से जश्त्व तथा चर्त्व कीजिये।

यथा - अवाव्रश्च् - स्कोः. से सलोप करके - अवाव्रच् / व्रश्चभ्रस्जसृज - मृजयजराजभ्राजच्छशां षः सूत्र से च् को ष् बनाकर - अवाव्रष् / ष् को जश्त्व करके - अवाव्रड् / ड् को चर्त्व करके - अवाव्रट्।

इसी प्रकार अबाभ्रज् - व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः सूत्र से

अबाभ्रष्/ जश्त्व करके - अबाभ्रड् / चर्त्व करके - अबाभ्रट्।

असरीसृज् - व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः सूत्र से असरीसृष्/ जश्त्व करके - असरीसृड् / चर्त्व करके - असरीसृट्।

अमार्ज् - व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः सूत्र से अमार्ष्/ जश्त्व करके - अमार्ड् / चर्त्व करके - अमार्ट्।

इसी प्रकार - अयायज् - अयायड्, अयायट् / अराराज् - अराराड्, अराराट् / अबाभ्राज् - अबाभ्राड्, अबाभ्राट् /

अपाप्रच्छ् - व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः सूत्र से अपाप्रष् / जश्त्व करके - अपाप्रड् / चर्त्व करके - अपाप्रट्।

२. व्रश्च्, भ्रस्ज्, सृज्, मृज्, यज्, राज्, भ्राज् तथा छकारान्त धातुओं के अतिरिक्त जो चवर्गान्त धातु हैं, उन्हें 'चोः कुः' सूत्र से कवर्ग बनाइये।

अवच् - 'चोः कुः' सूत्र से कुत्व करके - अवक् / जश्त्व करके - अवग् / चर्त्व करके - अवक्। इसी प्रकार - अतात्यज् - अतात्यग् आदि।

टवर्गान्त धातु - टवर्ग को जश् 'ड्' होता है तथा टवर्ग को चर् 'ट्' होता है - अतृणेढ् - जश्त्व होकर अतृणेड् / चर्त्व होकर - अतृणेट्।

तवर्गान्त धातु - तवर्ग को जश् 'द्' होता है तथा तवर्ग को चर् 'त्' होता है - अरुणध् - अरुणद् - अरुणत् / अभिनद् - अभिनद् - अभिनत् आदि।

दकारान्त धातुओं से 'स्' प्रत्यय परे होने पर विशेष विधि -

दश्च - लङ् लकार का स् प्रत्यय परे होने पर दकारान्त धातुरूप जो पद, उसके अन्तिम दकार के स्थान पर विकल्प से द् तथा रु आदेश होते हैं।

दकार के स्थान पर द् आदेश होने पर - अभिनद् / द् को दत्व करके - अभिनद् बना / वाक्य बनेगा - अभिनद् त्वम्।

दकार के स्थान पर रु आदेश होने पर - अभिनद् - अभिनर् /

खरवसानयोर्विसर्जनीयः - खर् परे होने पर तथा अवसान में आने वाले 'र्' को विसर्ग होता है। इस सूत्र से अवसान में आने वाले 'र्' को विसर्ग करके - अभिनः बना / वाक्य बनेगा - अभिनः त्वम्।

पवर्गान्त धातु - पवर्ग को जश् 'ब्' होता है तथा पवर्ग को चर् 'प्' होता है - अलालभ् - जश्त्व होकर अलालब् / चर्त्व होकर अलालप् आदि।

शकारान्त धातु - इनके अन्तिम वर्ण को पहिले व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयज-

राजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' बनाइये। उसके बाद ष् को विकल्प से जश्त्व तथा चर्त्व कीजिये।

प्रश्न होता है कि 'ष्' के स्थान पर जश् तथा चर् क्या होते हैं - ष् के स्थान पर जश् 'ड्' होता है, क्योंकि ष् तथा ड्, इन दोनों का ही उच्चारणस्थान मूर्धा है। ष् के स्थान पर चर् 'ट्' होता है, क्योंकि ष् तथा ट्, इन दोनों का ही उच्चारणस्थान मूर्धा है। यथा - अवश् - अवष् / ष् को जश्त्व होकर अवड् / चर्त्व होकर - अवट्।

षकारान्त धातु - अद्वेष् - जश्त्व करके - अद्वेड् / चर्त्व करके - अद्वेट्।

सकारान्त धातु - तिप्यनस्तेः - लङ् लकार के त् प्रत्यय परे होने पर सकारान्त पद के अन्तिम सकार के स्थान पर द् आदेश होता है।

अचकास् + त् - **हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्** सूत्र से त् का लोप करके बना - अचकास् / अन्तिम स् को दत्व करके बना - अचकाद् / वाक्य बनेगा - अचकाद् भवान्।

सिपि धातो रुर्वा - लङ् लकार का स् प्रत्यय परे होने पर, सकारान्त धातुरूप जो पद, उस पद के अन्तिम सकार के स्थान पर विकल्प से द् तथा रु = र् आदेश होते हैं। अचकास् + स् / स् का लोप करके - अचकास् -

'स्' को 'सिपि धातो रुर्वा' सूत्र से 'द्' होने पर -

अचकास् = अचकाद् बना / इसका वाक्य बनेगा - अचकाद् त्वम्।

'स्' को 'सिपि धातो रुर्वा' सूत्र से 'रु' होने पर -

अचकास् - अचकारु / उ की इत्संज्ञा करके - अचकार् / इसके बाद खरवसानयोर्विसर्जनीयः सूत्र से अवसान में आने वाले र् को विसर्ग करके - अचकार् = अचकाः। इसका वाक्य बनेगा - अचकाः त्वम्।

दकारादि हकारान्त धातु - दुह्, दिह् आदि -

अदोह् + त् / हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् से त् का लोप करके - अदोह् / ह् को दादेर्धातोर्घः सूत्र से घ् बनाकर - अदोघ् / एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः, सूत्र से 'द' को भष् करके - अधोघ् / जश्त्व करके - अधोग् / चर्त्व करके - अधोक्। स् प्रत्यय परे होने पर भी अधोग् / अधोक् बनाइये।

ठीक इसी प्रकार दिह् धातु से जश्त्व करके अधेग् / चर्त्व करके अधेक्

बनाइये।

शेष हकारान्त धातु - इन धातुओं के अलावा जितने भी हकारान्त धातु बचे, उनके रूप इस प्रकार बनाइये - अलेह् + त् - हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् से त् का लोप करके - अलेह् / हो ढः से ह् को ढ् बनाकर - अलेढ् / ढ् को जश्त्व करके अलेड् / चर्त्व करके अलेट् बनाइये।

ठीक इसी प्रकार, अतृणेह् से अतृणेड् / अतृणेट् बनाइये। यह हलन्त धातुओं में त्, स् प्रत्यय जोड़ने की विधि पूर्ण हुई।

हलन्त धातुओं में, लङ् लकार के स् प्रत्यय को छोड़कर, शेष सारे सकारादि प्रत्ययों को जोड़ने की विधि

सकारादि प्रत्यय परे होने पर, क् ख् ग् घ् / च् छ् ज् झ् / श् ष् इन १० वर्णो को क् बनाइये तथा प्रत्यय के स् को आदेशप्रत्यययोः सूत्र से ष् बनाइये। क् + ष् को मिलाकर क्ष् बनाइये।

शक्	+	स्यति	-	शक्	+	ष्यति	=	शक्ष्यति
लेलेख्	+	सि	-	लेलेक्	+	षि	=	लेलेक्षि
तात्वङ्ग्	+	सि	-	तात्वङ्क्	+	षि	=	तात्वङ्क्षि
जाघघ्	+	सि	-	जाघक्	+	षि	=	जाघक्षि
लालङ्घ्	+	सि	-	लालङ्क्	+	षि	=	लालङ्क्षि
वच्	+	सि	-	वक्	+	षि	=	वक्षि
प्रच्छ्	+	स्यति	-	प्रक्	+	ष्यति	=	प्रक्ष्यति
योज्	+	स्यति	-	योक्	+	ष्यति	=	योक्ष्यति
जाझर्झ्	+	सि	-	जाझर्क्	+	षि	=	जाझर्क्षि
क्रोश्	+	स्यति	-	क्रोक्	+	ष्यति	=	क्रोक्ष्यति
कर्ष्	+	स्यति	-	कर्क्	+	ष्यति	=	कर्क्ष्यति

'क् ख् ग् घ्' को 'क्' इस प्रकार बनाइये -

खरि च - जब भी प्रत्यय खर् अर्थात् त, थ, स से प्रारम्भ हो रहा हो, तब उस प्रत्यय का पूर्ववर्ती वर्ण, अपने ही वर्ग का 'प्रथमाक्षर' बन जाता है।

अतः 'क् ख् ग् घ्' को 'खरि च' सूत्र से 'क्' बनाइये। जैसे - त्यग् + स्यति - त्यक् + स्यति / धोघ् + सि - धोक् + सि / आदि।

इसे ही चर्त्व सन्धि कहते हैं।

आदेशप्रत्यययोः - इण् तथा कवर्ग के बाद आने वाले आदेश तथा प्रत्यय के 'सकार' के स्थान पर 'षकार' होता है। धोक् + सि - धोक् + षि = धोक्षि। धेक् + सि - धेक् + षि = धेक्षि। इसे ही षत्व विधि कहते हैं।

यह क् ख् ग् घ् के क् बनने की विधि हुई।

'च् छ् ज् झ्' को 'क्' इस प्रकार बनाइये -

चोः कुः - चवर्ग के स्थान पर कवर्ग होता है, यदि प्रत्यय के आदि में झल् = त, थ, ध, स हों, तो, अथवा पदान्त में। अतः -

'च् छ् ज् झ्' को 'चोः कुः' सूत्र से कुत्व करके पहिले 'क् ख् ग् घ्' बनाइये। जैसे - त्यज् + स्यति - त्यग् + स्यति / ग् को खरि च से चर्त्व करके - त्यक् + स्यति / प्रत्यय के स् को आदेशप्रत्यययोः सूत्र से ष् बनाकर - त्यक् + ष्यति = त्यक्ष्यति।

वच् + स्यति - कुत्व करके - वक् + स्यति / प्रत्यय के स् को षत्व करके - वक् + ष्यति = वक्ष्यति। यह च् छ् ज् झ् के क् बनने की विधि हुई।

श् को 'क्' इस प्रकार बनाइये -

जब भी प्रत्यय झल् अर्थात् त, थ, ध, स से प्रारम्भ होता है, तब उस प्रत्यय के पूर्ववर्ती **श् को 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः'** सूत्र से 'ष्' होता है। जैसे - क्रोश् + स्यति - क्रोष् + स्यति / वश् + सि - वष् + सि।

षढोः कः सि - 'ष्' के स्थान पर 'क्' होता है, स् परे होने पर।

हमने जिस श् को व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः सूत्र से 'ष्' बनाया है, वह 'ष्' अब इस षढोः कः सि सूत्र से क् बन जाता है।

क्रोष् + स्यति - क्रोक् + ष्यति = क्रोक्ष्यति / वष् + सि - वक् + षि = वक्षि। यह श् के क् बनने की विधि हुई।

ष् को 'क्' इस प्रकार बनाइये - 'ष्' को षढोः कः सि सूत्र से 'क्' होता है, स् परे होने पर। कर्ष् + स्यति - कर्क् + ष्यति = कर्क्ष्यति।

यह ष् के क् बनने की विधि हुई। यह पूर्वोक्त दस वर्णों में सकारादि प्रत्यय जोड़ने की विधि पूर्ण हुई। अब, अन्य वर्णों का विचार करते हैं।

त् थ् द् ध् से अन्त होने वाले धातु - त् थ् द् ध् को खरि च सूत्र से उसी वर्ग का प्रथमाक्षर त् बनाइये। प्रत्यय के स् को कुछ मत कीजिये - अद् + स्यति - अत् + स्यति = अत्स्यति

क्रोध्	+	स्यति	-	क्रोत्	+	स्यति	=	क्रोत्स्यति

विशेष - बन्ध्, बुध् के आदि में स्थित तृतीयाक्षर 'ब' को पूर्वोक्त 'एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः' सूत्र से उसी वर्ग का चतुर्थाक्षर 'भ' बनाकर अन्त के चतुर्थाक्षर 'ध्' को खरि च सूत्र से उसी वर्ग का प्रथमाक्षर 'त्' बनाइये।

बन्ध्	+	स्यति	-	भन्त्	+	स्यति	=	भन्त्स्यति
बोध्	+	स्यते	-	भोत्	+	स्यते	=	भोत्स्यते

प् फ् ब् भ् से अन्त होने वाले धातु - प् फ् ब् भ् को, खरि च सूत्र से उसी वर्ग का प्रथमाक्षर प् बनाइये। प्रत्यय के स् को कुछ मत कीजिये -

आप्	+	स्यति	-	आप्	+	स्यति	=	आप्स्यति
लभ्	+	स्यते	-	लप्	+	स्यते	=	लप्स्यते

विशेष - दकारादि धकारान्त दम्भ् आदि धातुओं के आदि में स्थित तृतीयाक्षर 'द' को पूर्वोक्त 'एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः' सूत्र से उसी वर्ग का चतुर्थाक्षर 'भ' बनाकर अन्त के चतुर्थाक्षर 'भ्' को खरि च सूत्र से उसी वर्ग का प्रथमाक्षर 'प्' बनाइये।

दादम्भ्	+	सि	-	दाधम्प्	+	सि	=	दाधम्प्सि

न् म् से अन्त होने वाले धातु - अपदान्त न् म् को 'नश्चापदान्तस्य झलि' सूत्र से, अनुस्वार बनाइये, प्रत्यय के स् को कुछ मत कीजिये -

मन्	+	स्यते	-	मं	+	स्यते	=	मंस्यते
रम्	+	स्यते	-	रं	+	स्यते	=	रंस्यते

सकारान्त धातु - सकारान्त धातुओं के बाद सकारादि प्रत्यय आने पर विचार कीजिये कि वह प्रत्यय यदि सार्वधातुक है, तब तो आप कुछ मत कीजिये। यथा - आस् + से = आस्से। आदि।

यदि सकारादि प्रत्यय आर्धधातुक है तब आप 'सः स्यार्धधातुके' सूत्र से धातु के अन्तिम स् को त् बना दीजिये। यथा -

वस्	+	स्यति	-	वत्	+	स्यति	=	वत्स्यति
घस्	+	स्यति	-	घत्	+	स्यति	=	घत्स्यति

हकारान्त धातु + सकारादि प्रत्यय

हकारान्त धातु - **हकारान्त धातुओं के चार वर्ग बनाइये -**

१. **नह् धातु** - नह् धातु के बाद सकारादि प्रत्यय आने पर नह् के

अन्तिम 'ह्' को नहो धः सूत्र से 'ध्' बनाइये। उसके बाद 'ध्' को 'खरि च' सूत्र से चर्त्व करके 'त्' बनाइये। प्रत्यय के स् को कुछ मत कीजिये -

नह् - नह् + स्यति - नत् + स्यति = नत्स्यति

२. **बकारादि तथा गकारादि हकारान्त धातु** - जैसे - बर्ह्, बृंह्, गृह्, गाह्, गुह् आदि धातु -

बकारादि तथा गकारादि हकारान्त धातुओं के बाद सकारादि प्रत्यय आने पर, इन धातुओं के अन्त में स्थित ह् को 'हो ढः' सूत्र से ढ् बनाइये। उसके बाद इनके आदि में स्थित वर्ग के तृतीयाक्षर 'ब' 'ग' को 'एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः' सूत्र से उसी वर्ग का चतुर्थाक्षर 'भ' 'घ' बना दीजिये।

जैसे - बाबृंह् + सि - बाबृंढ् + सि - बाभृंढ् + सि / गर्ह् + स्यते - गर्ढ् + स्यते - घर्ढ् + स्यते / उसके बाद -

'षढोः कः सि' सूत्र से 'ढ्' के स्थान पर 'क्' बनाइये। बाभृंढ् + सि - बाभृंक् + सि / घर्ढ् + स्यते - घर्क् + स्यते / प्रत्यय के 'स्' को 'आदेशप्रत्यययोः' सूत्र से 'ष्' बनाइये। क् + ष् को मिलाकर क्ष् बनाइये = बाभृंक्षि / घर्क्ष्यति।

बाबृंह् + सि - बाभृंढ् + सि = बाभृंक्षि
गर्ह् + स्यते - घर्क् + ष्यते = घर्क्ष्यते
गाह् + स्यते - घाक् + ष्यते = घाक्ष्यते
गोह् + स्यते - घोक् + ष्यते = घोक्ष्यते

३. **दकारादि हकारान्त दह्, दिह्, दुह्, द्रुह् आदि धातु** -

ऐसे धातुओं के बाद, सकारादि प्रत्यय आने पर -

१. इन धातुओं के अन्त में स्थित ह् को, दादेर्धातोर्घः सूत्र से घ् बनाइये। उसके बाद आप धातु के आदि में स्थित वर्ग के तृतीयाक्षर 'द' को 'एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः' सूत्र से उसी वर्ग का चतुर्थाक्षर 'ध' बना दीजिये। जैसे - दोह् + स्यते - दोघ् + स्यते - धोघ् + स्यते।

२. अब खरि च से घ् को चर्त्व करके - धोघ् + स्यते - धोक् + स्यते।

३. अब प्रत्यय के स् को आदेशप्रत्यययोः सूत्र से ष् बनाइये। क् + ष् को मिलाकर क्ष् बनाइये - धोक् + स्यते - धोक् + ष्यते - धोक्ष्यते। ऐसे ही-

दुह् - दोह् + स्यति - धोक् + ष्यति = धोक्ष्यति
दह् - दह् + स्यति - धक् + ष्यति = धक्ष्यति

दिह् - देह् + स्यति - धेक् + ष्यति = धेक्ष्यति

द्रुह् - द्रोह् + स्यति - ध्रोक् + ष्यति = ध्रोक्ष्यति

४. इन हकारान्त धातुओं से बचे हुए हकारान्त धातु - इनके बाद सकारादि प्रत्यय आने पर, इनके अन्तिम 'ह्' को 'हो ढः' सूत्र से ढ् बनाइये। उसके बाद षढोः कः सि सूत्र से 'ढ्' के स्थान पर 'क्' बनाइये। प्रत्यय के स् को आदेशप्रत्यययोः सूत्र से ष् बनाइये। क् + ष् को मिलाकर क्ष् बनाइये।

वह् - वह् + स्यति - वक् + ष्यति = वक्ष्यति

यह सारे हलन्त धातुओं में सकारादि प्रत्यय जोड़ने की विधि पूर्ण हुई।

अब लङ् लकार के त् को छोड़कर शेष तकारादि, थकारादि प्रत्ययों को हलन्त धातुओं में जोड़ने की विधि बतलाते हैं।

हलन्त धातुओं में, लङ् लकार के त् प्रत्यय को छोड़कर, शेष सारे तकारादि, थकारादि प्रत्ययों को जोड़ने की विधि

खरि च - जब भी प्रत्यय खर् अर्थात् त, थ, स से प्रारम्भ हो रहा हो, तब उस प्रत्यय का पूर्ववर्ती वर्ण, अपने ही वर्ग का 'प्रथमाक्षर' बन जाता है।

पहिले हम प्रत्येक वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय वर्णों से अन्त होने वाले धातुओं को तकारादि, थकारादि प्रत्ययों में जोड़ेंगे -

प्रत्येक वर्ग के चतुर्थ वर्ण से अन्त होने वाले धातुओं को तकारादि, थकारादि प्रत्ययों में बाद में जोड़ेंगे।

तकारादि, थकारादि प्रत्यय परे होने पर - क् ख् ग् को खरि च सूत्र से क् बनाइये तथा प्रत्यय के त् थ् को कुछ मत कीजिये -

शाशक् + ति - शाशक् + ति = शाशक्ति

शाशक् + थः - शाशक् + थः = शाशक्थः

लेलेख् + ति - लेलेक् + ति = लेलेक्ति

लेलेख् + थः - लेलेक् + थः = लेलेक्थः

तात्वङ्ग् + ति - तात्वङ्क् + ति = तात्वङ्क्ति

तात्वङ्ग् + थः - तात्वङ्क् + थः = तात्वङ्क्थः

चवर्गान्त धातुओं के दो वर्ग बनाइये -

१. व्रश्च्, भ्रस्ज्, सृज्, मृज्, यज्, राज्, भ्राज् धातु तथा सारे छकारान्त धातु - इन धातुओं के अन्तिम वर्ण के स्थान पर व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयज-

राजभ्राजच्छशां षः सूत्र से 'ष्' कीजिये और ष्टुना ष्टुः सूत्र से प्रत्यय के 'त' को 'ट', तथा प्रत्यय के 'थ' को 'ठ' बनाइये -

वाव्रश्च्	+	ति	=	वाव्रष्टि	वाव्रश्च्	+	थः	=	वाव्रष्ठः
बाभ्रज्ज्	+	ति	=	बाभ्रष्टि	बाभ्रज्ज्	+	थः	=	बाभ्रष्ठः
सरीसर्ज्	+	ति	=	सरीसर्ष्टि	सरीसृज्	+	थः	=	सरीसृष्ठः
मार्ज्	+	ति	=	मार्ष्टि	मृज्	+	थः	=	मृष्ठः
यायज्	+	ति	=	यायष्टि	यायज्	+	थः	=	यायष्ठः
पाप्रच्छ्	+	ति	=	पाप्रष्टि	पाप्रच्छ्	+	थः	=	पाप्रष्ठः
बाभ्राज्	+	ति	=	बाभ्राष्टि	बाभ्राज्	+	थः	=	बाभ्राष्ठः
राराज्	+	ति	=	राराष्टि	राराज्	+	थः	=	राराष्ठः

२. व्रश्च्, भ्रस्ज्, सृज्, मृज्, यज्, राज्, भ्राज् धातु तथा सारे छकारान्त धातुओं से बचे हुए शेष चवर्गान्त धातु -

द्वितीयाक्षर छ् को तो हम ष् बना ही चुके हैं। अतः च्, ज् ही बचे। इन च्, ज् को 'चोः कुः' सूत्र से क्, ग् बनाइये, उसके बाद उन्हें 'खरि च' से चर्त्व करके 'क्' बनाइये, तथा प्रत्यय के त, थ को कुछ मत कीजिये-

रिंच्	+ तः	-	रिङ्क्	+	तः	=	रिङ्क्तः
रिंच्	+ थः	-	रिङ्क्	+	थः	=	रिङ्क्थः
भुंज्	+ तः	-	भुङ्क्	+	तः	=	भुङ्क्तः
भुंज्	+ थः	-	भुङ्क्	+	थः	=	भुङ्क्थः

टवर्गान्त धातु - इनके अन्तिम ट् ठ् ड् को खरि च सूत्र से ट् बनाइये। उसके बाद ष्टुना ष्टुः सूत्र से प्रत्यय के त को ट तथा प्रत्यय के थ को ठ बनाइये।

ईड्	+ ते	-	ईट्	+	टे	=	ईट्टे

तवर्गान्त धातु - इनके अन्तिम त् थ् द् को खरि च सूत्र से त् बनाइये। प्रत्यय के त, थ को कुछ मत कीजिये -

अद्	+ ति	-	अत्	+	ति	=	अत्ति
अद्	+ थः	-	अत्	+	थः	=	अत्थः
छिंद्	+ तः	-	छिन्त्	+	तः	=	छिन्त्तः
छिंद्	+ थः	-	छिन्त्	+	थः	=	छिन्थः

यहाँ छिन्त् + तः तथा छिन्त् + थः में **'झरो झरि सवर्णे'** सूत्र से विकल्प

से पूर्व त् का लोप करके छिन्तः, छिन्थः रूप भी बनेंगे।

झरो झरि सवर्णे – हल् से परे जो झर्, उसका लोप होता है, झर् परे होने पर।

धा धातु के लिये विशेष – दधस्तथोश्च – 'दध्' के 'द' को 'ध' होता है, त, थ, ध, स परे होने पर। जैसे – दध् + तः – धध् + तः / दध् + थः – धध् + थः / दध् + से – धध् + से / दध् + ध्वे – धध् + ध्वे।

पवर्गान्त धातु – इनके अन्तिम प् फ् ब् को खरि च सूत्र से प् बनाइये। प्रत्यय के त थ को कुछ मत कीजिये –

छोप् + ता = छोप्ता तेप् + ता = तेप्ता आदि।

यह सभी वर्गों के प्रथम द्वितीय तृतीय वर्णों का विचार पूर्ण हुआ।

अब प्रत्येक वर्ग के चतुर्थ वर्ण से अन्त होने धातुओं में अर्थात् झषन्त धातुओं में तकारादि, थकारादि प्रत्ययों को जोड़ने का विचार करते हैं –

जब धातु के अन्त में वर्ग का चतुर्थाक्षर हो, तब आप ऐसे धातुओं के बाद में आने वाले –

१. प्रत्यय के त, थ को पहिले **'झषस्तथोर्धोऽधः'** सूत्र से 'ध' बना दीजिये।

२. उसके बाद धातु के अन्त में बैठे हुए, वर्ग के चतुर्थाक्षर को **'झलां जश् झशि'** सूत्र से उसी वर्ग का तृतीयाक्षर बना दीजिये।

दोघ्	+	ति	–	दोग्	+	धि	= दोग्धि
लालभ्	+	ति	–	लालब्	+	धि	= लालब्धि
रुणध्	+	ति	–	रुणद्	+	धि	= रुणद्धि
जाझर्झ्	+	ति	–	जाझर्ग्	+	धि	= जाझर्ग्धि

जाझर्ग्धि – जाझर्झ् + ति। यह चवर्गान्त है, अतः पहिले 'चोः कुः' से 'झ्' को कवर्ग का चतुर्थाक्षर 'घ्' बनाकर – जाझर्घ् + ति / अब 'झषस्तथोर्धोऽधः' सूत्र से प्रत्यय के 'त' को 'ध' बनाकर – जाझर्घ् + धि / अब 'झलां जश् झशि' सूत्र से घ् को जश्त्व करके – जाझर्ग् + धि – जाझर्ग्धि।

यह चतुर्थाक्षरों का विचार पूर्ण हुआ।

अब नकारान्त, मकारान्त अर्थात् अनुनासिकान्त धातुओं में तकारादि, थकारादि प्रत्ययों को जोड़ने का विचार करते हैं –

नकारान्त, मकारान्त धातुओं में अर्थात् अनुनासिकान्त धातुओं में प्रत्यय जोड़ने के पहिले यह निर्णय अवश्य कीजिये कि जो तकारादि प्रत्यय आप धातु में लगाने जा रहे हैं, वह तकारादि प्रत्यय कहीं कित् ङित् तो नहीं है ? क्योंकि तकारादि प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं।

१. कित् ङित् तकारादि प्रत्यय, जैसे - क्त, क्तवतु, क्तिन्, तः आदि।

२. कित् ङित् से भिन्न तकारादि प्रत्यय, जैसे - तुमुन्, तव्य, ति, आदि।

बहुत सावधानी से पहिचानिये, कि जो तकारादि प्रत्यय आप लगाने जा रहे हैं, वह तकारादि प्रत्यय कित् ङित् तकारादि प्रत्यय है अथवा कित् ङित् से भिन्न तकारादि प्रत्यय है।

यदि नकारान्त, मकारान्त धातुओं अर्थात् अनुनासिकान्त धातुओं से लगा हुआ तकारादि प्रत्यय, कित् ङित् है, तब हमें सन्धि करने के पहिले अङ्गकार्य करने वाले दो सूत्रों को सामने रखकर ही सन्धि करना चाहिये।

१. **अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलि क्ङिति** - मन् (दिवादिगण), हन्, गम्, रम्, नम्, यम्, वन्, तन्, सन्, क्षण्, क्षिण्, ऋण्, तृण्, घृण्, मन् (तनादिगण), इन १५ धातुओं के अन्तिम अनुनासिक वर्णों का लोप हो जाता है, झलादि कित् ङित् प्रत्यय परे होने पर। यथा -

हन्	+	तः	=	हतः	हन्	+	थः	=	हथः
गम्	+	तः	=	गतः	जङ्गम्	+	थः	=	जङ्गथः
मन्	+	तः	=	मतः	सन्	+	तः	=	सतः
रम्	+	तः	=	रतः	यम्	+	तः	=	यतः

२. **अनुनासिकस्य क्विझलोः क्ङिति** - इन १५ धातुओं के अलावा जितने भी अनुनासिकान्त धातु हैं, उनकी उपधा को, झलादि कित् ङित् प्रत्यय परे होने पर दीर्घ होता है।

शम् + क्त - शाम् + त / वम् + क्त - वाम् + त आदि।

जिन धातुओं को यह लोप या उपधादीर्घ कार्य प्राप्त हो, उसे पहिले कर लें। उसके बाद ही इन अनुनासिकान्त धातुओं में, सन्धि करें। जहाँ ये कार्य नहीं प्राप्त हैं, वहाँ सीधे सन्धि कर लीजिये। नकारान्त, मकारान्त धातुओं से तकारादि, थकारादि प्रत्यय परे होने पर इस प्रकार सन्धि कीजिये -

हन् + ति - नश्चापदान्तस्य झलि सूत्र से अपदान्त 'न्' 'म्' को अनुस्वार

बनाकर - हंति / 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' सूत्र से अनुस्वार को परसवर्ण करके हंति = हन्ति। इसी प्रकार - रम् + तुम् - रं + तुम् = रन्तुम् आदि।

शाम्	+	तः	=	शान्तः	दाम्	+	तः	=	दान्तः
वाम्	+	तः	=	वान्तः	गम्	+	ता	=	गन्ता
गम्	+	तुम्	=	गन्तु	रम्	+	तुम्	=	रन्तुम्

इन दोनों सूत्रों के अर्थ आगे ३६७, ३६८ पृष्ठों पर देखिये।

यकारान्त धातुओं से तकारादि, थकारादि प्रत्यय परे होने पर - यकारान्त धातुओं के 'य्' का 'लोपो व्योर्वलि' सूत्र से लोप कीजिये। जैसे - जाहय् + ति = जाहति / जाहय् + तः = जाहतः / जाहय् + थः = जाहथः आदि।

शकारान्त धातुओं से तकारादि, थकारादि प्रत्यय परे होने पर - शकारान्त धातुओं के 'श्' को 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' सूत्र से 'ष्' बनाइये और प्रत्यय के त, थ को ष्टुना ष्टुः सूत्र से ट, ठ बनाइये -

वश्	+	ति	-	वष्	+	टि	=	वष्टि
उश्	+	थः	-	उष्	+	ठः	=	उष्ठः
ईश्	+	ते	-	ईष्	+	टे	=	ईष्टे
ऐश्	+	थाः	-	ऐष्	+	ठाः	=	ऐष्ठाः

षकारान्त धातुओं से तकारादि, थकारादि प्रत्यय परे होने पर - धातुओं के 'ष्' को कुछ मत कीजिये। केवल प्रत्यय के 'त' 'थ' को ष्टुना ष्टुः सूत्र से ष्टुत्व करके 'ट', 'ठ' बनाइये -

					/					
द्वेष्	+	ति	=	द्वेष्टि	/	द्विष्	+	थः	=	द्विष्ठः
अचष्	+	त	=	अचष्ट	/	अचष्	+	थाः	=	अचष्ठाः

सकारान्त धातुओं से तकारादि, थकारादि प्रत्यय परे होने पर - इन्हें कुछ भी नहीं होता। आस् + ते = आस्ते।

हकारान्त धातुओं से तकारादि, थकारादि प्रत्यय परे होने पर - हकारान्त धातुओं के पाँच वर्ग बनाइये -

१. नह् धातु - नह् + ता / नहो धः सूत्र से ध् करके - नध् + ता / प्रत्यय के त, थ को झषस्तथोर्धोऽधः सूत्र से ध बनाकर - नध् + धा / धातु के अन्त में बैठे हुए वर्ग के चतुर्थाक्षर ध् को **झलां जश् झशि** सूत्र से जशत्व करके - नद् + धा = नद्धा।

२. दकारादि हकारान्त धातु, जैसे - दुह्, दिह् आदि -

इनके ह् को दादेर्धातोर्घः सूत्र से घ् बनाइये / प्रत्यय के त, थ को **झषस्तथोर्धोऽधः** सूत्र से ध बनाइये / धातु के अन्तिम घ् को **झलां जश् झशि** सूत्र से जश्त्व करके उसी वर्ग का तृतीयाक्षर ग् बनाइये। जैसे -

दोह् + ति - दोघ् + धि - दोग् + धि = दोग्धि
दुह् + थः - दुघ् + धः - दुग् + धः = दुग्धः
देह् + ति - देघ् + धि - देग् + धि = देग्धि
दिह् + थः - दिघ् + धः - दिग् + धः = दिग्धः

३. द्रुह् ,मुह्, स्नुह्, स्निह् धातु - इन चार धातुओं के 'ह्' को 'वा द्रुहमुहष्णुहष्णिहाम्' सूत्र से विकल्प से 'घ्' तथा 'ढ्' होते है, झल् परे होने पर।

'ह्' को 'घ्' बनाने पर -

द्रुह् + ता - द्रोघ् + ता मुह् + ता - मोघ् + ता
स्नुह् + ता - स्नोघ् + ता स्निह् + ता - स्नेघ् + ता

देखिये कि अब धातु के अन्त में वर्ग का चतुर्थाक्षर 'घ्' हो गया है। धातु के अन्त में वर्ग का चतुर्थाक्षर 'घ्' होने पर -

१. प्रत्यय के त, थ को **झषस्तथोर्धोऽधः** सूत्र से ध बना दीजिये -

२. और धातु के अन्त में बैठे हुए वर्ग के चतुर्थाक्षर को **झलां जश् झशि** सूत्र से जश्त्व करके उसी वर्ग का तृतीयाक्षर बनाइये। जैसे -

द्रोघ् + ता - द्रोग् + धा = द्रोग्धा
मोघ् + ता - मोग् + धा = मोग्धा
स्नोघ् + ता - स्नोग् + धा = स्नोग्धा
स्नेघ् + ता - स्नेग् + धा = स्नेग्धा

'ह्' को 'ढ्' बनाने पर -

द्रुह् + ता - द्रोढ् + ता / मुह् + ता - मोढ् + ता
स्नुह् + ता - स्नोढ् + ता / स्निह् + ता - स्नेढ् + ता

देखिये कि अब धातु के अन्त में वर्ग का चतुर्थाक्षर 'ढ्' है। धातु के अन्त में वर्ग का चतुर्थाक्षर 'ढ्' होने पर -

१. प्रत्यय के त, थ को झषस्तथोर्धोऽधः सूत्र से ध बना दीजिये - द्रोढ् + ता - द्रोढ् + धा।

२. उसके बाद प्रत्यय के 'ध' को ष्टुना ष्टुः सूत्र से 'ढ' बनाइये -

द्रोघ् + ता - द्रोढ् + ढा

मोघ् + ता - मोढ् + ढा

स्नोघ् + ता - स्नोढ् + ढा

स्नेघ् + ता - स्नेढ् + ढा

ढो ढे लोपः - ढ् के बाद ढ् आने पर, पूर्व वाले ढ् का लोप होता है।

द्रोढ् + ढा = द्रोढा / मोढ् + ढा = मोढा

स्नोढ् + ढा = स्नोढा / स्नेढ् + ढा = स्नेढा

४. सह्, वह् धातु -

सह् + ता / हो ढः से ह् को ढ् बनाने पर - सढ् + ता / प्रत्यय के 'त' को **झषस्तथोर्धोऽधः** सूत्र से 'ध' करके - सढ् + धा / ष्टुना ष्टुः सूत्र से प्रत्यय के 'ध' को ष्टुत्व करके - सढ् + ढा / 'ढो ढे लोपः' से पूर्व ढकार का लोप करके - स + ढा / अब 'सहिवहोरोदवर्णस्य' सूत्र से लुप्त ढकार के पूर्ववर्ती 'अ' को 'ओ' बनाकर 'सोढा' बनाइये। इसी प्रकार, वह् + ता से 'वोढा' बनाइये।

५. शेष हकारान्त धातु - इन धातुओं के अलावा जितने भी हकारान्त धातु बचे, उनके 'ह्' को 'हो ढः' सूत्र से 'ढ्' बनाइये - लिह् - लेह् + ता - लेढ् + ता / प्रत्यय के 'त' को **झषस्तथोर्धोऽधः** सूत्र से 'ध' करके - लेढ् + धा / ष्टुना ष्टुः सूत्र से प्रत्यय के 'ध्' को ष्टुत्व करके - लेढ् + ढा - 'ढो ढे लोपः' से पूर्व ढकार का लोप करके - ले + ढा = लेढा। इसी प्रकार -

रुह् + ता - रोह् + ता - रोढ् + ढा = रोढा

मिह् + ता - मेह् + ता - मेढ् + ढा = मेढा

विशेष - ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः - ढ् और र् का लोप होने पर, उन लुप्त ढ् और र् के पूर्व में स्थित जो अण् अर्थात् अ, इ, उ, उन्हें दीर्घ होता है।

लिह् + तः - लिढ् + धः / लिढ् + ढः / लि + ढः / इसे देखिये। यहाँ लुप्त ढकार के पूर्व में 'इ' है।

इसे 'ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः' सूत्र से दीर्घ कीजिये - लि + ढः = लीढः। ठीक इसी प्रकार, लिह् + थः से भी लीढः बनाइये। यह हलन्त धातुओं में तकारादि, थकारादि प्रत्यय जोड़ने की विधि पूर्ण हुई।

हलन्त धातुओं में हि प्रत्यय जोड़ने की विधि

हुझल्भ्यो हेर्धिः - हु धातु तथा झलन्त धातुओं से परे आने वाले 'हि' प्रत्यय को 'धि' आदेश होता है। यथा -

वच् + हि - वच् + धि / दुह् + हि - दुह् + धि / लिह् + हि - लिह् + धि /

जब यह हि प्रत्यय धकारदि 'धि' प्रत्यय बन जाये तब इसे आगे कही जाने वाली विधि से जोड़िये।

हलन्त धातुओं में धकारादि प्रत्ययों को जोड़ने की विधि

धकारादि प्रत्यय परे होने पर इस प्रकार सन्धि करें

झलां जश् झशि - जब भी प्रत्यय 'ध्' से प्रारम्भ हो रहा हो, तब उस प्रत्यय का पूर्ववर्ती वर्ण, अपने ही वर्ग का 'तृतीयाक्षर' बन जाता है। इसे ही जश्त्व सन्धि कहते हैं। जैसे - धुघ् + ध्वे = धुग्ध्वे / वक् + धि = वग्धि आदि।

झषस्तथोर्धोऽधः - झषन्त धातु से परे आने वाले प्रत्यय के 'त' 'थ' को 'ध' होता है। जैसे - दोघ् + ति = दोघ् + धि / दुघ् + थः = दुघ् + धः आदि।

कवर्गान्त धातु -

शाशक् + धि - शाशग् + धि = शाशग्धि।
लेलेख् + धि - लेलेग् + धि = लेलेग्धि।
तात्वङ्ग् + धि - तात्वङ्ग् + धि = तात्वङ्ग्धि।
लालङ्घ् + धि - लालङ्ग् + धि = लालङ्ग्ध

चवर्गान्त धातुओं के दो वर्ग बनाइये -

१. व्रश्च्, भ्रस्ज्, सृज्, मृज्, यज्, राज्, भ्राज् धातु तथा सारे छकारान्त धातु-

व्रश्च्, भ्रस्ज्, सृज्, मृज्, यज्, राज्, भ्राज् धातु तथा छकारान्त और शकारान्त धातुओं के अन्तिम वर्ण के स्थान पर व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयज - राजभ्राजच्छशां षः सूत्र से 'ष्' बनाकर उसे 'झलां जश् झशि' सूत्र से जश्त्व करके 'ड्' कीजिये और प्रत्यय के 'ध' को ष्टुना ष्टुः सूत्र से 'ढ' बनाइये -

वाव्रश्च् + धि - वाव्रष् + धि - वाव्रड् + ढि = वाव्रड्ढि
बरीभ्रज्ज् + धि - बरीभ्रष् + धि - बरीभ्रड् + ढि = बरीभ्रड्ढि
सरीसृज् + धि - सरीसृष् + ढि - सरीसृड् + ढि = सरीसृड्ढि

मरीमृज् + धि - मरीमृष् + ढि - मरीमृड् + ढि = मरीमृड्ढि
यायज् + धि - यायष् + ढि - यायड् + ढि = यायड्ढि
राराज् + धि - राराष् + ढि - राराड् + ढि = राराड्ढि
बाभ्राज् + धि - बाभ्राष् + ढि - बाभ्राड् + ढि = बाभ्राड्ढि

छकारान्त धातु -

पाप्रच्छ् + धि - पाप्रष् + ढि - पाप्रड् + ढि = पाप्रड्ढि

२. व्रश्च्, भ्रस्ज्, सृज्, मृज्, यज्, राज्, भ्राज् धातु तथा सारे छकारान्त धातुओं से बचे हुए शेष चवर्गान्त धातु -

च् ज् झ् को 'चोः कुः' सूत्र से क्, ख्, घ्, बनाकर, 'झलां जश् झशि' सूत्र से 'ग्' बनाइये तथा प्रत्यय के 'ध्' को कुछ मत कीजिये -

विञ्च् + ध्वे - विङ्ग् + ध्वे = विङ्ग्ध्वे
युञ्ज् + ध्वे - युङ्ग् + ध्वे = युङ्ग्ध्वे
जाझर्झ् + धि - जाझर्ग् + धि = जाझर्ग्धि

टवर्गान्त धातु - ट्, ठ्, ड्, को 'झलां जश् झशि' सूत्र से उसी वर्ग का तृतीयाक्षर ड् बनाइये। प्रत्यय के 'ध्' को ष्टुना ष्टुः सूत्र से 'ढ्' बनाइये।

लोलुट् + धि - लोलुड् + ढि = लोलुड्ढि
पापठ् + धि - पापड् + ढि = पापड्ढि
ईड् + ध्वे - ईड् + ढ्वे = ईड्ढ्वे

ढकारान्त धातु - ढकारान्त कोई भी धातु, धातुपाठ में नहीं है, किन्तु हकारान्त धातु ही 'हो ढः' सूत्र से ढकारान्त हो जाते हैं।

इनसे परे आने वाले प्रत्यय के 'ध्' को 'ढ्' बनाइये। जैसे - तृणेढ् + धि - तृणेढ् + ढि / अब ढो ढे लोपः से उस प्रत्यय के पूर्व में आने वाले 'ढ्' का लोप कीजिये। तृणे + ढि = तृणेढि बनाइये। इसी प्रकार तृण्ढ् + धि से तृण्ढि बनाइये।

तवर्गान्त धातु - त्, थ्, द्, ध् को 'झलां जश् झशि' सूत्र से उसी वर्ग का तृतीयाक्षर द् बनाइये। प्रत्यय के ध् को कुछ मत कीजिये।

कृन्त् + धि - कृन्द् + धि = कृन्द्धि
अद् + धि - अद् + धि = अद्धि
रुन्ध् + धि - रुन्द् + धि = रुन्द्धि

यहाँ कृन्द् + धि आदि में **झरो झरि सवर्णे** सूत्र से विकल्प से पूर्व त् का लोप करके कृन्धि, छिन्धि आदि रूप भी बनेंगे।

अब श् ष् स् का विचार करते हैं - शकारान्त धातुओं से धकारादि प्रत्यय परे होने पर इस प्रकार कार्य कीजिये -

शकारान्त धातु - 'श्' को 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां शः' सूत्र से 'ष्' बनाकर झलां जश् झशि सूत्र से जश्त्व करके 'ड्' बनाइये। प्रत्यय के 'ध्' को ष्टुना ष्टुः सूत्र से 'ढ्' बनाइये। ईश् + ध्वे - ईष् + ध्वे - ईड् + ध्वे = ईड्ढ्वे।

षकारान्त धातु - ष् को झलां जश् झशि सूत्र से जश्त्व करके 'ड्' बनाइये। प्रत्यय के ध् को ष्टुना ष्टुः से ष्टुत्व करके 'ढ्' बनाइये। चक्ष् + ध्वे - चड् + ढ्वे = चड्ढ्वे / उष् + धि - उड् + ढि = उड्ढि / द्विष् + धि - द्विड् + ढि = द्विड्ढि / अचक्ष् + ध्वम् - अचड् + ढ्वम् = अचड्ढ्वम्।

सकारान्त धातु - धकारादि प्रत्यय परे होने पर **'धि च'** सूत्र से स् का लोप कीजिये -

चकास्	+	धि	-	चका	+	धि	= चकाधि
कंस्	+	ध्वे	-	कं	+	ध्वे	= कंध्वे
आस्	+	ध्वे	-	आ	+	ध्वे	= आध्वे
निंस्	+	ध्वे	-	निं	+	ध्वे	= निंध्वे
आशास्	+	ध्वे	-	आशा	+	ध्वे	= आशाध्वे
वस्	+	ध्वे	-	व	+	ध्वे	= वध्वे

हकारान्त धातुओं से, 'ध्व' प्रत्यय परे होने पर

दिह् + ध्वे - पहिले 'दादेर्धातोर्घः' सूत्र से इसके ह् को घ् बनाकर - दिह् + ध्वे - दिघ् + ध्वे / अब **एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः** सूत्र से 'द' को भष् करके - धिघ् + ध्वे। अब झलां जश् झशि सूत्र से 'घ्' को जश्त्व करके धिग् + ध्वे = धिग्ध्वे।

इसी प्रकार दिह् + ध्वम् = धिग्ध्वम् / दुह् + ध्वे = धुग्ध्वे आदि।

हकारान्त धातुओं से, 'ध्व' प्रत्यय से भिन्न धकारादि प्रत्यय परे होने पर -

एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः सूत्र से भष् नहीं होता, क्योंकि यह

भष्भाव केवल केवल 'ध्व' से प्रारम्भ होने वाले प्रत्यय परे होने पर ही होता है। सारे धकारादि प्रत्यय परे होने पर नहीं होता। यथा -

दुह् + धि - दादेर्धातोर्घः सूत्र से इसके ह् को घ् बनाकर - दुघ् + धि - 'झलां जश् झशि' सूत्र से जश्त्व करके - दुग् + धि = दुग्धि।

इसी प्रकार - दिह् + धि - दिग्धि / जोगुह् + धि - जोगुड्ढि / जागाह् + ढि = जागाड्ढि बनाइये।

लिह् + धि - ह् को 'हो ढः' सूत्र से ढ् बनाइये - लिह् + धि - लिढ् + धि। ढ् से धकारादि प्रत्यय परे होने पर, प्रत्यय के ध् को ष्टुना ष्टुः सूत्र से ढ् बनाइये - लिढ् + धि - लिढ् + ढि। अब 'ढो ढे लोपः' सूत्र से पूर्व में आने वाले ढ् का लोप कीजिये। लिढ् + ढि - लि + ढि।

लुप्त ढ् के पूर्व के 'इ' को 'ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः' सूत्र से दीर्घ कर करके - लि + ढि - लीढि। इसी प्रकार - लिह् + ध्वे - लीढ्वे बनाइये।

यह धातुओं में धकारादि प्रत्ययों को जोड़ने की विधि पूर्ण हुई।

अनुस्वार और परसवर्ण सन्धि

ध्यान रहे कि अनुस्वार और परसवर्ण सन्धि सबसे अन्त में ही की जाती हैं।

अतः धातुरूप बनाने की सारी प्रक्रिया को कर चुकने के बाद, यदि धातुरूप के बीच में कोई न्, म् दिखें, तो जानिये कि ये न्, म्, अपदान्त न्, म् हैं। जैसे - रुधादिगण के रुध्, भुज्, खिद् आदि धातुओं में 'श्नम्' विकरण लगाकर 'श्नसोरल्लोपः' सूत्र से, जब उसके 'अ' का लोप करते हैं, तब रुन्ध्, भुन्ज्, विन्च्, तृन्ह्, खिन्द्, कृन्त्, आदि बनते हैं।

इनके बीच में बैठा हुआ यह 'न्' अपदान्त न् है।

शुठि, शिघि, णदि, लाछि, इखि, आदि धातुओं में जब नुम् का आगम करते हैं, तब ये, शुन्ठ्, शिन्घ्, नन्द्, लान्छ्, इन्ख्, आदि बनते हैं।

इन धातुओं के बीच में बैठा हुआ यह 'न्' भी अपदान्त न् है।

गम् + ता / रम् + ता / यम् + ता / नम् + ता आदि में तथा संगम् + स्यते, रम् + स्यते, आदि में धातु तथा प्रत्यय के बीच में बैठा यह 'म्' भी अपदान्त 'म्' है।

नश्चापदान्तस्य झलि - जब पद के अन्त में नहीं, अपितु अपद के अन्त

में न्, म् आयें, तो उन्हें अनुस्वार होता है, यदि उन न्, म् के बाद आने वाला व्यञ्जन झल् हो, अर्थात् वर्ग का प्रथम, द्वितीय, तृतीय, अथवा चतुर्थ व्यञ्जन हो अथवा श्, ष्, स्, ह्, हो। यथा -

मन् + ता / हन् + ता / गम् + ता आदि को देखिये। इनमें मन्, हन्, गम् तो 'धातु' हैं और ता 'प्रत्यय' है। जब ये दोनों जुड़ जायेंगे तभी 'सुप्तिङन्तं पदं' सूत्र से इनका नाम 'पद' होगा। अभी तो ये पद नहीं हैं, अपद हैं।

इन अपदों के अन्त में स्थित नकार, मकार, अपदान्त नकार, मकार हैं और इनसे परे झल् है। ऐसे अपदान्त नकार, मकार को 'नश्चापदान्तस्य झलि' सूत्र से अनुस्वार होता है। जैसे -

मन् + ता = मंता / हन् + ता = हंता / गम् + ता = गंता / यम् + ता = यंता / हन् + सि = हंसि / आदि। इसी प्रकार -

रम् + स्यते = रंस्यते / नम् + स्यति = नंस्यति / संगम् + स्यते = संगंस्यते / मन् + स्यते = मंस्यते, आदि।

रुन्ध्, भुन्ज्, विन्च्, तृन्ह्, खिन्द्, कृन्त्, शुन्ठ्, शिन्घ्, नन्द्, भुन्ज्, लान्छ्, इन्ख्, आदि में भी, अपदान्त न् हैं। इन्हें भी इसी सूत्र से अनुस्वार बनाइये। जैसे - रुन्ध् - रुंध् / भुन्ज् - भुंज् / विन्च् - विंच् / तृन्ह् - तृंह् / खिन्द् - खिंद् / कृन्त् - कृंत् / शुन्ठ् - शुंठ् / शिन्घ् - शिंघ् / नन्द् - नंद् / भुन्ज् - भुंज् / लान्छ् - लांछ् / इन्ख् - इंख् आदि।

जब अनुस्वार बन जाये, तब उस अनुस्वार के आगे जो व्यञ्जन हो, उसे ध्यान से देखिये कि वह यय् है अथवा नहीं।

अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः - अनुस्वार को परसवर्ण होता है, यय् परे होने पर। यय् का अर्थ होता है, श् स् ष् ह् को छोड़कर सारे व्यञ्जन।

परसवर्ण - परसवर्ण का अर्थ होता है, अपने आगे आने वाले वर्ण के समान, उसी स्थान का वर्ण बन जाना। जैसे - मंता = मन्ता / हंता = हन्ता / गंता = गन्ता / यंता = यन्ता आदि।

तात्पर्य यह हुआ कि श् स् ष् ह् परे होने पर अनुस्वार को परसवर्ण नहीं होता। जैसे - रंस्यते = रंस्यते / नंस्यति = नंस्यति / संगंस्यते = संगंस्यते।

अब परसवर्ण के उदाहरण विस्तार से देखें -

क्, ख्, ग्, घ्, परे होने पर अनुस्वार को 'ङ्' हो जाता है -

अंक - यहाँ अनुस्वार के बाद कवर्ग का वर्ण 'क' है, अतः अनुस्वार, कवर्ग का ही पञ्चमाक्षर 'ङ्' हो जायेगा। अंक = अङ्क।

पुंख - यहाँ अनुस्वार के बाद कवर्ग का वर्ण 'ख्' है अतः अनुस्वार, कवर्ग का ही पञ्चमाक्षर 'ङ्' हो जायेगा। पुंख = पुङ्ख।

अंग - यहाँ अनुस्वार के बाद कवर्ग का वर्ण 'ग' है, अतः अनुस्वार, कवर्ग का ही पञ्चमाक्षर 'ङ्' हो जायेगा। अंग = अङ्ग।

लंघन - यहाँ अनुस्वार के बाद कवर्ग का वर्ण 'घ' है, अतः अनुस्वार, कवर्ग का ही पञ्चमाक्षर 'ङ्' हो जायेगा। लंघन = लङ्घन।

च्, छ्, ज्, झ्, परे होने पर अनुस्वार को 'ञ्' हो जाता है -

मंच - यहाँ अनुस्वार के बाद चवर्ग का वर्ण 'च' है, अतः अनुस्वार, चवर्ग का ही पञ्चमाक्षर ञ् हो जायेगा। मंच = मञ्च।

उंछ - यहाँ अनुस्वार के बाद चवर्ग का वर्ण 'छ' है, अतः अनुस्वार, चवर्ग का ही पञ्चमाक्षर 'ञ्' हो जायेगा। उंछ = उञ्छ।

मंजु - यहाँ अनुस्वार के बाद चवर्ग का वर्ण 'ज' है, अतः अनुस्वार, चवर्ग का ही पञ्चमाक्षर 'ञ्' हो जायेगा। मंजु = मञ्जु।

झंझा - यहाँ अनुस्वार के बाद चवर्ग का वर्ण 'झ' है अतः अनुस्वार, चवर्ग का ही पञ्चमाक्षर 'ञ्' हो जायेगा। झंझा = झञ्झा।

ट्, ठ्, ड्, ढ्, परे होने पर अनुस्वार को 'ण्' हो जाता है -

घंटा - यहाँ अनुस्वार के बाद टवर्ग का वर्ण 'ट' है, अतः अनुस्वार, टवर्ग का ही पञ्चमाक्षर 'ण्' हो जायेगा। घंटा = घण्टा।

शुंठी - यहाँ अनुस्वार के बाद टवर्ग का वर्ण 'ठ' है अतः अनुस्वार, टवर्ग का ही पञ्चमाक्षर 'ण्' हो जायेगा। शंठी = शुण्ठी।

मुंड - यहाँ अनुस्वार के बाद टवर्ग का वर्ण 'ड' है अतः अनुस्वार, टवर्ग का ही पञ्चमाक्षर 'ण्' हो जायेगा। मुंड = मुण्ड।

शंढ - यहाँ अनुस्वार के बाद टवर्ग का वर्ण 'ढ' है अतः अनुस्वार, टवर्ग का ही पञ्चमाक्षर 'ण्' हो जायेगा। शंढ = शण्ढ।

त्, थ्, द्, ध्, परे होने पर अनुस्वार को 'न्' हो जाता है -

मंता - यहाँ अनुस्वार के बाद तवर्ग का वर्ण 'त' है अतः अनुस्वार, तवर्ग का ही पञ्चमाक्षर 'न्' हो जायेगा। मंता = मन्ता।

मंथन - यहाँ अनुस्वार के बाद तवर्ग का वर्ण 'थ' है अतः अनुस्वार, तवर्ग का ही पञ्चमाक्षर 'न्' हो जायेगा। मंथन = मन्थन।

कुंद - यहाँ अनुस्वार के बाद तवर्ग का वर्ण 'द' है, अतः अनुस्वार, तवर्ग का ही पञ्चमाक्षर 'न्' हो जायेगा। कुंद = कुन्द।

बंधन = यहाँ अनुस्वार के बाद तवर्ग का वर्ण 'ध' है, अतः अनुस्वार, तवर्ग का ही पञ्चमाक्षर 'न्' हो जायेगा। बंधन - बन्धन।

प्, फ्, ब्, भ्, परे होने पर अनुस्वार को 'म्' हो जाता है -

कंपन - यहाँ अनुस्वार के बाद पवर्ग का वर्ण 'प' है, अतः अनुस्वार, पवर्ग का ही पञ्चमाक्षर 'म्' हो जायेगा। कंपन = कम्पन।

गुंफ - यहाँ अनुस्वार के बाद पवर्ग का वर्ण 'फ' है, अतः अनुस्वार, पवर्ग का ही पञ्चमाक्षर 'म्' हो जायेगा। गुंफ = गुम्फ।

लंब - यहाँ अनुस्वार के बाद पवर्ग का वर्ण 'ब' है अतः अनुस्वार, पवर्ग का ही पञ्चमाक्षर 'म्' हो जायेगा। लंब = लम्ब।

स्तंभ - यहाँ अनुस्वार के बाद पवर्ग का वर्ण 'भ' है अतः अनुस्वार, पवर्ग का ही पञ्चमाक्षर 'म्' हो जायेगा। स्तंभ = स्तम्भ।

ध्यान रहे कि जब अनुस्वार के बाद श, ष, स, ह आयें तो अनुस्वार ज्यों का त्यों ही रहता है क्योंकि इनके तो कोई सवर्णी होते ही नहीं हैं और ये यय् प्रत्याहार में आते भी नहीं है। जैसे - हंसि - हंसि / मंस्यते - मंस्यते / संशय = संशय / संहार = संहार।

परसवर्ण करते समय हमें यह सावधानी रखना चाहिये - कि भुन्ज् = भुंज् के ज् में यदि कोई परिवर्तन नहीं हो रहा है, तब तो भुंज् का अनुस्वार ज् का सवर्णी ञ् बनेगा। जैसे भुंज् + आते = भुंज् + आते = भुञ्जाते।

किन्तु भुन्ज् + ते - भुंज् + ते को देखिये। यहाँ परसवर्ण करने के पहिले ही 'चोः कुः' सूत्र आकर 'ज्' को कुत्व करके 'ग्' बना देता है। भुंज् + ते = भुंग् + ते। अब 'खरि च' सूत्र, 'ग्' को चर्त्व करके 'क्' बना देता है। भुंग् + ते = भुंक् + ते।

ध्यान रहे कि 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' से होने वाला परसवर्ण तो सारे सूत्रों के कार्य कर चुकने के बाद ही किया जाता है। अतः अब हम देखेंगे कि अब अनुस्वार के बाद अब कौन सा वर्ण है ? हम देखते हैं कि अब अनुस्वार

के बाद 'ज्' न होकर, 'ग्' है। अतः अनुस्वार अब 'ग्' का सवर्णी 'ङ्' बनेगा, 'ज्' का सवर्णी 'ञ्' नहीं बनेगा। भुंग् + ते - भुङ्क् + ते = भुङ्क्ते।

विन्च् + ते - विंच् + ते को देखिये। यहाँ परसवर्ण करने के पहिले ही 'चोः कुः' सूत्र आकर 'च्' को कुत्व करके 'क्' बना देता है। विंच् + ते = विंक् + ते। अब हम देखते हैं कि अनुस्वार के बाद 'च्' न होकर 'क्' है, अतः अनुस्वार अब 'क्' का सवर्णी 'ङ्' बनेगा, 'च्' का सवर्णी 'ञ्' नहीं बनेगा। विंक् + ते - विङ्क् + ते = विङ्क्ते।

रुन्ध् + आते में, न् को अनुस्वार होकर बनता है रुंध्, और उसके बाद 'ध्' को कुछ नहीं होता, अतः यहाँ अनुस्वार अपने अगले वर्ण 'ध्' का ही सवर्णी 'न्' बन जाता है - रुंध् + आते - रुन्ध् + आते = रुन्धाते।

तृन्ह् को देखिये। यहाँ न् को अनुस्वार होकर तृंह् बन जाता है। पर परसवर्ण इसलिये नहीं होता कि हमने अभी पढ़ा है, कि अनुस्वार को परसवर्ण होता है, यय् परे होने पर। अर्थात् वर्ग का प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ व्यञ्जन अथवा य् व् र् ल् परे होने पर। तात्पर्य यह हुआ कि श् स् ष् ह् परे होने पर अनुस्वार को परसवर्ण नहीं होता। यहाँ अनुस्वार के बाद ह् है अतः यहाँ परसवर्ण न होकर यह तृंह् ही रहेगा।

किन्तु जब तृंह् + तः में, ह् को हो ढः से 'ढ्' हो जाता है तब तृंढ् + तः हो जाने पर हम देखते हैं, कि यह 'ढ्' तो यय् है। अतः अब 'ढ्' परे होने पर अनुस्वार 'ढ्' का सवर्णी 'ण्' बन जाता है - तृंढ् + तः = तृण्ढ् + तः। 'ढ्' टवर्ग का व्यञ्जन है, उसका पञ्चमाक्षर ण् है अतः टवर्ग को देखकर अनुस्वार को 'ण्' ही होगा।

अब हमें द्वितीय गण समूह में से अदादि, जुहोत्यादि, तथा रुधादि गण के हलन्त धातुओं के रूप बनाना है। अतः इन हल् सन्धियों का सम्यक् अभ्यास करके ही आप आगे के इन हलन्त धातुओं के रूप बनाइये। अन्यथा पदे पदे स्खलन होगा।

सप्तम पाठ

अदादि, जुहोत्यादि, रुधादिगण के हलन्त धातुओं के लट्, लोट्, लङ्, तथा विधिलिङ् लकारों के रूप बनाने की विधि

द्वितीयगण समूह के प्रत्यय याद रखिये तथा प्रत्ययों की पहिचान सही रखिये। अङ्गकार्य तथा सन्धिकार्य हम बतला चुके हैं। उनका सम्यक् अभ्यास करके ही इस पाठ में प्रवेश कीजिये। उनके बिना धातुरूप नहीं बनेंगे।

हुझल्भ्यो हेर्धिः - हु धातु तथा झलन्त धातुओं से परे आने वाले लोट् लकार के 'हि' प्रत्यय को 'धि' आदेश होता है। वच् + हि - वच् + धि / चोः कुः से कुत्व तथा झलां जश् झशि से जश्त्व करके - वग्धि।

अब अन्तिम वर्ण के क्रम से धातुओं के रूप दे रहे हैं।

चकारान्त वच् धातु - परस्मैपद

वच् + ति / चोः कुः सूत्र से कुत्व करके वक् + ति = वक्ति। **ध्यान रहे कि वच् धातु के प्रथमपुरुष बहुवचन के रूप किसी भी लकार में नहीं बनाये जाते हैं।**

लट् लकार

वक्ति	वक्तः	-
वक्षि	वक्थः	वक्थ
वच्मि	वच्वः	वच्मः

लोट् लकार

वक्तु / वक्तात्	वक्ताम्	-
वग्धि / वक्तात्	वक्तम्	वक्त
वचानि	वचाव	वचाम

लङ् लकार

अवक्	अवक्ताम्	-
अवक्	अवक्तम्	अवक्त
अवचम्	अवच्व	अवच्म

विधिलिङ् लकार

वच्यात् वच्याताम् वच्युः
वच्याः वच्यातम् वच्यात
वच्याम् वच्याव वच्याम

चकारान्त पृची - पृच् धातु - आत्मनेपद

लट् लकार

पृक्ते पृचाते पृचते
पृक्षे पृचाथे पृग्ध्वे
पृचे पृच्वहे पृच्महे

लोट् लकार

पृक्ताम् पृचाताम् पृचताम्
पृक्ष्व पृचाथाम् पृग्ध्वम्
पृचै पृचावहै पृचामहै

लङ् लकार

अपृक्त अपृचाताम् अपृचत
अपृक्थाः अपृचाथाम् अपृग्ध्वम्
अपृचि अपृच्वहि अपृच्महि

विधिलिङ् लकार

पृचीत पृचीयाताम् पृचीरन्
पृचीथाः पृचीयाथाम् पृचीध्वम्
पृचीय पृचीवहि पृचीमहि

जकारान्त णिजि - निंज् धातु - आत्मनेपद

लट् लकार

निङ्क्ते निञ्जाते निञ्जते
निङ्क्षे निञ्जाथे निङ्ग्ध्वे
निञ्जे निञ्ज्वहे निञ्ज्महे

लोट् लकार

निङ्क्ताम् निञ्जाताम् निञ्जताम्
निङ्क्ष्व निञ्जाथाम् निङ्ग्ध्वम्

निञ्जै	निञ्जावहै	निञ्जामहै

लङ् लकार

अनिङ्क्त	अनिञ्जाताम्	अनिञ्जत
अनिङ्क्था:	अनिञ्जाथाम्	अनिङ्ग्ध्वम्
अनिञ्जि	अनिञ्ज्वहि	अनिञ्ज्महि

विधिलिङ् लकार

निञ्जीत	निञ्जीयाताम्	निञ्जीरन्
निञ्जीथा:	निञ्जीयाथाम्	निञ्जीध्वम्
निञ्जीय	निञ्जीवहि	निञ्जीमहि

इसी के समान जकारान्त शिजि - शिंज् धातु / जकारान्त पिजि - पिंज् धातु / जकारान्त वृजी - वृज् धातु के रूप बनाइये।

जकारान्त मृजू - मृज् धातु - परस्मैपद -

हलादि पित् प्रत्यय परे होने पर - मृजेर्वृद्धिः सूत्र से वृद्धि कीजिये।

मृजेर्वृद्धिः - मृज् धातु के ऋ को वृद्धि होकर आर् होता है - मृज् + ति - मार्ज् + ति / व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः सूत्र से ज् को ष् बनाकर - मार्ष् + ति / 'त' को 'ष्टुना ष्टुः' से ष्टुत्व करके - मार्ष्टि।

अजादि पित् प्रत्यय परे होने पर - पूर्ववत् मृजेर्वृद्धिः सूत्र से वृद्धि करके - मृज् + आनि - मार्ज् + आनि / अट्कुप्. से णत्व करके - मार्जाणि।

हलादि अपित् प्रत्यय परे होने पर - क्ङिति च सूत्र से वृद्धिनिषेध कीजिये। यथा - मृज् + तः - मृष्टः। इसी प्रकार मृज् + थः = मृष्ठः आदि।

मृड्ढि - मृज् + धि / व्रश्च. से ज् को ष् करके मृष् + धि / ष्टुना ष्टुः से ष्टुत्व करके - मृष् + ढि / झलां जश् झशि से जश्त्व करके - मृड्ढि।

अजादि अपित् प्रत्यय परे होने पर - क्ङित्यजादौ वेष्यते -

अजादि कित् ङित् प्रत्यय परे होने पर, यह वृद्धि विकल्प से होती है। मृज् + अन्ति - मार्ज् + अन्ति = मार्जन्ति / मृज् + अन्ति - मृजन्ति।

पूरे रूप इस प्रकार बने -

लट् लकार

मार्ष्टि	मृष्टः	मृजन्ति / मार्जन्ति
मार्क्षि	मृष्ठः	मृष्ठ

मार्ज्मि	मृज्वः	मृज्मः

लोट् लकार

मार्ष्टु / मृष्टात्	मृष्टाम्	मृजन्तु / मार्जन्तु
मृड्ढि / मृष्टात्	मृष्टम्	मृष्ट
मार्जानि	मार्जाव	मार्जाम

लङ् लकार

अमार्ट् / अमार्ड्	अमृष्टाम्	अमार्जन् / अमृजन्
अमार्ट् / अमार्ड्	अमृष्टम्	अमृष्ट
अमार्जम्	अमार्ज्व	अमार्ज्म

विधिलिङ् लकार

मृज्यात्	मृज्याताम्	मृज्युः
मृज्याः	मृज्यातम्	मृज्यात
मृज्याम्	मृज्याव	मृज्याम

डकारान्त ईड् धातु - आत्मनेपद -

ईडजनोर्ध्वे च - ईड् धातु तथा जन् धातु से परे आने वाले सार्वधातुक 'से' तथा 'ध्वे, ध्वम्' प्रत्ययों को इट् का आगम होता है। ईड् + से - ईड् + इट् + से = ईडिषे / ईड् + ध्वे = ईडिध्वे। शेष में केवल सन्धि कीजिये।

लट् लकार

ईट्टे	ईडाते	ईडते
ईडिषे	ईडाथे	ईडिध्वे
ईडे	ईड्वहे	ईड्महे

लोट् लकार

ईट्टाम्	ईडाताम्	ईडताम्
ईडिष्व	ईडाथाम्	ईडिध्वम्
ईडै	ईडावहै	ईडामहै

लङ् लकार

लङ् लकार में आट् का आगम करके आ + ईड् = ऐड् बनायें।

ऐट्ट	ऐडाताम्	ऐडत
ऐट्ठाः	ऐडाथाम्	ऐड्ढ्वम्

ऐडि	ऐड्वहि	ऐड्महि

विधिलिङ् लकार

ईडीत	ईडीयाताम्	ईडीरन्
ईडीथाः	ईडीयाथाम्	ईडीध्वम्
ईडीय	ईडीवहि	ईडीमहि

तकारान्त षस्ति - संस्त् धातु - परस्मैपद

संस्त् + ति / स्कोः संयोगाद्योरन्ते च सूत्र से संयोग के आदि अवयव स् का लोप करके - संत् + ति।

झरो झरि सवर्णे - हल् से परे जो झर्, उसका लोप होता है, सवर्ण झर् परे होने पर। अब संत् + ति - इसे देखिये। यहाँ हल् है - न्। उससे परे झर् है, 'त्'। उससे परे, उसी का सवर्ण झर्, पुनः 'त्' है। अतः इन दो झरों में से, पूर्व झर् का लोप कर दीजिये। जैसे - संत् + ति - सं + ति।

अब 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' से अनुस्वार को परसवर्ण करके = सन्ति बनाइये। इसी प्रकार, संस्त् + तः = सन्तः / संस्त् + थः = सन्थः / संस्त् + धि = सन्धि, आदि बनाइये।

लङ् लकार के त्, स् प्रत्यय परे होने पर देखिये, कि असंस्त् + त् - में, हल् के बाद जो त् प्रत्यय है, वह अपृक्त (अकेला) प्रत्यय है। ऐसे अपृक्त त्, स् प्रत्ययों का हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से लोप कर दीजिये। असंस्त् + त् - असंस्त् / असंस्त् + स् - असंस्त्।

अब यह 'असंस्त्' तिङन्त पद है, और यह संयोगान्त है। इसके आदि में स्थित 'स्' का 'स्कोः संयोगाद्योरन्ते च' सूत्र से लोप करके - असंस्त् - असंत्।

संयोगान्तस्य लोपः - संयोगान्त जो पद, उसके अन्तिम वर्ण का लोप हो जाता है। 'असंत्', इस पद के अन्त में, अनुस्वार + त् का संयोग है। इस त् का संयोगान्तस्य लोपः सूत्र से लोप कर दीजिये। असंत् = असन्।

स् प्रत्यय परे होने पर भी इसी प्रकार 'असन्' रूप बनाइये। शेष प्रत्यय परे होने पर कुछ नहीं करना है। जैसे - संस्त् + अन्ति = संस्तन्ति आदि।

लट् लकार

सन्ति	सन्तः	संस्तन्ति
सन्त्सि	सन्थः	सन्थ

संस्मि	संस्वः	संस्मः

लोट् लकार

सन्तु / सन्तात्	सन्ताम्	संस्तन्तु
सन्धि / सन्तात्	सन्तम्	सन्त
संस्तानि	संस्ताव	संस्ताम

लङ् लकार

असन्	असन्ताम्	असंस्तन्
असन्	असन्तम्	असन्त
असंस्तम्	असंस्त्व	असंस्त्म

विधिलिङ् लकार

संस्त्यात्	संस्त्याताम्	संस्त्युः
संस्त्याः	संस्त्यातम्	संस्त्यात
संस्त्याम्	संस्त्याव	संस्त्याम

दकारान्त अद् धातु - परस्मैपद

लट् लकार

अत्ति	अत्तः	अदन्ति
अत्सि	अत्थः	अत्थ
अद्मि	अद्वः	अद्मः

लोट् लकार

अत्तु / अत्तात्	अत्ताम्	अदन्तु
अद्धि / अत्तात्	अत्तम्	अत्त
अदानि	अदाव	अदाम

यह अजादि धातु है, अतः लङ् लकार के प्रत्यय परे होने पर इसे 'आडजादीनाम् ' सूत्र से आट् का आगम करके - अद् + त् - आट् + अद् + त् / 'आटश्च' सूत्र से पूर्वपर के स्थान पर एक वृद्धि आदेश करके - आ + अद् + त् = आद् + त् -

अदः सर्वेषाम् - अद् धातु से परे आने वाले अपृक्त प्रत्यय त्, स् को अट् का आगम होता है। आद् + त् / आद् + अट् + त् / आद् + अ + त् = आदत्। इसी प्रकार - आद् + स् = आदः।

लङ् लकार

आदत्	आत्ताम्	आदन्
आदः	आत्तम्	आत्त
आदम्	आद्व	आद्म

विधिलिङ् लकार

अद्यात्	अद्याताम्	अद्युः
अद्याः	अद्यातम्	अद्यात
अद्याम्	अद्याव	अद्याम

दकारान्त विद् धातु - परस्मैपद

१. हलादि तथा अजादि पित् प्रत्यय परे होने पर **पुगन्तलघूपधस्य च** सूत्र से उपधा के 'इ' को 'ए' गुण कीजिये। विद् + ति - वेत्ति / विद् + आनि - वेदानि।

२. हलादि तथा अजादि अपित् प्रत्यय परे होने पर **क्ङिति च** सूत्र से गुणनिषेध करके अङ्ग को कुछ नहीं कीजिये। विद् + तः - वित्तः / विद् + अन्ति - विदन्ति।

विदो लटो वा - अदादिगण के विद ज्ञाने धातु से परे आने वाले लट् लकार के प्रत्ययों के स्थान पर णल् (अ), अतुः, उः, थल्, अथुः अ, णल् (अ), व, म प्रत्यय विकल्प से होते हैं। अतः विद् धातु के पूरे रूप इस प्रकार बने -

लट् लकार			लट् लकार		
वेत्ति	वित्तः	विदन्ति	वेद	विदतुः	विदुः
वेत्सि	वित्थः	वित्थ	वेत्थ	विदथुः	विद
वेद्मि	विद्वः	विद्मः	वेद	विद्व	विद्म

लोट् लकार

वेत्तु / वित्तात्	वित्ताम्	विदन्तु
विद्धि / वित्तात्	वित्तम्	वित्त
वेदानि	वेदाव	वेदाम

विद् धातु के रूप लोट् लकार में इस प्रकार भी बनते हैं -

विदाङ्कुर्वन्त्वित्यन्यतरस्याम् - विद् धातु से लोट् लकार के प्रत्यय परे होने पर 'विद्' को 'विदाम्' होता है और उसके बाद 'कृ' धातु के लोट् लकार

के रूप लग जाते हैं। कृ धातु के लोट् लकार के रूप बनाना हम तनादिगण में सीख चुके हैं।

विदाङ्करोतु / विदाङ्कुरुतात्	विदाङ्कुरुताम्	विदाङ्कुर्वन्तु
विदाङ्कुरु / विदाङ्कुरुतात्	विदाङ्कुरुतम्	विदाङ्कुरुत
विदाङ्करवाणि	विदाङ्करवाव	विदाङ्करवाम

लङ् लकार

सिजभ्यस्तविदिभ्यश्च - सिच् से परे, अभ्यस्त धातु से परे तथा विद् धातु से परे आने वाले लङ् लकार के अन् प्रत्यय की जगह उः प्रत्यय लगाया जाता है। अविद् + उः = अविदुः।

दश्च - लङ् लकार के 'स्' प्रत्यय परे होने पर दकारान्त धातुरूप जो पद, उसके दकार के स्थान पर विकल्प से द् तथा रु - र् आदेश होते हैं।

दकार के स्थान पर द् आदेश होने पर - अवेद् + स् - हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से स् का लोप करके - अवेद् / द् को दत्व करके - अवेद् / वाऽवसाने सूत्र से अवसान में स्थित झल् को विकल्प से चर् आदेश करके - अवेद् / अवेत्। वाक्य बनेगा - अवेद् त्वम्।

दकार के स्थान पर रु आदेश होने पर - अवेद् के द् को रुत्व करके - अवेर् / खरवसानयोर्विसर्जनीयः सूत्र से अवसान में आने वाले र् को विसर्ग करके, अवेर् - अवेः / वाक्य बनेगा - अवेः त्वम्।

अवेत् / अवेद्	अवित्ताम्	अविदुः
अवेत् / अवेद् / अवेः	अवित्तम्	अवित्त
अवेदम्	अविद्व	अविद्म

विधिलिङ् लकार

विद्यात्	विद्याताम्	विद्युः
विद्याः	विद्यातम्	विद्यात
विद्याम्	विद्याव	विद्याम

विशेष - लकारार्थ देखिये। समो गम्यृच्छिपृच्छिस्वरत्यर्तिश्रुविदिभ्यः, इस सूत्र से सम् उपसर्ग पूर्वक विद् धातु आत्मनेपदी हो जाता है।

वेत्तेर्विभाषा - अदादिगण के विद् धातु से परे आने वाले आत्मनेपद प्रथम पुरुष बहुवचन के प्रत्यय, 'अते' 'अत' 'अताम्' को विकल्प से रुट् का आगम

होता है। संविद् + अते = संविद्रते, संविदते / संविद् + अताम् = संविद्रताम्, संविदताम् / असंविद् + अत = असंविद्रत, असंविदत।

शेष प्रक्रिया पूर्ववत् ही रहेगी। आत्मनेपद में रूप इस प्रकार बनेंगे -

दकारान्त विद् धातु - आत्मनेपद

लट् लकार

संवित्ते	संविदाते	संविद्रते / संविदते
संवित्से	संविदाथे	संविद्ध्वे
संविदे	संविद्वहे	संविद्महे

लोट् लकार

संवित्ताम्	संविदाताम्	संविद्रताम् / संविदताम्
संवित्स्व	संविदाथाम्	संविद्ध्वम्
संविदै	संविदावहै	संविदामहै

लङ् लकार

असंवित्त	असंविदाताम्	असंविद्रत / असंविदत
असंवित्थाः	असंविदाथाम्	असंविद्ध्वम्
असंविदि	असंविद्वहि	असंविद्महि

विधिलिङ् लकार

संविदीत	संविदीयाताम्	संविदीरन्
संविदीथाः	संविदीयाथाम्	संविदीध्वम्
संविदीय	संविदीवहि	संविदीमहि

वेद के लिये विशेष -

बहुलं छन्दसि - वेद के विषय में, किसी भी धातु से परे आने वाले किसी भी प्रत्यय को, विकल्प से रुट् का आगम होता है।

देवा अदुह्र / गन्धर्वा अप्सरसो अदुह्र।

नकारान्त हन् धातु - परस्मैपद

हलादि तथा अजादि पित् प्रत्यय परे होने पर कुछ मत कीजिये - हन् + ति - हन्ति / हन् + आनि - हनानि आदि।

हन् + सि / नश्चापदान्तस्य झलि सूत्र से अपदान्त नकार को अनुस्वार करके - हंसि।

हलादि अपित् प्रत्यय परे होने पर -

'अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलि क्ङिति' सूत्र से हन् के अन्तिम अनुनासिक वर्ण 'न्' का लोप कीजिये। यथा -

हन् + तः = हतः / हन् + थः = हथः आदि।

हन्तेर्जः - हन् धातु को 'ज' आदेश होता है 'हि' प्रत्यय परे होने पर।

हन् + हि - ज + हि = जहि।

अजादि अपित् प्रत्यय परे होने पर -

गमहनजनखनघसां क्ङित्यनङि - गम्, हन्, जन्, खन्, घस् धातुओं की उपधा का लोप होता है, अङ् से भिन्न अजादि कित् ङित् प्रत्यय परे होने पर।

हन् + अन्ति - ह्न् + अन्ति

हो हन्तेर्ञ्णिन्नेषु - हन् धातु के ह् को कुत्व होकर घ् हो जाता है, ञित् णित् प्रत्यय परे होने पर तथा नकार परे होने पर।

हन् + अन्ति - ह्न् + अन्ति - घ्न् + अन्ति = घ्नन्ति।

लट् लकार

हन्ति	हतः	घ्नन्ति
हंसि	हथः	हथ
हन्मि	हन्वः	हन्मः

लोट् लकार

हन्तु / हतात्	हताम्	घ्नन्तु
जहि / हतात्	हतम्	हत
हनानि	हनाव	हनाम

लङ् लकार

अहन्	अहताम्	अघ्नन्
अहन्	अहतम्	अहत
अहनम्	अहन्व	अहन्म

विधिलिङ् लकार

हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः
हन्याः	हन्यातम्	हन्यात
हन्याम्	हन्याव	हन्याम

रेफान्त ईर् धातु - आत्मनेपद -

लट् लकार

ईर्ते	ईराते	ईरते
ईर्षे	ईराथे	ईर्ध्वे
ईरे	ईर्वहे	ईर्महे

लोट् लकार

ईर्ताम्	ईराताम्	ईरताम्
ईर्ष्व	ईराथाम्	ईर्ध्वम्
ईरै	ईरावहै	ईरामहै

लङ् लकार के प्रत्यय परे होने पर 'आडजादीनाम्' सूत्र से अजादि अङ्ग को आट् का आगम करके 'आटश्च' सूत्र से वृद्धि करके - आ + ईर् = ऐर्।

लङ् लकार

ऐर्त	ऐराताम्	ऐरत
ऐर्थाः	ऐराथाम्	ऐर्ध्वम्
ऐरि	ऐर्वहि	ऐर्महि

विधिलिङ् लकार

ईरीत	ईरीयाताम्	ईरीरन्
ईरीथाः	ईरीयाथाम्	ईरीध्वम्
ईरीय	ईरीवहि	ईरीमहि

शकारान्त वश् धातु - परस्मैपद

ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च - ग्रह्, ज्या, वय्, व्यध्, वश्, व्यच्, व्रश्च्, प्रच्छ्, भ्रस्ज् इन धातुओं को सम्प्रसारण होता है कित्, ङित् प्रत्यय परे होने पर।

अतः ङित् प्रत्यय परे होने पर वश् के 'व' को सम्प्रसारण करके 'उ' बनाइये। शेष प्रत्ययों में ज्यों का त्यों रहने दीजिये।

लट् लकार

वष्टि	उष्टः	उशन्ति
वक्षि	उष्ठः	उष्ठ
वश्मि	उष्वः	उष्मः

लोट् लकार

उड्ढि - वश् + हि / ग्रहिज्यावयि. से 'व' को सम्प्रसारण करके - उश् + हि / हुझल्भ्यो हेर्धिः से हि को धि करके - उश् + धि / व्रश्चभ्रस्ज. से 'श्' को 'ष्' करके - उष् + धि / ष्टुना ष्टुः से प्रत्यय को ष्टुत्व करके - उष् + ढि / झलां जश् झशि से 'ष्' को जश्त्व करके - उड्ढि।

वष्टु / उष्टात्	उष्टाम्	उशन्तु
उड्ढि / उष्टात्	उष्टम्	उष्ट
वशानि	वशाव	वशाम

लङ् लकार

ध्यान रहे कि लङ् लकार के ङित् प्रत्यय परे होने पर, जब हम 'व' को सम्प्रसारण करते हैं, तब यह धातु हलादि न होकर अजादि हो जाता है। जैसे - वश् + ताम् / उश् + ताम् /

सम्प्रसारण होकर जब यह अजादि हो जाये तब अजादि हो जाने के कारण लङ् लकार में इसे आडजादीनाम् सूत्र से 'आट्' का आगम कीजिये। आ + उश् + ताम् / आटश्च सूत्र से वृद्धि करके - आट् + उश् + ताम् - औश् + ताम् = औष्टाम् आदि। जहाँ सम्प्रसारण न हो वहाँ 'अट्' का आगम ही कीजिये - अवश् + त् = अवट्। पूरे रूप इस प्रकार बने -

अवट्	औष्टाम्	औशन्
अवट्	औष्टम्	औष्ट
अवशम्	औश्व	औश्म

विधिलिङ् लकार

उश्यात्	उश्याताम्	उश्युः
उश्याः	उश्यातम्	उश्यात
उश्याम्	उश्याव	उश्याम

शकारान्त ईश् धातु - आत्मनेपद

ईशः से - ईश् धातु परे आने वाले सार्वधातुक 'से' प्रत्यय को इट् का आगम होता है। ईश् + से / ईश् + इट् + से = ईशिषे।

लट् लकार

ईष्टे	ईशाते	ईशते

ईशिषे	ईशाथे	ईड्ढ्वे
ईशे	ईश्वहे	ईश्महे

लोट् लकार

ईष्टाम्	ईशाताम्	ईशताम्
ईशिष्व	ईशाथाम्	ईड्ढ्वम्
ईशै	ईशावहै	ईशामहै

लङ् लकार

लङ् लकार के प्रत्यय परे होने पर 'आडजादीनाम्' सूत्र से अजादि अङ्ग को आट् का आगम करके 'आटश्च' सूत्र से वृद्धि करके - आ + ईश् = ऐश्।

ऐष्ट	ऐशाताम्	ऐशत
ऐष्ठाः	ऐशाथाम्	ऐड्ढ्वम्
ऐशि	ऐश्वहि	ऐश्महि

विधिलिङ् लकार

ईशीत	ईशीयाताम्	ईशीरन्
ईशीथाः	ईशीयाथाम्	ईशीध्वम्
ईशीय	ईशीवहि	ईशीमहि

षकारान्त द्विष् धातु - परस्मैपद

१. हलादि तथा अजादि पित् परे होने पर पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से उपधा के इ को 'ए' गुण कीजिये। द्विष् + ति - द्वेष्टि/ द्वेष् + आनि - द्वेषाणि।

२. हलादि तथा अजादि अपित् प्रत्यय परे होने पर क्ङिति च सूत्र से गुणनिषेध करके अङ्ग को कुछ नहीं कीजिये। द्विष् + तः - द्विष्टः / द्विष् + थः = द्विष्ठः / द्विष् + अन्ति - द्विषन्ति। शेष प्रक्रिया पूर्ववत्।

लट् लकार

द्वेष्टि	द्विष्टः	द्विषन्ति
द्वेक्षि	द्विष्ठः	द्विष्ठ
द्वेष्मि	द्विष्वः	द्विष्मः

लोट् लकार

द्विड्ढि - द्विष् + हि - हुझल्भ्यो हेर्धिः से हि को धि करके - द्विष् + धि / ष्टुना ष्टुः से ष्टुत्व करके - द्विष् + ढि / 'ष्' को जश्त्व करके - द्विड्ढि।

द्वेष्टु / द्विष्टात्	द्विष्टाम्	द्विषन्तु
द्विड्ढि / द्विष्टात्	द्विष्टम्	द्विष्ट
द्वेषाणि	द्वेषाव	द्वेषाम

लङ् लकार

द्विषश्च - द्विष् धातु से परे आने वाले लङ् लकार के प्रत्यय 'अन्' के स्थान पर विकल्प से 'उः' आदेश होता है।

अद्वेट् / अद्वेड्	अद्विष्टाम्	अद्विषुः / अद्विषन्
अद्वेट् / अद्वेड्	अद्विष्टम्	अद्विष्ट
अद्वेषम्	अद्विष्व	अद्विष्म

विधिलिङ् लकार

द्विष्यात्	द्विष्याताम्	द्विष्युः
द्विष्याः	द्विष्यातम्	द्विष्यात
द्विष्याम्	द्विष्याव	द्विष्याम

षकारान्त चक्ष् धातु - आत्मनेपद

चक्ष् + ते / यहाँ स्कोः संयोगाद्योरन्ते च सूत्र से संयोग 'क्ष्' के आदि में स्थित 'क्' का लोप कीजिये। चक्ष् + ते - चष् + ते / ष्टुना ष्टुः सूत्र से 'ते' को ष्टुत्व करके 'टे' बनाइये। चष् + ते - चष् + टे = चष्टे।

लट् लकार

चष्टे	चक्षाते	चक्षते
चक्षे	चक्षाथे	चड्ढ्वे
चक्षे	चक्ष्वहे	चक्ष्महे

लोट् लकार

चष्टाम्	चक्षाताम्	चक्षताम्
चक्ष्व	चक्षाथाम्	चड्ढ्वम्
चक्षै	चक्षावहै	चक्षामहै

लङ् लकार

अचष्ट	अचक्षाताम्	अचक्षत
अचष्ठाः	अचक्षाथाम्	अचड्ढ्वम्
अचक्षि	अचक्ष्वहि	अचक्ष्महि

विधिलिङ् लकार

चक्षीत	चक्षीयाताम्	चक्षीरन्
चक्षीथाः	चक्षीयाथाम्	चक्षीध्वम्
चक्षीय	चक्षीवहि	चक्षीमहि

अब सकारान्त धातुओं के रूप बनायें।

धि च - धकारादि प्रत्यय परे होने पर सकार का लोप होता है।

वस् + ध्वम् = वध्वम्। आस् + ध्वम् = आध्वम्। कंस् + ध्वे = कंध्वे। निंस् + ध्वम् = निंध्वम्। वस् + ध्वे = वध्वे। शेष प्रक्रिया पूर्ववत्।

सकारान्त वस् धातु - आत्मनेपद

लट् लकार

वस्ते	वसाते	वसते
वस्से	वसाथे	वध्वे
वसे	वस्वहे	वस्महे

लोट् लकार

वस्ताम्	वसाताम्	वसताम्
वस्व	वसाथाम्	वध्वम्
वसै	वसावहै	वसामहै

लङ् लकार

अवस्त	अवसाताम्	अवसत
अवस्थाः	अवसाथाम्	अवध्वम्
अवसि	अवस्वहि	अवस्महि

विधिलिङ् लकार

वसीत	वसीयाताम्	वसीरन्
वसीथाः	वसीयाथाम्	वसीध्वम्
वसीय	वसीवहि	वसीमहि

सकारान्त आस् धातु - आत्मनेपद

लट् लकार

आस्ते	आसाते	आसते
आस्से	आसाथे	आध्वे

आसे	आस्वहे	आस्महे
	लोट् लकार	
आस्ताम्	आसाताम्	आसताम्
आस्व	आसाथाम्	आध्वम्
आसै	आसावहै	आसामहै
	लङ् लकार	
आस्त	आसाताम्	आसत
आस्थाः	आसाथाम्	आध्वम्
आसि	आस्वहि	आस्महि
	विधिलिङ् लकार	
आसीत	आसीयाताम्	आसीरन्
आसीथाः	आसीयाथाम्	आसीध्वम्
आसीय	आसीवहि	आसीमहि

सकारान्त आङः शासु धातु आत्मनेपद - आस् के ही समान -

	लट् लकार	
आशास्ते	आशासाते	आशासते
आशास्से	आशासाथे	आशाध्वे
आशासे	आशास्वहे	आशास्महे
	लोट् लकार	
आशास्ताम्	आशासाताम्	आशासताम्
आशास्व	आशासाथाम्	आशाध्वम्
आशासै	आशासावहै	आशासामहै
	लङ् लकार	
आशास्त	आशासाताम्	आशासत
आशास्थाः	आशासाथाम्	आशाध्वम्
आशासि	आशास्वहि	आशास्महि
	विधिलिङ् लकार	
आशासीत	आशासीयाताम्	आशासीरन्
आशासीथाः	आशासीयाथाम्	आशासीध्वम्

आशासीय	आशासीवहि	आशासीमहि

सकारान्त कसि - कंस् धातु - आत्मनेपद

लट् लकार

कंस्ते	कंसाते	कंसते
कंस्से	कंसाथे	कंध्वे
कंसे	कंस्वहे	कंस्महे

लोट् लकार

कंस्ताम्	कंसाताम्	कंसताम्
कंस्व	कंसाथाम्	कंध्वम्
कंसै	कंसावहै	कंसामहै

लङ् लकार

अकंस्त	अकंसाताम्	अकंसत
अकंस्था:	अकंसाथाम्	अकन्ध्वम्
अकंसि	अकंस्वहि	अकंस्महि

विधिलिङ् लकार

कंसीत	कंसीयाताम्	कंसीरन्
कंसीथा:	कंसीयाथाम्	कंसीध्वम्
कंसीय	कंसीवहि	कंसीमहि

सकारान्त णिसि - निंस् धातु - आत्मनेपद

लट् लकार

निंस्ते	निंसाते	निंसते
निंस्से	निंसाथे	निंध्वे
निंसे	निंस्वहे	निंस्महे

लोट् लकार

निंस्ताम्	निंसाताम्	निंसताम्
निंस्व	निंसाथाम्	निन्ध्वम्
निंसै	निंसावहै	निंसामहै

लङ् लकार

अनिंस्त	अनिंसाताम्	अनिंसत

अनिंस्थाः	अनिंसाथाम्	अनिन्ध्वम्
अनिंसि	अनिंस्वहि	अनिंस्महि

विधिलिङ् लकार

निंसीत	निंसीयाताम्	निंसीरन्
निंसीथाः	निंसीयाथाम्	निंसीध्वम्
निंसीय	निंसीवहि	निंसीमहि

सकारान्त षस् - सस् धातु - परस्मैपद

लट् लकार

सस्ति	सस्तः	ससन्ति
सस्सि	सस्थः	सस्थ
सस्मि	सस्वः	सस्मः

लोट् लकार

सस् + धि / धि च से सकार का लोप करके - सधि।

सस्तु / सस्तात्	सस्ताम्	ससन्तु
सधि / सस्तात्	सस्तम्	सस्त
ससानि	ससाव	ससाम

लङ् लकार का त् प्रत्यय परे होने पर -

असस् + त् - **हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्** सूत्र से त् का लोप करके बचा - असस् /

तिप्यनस्तेः - लङ् लकार के त् प्रत्यय परे होने पर सकारान्त पद के अन्तिम सकार के स्थान पर द् आदेश होता है। असस् - असद्।

'द्' को 'वाऽवसाने' सूत्र से विकल्प से चर्त्व करके - असद् / असत्।

असस् + स् - हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से त् का लोप करके बचा - असस् /

सिपि धातो रुर्वा - लङ् लकार के स् प्रत्यय परे होने पर, सकारान्त धातुरूप जो पद, उस पद के अन्तिम सकार के स्थान पर विकल्प से द् तथा रु - र् आदेश होते हैं। असस् - स् को रुत्व करके - असरु / उ की इत्संज्ञा करके - असर् - 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से अवसान में आने वाले र् को विसर्ग करके - असर् - असः। रु न होने पर असद् / असत्, ये रूप ही रहेंगे।

लङ् लकार

असत् /असद्	असस्ताम्	अससन्
असः /असत् /असद्	असस्तम्	असस्त
अससम्	असस्व	असस्म

विधिलिङ् लकार

सस्यात्	सस्याताम्	सस्युः
सस्याः	सस्यातम्	सस्यात
सस्याम्	सस्याव	सस्याम

सकारान्त अस् धातु - परस्मैपद -

सारे अपित् प्रत्यय परे होने पर - श्नसोरल्लोपः सूत्र से अस् के 'अ' का लोप कीजिये - अस् + तः - स् + तः = स्तः। अस् + अन्ति - सन्ति।

सि प्रत्यय परे होने पर - तासस्त्योर्लोपः सूत्र से अस् के 'स' का लोप कीजिये - अस् + सि - अ + सि = असि। शेष प्रत्ययों में कुछ मत कीजिये।

लट् लकार

अस्ति	स्तः	सन्ति
असि	स्थः	स्थ
अस्मि	स्वः	स्मः

लोट् लकार

घ्वसोरेद्धावभ्यासलोपश्च - घुसंज्ञक दा, धा धातु तथा अस् धातु को 'ए' आदेश होता है, हि प्रत्यय परे होने पर। अस् + हि - ए + हि।

हुझल्भ्यो हेर्धिः - हु धातु तथा झलन्त धातुओं से परे आने वाले 'हि' को 'धि' आदेश होता है। ए + हि - ए + धि = एधि।

अस्तु / स्तात्	स्ताम्	सन्तु
एधि / स्तात्	स्तम्	स्त
असानि	असाव	असाम

लङ् लकार

अस्तिसिचोऽपृक्ते - अस् धातु से परे आने वाले अपृक्त सार्वधातुक प्रत्ययों को अर्थात् त्, स् प्रत्ययों को ईट् का आगम होता है। आ + अस् + त् - आस् + ई + त् = आसीत् / आ + अस् + स् - आस् + ई + स् = आसीः।

आसीत्	आस्ताम्	आसन्
आसी:	आस्तम्	आस्त
आसम्	आस्व	आस्म

विधिलिङ् लकार

श्नसोरल्लोप: सूत्र से अस् के 'अ' का लोप करके -

स्यात्	स्याताम्	स्यु:
स्या:	स्यातम्	स्यात
स्याम्	स्याव	स्याम

हकारान्त दुह्, दिह् धातु, उभयपद - अङ्गकार्य इस प्रकार करें -

१. हलादि तथा अजादि पित् प्रत्यय परे होने पर **पुगन्तलघूपधस्य च** सूत्र से उपधा के इ को ए / उपधा के उ को ओ गुण कीजिये। दिह् + ति - देग्धि / दोह् + ति - दोग्धि / देह् + आनि - देहानि / दोह् + आनि - दोहानि।

२. हलादि तथा अजादि अपित् प्रत्यय परे होने पर **क्ङिति च** सूत्र से गुणनिषेध करके अङ्ग को कुछ नहीं कीजिये। दिह् + त: - दिग्ध: / दुह् + त: - दुग्ध: / दिह् + अन्ति - दिहन्ति / दुह् + अन्ति - दुहन्ति।

ध्यान रहे कि अङ्गकार्य करने के बाद ही सन्धिकार्य किये जायें। सन्धिकार्य इस प्रकार करें -

झलादि प्रत्यय परे होने पर, इन धातुओं के 'ह्' को दादेर्धातोर्घ: सूत्र से 'घ्' बनाइये - दोह् + ति - दोघ् + ति / झषस्तथोर्धोऽध: सूत्र से प्रत्यय के 'त' को 'ध' करके - दोघ् + धि / झलां जश् झशि से जश्त्व करके - दोग् + धि = दोग्धि।

दोह् + सि / 'ह्' को दादेर्धातोर्घ: सूत्र से 'घ्' करके - दोघ् + सि / अब झषन्त होने से इसके आदि 'बश्' के स्थान पर एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वो: सूत्र से 'भष्' करके - धोघ् + सि / खरि च से चर्त्व करके - धोक् + सि / आदेशप्रत्यययो: से षत्व करके - धोक् + षि = धोक्षि।

दुह् + ध्वे - दादेर्धातोर्घ: सूत्र से दुघ् + ध्वे / एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वो: सूत्र से - धुघ् + ध्वे / झलां जश् झशि से जश्त्व करके - धुग्ध्वे।

अदोह् + त् / 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से त् का लोप करके - अदोह् / 'दादेर्धातोर्घ:' सूत्र से इस पदान्त 'ह्' को 'घ्' करके - अदोघ्/

'एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः' सूत्र से भष् करके - अधोघ् / झलां जशोऽन्ते से जश्त्व करके - अधोग् / वाऽवसाने से चर्त्व करके - अधोक्।

अदोह् + स् से भी इसी प्रकार - अधोक् / अधोग् बनाइये। दिह् धातु के रूप भी ठीक इसी विधि से बनाइये। दुह् के पूरे रूप इस प्रकार बने -

लट् लकार

दोग्धि	दुग्धः	दुहन्ति	दुग्धे	दुहाते	दुहते
धोक्षि	दुग्धः	दुग्ध	धुक्षे	दुहाथे	धुग्ध्वे
दोह्मि	दुह्वः	दुह्मः	दुहे	दुह्वहे	दुह्महे

लोट् लकार

दोग्धु / दुग्धात्	दुग्धाम्	दुहन्तु	दुग्धाम्	दुहाताम्	दुहताम्
दुग्धि / दुग्धात्	दुग्धम्	दुग्ध	धुक्ष्व	दुहाथाम्	धुग्ध्वम्
दोहानि	दोहाव	दोहाम	दोहै	दोहावहै	दोहामहै

लङ् लकार

अधोग् / अधोक्	अदुग्धाम्	अदुहन्	अदुग्ध	अदुहाताम्	अदुहत
अधोग् / अधोक्	अदुग्धम्	अदुग्ध	अदुग्धाः	अदुहाथाम्	अधुग्ध्वम्
अदोहम्	अदुह्व	अदुह्म	अदुहि	अदुह्वहि	अदुह्महि

विधिलिङ् लकार

दुह्यात्	दुह्याताम्	दुह्युः	दुहीत	दुहीयाताम्	दुहीरन्
दुह्याः	दुह्यातम्	दुह्यात	दुहीथाः	दुहीयाथाम्	दुहीध्वम्
दुह्याम्	दुह्याव	दुह्याम	दुहीय	दुहीवहि	दुहीमहि

हकारान्त दिह् धातु - उभयपद

लट् लकार

देग्धि	दिग्धः	दिहन्ति	दिग्धे	दिहाते	दिहते
धेक्षि	दिग्धः	दिग्ध	धिक्षे	दिहाथे	धिग्ध्वे
देह्मि	दिह्वः	दिह्मः	दिहे	दिह्वहे	दिह्महे

लोट् लकार

देग्धु / दिग्धात्	दिग्धाम्	दिहन्तु	दिग्धाम्	दिहाताम्	दिहताम्
दिग्धि/ दिग्धात्	दिग्धम्	दिग्ध	धिक्ष्व	दिहाथाम्	दिग्ध्वम्
देहानि	देहाव	देहाम	देहै	देहावहै	देहामहै

लङ् लकार

अधेग् / अधेक्	अदिग्धाम्	अदिहन्	अदिग्ध	अदिहाताम्	अदिहत
अधेग् / अधेक्	अदिग्धम्	अदिग्ध	अदिग्धाः	अदिहाथाम्	अधिग्ध्वम्
अदेहम्	अदिह्व	अदिह्म	अदिहि	अदिह्वहि	अदिह्महि

विधिलिङ् लकार

दिह्यात्	दिह्याताम्	दिह्युः	दिहीत	दिहीयाताम्	दिहीरन्
दिह्याः	दिह्यातम्	दिह्यात	दिहीथाः	दिहीयाथाम्	दिहीध्वम्
दिह्याम्	दिह्याव	दिह्याम	दिहीय	दिहीवहि	दिहीमहि

हकारान्त लिह् धातु, उभयपद - अङ्गकार्य पूर्ववत् कीजिये।

ध्यान रहे कि अङ्गकार्य करने के बाद सन्धिकार्य इस प्रकार करें -

झलादि प्रत्यय परे होने पर, 'ह्' को हो ढः सूत्र से 'ढ्' बनाइये - लेह् + ति - लेढ् + ति / झषस्तथोर्धोऽधः सूत्र से प्रत्यय के 'त' को 'ध' करके - लेढ् + धि / ष्टुना ष्टुः सूत्र से प्रत्यय को ष्टुत्व करके - लेढ् + ढि / ढो ढे लोपः से 'ढ्' का लोप करके - लेढि।

लेह् + सि / 'ह्' को हो ढः सूत्र से 'ढ्' बनाकर लेढ् + सि / षढोः कः सि सूत्र से ढ् को क् करके - लेक् + सि / आदेशप्रत्यययोः सूत्र से प्रत्यय को षत्व करके - लेक् + षि = लेक्षि।

लिह् + ध्वे - हो ढः सूत्र से 'ह्' को 'ढ्' बनाकर लिढ् + ध्वे / झषस्तथोर्धोऽधः सूत्र से प्रत्यय के 'त' को 'ध' करके - लिढ् + ध्वे / ष्टुना ष्टुः सूत्र से ष्टुत्व करके - लिढ् + ढ्वे / ढो ढे लोपः से 'ढ्' का लोप करके- लि + ढ्वे / ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः सूत्र से 'इ' को दीर्घ करके - लीढ्वे।

अलेह् + त् / 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से त् का लोप करके - अलेह् / हो ढः सूत्र से 'ह्' को 'ढ्' बनाकर अलेढ् / झलां जशोऽन्ते से जश्त्व करके - अलेड्। वाऽवसाने से चर्त्व करके - अलेट्।

अलेह् + स् से भी इसी प्रकार - अलेड् / अलेट् बनाइये।

लट् लकार

लेढि	लीढः	लिहन्ति	लीढे	लिहाते	लिहते
लेक्षि	लीढः	लीढ	लिक्षे	लिहाथे	लीढ्वे
लेह्मि	लिह्वः	लिह्मः	लिहे	लिह्वहे	लिह्महे

लोट् लकार

लेढु / लीढात्	लीढाम्	लिहन्तु	लीढाम्	लिहाताम्	लिहताम्
लीढि / लीढात्	लीढम्	लीढ	लिक्ष्व	लिहाथाम्	लीढ्वम्
लेहानि	लेहाव	लेहाम	लेहै	लेहावहै	लेहामहै

लङ् लकार

अलेट् / अलेड्	अलीढाम्	अलिहन्	अलीढ	अलिहाताम्	अलिहत
अलेट् / अलेड्	अलीढम्	अलीढ	अलीढा:	अलिहाथाम्	अलीढ्वम्
अलेहम्	अलिह्व	अलिह्म	अलिहि	अलिह्वहि	अलिह्महि

विधिलिङ् लकार

लिह्यात्	लिह्याताम्	लिह्यु:	लिहीत	लिहीयाताम्	लिहीरन्
लिह्या:	लिह्यातम्	लिह्यात	लिहीथा:	लिहीयाथाम्	लिहीध्वम्
लिह्याम्	लिह्याव	लिह्याम	लिहीय	लिहीवहि	लिहीमहि

अदादिगण का अन्तर्गण - रुदादिगण -

अदादि गण का धातुपाठ देखिये। उसमें अदादिगण के भीतर रुदादि नामक एक अन्तर्गण है। इस अन्तर्गण में रुद्, स्वप्, श्वस्, अन्, जक्ष् ये पाँच धातु हैं।

रुदादिभ्य: सार्वधातुके - इस रुदादिगण में पठित इन पाँच धातुओं से परे आने वाले वलादि सार्वधातुक प्रत्ययों को अर्थात् तकारादि थकारादि तथा सकारादि वकारादि तथा मकारादि प्रत्ययों को इट् का आगम होता है। यथा -

रुद् - रोद् + ति / रोद् + इ + ति = रोदिति।
स्वप् - स्वप् + ति / स्वप् + इ + ति = स्वपिति।
श्वस् - श्वस् + ति / श्वस् + इ + ति = श्वसिति।
अन् - अन् + ति / अन् + इ + ति = अनिति।
जक्ष् - जक्ष् + ति / जक्ष् + इ + ति = जक्षिति।

रुदश्च पञ्चभ्य: - रुदादि पाँच धातुओं से परे आने वाले, अपृक्त हलादि सार्वधातुक त्, स्, प्रत्ययों को 'ईट्' का आगम होता है। अरोद् + त् - अरोद् + ई + त् = अरोदीत् / इसी प्रकार अरोद् + स् = अरोदी:।

अड् गार्ग्यगालवयो: - रुदादि पाँच धातुओं से परे आने वाले, अपृक्त हलादि सार्वधातुक त्, स्, प्रत्ययों को विकल्प से 'अट्' का आगम होता है। अरोद् + त् - अरोद् + अ + त् = अरोदत् / इसी प्रकार अरोद् + स् = अरोद:।

		त् प्रत्यय परे होने पर		स् प्रत्यय परे होने पर
रुद् - अरोद्	=	अरोदीत्, अरोदत्	/	अरोदीः, अरोदः
स्वप् - अस्वप्	=	अस्वपीत्, अस्वपत्	/	अस्वपीः, अस्वपः
श्वस् - अश्वस्	=	अश्वसीत्, अश्वसत्	/	अश्वसीः, अश्वसः
अन् - आअन्	=	आनीत्, आनत्	/	आनीः, आनः
जक्ष् - अजक्ष्	=	अजक्षीत्, अजक्षत्	/	अजक्षीः, अजक्षः

१. हलादि तथा अजादि पित् परे होने पर पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से उपधा के उ को ओ गुण कीजिये। रुद् + ति - रोद् + इ + ति = रोदिति / रुद् + आनि - रोद् + आनि = रोदानि

२. हलादि तथा अजादि अपित् प्रत्यय परे होने पर क्ङिति च सूत्र से गुणनिषेध्न करके अङ्ग को कुछ नहीं कीजिये। रुद् + तः - रुद् + इ + तः = रुदितः / रुद् + अन्ति - रुद् + अन्ति = रुदन्ति।

दकारान्त रुद् धातु - परस्मैपद

लट् लकार

रोदिति	रुदितः	रुदन्ति
रोदिषि	रुदिथः	रुदिथ
रोदिमि	रुदिवः	रुदिमः

लोट् लकार

रोदितु / रुदितात्	रुदिताम्	रुदन्तु
रुदिहि / रुदितात्	रुदितम्	रुदित
रोदानि	रोदाव	रोदाम

लङ् लकार

अरोदीत् / अरोदत्	अरुदिताम्	अरुदन्
अरोदीः / अरोदः	अरुदितम्	अरुदित
अरोदम्	अरुदिव	अरुदिम

विधिलिङ् लकार

रुद्यात्	रुद्याताम्	रुद्युः
रुद्याः	रुद्यातम्	रुद्यात
रुद्याम्	रुद्याव	रुद्याम

पकारान्त स्वप् धातु - परस्मैपद

लट् लकार

स्वपिति	स्वपितः	स्वपन्ति
स्वपिषि	स्वपिथः	स्वपिथ
स्वपिमि	स्वपिवः	स्वपिमः

लोट् लकार

स्वपितु / स्वपितात्	स्वपिताम्	स्वपन्तु
स्वपिहि / स्वपितात्	स्वपितम्	स्वपित
स्वपानि	स्वपाव	स्वपाम

लङ् लकार

अस्वपीत्	अस्वपिताम्	अस्वपन्
अस्वपीः	अस्वपितम्	अस्वपित
अस्वपम्	अस्वपिव	अस्वपिम

विधिलिङ् लकार

स्वप्यात्	स्वप्याताम्	स्वप्युः
स्वप्याः	स्वप्यातम्	स्वप्यात
स्वप्याम्	स्वप्याव	स्वप्याम

सकारान्त श्वस् धातु - परस्मैपद

लट् लकार

श्वसिति	श्वसितः	श्वसन्ति
श्वसिषि	श्वसिथः	श्वसिथ
श्वसिमि	श्वसिवः	श्वसिमः

लोट् लकार

श्वसितु / श्वसितात्	श्वसिताम्	श्वसन्तु
श्वसिहि / श्वसितात्	श्वसितम्	श्वसित
श्वसानि	श्वसाव	श्वसाम

लङ् लकार

अश्वसीत्	अश्वसिताम्	अश्वसन्
अश्वसीः	अश्वसितम्	अश्वसित

अश्वसम्	अश्वसिव	अश्वसिम

विधिलिङ् लकार

श्वस्यात्	श्वस्याताम्	श्वस्युः
श्वस्याः	श्वस्यातम्	श्वस्यात
श्वस्याम्	श्वस्याव	श्वस्याम

नकारान्त अन् धातु - परस्मैपद

लट् लकार

अनिति	अनितः	अनन्ति
अनिषि	अनिथः	अनिथ
अनिमि	अनिवः	अनिमः

लोट् लकार

अनितु / अनितात्	अनिताम्	अनन्तु
अनिहि / अनितात्	अनितम्	अनित
अनानि	अनाव	अनाम

लङ् लकार

आनीत्	आनिताम्	आनन्
आनीः	आनितम्	आनित
आनम्	आनिव	आनिम

विधिलिङ् लकार

अन्यात्	अन्याताम्	अन्युः
अन्याः	अन्यातम्	अन्यात
अन्याम्	अन्याव	अन्याम

इन्हीं रूपों में 'प्र' उपसर्ग लगाकर 'प्राणिति' आदि रूप बनते हैं।

यहाँ से अदादिगण का 'जक्षादि अन्तर्गण' प्रारम्भ हो रहा है।

जक्षित्यादयः षट् - अदादिगण का धातुपाठ देखिये। इसमें जक्ष्, जागृ, दरिद्रा, चकास्, शास्, दीधीङ्, वेवीङ् ये सात धातु हैं। इन सात धातुओं का नाम अभ्यस्त होता है।

हम जानते हैं कि जब भी धातु का नाम अभ्यस्त होता है, तब **अदभ्यस्तात्** सूत्र से अन्ति की जगह अति, अन्तु की जगह अतु प्रत्यय लगाये जाते हैं, तथा

सिजभ्यस्तविदिभ्यश्च सूत्र से लङ् लकार के 'अन्' की जगह 'उः' प्रत्यय लगाया जाता है। अब हम जक्षादिगण के धातुओं के रूप बनायें।

इनमें से जागृ, दरिद्रा, दीधीङ्, वेवीङ्, इन अजन्त धातुओं के रूप बनाने की विधि अजन्त धातुओं में दी जा चुकी है, उसे वहीं देखें। शेष जक्ष्, चकास्, शास्, इन हलन्त धातुओं के रूप बनाना बतला रहे हैं।

षकारान्त जक्ष् धातु - परस्मैपद -

जक्ष् धातु ऐसा है, कि यह रुदादिगण तथा जक्षादिगण के बीच में पढ़ा गया है। यह रुदादिगण में भी आता है और जक्षादिगण में भी आता है।

रुदादिगण में होने के कारण 'रुदादिभ्यः सार्वधातुके' सूत्र से जक्ष् धातु से परे आने वाले, वलादि सार्वधातुक प्रत्ययों को भी इट् का आगम कीजिये।

जक्षादिगण में होने के कारण अन्ति की जगह अति, अन्तु की जगह अतु तथा लङ् लकार के 'अन्' की जगह 'उः' प्रत्यय लगाइये।

लट् लकार

जक्षिति	जक्षितः	जक्षति
जक्षिषि	जक्षिथः	जक्षिथ
जक्षिमि	जक्षिवः	जक्षिमः

लोट् लकार

जक्षितु / जक्षितात्	जक्षिताम्	जक्षतु
जक्षिहि / जक्षितात्	जक्षितम्	जक्षित
जक्षाणि	जक्षाव	जक्षाम

लङ् लकार

अजक्षीत्	अजक्षिताम्	अजक्षुः
अजक्षीः	अजक्षितम्	अजक्षित
अजक्षम्	अजक्षिव	अजक्षिम

विधिलिङ् लकार

जक्ष्यात्	जक्ष्याताम्	जक्ष्युः
जक्ष्याः	जक्ष्यातम्	जक्ष्यात
जक्ष्याम्	जक्ष्याव	जक्ष्याम

सकारान्त चकास् धातु - परस्मैपद

लट् लकार

चकास्ति	चकास्तः	चकासति
चकास्सि	चकास्थः	चकास्थ
चकास्मि	चकास्वः	चकास्मः

लोट् लकार

चकास् + धि / धि च सूत्र से सकार का लोप करके = चकाधि।

चकास्तु / चकास्तात्	चकास्ताम्	चकासतु
चकाधि / चकास्तात्	चकास्तम्	चकास्त
चकासानि	चकासाव	चकासाम

लङ् लकार

लङ् लकार में, अचकास् + त् - हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से त् का लोप करके - अचकास् / तिप्यनस्तेः से अन्तिम स् को दत्व करके बना - अचकाद्।

लङ् लकार के स् प्रत्यय परे होने पर - अचकास् + स् / स् का लोप करके - अचकास् /

सिपि धातो रुर्वा - अन्तिम सकार के स्थान पर विकल्प से द् तथा रु - र् आदेश होते हैं। अतः स् को रुत्व करके - अचकास् - अचकारु - उ की इत्संज्ञा करके - अचकार् - इसके बाद - खरवसानयोर्विसर्जनीयः सूत्र से, अवसान में आने वाले र् को विसर्ग करके - अचकार् - अचकाः।

स् को दत्व करके - अचकाद्। 'वाऽवसाने' सूत्र से अवसान में स्थित झल् को विकल्प से चर् आदेश करके - अचकाद् / अचकात्।

अचकाद् / अचकात्	अचकास्ताम्	अचकासुः
अचकाद् / अचकात् अचकाः	अचकास्तम्	अचकास्त
अचकासम्	अचकास्व	अचकास्म

विधिलिङ् लकार

चकास्यात्	चकास्याताम्	चकास्युः
चकास्याः	चकास्यातम्	चकास्यात
चकास्याम्	चकास्याव	चकास्याम

सकारान्त शास् धातु - परस्मैपद

हलादि अपित् प्रत्यय परे होने पर -

शास इदङ्हलो: - शास् धातु के आ को इ होता है हलादि कित् या ङित् प्रत्यय तथा अङ् प्रत्यय परे होने पर। शास् + त: - शिस् + त: -

शासिवसिघसीनाम् च - शास्, वस्, घस् धातुओं के इण् तथा कवर्ग के बाद आने वाले स् को ष् होता है। शिस् + त: - शिष् + त: / स्तो: श्चुना श्चु: से श्चुत्व करके - शिष्ट:।

शेष प्रत्यय परे होने पर - कुछ मत कीजिये - शास् + ति - शास्ति।

लट् लकार

शास्ति	शिष्ट:	शासति
शास्सि	शिष्ठ:	शिष्ठ
शास्मि	शिष्व:	शिष्म:

लोट् लकार

शा हौ - शास् धातु को शा आदेश होता है हि प्रत्यय परे होने पर। शास् + हि - शा + हि / हुझल्भ्यो हेर्धि: से हि को धि आदेश करके शा + हि - शाधि।

शास्तु / शिष्टात्	शिष्टाम्	शासतु
शाधि / शिष्टात्	शिष्टम्	शिष्ट
शासानि	शासाव	शासाम

लङ् लकार

अशात् /अशाद्	अशिष्टाम्	अशासन्
अशा: /अशात् /अशाद्	अशिष्टम्	अशिष्ट
अशासम्	अशिष्व	अशिष्म

विधिलिङ् लकार

शिष्यात्	शिष्याताम्	शिष्यु:
शिष्या:	शिष्यातम्	शिष्यात
शिष्याम्	शिष्याव	शिष्याम

यह अदादिगण के हलन्त धातुओं के लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् लकारों के रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।

जुहोत्यादिगण के हलन्त धातुओं के लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् लकारों के रूप बनाने की विधि

'श्लौ' सूत्र से द्वित्व हो जाने से जुहोत्यादिगण के ये धातु अभ्यस्त हैं। अतः इनसे परे आने वाले अन्ति की जगह अति, अन्तु की जगह अतु और अन् की जगह उः प्रत्यय ही लगाइये।

जन् - द्वित्वादि करके - जजन् धातु - परस्मैपद

जजन् + ति = जजन्ति / जजन् + तः -

जनसनखनां सञ्झलोः - जन्, सन्, खन्, धातुओं को 'आ' अन्तादेश होता है, झलादि सन् और झलादि कित्, ङित् प्रत्यय परे होने पर।

'तः' प्रत्यय झलादि कित्, ङित् है, अतः 'न्' को 'आ' होकर - जजा + तः = जजातः / जजन् + अति -

गमहनजनखनघसां लोपः क्ङित्यनङि - गम्, हन्, जन्, खन्, घस्, इन धातुओं की उपधा के 'अ' का लोप होता है, अजादि कित्, ङित् प्रत्यय परे होने पर। जजन् + अति - जज्न् + अति / स्तोः श्चुना श्चुः से न् को श्चुत्व करके जज्ञ् + अति / ज्ञ् = ज्ञ् बनाकर - जज्ञति।

लट् लकार

जजन्ति	जजातः	जज्ञति
जजंसि	जजाथः	जजाथ
जजंन्मि	जजन्वः	जजन्मः

लोट् लकार

जजन्तु	जजाताम्	जज्ञतु
जजाहि / जजातात्	जजातम्	जजात
जजनानि	जजनाव	जजनाम

लङ् लकार

अजजन्	अजजाताम्	अजज्ञुः
अजजन्	अजजातम्	अजज्ञत
अजजनम्	अजजन्व	अजजन्म

विधिलिङ् लकार

ये विभाषा - जन्, सन्, खन्, धातुओं को विकल्प से 'आ' अन्तादेश

होता है, यकारादि कित्, ङित् प्रत्यय परे होने पर।

'आ' अन्तादेश होने पर			**'आ' अन्तादेश न होने पर**		
जजायात्	जजायाताम्	जजायुः	जजन्यात्	जजन्याताम्	जजन्युः
जजायाः	जजायातम्	जजायात	जजन्याः	जजन्यातम्	जजन्यात
जजायाम्	जजायाव	जजायाम	जजन्याम्	जजन्याव	जजन्याम

धन् - द्वित्वादि करके - दधन् धातु - परस्मैपद

लट् लकार

दधन्ति	दधन्तः	दधनति
दधंसि	दधन्थः	दधन्थ
दधन्मि	दधन्वः	दधन्मः

लोट् लकार

दधन्तु / दधन्तात्	दधन्ताम्	दधनतु
दधंहि / दधन्तात्	दधन्तम्	दधन्त
दधनानि	दधनाव	दधनाम

लङ् लकार

अदधन्	अदधन्ताम्	अदधनुः
अदधन्	अदधन्तम्	अदधन्त
अदधनम्	अदधन्व	अदधन्म

विधिलिङ् लकार

दधन्यात्	दधन्याताम्	दधन्युः
दधन्याः	दधन्यातम्	दधन्यात
दधन्याम्	दधन्याव	दधन्याम

तुर् धातु - द्वित्वादि करके - तुतुर् - परस्मैपद

१. हलादि तथा अजादि पित् परे होने पर **पुगन्तलघूपधस्य च** सूत्र से उपधा के लघु इक् को गुण कीजिये - तुतुर् + ति - तुतोर्ति / तुतुर् + आनि - तुतोराणि।

२. हलादि अपित् प्रत्यय परे होने पर **हलि च** सूत्र से उपधा के लघु इक् को दीर्घ कीजिये। तुतुर् + तः - तुतूर्तः।

३. अजादि अपित् प्रत्यय परे होने पर **क्ङिति च** सूत्र से गुणनिषेध करके

अङ्ग को कुछ नहीं कीजिये - तुतुर् + अति - तुतुरति।

लट् लकार

तुतोर्ति	तुतूर्तः	तुतुरति
तुतोर्षि	तुतूर्थः	तुतूर्थ
तुतोर्मि	तुतूर्वः	तुतूर्मः

लोट् लकार

तुतोर्तु / तुतूर्तात्	तुतूर्ताम्	तुतुरतु
तुतूर्हि / तुतूर्तात्	तुतूर्तम्	तुतूर्त
तुतोराणि	तुतोराव	तुतोराम

लङ् लकार

अतुतोः	अतुतूर्ताम्	अतुतुरुः
अतुतोः	अतुतूर्तम्	अतुतूर्त
अतुतोरम्	अतुतूर्व	अतुतूर्म

विधिलिङ् लकार

तुतूर्यात्	तुतूर्याताम्	तुतूर्युः
तुतूर्याः	तुतूर्यातम्	तुतूर्यात
तुतूर्याम्	तुतूर्याव	तुतूर्याम

धिष् - द्वित्वादि करके - दिधिष् धातु - परस्मैपद

१. हलादि तथा अजादि पित् परे होने पर **पुगन्तलघूपधस्य च** सूत्र से उपधा के लघु इक् को गुण कीजिये। दिधिष् + ति - दिधेष् + ति = दिधेष्टि / दिधिष् + आनि = दिधेषाणि।

२. हलादि तथा अजादि अपित् प्रत्यय परे होने पर **क्ङिति च** सूत्र से गुण निषेध कीजिये। दिधिष् + तः = दिधिष्टः / दिधिष् + अति = दिधिषति।

लट् लकार

दिधेष्टि	दिधिष्टः	दिधिषति
दिधेक्षि	दिधिष्ठः	दिधिष्ठ
दिधेष्मि	दिधिष्वः	दिधिष्मः

लोट् लकार

दिधेष्टु / दिधिष्टात्	दिधिष्टाम्	दिधिषतु

दिधिड्ढि / दिधिष्टात्	दिधिष्टम्	दिधिष्ट
दिधेषाणि	दिधेषाव	दिधेषाम

दिधिड्ढि - दिधिष् + धि / ष्टुत्व, जश्त्व करके - दिधिड्ढि।

लङ् लकार

अदिधेट् / अदिधेड्	अदिधिष्टाम्	अदिधिषुः
अदिधेट् / अदिधेड्	अदिधिष्टम्	अदिधिष्ट
अदिधेषम्	अदिधिष्व	अदिधिष्म

विधिलिङ् लकार

दिधिष्यात्	दिधिष्याताम्	दिधिष्युः
दिधिष्याः	दिधिष्यातम्	दिधिष्यात
दिधिष्याम्	दिधिष्याव	दिधिष्याम

भस् धातु - द्वित्वादि करके - बभस् - परस्मैपद

हलादि पित् प्रत्यय परे होने पर - कुछ मत कीजिये - बभस् + ति - बभस्ति।
अजादि पित् प्रत्यय परे होने पर - कुछ मत कीजिये - बभस् + आनि - बभसानि।
हलादि अपित् प्रत्यय परे होने पर -

घसिभसोर्हलि च - सारे अपित् प्रत्यय परे होने पर भस् की उपधा के 'अ' का लोप होता है - बभस् + तः - बभ्स् + तः।

झलो झलि - झल् से परे आने वाले स् का लोप होता है, झल् परे होने पर। बभ्स् + तः - बभ् + तः / **झषस्तथोर्धोऽधः** सूत्र से प्रत्यय के त, थ को ध बनाकर - बभ् + तः - बभ् + धः। अब धातु के अन्त में बैठे हुए वर्ग के चतुर्थाक्षर को **झलां जश् झशि** सूत्र से उसी वर्ग का तृतीयाक्षर जश् बनाकर - बब् + धः = बब्धः।

अजादि अपित् प्रत्यय परे होने पर - बभस् + अति / घसिभसोर्हलि च से भस् की उपधा के 'अ' का लोप करके बभ्स् + अति / खरि च सूत्र से भ् को चर्त्व करके 'प्' बनाकर - बप्स् + अति - बप्सति।

लट् लकार

बभस्ति	बब्धः	बप्सति
बभस्सि	बब्धः	बब्ध
बभस्मि	बप्स्वः	बप्स्मः

लोट् लकार

बभस्तु / बब्धात्	बब्धाम्	बप्सतु
बब्धि / बब्धात्	बब्धम्	बब्ध
बभसानि	बभसाव	बभसाम

लङ् लकार

अबभः	अबब्धाम्	अबप्सुः
अबभः	अबब्धम्	अबब्ध
अबभसम्	अबप्स्व	अबप्स्म

विधिलिङ् लकार

बप्स्यात्	बप्स्याताम्	बप्स्युः
बप्स्याः	बप्स्यातम्	बप्स्यात
बप्स्याम्	बप्स्याव	बप्स्याम

जुहोत्यादि का निजादि अन्तर्गण - इस अन्तर्गण में तीन परस्मैपदी धातु आते हैं - णिजिर् - निज् - नेनिज् / विजिर् - विज् - वेविज् / विष्लृ - विष् - वेविष्।

१. हलादि पित् परे होने पर पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से इनकी उपधा के लघु इक् को गुण कीजिये। नेनिज् + ति = नेनेक्ति।

नाभ्यस्तस्याचि पिति सार्वधातुके - अजादि पित् परे होने पर इन निजादि धातुओं की उपधा को गुण नहीं होता। यथा - नेनिज् + आनि - नेनिजानि।

३. हलादि तथा अजादि अपित् प्रत्यय परे होने पर क्ङिति च सूत्र से गुण निषेध होता है - नेनिज् + तः = नेनिक्तः।

लट् लकार

नेनेक्ति	नेनिक्तः	नेनिजति
नेनेक्षि	नेनिक्थः	नेनिक्थ
नेनेज्मि	नेनिज्वः	नेनिज्मः

लोट् लकार

नेनेक्तु / नेनिक्तात्	नेनिक्ताम्	नेनिजतु
नेनिग्धि / नेनिक्तात्	नेनिक्तम्	नेनिक्त

नेनिजानि	नेनिजाव	नेनिजाम

लङ् लकार

अनेनेक्	अनेनिक्ताम्	अनेनिजुः
अनेनेक्	अनेनिक्तम्	अनेनिक्त
अनेनिजम्	अनेनिज्व	अनेनिज्म

विधिलिङ् लकार

नेनिज्यात्	नेनिज्याताम्	नेनिज्युः
नेनिज्याः	नेनिज्यातम्	नेनिज्यात
नेनिज्याम्	नेनिज्याव	नेनिज्याम

इसी प्रकार विज् धातु - द्वित्वादि करके - वेविज् के रूप बनाइये।

इसी प्रकार विष् धातु - द्वित्वादि करके - वेविष् -

लट् लकार

वेवेष्टि	वेविष्टः	वेविषति
वेवेक्षि	वेविष्ठः	वेविष्ठ
वेवेष्मि	वेविष्वः	वेविष्मः

लोट् लकार

वेवेष्टु / वेविष्टात्	वेविष्टाम्	वेविषतु
वेविड्ढि / वेविष्टात्	वेविष्टम्	वेविष्ट
वेविषाणि	वेविषाव	वेविषाम

लङ् लकार

अवेवेट् / अवेवेड्	अवेविष्टाम्	अवेविषुः
अवेवेट् / अवेवेड्	अवेविष्टम्	अवेविष्ट
अवेविषम्	अवेविष्व	अवेविष्म

विधिलिङ् लकार

वेविष्यात्	वेविष्याताम्	वेविष्युः
वेविष्याः	वेविष्यातम्	वेविष्यात
वेविष्याम्	वेविष्याव	वेविष्याम

यह जुहोत्यादिगण के हलन्त धातुओं के लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् लकारों के रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।

रुधादिगण के हलन्त धातुओं के लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् लकारों के रूप बनाने की विधि

रुधादिभ्यः श्नम् - धातुपाठ में से १४३८ से १४६२ तक रुधादिगण के धातु हैं। लट्, लोट्, लङ् तथा विधिलिङ् लकार के कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर तथा सार्वधातुक कृत् प्रत्यय परे होने पर रुधादिगण के इन धातुओं से श्नम् विकरण लगाना चाहिये।

श्नम् में लशक्वतद्धिते सूत्र से श् की, तथा हलन्त्यम् सूत्र से म् की इत् संज्ञा होकर 'न' शेष बचता है। ध्यान रहे कि म् की इत् संज्ञा होने से यह श्नम् विकरण मित् है।

मिदचोऽन्यात् परः - मित् प्रत्यय जिससे भी लगता है, उसके अन्तिम अच् के बाद ही वह बैठता है। यथा - रुध् - रुनध् / भिद् - भिनद् / कृत् - कृनत् / तृद् - तृनद् / खिद् - खिनद् / तृह् - तृनह् आदि।

श्नान्नलोपः - श्नम् के बाद आने वाले 'न्' का लोप होता है। यथा - इन्ध् - श्नम् लगाकर - इनन्ध् / श्नम् के बाद आने वाले 'न्' का लोप करके - इनध्।

इसी प्रकार - तृन्ह् - तृनन्ह् - तृनह् आदि बनाइये।

श्नसोरल्लोपः - श्नम् के 'अ' का लोप होता है, अपित् अर्थात् ङित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर। यथा - रुनध् - रुन्ध् / भिनद् - भिन्द् / कृनत् - कृन्त् / क्षुनद् - क्षुन्द् / तृनह् - तृंह् आदि।

अब ध्यान दें कि जहाँ पूरा 'न' दिख रहा है, वहाँ अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि सूत्र से णत्व करके - रुनध्, क्षुनद्, रिनच्, तृनद्, कृनद्, तृनह् आदि के 'न' को 'ण' बनाइये - रुणध्, क्षुणद्, रिणच्, तृणद्, कृणद्, तृणह् आदि।

जहाँ पूरा 'न' नहीं दिख रहा है, वहाँ णत्व मत कीजिये। णत्व विधि विस्तार से १९५ पृष्ठ पर देखिये।

हमने जाना कि रुधादिगण में सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये दो दो प्रकार के अङ्ग बनते हैं। ये हम बनाकर दे रहे हैं -

इनमें से जो पहला है, जिसमें श्नम् प्रत्यय पूरा दिख रहा है, अर्थात् रुणध् आदि, उसमें आप पित् सार्वधातुक प्रत्यय लगाइये और जिसमें श्नम् के 'अ' का लोप हो गया है, अर्थात् रुन्ध् आदि, उसमें आप अपित् सार्वधातुक प्रत्यय अर्थात् ङित् सार्वधातुक प्रत्यय लगाइये।

रुधादिगण के धातुओं में श्नम् विकरण लगाकर सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये दो दो प्रकार के अङ्ग इस प्रकार बनते हैं -

धातु	पित् सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग	अपित् सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग	पद
विच्	विनच्	विंच्	उभयपद
रिच्	रिणच्	रिंच्	उभयपद
तन्च्	तनच्	तंच्	परस्मैपद
पृच्	पृणच्	पृंच्	परस्मैपद
युज्	युनज्	युंज्	उभयपद
भन्ज्	भनज्	भंज्	परस्मैपद
भुज्	भुनज्	भुंज्	उभयपद
अन्ज्	अनज्	अंज्	परस्मैपद
विज्	विनज्	विंज्	परस्मैपद
वृज्	वृणज्	वृंज्	परस्मैपद
कृत्	कृणत्	कृंत्	परस्मैपद
भिद्	भिनद्	भिंद्	उभयपद
छिद्	छिनद्	छिंद्	उभयपद
क्षुद्	क्षुणद्	क्षुंद्	उभयपद
छृद्	छृणद्	छृंद्	उभयपद
तृद्	तृणद्	तृंद्	उभयपद
खिद्	खिनद्	खिंद्	आत्मनेपद
विद्	विनद्	विंद्	आत्मनेपद
उन्द्	उनद्	उंद्	परस्मैपद
रुध्	रुणध्	रुंध्	उभयपद
इन्ध्	इनध्	इंध्	आत्मनेपद
शिष्	शिनष्	शिंष्	परस्मैपद
पिष्	पिनष्	पिंष्	परस्मैपद
हिंस्	हिनस्	हिंस्	परस्मैपद
तृह	तृणह	तृंह्	परस्मैपद

अब हम बहुत सावधानी से इनके रूप बनायें -

जैसे - हमने विच् धातु से श्नम् लगाकर विनच् बनाया है / सारे पित् सार्वधातुक प्रत्यय इस 'विनच्' से ही लगाइये। हमने श्नसोरल्लोपः से 'अ' का लोप करके विंच् बनाया है। सारे अपित् सार्वधातुक प्रत्यय इस विंच् से ही लगाइये। रुधादिगण

के सभी धातुओं में यह ध्यान रखिये।

अब रुधादिगण के इन धातुओं में केवल सन्धियाँ कीजिये -

चकारान्त विच् धातु -

लट् लकार

विनक्ति विङ्क्तः विञ्चन्ति विङ्क्ते विञ्चाते विञ्चते
विनक्षि विङ्क्थः विङ्क्थ विङ्क्षे विञ्चाथे विङ्ग्ध्वे
विनच्मि विञ्च्वः विञ्च्मः विञ्चे विञ्च्वहे विञ्च्महे

लोट् लकार

विनक्तु विङ्क्ताम् विञ्चन्तु विङ्क्ताम् विञ्चाताम् विञ्चताम्
विङ्क्तात्
विङ्ग्धि विङ्क्तम् विङ्क्त विङ्क्ष्व विञ्चाथाम् विङ्ग्ध्वम्
विङ्क्तात्
विनचानि विनचाव विनचाम विनचै विनचावहै विनचामहै

विङ्ग्धि - विंच् + हि / हुझल्भ्यो हेर्धिः से 'हि' प्रत्यय को 'धि' करके - विंच् + धि / चोः कु से कुत्व करके विंक् + धि / 'क्' को झलां जश् झशि सूत्र से जश्त्व करके विंग् + धि / अनुस्वार को, अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः सूत्र से परसवर्ण करके विङ्ग्धि। इसी प्रकार विङ्ग्ध्वम्।

लङ् लकार

अविनक् - अविनच् + त् / हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से त् का लोप होकर अविनच् / चोः कुः से च् को क् होकर अविनक् / झलां जशोऽन्ते से जश्त्व होकर - अविनग् / वाऽवसाने से विकल्प से चर्त्व होकर अविनक्।

अविनग् अविङ्क्ताम् अविञ्चन् अविङ्क्त अविञ्चाताम् अविञ्चत
अविनक्
अविनग् अविङ्क्तम् अविङ्क्त अविङ्क्थाः अविञ्चाथाम् अविङ्ग्ध्वम्
अविनक्
अविनचम् अविञ्च्व अविञ्च्म अविञ्चि अविञ्च्वहि अविञ्च्महि

विधिलिङ् लकार

विञ्च्यात् विञ्च्याताम् विञ्च्युः विञ्चीत विञ्चीयाताम् विञ्चीरन्
विञ्च्याः विञ्च्यातम् विञ्च्यात विञ्चीथाः विञ्चीयाथाम् विञ्चीध्वम्
विञ्च्याम् विञ्च्याव विञ्च्याम विञ्चीय विञ्चीवहि विञ्चीमहि

इसी प्रकार रिच् - रिणच् - रिंच् के रूप बनाइये।

लट् लकार

रिणक्ति रिङ्क्तः रिञ्चन्ति रिङ्क्ते रिञ्चाते रिञ्चते
रिणक्षि रिङ्क्थः रिङ्क्थ रिङ्क्षे रिञ्चाथे रिङ्ग्ध्वे
रिणच्मि रिञ्च्वः रिञ्च्मः रिञ्चे रिञ्च्महे रिञ्च्महे

लोट् लकार

रिणक्तु रिङ्क्ताम् रिञ्चन्तु रिङ्क्ताम् रिञ्चाताम् रिञ्चताम्
रिङ्क्तात्
रिङ्ग्धि रिङ्क्तम् रिङ्क्त रिङ्क्ष्व रिञ्चाथाम् रिङ्ग्ध्वम्
रिङ्क्तात्
रिणचानि रिणचाव रिणचाम रिणचै रिणचावहै रिणचामहै

लङ् लकार

अरिणग् अरिङ्क्ताम् अरिञ्चन् अरिङ्क्त अरिञ्चाताम् अरिञ्चत
अरिणक्
अरिणग् अरिङ्क्तम् अरिङ्क्त अरिङ्क्थाः अरिञ्चाथाम् अरिङ्ग्ध्वम्
अरिणक्
अरिणचम् अरिञ्च्व अरिञ्च्म अरिञ्चि अरिञ्च्वहि अरिञ्च्महि

विधिलिङ् लकार

रिञ्च्यात् रिञ्च्याताम् रिञ्च्युः रिञ्चीत रिञ्चीयाताम् रिञ्चीरन्
रिञ्च्याः रिञ्च्यातम् रिञ्च्यात रिञ्चीथाः रिञ्चीयाथाम् रिञ्चीध्वम्
रिञ्च्याम् रिञ्च्याव रिञ्च्याम रिञ्चीय रिञ्चीवहि रिञ्चीमहि

इसी प्रकार तञ्चु - तनच् - तंच् के रूप बनाइये।

जकारान्त युज् धातु - उभयपद - पित् प्रत्यय युनज् से लगाइये / अपित् प्रत्यय युञ्ज् से लगाइये।

लट् लकार

युनक्ति युङ्क्तः युञ्जन्ति युङ्क्ते युञ्जाते युञ्जते
युनक्षि युङ्क्थः युङ्क्थ युङ्क्षे युञ्जाथे युङ्ग्ध्वे
युनज्मि युञ्ज्वः युञ्ज्मः युञ्जे युञ्ज्महे युञ्ज्महे

लोट् लकार

युनक्तु युङ्क्ताम् युञ्जन्तु युङ्क्ताम् युञ्जाताम् युञ्जताम्
युङ्क्तात्
युङ्ग्धि युङ्क्तम् युङ्क्त युङ्क्ष्व युञ्जाथाम् युङ्ग्ध्वम्

युङ्तात्					
युनजानि	युनजाव	युनजाम	युनजै	युनजावहै	युनजामहै

लङ् लकार

अयुनग् अयुनक्	अयुङ्क्ताम्	अयुञ्जन्	अयुङ्क्त	अयुञ्जाताम्	अयुञ्जत
अयुनग् अयुनक्	अयुङ्क्तम्	अयुङ्क्त	अयुङ्थाः	अयुञ्जाथाम्	अयुङ्ग्ध्वम्
अयुनजम्	अयुञ्ज्व	अयुञ्ज्म	अयुञ्जि	अयुञ्ज्वहि	अयुञ्ज्महि

विधिलिङ् लकार

युञ्ज्यात्	युञ्ज्याताम्	युञ्ज्युः	युञ्जीत	युञ्जीयाताम्	युञ्जीरन्
युञ्ज्याः	युञ्ज्यातम्	युञ्ज्यात	युञ्जीथाः	युञ्जीयाथाम्	युञ्जीध्वम्
युञ्ज्याम्	युञ्ज्याव	युञ्ज्याम	युञ्जीय	युञ्जीवहि	युञ्जीमहि

इसी प्रकार –

भुञ्ज् - भुनज् - भुंज् से - भुनक्ति भुङ्क्तः भुञ्जन्ति
भज् - भनज् - भंज् से - भनक्ति भङ्क्तः भञ्जन्ति
अञ्ज् - अनज् - अंज् से - अनक्ति अङ्क्तः अञ्जन्ति
विज् - विनज् - विंज् से - विनक्ति विङ्क्तः विञ्जन्ति
वृज् - वृणज् - वृंज् से - वृणक्ति वृङ्क्तः वृञ्जन्ति ।

तकारान्त कृत् धातु – उभयपद

पित् प्रत्यय कृणत् से लगाइये / अपित् प्रत्यय कृन्त् से लगाइये।

लट् लकार

कृणत्ति	कृन्त्तः	कृन्तन्ति	कृन्त्ते	कृन्ताते	कृन्तते
कृणत्सि	कृन्त्थः	कृन्त्थ	कृन्त्से	कृन्ताथे	कृन्द्ध्वे
कृणत्मि	कृन्त्वः	कृन्त्मः	कृन्ते	कृन्त्वहे	कृन्त्महे

लोट् लकार

कृणत्तु कृन्तात्	कृन्त्ताम्	कृन्तन्तु	कृन्त्ताम्	कृन्ताताम्	कृन्तताम्
कृन्धि, कृन्तात्	कृन्त्तम्	कृन्त्त	कृन्त्स्व	कृन्ताथाम्	कृन्ध्वम्
कृणतानि	कृणताव	कृणताम	कृणतै	कृणतावहै	कृणतामहै

लङ् लकार

अकृणत्	अकृन्ताम्	अकृन्तन्	अकृन्त	अकृन्ताताम्	अकृन्तत
अकृणत्	अकृन्तम्	अकृन्त	अकृन्थाः	अकृन्ताथाम्	अकृन्ध्वम्
अकृणतम्	अकृन्त्व	अकृन्त्म	अकृन्ति	अकृन्त्वहि	अकृन्त्महि

विधिलिङ् लकार

कृन्त्यात्	कृन्त्याताम्	कृन्त्युः	कृन्तीत	कृन्तीयाताम्	कृन्तीरन्
कृन्त्याः	कृन्त्यातम्	कृन्त्यात	कृन्तीथाः	कृन्तीयाथाम्	कृन्तीध्वम्
कृन्त्याम्	कृन्त्याव	कृन्त्याम	कृन्तीय	कृन्तीवहि	कृन्तीमहि

दकारान्त छिद् धातु - उभयपद

पित् प्रत्यय छिनद् से लगाइये / अपित् प्रत्यय छिंद् से लगाइये।

परस्मैपद **आत्मनेपद**

लट् लकार

छिनत्ति	छिन्तः	छिन्दन्ति	छिन्ते	छिन्दाते	छिन्दते
छिनत्सि	छिन्थः	छिन्थ	छिन्त्से	छिन्दाथे	छिन्ध्वे
छिनद्मि	छिन्द्वः	छिन्द्मः	छिन्दे	छिन्द्वहे	छिन्द्महे

लोट् लकार

छिनत्तु छिन्तात्	छिन्ताम्	छिन्दन्तु	छिन्ताम्	छिन्दाताम्	छिन्दताम्
छिन्धि छिन्तात्	छिन्तम्	छिन्त	छिनत्स्व	छिन्दाथाम्	छिन्ध्वम्
छिनदानि	छिनदाव	छिनदाम	छिनदै	छिनदावहै	छिनदामहै

छिन्द् + ध्वम् = छिन्ध्वम्, में झरो झरि सवर्णे से द् का लोप हुआ है।

लङ् लकार

ध्यान रहे कि लङ् लकार में 'अ' के बाद 'छ' आने पर छे च सूत्र से तुक् = त् का आगम होता है, जैसे - अछिनत् = अच्छिनत् आदि।

यह आगम केवल 'छ' को होता है, अतः अन्य धातुओं में यह आगम न करें।

अच्छिनत्	अच्छिन्ताम्	अच्छिन्दन्	अच्छिन्त	अच्छिन्दाताम्	अच्छिन्दत
अच्छिनत्	अच्छिन्तम्	अच्छिन्त	अच्छिन्थाः	अच्छिन्दाथाम्	अच्छिन्ध्वम्
अच्छिनदम्	अच्छिन्द्व	अच्छिन्द्म	अच्छिन्दि	अच्छिन्द्वहि	अच्छिन्द्महि

विधिलिङ् लकार

छिन्द्यात्	छिन्द्याताम्	छिन्द्युः	छिन्दीत	छिन्दीयाताम्	छिन्दीरन्

छिन्द्याः	छिन्द्यातम्	छिन्द्यात	छिन्दीथाः	छिन्दीयाथाम्	छिन्दीध्वम्
छिन्द्याम्	छिन्द्याव	छिन्द्याम	छिन्दीय	छिन्दीवहि	छिन्दीमहि

इसी प्रकार -

भिद् - भिनद् - भिंद् से - भिनत्ति / भिन्ते
क्षुद् - क्षुणद् - क्षुंद् से - क्षुणत्ति / क्षुन्ते
छृद् - छृणद् - छृंद् से - छृणत्ति / छृन्ते
तृद् - तृणद् - तृंद् से - तृणत्ति / तृन्ते
उन्द् - उनद् - उंद् से - उनत्ति / -
खिद् - खिनद् - खिंद् से - - / खिन्ते
विद् - विनद् - विंद् से - - / विन्ते बनाइये।

धकारान्त रुध् धातु - उभयपद - पित् प्रत्यय रुणध् से लगाइये / अपित् प्रत्यय रुंध् से लगाइये। सन्धियों को सावधानी से पढ़कर सन्धि कीजिये।

लट् लकार

रुणद्धि	रुन्धः	रुन्धन्ति	रुन्धे	रुन्धाते	रुन्धते
रुणत्सि	रुन्धः	रुन्ध	रुन्त्से	रुन्धाथे	रुन्ध्वे
रुणध्मि	रुन्ध्वः	रुन्ध्मः	रुन्धे	रुन्ध्वहे	रुन्ध्महे

लोट् लकार

रुणद्धु रुन्धात्	रुन्धाम्	रुन्धन्तु	रुन्धाम्	रुन्धाताम्	रुन्धताम्
रुन्धि रुन्धात्	रुन्धम्	रुन्ध	रुन्त्स्व	रुन्धाथाम्	रुन्ध्वम्
रुणधानि	रुणधाव	रुणधाम	रुणधै	रुणधावहै	रुणधामहै

लङ् लकार

अरुणद् अरुणत्	अरुन्धाम्	अरुन्धन्	अरुन्द्ध	अरुन्धाताम्	अरुन्धत
अरुणद् अरुणत्	अरुन्धम्	अरुन्ध	अरुन्द्धाः	अरुन्धाथाम्	अरुन्ध्वम्
अरुणधम्	अरुन्ध्व	अरुन्ध्म	अरुन्धि	अरुन्ध्वहि	अरुन्ध्महि

विधिलिङ् लकार

रुन्ध्यात्	रुन्ध्याताम्	रुन्ध्युः	रुन्धीत	रुन्धीयाताम्	रुन्धीरन्
रुन्ध्याः	रुन्ध्यातम्	रुन्ध्यात	रुन्धीथाः	रुन्धीयाथाम्	रुन्धीध्वम्

रुन्ध्याम्	रुन्ध्याव	रुन्ध्याम	रुन्धीय	रुन्धीवहि	रुन्धीमहि

इसी प्रकार धकारान्त इन्ध् - इनध् - इंध् धातु के रूप बनाइये।

शिष् धातु - परस्मैपद -

पित् प्रत्यय शिनष् से लगाइये / अपित् प्रत्यय शिंष् से लगाइये।

लट् लकार

शिनष्टि	शिंष्टः	शिंषन्ति
शिनक्षि	शिंष्ठः	शिंष्ठ
शिनष्मि	शिंष्वः	शिंष्मः

लोट् लकार

शिनष्टु / शिंष्टात्	शिंष्टाम्	शिंषन्तु
शिण्ड्ढ / शिंष्टात्	शिंष्टम्	शिंष्ट
शिनषाणि	शिनषाव	शिनषाम

लङ् लकार

अशिनट् / अशिनड्	अशिंष्टाम्	अशिंषन्
अशिनट् / अशिनड्	अशिंष्टम्	अशिंष्ट
अशिनषम्	अशिंष्व	अशिंष्म

विधिलिङ् लकार

शिंष्यात्	शिंष्याताम्	शिंष्युः
शिंष्याः	शिंष्यातम्	शिंष्यात
शिंष्याम्	शिंष्याव	शिंष्याम

पिंष् धातु - परस्मैपद -

पित् प्रत्यय पिनष् से लगाइये / अपित् प्रत्यय पिंष् से लगाइये। सन्धियों को सावधानी से पढ़कर सन्धि कीजिये।

लट् लकार

पिनष्टि / पिंष्टात्	पिंष्टः	पिंषन्ति
पिनक्षि / पिंष्टात्	पिंष्ठः	पिंष्ठ
पिनष्मि	पिंष्वः	पिंष्मः

लोट् लकार

पिनष्टु	पिंष्टाम्	पिंषन्तु
पिण्ड्ढ	पिंष्टम्	पिंष्ट
पिनषाणि	पिनषाव	पिनषाम

लङ् लकार

अपिनट् / अपिनड्	अपिंष्टाम्	अपिंषन्
अपिनट् / अपिनड्	अपिंष्टम्	अपिंष्ट
अपिनषम्	अपिंष्व	अपिंष्म

विधिलिङ् लकार

पिंष्यात्	पिंष्याताम्	पिंष्यु:
पिंष्या:	पिंष्यातम्	पिंष्यात
पिंष्याम्	पिंष्याव	पिंष्याम

हिंस् धातु - परस्मैपद - पित् प्रत्यय हिनस् से लगाइये / अपित् प्रत्यय हिंस् से लगाइये। सन्धियों को सावधानी से पढ़कर सन्धि कीजिये।

लट् लकार

हिनस्ति	हिंस्त:	हिंसन्ति
हिनस्सि	हिंस्थ:	हिंस्थ
हिनस्मि	हिंस्व:	हिंस्म:

लोट् लकार

हिनस्तु / हिंस्तात्	हिंस्ताम्	हिंसन्तु
हिन्धि / हिंस्तात्	हिंस्तम्	हिंस्त
हिनसानि	हिनसाव	हिनसाम

लङ् लकार

अहिनत्	अहिंस्ताम्	अहिंसन्
अहिन:	अहिंस्तम्	अहिंस्त
अहिनसम्	अहिंस्व	अहिंस्म

विधिलिङ् लकार

हिंस्यात्	हिंस्याताम्	हिंस्यु:
हिंस्या:	हिंस्यातम्	हिंस्यात
हिंस्याम्	हिंस्याव	हिंस्याम

तृह् धातु - परस्मैपद - पित् प्रत्यय तृणह् से लगाइये / अपित् प्रत्यय तृंह् से लगाइये।

तृणह इम् - 'तृणह्' इस अङ्ग को हलादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर अर्थात् ति, सि, मि, त्, स्, तु प्रत्यय परे होने पर, 'इम्' का आगम होता है।

मित् आगम होने से यह 'इम्' मिदचोऽन्त्यात्पर: सूत्र से अन्तिम अच् के बाद

ही बैठेगा। तृण + इम् + ह् / तृण + इ + ह् / आद्गुण: से गुण करके - तृणेह्।

तृणेह् + ति / 'ह्' को 'हो ढः' सूत्र से 'ढ्' बनाइये - तृणेढ् + ति / प्रत्यय के 'त' को **झषस्तथोर्धोऽधः** सूत्र से 'ध' करके - तृणेढ् + धि / ष्टुना ष्टुः सूत्र से प्रत्यय के 'ध्' को ष्टुत्व करके - तृणेढ् + ढि / 'ढो ढे लोपः' से पूर्व ढकार का लोप करके - तृणे + ढि = तृणेढि।

तृणेह् + सि / 'ह्' को हो ढः सूत्र से 'ढ्' बनाकर लेढ् + सि / षढोः कः सि सूत्र से ढ् को क् करके - तृणेक् + सि / आदेशप्रत्यययोः सूत्र से प्रत्यय को षत्व करके - तृणेक् + षि = लेक्षि।

लट् लकार

तृणेढि	तृण्ढः	तृंहन्ति
तृणेक्षि	तृण्ढः	तृण्ढ
तृणेह्मि	तृंह्वः	तृंह्मः

लोट् लकार

तृणेढु / तृण्ढात्	तृण्ढाम्	तृण्ढन्तु
तृण्ड्ढि / तृण्ढात्	तृण्ढम्	तृण्ढ
तृणहानि	तृणहाव	तृणहाम

लङ् लकार

अतृणेट् / अतृणेड्	अतृण्ढाम्	अतृंहन्
अतृणेट् / अतृणेड्	अतृण्ढम्	अतृण्ढ
अतृणहम्	अतृंह्व	अतृंह्म

विधिलिङ् लकार

तृंह्यात्	तृंह्याताम्	तृंह्युः
तृंह्याः	तृंह्यातम्	तृंह्यात
तृंह्याम्	तृंह्याव	तृंह्याम

यह रुधादिगण के हलन्त धातुओं के लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् लकारों के रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई। इसके साथ ही समस्त गणों के समस्त धातुओं के समस्त सार्वधातुक लकारों के रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई।

अष्टम पाठ

समस्त धातुओं के सार्वधातुक लेट् लकार बनाने की विधि

लिङर्थे लेट् - लिङ् के जो विधि, निमन्त्रण, आमन्त्रण, अधीष्ट, संप्रश्न, प्रार्थना आदि अर्थ हैं, उन्हीं अर्थों में वेद में, धातु से विकल्प से लेट् प्रत्यय होता है। ये अर्थ इस प्रकार हैं -

विधि - अपने से छोटे किसी व्यक्ति को काम से लगाना।

निमन्त्रण - श्राद्ध आदि में दौहित्र (नाती) आदि को भोजन के लिए बुलाना।

आमन्त्रण - जहाँ कार्य को करना या न करना, करने वाले की इच्छा पर छोड़ दिया जाये, उस कामाचारानुज्ञा को आमन्त्रण कहते है।

अधीष्ट - सत्कार पूर्वक व्यापार को अधीष्ट कहते हैं।

संप्रश्न - इस प्रकार का काम करें या न करें, ऐसे विचार को संप्रश्न कहते हैं।

प्रार्थन - याच्ञा (माँगने) को प्रार्थन कहते हैं।

वस्तुतः जब भी किसी को, किसी काम में लगाया जाये तो उसे प्रवर्तना कहते हैं। ये विधि आदि सब प्रवर्तना के ही भेद हैं। अतः प्रवर्तना अर्थ में लिङ् लकार होता है, यह समझना चाहिये। इसी अर्थ में लेट् लकार भी होता है।

उपसंवादाशङ्कयोश्च - उपसंवाद तथा आशंका अर्थ गम्यमान होने पर धातु से विकल्प से लेट् प्रत्यय होता है। तू ऐसा करे तो मैं भी ऐसा करूं (निहारञ्च हरासि मे निहारं निहराणि ते स्वाहा) ऐसे परस्पर व्यवहार को उपसंवाद कहा जाता है। आशंका का उदाहरण इस प्रकार है -

कुटिल आचरण करते हुए कहीं हम नरक में न जा गिरें (नेज्जिह्मायन्तो नरकं पताम)।

लेट् लकार दो प्रकार का होता है। **सार्वधातुक लेट्** तथा **आर्धधातुक लेट्**।

लेट् लकार के प्रत्यय, लट् लकार के प्रत्ययों से ही बनते हैं। इन्हें बनाने की विधि बतला रहे हैं।

लट् लकार के प्रत्यय

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	ति	तः	अन्ति	ते	इते	अन्ते
म. पु.	सि	थः	थ	से	इथे	ध्वे
उ. पु.	मि	वः	मः	ए	वहे	महे

लेटोऽडाटौ - लट् लकार के इन प्रत्ययों में, 'अट्' अथवा 'आट्' का आगम करके लेट् लकार के प्रत्यय बनते हैं।

अतः लट् लकार के इन प्रत्ययों में 'अट्' लगा दीजिये, तो ये प्रत्यय अभी इस प्रकार बन जायेंगे -

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अति	अतः	अन्ति	अते	एते	अन्ते
म. पु.	असि	अथः	अथ	असे	एथे	अध्वे
उ. पु.	अमि	अवः	अमः	ए	अवहे	अमहे

आत ऐ - इनमें से एते, एथे प्रत्ययों के आदि में स्थित 'ए' को 'ऐ' होता है। यथा - एते - ऐते / एथे - ऐथे।

अब प्रत्यय के अन्त में स्थित 'ए' का विचार करें -

वैतोऽन्यत्र - ऐते, ऐथे के अलावा जिन भी प्रत्ययों के अन्त में ए दिख रहा हो, उस ए को विकल्प से ऐ होता है। जैसे - अते - अतै / अन्ते, अन्तै / असे, असै / अध्वे, अध्वै / ए, ऐ / अवहे, अवहै / अमहे, अमहै।

इतश्च लोपः परस्मैपदेषु - लेट् लकार के परस्मैपदी प्रत्ययों के अन्त में आने वाले 'इ' का विकल्प से लोप होता है। अतः अति, असि, अमि, अन्ति प्रत्ययों के अन्तिम इ का विकल्प से लोप कीजिये। यथा - अति - अत् / अन्ति - अन् / असि - अस् / अमि - अम्।

वाऽवसाने - अन्त के त् को विकल्प से चर्त्व करके द् होता है। यथा - अत् - अद् आदि।

स उत्तमस्य - उत्तम पुरुष के जो अवः, अमः प्रत्यय हैं, उनके विसर्ग का विकल्प से लोप कर होता है। अवः - अव / अमः - अम।

देखिये कि अब लट् लकार के प्रत्ययों में, अट् का आगम करके, लेट् लकार के ३२ प्रत्यय इस प्रकार बने हैं -

अट् लगाकर बने हुए लेट् लकार के सार्वधातुक प्रत्यय

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अति	अतः	अन्ति	अते	ऐते	अन्ते
	अत्	-	अन्	अतै	-	अन्तै
	अद्					
म. पु.	असि	अथः	अथ	असे	ऐथे	अध्वे
	अः	-	-	असै	-	अध्वै
उ. पु.	अमि	अवः	अमः	ए	अवहे	अमहे
	अम्	अव	अम	ऐ	अवहै	अमहै

लेट् लकार के ये सारे ३२ प्रत्यय, अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय हैं। इन्हें याद कर लीजिये।

अब हम 'आट्' का आगम करके सार्वधातुक प्रत्यय बनायें।. 'अट्' से बने हुए इन्हीं प्रत्ययों के आदि के 'अट्' को हटाकर, उसके स्थान पर 'आट्' = 'आ' लगा दीजिये, तो ये ही प्रत्यय इस प्रकार बन जाते हैं -

आट् लगाकर बने हुए लेट् लकार के सार्वधातुक प्रत्यय

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
प्र. पु.	आति	आतः	आन्ति	आते	ऐते	आन्ते
	आत्	-	आन्	आतै	-	आन्तै
	आद्	-				
म. पु.	आसि	आथः	आथ	आसे	ऐथे	आध्वे
	आः	-	-	आसै	-	आध्वै
उ. पु.	आमि	आवः	आमः	ए	आवहे	आमहे
	आम्	आव	आम	ऐ	आवहै	आमहै

लेट् लकार के ये सारे ३२ प्रत्यय भी अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय

हैं। इन्हें याद कर लीजिये।

'अट्' 'आट्' का आगम, करके बने हुए ये प्रत्यय सार्वधातुक प्रत्यय हैं। 'आडुत्तमस्य पिच्च' सूत्र से 'पित्' की अनुवृत्ति आने के कारण ये 'अट्' 'आट्' पित् हैं। इसलिये ये सारे प्रत्यय अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय हैं, यह जानिये।

जब हम इन्हीं प्रत्ययों में 'सिप्' लगा देते हैं तब 'सिप्' के आर्धधातुक होने के कारण, सिप् से बने हुए सारे प्रत्यय आर्धधातुक हो जाते हैं। सिप्' से बने हुए आर्धधातुक प्रत्यय, हम आर्धधातुक खण्ड में बतलायेंगे।

इस सार्वधातुक खण्ड में हम 'अट्' 'आट्' का आगम करके बने हुए लेट् लकार के इन सार्वधातुक प्रत्ययों को लगाकर रूप बनाना सीखेंगे।

हम जानते हैं कि तिङ् अथवा कृत् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, धातु + प्रत्यय के बीच में उस गण का विकरण अवश्य बैठता है, जिस गण का वह धातु होता है।

चूँकि लेट् लकार के ये ६४ प्रत्यय **सार्वधातुक तिङ् प्रत्यय** हैं, अतः इनके लगने पर, धातु + प्रत्यय के बीच में उस गण का विकरण अवश्य बैठना चाहिये, जिस गण का वह धातु हो।

परन्तु यहाँ यह सावधानी रखना चाहिये कि जैसे हम, लोक में व्यवहार को देखकर, अनन्त शब्दराशि बनाने के लिये स्वतन्त्र हैं, वैसी स्वतन्त्रता वेद में नहीं है, क्योंकि वेद में हम एक भी शब्द घटा या बढ़ा सकने के लिये स्वतन्त्र नहीं है। वहाँ तो जो शब्द हमें जैसे भी मिलते हैं, उन्हें उसी ही रूप में हमें निष्पन्न करना पड़ता है।

'छन्दसि दृष्टानुविधिः' का यही अभिप्राय है कि वेद में जो भी शब्द जैसा भी दिखे, उसे वैसा ही बनाइये।

हमने लेट् लकार के सारे प्रत्यय दिये हैं, किन्तु हमें यह अधिकार नहीं है कि लेट् लकार के इन सारे प्रत्ययों से हम लेट् लकार के सारे रूप बना डालें।

पाणिनीय प्रक्रिया हमारे पास है। हम वेद में लेट् लकार का जो भी प्रयोग पायें, इस पाणिनीय प्रक्रिया से उसे निष्पन्न कर लें।

इसके लिये हमें छन्दस्युभयथा / व्यत्ययो बहुलम् / तथा षष्ठीयुक्त श्छन्दसि वा सूत्रों का आश्रय लेना चाहिये।

इनकी चर्चा पृष्ठ ४१७ - ४१८ पर अभी की गई है।

अत: लोक में हम शास्त्र को देखकर शब्द बनायें और वेद में जो शब्द दिखे, उस शब्द को देखकर ही शास्त्र का उपयोग करें।

पाणिनीय प्रक्रिया से वैदिक शब्दों को सिद्ध कर सकने का यही विज्ञान है।

अब हम एक एक गण के धातुओं को लेकर, उनके सार्वधातुक लेट् लकार के रूप बनायें। हम जानते हैं कि तिङ् अथवा कृत् सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, धातु + प्रत्यय के बीच में उस गण का विकरण अवश्य बैठता है।

किन्तु इन धातु + विकरण + प्रत्यय, को जोड़ने का कार्य दो सोपानों में किया जाता है।

१. पहिले हम धातु + विकरण को जोड़ते हैं।

२. उसके बाद धातु + विकरण को जोड़कर जो भी बनता है, उसी में ये लेट् लकार के सार्वधातुक प्रत्यय लगाते हैं।

पहिले हम धातु + विकरण को जोडें -

धातु + विकरण को जोड़ने की विधि

अभी हमने धातुओं के लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लकारों के रूप बनाने के लिये, धातुओं में तत् तत् गणों के विकरणों को सूत्र सहित जोड़ना सीखा है। अत: उसे वहीं देखना उचित है।

उसे पढ़कर, धातुओं में ठीक उसी विधि से विकरणों को जोड़ लीजिये। इस ग्रन्थ में धातुओं में विकरणों को जोड़ने की विधि इन पृष्ठों में है -

		पृष्ठ संख्या
भ्वादिगण के धातुओं में विकरण लगाने की विधि	-	२३७ - २४६
चुरादिगण के धातुओं में विकरण लगाने की विधि	-	२५६ - २६३
दिवादिगण के धातुओं में विकरण लगाने की विधि	-	२६४ - २६८
तुदादिगण के धातुओं में विकरण लगाने की विधि	-	२६९ - २७३
क्र्यादिगण के धातुओं में विकरण लगाने की विधि	-	२७८ - २८२
स्वादिगण के धातुओं में विकरण लगाने की विधि	-	२८७ - २८७
तनादिगण के धातुओं में विकरण लगाने की विधि	-	२९९ - ३००
अदादिगण के धातुओं में विकरण लगाने की विधि	-	३०३ - ३०३

धातुपाठ के पञ्चम स्तम्भ में, हमने धातुओं में विकरण जोड़कर, उनके बने बनाये रूप भी दे दिये हैं। उन्हे वहाँ भी देखा जा सकता है।

अब धातु + विकरण को जोड़कर जो भी बना है, उसी में ये लेट् लकार के अजादि पित् सार्वधातुक सार्वधातुक प्रत्यय लगाना है।

अजादि पित् सार्वधातुक सार्वधातुक प्रत्ययों को जोड़ने की विधि संक्षिप्त अङ्गकार्य के पाठ में दी है। उसे देखिये। यहाँ पुनः सूत्रमात्र बतला रहे हैं।

भ्वादि, दिवादि, तुदादि तथा चुरादिगण के धातुओं के सार्वधातुक लेट् लकार बनाने की विधि

ध्यान दीजिये कि भ्वादि, दिवादि, तुदादि तथा चुरादिगण के धातुओं में विकरण जोड़कर जो भी बना है, इन सब के अन्त में ह्रस्व 'अ' है किन्तु ध्यान रहे कि यह अन्तिम 'अ' अपदान्त 'अ' है।

अपदान्त 'अ' से लेट् लकार के ह्रस्व 'अ' से प्रारम्भ होने वाले प्रत्यय परे होने पर -

अतो गुणे - अपदान्त अत् से गुण परे होने पर, अर्थात् अ, ए, ओ परे होने पर, पूर्वपर के स्थान पर पररूप एकादेश होता है। जैसे - हमने भू + शप् से 'भव' बनाया है। इसका अन्तिम 'अ' अपदान्त 'अ' है।

अपदान्त 'अ' से जब लेट् लकार के 'अ' से प्रारम्भ होने वाले सार्वधातुक प्रत्यय लगायेंगे तब, भव + अति में 'अकः सवर्णे दीर्घः' से सवर्णदीर्घ न होकर 'अतो गुणे' से पररूप ही होगा - भव + अति - भव् + अति = भवति।

अपदान्त 'अ' से लेट् लकार के 'ए' से प्रारम्भ होने वाले प्रत्यय परे होने पर -

हमने एध् + शप् से 'एध' बनाया है। इसका अन्तिम 'अ' अपदान्त 'अ' है। अपदान्त 'अ' से जब 'ए' से प्रारम्भ होने वाले सार्वधातुक प्रत्यय लगायेंगे तब, एध + ए में 'वृद्धिरेचि' से वृद्धि न होकर 'अतो गुणे' से पररूप ही होगा - एध + ए - एध् + ए = एधे।

अपदान्त 'अ' से लेट् लकार के 'ऐ' से प्रारम्भ होने वाले प्रत्यय परे

होने पर 'वृद्धिरेचि' से वृद्धि कीजिये - एध + ऐ = एधै।

अपदान्त 'अ' से लेट् लकार के 'आ' से प्रारम्भ होने वाले प्रत्यय परे होने पर 'अकः सवर्णे दीर्घः' से सवर्णदीर्घ कीजिये - एध + आते = एधाते।

विशेष - चूँकि वेद में लेट् लकार के पूरे प्रयोग नहीं मिलते हैं, अतः किसी भी धातु के पूरे रूप बनाने का हमें अधिकार नहीं है, तथापि समझने के लिये, प्रत्येक गण के, एक एक धातु के रूप बनाकर दिखा रहे हैं।

'अट्' से प्रारम्भ होने वाले प्रत्यय

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	भवति	भवतः	भवन्ति	एधते	एधैते	एधन्ते
	भवत्	-	भवन्	एधतै	-	एधन्तै
	भवद्					
म. पु.	भवसि	भवथः	भवथ	एधसे	एधैथे	एधध्वे
	भवः	-	-	एधसै	-	एधध्वै
उ. पु.	भवमि	भववः	भवमः	एधे	एधवहे	एधमहे
	भवम्	भवव	भवम	एधै	एधवहै	एधमहै

भ्वादि, दिवादि, तुदादि तथा चुरादिगण के धातुओं में विकरण जोड़कर इसी प्रकार सार्वधातुक लेट् लकार के 'अट्' से प्रारम्भ होने वाले प्रत्यय लगाइये।

'आट्' से प्रारम्भ होने वाले प्रत्यय

प्र. पु.	भवाति	भवातः	भवान्ति	एधाते	एधैते	एधान्ते
	भवात्	-	भवान्	एधातै	-	एधान्तै
	भवाद्	-				
म. पु.	भवासि	भवाथः	भवाथ	एधासे	एधैथे	एधाध्वे
	भवाः	-	-	एधासै	-	एधाध्वै
उ. पु.	भवामि	भवावः	भवामः	एधे	एधावहे	एधामहे
	भवाम्	भवाव	भवाम	एधै	एधावहै	एधामहै

यह भ्वादि, दिवादि, तुदादि तथा चुरादिगण के धातुओं में विकरण जोड़कर बने हुए सारे अदन्त अङ्गों में सार्वधातुक लेट् लकार के प्रत्यय जोड़ने की विधि पूर्ण हुई।

इसी प्रकार वेद में मिलने वाले पताति, यजाति, च्यावयाति, आदि प्रयोग सिद्ध कीजिये।

शेष गणों के धातुओं के सार्वधातुक लेट् लकार बनाने की विधि

इनके रूप हम खण्ड खण्ड में बनायेंगे। जहाँ वैदिक उदाहरण नहीं होंगे, वहाँ केवल प्रक्रिया समझाने के उद्देश्य से ही हम उदाहरण देंगे -

आकारान्त अङ्ग + लेट् लकार के सारे ६४ अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय

यदि धातु आकारान्त हो, अथवा धातु + विकरण को जोड़कर बना हुआ अङ्ग आकारान्त हो, तो लेट् लकार के ये सारे ६४ 'अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय' परे होने पर, इस प्रकार रूप बनाइये -

इन सारे आकारान्त अङ्गों से, लेट् लकार के ये सारे ६४ 'अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय' परे होने पर, 'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से सवर्णदीर्घ कीजिये। जैसे - क्रीणा + अति = क्रीणाति / क्रीणा + अतः = क्रीणातः / क्रीणा + अन्ति = क्रीणान्ति / मिमा + अते = मिमाते / मिमा + अन्ते = मिमान्ते/ आदि।

इकारान्त, ईकारान्त अङ्ग + लेट् लकार के सारे ६४ अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय

यदि धातु इकारान्त, ईकारान्त हो, अथवा धातु + विकरण को जोड़कर बना हुआ अङ्ग इकारान्त, ईकारान्त हो, तो लेट् लकार के ये सारे ६४ 'अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय' परे होने पर, इस प्रकार रूप बनाइये -

अदादिगण में शप् का लुक् करके बने हुए 'शी' आदि धातु ईकारान्त हैं। जुहोत्यादिगण में शप् का श्लु करके बने हुए 'चिकि' आदि धातु इकारान्त हैं। जुहोत्यादिगण में शप् का श्लु करके बने हुए 'बिभी' आदि धातु भी ईकारान्त हैं। इन्हें लेट् लकार के प्रत्ययों में इस प्रकार जोड़िये -

इन सारे इकारान्त, ईकारान्त अङ्गों से, लेट् लकार के ये सारे ६४ 'अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय' परे होने पर, 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से गुण कीजिये। जैसे - चिकि + अति = चिके + अति - 'एचोऽयवायावः' सूत्र से अयादेश करके चिकयति, आदि।

उकारान्त, ऊकारान्त अङ्ग + लेट् लकार के सारे ६४ अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय

यदि धातु उकारान्त, ऊकारान्त हो, अथवा धातु + विकरण को जोड़कर बना हुआ अङ्ग उकारान्त, ऊकारान्त हो, तो लेट् लकार के ये सारे ६४ 'अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय' परे होने पर, इस प्रकार रूप बनाइये -

देखिये कि स्वादिगण के धातुओं में 'श्नु' विकरण जोड़कर जो धातु बने हैं, वे सारे के सारे उकारान्त हैं। तनादिगण के धातुओं में 'उ' विकरण जोड़कर जो धातु बने हैं, वे भी सारे के सारे उकारान्त हैं। अदादिगण में शप् का लुक् करके बने हुए 'यु' आदि धातु भी उकारान्त हैं। अदादिगण में शप् का लुक् करके बने हुए 'ब्रू' आदि धातु ऊकारान्त हैं। जुहोत्यादिगण में शप् का श्लु करके बने हुए 'जुहु' आदि धातु उकारान्त हैं। इन्हें लेट् लकार के प्रत्ययों में इस प्रकार जोड़िये -

इन सारे उकारान्त अङ्गों से, लेट् लकार के ये सारे ६४ 'अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय' परे होने पर, 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से गुण कीजिये। जैसे - चिनु + अति = चिनो + अति - 'एचोऽयवायावः' सूत्र से अवादेश करके चिनवति / चिनु + आति = चिनो + आति - 'एचोऽयवायावः' सूत्र से अवादेश करके चिनवाति।

यु + अति = यो + अति - 'एचोऽयवायावः' सूत्र से अवादेश करके यवति / यु + आति = यो + आति - 'एचोऽयवायावः' सूत्र से अवादेश करके यवाति।

जुहु + अति = जुहो + अति - 'एचोऽयवायावः' सूत्र से अवादेश करके जुहवति / जुहो + आति = जुहो + आति - 'एचोऽयवायावः' सूत्र से अवादेश करके जुहवाति।

ऋकारान्त, ॠकारान्त अङ्ग + लेट् लकार के सारे ६४ अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय

यदि धातु + विकरण को जोड़कर बना हुआ अङ्ग ऋकारान्त, ॠकारान्त हो, तो लेट् लकार के ये सारे ६४ 'अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय' परे होने पर, इस प्रकार रूप बनाइये -

जुहोत्यादिगण में शप् का श्लु करके बने हुए 'बिभृ' आदि धातु ऋकारान्त

हैं। जुहोत्यादिगण में शप् का श्लु करके बने हुए 'पिपॄ' आदि धातु दीर्घ ॠकारान्त हैं। इन्हें लेट् लकार के प्रत्ययों में इस प्रकार जोड़िये -

इन सारे ऋकारान्त, ॠकारान्त अङ्गों से, लेट् लकार के ये सारे ६४ 'अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय' परे होने पर, 'सार्वधातुकार्धधातुकयो:' सूत्र से गुण कीजिये। जैसे - बिभृ + अति = बिभर् + अति = बिभरति / पिपॄ + अति = पिपर् + अति = पिपरति आदि।

हलन्त अङ्ग + लेट् लकार के सारे ६४ अजादि
पित् सार्वधातुक प्रत्यय

देखिये कि अदादिगण के धातुओं में शप् का लुक् करके बने हुए 'दुह्' आदि धातु हलन्त हैं। जुहोत्यादिगण में शप् का श्लु करके बने हुए 'दधन्' आदि धातु हलन्त हैं। श्नम् लगाकर बने हुए रुधादिगण के 'रुणध्' आदि सारे धातु हलन्त ही हैं। इन्हें, लेट् लकार के प्रत्ययों में, इस प्रकार जोड़िये-

उपधा में लघु 'इ' होने पर - 'पुगन्तलघूपधस्य च' सूत्र से उपधा के लघु 'इ' को 'ए' गुण कीजिये - दिह् + अति = देहति।

उपधा में लघु 'उ' होने पर - 'पुगन्तलघूपधस्य च' सूत्र से उपधा के लघु 'उ' को 'ओ' गुण कीजिये - दुह् + अति = दोहति।

उपधा में लघु 'ऋ' होने पर - 'पुगन्तलघूपधस्य च' सूत्र से उपधा के लघु 'ऋ' को 'अर्' गुण कीजिये।

शेष हलन्त अङ्गों को - प्रत्ययों में बिना किसी परिवर्तन के जोड़ दीजिये। जैसे - रुणध् + अति - रुणधति / रुणध् + आति - रुणधाति आदि।

यह सारे धातुओं के सार्वधातुक लेट् लकार के रूप बनाने की विधि पूर्ण हुई। परन्तु इस विधि से हम उन्हीं धातुओं के, उन्हीं प्रयोगों के लेट् लकार बनायें, जो प्रयोग हमें वेद में मिलते हैं।

जो प्रयोग हमें वेद में नहीं मिलते, उनके रूप हम न बनायें। हमने जो उदाहरण दिये हैं, वे केवल प्रक्रिया समझाने के उद्देश्य से दिये हैं।

आर्धधातुक लेट् लकार के रूप बनाने की विधि आर्धधातुक खण्ड में बतलायेंगे।

❀❀❀

नवम पाठ

वैदिक धातुरूप कैसे बनायें ?

अभी हमने धातुओं के सार्वधातुक लकारों के रूप बनाने की प्रक्रिया सीखी है। यह प्रक्रिया लौकिक वैदिक दोनों ही शब्दों के लिये है। वस्तुत: लौकिक और वैदिक शब्द, सर्वथा भिन्न भिन्न हैं ही नहीं। जहाँ कोई विशेष विधि न बतलाई जाये, वहाँ यह जानिये कि जो लौकिक शब्द है, वही वैदिक है।

वास्तविक बात यह है कि पाणिनीय व्याकरण ही ऐसा व्याकरण है, जो कि लौकिक तथा वैदिक उभय शब्दों की सिद्धि करता है। लोक में तो हम, पाणिनीय सूत्रों को लेकर पाणिनीय प्रक्रिया से जो भी शब्द बनाते हैं, वह शुद्ध ही होता है। अत: लोक में व्यवहार को देखकर हम अनन्त शब्दराशि बनाने के लिये स्वतन्त्र हैं। किन्तु वेद में ऐसा नहीं हो सकता है क्योंकि वेद में हम एक भी शब्द घटा या बढ़ा सकने के लिये स्वतन्त्र नहीं है। वहाँ तो जो शब्द हमें जैसे भी मिलते हैं, उन्हें उसी ही रूप में हमें निष्पन्न करना पड़ता है।

'छन्दसि दृष्टानुविधि:' का यही अभिप्राय है कि वेद में जो भी शब्द जैसा भी दिखे, उसे वैसा ही बनाइये।

लोक में हम स्वतन्त्र हैं कि लट् लकार का 'पतति' बनाना सीखकर हम पतत:, पतन्ति आदि सारे रूप बना डालें किन्तु वेद में यदि हमें लेट् लकार का 'पताति' प्रयोग मिलता है तो हमें यह अधिकार नहीं है कि लेट् लकार का 'पताति' बनाना सीखकर हम पतात:, पतान्ति आदि सारे रूप बना डालें। वेद में हम उतने ही शब्द बनाने के लिये मर्यादित हैं, जितने शब्द हमें वेद में मिलते हैं।

पाणिनीय प्रक्रिया हमारे पास है। हम वेद में जैसा भी प्रयोग पायें, इस पाणिनीय प्रक्रिया से उसे निष्पन्न कर लें।

पाणिनीय प्रक्रिया से ही वेद के सारे शब्द निष्पन्न हो सकें, इसके लिये भगवान् पाणिनि ने तीन प्रमुख सूत्र हमें दिये हैं। वे इस प्रकार हैं -

छन्दस्युभयथा - अभी हमने सार्वधातुक तथा आर्धधातुक प्रत्ययों का विभाजन करके उन्हें अलग अलग पहिचाना है, किन्तु वेद में ऐसा नहीं होता। वेद में प्रयोग की सिद्धि के लिये किसी भी प्रत्यय की सार्वधातुक संज्ञा हो सकती है और किसी भी प्रत्यय की आर्धधातुक संज्ञा हो सकती है।

व्यत्ययो बहुलम् - वेदविषय में बहुल करके सभी विधियों का व्यत्यय होता है। अतः सभी विधियों से तात्पर्य है - सुब्विधि, तिङ्विधि, उपग्रह = परस्मैपद आत्मनेपद विधि, पुरुषविधि, कालविधि, हल्विधि, अज्विधि, उदात्तादि स्वरविधि, कर्तृविधि, यङ्विधि, विकरणविधि आदि।

व्यत्यय का अर्थ होता है व्यतिगमन। अर्थात् किसी विषय में कुछ प्राप्त हो और कुछ हो जाये।

विकरण का व्यत्यय - आगे अलग अलग गणों के अलग अलग विकरण बतलाये जा रहे हैं। जिस गण का धातु होता है, उसमें उसी गण का विकरण लगाया जाता है। लौकिक शब्दों को बनाने की यही विधि है, किन्तु वेद में किसी भी गण के धातु में, कोई सा भी विकरण लग सकता है। यथा - 'कृ धातु' तनादिगण का है। लोक में इससे सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर 'उ' विकरण ही होता है किन्तु वेद में इससे 'शप्' भी मिलता है - सुपेशसस्करति।

'मृ धातु' तुदादिगण का है। लोक में इससे सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर 'श' विकरण ही होता है किन्तु वेद में शप् भी मिलता है - स च न मरति।

'भिद् धातु' रुधादिगण का है। लोक में इससे सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर 'श्नम्' विकरण ही होता है किन्तु वेद में शप् भी मिलता है - आण्डा शुष्मस्य भेदति।

'यु धातु' अदादिगण का है। लोक में इससे सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर 'शप्लुक्' विकरण ही होता है किन्तु वेद में इससे जुहोत्यादिगण का विकरण 'शप्श्लु' भी मिलता है - युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनः।

लोक में धातु, प्रत्यय के बीच में एक ही विकरण लगता है किन्तु वेद में एक विकरण के स्थान पर, कभी कभी दो विकरण भी मिलते हैं। जैसे -

इन्द्रो वस्तेन नेषतु। यहाँ सिप् और शप्, ये दो विकरण हैं।

वेद में एक विकरण के स्थान पर कभी कभी तीन विकरण भी मिलते हैं - इन्द्रेण युजा तरुषेम वृत्रम्। यहाँ उ, सिप् और शप् ये तीन विकरण हैं।

पद का व्यत्यय - वेद में पदों का भी व्यत्यय होता है। यथा - लोक में हम 'इच्छति' को परस्मैपद में कहते हैं। वेद में इसका आत्मनेपद में भी प्रयोग मिलता है - ब्रह्मचारिणमिच्छते।

काल का व्यत्यय - वेद में कालों का भी व्यत्यय होता है। यथा - लोक में हम 'दाधार' का अर्थ केवल 'धारण किया' करते हैं किन्तु वेद में 'स दाधार पृथिवीम्' का अर्थ करते हैं 'उसने पृथ्वी को धारण किया और कर रहा है'।

छन्दसि वा - लोक में जो जो भी विधियाँ हैं, वेद में उन सभी विधियों का विकल्प होता है अर्थात् पाणिनीय अष्टाध्यायी में कही हुई सारी विधियाँ वेद में, हो भी सकती हैं और नहीं भी हो सकतीं।

पाणिनीय अष्टाध्यायी में कही हुई प्रक्रिया से सारे वैदिक शब्द भी निष्पन्न हो सकें, इसके लिये ये तीन सूत्र महास्त्र का कार्य करते हैं।

अत: लोक में हम शास्त्र को देखकर शब्द बनायें और वेद में जो शब्द दिखे, उस शब्द को देखकर ही शास्त्र का उपयोग करें। पाणिनीय प्रक्रिया से वैदिक शब्दों को सिद्ध कर सकने का यही विज्ञान है।

हमने इसी ग्रन्थ के अन्त में पाठ २० में अष्टाध्यायी के ही क्रम से अष्टाध्यायी का सूत्रपाठ दिया है किन्तु इस पाठ में केवल उतने ही सूत्र दिये हैं, जितने सूत्र तिङन्त के लिये उपयोग में आये हैं।

इन सूत्रों से जो भी शब्द बनते हैं, वे शब्द लौकिक तथा वैदिक उभय होते हैं। जैसे - भवति, शब्द लौकिक भी है तथा वैदिक भी।

किन्तु ध्यान दें कि इन सूत्रों में से कुछ सूत्रों में हमने * ऐसा चिह्न लगा दिया है। ये सूत्र केवल वेद के लिये हैं अर्थात् इन सूत्रों से जो शब्द बनते हैं, वे केवल वैदिक होते हैं। जैसे - यजैध्वनमिति च सूत्र ७.१.४३ को देखिये। यह कहता है कि लोक के 'यजध्वम् एनम्' के स्थान पर वेद में म् का लोप होकर यजध्वैन बनता है। उदाहरण है - यजध्वैन प्रियमेधा:।

तात्पर्य यह है कि वेद में तो यजध्वैन बनेगा और लोक में यजध्वैनम् ही रहेगा।

इसी प्रकार 'तस्य तात्' ७.१.४४ सूत्र को देखिये। यह कहता है कि वेद में लोट् लकार मध्यम पुरुष बहुवचन के 'त' प्रत्यय के स्थान पर 'तात्' आदेश होता है। अत: लोक में तो लोट् लकार मध्यम पुरुष बहुवचन में 'कृणुत'

बनता है किन्तु वेद में 'त' प्रत्यय के स्थान पर 'तात्' होकर - गात्रं गात्रमस्य नूनं कृणुतात् बनता है।

चूँकि यह व्यवस्था केवल लोट् लकार मध्यम पुरुष बहुवचन के लिये है, अतः यह समझना चाहिये कि शेष रूप जो लोक में बनते हैं, वे ही वेद में भी बनते हैं। यह सिद्धान्त समझ लेने से पाणिनीय व्याकरण से लौकिक तथा वैदिक शब्द एक साथ सिद्ध होते चलते हैं। इन्हें अलग से न पढ़कर वहीं पढ़ना चाहिये, जहाँ ये वैदिक विशेष सूत्र पढ़े गये हैं।

पूरा व्याकरण पढ़कर अन्त में अलग से वैदिक सूत्रों को पढ़ना पाणिनीय विधि नहीं है क्योंकि इससे अन्य वैदिक रूपों के विषय में शङ्का बनी ही रहती है।

पाणिनीय व्याकरण ही एकमात्र ऐसा व्याकरण है, जो कि लौकिक, वैदिक, उभय शब्दों की सिद्धि करता है, अतः यह अपूर्व है।

वेद के शब्दों की सिद्धि के लिये अन्य कोई भी व्याकरण नहीं है। प्रातिशाख्यों को वेद का व्याकरण कहना गलत है, क्योंकि वे शब्दों का प्रकृति प्रत्यय विभाग नहीं बतलाते। अतः लौकिक शब्दों को सिद्ध करते समय आप यह मानकर चलें कि आप साथ साथ वैदिक शब्द भी सिद्ध कर रहे हैं। केवल जहाँ अन्तर हो, उसे * चिह्न के सूत्रों में देख लें।

सूत्रों के विस्तृत अर्थ काशिकावृत्ति में अथवा सिद्धान्तकौमुदी में देख लेना चाहिये।

वैदिक शब्दों की सिद्धि के लिये यही बात आगे द्वितीय खण्ड में तथा समग्र पाणिनीयशास्त्र में याद रखना चाहिये।

श्रीकृष्णार्पणमस्तु

सूत्रवार्तिकाद्यनुक्रमणिका

स.

ह.

धात्वनुक्रमणिका

धातु	क्रमाङ्क	धातु	क्रमाङ्क	धातु	क्रमाङ्क	धातु	क्रमाङ्क	धातु	क्रमाङ्क
ऋज	३४०	कठि	१८०१	काश्रृ	६७२	कुत्स	१८४५	कृती	१३०३
ऋजि	४९५	कड	१४०९	काशृ	१२४४	कुथ	१२१९	कृती	१४४८
ऋणु	१४६७	कड	११८	कासृ	६६४	कुथि	३८२	कृप	१८७९
ऋधु	१२७६	कडि	५२६	कि	१०८९	कुद्रि	१६१३	कृप	१७१४
ऋधु	११५१	कड्ड	७४८	किट	२४४	कुन्थ	१५१४	कृपू	१००४
ऋफ	१३७२	कण	१३०	किट	२५३	कुन्स	११८६	कृवि	१०००
ऋम्फ	१३९०	कण	८९६	कित	९९०	कुप	११३८	कृश	११४८
ऋषी	१३६८	कण	१५५९	किल	१३२२	कुप	१७३१	कृष	३३६
ए .		कण्डूञ्	१९७५	कीट	१६५३	कुबि	४४२	कृष	१३६७
एजृ	३७२	कत्र	१९१५	कील	७८२	कुबि	१६३७	कॄ	१४९६
एजृ	३६२	कथ	१८६१	कु	१०३७	कुमार	१८८७	कॄ	१२९५
एठ	३७४	कत्थ	७१०	कुक	३२२	कुर	१३५६	कॄञ्	१४८५
एध	३७१	कदि	३९५	कुङ्	१६	कुर्द	३५८	कॄत	१६५८
एला	१९६८	कदि	९११	कुङ्	१२८७	कुल	९५७	केत	१९०५
एषृ	३७९	कनी	१८४	कुच	२८१	कुशी	१७४३	केपृ	६३५
ओ .		कपि	५२८	कुच	९६०	कुष	१५१८	केला	१९६९
ओखृ	३६१	कवृ	२२४	कुच	१३९७	कुषुभ	१९४४	केलृ	६०९
ओणृ	३६४	कमु	१००८	कुजु	२८६	कुंस	११८६	कै	५४
क .		कर्ज	७३४	कुञ्च	५४७	कुसि	१७४१	क्नसु	११९९
कक	१९५	कर्द	७१५	कुट	१३९५	कुस्म	१८५०	क्नूञ्	१४८०
ककि	४८०	कर्ब	७६०	कुट्ट	१६८०	कुह	१८५४	क्नूयी	५७८
कख	७४	कर्व	८०६	कुट्ट	१८४७	कूज	७२९	क्मर	१५२
कखे	८७०	कल	२१५	कुठि	४३६	कूट	१९०६	क्रथ	९०३
कगे	८७७	कल	१८७५	कुड	१४१२	कूट	१८४६	क्रदि	९१२
कच	२००	कल	१५५३	कुडि	१६२२	कूट	१९००	क्रदि	३९६
कचि	४९०	कष	१५६	कुडि	५१३	कूण	१८३९	क्रन्द	१६७१
कटी	१८३	कस	९४९	कुडि	४३२	कूल	७८३	क्रप	८८६
कटे	२३६	कसि	१०६५	कुडि	१६२१	कृञ्	१२५३	क्रमु	९८४
कठ	११२	काक्षि	४५५	कुण	१३५१	कृञ्	१४७२	क्रीञ्	१४७३
कठि	५०९	काचि	४९१	कुण	१९०३	कृड	१४११	क्रीडृ	५९६

धातु	क्रमाङ्क	धातु	क्रमाङ्क	धातु	क्रमाङ्क	धातु	क्रमाङ्क	धातु	क्रमाङ्क
पुल	९५६	पॄ	१५३९	प्सा	१०१७	बुगि	४२२	भष	१६३
पुल	१५९३	पेलृ	६१२	फ.		बुध	१२२४	भस	१०९९
पुष	३१०	पेवृ	६५२	फक्क	७२०	बुध	९६१	भा	१०१३
पुष	११२४	पेषृ	६५७	फण	९२८	बुधिर्	३१६	भाज	१८९६
पुष	१५२९	पेसृ	६१८	फल	१४४	बुन्दिर्	५६७	भाम	७६७
पुष	१७१८	पै	५८	फला	१८९	बुस	११३३	भाम	१८८२
पुष्प	१२३२	पैणृ	६०५	फुल्ल	७८९	बुस्त	१६९०	भाष	८२१
पुस्त	१६८९	प्यायी	५८१	फेलृ	६१३	बृह	३३५	भासृ	६६५
पुंस	१६०६	प्यैङ्	६३	ब.		बृहि	४६३	भिक्ष	८१७
पूङ्	२६	प्रच्छ	१३०७	बद	७१	बृहि	१७४५	भिदिर्	१४४०
पूज	१६५५	प्रथ	८८०	बध	९९२	ब्रूञ	१०४२	भिषज्	१९८५
पूञ	१४८२	प्रथ	१५४५	बध	१५४४	ब्रूस	१६६२	भिष्णज्	१९८६
पूयी	५७७	प्रस	८८१	बन्ध	१५०९	ब्ली	१५०२	भी	१०९०
पूरी	१२३६	प्रा	१०२३	बर्ब	७५८	भ.		भुज	१४५५
पूरी	१७६६	प्रीङ्	११९१	बर्ह	८२५	भक्ष	१६७९	भुजो	१३६३
पूल	७८६	प्रीञ्	१४७४	बर्ह	१७०३	भज	२३३	भुवो	१५३७
पूल	१६५१	प्रीञ्	१७७०	बर्ह	१६६३	भज	१५६५	भुरण	१९५४
पूर्व	८०१	प्रुङ्	२२	बल	९४५	भजि	१७३७	भू	२५
पूष	८४०	प्रुड	२९३	बल	१५७७	भञ्जो	१४५४	भू	१७७१
पृ	१२५८	प्रुष	१५२७	बल्ह	८२६	भट	१०३	भूष	८४७
पृङ्	१२९१	प्रुषु	३११	बस्त	१८३५	भट	८९१	भूष	१६७२
पृच	१७८७	प्रेषृ	६६०	बाडृ	६२७	भडि	५१६	भृजी	३४१
पृची	१०५७	प्रोथृ	६९२	बाधृ	६७४	भडि	१६२७	भृञ्	३६
पृची	१४५२	प्लिह	२७२	बिट	२४९	भण	१२८	भृञ्	१०९३
पृड	१३७६	प्ली	१५०३	बिदि	३८९	भदि	४६७	भृशि	१७४९
पृण	१३७७	प्लुङ्	२३	बिल	१३२७	भर्व	८०५	भृशु	११४६
पृथ	१६०५	प्लुष	११३२	बिल	१५८४	भर्त्स	१८३४	भॄ	१४९१
पृषु	३२८	प्लुष	१५२८	बिस	१११८	भल	२१४	भेषृ	६९९
पॄ	१०९४	प्लुष	१२१८	बुक्क	७२१	भल	१८२१	भ्यस	२१७
पॄ	१४८९	प्लुषु	३१२	बुक्क	१६६७	भल्ल	७७०		

धातु	क्रमाङ्क	धातु	क्रमाङ्क	धातु	क्रमाङ्क	धातु	क्रमाङ्क	धातु	क्रमाङ्क
म्लुचु	२८३	युप	११४०	रस	१९३१	रुट	८५९	लक्ष	१६७३
म्लुञ्चु	५५६	यूष	८४५	रह	१६७	रुट	१७३२	लख	८४
म्लेच्छ	७२७	यौटृ	५९३	रह	१८६८	रुटि	४३४	लखि	४०५
म्लेच्छ	१६६१	र.		रह	१५७६	रुठ	२९५	लग	१५६८
म्लेटृ	५९४	रक	१५६७	रहि	४६१	रुठि	४३९	लगि	४०९
म्लेवृ	६५४	रक्ष	८२९	रहि	१७५६	रुदिर्	१०७२	लगे	८७२
म्लै	४२	रख	८३	रा	१०१९	रुधिर्	१४३८	लघि	४८५
य.		रखि	४०३	राखृ	५८५	रुप	११४१	लघि	१७५४
यक्ष	१८४२	रगि	४०८	राघृ	६८८	रुश	१३६५	लघि	१७३८
यज	९६३	रगे	८७१	राजृ	९३२	रुशि	१७५०	लछ	७२५
यत	१५६६	रघि	४८४	राध	१२६८	रुष	३०८	लज	९०
यती	२१९	रघि	१७५३	राधो	१२४६	रुष	११३७	लज	१९२०
यत्रि	१६११	रच	१८७४	रासृ	६६७	रुष	१६०२	लजि	४९९
यष	१७८	रञ्ज	९९८	रि	१२८१	रुसि	१७५१	लजि	१७४६
यम	१५७४	रञ्ज	११८५	रि	१२६१	रूक्ष	१९१०	लजी	१४३७
यम	९१९	रट	९७	रिगि	४१७	रूप	१९३३	लट	९८
यम	९८६	रट	११३	रिच	१७८३	रूष	८४३	लड	१५४०
यसु	११७१	रण	१२६	रिचिर्	१४४९	रूह	९६२	लड	११७
या	१०११	रण	८९७	रिफ	१३१९	रेकृ	६८३	लडि	९१८
याचृ	६९१	रद	७६	रिवि	४५२	रेखा	१९७२	लडि	१६१५
यु	१०३०	रध	११६१	रिश	१३३४	रेटृ	८५३	लडि	१७५८
यु	१८१२	रप	१२२	रिष	१११९	रेपृ	६३९	लप	१२३
युगि	४२०	रफ	१२४	रिष	२५६	रेधृ	६४५	लबि	५३२
युच्छ	७२८	रफि	५३६	री	१५००	रेवृ	६५५	लबि	५३०
युज	१२२७	रबि	५२९	रीङ्	११७८	रेषृ	६६१	लभष्	१७७
यूज	१७८५	रभ	१७५	रु	१०३९	रै	४७	लर्ब	७५७
युजिर्	१४५३	रमु	९५१	रुङ्	२४	रोड़ृ	६००	लल	१८१६
युञ्	१४७९	रय	२१०	रुच	८५७	रौड़ृ	५९९	लष	९८५
युतृ	३२०	रवि	४५३	रुज	१७१७	ल.		लष	१५५५
युध	१२२५	रस	१६५	रुजो	१३६२	लक्ष	१८४४	लस	१६६

धातु	क्रमाङ्क	धातु	क्रमाङ्क	धातु	क्रमाङ्क	धातु	क्रमाङ्क	धातु	क्रमाङ्क
वृजी	१७८८	व्यथ	८७९	शब्द	१६६८	शीक	१८०४	शृधु	८६६
वृञ्	१७७३	व्यय	२२५	शम	१८१९	शीकृ	६७८	शृधु	३४४
वृञ्	१२५४	व्यय	१९३२	शमु	११५३	शीङ्	१०२९	शॄ	१४८८
वृञ्	१४८६	व्यध	११६९	शमो	९२१	शीभृ	६४३	शेलृ	६१४
वृड	१४२२	व्युष	१२१७	शर्ब	७६३	शीलृ	७८१	शै	५६
वृण	१३७८	व्युष	११३१	शर्व	८१०	शीलृ	१८८८	शो	११९४
वृतु	३४२	व्येञ्	६९	शल	९४६	शुच	२८०	शोणृ	६०२
वृतु	१७११	व्रज	९४	शल	२११	शुचिर्	१२२३	शौटृ	५९२
वृतु	१२२९	व्रज	१५५६	शल्भ	७५०	शुच्य	७७४	श्चुतिर्	२७८
वृधु	३४३	व्रण	१३२	शव	१७१	शुठ	२९८	श्मील	७७६
वृधु	१७१२	व्रण	१९३७	शर्व	८१०	शुठ	१५९७	श्यैङ्	६७
वृश	११४७	व्रश्चू	१३०५	शश	१७२	शुठि	४३८	श्रकि	४७४
वृष	१८२८	व्री	१५०४	शश	१६१	शुठि	१६३५	श्रगि	४१४
वृषु	३२९	व्रीङ्	११८०	शसि	५४४	शुध	११३०	श्रण	९००
वृहू	१३८०	व्रीड	१२३४	शशु	१८८	शुन	१३५२	श्रण	१५४८
वृ	१४९०	**श.**		शसुं	५६५	शुन्ध	५४६	श्रथ	९०१
वेञ्	६८	शक	११०७	शाखृ	५९०	शुन्ध	१७९९	श्रथ	१७७७
वञ्चु	५५१	शकि	४७६	शाडृ	६३०	शुभ	३२५	श्रचि	४७१
वेणु	७०४	शक्लृ	१२६७	शान	९९४	शुभ	८६२	श्रथ	१५४३
वेथृ	६७७	शच	१९८	शासु	१०६४	शुभ	१३४६	श्रन्थ	१५१२
वेद	१९६२	शट	९९	शासु	१०८२	शुम्भ	१३९३	श्रन्थ	१५१०
वेपृ	६३४	शठ	११५	शिक्ष	८१६	शुम्भ	५६३	श्रन्थ	१७९८
वेल	१८९०	शठ	१८१७	शिचि	४२४	शुल्क	१६९९	श्रमु	११५६
वेलृ	६०७	शठ	१८६४	शिजि	१०६८	शुल्व	१६९७	श्रम्भु	५६९
वेल्ल	७९१	शडि	५२३	शिञ्	१२४९	शुष	११२५	श्रा	९२५
वेवीङ्	१०७९	शण	८९९	शिट	२४६	शूर	१८५५	श्रा	१०१५
वेष्ट	७४०	शद्लृ	९७७	शिल	१३३०	शूरी	१२४२	श्रिञ्	७
वेह	६६८	शद्लृ	१३१४	शिष	२५५	शूर्प	१६९८	श्रिञ्	१४७५
वै	५९	शप	२३४	शिष	१७८४	शूल	७८४	श्रिषु	२६०
व्यच	१३०६	शप	१२०४	शिष्लृ	१४५९	शूष	८४४		

❀❀❀

अष्टाध्यायी सहजबोध - प्रथम भाग का शुद्धिपत्र

भूमिका

पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्ध	शुद्ध
(xiii)	२३	स्वभाविक	स्वाभाविक
(xiv)	१४	समुज्जल	समुज्ज्वल
(xvi)	६	सृष्ट्यादिविष्यक	सृष्ट्यादिविषयक
(xvi)	८	नामधय्र	नामधेयं
(xvi)	२४	अभीभि	अमीभि
(xix)	२०	उच्छवसित	उच्छ्वसित
(xxii)	९	व्याकरणविष्यक	व्याकरणविषयक
(xxv)	२१	हमने हमने	हमने
(xxvii)	२०	करने वाले काशिका	करने वाले महाभाष्य,काशिका

अष्टाध्यायी सहजबोध - प्रथम भाग

पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	१२	पढना	पढ़ना
७	१६	सुमिक्षम्	सुभिंक्षम्
१८	३	विच्छ	विच्छि
२०	३	विच्छ	विच्छि
४०	१५	मन्द	मन्द्
४९	१०	ज्य	ज्यु
१०९	१	जागा	जायेगा
१८४	१८	दीर्घ अ	दीर्घ आ

पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१९४	२२	कुछ नहीं	कुछ नहीं - आ + अटत् = आटत्
२०२	२	यात्	यात
२४०	२३	भ्राम	भ्रम
२४२	२२	धातु ध्रातु	धातु
२४३	१०	धूप	धूप, पण, पन
२४४	२०	सार्वधातुकार्धधातुकयोः	पुगन्तलघूपधस्य च
२४८	१८	कुछ आदि नहीं	आदि कुछ नहीं
२४८	२	आट् (अ)	आट् (आ)
२६६	१२	११८४ - ११८७	११९४ - ११९७
२७५	२१	होता	होता है।
२८६	२८	विधिलिङ् तथा	विधिलिङ्
२९४	२५	असंयोगपूर्व	संयोगपूर्व
२९७	२७	अश्नुत	आश्नुत
२९७	२८	अश्नुथाः	आश्नुथाः
२९७	२९	अश्नुध्वम्	आश्नुध्वम्
२९८	१	अश्नुवहि	आश्नुवहि
२९८	२	अश्नुमहि	आश्नुमहि
२९८	२७	शक्नाव	शक्नवाव
३००	२७	अर्णाव	अर्णवाव
३००	२७	अर्णुवामहै	अर्णवामहै
३०२	१६	कुर्व	कुर्वः
३०४	२६	वायाम्	वायाम

पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३०५	३	अगा + इ = अगै	अगा + इ = अगे
३१७	१४	होने	होने पर
३१९	२०	युयाम्	युयाम
३२३	३	आह	आह्
३२३	५	आह	आह्
३२३	६	आह्	आथ्
३२३	२७	ब्रूयाम	ब्रूयाम्
३२७	४	पर होने	परे होने पर
३२७	१५	जागरतु	जाग्रतु
३२९	२३	ओहाङ् तथा	ओहाङ्
३३२	९	उपर	ऊपर
३३३	९	तस्	स्
३३३	२७	ध्वसोरेद्धावभ्यासलोपश्च	घ्वसोरेद्धावभ्यासलोपश्च
३३३	२७	धु	घु
३३७	५	चिकियाम	चिकियाम्
३३७	२४	बिभीतात्	बिभीहि / बिभीतात्
३३९	६	जिह्रियाम	जिह्रियाम्
३३९	२७	जुहोतु	जुहोतु / जुहुतात्
३३९	२८	जुहुधि	जुहुधि /जुहुतात्
३४०	३	जहुयात्	जुहुयात
३४०	१४	ति	अति
३४०	२०	इकारान्त, ईकारान्त	ऋकारान्त, ॠकारान्त
३४०	२१	ए	अर्

पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३४१	१०	ऋकारान्त	ॠकारान्त
३४७	१	सूत्र से अन्तिम संयोग	सूत्र से संयोग
३४७	१८	अपाप्रच्छ्	अपाप्रष्
३४९	१९	अदेघ्	अधेघ्
३५५	११	धकारान्त	भकारान्त
३५८	२८	छिन्थ:	छिन्त्थ:
३७५	९	अमार्ज्व, अमार्ज्म	अमृज्व अमृज्म
३८२	५	ईर्महि	ईर्वहि
३८४	१	ईशिढ्वे	ईशिध्वे
३८४	५	ईड्ढ्वम्	ईशिध्वम्
३९२	२७	दिग्ध्वम्	धिग्ध्वम्
३९५	७	पित् परे होने पर	पित् प्रत्यय परे होने पर
४०१	२६	अजज्ञत	अजजात
४०२	२४	पित् परे होने पर	पित् प्रत्यय परे होने पर
४०३	१९	पित् परे होने पर	पित् प्रत्यय परे होने पर
४०५	१६	पित् परे होने पर	पित् प्रत्यय परे होने पर
४०५	१८	पित् परे होने पर	पित् प्रत्यय परे होने पर
४०६	३	अनेनेक्	अनेनेक्, अनेनेग्
४०६	४	अनेनेक्	अनेनेक्, अनेनेग्
४०७	२२	जहाँ पूरा	जहाँ र, ऋ के बाद पूरा
४१०	२५	युञ्ज्महे, युञ्ज्महे	युञ्ज्वहे, युञ्ज्महे
४११	१	युङ्तात्	युङ्क्तात्

पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४१२	१८	छिनत्स्व	छिन्त्स्व
४१४	२५	पिनष्टि / पिंष्टात्	पिनष्टि
४१४	२६	पिनक्षि / पिंष्टात्	पिनक्षि
४१४	२९	पिनष्टु	पिनष्टु / पिंष्टात्
४१४	३०	पिण्ड्ढ	पिण्ड्ढ / पिंष्टात्
४२१	१	पृष्ठ ४१७ - ४१८ पर अभी की गई है।	पृष्ठ ३१ - ३४ पर की गई है।
४२२	६	सार्वधातुक सार्वधातुक	सार्वधातुक
४२२	७	सार्वधातुक सार्वधातुक	सार्वधातुक
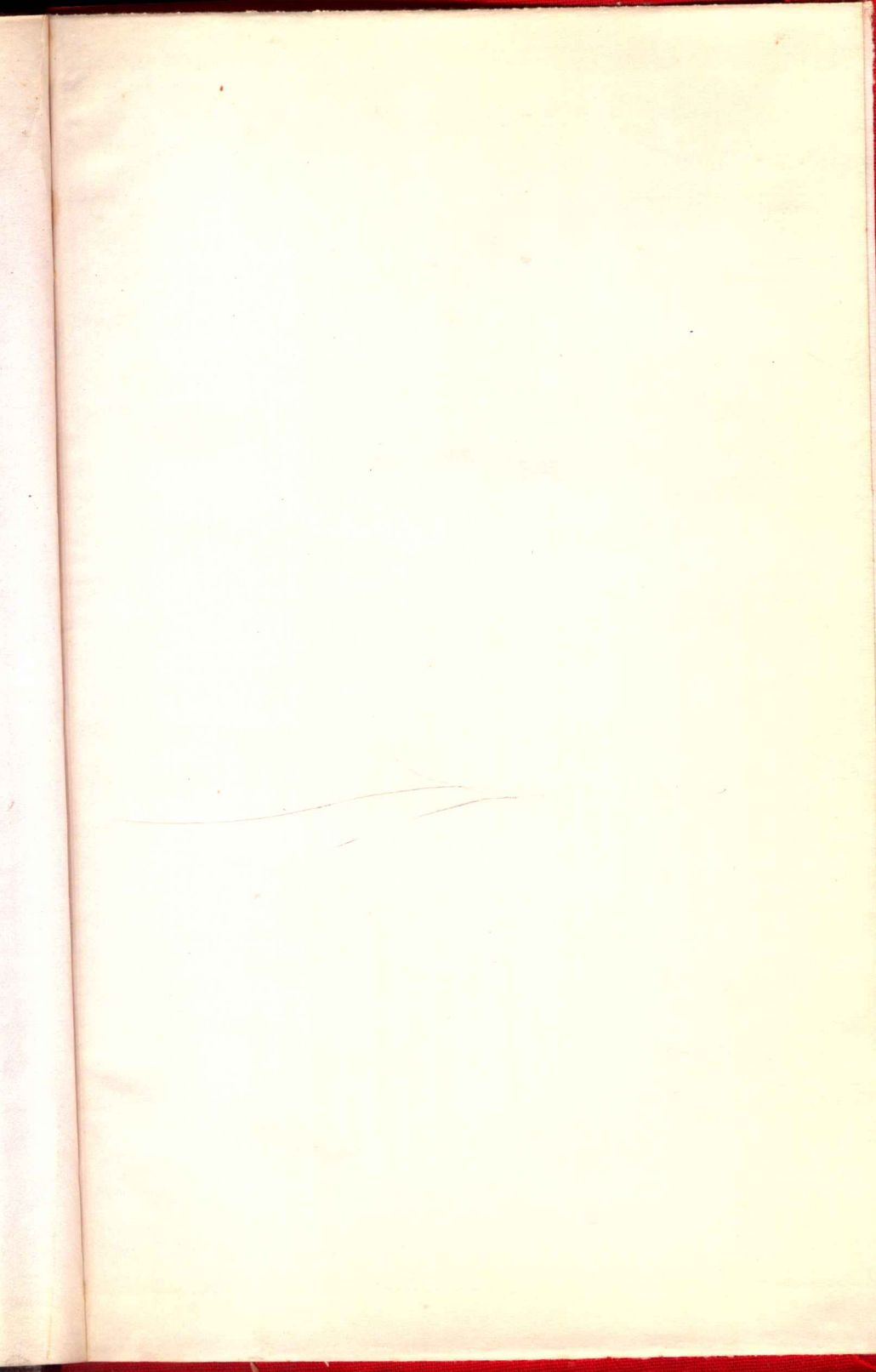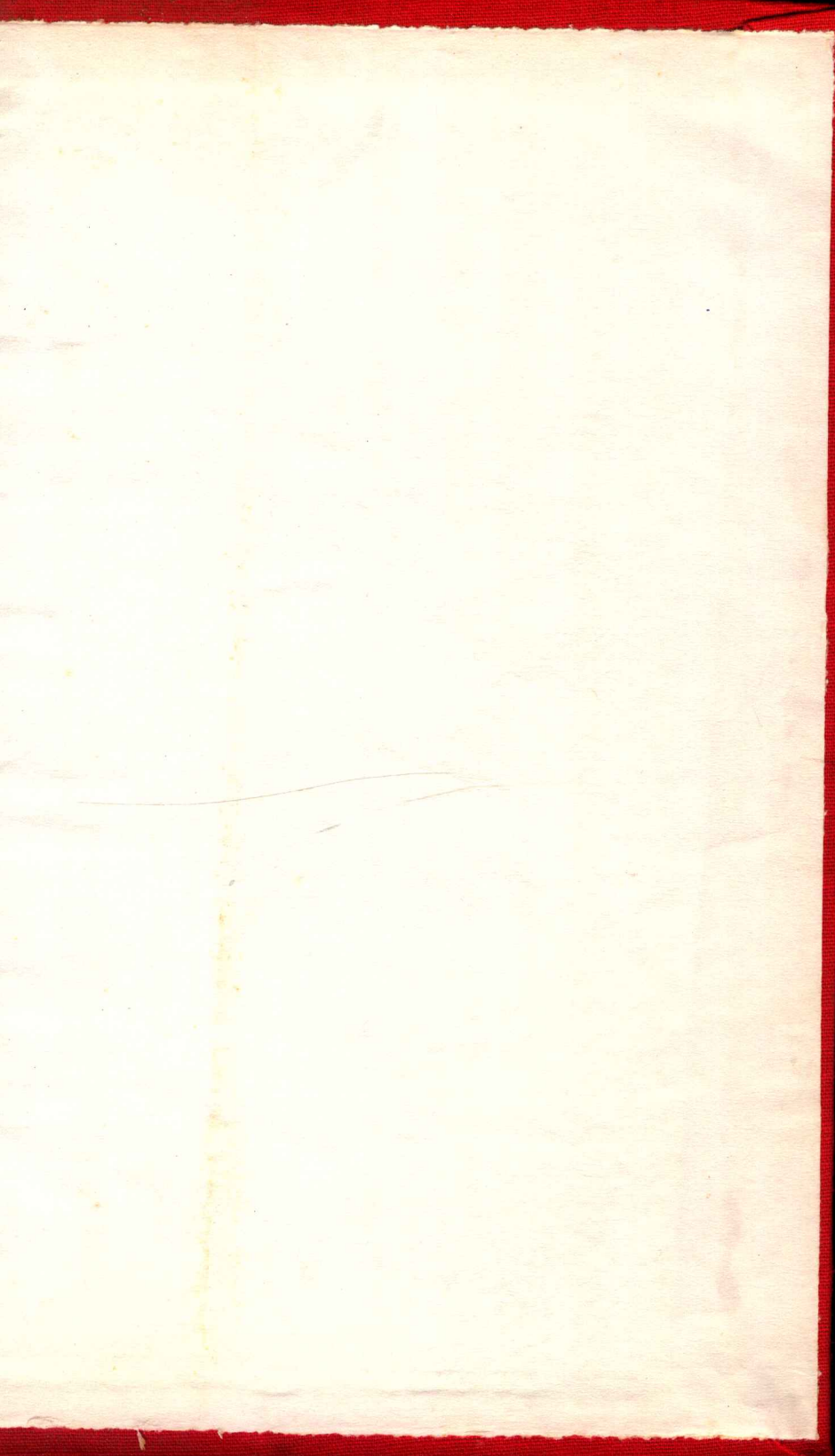
डॉ. पुष्पा दीक्षित

12 जून 1943 को जबलपुर नगर में, न्याय, वेदान्त और संस्कृत साहित्य में गम्भीर विद्वान् तथा प्रख्यात आयुर्वेद चिकित्सक प्राणाचार्य पं. सुन्दरलाल जी शुक्ल के घर जन्म हुआ।

बाल्यकाल से पूज्य पिताजी से, तथा अनन्तर काशी की विद्वत्परम्परा से अधीत, मध्यप्रदेश के सर्वोच्च वैयाकरण आचार्य पं. विश्वनाथ जी त्रिपाठी, प्राचार्य, कृष्णबोधाश्रम संस्कृत महाविद्यालय, जबलपुर से व्याकरण का अध्ययन किया।

एम.ए.,पी-एच्.डी. शिक्षा प्राप्त करके सन् 1965 से मध्यप्रदेश शासन की महाविद्यालयीन शिक्षा में प्राध्यापक पद पर कार्यरत।

प्रकाशित रचनाएँ

अग्निशिखा (गीतिकाव्य)।

शाम्भवी (गीतिकाव्य)।
अष्टाध्यायी सहजबोध के दो भाग (तिङन्त)।
अनेक शोधपत्र।
उच्चारणगीता (गीता के उच्चारण की विधि)।

शीघ्र प्रकाश्यमान रचनाएँ

(i) अष्टाध्यायी सहजबोध के तृतीय, चतुर्थ भाग (कृदन्त, तद्धित)।
(ii) आर्धधातुक प्रत्ययों की इडागम व्यवस्था।
(iii) परिभाषेन्दुशेखर की बहुतर परिभाषाओं की अन्यथासिद्धि।

ISBN : 81-85268-99-1(सेट)

अष्टाध्यायी सहजबोध

यह ग्रन्थ 'अष्टाध्यायी सहजबोध' महामुनि पाणिनि की अन्तरात्मा को निश्चित ही आनन्दित करेगा। इससे संस्कृत साहित्य का अत्यन्त कल्याण सम्भावित है, ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है।

– आचार्य डॉ. रामप्रसाद त्रिपाठी

हमें पूर्ण विश्वास है कि श्रीमती डॉ. पुष्पा दीक्षित की यह 'सहजबोध' नामक कृति परम्परागत विद्वानों एवं विद्यार्थियों में 'पाणिनीय महाशास्त्र' के प्रति अभिनव रुचि जगायेगी एवं शोध की नई-नई दिशाओं का निर्माण करने में सहायक होगी।

– आचार्य डॉ. रामकरण शर्मा

डॉ. पुष्पा दीक्षित कृत 'अष्टाध्यायी सहज बोध' में पाणिनि का एक नया चित्र, एक नयी आभा एवं चमक के साथ अवतीर्ण होता है। यह वाग्योग की सहज समाधि का ध्यानगम्य तत्त्व है।

–आचार्य डॉ. बच्चूलाल अवस्थी

श्रीमती दीक्षिता के इस अन्वेषणात्मक प्रयास से व्याकरण जगत् का स्तुत्य उपकार हुआ है।

– आचार्य डॉ. रामयत्न शुक्ल

प्रतिभा प्रकाशन

(प्राच्य-विद्या-प्रकाशक एवं पुस्तक-विक्रेता)

29/5 शक्ति नगर, दिल्ली-110007

दूरभाष : 7451485